श्री

[illegible]

वैद्यक ग्रंथ.

भाषा.

[illegible]

बणाई नवीन [illegible]

[illegible]

उत्तर भाग सटीक.

तृतीय आवृत्ति.

पंडित श्रीधर शिवलाल गौड ब्राह्मण
सलेमाबादकैनैं

मुंबईमें

"निर्णयसागर" छापखानामैं छाप्यौ.

कार्तिक शु० १६ ता० २२ नवंबर संवत् १९४२ सन १८८६.


श्रीगणपति इष्टदेव.
श्रीवैराजपुरुष.
सृष्टिकर्ता.
अनंतकोटी
ब्रह्मांडकामूल.
सहस्रशीर्षति.

प्रस्तावना.

प्रस्तावना. सर्व प्रजाका हितके अर्थ श्री सवाई जयपुरमें श्रीमन्म हाराजाधिराज राजराजेंद्रश्री १०८ श्रीसवाई प्रतापसिंहजी महा राज हुकम पोंह चायो आपका राज्याश्रय विद्वानहा ज्यांपर वैविद्वान् के साकहा ज्यांके आयुर्वेदकाग्रंथ कंठस्थ पाठहा सोवैद्यक ग्रंथांकी साषसों हुकमके अनुकूल होयकर अमृतसागर नाम तथा प्रतापसा गर नाम ग्रंथ रच्यो अरु श्रीदरबारकी संमती जीं पूर्ण ग्रंथपर हुई सो याग्रंथनें बडी महनतसों संवत् १९१७ प्रथम आश्वीनमें म्हारा प्र० ज्ञानसागर यंत्रालयमें छाप्यो सर्वलोक हितोपकारके अर्थ सो आगें याग्रंथनें हरेकछापकर शुद्धाशुद्धका विचारविना इंग्रंथको विपरीतपणो होवासुंसंवत १९३७ भाद्रपदमासमें प्र० ज्ञानसागरमें प्रसिद्ध कियो. अरु भाव प्रकाशादिकग्रंथ. ओर निघंटकाप्रमाणसों योगचिंतामणी. निघंटरत्नाकर. आदिक ग्रंथाका प्रमाणसों नवीन पूर्वभाग जीमें सर्व उत्तरभागनै सहायताकरै अरु सूक्ष्मकला नाम टीका ग्रंथका उत्तर भागपर पत्रापत्रापर करीहै जीमें पथ्यापथ्य. आहार व्यवहार यथारीतसों धर्‍याहै आगे कहणेंको प्रयोजनहै नवीन पूर्वभाग अरुउत्तरभाग ऊपर सूक्ष्मकलाटीका जीको हक्क हमार पास राष्योहै अरु जो पूर्वभागकी अनुक्रमणिका पूर्वभा गका आदिमेंलिषीहै अरु उत्तरभागकी अनुक्रमणिका ग्रंथका से वट मेंलिषीहै अरु इंग्रंथपर परिश्रम बहोत हुवो है सोविद्वान पुरुष समजलेसी अरु विद्वान पुरुषांकी सहायताविना कोईबी ध्यां नमें लेसीन्ही अरु योग्रंथ विद्वान वैद्यलोकांके अर्थहै अरु इंग्रंथमें कोइबी कारण सों भूल चूक होय सो क्षमा करसी मनें सूचना क रसी ज्यांविद्वान पुरुषांको उपकार मोटो मानसों

पंडित. श्रीधरशिवलाल.

अथ अमृतसागरका पूर्वभागको सूचीपत्र.

श्रीगणेशायनमः

दोहा.

सिद्धिसदनगजवदनघन एकरदनगनराज ॥
सुफलकरहुमनकामना घनतैंज्यौंबनकाज ॥ १ ॥

टीका.

परम इष्ट देव श्रीसिद्धिविनायक सर्वसिद्धिका सदन नाम स्था नछै. अरु गजवदनघन हाथीका सरिषो मुखारविंदहै. ज्यांका मुष उपर एकहीहै दंत ज्यांकै सकल गणांका राजा नाम ईश्वरहै. सो श्री गणेशजी महाराज म्हांका मनकी सर्व कामना सुफल करो कैसै जैसें मेघकी वर्षा होवासौं महाबन सजल फलफूलादिक अ नेक प्रकारसौं आनंदयुक्त होयछै. जैसें अर्थात् महाबनरूपी यो ग्रंथछै जींपर श्रीगणेशजी कृपाकरो घनरूपी जीसौं ओग्रंथ सर्व का मनोरथ सिद्धकरो इसी प्रार्थना श्रीगणेशजीप्रती टीकाकारकी है अरु जो पुरुष स्वाभिमानका प्रभावसौं ईग्रंथनैं यथार्थ नही क हैछै. निंदाप्राय बचन अनेक तरैसौं कहैतौ वांका हृदामै वै बचन रूपी विघनछै. ज्यांको श्रीगणेशजी महाराज समाधान करो ॥१॥

छप्पय.

सतचितआनंदरूपताहिकीप्रभाजुमाया ॥ ताकेनाम अनंतपांचतिनमुष्यकहाया ॥ प्रधानप्रकृतिशक्तिविकृ-तीनित्याजानो ॥ महातत्वकरिआदितत्वचोबीसबषानौ ॥ जोशक्तीशिवसौंमिलरहीभिन्नाभिन्नकर्मनसची ॥ सोअंधपंगुकेन्यायज्यौंचेतनजडसृष्टीरची ॥ २ ॥

टीका.

सच्चिदानंदप्रभु आनंदस्वरूप अखिल ब्रह्मांडका कारण इ

च्छारहित सत् चित् आनंदस्वरूप ऐसाजो परब्रह्मपरमात्मा तीं की प्रकृती नाम मायाछे सो वा परमात्माकी माया नित्यछे जैसें सूर्यकी प्रतिछाया प्रभानाम प्रकाशहै तैसें वा ब्रह्मपरमात्माकी प्रतिछाया जो मायाछे सो जडछे अर चैतन्य जो परमात्मा तींका संजोग करिकै ई अनित्यसंसारनैं यामाया करतीहुई नटकाख्या लकीसीनाई अर यामायाका नाम अनंतछे परंतु पांचनामतो मुख्य कहैछे प्रधान १ प्रकृति २ शक्ति ३ नित्या ४ विकृति ५ सोवाशक्ति शिवसूं मिलीथकी वा प्रकृति संसारकी माता प्रथम बुद्धिनै उपजावै वा बुद्धिकैसीकहैं इच्छामई महत्तत्वजींको स्वरूपछे पाछे महत्तत्वसूं अहंकार उपजकर वैंका तीनगुण हुवा रजोगुण १ सतोगुण २ तमोगुण ३ यांतीन गुणांका परस्पर मिलापसों यथा योग चोवीसतत्व होयछे महत्तत्व १ अहंकार १ तन्मात्रा ५ ज्ञानइंद्रि ५ कर्मइंद्रि ५ मन १ पंचमहाभूत ५ प्रकृती १ येचोवीस २४ तत्त्व ज्यांका समूहरूपी एक घर जींनैं सरीर कहैछे जीं घरमैं शुभाशुभ कर्मको भोगवावालो जीवात्मा आयकर वास करैछे अर तीन दोषनाम वात १ पित्त २ कफ ३ यांका समतुल्य भाव सौं सुष पावैछे जींनैं आरोग्य कहैछे अर यां तीन दोषांका विपरीत भावसौं दुषहोय जीनैं व्याधीनाम रोगादिक कहैछे सो ये ब्रह्म अरु माया याकोविलास अंध पंगू न्याय ज्यों प्रवर्त हुवो जीमैं शुभकर्मांका योगसौं जीवानैं सुषी देखकरकै तो यज्ञादिकांकै वास्तै श्रीवेद ब्रह्मका वक्ता श्री ब्रह्माजी हुवा अर अशुभकर्मांका योगसौं जीवांनै दुषीदेषकर आयुर्वेदनाम वैद्यक ब्रह्मसंहिता एक लक्षश्री ब्रह्माजी प्रगटकरी सोवै आयुर्वेदनाम वैद्यकग्रंथ जीमैं शारीरक निदान औषधी चिकित्सा इत्यादिक सर्व वैद्यब्रह्मसंहितामैं छे जीकीं परंपरा प्रवर्तहुईछे सो ईग्रंथकी टीकामैं संक्षेपसों वर्णन

करीहै मूलवचन ग्रंथांतरसौं विस्तारपूर्वकछै ज्यानैं विद्वान् पुरुष विचारलेसी अर याभी एकबाल बोधज्यूं लिषीहै.

अथ आयुर्वेदलक्षण चित्र १



आयुर्वेद जीमैं आयु हित अहित व्याधि निदान शमन वैसैं ओरभी घणा कारण जाण्या जाय तीनैं विद्वान्जन आयुर्वेद कहैछै ईंकरकै आपकी वा पारकी आयु जाणै तीनैं मुनिवर आयुर्वेदका वेत्ता कहैछै अरु शरीरको अर जीवको संयोगछै जीनै आयु कहैछै अर शरीर जीवको वियोग होयजावै तीनैं मृत्यु कहैछै सोवैं आयुर्वेद द्वारा आयुष्य अनायुष्य द्रव्य गुण कर्म ज्यांका जाणिवासौं वांकासेवन त्याग ज्यांकरिकै आरोग्यतासौं आयुः अनारो

ग्यतासौं अनायुः आपकी वा परायाकी जाणें ज्यातें आयुर्वेदका वेत्ता जाणिलीज्यो.

अथब्रह्मसंहिता प्रादुर्भाव. चित्र २.



प्रथम सृष्टिकर्ता श्रीब्रह्माजी आपकी प्रजानें रोगग्रंसित देष कर दयायुक्त करुणाकरके आयुर्वेदनामा ब्रह्मसंहिता लक्षएक आपका नामसौं वणाई अरु आपको पुत्र सर्व क्रियादक्ष ऐसो दक्षप्रजापति तीनें सर्वांग संहिता पढाई दक्षप्रजापति संहितापढकर सर्वलोकोपकारक प्रयत्नकीया अरु आयुर्वेदमें पूर्णकुशल होयकर वैद्यक परंपरा प्रवर्तकरी आगे, दक्षप्रजापति सर्व क्रियादक्ष ब्रह्म

अथदक्षप्रा॰ चित्र ३.



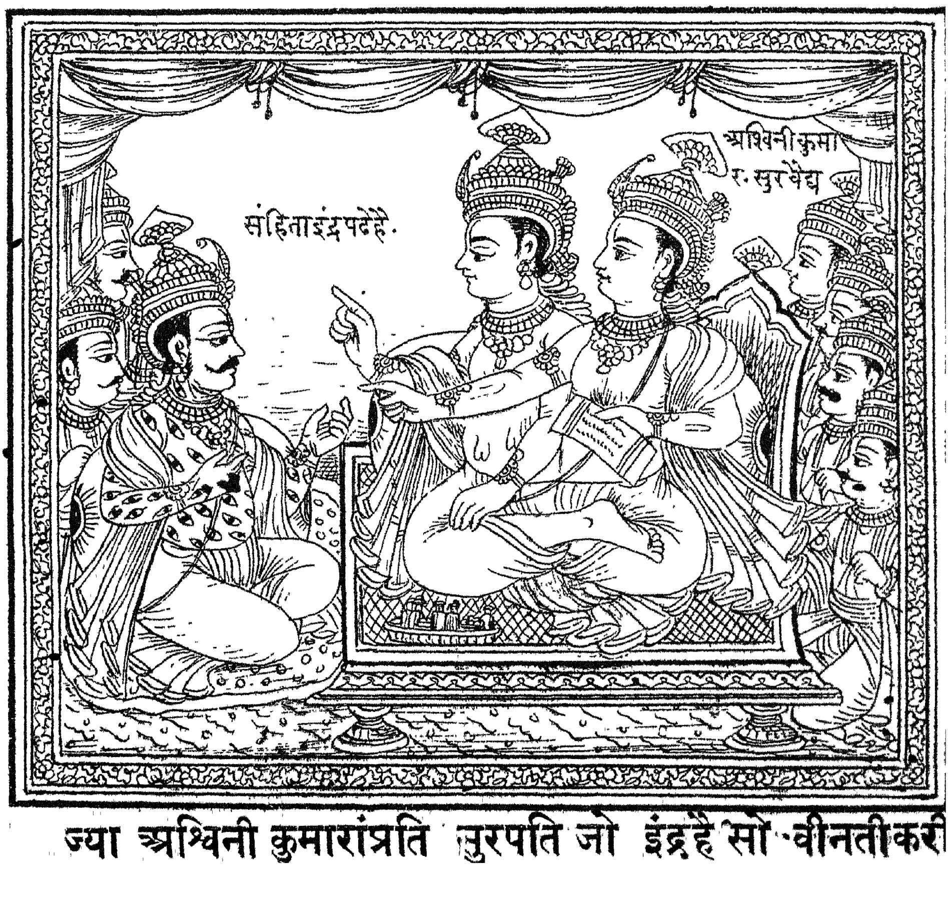
संहिता पढकर सर्व अंगसहित जो ब्रह्मसंहिता तीनें अश्विनीके कुमार हैं दोय स्वरूप अर नीचैको धडएक उपरधडदोय ज्यानें दक्षप्रजापती पढाई

अथ अश्विनी कुमारप्रा॰ चित्र ४.



ब्रह्मा ज़ीसौं दक्षपढी दक्षसौं अश्विनीकुमार पढी अरु देववै
द्यहुआ चंद्रमाकी क्षयीरोगकी महाव्याधी गुमाई अरु भैर व क्रोध
करकै ब्रह्माजीको शिरकाट्यो तीनै पाछ्यो जोड्यो जीसूं यज्ञमें य
ज्ञभाग मिल्यो इंद्रकी भुजास्थंभन हुई जीनैं आछीकरी अरु दे
वासुरसंग्राममें सर्व देवतांका क्षतनाम घाव सुधारकै सुषीकर्‍या
अरु पूष्णा देवताका दांत विषर्‍याहुवा सुधार्‍या अरु च्यवन ऋ
षीनैं युवा अवस्था दीनी भगनामा सूर्यनैं लोचन दिया अरु औ
रभी घणाइलाज कीया जीसौं सुरवैद्य प्रसिद्ध हुवा

अथ इंद्र प्राद॒० चित्र ५.



ज्या अश्विनी कुमारांप्रति सुरपति जो इंद्रहै सो वीनतीकरी

आयुर्वेद संहिता ह्मांनै पढावो जद कृपा करकै इंद्रकौं पढाई. सो इंद्रया संहिता आत्रेय आदिक जो मुनीहै ज्याकौं पढाई.

अथ आत्रेय प्रादु॰ चित्र ६.



एक समय भगवान् आत्रेयमुनि सर्व प्राणीमात्रनैं रोगादिक सौं दुषित देखकर चिंता करताहुवा कहाकरैं अरु कहांजावैं कैसै लोक सर्व आरोग्य होय कारण रोगादिक सौ ग्रस्तहैं ज्यानैं देखणें समर्थ नहींहै. जींवास्तै दुखीलोक देखकैं आपका हृदामैं दुखी बहोत हुवा. अरु विचार कियो. अबै आयुर्वेद पढणोचाहियै जासौ आरोग्यता होय ऐसो विचारकर ऋषी देवालय स्वर्गमे गयें आगै इंद्रका मंदिरमैं प्रवेशकियो जहां इंद्र आदर सत्कार यथोचित करकै आगमनकारण पूछ्यो जद ऋषीयो कह्यो प्रजा

का आरोग्यताके अर्थ आयुर्वेदसंहिता अध्ययन करावो जदां इंद्र सर्वांगसंहिता अध्ययन कराई तदनंतर मुनि आत्रेयसंहिता करी प्रजाका कल्याण अर्थ तदनंतर आत्रेय ऋषीसौं अग्निवेश भेभे जातूकरण पराशर क्षीरपाणी हारीत ये ऋषि संहिता आत्रेय जीसौं पढकर आप आपका नामकी संहितावां करताहुवा.

अथ भारद्वाजप्रादु० चित्र ७.



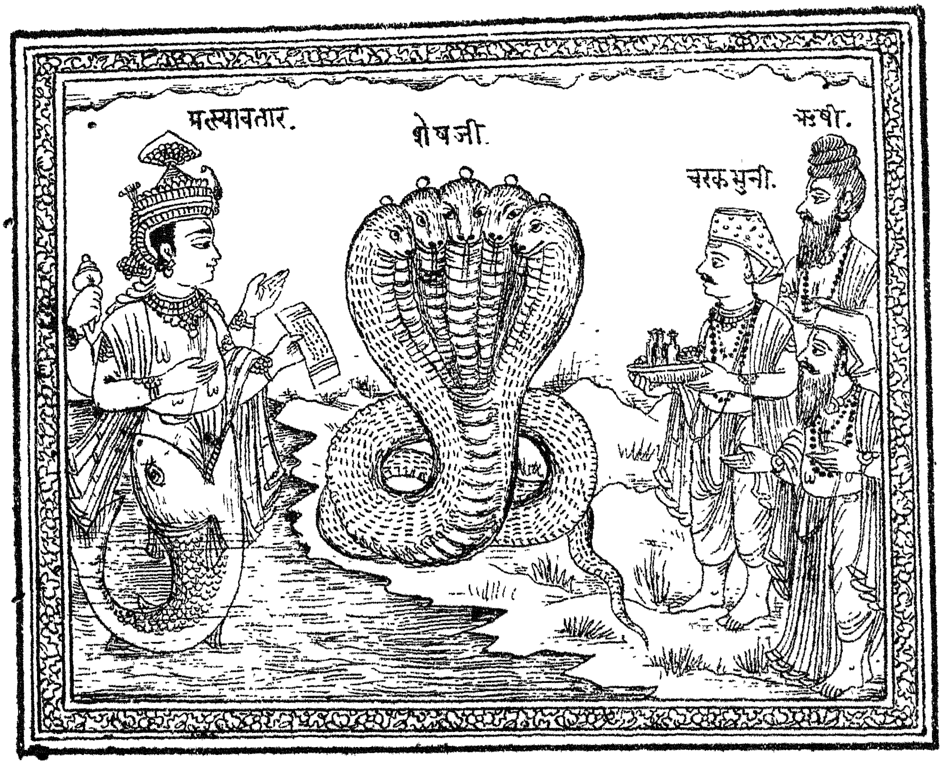
कालांतर ऐसैंही एकसमय हेमवान् पर्वतकै पसवाडे दैवयोगसौं ऋषि भेलाहुवा ज्यामैं भारद्वाज ऋषी प्रथम आये तदनंतर अंगिरा गर्ग मरीचि भृगु भार्गव पौलस्त्य अगस्ति असित वसिष्ठ परा

शर हारीत गौतम सांख्य मैत्रेय च्यवन जमदग्नि गार्ग्य काश्यप कस्यप नारद वामदेव मार्कंडेय कपिष्ठल शांडिल्य कौंडिन्य शाकुनेय शौनक आश्वलायन सांकृत्य विश्वामित्र परीक्षित देवल गालव धौम्य काप्य कात्यायन कांकायन वैज वाप कुशिक बादरायणि हिरण्याक्ष गोलाक्षि शरलोमा गोभिल वैषाणसा वाल्यखिल्या इत्यादि ओरभी बहोत ऋषी केईकतो ज्ञाननिधि केईक संयमी नियमी यमी अग्निहोत्री तपकरकै तेजस्वी एसर्व एकठा होयकर धर्म अर्थ काम मोक्ष यांको जो मूल नामजड कलेवरनाम सरीरहैं जीनैं आरोग्य करवाकैवास्तै विचार करता हुवा कारण ईशरीरमैं रोगादिक प्राप्ति होय जद मात्र तपादिक साधनमैं अंतरायपडै च्यार वर्गकौं हानि करै जीसौं सर्व ऋषीमिल भारद्वाज ऋषीकौं कहीतुम इंद्रपुरी जायकर आयुर्वेद संहिता इंद्रके पासहै सोल्यावो जद ऋषी इंद्रलोक जायकर यथारीतसौ सर्व अंगसहित संहिताल्यायकर सर्व ऋषि मंडलीमैं प्रवर्तकरी बहुधा प्रवर्त हुई प्राणी आरोग्य हुये दीर्घायु हुवे पाछै आप आपका नामसौ सर्व ऋषी आयुर्वेद करकैं गुण कर्म द्रव्य देश काल अवस्था निदान यथायोग सर्ववैद्य होताथका अखिल सृष्टीको उपकार कर्यो ज्यांका नाम



लेकर वर्तमान समयमें उपचार करैहै त्यांका मनोर्थ सिद्धि हो यहै. चि. ८

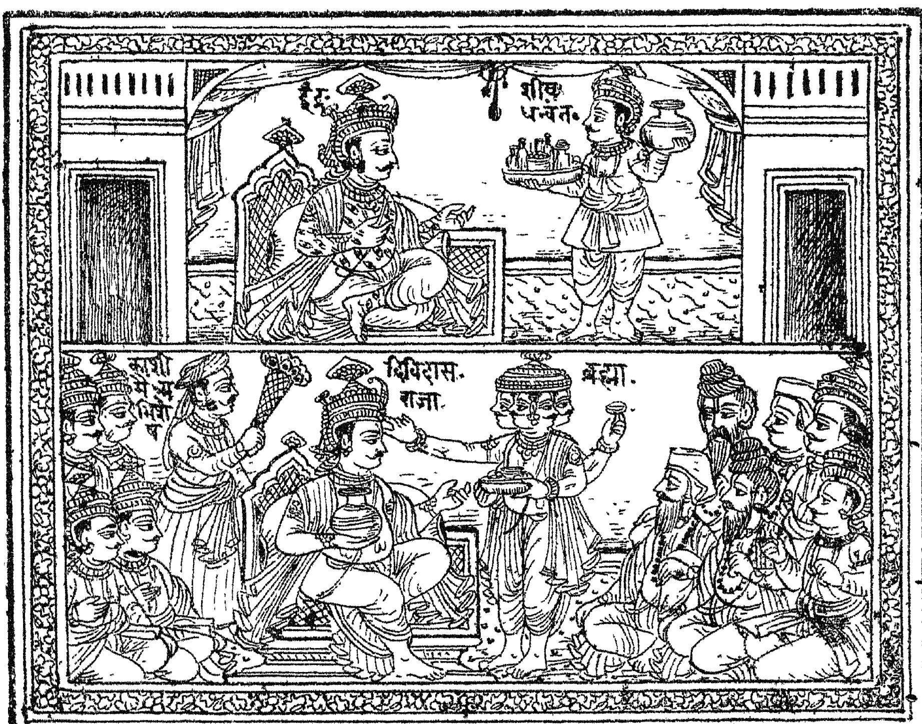
चरक प्रादु० चित्र. ९



• जिस समेमें श्रीनारायण मत्स्यावतारलेकर वेदोद्धार नाम वेद काढ्या जदां श्रीशेषजी वेद वेदांगकों प्राप्ति होके विचारतां हुवा. ज्यांमें सों जो अथर्व वेदको अंगभूत जो आयुर्वेद जींनें विचार्यो सो एक समय श्रीशेषभगवान् पृथ्वीमें विचरता छिप्यारूपकी सी नांई मात्र लोकांनें अनेक तरांसूं रोगग्रस्त देषता हुवा पीडायमान जहां तहां. आंधा. लूला. रोगी. कोढीमरया. अधमरया. अनेक तरांका जीवांने देषके अति दयायुक्त होयकर अनंत भगवान् मनमें चिंताकरि जीसूं रोगांको उपचार होयसो करणों पछे श्रीशेष

जी मुनीका पुत्र होयकर जीं शरीरसौं विचरता अन जाण्यो हुवा विचस्या ज्यांनैं कोईभी नहीं जाण्यां चरकीसीनाई सो चरकाचार्य प्रसिद्ध हुवा जैसै देवाचार्यहै स्वर्गमैं तैसै सो वैशेष अंश चरका चार्य रोगांको आयुर्वेदसों विध्वंस करता हुवा अरु आपका नाम सौं संहिता करी जींको नाम चरकहै ओर आत्रेय मुनीका शिष्य अग्निवेशादिक हुवा सोभी आप आपका बहुधा ग्रंथ वणायाछा ज्यांनैभी शुद्धकरकै संग्रह कीना.

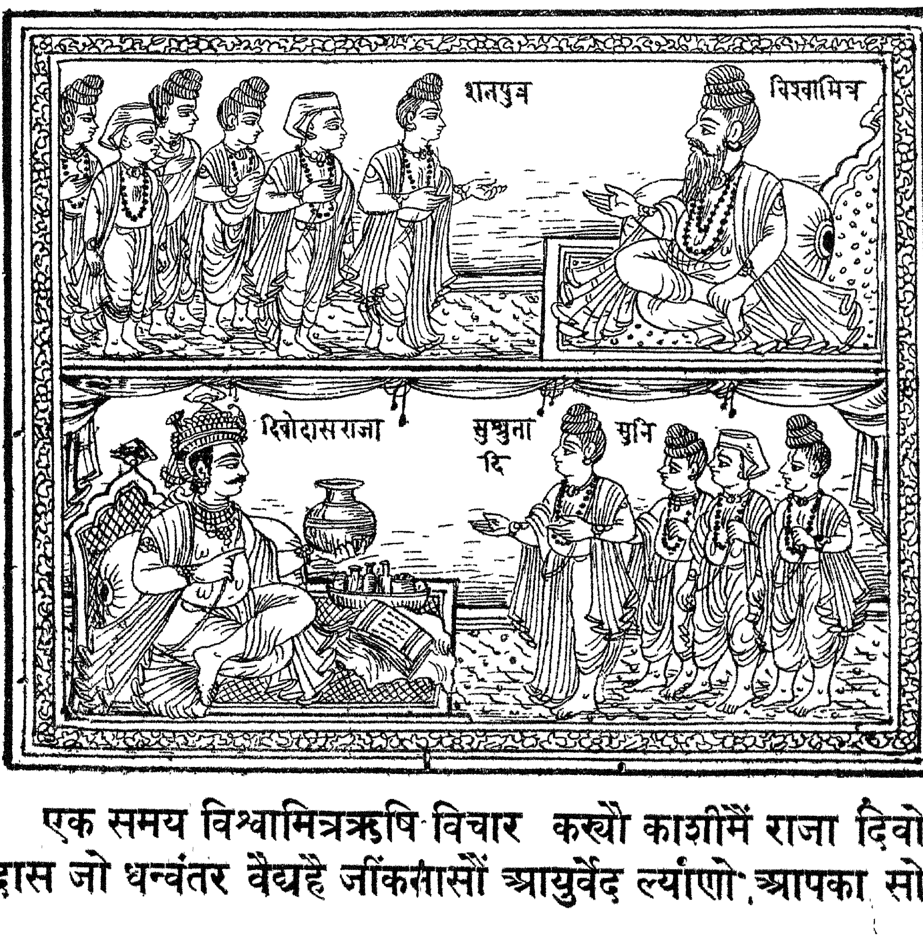
अथ धन्वंतर प्रादु० चित्र १०.



एक समय देवराजकीनिजर पृथ्वीपर पडी जहां प्राणी व्याधी पीडित देषकर अति करुणा करकै धन्वंतरनैं किंचित् कह्यो लोकां का उपकारकैं अर्थ तुम पृथ्वीपर जावो अर प्रजाकोउपकार करो

आरो उपकारकोण नहीकीनाहै भगवान् विष्णुः मत्स्यादि अवतार लेकर धर्मकी स्थापना अर धर्मको नास कख्योहै ईवास्तैथे पृथ्वी पर जायकर उपकार करो काशीमें जावो अरु काशीका राजा होवो आयुर्वेद प्रकाश करो जदां धन्वंतर जीं इंद्रकने आयुर्वेद पढकर काशीमें दिविदास नाम राजा हुवा ब्रह्माजी बडा यत्नसौं राज्या भिषेक कीनो जीसौ प्रष्यात काशीका राजा हुवा आपका नांमसौं संहिताकरी जीनैं धन्वंतरी संहिता कहैछे.

अथ सुश्रुत प्रादु॰ चित्र ११.



एक समय विश्वामित्रऋषि विचार कख्यौ काशीमें राजा दिवो दास जो धन्वंतर वैद्यहै जींकसासौं आयुर्वेद ल्यांणो आपका सो

पुत्रहाज्यामैं एक सुश्रुत नाम पुत्र जीनैं आग्याकरी हे पुत्र तुम काशी जावो. श्री विश्वनाथकों अतिप्यारीहें जीमें उहां धन्वंतर नाम दिवोदास राजाहे जींकनैं आयुर्वेद संहिता पढो. लोक उप कारकै अर्थ पित्ताका वचन मानकर सत पुत्र काशीमें संहिता पढी धन्वंतरकनैं आशीर्वाद लेकर आया अर आपका नामसों संहि ता करी जीनैं सुश्रुत कहैछे अरु सुश्रुतका सरबसत भाईछ्या सोभी अध्ययन करी अरु आप आपका नामसौ तंत्र मंत्र ग्रंथ रचता हुवा. सो वो आयुर्वेद एक समुद्र जीसौं बहुधा ऋषी ओषध्यांका योगादिक रूपीजो रत्नसो आप आपका ग्रंथांमें रच्यां अरु वहो त प्रवृद्धी हुईछे ज्यांको अठै ईटीकामें कहबाको कारण यहछे जो प्राचीन ऋषी वापरं परासौ ई संहिताका जो जो आचार्य हुवाछे ज्यांका नाम लेबासूं वास्मरण करवासूं वा वांकी कृपासूं वैद्य विद्या ओषधी प्रयोगादिक सिद्धहोसी अरु संहिताकी परंपराभी ध्यानमें रहसी अरु वर्तमान समयमें प्रसिद्धहै प्रथम जो कोईभी आरंभ करैछे सो प्रथम गुरुको स्मरण करैछे वा आपका वस्तादका नाम सौं आपहीकौ कान पकड माफ मागैछे

अथ सृष्टिक्रम.

जो परब्रह्म परमात्माकी माया आ सृष्टीहे सो या माया ब्रह्म को विलासमात्र ओ संसारहै. गुणांसहित जो ब्रह्महै सो सगुण ब्रह्महै. ताकी सृष्टीको प्रकार ईग्रंथकी २५ पचीसवी तरंगमें यथा र्थ लिष्योछे. अरु शारीरक नाम या शरीरमें जो ईश्वरी रचनाका जो कारणहे. हाड. मांस. रक्तादिक ओर प्राणादिक आसयादिक मर्मस्थानादिक सर्व कुदरती कारण पचीसमी तरंगमेंछे सो विचार लेसी.

अरु शास्त्र पढेविना गुरुका साचा उपदेस विना दयायुक्त नि

मेल हिम्मविना परमेश्वरका भयविना जो कोई आयुर्वेदका उप
चार करैहै. वै पुरुष धन मान चावैहै सोवै महा काल कूट रूपहै
अर वानैं जमका किंकर व्याघ्र व्याल बाछडा फाड समझणा इ
सीशास्त्रकी आज्ञाहै. जीसैं उत्तम वैद्य है सो प्रथम पांच प्रकार सौं
निश्चै करै सो लिषीहै प्रथम हेतूनाम कारण निदान १ दूजो आ
दिरूप नाम पूर्वरूप जीं आकारका देषवासूं आगै अमुक व्याधी
होसी जीमैं दोयभेदछै एकतो सामान्य दूजो विशिष्ट सामान्य पू
र्वरूप जीनैं कहैछै. दोषांका विशेषता करकै प्रबल व्याधी उत्पन्न
होवणैवाली ज्यांलक्षणांसूं जाणी जायसो सामान्य पूर्व रूपहै अ
रु थोडी व्याधीका कारणसौं गुप्त लक्षण होय जीनैं विशिष्ट पूर्वरू
प कहैछै जिसी जिसी व्याधीका उसा उसाही गुप्त रूप होयहै २
तीजी आकृती नाम रूप जो पूर्वरूप प्रगट होय कर चोडै आवै
जीनैं रूप कहैहै. अमुक व्याधी आहै जोरूपका लक्षण कह्याहै
सो व्याधीका ज्ञान होणकै वास्तैछै ज्यानैं रूप कहैछै ३ चोथो
सात्म्य नाम उपशय जीं उपशयका दोय विभागहै. एकतो जीमैं
सुखसाध्य औषधी अन्न आहार व्यवहार होय जीनैं अनुपशय
नाम सात्म्य कहिजे दूजो जीमैं दुःख साध्य औषधी अन्न आ
हार व्यवहार होय जीनैं अनुपशयनाम असात्म्य कहीजे. ओर
ईंका छै प्रकारसौं भेदहैं सो जाणिज्यो हेतुविपरीत १ व्याधी विप
रीत २ हेतु व्याधि विपरीत ३ हेतु विपरीत अर्थ कारी ४ व्याधी
विपरीत अर्थ कारी ५ हेतु व्याधी विपरीत अर्थ कारी ६ इसा जो
औषधी अन्न आहार व्यवहार ज्यानैं बुद्धिवान आछी तरै विचा
रै जैसैं शीतज्वरनैं गरम औषधी सुंठनैं आदिलेर गरमही अन्न
अरु गरमही अहार व्यवहारसौं जीतै सो हेतु विपरीत उपचारहै
१ अरु अतिसारनैं स्तंभन औषधी पाठादिक प्रमेहनैं हलदी म

सूरादिक अन्न इसाही आहार व्यवहारसौं जीतैं. सोऔषधी विप
रीत उपचारहै. २ अरु वायूका सोथ ऊपर वायुहर्ता अर सोथ ह
रता औषधी इसाही अन्न इसाही आहार व्यवहारसौं जीतै सो
हेतु व्याधी विपरीत उपशय सात्म्य सुख साध्य उपचारहै. ३ अरु
पित्त प्रधान जो व्रणसोथ जीनैं पित्तकारक औषधीसूं घटावै अरु
अन्नभी इसाही अरु आहार व्यवहारभी इसाही सौ जीतै जीनै
हेतु विपरीत अर्थ कारी उपचार कहीजै. ४ जो छर्दीकी व्याधीहैं
जींउपर उलटी कराबाकी औषधी देणी जैसैं मीढल अर इसाही
अन्न अर इसाही आहार व्यवहार सौं जीतै जीनै व्याधी विपरी
त अर्थ करी उपचार कहीजै. ५ अरु जो अग्निसौं दाज्यो थकोहैं
जीनैं अग्निका योगसौं अथवा गरम लेप सौं जीतै अरु मद्यसौं
रोग हुवो होय जीनै मादक औषधीसूं जीतै अरु इसाही अन्न
इसाही आहार व्यवहारका उपचार करै. ज्यांनैं अनुपशय असा
त्म्य कहीजै ६ अरु आपांच प्रकारकी रीत प्रथम आछी तरैसूं
शास्त्रकी रीतसौं गुरुकृपासौं विद्वान् पुरुषांसौं समझी चाहिये जीमैं
चारतो कहीछै अरु पांचमी जाति. आगति संप्राप्ति. येतीन नाम
एकहीका पर्याय बाचीहै जीं संप्राप्तीका लक्षण कहौंछौं तीनदोष
वात पित्त कफ यांका दुष्टपणासौं नाम आप आपका विपरीतप
णासौं.ये विपरीत हुवा थका उंचा नीचा आढा टेढा अनेक भेदसूं
च्यारांकानी फिरै अर जींरोगकी उत्पत्तिकरै जीनैं संप्रातिनाम
जाति कहैछै अथ संप्राप्तिका भेद जाणिजे संप्राप्तिमे सात भेदहै
संख्या १ विकल्प २ प्राधान्य ३ अप्राधान्य ४ बल ५ अबल
६ काल ७ प्रथमसंख्यारूप संप्राप्ति जीनैं कहैछै. जैसै इंहींग्रंथ
कीं दूजीतरंगमैं ज्वरका निदानमैं आठ जातिकी ज्वरकी संख्याहै
१ विकल्परूप संप्राप्ति जीनै कहजे. जो आपस्परीमैं मिल्याहु

वा जो-तीन दोष वात पित्त कफ ज्यांका अंशांश विचारकरै वायु को रुक्ष धर्म पित्तको तीक्ष्ण धर्म कफको सचिकणधर्म सोवै कुप थ्यका कारणांसूं अंशांश मिलकर दोष कोपकरै जदारोग प्रकटहो य ऐसो विचारकरै सो विकल्परूप संप्राप्ति जाणिजे २ व्याधी स्वतंत्रतैं प्रधानरूप संप्राप्ति ३ व्याधी परतंत्रतैं अप्रधानरूप सं प्राप्ति जाणिजे ४ हेतु आदिलेर सर्व एक होयतो बलवान् जाणो ५ थोडा होयतो निर्बल जाणो ६ रात्रि दिन ऋतु वसंतादिक यांमैं भुक्त आहार यांका दोषानुसार समझणो सो कालरूप सं प्राप्ति जाणिज्यो ७ ओर अनेक भेदहै परंतु संक्षेप करकै कह्या है ज्यांका विस्तार ओर ग्रंथांसूं जाणलेसी अरु निदान सर्वरो गांका यथार्थ माधव निदान आदिक ग्रंथांकीरीत मुजब याग्रंथमैं जहां रोगादिक कह्याहै तहां निदानभी कह्याहै अरु रोग १ रो गांकानिदान २ अर रोगांका इलाज ३ अरु गुटिका चूर्ण क्वाथ अवलेह रस भस्म इत्यादिक ४ साथका साथही जीं रोगको का रण जीहींरोगका प्रकर्णमैं कह्योहै जींसो योग्रंथ घणो उपयोगीहै अरु इंग्रंथकी तरंग नाम पचीस अध्यायहै कारण ग्रंथको नाम औषधीरूप अमृत जींको समुद्र नाम सागर अर्थात् अमृत सा गरहै सोवैं सागरमैं तरंगां होयछै. ईवास्तै अध्याय नहीं कही. अर तरंग कहीहै सोवैं पचीस तरंगांको सूचीपत्र आगैंछै. जीसो सर्वरोगांकी गणना सहजमैंहीं ध्यानमैं आसी अरु सुगम प्रयो जन होसी.

प्रथम या ग्रंथकी उपयोगी सूचना जीनैं सदाध्यानमैं राषणै योग लिषूंछूं उक्तानुक्ता १ युक्तायुक्त २ औषधीसमय ३ औषधी प्रतिनिधि ४ औषधी प्रमाण ५ क्राथादि क्रिया ६ स्नेहपाक ७ रसादिधातुशुद्धि ८ नाडीआदिक अष्टविध परिक्षा ९ ऊजनादिक

मान १० वैद्यलक्षण ११ वैद्यको मुख्य विचार १२ पथ्यापथ्यवि चार १३ मूर्षवैद्यनिषेध १४ टीका बणायकर छापणेको प्रयोजन १५ इत्यादिक समझणा अथवा कंठपाठ करणा योगहै जुदा जुदा षुलासा कर लिषूंछूं

अथ उक्तानुक्त १.

प्रथम उक्त नाम या अमृत सागरमैं निदान औषधी चिकित्सा औरभी अनेक योगायोग कह्याछै ज्यांनैं उक्तआदिक योग जाणना अनुक्त नाम या अमृतसागरमैं नहीं कह्या होय जो योगा योग ज्यांनैं अन्यशास्त्रांसौं अथवा विद्वान वैद्यांकनैंसूं पढकर वाकब होणो अवस्यछै इतिउक्तानुक्त.

अथ युक्तायुक्त २.

युक्तनाम योगकरणैं लायक औषधी आदिलेर जो पदार्थहैसो. जैसे सर्व कार्यमैं नवीन औषधी लेणी परंतु वायविडंग पीपल गुड धणों सहत मधु इत्यादि साल उतार जूना लेणा धणा जूनां नहीं लेणा अरु गुडूची नीमगिलोय कुडाछाल अरडूसो कोहोलो कूष्मांड शतावरी अरु गंध अश्वगंधा षरैंटीबला सूंफ ये औषधी सूषीही लेणी परंतु कोई वषत आलीको संजोग होयतौ आलीका कारणसौं दूणी नहीं लेणी और कोईभी औषधी आली होयतो सुषी औषध्यांका योगमैं आलीनैं दूणी लेणी इसी वैद्य संप्रदाय है परंतु आलीमैं सुषीमैं गुणतुल्य रहैसोही तुल्यलेणी अर औषधी सूष्यां पाछै हीनगुण होय जायजीकी तो आली होयसो दूणीही लेणी इसो विचार वैद्यनैं अवस्यहै अरु औषधीका पांचअंग कह्याछै. मूल १ डालपेड २ पान ३ फूल ४ फल ५ ये पंचाग कहैछे. जीं औषधीका योगमैं जो अंग षुलासा कह्यो होय सोतो

अंग लेणो अरु जहां अंगनहीं कह्यो होय जहां मूलही लेणो प रंतु वैद्य संप्रदायसूं वाकब होणो जैसें सूंठ आसगंध सतावरी मूसली चित्रक कटुकी इत्यादिक मूलही जाणना अरु जहां विशेषता है तहांनाम लिषेहीहै जैसें एरंडमूल अर्थात् फल पत्रादिक आपका जुदा जुदा कार्यमें लेणा होसी अरु मिरच पीपल कौंच वायविडंग पवाड अरीठा कमलगटा जायफल इत्यादिक फल बीजही प्रसिद्ध है अरु सनाय नाम सोनामुखी नागवल्ली कुंमारपाठो भांग गांजो इत्यादिक पानही प्रसिद्धहै अरु गुलाब सेवती लवंग इत्यादिक नामसौं फूलही प्रसिद्धहैं अरु नीमगिलोय मलेठी अकलकरो पदमाक देवदार चंदन इत्यादिक लकडीही प्रसिद्धहै अरु कुडो दालचिनी लोद इत्यादिक छालही प्रसिद्धहै. अरु विशेष समझ शास्त्रतें वावैद्य लोगांसूं लेणी मुष्य स्वबुद्धीको प्रभाव काम आसी जीमें नालक बचनहै. ॥ रागीपागी पारषी नाडीवैद्य रुन्याव ॥ गुरूग्रंथ इनकैषरा पणहिरदातणांउपाव ॥ १ ॥ अर्थ ॥ रागी नाम रागवेत्तां पागीनाम खोजी. पारखी नाम जौंहरी रत्नपारखी. नाडी वैद्य नाडीसौं वात पित्त कफ या तीन्यांका कोपसमजे परस्पर अंशांश मिलकर उपद्रव करैं ज्यांसौं अनेक रोग प्रगट होयछे अर समानतासौं आरोग्यता करै. इसो विचार सदा ध्यानमें राषै सो नाडी वैद्य कहीजे अरु केईक मिथ्या वार्तालापइसाबी चालेहै रोगीको षायो पदार्थ छह महिना पहलीको कहदेवेंछे अरु पडदामें बैठा मनुष्यका हातकै सूत वंधायकर वैंसूतको दूजोमूढो वैद्य आपका हातसूं पकडनाडी देषें जीयान सूतका स्पर्श करवासूं रोगीका रोगका अहवाल कहदेवेंछे सो ये वार्ता कोईबी ग्रंथांमें नहींछे परंतु इसागपाटा घणी तरेकाहै या अंध परंपरा विद्वान पुरुषाका ध्यानमें आवणै लायक नहींहे ओर न्याव नाम निश्चयकरणो साचको

अर झूटको धर्मशास्त्रसैं कानूनसैं वादी प्रतिवादीकैं माहसौं साचो अभिप्राय लेणोसो न्याव एतांकैं गुरु उपदेश अर शास्त्र पठनतो खरा पण स्वबुद्धि विचारभी चाहिए इति युक्तायुक्त विचार. २

अथ औषधी समय ३.

औषधीको योग लिष्योहै परंतु औषधी लेणै खाणैकोवा पीवणैकोवा अवलेह चाटणैको समय जहां नहीं लिष्यो होयतो औषधी प्रभातही देणी अरु मुष्य औषधी लेणैको योगतो मुष्य औषध्यांमैंहीहै अरु एवजमैं दूजी लेकर योग करणोसो तो गौण पक्षसाधारण होयहै और काढो चूर्ण वगैरै तो प्रभातही देणो चाहिये रेचक वमन यांवास्तै तो प्रभातही देणों यांकैं उपर भोजन देणों नहीं रेचक वमन हुवां पाछै पतलो पेजही देणो अपानवायू अधोगत होवाकै वास्तै औषध भोजनकै पहली देणी अरुचि वास्तै औषध भोजन करती समैं देणी समान वायु नाभीमैं कुपितहुवां थकां अग्निमंदहोय जद अग्निप्रदीप्त करवावाली औषध भोजनका मध्यमैं देणी व्यान वायुका कोपमैं भोजनका अंतमैं औषध देणी हिचकी आक्षेपक वायू यां ऊपर भोजन पहली और पाछै देणी कंठस्थान वायू कुपित होयकर स्वर भेदादिक कंठ बैठणो होय जद संध्याकालका भोजनमैं औषध सेवन करणी प्राणवायू हृदयस्थवायू कुपित हुवांथकां संध्याकालका भोजनका अंतमैं औषध देणी तृषा ओकारी हिचकी स्वास विषदोष यां उपर वारंवार अन्नकीसाथ अथवा भोजनकै आगै पाछै देणी कर्ण नेत्र नासारोग पाचन शमन औषध भोजन का आदि अंतमैं रात्रिमैं देणी इति. ३

औषध प्रतिनिधि ४.

काढो चूर्ण इत्यादि कोईवी औषधका योगमैं हरेक औषध मिलै

नहीं तो औषधीकी एवजीमैं तत्समान गुणवाली औषध मेलण करणी जैसैं अतीसकी एवज नागरमोथो अमल वेदकी एवज चूको अथवा चिणषार किस्तुरीकी एवज जायपत्री ऋद्धिकी एवज बला वृद्धिकी एवज नागबला मेदकीए० आसगंध महामेदकी ए० प्रसारणी. काकोली क्षीर काकोलीकी ए० शतावरी जीवककी ए० गीलोय ऋषभककीए० वंसलोचन जावत्रीकी ए० लवंग तगरको ए० कूठ वौलसीरीकी ए० कमलकंद चित्रककीए० दंतीमूल सहत मधूकी ए० पुराणोगुड स्वर्णभस्मकी एवज सार केसरकोए० कुसुंभो मोतीकी भस्म नहीं होयतो सीपको चूनो इत्यादि विस्तार निघंटप्रकासमैं देषणो इति औषध प्रतिनिधि स०४

औषध्यादिकांका प्रमाण ५.

जीं कषायादि औषधांमैं तोल कह्यो नहीं होय जैठैं सारी औषध समभाग लेणी स्वरसनाम औषधको अंगरस लेणो कह्यो जठैं अंगरसकी मात्रा दोय तोला लेणी स्वरसमैं सहत, गुल, इत्यादिक घालणा. होयतो मासा ६ घालणा पुटपाककी मात्रा नित्य चार तोला चाहिजे जीमैं सहत घालणो होय तो तोलो १ घालणो कल्क चूर्ण घालणो होयतो मासा ६ घालणो इति० ५

क्वाथादिक्रिया ६.

कांढामैं सर्व औषध मिलकर तोला ४ नित्यलेकर कूटणी जीमैं सोलागुणों पाणी चोसठ ६४ तोला घाल मंदाग्निसूं मटकीगडगामैं उकालणी जींको ८ मोहिसो तोला ८ उतारनिवायो पायदेणो कदासयो उजनसिवाय होयतो ईसूं आधोतोला ४ देणो और बालकनै तो मासा ३ सूं लेकर तोला १ ताईदेणो काढोदेणो सो अन्नपच्यां पाछे देणो काढामैं मिश्री घालणी होयतो वात पित्त

कफ यांरोगांउपर अनुक्रमसौं चौथै आठवै सोलवै हिसै घालणी ओर सहत घालणो होयतो अनुक्रमसों सोलवै आठवै चौथै हिसै घालणो ओर जीरो, गूगल, क्षार, सिलाजित, हिंग उगैरे औषध मासा ३ घालणी ओर दूध, घृत, गुल, तेल, कल्क, नाम लुगदी चूर्ण उगैरे औषध काढामैं घालणी होयतो तोला १ घालणी और हिम फांट यांको प्रमाण काढासदृशछै. हिमनामरातनै औषध भिजोयकर प्रभात मसल कस छाणलेसो फांट नाम औषध कूठकर गरम पाणीमैं भिजोय तुरत मसल छाण लेसो कल्क नाम सूषी अथवा आली औषदलेर सिला लोढीसूं लुगदी करैसो ओरकल्कको प्रमाण तोला १ तांईछे जीमै सहत घिरत तेल इत्यादि घालणा होयतो दुगुणा घालणा ओर मिश्री गुल बरोबर घालणा और चूर्ण करणोसो अत्यंत सूषी औषध लेकर सुंदर कूटकर कपड छाण करणो जीनैं चूर्णकहिजे सो मोटा मनुष्यनें मासा ६ छेसु लेर तोला १ तांई देणो बालकनै मासो १ लेर मासा ३ पर्यंत तारतम्य देषकर देणो चूर्णमैं गुल घालणो होयतो समानउजन घालणो मिश्रीतो दुगुणी हिंगतो सेककर घालणी घृतादिक तो दुगुणो पाणीतो चूर्णसूं चोगुणो चाहिजे. पाणीकीसाथ चूर्णकी औषध पेटमैपसरकर गुणकरै औरचूर्णनै कोई वीरसकी भावना तथा पुटदेणो होयतो औषध तरांतर होय जठा तांई देणो जो यह औषधांका प्रमाण कह्याछे. सो देसकाल प्रकृति वय अग्नि बल इत्यादिकानैं पूव विचार करदेणा. इति० ६

स्नेह पाक ७.

कल्कसूं चोगुणोतेल, अथवा घृत लेकर जीं घृत तथा तेलसौं चौगुणौं पाणी तथा और द्रव पदार्थ घालकर सिजोवणो सोतेल तथा घृतमात्र बाकीरहै जैठा तांई पाक करणौ पछै वोघृत तथा तेल क

पडासूं आणलेणो जीं स्नेहकी मात्रा तोळा चारदेणी पछै तो औष धको स्वभाव समझकर देणी. इति० ७

रसादिक धातु शुद्धी ८.

पारा गंधक इत्यादिकांका शोधन तथा मारण तरंग २३ तेवी समैं पानै ४९५ कामैंछै. इति.

अथ अष्टविधपरीक्षा ९.

ओरनाडी आदिलेर परीक्षामात्र प्रथम तरंगमैंछै मुख नेत्र जि व्हा मल शब्द स्पर्श रस गंध रूप यांसूं जोपरीक्षा करणी सो विधि पूर्वक येसुधऱ्या हुवा तो साध्यहै. अरु विगड्या थका असाध्यहै. यानैं आछीतरै विचारणा यांको विस्तार ओरग्रंथांसूं जाणज्यो. ओर ईग्रंथको पत्रांकादि सूचीपत्र नाम षतावणीछै. सुग्रंथका स माप्तिमैंछै. जीमैं रोगादिकांकी षतावणी विशेषछै. ओर मुख्यमुख्य औषधांकीछै. बाकी साधारण औषधीतो जीं रोगको निदान करसी जीहीं रोगका प्रकर्णमैं सारी पुलासा मिलसी कारण सू चीपत्रको विस्तार घणो होय. इति. ९

अथ तोलको प्रमाण. १० प्रथम.

बारा १२ सरसूंको एक १ यव दोय २ यवकी १ रती षट्रती ६ को १ मासो च्यारमासां ४ कीएक १ टांक च्यार ४ टांकको १ एक कर्ष च्यार ४ कर्षकी एक १ पल च्यार ४ पलको एक १ पांव च्यार ४ पावको एक १ सेर जीनैं प्रस्थ कहैछै. च्यार ४ प्रस्थकी एक १ आढक च्यार ४ आढकको एक १ द्रोण च्यार४ द्रोणकी एक १ द्रोणी होयछै. च्यार ४ द्रोणीकी एक १ खारी हो यछै. यह तोल आत्मारामजी आत्मप्रकासमैं संग्रहकऱ्योहै.

अथ द्वितीय मान २.

मध्यवर्ती आठ ८ चावलकी रती १ एक आठ ८ रतीको मासो १ एक बारा १२ मासांको तोलो १ एक तीन ३ तोलाको टको १ एक बीस २० टकांको सेर १ एक पांच ५ सेरकी पंचसेरी १ एक आठ ८ पंचसेरीको मण १ एक एकका चावल संख्या १८४३२०० ये प्रमाण फतेसिंह कवीकी दस्तूर मालिका नाम ग्रंथमेंहै.

अथ तृतीय लीलावतीमें मागधीतोलहै ३.

दोय २ जवकी एक १ गुंजा तीन ३ गुंजाकी एक १ वाल. आठ ८ वालको एक १ धरण दोय २ धरणको एक १ गद्याणक चवधा १४ वालको एक १ धटक ॥ पुनः पांच ५ गुंजांको एक १ मासो सोला १६ मासांको एक १ कर्ष च्यार ४ कर्षको एक १ पलहोयहै ॥ पुनः ॥ पौणगद्याणक तथा बारा १२ वालको एक १ टांक वोहोत्तर ७२ टंकको एक १ सेर चालीस ४० सेरको एक १ मण होयछे यहतोल तुरुक संज्ञक है ॥ पुनः ॥ चवधा १४ वालको एक १ धटक एकसो बाणवैं १९२ धटकको एक १ सेर पांच ५ सेरकी एक १ पंचसेरी आठ ८ पंचसेरीको. एक १ मण यह तोल आलमगीर साहकी राजध्यानीमें बंध्योहै.

अथ चतुर्थमान सारंगधरसें मागधी. तोल.

तीस ३० परमाणूंको एक १ त्रसरेणू तथावंसी होयछे. षट् ६ वंशीकी एक १ मरीची नाम अतिसूक्ष्म होयछे. षट् ६ मरीचीकी एक १ राई तीन ३ राईकी एक १ सर्षप आठ ८ सिरसोंको एक १ यव च्यार ४ यवांकी एक १ गुंजा षट् ६ गुंजांको एक १ मासो जीको नामहेमधान्यककहेहै. च्यार ४ मासांको एक १

शाण जींका व्यवहारीका मासा तीन ३ होयहै. जीनैं निष्क धर ए टंक कहैछे. दोय टांकको एक १ कोल जीका व्यवहारी मासा ६ होयहै दोय २ कोलको एक १ कर्ष सो वो कर्ष मागधी तोल को मासा १६ सोलाकोहै. परंतु वर्तमान तोलको तोलो १ एक होयछे च्यार ४ कर्षको एक १ पल च्यार ४ पलको एक १ पाव चार ४ पावको एक १ शेर नामप्रस्थहोय च्यार ४ प्रस्थको १ एक आढक नाम चोसेरीहोय जींका व्यवहारी तोला २५६ होय. अरु मागधी मासा १६ सोलाको एक व्यवहारी तोलो छे. जहां टांक मासा ४ च्यारकी कहीछे परंतु तोला १ कीटांक ४ च्यार होयहै जहां वर्तमान तोलमैं बारा १२ मासांको तोलोहै. तहां तीन ३ मासांकी टांक १ च्यार ४ टांकको तोलो १ एक होयहै जीं तोला १ एकको सर्व रती छ्याणवै ९६ जींमैं रती ८ को मासो एक बारा १२ मासांको तोलो एक ये वर्तमान तोलहै

प्रथमरीत.		द्वितीयरीतमासा १ रती ६ को	
८ रतीको	१ मासो.	च्यारमासांकी टांक.	१
१२ मासांको	१ तोलो.	च्यारटांकको अक्ष तोलो	१
४ तोलांकी	१ पल. आनो -)	च्यारअक्षकोविल्वएककातो.	४
८ तोलांकी	१ अधपीप्रसृती =)	च्यारविल्वकोकुडवएककोतो.	१६
१६ सोलातोलांको.	१ पाव. कुडव ।)	च्यारकुडवकोप्रस्थएक. जींकातो.	६४
३२ तोलांको	१ अधशेरशराव.॥)	च्यारप्रस्थको आढकएक. तो.	२५६
६४ तोलांको	१ सेर. प्रस्थ. १)	च्यारआढककीराशी १ एक तो.	१०२४
२५६ दोयसोछपनतो०	१ आढक.		

१०२४ एकहजार चोईसतो.	१ द्रोण.
२०४८ दोह०अडतालिसतो.	१ शूर्प.
४०९६ च्यारह० छिनवैतो.	१ द्रोणी.
१६३८४ सोलाह० तीनसो चोरासीतोलांकी	१ खारी.
४०० तोलांकी.	१ तुला.
८००० आठहजार तोलांको.	१ भारहोयहै.

च्यारराशीकी गोणी एकतोल } ४०९६

अथ पंचम मान.

अमृत सागर ग्रंथमैं जोमान औषधी प्रयोगमैं लिष्याछे. सो ई प्रमाणछे रती मासो टांक पईसो टको पाव सेर इत्यादिक छे सो वर्तमान समयग्रंथ कर्ताकी छी जीसमैं मैं तोल बांध्याछे जींको प्रमाण याग्रंथकी टीकामैं वर्तमानसमैं कै अनुकूल लिषूंछूं आठ ८ रतीको एक १ मासो तीन ३ मासांकी १ एक टांक च्यार ४ टांकको एक १ तोलो तीन ३ तोलांको एक १ टको सोवैटकाका पईसा २ दोय होयछे अठाराटकांको सेर एक १ जींका तोला ५४ चोपन्न आसरछे सोवांका रुपया ५६ छपन्न आसर होयछे. अरु आधुनिक सेर पक्को बंध्योछे. सो वो सेर टका अठाईस २८ भरकोछे सेर ४० चालीसको मण १ एक अठरा १८ टकाभरसुं मण कच्चो होयछे अरु अठाईस टकांभरसुं मण पक्को होयछे. प्राचीन रीत कच्चामणसुं ग्रंथकर्त्ता गिणैछे इतिमानप्रमाणसमाप्त १०

वैद्यलक्षण.

गुरु मुषसौं सुणकर पढी हुवी जो विद्या वैद्य शास्त्रकी जीमैं निपुण, और हातमैं जस, और जुलाब, ओकारीकी क्रियामैं कुशल, निर्लोभी, धैर्यवान, कृपालु, पवित्र, निष्कपटी, सत्यवादी, आलसरहित, दयावान्, एता जीमैं लक्षण होय सो वैद्य औषध देवानैं योग्यछे. इति० १

वैद्यको मुख्यविचार १२.

प्रथम वैद्यनैं सूक्ष्मरीतका पूछणां सों रोगीको मूल कारण नामको एसो रोगकोणसा कारणसुं हुवो यानिश्चय करणी पछे साध्य, असाध्य, कष्टसाध्य, यांको विचार करणो साध्य अथवा कष्टसाध्य

रोगी होय तो उपाय करणो असाध्यहोय तो उपाय नहीं करणो कारण असाध्यको उपाव हरिभजनछे इति० १२

पथ्यापथ्यविचार १३.

रोगीनें वैद्य कहेसो पथ्य करणो अवश्यछे अथवा रोगी आपका मनसों विचारकर पथ्यतो करेंहीं कारण पथ्यका करणासें रोग निवारण होयछे. जद औषध षायकर पथ्यकरे जींको रोगतो निवारण होय जीमें संदेहबी नहींछे और जोरोगी पथ्य करणे वालो जीनें औषधी सेवन करणेकी गरज नहीं जिस तरेही रोगी पथ्य नहीं करणे वालो जीनेंबी औषध सेवन करणेकी गरज नहीं कारण अपथ्य रोगी मरे न जीवे इति १३.

मूर्खवैद्यकी औषधी लेणोनिषेध.

रोगीनें मूर्ख वैद्यका हातसों औषध लेणी नहीं, व्याधीमें पीडित होय. ज्वरसों दुखीहोय तोबी मूर्ख वैद्यकी औषध लेणी नहीं कारण मूर्ख वैद्यका उपावसों गुण आवणोतो कठीणछे पण औगुतो जरूरही तुरत होय. ईवास्ते मूर्ख वैद्यकी औषध लेणी नहीं जैसे कुलीन पुरुष व्यभिचारिणी स्त्रीनें त्यागदेवेछे जियान मूर्ख वैद्यका हाताकी औषध त्याग देणी इति० १४

ग्रंथछापणेको प्रयोजन १५.

सर्व लोक हितकारक अमृत सागरनें सातवींवारमें हमारी नवीन टीका संयुक्त करके हमारा प्र० ज्ञानसागरमें शुद्धकरके छाप्यो हें जींकी किंमत सुलभ प्रयोजन घणो सर्व कोईनें मिलसके ईवास्ते याग्रंथको वांचकर कोईबी मूर्ख वैद्य, धुतारा, ठग, वाचाल,

लालची यांकी खोटी औषधरूपी फांसीमें पडसी नहीं इसी हमारी खातरीछे.

इति उक्तानुक्तादि पंचदश प्रयोग संपूर्णम् ५.

अथ अमृत सागरमें तरंग पचीसछे. ज्यां तरंगांमें जुदीजुदी रोगांकी गिणती करीहे. ज्यां पचीस तरंगांका सूचीपत्र प्रथम भाग में लिष्याहे वाकबीके अर्थ. सो जाणजो.

प्रथम १ तरंगमें सूचना लिष्यते पृष्ठ १.

रोगविचार नाडी परीक्षा रोगपरीक्षा. स्वप्नपरीक्षा दूतपरीक्षा सुकन परीक्षा. कालज्ञान औषधी विचार देशकाल. अवस्थाबल. विचार अर्थ कर्म अग्निबल रोगीको साध्य असाध्यविचार रोगांका भेद रोगांकी उत्पत्ति इति प्रथमतरंग. १

अथ द्वितीय २ तरंगमें पृष्ठ १७.

प्रथम ज्वरको निदान ज्वरकी उत्पत्ती. १ ज्वरकामात्रभेद सर्व उपचार निदान. औषधी रसादिक इति द्वितीय तरंग. २

अथ तृतीय ३ तरंगमें पृष्ठ ५०.

अतिसाररोग २ अतिसारका निदान औषधी लिषीहे. अरु संग्रहरणी रोग ३ निदान. औषधी ववाशीर रोग ४ नाम अर्श रोग. मूलव्याधी निदान औषधी सहित लिषीछे.

अथ चतुर्थ ४ तरंगमें पृष्ठ ७४.

अजीर्णरोग. ५ मंदाग्नीरोग ६ भस्मकरोग ८ विसूचिकारोग ८ अलसरोग ९ विलंबिकारोग १० कृमीरोग ११ पांडुरोग १२ एतारोगहे.

अथ पंचम ५ तरंगमें पृष्ठ ९२.

अथ छठी ६ तरंगमें पृष्ठ ११६.

अथ सप्तम ७ तरंगमें पृष्ठ १३१.

अथ अष्टम ८ तरंगमें पृष्ठ १५२.

अथ नवम ९ तरंगमें पृष्ठ १८३.

अथ दशम १० तरंगमें पृष्ठ १९३.

अथ सप्तदशमी १७ तरंगमैं पृष्ठ ३४१.

शीतपित्त, उदर्द, कोठ, उत्कोठ, जीनैं पित्तीरोग कहेंछे. ६७ अम्लपित्तरोग ६८ विसर्परोग ६९ स्नायुकनाम वालो, तथा नारू रोग ७० विस्फोटकरोग ७१ फिरंगवाय अथवा उपदंश वायू खरावगरमीको रोग ७२ मसूरिका नाम रोग ७३ सीतला बोदरीभोरींयेमसूरिकामैं आवांतर भेदछे.

अथ अठारवीं १८ तरंगमैं पृष्ठ ३६६.

क्षुद्ररोग ७४ मस्तकका रोग ७५ नेत्रांका रोग ७६ कर्णनाम कानका रोग ७७ नाशिका नाम नाकका रोग ७८ मुखका रोग ७९ ओष्ठनाम होठांका रोग ८० मसूढांका रोग ८१ दंत नाम दांतांका रोग ८२ जिव्हानाम जीभका रोग ८३ तालूनाम तालवांका रोग ८४ कंठ रोगनाम गलाका रोग ८५ एता रोगछे.

अथ उन्नीसमीं १९ तरंगमैं पृष्ठ ४४२.

स्थावर विषनाम वृक्षको शस्त्रको. सोमलको ओरको ईभी जड़ पदार्थसौं विषहोय ज्यांको उपद्रव होय जीनैं स्थावर विषरोग कहेंछे. ८६ जंगम विषनाम सर्पादिक जीव मात्रसौं दंत. नख. मूत्र. मल. स्पर्श इत्यादिकसौं विषका उपद्रव रोग होय जीनैं जंगम विषरोग कहेंछे. ८७

अथ बीसवीं २० तरंगमैं पृष्ठ ४५२.

स्त्रीरोग ८८ स्त्रीरोगमैं आवांतर भेदहे सोलि० प्रदररोग १ सोमरोग २ मूत्रातिसार ३ योनिरोग ४ योनीकंदरोग ५ वंध्या रोग ६ कीलरोग ७ मूढगर्भरोग ८ मक्लकरोग ९ सूतिकारोग १० स्तनरोग ११ एता रोगहे.

अथ इक्कीसवी २१ तरंगमैं पृष्ठ ४७२.

बालरोग ८९ बाल रोगमैं एता भेदहै बालग्रह नवज्यांका सर्व भेदहै बालकांका सर्व रोगांका जुदा जुदा भेदहै सो अनुक्रमसों सूची पत्रमैं मिलसी इति.

अथ बावीसवीं २२ तरंगमैं पृष्ठ ४८९.

षंढरोग* ९० षंढनाम नपुंसक रोग जींकै वास्तै उपचार बहुधा लिष्याछै. बावीसमी तरंगमैं संक्षेपसौं लिष्याहै विशेष निदान माधवादिक ग्रंथांमैं देष लेसी इति रोगादिक्रम समाप्त.

अथ तेवीस २३ वीं तरंगमैं पृष्ठ ४९९.

अथ औषधी क्रिया— धातुशुद्धि, धातुमारण, मृगांक, रूपरस, तामेश्वर, नागेश्वर, वंगेश्वर सार, सुवर्णमुषी, अभ्रक, हरताल, चंद्रोदय, रससिंदूर, पाराभस्म, वसंतमालती हिंगलू इत्यादि क्रियाहै.

अथ चोवीसवीं २४ तरंगमैं पृष्ठ ५०४.

दशमूल आसव शिलाजीत जवषार चणषार स्नेहविधि स्वेदविधिः वमन. विरोच. षट्ऋतूमैं हरडे लेणैकीविधि बस्तिकर्म धूमपान धूप रक्तस्राव एता कार्यहै.

* षंढरोग पांच प्रकारकाहै. ईर्ष्यक. आसेक्य. कुंभीक. सुगंधी. षंढ. जींकै दूजांको संगम देष्यां चेतना होयछै. सो. ईर्ष्यक नपुंसक. १ जींकै स्त्रियादिकांको आलिंगनकियासूं चेतना होयसो. आसेक्यनपुंसक. २ जींकै स्वगुद मर्दन कराया चेतना होयसो कुंभिकनपुंसक ३ जींकै योनीकीवा शिश्नकी गंधवास लियां चेतना होयसो सुगंधि नपुंसक. ४ जो स्त्रीकीसी चेष्टाकरै सो महाषंढहै. वीर्यहीनहै. अप्रतिकारहै. ओरपहलीका च्यार षंढ कष्टसाध्यहै. याही रोगको उपाव बाईसमी तरंगमैंहै.

अथ पच्चीसवीं २५ तरंगमें पृष्ठ ५२३.

षट्ऋतू वर्णन त्रिदोष कोपका आहार व्यवहार षट्ऋतूसेवन प्र० दिनचर्या रात्रिचर्या सिखरण मठो षट्ऋतु स्त्रीसंग शारीरक सृष्टीक्रम प्रकृती निद्रा इत्यादि सर्व वर्णनहै.

इति तरंग पच्चीस संग्रह सपूर्णम्.

अथ अमृतसागरका प्रथम भागमैं द्वितीयभागका सर्व औषधी संग्रह अथवा निघंट अर्थात् जो अमृतसागरमैं औषधीमात्र लिषीछे. ज्यां औषध्यानैं भिन्नभिन्न प्रथमांककी रीतसौं जैसें अरडूसो अजवायण अजमोद येसर्व अकारादिक औषधी अकारका समूहमैं मिलसी. ककारका समूहमैं कचूर कटाली कमलगट्टा अरु हकारकासमूहमैंहलद हरडे हरताल इत्यादि सर्व औषधीका नाम षुलासा मिलणैकेवास्तै प्रयासकरकैं इंग्रंथमांहसौं प्रथमभागमैं लिष्याहैं. जो कदाचित् औषधीका योगमैं औषधीकी पिछाणमनमैं संभ्रम रहै तो यह निघंटमैं देष लेवै अरु सुज्ञ जनानैं तो विदितहै. परंतु अविदित् जनांकै तांई टीकामैं बहुत महनत करीहै.

अ

अरडूसो. वृष आटरूष वासक षासरोगमैं प्रसिद्ध.

अजवायण. प्रसिद्धहै यवानी जापामैंदे.

अजमोद. अजमोदा गरम लघु नेत्रामय कृमी छर्दी वस्तिरोग हरै.

अरणु. अरणी अग्निमंथ गर

अरलू. फलावशषह अलाबू आल.

अरंणी. इरणी श्रीपर्णी अग्निमंथ.

अतीस. अतिविष अतिविषा कडवीगरम.

अभ्रक. भोडलकीभस्म पुटसिद्ध करीगुणहै.

अकलकरो. आकलकरो आकार करभ करहाट गरम.

अरंडको. तेल इंडोलीको तेल एरंड्योतेल.

अलसीको

अफीम. अहिफेन अमल आफूकोदूध.

अनारदाणा. दाडमका बीज प्रसिद्ध.

अ.

अमलवेद. षटाईकोफल षाटानिं बुकी जातमैं.

अरंडकोखार. एरंडवृक्षकिराष कर जलमैं धोयकरकाढै सो षार.

अग्नीझाल. सुफेदचित्रावल होयछै.

अरहड. अर्हैंड धान्यहै.

अलताकोरस. अलतानाम अलताईकोरस.

अगर. अगरकाष्ठ प्रसिद्धहै सुगंधी दारू कृष्णागरु.

असाल्यूं. हाल्यूं नामहै चंद्रसूर तीक्ष्णहै असाल्हं.

अजवाणकोअर्क. यंत्रसौंबाफको उडाया अजवाणे अर्क.

अद्भुतवस्तु. आश्चर्यरूपी नवीन वस्तु देषणी.

अगस्त्याकोरस. अगस्तका पुष्पस्वेत आवै कार्तिकमैं महात्म्यहैं जींकोरस.

अलसी. धान्य प्रसिद्धहै.

अरंडोली. एरंडका बीज.

अरबीकीजड. अरी अरबी गुहिंयां.

अरडूसाको खार. अरडूसाका पचांगको खार.

अमचूर. आमका अधकाचा फलांकी छाल.

अरणीकोरस. इरणीका पानको रस.

अहरणीकोराष. लुहारका अहरणकै मांहिली भस्म.

अधोपुष्पी. उंधा होली अधोपुष्पी नीलोफूल होयहै.

आ.

आधीं झाडांको रस. अपामार्गका पानाको रस.

आरणाछाणाकोराष. जंगली छाणाकीभस्म.

आमीहलदी. आमाहलदी प्रसिद्धहै.

आंवलांका झाडकी बकल. धातृकापेडकी छाल.

आदो. आर्द्रक अदरक प्रसिद्ध.

आककीजड. अर्ककोमूल आकडाकीजड.

आसगंध. अश्वगंधा नागोरी आसगंध प्रसिद्ध.

आ

आंवला. धातृफल

आमकीगुठली. आमका फल मांहिलीमींजीं.

आककानवापान. अर्कपत्र कोमल.

आककोदूध. अर्कदुग्ध प्रसिद्धहै

आंवलांकोरस. धातृफलांकोरस

आंदाहोली. अधोपुष्पी ऊंधाफूलकी नीलाफूल.

आंदीझाडाकीजड. आपामार्गकोमूल.

आककाफुल. अर्कपुष्प प्रसिद्ध.

आंवलांकीमींगी. धातृफलांकी गुठली माहिलीमींगी.

आमका पानपल्लव. आम्रपल्लवकोमल.

आसो आसव. औषध्यांको अर्क यथोक्त.

आंवलांकापान. धातृवृक्षका पानकोमल.

आंवलासार. आमलासार गंधक प्र.

आंमलीकोखार. आमलीका वृक्षकी राषमेंसूं काढै.

आ.

आमकीबकल. आम्रका पेढकी छाल.

आककापंचांगकोखार. अर्क पंचांगको खार.

आमलीकाचियां. आमलीका बीज.

आफू. अफीम अहिफेन अमल.

आककी डोडीका बीज. अर्कचोफूली.

आमकी छाल. आम्रका पेढकी बकल.

आसापालाकीबकल. आसापालाकीछाल.

आमकीजड. आम्रकी जटा आम्रमूलप्रसिद्ध.

इ.

इलायची. एलची छोटी एला गुजराती.

इंद्रजव. इंद्रजो कूडाकाबीज कडवा मीठा.

इंद्रायणीकीजड. तरतूंबाकी जड तथामूल.

इकपोत्यो ल्हसण. जींल्हसणमैं एकही ग्रंथी होयछै.

इ.

इंद्रायणी. तस्तुंबो गडतुंबो इद्र बारुणी.

ईंट. मृत्तिकाकी ईंट पकाई हुई जूनी काम आवैहै.

इच्छाभेदी. जुलाबकै तांईरसछै ईकी गोली गुंजा प्रमाण.

ई.

ईर्षा. ईर्षा. द्वेष. औषधीमें लेतां अरुची. ग्लानी. द्वेषहोयसो.

उ.

उदयपर्णी. उडदपर्णी. उड जिसापान होयसो.

उतारो. बालकांकै ऊपर उतारो धरै उतारकरकै.

उत्तर. औषधी लेतां पाछो त्तर करै नहिं लेवों.

ऊ.

ऊंटडीको दूध. स्यांडणीको दुग्ध. प्र.

ऊकडू बैठणा. विषम आसणबैठै दोय पगांपर.

ऊंटको मूत. प्रसिद्ध उष्ट्र.

ऊंदरांको मांसको घृत. चरबी प्रसिद्ध.

ऊ.

ऊंदरांकी मीगणी. मूषकविष्ठा.

ऊंटका बाल. प्रसिद्ध.

ए.

एरंडकी जड. एरंडमूल. स्वेत. रक्त.

एलियो. एलयो. सिकोतरी. सा.

ओ.

ओटायो दूध. दूधको रावड्यो. सादो. तथा मीठो.

औषध. तयारकरकै रोगीनैं दे वालायकसो.

ओस. सीतकालमैं प्रभातकी स समयमैं मुक्ता दीषै.

ओसरो. तापको. नित्यआणो. तथा एकांतरो. तेजरो. चोथो सो

औ.

औषधी. बूंटी. झाडपालो. जाड रस. भस्म. इत्यादि.

अं.

अंकोट. अंकोल वृक्ष विशेष. फलवृक्ष विशेष. सुगंधी.

अंधता. नेत्रांका रोगकी. उन्मत्तताकी निर्ज्जलताकी.

अं.

अंजरूत. औषधी अत्तारकी दुकानमैं गूंद विशेषहै.

अंतर. अत्तर. गुलाब. केवडो. मोतिया उगेरैको तेल.

अंक. एकसौं. आदिलेर नवतांई

क.

कलूंजी. कांदाकाबीज. आचारमैं मुसांला भेला पडेहैं.

कठसेलो. फूलकोझाड. कालाफूलको. तथापीलोफूलको. हो.

कठवर. कवीठ. कैथ. कटुंबर.

कुसुंभाकाफूल. प्रसिद्ध कसुंभो.

कबूतरकींवींट. कपोतविष्ठा.

कमलनीकापान. कमोदनीका पान.

कडवाककैडाकापान. ककोंटक.

कतीरो. कतीरोगुंद. जलमैं. भिजोयां फूलैहै.

कडछल्यो. छोटो कडावल्यो दोयकडांवालो.

कहुवाकोषार. कहवोवृक्ष. प्र.

कलूंजनकीज़ड़. कलुंजन. पानकोजड.

क.

कणगूगली. दाणादार गुगल. प्र.

कटूंबर. कठोडी. कवीठकीगीर.

कवींट. कवीटफल. कैथकोझाड. फल.

कवंलकी नाल. कमलकीनाली पान.

कपूर. चिणियोकपूर. आरतीकपूर.

कटालीका फूलांकी केसर. पसर कटालीकी.

कव्यादिपदार्थ. पित्त कारजमैं आवैसे.

कचूर. नरकचूर.

कमलकाफूलकीकेसर. प्रसिद्ध.

कटाली. भूरीरिंगणी. पसरकंटाली.

कणगचकाबीज. गजका. सागरगोठा.

कडवी तोरूकींजड. जंगलीतुराई कडवीकीजड. मूल.

कल्हारी. कलाली. लांगली. उप विषहै.

कमलगट्टा. कमलकाकडी. पबोडी कमलबीज.

क.

कणगच. करंज. करंजवा. वहु कंटकी. कंटकफला.

कडवीतुंबीकीजड. तुंबीकीवेल की जडकडवी.

कल्हारीकीजड. लांगलीकीजड मूल.

कडाका. लंघन. उपवास. निराहार. अनसन.

कमलगटांकीमींगी. पवोडीकी गिर. मगज.

कणगचकीजड. करंजकोमूल.

करेलण. करेलाकीबेल. बागकी. वा जंगली.

कडवीतुंबीकीगिरकोरस. तुंबाकी गिरको रसकडवो.

कज्जली. शुद्धपारो. शुद्धगंधक. यथोक्त षरल करै.

कस्तूरी. मृगमद. कस्तूर्यामृग कीनाभीमैं होय.

कडबोतेल. सिर्सुको. शर्षपको तेल आचारमैं पडैसो.

कपासकीजड. बएयाकोमूल. बणकीजड.

क.

कवलकी पांषडयां. कमलपुष्प कादल.

कपास्या. काकडा. कुपासकाबीज बणकाबीज.

कवारका पाठाकोरस. कुमारी कोरस. कुमारपाठाको.

कलमींसोरो. शुद्धसोरो. काडीकोसोरो.

कचल्लूण. प्रसिद्धहै. पंचल्लूणमैं.

कटाली. ऊबकटाली. मोटीकटाली.

कटालीकोषार. भूरीरिंगणीकोषार.

कदमकाषार. कदमकाछोडांकोषार.

कहुवारुंषकी. बकल. कहुवाकी छाल.

कसकीजड. गांडरकाधांसकीजड. षसका. पडदा. होयसो.

कवलकीजड. भे. तथाढिसी. कमलमूल.

कदमकीबकल. कदमकी. छाल.

कदमकापान. प्रसिद्ध

क.

कहवाकापान. प्रसिद्ध. कहवा. वृक्षकापान.

कपासकीमींगी. काकडांकोम गज.

कहवारूषकी. जड. नाम. मूल.

कसौंधीकाजड. कसौंधीकाफूल. काझाडको मूल.

कपेलो. लालमाटी. लालरेतजे सी बालकांकूं देवैंहैं.

कचनारका. बकल. कचनारका झाडकीछाल.

का.

काथो. पानकीसाथ. षावैंसो.

काचानारेलकापाणी. नारेलमैं पाणी नीसरैंसो.

कालासर्पकामांसकोघृत. सर्प कीवसा.

कागणी. मालकागणींका बीज. होयछै.

कालाधत्तूराकाबीज. धत्तूराका डोडांमैसूंनीसरैंसो.

कालोभोडल. कृष्णाभ्रक कालो अभ्रक..

कामलोऊनको. ऊनको कंबल. जाडासूतका.

काचकी आतसी सीसी. पाकी सीसीआंचपर ठहरैंसो.

कांचली सर्पकी. सर्पकंचुकी.

कायफल. कायफलकाछोडाप्र सिद्ध.

काली मिरची. प्रसिद्ध.

काकडासींगी. कर्कटसृंगी. मेष सृंगी.

कालोजीरो. काली जीरीप्रसि०

कांजी. दालकावडामैं पाणीऊग टावे. सोवो पाणी.

काकोली. अष्टगणवर्गम. है. दे शांतरमैं.

कांसकी जडकोरस. कांसघास प्रसिद्ध. स्वेतपुष्प.

कागलांकीबींट. काकविष्टा.

काकलहरी. जडीप्रसिद्ध.

कालातिल. प्रसिद्ध.

कालीमाटी. कालीमृत्तिकासचि कण.

कांसीकीथाली. फूलधातुकोपात्र

कि.

किरमालो. गिरमालाकीफली आमलतास.

किसोरया. जीव. पक्षीहै. और बुटीबीहै.

किरमालाकीजडकीबकल. जडकीछाल प्रसिद्ध.

किरमालाकापान. आमलतासकापान.

किस्तूरी. कस्तुरी. मृगनाभी प्रसिद्ध. मृगमद.

किरायतो. चिरायतो. भूनिंबकडवो प्रसिद्ध.

कीस. गवुको तथा महिषीका प्रसूतको प्रथमदुग्ध.

कीकर. बंबूल. बँवल.

कुटकी. तिक्त कडूरेचनीतापमें प्र०

कुमेरपाठ पाठा. पाडल. वृक्ष प्रसि०

कुलंजन. पानकीजड. नागरबेलको मूल.

कुलथ. धानविशेष कुलथी.

कुकडाका अंडाकोरस. मुरगांका अंडा.

कु.

कुचीला. कुचीलकाबीज प्रसिद्ध. उपविषहै. तिंदुकः विषतिंदुक

कुंदरू. रूमीमस्तकी. गूंद. सुगंधी

कू.

कूठ. कोष्टकी लकडी कूटं शाल्मली वृक्ष.

कूडाकी छाल. कुडाछाल. इंद्रवृक्ष.

कूंचकीफली. वानरी. मर्कटी. रोमफला.

कूडाकोखार. कूडावृक्षकोखार. सर्वखारकरणेकी एकरीतहै.

कूकरभांगरो. बरसातकीमोसममें होयहै.

के

केली. केलाकोपेड प्रसिद्ध.

केशर. प्रसिद्धहै. नेपाली. कास्मिरी कुंकुम.

केवडाकोअरक. केवडांकाफूलांको वाफ सुंउताख्यो.

केलीकापान. केलाकावृक्षकापानप्र०

केवडाकोखार. केवडाकावृक्षकोषार.

के.

केलीमाहिली सुपेदगिर. केला कापेडकोगर्भ.

केसूलांकोचूरण. पलासका फूलांको चूरण.

केलीकापानाकोरस. केलाका पानाकोरस.

कै.

कैथकोरस. कवीठकोरस.

कैथ. कवीठको झाड.

को.

कोयलकाबीज. कोयलीवेल. अपराजिताकाबीज.

कौंचकाबीज. कौंचबीज. बानरीमर्कटी बीज. (कं)

कंडीरकापान. कन्हेरकापान.

कंडीरकीजड. कन्हेरकोमूल.

कंडीरदोनुकीछाल. कन्हेरलाल स्वेतकी बकल.

ख. ष.

खस. गांडरकी. जड. सुगंधी खसवालो. तृणवीशेष.

खरैटी. बलाबल प्रंसिद्ध.

खपरचौ. खर्पर देसीतो जाडोहोय चिणाई पतली नली.

ख.

खटाई. अम्लरस. निंबुआदिलेर तथा षटाईकी गोली.

खरवटाको रस. खरवटाका पानाको रस. वा पंचांग. ५

खरैंटीकी जड. बलकी जड बलाको मूल.

खल. खली. पिण्याकतिलांकी. घोप राकीषल.

खसखानू. जठैषसषसकापंखा पडदा. सुगंधीहवा.

खा.

खावाकोचूनूं. उत्तम कलीको मकराणांका पथ्थरको.

खारीलूण. खारी अन्यत्र जमायो विरसलूण.

खारको जल. जीमेंसूं खार नीसरैसो जल विनाजम्यौ.

खार कुठार. खारकी औषधी पचाईहुईसा.

खातकीजमी. जीं जमीनमेंबकरीउगेरकी मीगणी बिछावैसो

खालकोधूवौं. चर्मको धूम्र.

[illegible]. चावलदोय भाग. मूंग एकभाग. मिलावैंसो.

ख.

खीरकाकोली. अष्टगणवर्गमैंहै देसांतरमैं मिलै.

खीलकोसातू. चावलांकीफुलीनैं पीसकर चूनकरै.

[illegible] खीपडांकीज[illegible] सारणी. स्पर्श. कंडू.

खींपकोरस. प्रसारणीखीपडा कोरस.

खींप. खींपडो. प्रसारणी. फुकुं ध्याफली शाकहोयछै.

खुरासाणी अजवाण. अन्यदेशो द्भवा. षुरसाणी.

खैरसार. खैरका वृक्षको सार होयछै.

खैर. खैरनाम खदिरवृक्ष. दुष्ट कंटक बांका कांटा.

खैरकापान. खदिरपान. खैरका पान.

खैरकोगूंद. खैरीगूंद. प्रसिद्धहै.

खैरकीछाल. खदिरछाल. तथा बकल पेडकी.

ग.

गवुकोमाखण. गवुकादुग्धकोनवनीत. लुएयू. मसको,

ग.

गवुकोमठो. गवूकादधिनैं कपडा सूंछाणै तथाविलोवैंसो.

गवुकीछाछ. गवूका दधिमांहसुं माषनकाढै. पाछै रहैसो

गवारपाटो. कुमारपाठो. कुमरी पत्र घीकुमार.

गजवेलकापत्र. षेडीका तथा पक्का लोहका पत्र.

गहुं. गोधूम धान्यविशेष.

गजपीपली. गजपीपल. मोटीपीपल. प्रसिद्ध.

गरमवस्तु. तुरतकी करीहुई गरमागरम

गरमकांजी. तुरतकीकांजी. वडांका पाणीकी.

गवुकोदांत. गायकोदांत. गोदंत.

गद्धाकोदांत. गर्दभदांत. गधेडाको दांत.

गडूंबाकीजड. इंद्रायणीको मूलतस्तुंबाकी जड.

गधाकोमूत. गधेडाको मूत्र.

गजवेलको चूरण. पक्कालोहको तथा षेडीकोचूं०

ग.

गाडरको मूत
मूत्र.

गिलवै. नीमगिलोय. नीमकाझा डउपरकी.

गिलवैको रस. नीमगिलोयको रस.

गुड. गुलप्रसिद्धहै.

गुलाबकाफूल. प्रसिद्ध.

[illegible] औदुंबरकी कूंपलां.

गुडकीचासणी. गुलकीराब. तथागीलोगुल.

गुल्हारकी बकल. औदुंबरका झाडकीछाल.

गुगल. गुगल. भैंसागुगल. प्रसिद्ध गुगलदूधहै.

गुल्हारकीजड. औदुंबरकी जड तथामूल.

गुगलकाजड. गुगलका झाडको मूल.

गुलहवासकापान. हबूलास. तथागुलहवासपानं.

गुडहल. गुडहलनाम जडीप्रसिद्ध. गुलतुरो

ग.

गुलकंद. गुलाबका फूलांको. गुलकंद मिसरीको.

गेरूं. सोना. गेरूंप्रसिद्ध. सुवर्णमंजनी.

गोरीसर. हंसराजनाम. जडीपर सुस्यान.

गोषरू. दिषणी गोषरू. त्रिकंटकी.

[illegible] सिद्ध.

गोरषकाकडी. गोरषी. गोरष्या.

गोषरूकोपंचांग. जड. पंड. पान. फूल फल.

गोलकाकडीकीजड. पटोलकी जड. टींडरीकी.

गोबर. गायको गोबर.

गोरषमुंडी. मुंडीजडीप्रसिद्ध.

गोहांकीबाटी. अलूणी. प्रसिद्ध.

गोरषमुंडीकोषार. पंचांगको षार.

गोहांकातुस. भूसो. आटाकोछाणस.

गोरोचन. गोलोचन सुगंधी पदार्थ.

ग.

गोपीचंदन. द्वारकाकीमृत्तिका.
गोबरकोरस. प्रसिद्ध.
गोसाल. गवांकी रहवाकी साल.
गंधकआंवलासार. प्रसिद्ध.
गंधकशुद्ध. शुद्ध आंवला सार.
गंगेरणकीछाल. नागबलागुडस करी.

घ.

घरकोधूमसो. प्रसिद्ध.
घोडाकीलाल घोडाका मूढासौं जल झखोडो.
घोडाकोमूत प्रसिद्ध.

च.

चव्य. चब. पीपलामूलका डांडा.
चमेलीकाफुल. प्रसिद्ध.
चमेलीकोतेल. सुगंधीतेलफुलेल.
चावलांकीपील. चावलांकीधाणी
चावल. तांदूल.
चाककीमाटी. कुमारका चाककी आली मृत्तिका.
चारोली. चिरूंजी. मेवोप्रसिद्ध.
चादरकोछुडावो. होदकी. तला बकी. चद्दर. छूटैसो.

ची.

चीरायतो. किरायतो. कडवो. भूनिंब.
चीत्रक. चीताकीजड. सुपेदचित्रा वल.
चिणपार. चिणाकापानां उपर सौं ओसकोपाणी.
चीणियांकपूर. आरतीकपूरप्र०
चिमत्कारीमणी. परासिंहकी उत्तम मणी. गुणयुक्त.
चिरपोटण. मकोप्रसिद्ध काक माची०
चिरमीकोपंचांग. गुंजाकीबेल कोपंचांग.
चिरुंजी. चारोली. मेवो प्रसिद्ध.
चीलवो. बथवो. बास्तु. बडो. छोटो.
चीरोदणो. नस्तरविद्या.
चिकणीवस्तु. सचिक्कण सचिक्क ण. गिलिष्टवस्तु.
चीणीकोवासण. चीणाईरकेबी उगैरे.
चीड. चीडांकाचकी. गहणामें पोवै.

च.

चूकाकोरस. चूकोषाटो शाकप त्रहै.

चूरमो. राषोड्यो. तथाचुंटवौं. तलवासकरका.

चूनांकोपाणी. कलिकोधोयो नीतर्यो शुद्धपाणी.

चूनो. कलीकोचूनो. पानतमाखुकी साथखावाको.

चोहटो. च्यारमार्ग एकजगांमिलै सोचोवाटो.

चोष. चोषकोमूल. जडहोयछै. षाजकै चोपडै.

चौंलाईकीजड. तांदली. तांदल्याकीजड. मूल.

चौंलाई. चंदलेई. तांदली. तांदल्यो.

चंदन. स्वेतमलयागर. सुगंधी. बा० रक्त.

चंदणकोरस. चंदणका. काढाका पाणी.

चंपाकीजड. चंपाका वृक्षकोमूल

चंद्रोदय. सुवर्ण. शुद्धपारो. शुद्धगंधक. यांकोरस. बणावैसो.

छ

छड. छडछडीलो. सुगंधीप्रसिद्ध.

छडछडीलो. छड. प्रसि. सुगंधी औषधी.

छछूंदरीकोतेल. प्रसिद्ध. जीवविशेष.

छिवारो. षारक मेवो.

छीलाकोरस. पलास. ढाक. ब्रह्मवृक्ष. कोमल पानाकोरस.

छीलाकीबकल. पलासकीछाल.

छीलाकोषार. पलासकोषार.

छीलो. पलास. ढाक. छिंवरो. ब्रह्मवृक्ष.

छोटीकटाली. पसरकटाली. भूरीरिंगणी. स्वेतपुष्पकीलक्ष्मणा.

छीलाकीजड. पलासकोमूल.

छूंतरा. अफीमका फलांकाछोडा. तिजारो.

ज.

जवासो. दुरालभा. बहुकंटकी. सीतल. यवास.

जलभांगरो. भृंगराज. स्वेत. कृष्णमांको. भंगरो.

ज.

जमालगोटो. नैपालो. दंतीवी शुध ग्राह्यहै.

जमेरीकोरस. जंभीरीषाटोफलहैं. जींकोरस.

जवषार. जवांका झाडकी राषमै सुंकाढैसोखार.

जमींकंद. सूरणकंद गोलचाकी होयछै.. शाकप्रसिद्ध.

जवांकोचुन. यव पिष्टप्रसिद्ध.

जव. यवधान्यप्रसिद्ध.

जलक्रीडा. जलमैं स्त्रीपुरुष स्नानकरै क्रीडाकरै.

जवांकोसातू. यवकीधाणी जोकीधाणीको चून. प्र.

जलकुंभीकीराष. जलकुंभी जडीकीभस्म.

जलकासिंवाल. जलकाकीनारा परंतु हस्वाहोप.

जसदका
विशेष.

जायफल. जातीफल. प्रसिद्ध.

ज्वालामुषी. नामजडी.

जांगीहरड. धोडाहरडै. रंगतमैं. प्रसिद्ध. जाहांगी.

ज.

जामुणकीगुट्टी. जंबूफलकोबीज

जामुणकीबकल. जंबुवृक्षकीछा.

जामुण. जामूण. जंबूप्र० वृक्ष.

जावत्री. जायपत्री. जायफलका वेष्टनपुष्प.

जामुणकापल्लव. जामूण. जंबूका अंकुर. पानकाचा.

जाल. जालवृक्ष. पीलवृक्ष. जींकैपीलूफलसोसनी.

जात्यादिघृत. जात्यादिकऔषध्यांसूं घृत पचावै

जात्यादितैल. जात्यादि औ० त लपचावैसो.

।यापोताकीमींजं
पताजिया. फलकीमींजी.

जीवंतिकीजड. जीवंती जडीकी जड.

जीवंती. जीवंतीजडी. केचित्. तंडुली.

जीभकरी. अप्रसिद्धहै

जीवक. अष्टगणावर्गमैंहै.

जलौका. जलवा. जोक. जलजंतू.

झ.

झडबोर. झाडकाबोर. कोकान बोर. लघुबोर.

झावुकीजड. झाझरूंष. नदीमें वा. नदीकीनारे. फिरासपत्र. जींकोमूल.

झाउरुषकीबकल. झाउकीछाल.

झोजरूकीबकल. गुगख्याकी छाल.

झोझरूकादांतण गुघराकादांतण

झीलकादांतण. क्षीलप्रसिद्ध दां तण होयछे.

झडबोरकीजड. झाडकोमूल.

झाड. झाडप्रसिद्ध. झाडबेरी. जीं कापानकोपालोहोयछे. कंटक झाड.

ट.

टंकण. टंकणषार. सुहागो. सो गी तेलियासुहागो.

ठ.

ठरां. अंकोट. अंकोल. बोरविशेष सुगंधी. जुलाबमेंउक्त.

ड.

डरपावो. भयदिखावे. उन्मादमें. वाहिचकी साधारणमें.

डासरयां. तंतडीकबीज. खाटा. चूर्णमेंउक्त. डासरणफल.

डांसरयांकोरस. तंतडीक फलको रस.

डांह्म. डहांम. डंभ. डांमदेणा. ली कडी चांचवा उगैरे.

डाभकीजड. दर्भाकीजड. दर्भ मूल.

डांसरयांकीजड. डांसरणको मूल.

डोडांकाबीज. पोस्तका दाणा. अफीमकाबीज. दाणां.

त.

तज. जादीदालचिनीका छोडा.

तगर. तगरपत्र. पानप्रसिद्ध. प सारीके.

त्रांहिमाण. त्रायंती नेत्रवालो.

तामेश्वर. ताम्रभस्म.

तालमषाणा. इक्षुर. अहिषरो.

तांबूल. नागरबेलका पान.

त.

तालपत्रकोरस. ताडफलरसप्र०
तालेश्वररस. हरतालकोरस. रसक्रियामें.
ताडवृक्षकी जड. ताडको मूल.
तांमाकापत्रा. तांम्रपत्र.
त्रिफला. हरड. वहेडा. आंवला. समभाग.
तिल. कालातिल. स्वेततिल. प्रसिद्ध.
तिलांकोषार. तिलांका झाडको षारकाढेसो.
त्रिफलांकोरस. त्रिफलांको रस. वा काढो.
तिलांकोतेल. तिलतैलप्रसिद्ध.
तिंदूकी अंतर छाल. तिंदू वृक्षकी मध्यछाल.
त्रिफलांकोभूको. त्रिफलाचूर्ण.
तिलांकाफूल. तिलपुष्पप्रसिद्ध
तिलांकीनालीकीराष. तिलांका डांडांकीभस्म.
तिलांकाडांड. तिलाकाडांखलाप्रसिद्ध.
तीतर. तीत्तरपक्षी. बटेर.

त.

तीषीवस्तु. चरपरीवस्तु. तीक्षण. तथातैजव.
तुलसीकापान. गौरतथास्याम.
तुकमरियाकाबीज. तुकमवालंबा.
तुस. जवगहुंउगैरैका चूनको छाणस.
तूणकीछाल. बण्यांका झाडकी बकल. छाल.
तूंबरू. तसतुंबो. इंद्रायणी फल.
तुंबडीलोहीकाढवाकी. वारूंवारूमडी.
तेलिया सुहागो. टंकणषार. सुहागो. सोगी.
तेल. तिलांको. अलसीको. एरंडको. षोपराको. दिवेल.
तेबरसी. काकडी तेबरसी. त्रिपुसी.
तेबरसीकाबीज. त्रिपुसीकाबी०
तेलकीबत्ती. तेलमैं भीजोई रुईकी वाती.
तेजबल. वृक्षविशेषउत्तरमैंबहुधा
तोरू. तुराईको शाक प्रसिद्ध.

थ.

थोहरकोदूध. प्रसिद्ध.
थोहरकीलकडी. थोरींडा प्र.
थोहरकापानांकोरस. थोरबटीकोरस.
थोहरंकीजड. थोरकोमूल.
थोरकोषार. थोहरकाझाडकीभस्मकोषार.

द

दडघल. शाकपत्रप्र.
दहीकोजल. दधीकोनितास्योपाणी.
दडघलकोरस. प्रसिद्ध.
दही. दधीगउकोमहिषीकोबकरीउगेरेको.
दशमूल. पांचमूलमोटा. पांचमूलछोटाप्र०दशमूल.
दहीकोमट्टो. जाडीछाछमाषनसूधां.
दाडमकोसरबत. अनारकोसर०
दारुहलद. दार्वी. दारुहलदी. दारुहरिद्रा.
दाख. मुनक्कादाख.द्राक्ष.गोस्तनीप्रसिद्ध.

द.

दाडूंकागुल्या. आनारकांबीज.
दांत्यूणी. जमालगोटाकीजड. तथाझाड.
दारू. मद्य.मदिरा.माध्वीवारुणी. पैष्टी.
दालचीणी. पतलांछोडांकीतूजदिसावरीप्रसिद्ध.
दालचीणीकाफूल. बिलायतीफूल. अर्कप्रसिद्ध.
दाडूंकीजड. अनारकाझाडकोमूल.
दाडूंकापान. आनारकापान.
दारूकाढवाकोजावो. दारूकाढवाकामसालाभिजोवैंसो.
दिषणीसुपारी. चिकणीसुपारीदक्षिणमें.प्र.
दीपककोतेल. तिलीकोमीठोएरंडकोदीवेल.
देवदारू.देवदारुकाष्ठप्रसिद्ध. सुरदारु.
देसीगोषरू. कांटीकोछातो.जमीपरफैलै कांटीगोषरू.
दोबकोरस दोबडीकोत्तथादुर्वाको

द.

दोबकीजड. दोवडीको.तथादुर्वाकोमूल.

दोनुहलद. हरिद्रा. दारुहरिद्रा दोयप्र०

ध.

धणो. प्रसिद्धमसालामैं. कोतमीरकाबीज.

धमासो. धोलोतथालाल. फुलांकोमासो.

धतूरो.धत्तूर.शिवप्रिय.कनकवृक्ष

धतूराकाफलकीराष. धत्तूरांकाडोडांकीभस्म.

धवकहुवाकीबकल. धावडाकीतथाधोकीछाल. प्र.

धतूराकाबीजकोतेल. कनकबीजकोतेल. पातालयंत्रसूंकाढे.

धंतूराकापानाकोतेल. धतूराकारसमैं तेलपकावैं.

धावडाफुल. धोकाफूलप्रसिद्ध.

धूमसो. घरमैंरसोईकरैजठैधूमजमैंकालोसो.

धोकीबकल. धोकाझाडकीछाल.

धोलीगुंद.धावडोगूंद.

न.

नकछींकणी. जडीहोयछै. जींकीनाशलीयांसूंछींकाआवै.

नरसलकीजड. नरसलकोभोगलीहोयछै. जींकोमूल.

नरकचूर.कचूरसुगंधीपदार्थ प्र०

नखल्या. अष्टगंधमैंसुगंधिनखप्रसिद्ध.

नस्तरदेणो. नस्तरविद्याचीरफाडकी.

नागकेशर. नागकेसरप्रसिद्ध. पसारिकैमिलै. नागपुष्प.

नागरमोथो. मुस्ता. मेघ.सुगंधीमोथ.

नागरमोथाकोरस. मोथाकोरसतथाक्काथ.

नारंगीकोरस. नारंगीफल.उत्तमफल. स्वाद.

नारेलकीगिर.खोपरोगिरीमेवामैं

नासदेणी. नाककैद्वारा औषधीसूंधाणीसो.

नागदवणा. नागदमनी. नागपुष्पी. वडामोटा. विषहरै.

न.

नादवण. नादणवण. हीरवणा मोटीवण. कुपास.

निरगुंडी. नेगड. संभालुप्रसिद्ध.

निसोत. तिगड.त्रिवृता.काली.१ सुपेद २ तुर्वत.

निमोलीकीमींगी नीमकाफल कीमज्जा.

निर्धूमअंगारो. अग्निकोपीरो. विनाधूमाको.

निरसस्तोऔषधी. रगसोसी. पथरचटी.

निरमली. कतकवृक्षकाफलकाबीज. प्रसिद्धजलसोधनी.

निर्मलीकोफल. कतकफल.

नीमकीछ वकल.

नीलोथूथो. तूतियो. थूथो. मोर थूथो.

नीबू. प्रसिद्धषाठाफल.

नीमकापान. नीमकापान. पारिभद्रपत्र. पिचुमंद. निंब.

नीबूकोरस. नीबूकाफलकोरस.

नीलटांचकीबीट.पक्षीगरुडपक्षीकीविष्ठा.

न.

नील. नीलवृक्षछोटा. जीमैंसू नींलो रंगहोयछै.

नीलाफूलको कटसेलो. पुष्प वृक्ष. नील. पीत. पुष्प.

नीलकीजड. नीलप्रसिद्ध जींको मूल.

नेत्रवालो. त्रायमाण. कमलतंतू प्रसिद्ध.

नोसादर. खारविशेष. प्र. नव सादर.

नोल्याकीबीट. नकुलविष्ठा.

नंदीकोषार. नंदीमैं नदीकै कीनाप. रैस्वेतषार.

पदमाक. पद्मकाष्ठकी लकडी प्रसिद्ध.

पटोल. कडवीतोरू. वाकडवीतुंबीवा. गोलकांकडीकी वेल.

पृष्ठपर्णी. अष्टगणवर्गमैं अमिलितहै.

पत्रज. तेजपत्र. प्रसिद्ध.

पलासपापडो. छीलाका बीज.

पकायोजमीकंद. सेक्योसूरणकंद आमलीका पानमैं.

प.

पर्पटीरस. पंचामृत. पर्पटीरस. प्रसिद्ध.

पक्वपेठाकाबीज. सुपेद पेठाका.

पक्यागुलहरकाफल. औदुंबर फल:

पसरकंटालीको पंचांग. भुरीरिंगणीको.

पलासकोषार. छीलाकीराषमैं सुंकाढैसो.

पक्कीघीयाकोफल. धीयातोराई.

पतंग. पतंगकाझाडकी लकडीरंग लालकी

पटोलकोपंचाग. जंगलीतुराई. तुंबीकडवी. गोलकाकडी. कडवीको.

पथरफोडी. पथरचटी बुंटी. प्र.

पटोलकोषार. पटोलकीराष मांहसौंकाढै.

पठाणीलोद. लोदसुपेदकाछोडा प्रसिद्ध.

पक्काकेला. केलाका फल पाका.

पस्तछुडावणी. सीर छुडाणी. शिरामोक्ष. रक्तश्राव.

प.

पाठ. पाठावृक्षकोमूल. वा. काष्ठ.

पालसांकोसरबत. फालसांकोसरबत मिश्रियुक्त.

पारो. शुद्धपारो. क्रियासौं सोध्यो हिंगलूको काढ्यो.

पान. नागरबेलका पान. राजबला

पारागंधककीकजली. शुद्धपारो शुद्ध आंवला सारगंधकघोटै षरलमैं.

पारोसोध्यो. हिंगलूको काढ्यो. वा. औरक्रियासूं सोध्यो.

पाषाणभेद. पथरफोडी. पथरचटी.

प्याजकोरस. पलांडूको. तथाकांदांको रस. प्रसिद्ध.

पाराकीभस्म. पारदभस्म. क्रियाशुद्ध करीहुई.

प्राणायाम. स्वास पेटमैंभरै. हिचकी मैं साधारणसैं.

पाडलवृक्षकोषार. पाटलाको षार. युक्तीसौं काढै.

पाछणा. उस्तरा. शस्त्र. रक्तश्रावकौं.

प.

पापडषार. पापड्योषार. नदीउ गैरेमैं जमैहै.

पापड्योकाथो. जमायोकाथो. सोध्योकाथो सुपेद.

पारसपीपलीकीजड. पाश्र्वमूल

पाडल. पाटला. पांडुरी. कठपांडुरी.

पाचनादिक. औषधी ग्रंथमैं प्रसिद्ध.

पित्तपापडो. पर्पटी. पित्तपर्पटा.

प्रियंगु. गुंदिनी. गूंदीप्रसिद्ध.

पीपली. कणा. कृष्णा. पीपलांछोटी. गजपीपलमोटी.

पीपलामूल. पिंपलमूल. ग्रंथी प्रसिद्ध.

पीपलकीलाष. पीपलीवृक्षतथा. अश्र्वत्थकी लाष.

पीपलकांकोमलपत्र. पीपलीवृक्षकानरमपान.

पीलीकोडी. पीतकपर्दी.

पीलीकोडीकीराष. पीली बराटकाकपर्दीकी भस्मं.

पीपलकाछोडा. पीपल अश्र्वत्थछाल.

प.

पीपलीकोरस पीपलवृक्षका काचा पानांको रस.

पिचरकी. पिचकारी. बस्तिकर्म. कीयथोक्तरीतकी.

पीपलकोपंचांग. अश्र्वत्थकोपं०

पीलीकोडीकोचूरण. पीत्तकपर्दीको चूनोप्र. तथाचूर्णकरै.

पीपलीकोषार. पीपल. अश्र्वत्थकीराष कोषार.

पींडीबांधणी. कारणमुजबक्रियाजाणकर. पींडीराषकी पूस्याकउतारामैं. पींडीमूजकी.

पीलीहरतालकापत्रा. तवकीयाहरतालकापत्रा.

पीपलीकीकचीलाष. पीपलकावृक्षकी काचीलाष.

पुराणोगुड. दोयवरसको. तथातीनबरसको पुराणो.

पुनर्नवा. साटीसुपेद. तथा. लालसाटी. विसषा परो.

पुराणीसाल. चांवलांकोधान. पुराणो तुसासूधो.

पेठो. सुपेदकोलो. तथापीलोकोलोगोलमरदंगी.

प.

पेठाकीजड. कोहलाकोमूल.भूरा कोहला. वा पीलाकोहला.

पेठाकोरस. भूराकोहलाकाफल. कोरस.वापीलाकोहलाकोरस.

पेठाकोपाणी. भूराकोतथापीला कोरस.

पौटैत्र्प्रायौडाजव. त्र्प्रधकाचाजो वांकीफालर.

पैडा. दुग्धकामावाकासकरकागो लचपटा.

पँवाड. पँवाड्याकोझाड. दद्रुघ्न. दादघाज.

पँवाडाकाबीज. पँवाड्याबीज प्रसिद्ध.

पोस्तकोपाणी. त्र्प्रफीमकाफल काछोंतराकोभीजोयकाढ्योडो तीजारो.

फ.

फिटकडी. फटकी.तुरटी. सोरठी माठी. सुपेद. लाल.

फूलप्रियंगु.गुंदीनीकाफूल फालर

फुलाईफिटकडी. फिटकडीको फूल्यो.

फ.

फुवरा. जलकाफुवाराग्र. जलउर्ध्व पात.

फूलांकीमाला. पुष्पकीमाला. सुंदरपोईगूंथी.

ब. व.

बहेडा. फलप्रसिद्ध. विभीतक.

बच. घोडा. बछ. उग्रगंधा बचा.

बकाणकीछाल.महानींबकीछाल तथाबकल.

बकरीकोदूध.त्र्प्रजादुग्ध.

बडकात्र्प्रंकूरवटपत्रकोमूलकूंपलां

बनालकापान. बनालकीबेलका पान.

बनालकाडोडा. वनालडोडा. कं टकफल. घोडांकामुसालामैंपडै.

बधायरो. वृद्धदारु. लकडीझाड कीहोय. गर्भवृद्धि.

बडीहरडैकीछाल. मोटीहरीतकी कीछाल.

बडवोरकापान. मोटीबोरडीजी कापान. मोटावोरकी.

बसंतमालती. वसंतमालाती. राजवसंत. वसंत. क्षुद्रवसंत. रसहै.

ब.

वर्धमानपीपल. नित्यबधती. पीपलांदूधमैंपचावें. रोगीनैंधुवावैंसो. रीतसो.

वृद्धी. वृद्धीऔषधीअष्टगणवर्गमैंअमिलित.

बकरीकोमूत. अजामूत्रप्रसिद्ध.

बहुफली. चामघसकाछाता. चीकणीजडी होयछै.

बडोशंख. रामेश्वरी. द्वारकानाथी. बजाबाकोमहाशंख.

बहुफलीकोरस. चामघसकोरस

बकरीकीमींगणी. अजाविष्ठा.

बकाणाकापानाकोरस. महानीबकोरस.

बकाणाकोषार.महानीबकोषार.

बहेडाकावृक्षकीबकल. बिभीतककापेडकीछाल.

बडाआंवला. मोठाआंवलाकाफल.

बरण्यू. देसप्रसिद्धवृक्षहै. बरणो

बरण्याकीछाल. बरणाकीबकल.

बरण्याकीजड. बरंणाकोमूल.

बडकीजडकीबकल. बटजटाकीछाल.

ब.

बटकोदूध. वटदुग्ध. प्र.

बडकापान. वटपत्र.

बडकीजड. वटवृक्षकोमूल.

बकाणाकाबक्कांकीबकल. महानींबकाफलांकीछाल.

बडीहरडै. मोटीहरडै. तो.२उपरांतकीअलांवू आकार.

बडकीबकलकोरस. वटछालकोरस.

बहेडांकीमींजी. बहेडांकाफलकीमींगीमज्जा.

बकराकाबाल. अजकाकेश.

बलदकारूम. वृषभकाकेश.

बडकीजटा. बटकीशाखा.

वायविडंग. विडंगप्रसिद्ध.

ब्राह्मी. ब्रह्मदंडी. मोटापानकी. तथाछोटापानकी.

बाबची.वर्वरीप्रसिद्ध. वनतुलसी.

ब्राह्मीकोरस. ब्रह्मदंडीकोरस.

बाबचीकोरस. वर्वरीकोरस.

बालूरेत. पांशु.शुद्ध.बारीकवालू.

बांसकीलकडी. वंशकाष्ठवावांसकीडांग.

ब.

बासकीछाल. वांसकीलकडीकी छाल.

बाराहीकंद. शूकरकंद. प्रसिद्ध.

बाछडीकोमूत. गोमूत्र. प्रसिद्ध.

बांझकंकोडीकीजड. वंध्याकर्कोटीकाकोमूल.

बालुकायंत्र. जी. यंत्रमैं. बालू. रेतभरऔषधीपचावै.

बीजोराकीकेसर. मातुलिंग. महालुंगाकीकलीषाटी.

बिजयसार. वृक्षविशेषअसन.

बिनासेकीभांग. काचीबिनासेकी अशुद्धबागकी.

बिष्णुक्रांताकीजड. तिलकटोजडीहोयछै.

बिषखापराकोरस. लालसाटीकारसपुनर्नवा.

बिजोराकोरस. मातुलिंगकोरस षाटाफलकोरस.

बिजोराकीजड. मातुलिंग. महालुंगा. तुरंजकीजड. मूल.

बिदारीकंद. कोलीकांदो. कोलीलोगपांणकपडाकैदेवै.

ब.

बिलावकीविष्ठा. प्रसिद्ध.

बिसषापराकीजड. पुनर्नवामूल लालसाटाका.

बिसषपर्यो. लालसाटो.

बिष्णुक्रांता. तिलकंटी.

बीलगिर. बीलकाफलकी गीर काचाकी कोमल.

बिडलूण. पांचलूणमैं बीडप्र.

बीजाबोल. प्रसिद्ध.

बील. बीलपत्रको वृक्ष. फल.

बीलपत्र. बीलवृक्षका पान.

बीलकोषार. बिल्वका वृक्षकी राषको षार.

बीलकीजड. बिल्वको मूल.

बीलकाकाचाफल. बिल्वकाकोमलफल.

बेदकी जडकी बकल. बेतवृक्षका मूलकी छाल.

बेरजो. गंधोबेरजो प्रसिद्ध.

बैंगणकीजड. वृंताककाझाडको मूल.

बैंगणकोभडीतो. वृंताकको भूंज्योहवो भडीतो.

व.

बैंगणकी जडको रस. वृंताक कोमूल जडको रस.

बोलवृद्ध. वीजाबोल प्रसिद्ध.

बोरकीमींगी. बोरफलकीमींगी मज्या

बोरकीजड. बोरडीकी जड. तथा झाडकी जड.

बोरकापान. बोरडीका पान.

बोरकी लकडीकी अग्नि. अंगा राकी आंचबोरकी लकडीकी

बोरकी जडको रस. बोरडीका मूलको रस

बौंलीका पान. बंबुलीका पान. बंबूलभेदहै.

बौलसिरिकी छाल. कुंदकावृक्ष की वकल. छाल. मोलसरी.

बंदाल. बनालकाफल. कंटकफल. बेलडीकलागै.

बंसलोचन. प्रसिद्ध.

बंबूलकी बकल. बंबलकी छालकी करकी

बंबूल. बंबल वृक्षकीकंर.

बंगेश्वर. पारो. रांग. दोयामिल कर भस्म

व.

बंग. केवलरांगकी भस्म.

भ

भाडंगी. भाडंगमूल. भारंगकीज ड. वभनेटी

भांग. भृंगीबूटी. प्रसिद्ध. शिवप्रि

भांगको रस. जलभांगको रस.

भारीवस्तु. गरिष्ठभोजनकी. वा. उजनमैं. सतोल. पारोई.

भिलावा. भल्लातकफल प्रसिद्ध.

भीलावाछोछा. केवलभल्लातक.

भीमसेनीकपूर. शुद्धकर्पूर. वरा सकर्पूर.

भेडीकोघृत लरडीको घृत.

भेदडी. पतलीराबडी. वाकणीरी. आटाकी चावलांकी

भैसकीछाछ. महिषीकादूधकीछा छ.

भैसकोमूत. महिषीकोमूत्र.

भैसागुग्गुल. गुग्गल प्रसिद्ध.

भोभरमैं सेकणो. छाणांकी गरम राष. तुरतकीमैं.

म.

मंसूर. लालअन्न

म.

महामेद. अष्टगणवर्गमैं लिषीत्र मिलित.

महुवो. मधूक वृक्ष.

महलोटी. जेठीमध.

मैणसील. मैणसील. मटियाहर तालमैं नीसरे

मसुरकोसातू. मसूरकी दालसेकीको आटो

मद्य. मदिरा प्रसिद्ध.

निर्यास.

मजीट. मंजिष्ठा प्रसिद्ध.

मलेठीकोरस. जेठीमधकापानाकोरस

मटर. वटाणा अन्नहोयहै

मनोहरकथा. उत्तमइतिहास. चमत्कारीक

महँदी. मृद्धिका. महदीका पानस्त्रियांका हातमांडे.

मस्तंगीगूंद. रूमीगूंद. कोनरूप्रसिद्ध.

ममाई. दिशावरी. विलायती. अज्ञात वाज्ञात. अप्रसिद्ध.

मदनबाणकाफूल. रामबाणकापुष्प

म.

मखो. मरुअक. सुगंधीझाड. प्रसिद्ध.

मठो. दहीकोविलोयो जाडोविना माषनकाढ्यो

मधुपक्वहरडै. हरडैउत्तम. सहतमैं पकावसो.

मारुबैंगण. मारवाडी वृंताक मोसमैं. होय. मोटो बहुवीज

मांषीकीबीट. मक्षिकाकीविष्ठा.

[illegible]डूर. लोहाकोकीट. कांटी. शुद्धकीभस्म.

मार्योसार. लोहाकीभस्म. लोहसार.

मार्योपारो. शुद्धपाराकी भस्म.

[illegible]ार्योअभ्रक. शुद्धअभ्रककी भस्म वाकृष्णाभ्रक.

[illegible]ावो. दुग्धकोघोट्योडोमावोप्रसिद्ध.

मार्योमैणसील. मैणसीलकी भस्म

मालकांगणी. कांगणीज्योतिष्मती कंगुनीपारावतपदी

मांसकोसोरवो. प्रसिद्ध.

म.

माषपर्णी. उडदपर्णी सूर्यपर्णी. कांवोजीहयपुछिका

मानपात. रामबाण.

मांजूफल. प्रसिद्ध.

माथाका केस. मस्तककेश. प्र०

मिसरी. सिता. खडीसाखर.

मिनकादाष. मनुक्का. द्राक्ष प्रसिद्ध.

मीठोतेल. तिलांको तेल.

मीठाबोर. बडबोर. मीठा. वा. पेमंली

मींढाकोसींग. मेशशृंग. लरडाकोसींग.

मुर्वा. मधूलिका. मधुरसा. गोकर्णी पीलपर्णी मधुश्रेणी.

मुरगांकोमांस. प्रसिद्ध.

मुरदासिंही.वोदारसिंह. प्रसिद्ध.

मूंग. धांन्यविशेष. प्रसिद्ध. मुद्ग.

मूलीकाबीज. मूलीकाबीज त.गाजरकाबाज.

मूलीकोषार. षारकाढणो मूलाकां माह.

मूसली. सुपेदमूसली. नागोर प्रसिद्ध.

म.

मूसांकोमांस. प्रसिद्ध.

मूलीकीजडकोरस. मूलाकीजडको रस.

मूंग्या. प्रवाल. लालमूंगा प्रसिद्ध

मुचकूंदकाफूल. मुचकुंद प्रसिद्ध क्षत्रवृक्ष. प्रतिविष्णुक

मुरगकाअंडाकाछुंत. छोडाअंडाका प्रसिद्ध.

मूंगकाफूल. मुद्गपुष्प.

मेद. अष्टगणवर्गमें. अमिलित.

मेथी. मेथीको शाकपत्र.

मेथीदाणा. दाणामेथी. मेथीका बीज.

मेवो. पंचमेवो. अथवाबहुधा.

मोठ. मकुष्ठ धान्यविशेष.

मोहराको त्र्योपाणी. बालकनैं दृष्टिदोषमैं जलमंत्रायकरपावैं

मोचरस. सेवरीकाफूल. वाशाल्मली. मोचरस. निर्यास.

मोरकीपांषका चंदवाकीराष. मोर पीछका चंदवाकी. भस्म.

मोहाकाफूल मधुकवृक्षकाफूल. मधुपुष्प. महुवा.

म.

मोहनी. जोमंत्रका जप्यांसूं मोहि तदूजो होयसो.

मोतीअबींद. अवीधमोती. छेद विनाकामोती.

मोईजडकीजड.

मोरसिपाकोरस. मयूरशिखाज डीकोरस.

वर्णेज्यो

असलशुद्ध मोम.

मोरपांष. मयूरपक्षप्रसिद्ध.

मैडल. मेडफल.मैंडफल छर्दीकरावें मदनफल.

मैंदालकडी. सचिक्कणछाल. तथा लकडी चोटउपरलेप.

र.

रक्तचंदन. रतांजणी. लालकाष्ठ.

रसोत. झाडकोरस जमायो प्र सिद्ध.

रसकपूर. पाराकोरसवर्णेछे. सो. प्रसिद्ध.

रास्ना. राठ. एलापर्णी सुगंधासुर सा रसनारसा.

राई. राजिका प्रसिद्ध.

र.

राल. निर्यास प्रसिद्धहै. शालनि र्यास.

रास्नाकीजड. राठाकीजड.

रांधीसाल चावलांकी. चावलां सीजोइसाल

रामपिंपली

रांग. कली कथीर.

राब. डोबाकीराबवाडी झुगलीकी राबछाछकी राब जवारीकी.

रिद्धि. अष्टगणवर्गमैछे.

ऋषभ. अष्टगणवर्गमैंहै.

रुदंती. रुद्रवंती प्रसिद्ध.

रूपामषी. रौप्यमषी. प्र.

रूपो. चांदी. रजत. प्रसिद्ध.

रूपरस. रूपाकी भस्म.

रुद्राक्ष. मालारुद्राक्षकी. रुद्राक्ष का बीज.

तचीणी पीलीलकडी. रेच नीहै.

रेसमीवस्त्र. रेसमका कपडा.

रोहीस. रोहिसोतृणविशेष घास है रोहीस वृक्ष

रोहीसकीजड. रोहीसमूल. वृक्ष. रोहिसो. वृ. मू.

ल.

लवंग. लौंगदेवपुष्प. प्रसिद्ध.

ल्हसण. ल्हसण. रसोन. उग्रगंधा.

लजालू. लजवंतीबूटी. लजालूं लाजेरी

लावो. तित्तिरपक्षी भेद. वटेर.

लाहोरीफीटडी. तुरटी. प्रसिद्ध लाल.

लालएरंडकीजड. रक्तएरंडको मूल.

लाष. पीपलकीलाप.

लूणषपाकोरस. लूणक्यासागकोरस

लूणकीबत्ती. घावमैतथाव्रणमैं देवैसो

लूणष्यो. शाकपत्र प्रसिद्ध.

लोहवान. ऊदकोडियोलोह.वान. सादो

लोद. पठाणीलोदकासुपेदछोडा.

लोहसार. लोहकी भस्मशुद्ध.

लोहकोमैल. लोहकोकीटो तथा कांटी

लोहचूर. लोहको स्योहुवो

श. ष. स.

लंघन. कडाको. उपवास. अनसन.

सहजणांकाफूल. शोभांजनका फूलसोहीजणे

समुद्रकाफेण. समुद्रफेण. प्रसिद्ध समुद्रजल उपररहैं जीसूंसमुद्र फेनसंज्ञाहै. परंतुजलजंतुम०

सरावा. मृत्तिकाकादीवा मोटा.

. प्रसिद्धनकुली.

सतावरी. शतमूली. शतावर. बरी.

सहत. मधुमुहालका छताको

सहजणो. सोभांजन प्रसिद्ध.

सहजणाकीजड. सहजणाको मूल.

समुद्रफल. समुद्रसोसकाफल.

सहदेई. महाबला

सहजणांकाबीज. प्रसिद्ध.

सहजणांकोषार. वृक्षकीराषको षार.

सरस्यु. सुपदशर्षप.

सहदेईकोरस. महाबलाकोरस.

सहतकीबत्ती. सोबत्तीकैसहतल पेटै०

स.

सतोंन्यूं. अप्रसिद्ध.

समुद्रसोस. समुद्रफल.

सरकनाकीजड. मूंजकीजड

सहजणाकीफली. सोभांजनकी फली.

सूरपंषो. नील. मासाकोआकार होयहैसरफोको.

साटीकोषार. स्वेतसाटीकोषार.

सातूधानांकीकांजी. सप्तधान्य कीजुदीजुदीरावडी.

सातूकीपिंडी. सातूकालाड्डू.

सालवृक्षकाबीज. शालकाबीज.

साटाकीजड. इक्षुकीजडमूल.

स्यांमतुलसी. कालीतुलसी.

सालमामिसरी. पुष्पकंद. प्रसिद्ध.

सामराकीषाल. सामराकोचर्म. बारासिंगाकी.

सातू. सक्तूचिणाको. गोहांको. वाअन्यधानको सतू.

स्याहजीरो. मूसालांमैंहै. गरमहै. सुगंधीदार.

सालपर्णी. सरिवस्थिरा. सौम्यां. दशमूलमैं. प्रसिद्ध.

स.

साबणाकीवत्ती. बस्तिकर्ममैंवा बंधकुष्टमैंरेचन.

साटीकीजड. सुपेदसाठाकीजड

साठ्याचावल. साठदिनामैं. पाकै वैचावल.

सार. लोहभस्म.

साजीषार. सर्जीषारप्रसिद्ध.

साटीकोरस. सुपेदसाटाकोरस.

साटी. सुपेदसाटी. स्वेतपुनर्नवा.

सामरोलूण. साकंभरीकादेशको सांभर.

बण. साबणषारवस्त्रधोवाको. साजीचूनो.

सांठाकोरस. ईषकोरस. इक्षुरस.

सांषाहोलीकोरस. शंखपुष्पी. ब कपुष्पीकोरस.

साषोटकवृक्ष. पीतफलका. भूता वास करच्छद दांतणश्रेष्ठहोय.

सांखाहोलीकीजड. शंखपुष्पी कोमूल.

सालरमूल

सालवृक्षकापान. शालकापा न. प्र

स.

साषोटकवृक्षकीबकल. सहोर. कारीकूरीछाल.

सिरसुंकोतेल. सर्षपको. प्र.

सिंहरासी. सिंहजीरा. घीयापा षाणप्रसिद्ध.

सिरसूंकाफुलांकोरस. सर्षपका पुष्पकोरस.

सिरसकीजड.शिरीसवृक्षकोमू०

ंगी. वेलडीकाफल. जीं काफलमैंशिवाकृतीनीसरै.

शिवनिर्माल्य. गंगा तथा शिवो त्तीर्ण.

सिरसकाबीज. शिरीषवृक्षका बीज.

सिषरण. दहीमैंसकरकोयोग.

सिकताव. सरीसमैंसेककरै. सो.

सिलाजीत. पाषाणकोरसग्रीष्म ऋतुमैप्रगटै.

सिंदूर. प्रसिद्धहनुमानभैरव. ग णेशचढ.

सिंघाडा. जलवल्लीकाफलप्रसिद्ध

सिणकाबीज. सणबीजप्रसिद्ध.

स्त्रीकोदूध. प्रसिद्धऔषधीकैअर्थ

स.

सीरछुडावणी. सिरामोक्ष.

सींगडीं.शृंगी वारूमडीरक्तश्राव.

मोहरो. वछनाग. हलदी योवछनाग.

सींधोलू. सैंधवलूण. प्रसिद्ध.

सीसाकीगोली. प्रसिद्ध.

सिणकीछालकोचूरण. प्रसिद्ध.

सीतलमिरच.प्रसिद्ध.

सीतलसरबत. ठंडासरबत. अ नार. नीलोफर इत्यादि.

सीपकीभस्म. सीपकोचूनो.

सुपारीकीषार. पुंगीफलकीभस्म भुरकीमल्हम. मैकाम. आ.

सुस्याकोसोरवो. शशाकोमांस जींको.

सुपेदो. रंगप्रसिद्धउजनदारहोय.

सुरतीषपरयो षपरयो. खर्परसु रतीप्रसिद्ध.

सुपेदमूसली. मूसलकंद. नागो रीप्रसिद्ध.

सुपेदकल्हारीकीजड. कलहारी सुपेदकोमूल.

सुपेददोब. स्वेतदुर्वाप्रसिद्ध.

स.

सुपेदसिरस्युं. स्वेतसर्षपप्रसिद्ध.

सुपेदबाबाचि. बर्बरीस्वेत.

सुपेद. एरंड. स्वेतएरंड. प्रसिद्ध.

सुपेदकंडीरकी जडकी बकल. स्वेतकर्वीरकामूलकीछाल.

सुरमो. नेत्रांजनप्रसीद्ध.

सुपेदजीरो. जीरकसुपेद. मुसलांमें.

सुहागोसेक्यो. सोगीअग्निपरफु

सुपेदी मल्हिम. मल्हममैंपडैसुपेदाजिसीबूकीछै.

सुपेदमोम. मोहकाछाताकोशुद्ध निर्मलउजलो.

सूपेदषैरसार

सुपारी. श्रीवर्धनी.तथासोलधणी बरडाचिकणी.

सूपेदकाथो.शुद्धकाथो. पापड्यो जमायोडो.

सुसल्यो.

सजीवजंग.

सुंफकोषार. सूंफकाझाडकीरांष विरियाली.

स.

सूरकोघृत. जंगलीशूकर. बसा.

सूरकोदांत. शूकरदंत. वन. बराहदंत.

सुंठ. सूंठी. सूंठ. विश्व. प्रसिद्ध.

सूंफविरिह्याली. बडी. सुंफ. वादियान.

सूफकोअर्क. वादियान. तथासुंफकोअर्क.

सूकीमूली. मूलक. मूलानैसुकायलेसो.

सूकरकीविष्ठा. वनशूकरविष्ठा.

सेवतीकाफूल. सेवतीपुष्पप्रसिद्ध०

सेकीहरडैकी छाल. हरडै. भोभरमैंसेकैजींकीछाल.

स्नेहकीवस्तु. चीकणीवस्तु.

सेकीअजमोद. अजमोदनैंमंदा

सेकीहींग. गोघृत तथातलैसोशुद्ध.

सेकीभांग. भांग।का सेकैधोयशुद्धकरै.

स.

सोध्योसीसो. सीसानैं. रसकरै. पाछैबुझायपुटदेवै सो शुद्ध.

सोबारकोधोयोघृत. शतवारजलमैंधोवैसो.

सोनाका

स्वर्णपत्रसूक्ष्म.

सोमल

सोधीगंधक. शुद्धआंवलासार गोघृतमैं.

सोध्योसींगीमोहरो. दूधमैंडोलायंत्रसौं.

सोध्याभीलावा. अप्रसिद्धकोईकघृतमैंसेकैहै.

सोनमषी. स्वर्णमक्षिका. सोनमषी. प्रसिद्ध.

सोनामुषी. सनायनीली. जुलाबमैंप्रसिद्ध.

सोनाकीराष. स्वर्णभस्म.

सोनू. कनक. हाटक. कंचन.

सोनगेरू. स्वर्णमंजनी. सोनरूप्रसिद्ध.

सोधीसोनमषी. शुद्धस्वर्णमषी उपधातु.

स.

ाजीत. शुद्धशिलाजित त्रिफलामैंवादूधमैं.

सोध्योगुगल. गुगलत्रिफलांका जलमैंशुद्ध.

ंखकोचून.

शंखकीनाभी. शंखकोमध्यभाग.

संपुट. दोयसरावाकोजोडहै. सो संपुट.

संभालू. निर्गुंडी. नेगड. प्रसिद्ध.

संचरलूण. पचायोलूणकालोलूण. पादेलूण.

संखावली. शंखाहोली. शंखपुष्पी. बकपुष्पी.

शंखकीराष. शंखभस्म.

संभालूकापानाकोरस. नेगड निर्गुंडीकोरस.

संभालूकीजड. निर्गुंडीकोमूल.

ह.

हरडै सप्तजातकीहरडैछै. जींमै विजयानामहरडै सर्वकार्यमैं योगहै. अलांबूफलकेआकारहै.

ृलद. हरिद्रा. प्रसिद्ध.

. तवकिया. वामटिया.

. यथाक्तलेणा.

ह.

हरयाआंवला. लीलाआंवला अर्थात् वृक्षसौंउतरयातुरत.
हरतालतवकी. तबकीया. स्वर्ण सदृशतेज.
हरपारेबडी. फलविशेष. आंव लासदृश.
हव्यादिक. जव. तिल. घृतादिक.
हार्थीकोदांत. गजदंतप्रसिद्ध.
हाथीकोमूंत. गजमूत्र.

ह.

हाथीकोनख. गजनख.
हिंगोराकीजड. इंगुदीकोमूल.
हिंगलू. सिंगरफ. उपधातू.
हिंग. झाडकोरस.रामठ.हिंगप्र०
हीराकसीस. उपधातूंप्रसिद्ध. रंगतमैंप्रसिद्ध.
हेरणकासिंगकोपुटपाक. मृग शृंगपुटपाक.
हेरणकोमांस. मृगमांस.

हुलहुलकोरस. कागलाका षेतकोरस सुवर्चका. १ ब्रह्मवर्चला. २ सूर्यभक्ता. वरदायांकोरस. अथऔषधीका योगसमूहसैंजोयोग समूहनामहै. जैसैं त्रिफला. त्रिकटू. इत्यादिकज्यांको निघंट. संग्रहलिष्योहै. ज्यांकाकंठस्थ राषणैंसौ बहुत फायदो होसी. त्रिकटू. सूंठ. १ मिरच. २ पीपलां ३ समभाग.

अ.

अर्कद्वयं. सुपेदआकडो. लाल आकडो.
अष्टवर्ग. जीवक १ ऋषभक. २ मेदा ३ महामेदा ४ काकोली ५क्षीरकाकोली६ऋद्धी७वृद्धी८
अपामार्ग. सुपेदआंधीझाडो १ रक्तलालआंधीझाडो.

उ.

उपविष. आकडाकोदूध १ थोहरकोदूध २ कलिहारी३कंडीरदोय ४ धातूरो ५ जहरकुचिलो ६बछनाग ७.

क.

कन्हेरद्वयं. सुपेदकंडीर १ लाल कंडीर २.

च.

चारदाना. दाणामेथी १ असाल्यौं २ कालीजीरी ३ अजवायण ४.

चतुरूषण. सुंठ १ मिरच २ पींपल ३ पीपलमूल ४.

चातुर्जात दालचिनी १इलायची २ तमालपत्र ३ नागकेसर ४ सम.

चातुराम्ल. आम्लवेत १ आमली २ वडीजंवीरी ३ नींबू ४.

त.

त्रिफला हरडै १ बहेडा २ आवला३ सम.

त्रिजात. त्रिसुगंधी दालचिणी १ इलायची २ तमालपत्र ३ समभाग.

द.

दशमूल. लघुपंचमूल ५ बृहत्पंचमूल ५ दोयपंचमूल. एकठा करै तोदशमूलहोयहै.

दशांगधूप शिलारस ५० गुग्गल ५० चंदन ४ जटामासी ४ लोबान ३ राल ३ उसीर २ नख २ भीमसेनीकपूर १ कस्तूरी १ यहभागमुजब नखल्याघृतमैं सेकै.

प.

पंचाम्लं. आमलवेत १ आमली २ जंबीरी ३ निंबू ४बीजोरो ५

पंचकोल. पीपल १ पीपलमूल २ चव्य ३ चित्रक ४ सूंठी ५ समभाग.

ल.

लघुपंचमूल. शालपर्णी १ पृष्ठपर्णी २ बडीकंटाली ३पसरकंटाली ४ गोषरू ५.

र.

रसांजनं दारूहलदी काकाढामैं बरोबरको दूधमिलाय. दोन्याकोघट्टमावोकरैतीनैंरसांजनक.

रत्नानि. हीरो१ पन्नु २ माणक ३ नीलमणि ४ पुष्पराग ५ गोमेद ६ वैडूर्य ७ मोती ८ मुंगा ९ इति.

ब.

बलाचतुष्टयं. बला १ महाबला २ अतिबला ३ नागबला ४

विष. वत्सनाग १ हारिद्र २ सक्तुकः ३ प्रदीपन. ४ सौराष्ट्रिकः २ शृंगकः ६ कालकूटः ७ हालाहलः ८ ब्रह्मपुत्रः ९.

ष.

षडूषण. पीपल १ पीपलामूल २ चव्य ३ शित्रक ४ सुंठी ५ कालीमिरच सम.

क्ष.

क्षीरपंचवृक्षा. न्यग्रोधः १उदुंबर २ अश्वत्थ३पारिसः४प्लक्षः ५

क्षाराष्टक. पलास १ थोर २ साजी ३ आमली ४ आंधी झाडो ५ आकडो ६ तिलनाल ७ जव ८ यांकारवार.

क्षारद्वयं. साजीरवार १ जव खार.

व.

वृहत्पंचमूल. वीलगिर १ इरणीमूल २ शिवणीमूल ३ स्योनाकमूल ४ पाडलमूल.

इति अमृतसागरस्य निघंटसंग्रह समाप्त.

अथ औषधीनां दीपनपाचनादि प्रकारः

औषधी आंवको पचन नहींकरै अरुअग्नि प्रदीप्तकरैसो औषधी दीपन संज्ञक जाणजै जैसें सूंफनाम विरियाली अरुजो औषधी आंवको पचनकरै. अरु अग्नि प्रदीप्त नहींकरै जीनैं पाचन औ० कहिजे जैसें नागकेशर अरु जो औषधी. आंव पचावै अरु अग्नि प्रदीप्तकरै जीनैं रोचन दीपन पाचन कहिजे जैसें चित्रक प्रसिद्धहै.

संशमन औषधी जो औषधी तीनदोषांनै समान भाव राषै. कमजादा होय नहींसो जैसें नीमगिलोय अमृता. **अनुलोमन** जो औषधी वातादि तीन दोषांकों पचायकर परस्पर बंध्योडानै जु

दाकर मूलद्वारमार्गकाढै सो जैसें हरडे. **स्रंसन०** जो औषधी आगैंपाक होवाला दोषादिकमलमूत्र. ज्यांनें जबराईसौं बारेंकाढै सो. जैसें गिरमालाकीगीर **भेदन०** जो औषधी वातादिकांसूं. मलमूत्र अबद्ध तथा बद्धहुवा परस्पर भिड्या ज्यानें बारें काढेसो. जैसें कुटकी **रेचन** जो औषधी अन्नादिकांको पाक अपाक. ज्यानें पतलाकर बारें काटैसो जैसें तृवृत्ता निसोत **वमन** जो औषधी विनापाक्या पित्त कफ जुदा अथवा मिल्यानें मुषद्वाराबारेंकाढेसो जैसें मदनफल मेंढल. **संशोधन०** जो औषधीमलादिक संचय ज्यांनें मुषद्वारा अथवा अधोद्वारा बारेंकाढै नस्य वमन विरेचनसौं सोधन करैसौं जैसें देवदालीफल. **छेदन०** जो औषधी परस्परमिल्याजो कफादिक ज्यांनें जुदाजुदाकरै सो जैसें जवषारमिरच. सुठ पीपल सिलाजीत **लेखन** जो औषधी रसादिक धातु वातादिकदोष यांनें शोषण करके पतला करैसो जैसें मधु गरमजल वच जव **ग्राही०** जो औषधी दीपन पाचन करै गरमशक्तीसौं दोष मल धातुज्यांनें शोषण करैसो जैसें सुंठ जीरो गजपीपल.

स्तंभन० जो औषधी रूषापणासूं ठंडापणासूं कडवापणासूं हलका पाकसूं वायूकरके स्तंभनकरै सो जैसें नागरमोथो बीलगिर कोमल बीलगीर मोचरस कुडाछाल स्योनाक इत्यादिक औषध्यां यथायोग तासीरमिलैसो. **रसायनऔ०** जो औषधी शरीरकीजुरवा रोग दूरकरै सो जैसें नीमगिलोय रुदंती गुग्गुल हरडे **वाजीकरण औ०** जो औषधी धातूवृद्धीकरै स्त्रियांमे प्रीति बधावै सो जैसें आसगंध कौंचबीज सतावरी नागवला दूध साकर **धातुवृद्धि**कारक ज्या औषध्यांसूं धातूवृद्धि होय सो शुक्रलजा सो जैसें आसगंध मूसली सुतावरी साकर दुग्ध इ **धातूचैतन्यका०** ज्यां औषध्यांसूं धातूचेतनहोयसो जैसें उडद दूध भीलावाकीमींजी आंवला

इत्यादि. वाजीकरण औषध्यामैं विशेष. शुक्रधातूनैं चेतनकर वावाली स्त्रीहै, धातूनैं रेचनकारक मोटीकटालीकाफलहै.

वाजीकरणनाम औषधीकौं, जिसी परी क्षा.

धातूनैस्तंभनकारक जायफलहै धातूनैंशोषणकार क हरीतकीहै धातूनैंक्षयकारक कलिंगनाममतीरोहै वा जीनामअश्वकरण कर्ममैं एताविशेषहै. ध्यानमैं राषै सूक्ष्मऔषधी जो औषधी शरीरका रोमछिद्रद्वारा प्रवेशकरैसो जैसैं सिंधोलूण मधु निंब तिलतेल व्यवायी औषधी. जो औषधी पेटमैं जायकर पच्यां पहली सर्व व्यापक होजाय पाछै पचै सोजैसैं भांग अफीम इत्यादि विकाशी औषधी जो औषधी सर्वसंध्यानैं ढीलीकरै बलनैं शिथिलकरै सो जैसैं सुपारी कोद्रवनामकोदुंधान्य मदकारी औषध जो औषधी तमोगुणप्रधान होयकर बुद्धिनैं ढकै सोमदकारीजा जैसैं मद्य दारू प्राणहारक औषधी व्यवायी १ विकाशी २ सूक्ष्म ३ छेदी ४ मदकारी ५ आग्नेयी ६ यांछऔष ध्याकागुण करिकै जो युक्तपदार्थ होय सो प्राणहारक जैसैं विष बचनाग योगवाही कुयोगसौं विष सुयोगसौं अमृत.

प्रमाथी औषध जो औषध आपका पराक्रमसौं कान मूंढो नाक यांमैं प्रवेशकरकै कफादिकांका संचयनैं तोडैं जैसैं वच काली मिरच अभिष्पंदी पदार्थ जो पदार्थ आपकापिच्छल गुणासूं ज डगुणासूं जोरसवाहिनी नाड्यांछैज्यांनैं रोककर जडकरैसो जैसैं षाटोदहीं जो पदार्थ चिकटो षाटो बचवच्यो फूल्यो कोमल वो प दार्थ पिच्छलजो अभिष्पंदीनामकफकारीजा.

इति दीपनपाचनादि प्रकार संपूर्ण

अथ अनुक्तव्याधी प्रारंभः

इंग्रंथमैं मोती ज्वराको प्रकार नहीं कह्योहै. सो लिषूंछूं मंथरज्व

र जीनैं मूंधोरो मधुरो कहेछे अरु मोती ज्वरोकहेछे. ओर असाध्य हुवांसौं पाणी ज्वरोंवी एकमोती ज्वरामें भेदहे ईज्वरको मुष्यमूल पित्तज्वरहै. जीमैं लक्षण लिष्योहै अरु कोईक आचार्य ईरोगनैं जुदोबीलिष्योहै.

अथ मोतीज्वरका लक्षण.

ज्वर दाह भ्रम मोह अतिसार छर्दी तृषा अनिद्रा मुखरक्त तालु जिव्हासुष्क ओरकंठांपर मुक्ताकार सर्षपकादाणा जिसा प्र गटै इसा लक्षण होयछे मोत्तीज्वरो अथवा ज्वर नेत्रभ्रमें मोह दंत ओष्ठकाला जीभ कंठ सुष नाक नेत्र सूष्कसूके लाल विपरीत होय अरु कंठामैं मोत्यांकोसो हारदिषै सिरसूंका सुपेद दाणा सदृश सोताप आयांपछे. दिन सातमैं अथवा नवमें दिनमुक्ता माला प्र गट होयसो मूंधोरो मोतीज्वरो जाणिजे अथवा बडा मूंधोराका तथा पाणी ज्वरकालक्षण पाणीका विकारसौं अथवा त्रिदोषसौं होयसो होट जीभ दांत कालाहोय संज्ञाहीन होय गहलो होय लक्षण सर्व विपरीत होयसो असाध्य जाणिजे अथ मोतीज्वराकी तासीर स्व प्नावलि० यहजो मंथरज्वरहैसो ज्वरांमैं सरदारहै अरुई ज्वरकी तासीर सरदार मुजबछे ईका उपचार मात्र पवित्रहै पवित्रस्थानमैं शुद्धवस्त्र. शुद्ध मनुष्य ईकीपरिचर्यामैं रहै दृष्टी आगे पवित्रता न्नि जर आवे अरुछोत लावणनही पडे लाल कामलीकी परांचबांधे अ रुस्यांणा वैद्यनैं ईमंथरकी अनुकूलतासौं उपचारकरणो योग्यहै. सुगंधीधूप अगर चंदणसौं मकानकों सुवाषितराषै अरु जँवाहरा बावे ज्यांपरनिजर हरियाली इत्यादिक अरुमनोहर इतिहासादिक स्वधर्मका इसा कारणासूं आपकी मुदतमें नरम पडे आरामहोय अरु जो कदास विपरीत उपचार करैतो क्रोधित होयकर असाध्य दशामैं प्राप्ति करैछे जीसूं पवित्र औषधी अरुमुक्ताफलांको आभू

षण अरु सुवर्णादिक साधन करणा सो प्रसिद्धहै अरु मंत्रादिकबी प्रसिद्धहै सो अबे औषधीका उपावलिष्यते.

अथघासो. चिरायतो सुंठ यांकोघांसो जलमैं घसकरदीजै तो जीर्णज्वरजाय १ कालोअगर घसकर पाइजे तोदाह शांतीहोय २ सहस्त्र वेध पाषाण काछबाकाकपालकी षोपरी बडीइलायची तुलसी पत्र नारेलकी दाढी षसषसकादाणा गवुकागोवरकोरस यांकोघा सोघसकर दीजै तो वायूको ठंढो मूंधोरो अछयोहोय ३ अथवा तुलसीकोरस गोवरकोरस जीरो सोनमष्पीकीभस्म घांसोदीजै. ४ अथवा सांभरोसिंग चंदण जीरो वालो मोथो किरायतो कुडो कालो जीरो गिलोय इलायची कमलगठा येसर्वघासोकर घसकर पाजै तो वायू अधिकमूंधोरानैं आरामकरै यथोक्तरीतसौं. ५ अथक्काथ चंदनादि चंदन सुपेद चंदनलाल वालो पित्तपापडो नागरमोथो सुंठ किरायतो उशीर पित्तअधिक होयसो आरामहोय.

काढोदियासूं वैद्यनैं रोगीको बलाबल देषकर काढाकी अष्टमांस चतुर्थांसकी योजनाकरणी अरुयांही औषध्यांमैं जल उकालकर पीवानै थोडोथोडो दियाकरैतो दाहमिटै चित्तप्रसन्नरहै घणाबक वादको बडबडाटको घटावहोय पित्त सांती होय निजर पौहचाय करकरैं . १ अथवा लघुशिवणी दाष चंदन नेत्रवालो मोथो षस वालो पित्तपापडो मलेठी समभाग अष्टमांश काढो मधुप्रतिवास किंचित्सौदीजे पित्तज्वर भ्रम दाह छर्दी अतिकोप शांतिहोय.

अथवा. रक्तचंदन वालो धणो कालोवालो पित्तपापडो नागर मोथो सूंठ यांको देवै ३ अथवा मांषी १ गुडमैंघाल गिढायदेवै ४ अथवा बडका पाकापान बाजरीको आटो यांको काढो देवै ५ अथवा पोदीनो वनतुलसी स्यामतुलसी यांकारसमैं मिश्रीघाल दिन

३ तथा ७ देवै ६ अथवा नागरमोथो कपुरकाचरी ब्रमतुलसी पित्तपापडो सुंठ यांको काढो देवै ७ इति.

अथमंत्र उंनमो अंजनापुत्र ब्रह्मचारी बाचाअविचलस्वामी नउकार्य सारिखा क्षांक्षः मगधदेशराय बडेस्थानके तिहांमुशली कंदब्राह्मण तिणै मधुरो पैदाकियो पृथ्वी मांहिमोकल्यो हनुमंत बाचावली पडियो. हनुमंतजीदृष्टीपड्यो हनुमंतनामेंन गच्छगच्छ स्वाहा ॥ कोराम्रत्तिकाका गागरियाकरवा जिसागडगा ३ शुद्ध जल सौंभरीजे चंदणघसी घालीजे अगरधूपषेईजे पछै स्वेतपुष्प रोगीकामाथा उपरसौं वारिजैवार १०८ इमंत्र सौंमंत्र जपिजै शुद्ध होय कर दिन ३ अथवा ७ नजीक स्त्रियांनहींआणै दीजे. लावण छोतइत्यादिकको जतन रषाजे आडी लाल कामली बांधीजै स्वछ वस्त्रादिक पहिराइजे पथ्य पारक चिणाकीदाल भिजोयोडोदीजै अन्नमैंकोदुंबर टीकी यथाशक्तिमाफम राब कांजीपलेउदीजे अरुब डो मूंधोरोजोपाणीको विकार देशदेशांतरको वात्रिदोषसौं होय जींकालक्षण पहली कह्याहे जींकोउपाव वैद्यका जो विचारमें आ वे शास्त्र कीरीतसौंजो करणो योग्यहै कारण ईश्वर समर्थहै. ईश्वर सर्वकछूकरसकै.

इतिअम्रतसागरस्य अनुक्त प्रथमभागः नवीन टीकाकारके णश्रीधरेणकृतः सोयंशुभमस्तुः

इति पूर्वभाग समाप्त.

श्री

अमृतसागर तथा प्रतापसागर

तरंग पचीसको उत्तर भाग.

अथ

उत्तर भाग

प्रारंभ.

श्रीगणेशाय नमः

अमृतसागर तथा प्रतापसागर.

तरंग १ ला प्रारंभ.

अथश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्र महाराजश्रीसवाई प्रतापसिंहजीविचारकरिमनुष्यांकारोगांकौदूरिकरवाकैवास्तै परमकरुणाकरिकै चरकसुश्रूतवाग्भट्टभावप्रकाशआत्रेयनेआदिलेकरिकै वैद्यककासर्वग्रंथानैविचारकरिवाको सारकाढिअतिसंक्षेपतै सर्वरोगांको निदानपूर्वकअमृतसागरनामग्रंथकर्यौतींकीवचनिका करिकैऔषधांकाअनेकप्रकारकाअजमायाअजमायाजतनविचार पूर्वकलिषजेहै. अथ प्रथमरोगविचार रोगकहजे कहाकहींतरैकीपीडाहोय तींनैरोगकहिजे सोरोग दोयप्रकारकोछै. एकतो कायक दूसरो मानस कायामैंरहेसो कायक तिनकोनामव्याधिछै. मनमैं रहैसोमानस तींरोगकोनामआधिछै. सोयेदोन्यो वायपित्तकफरूपहोय सरीरमैं येकहीतरैका कुपथ्यकरिकैमिथ्याअहारअरमिथ्या विहारका वसथकीकोपकूंप्राप्तहुवाथकासर्वरोगांनैंउपजावैछै अर एबात पित्तकफ कहींतरैका कुपथ्यसै विगड्याथकादेहकूं विगाडैछै अरएहीअच्छीतरहपथ्यकासेयाथकाआच्छाहुवाथकासर्वदेहकूंपुष्ट करैछै. अथ प्रथमसर्वरोगांकीअरसर्वरोग्यांकीपरिक्षालिषांछां. प्रथमरोगांकीपरिक्षातो अतनाप्रकारसूं होयछै. नाडीपरिक्षा १ मूत्रपरिक्षा २ अररोगकाअहवालपूछवासें ३ सोरोगीकीपरिक्षातीनप्रकारकीछै. अर रोगांकानिदानसैं निदानकहियै अहवाल यांतीन्यां

श्रीगणेशाय नमः अथ अमृतसागरकी टीका नवीन नाम सूक्ष्म कला जींको कर्त्ता पंडित श्रीधरशिवलाल सूनु गौडब्राह्मणज्ञाती कृष्णगढप्रांत सलेमाबाद निवासस्थ अधुनाराजधानी श्रीमुंबईमैं याटीकासहित अमृतसागर स्वयंत्रालय ज्ञानसागरमैं छापकर प्रसिद्ध करी.

प्रकारसेंतीरोग्यांकोग्यान होयछै. अथ प्रथमनाडीपरिक्षालिष्यते. पुरुषरोगीहोयतींकीतोजीवणा हाथकीनाडीदेषिजे. स्त्रीरोगींहोय तींकी बांवा. हाथकीनाडीदेषिजेकीसीतरेंदेषे वैद्यएकाग्रचित्तना डीमैंराषिआपप्रसन्नहोय अररोगीकाहाथनै हलावादेनहींईसीतरे अंगुष्ठाकेनिकटिजीवकीसाक्षिनाडीछैसो वानाडी जीवकासर्वसुषदु षनेंकहैछैतीनैंवैद्यहैसोआछीतरह आपकीतीनअंगुल्यांसेतीदेषैसो वानाडीऐसीतरहदेषिथकी सर्वसरीरकासुषदुषनैं कहेंछै. जैसेराग कावेत्ताकूंवीणाकीतांतसर्वरागकूंकहैछै तैसेयानाडीभीसर्वसुषदुषकूं कहैछै. अरवाहीनाडी इसीतरहदेषीथकीसरीरकासुषदुषकीवैद्यकूं नहींकहैछै कीसीतरैकापुरसकी तत्कालस्नानकस्योहोयजींकी, त त्कालभोजनकस्यो होयजींकी, सरीरकैतैललगायोहोयजींकी, सू ताआदमीकी, दौडतापुरुषकी, भूषाआदमीकी, तिसायाआदमी की, कामातुरकी, मलमूत्रनैंआदिलेरवेगलागिरह्योहोयजींकीसो अतनापुरषांकीनाडीदेषिजेनहीं. अरदेषैतो वैद्यनैंरोगांकोयथार्थ ग्याननहींहोयछै अरजेसो वैद्यरोगीकहाथकीनाडीदेषैतैसेहीवैद्यरो गीकापगकीभीनाडीदेषे सास्त्रकासंप्रदायतें अथवा आपकीबुद्धिका प्रभावतेंजैसे जोहरीअभ्यासकाबलथकी हीरानैंआदिलेर जवाहर कासांचाझूठानैं अरवैकामोलनैं कहदेवैछै तैसेही भलोवैद्यशास्त्रका अरअभ्यासका बलथकीरोगीकारोगकीसाध्यअसाध्यकीअर सरी रकासुषदुषकीसर्वचेष्टाकूंजाणैछै. अवईनाडीकीपरिक्षालिषूंछूं अंगु ष्ठाके लगतीहीतीनअंगुल्यामैंपहली अंगुलीनीचैतोवायकीसुष्यना डीवहैछै दूजीअंगुलीनीचैपित्तकीनाडीवहैछै पीछलीअंगुलीनीचैकफ कीनाडीवहैछै सोवासांपजोकनैं आदिलेरजेसैवेवांकाचालैछै तैसेंवा

न.टी. प्रथम ग्रंथकर्तारोगीकीपरिक्षातीनरीतसौंकहीछै. नाडी. मूत्र अहवाल सोग्रंथका विशेष वधवासौं परंतु अन्य ग्रंथांमैं अष्टविध परिक्षाछै यारीतसौं नाडी मूत्र मल जिंव्हा नेत्र शब्द स्पर्श रूप जीमैंमुष्यतो सारीहीछै परंतु नाडी जीभ मूत्र ये बहुधा करैछै.

यकीनाडीवांकीचालै. अरकाकलवामीडकानैं आदिलेरजैसैंवेउताव लाअरफदकता चालैछे तैसे पित्तकीनाडीउतावली अरफदकतीचा लैछै जैसैंराजहंसअरबतक अरमोरकबूतरकमेडी कूकडोतीनेंआदि लेर येजीनावरमंदचालैछे तैसेंकफकी नाडीमंदचालै अरवारंवार सांपकीसीगतिचालै वारंवारमींडकाकीसीगतिचालै सोवानाडीवात पित्तकीजाणिजे अरसर्पकीसी अरहंसकीसीगतिहोय तीनाडीनें वा यकफकी कहिये अरवानराकीसी मींडकाकीसी हंसकीसीचालचालै तीनाडीनैंपित्तकफकीकहजे अरजैसैषातीचीडोकाष्ठनैकूटैछै अतिवे गसूं तैसेही पुरषकीनाडीचालै अरवाहीनाडी चालवासेंरहजाय अ रऔरु चालवालागिजाय वानाडीसन्निपातकी जाणिजे. अरमंद मंद वांकी २ व्याकुल व्याकुल होय स्थिर स्थिरहोय वाधमनीना डीजींकीचालैसोवानाडीसूक्ष्महुईथकी पुरुषनें मारैछै. सोवानाडीस न्निपातकीजाणिजे. जीपुरुषकै ज्वरकोकोपहोयतींकी धमनीनाडी उन्ही अरउतावली घणीचालै अरजींरोगीकी नाडीइकसारसी आ पकास्थानमैंचालैसोरोगीमरैनहीं अरकामातुरपुरषकीनाडीउताव लीचालै. क्रोधीपुरसकीनाडीउतावलीचालै. चिंतावानपुरसकीनाडी क्षीणचालै अरकहींतरैसूंपुरसडर्‌योहोयतीकीनाडी महाक्षीणचालै अरमंदजींकीअग्निहोयअरक्षीणजींकीधातूहोयतींपुरषकीनाडीमहा मंदचालै. अर लोहीकाविकारवाला पुरसकीनाडी क्यूंयेकगरमहुई थकीभारीचलै अरजींपुरसकापेटमें आंवहोयतींपुरसकीनाडीनिपट भारीचलै. जींपुरसनें भूषघणीलागी होय तींपुरषकीनाडीहलकीअ रउतावली चालैअरजींपुरसभोजनकर्‌योहोयतींपुरषकीनाडीधीरी चालै जींपुरसकैमलकोपात हुवोहोयतींपुरसकीनाडीघणीउतावली

नः टी. नाडी तीनकहीछै वातकी पित्तकी कफकी जीमैंआदिवात मध्यपित्त अंतकफ ईसंप्र दायसौं अंगुष्ठाकामूलकैलगतीवैद्य आपकाहातसौं आपकीतीन अंगुलीधरैछै जीसौंकारणजाणैं परंतु जदावायुअधिकहोयछै जदावायुमध्यमबलवान्‌होयछै.

चलैसुखीपुरसकीनाडी धीरी अरबलवानचलै और नाडीकीपरिक्षा तो घणीप्रकारसूंछै सोबुद्धिवानवैद्यहोयसो आपणीबुद्धिसूंनाडीपरिक्षाशरीरकासुखदुःखकोज्ञानसर्वविचारिलीज्यो जैसेंजोगीकूं जोगकाअभ्यासकरिकै ब्रह्मकोसाक्षातज्ञानहोयछै तैसैंसदवैद्यकूनाडीकाअभ्यासकरिकै सरीरकासर्वरोगांको अरसुखादिकांकोज्ञान होयछै इतिनाडीपरिक्षासंपूर्णम्. १

अथ मूत्रपरिक्षालिष्यते वैद्यहैसो चारीघडीकेतडकैरोगीनैंउठाय काचकासुपेद वासणमैं अथवा कांसीकापात्रमैंमुतावै पाछैवे वासणनैंवस्त्रसूंढांकिराषै सूर्योदयहुवापाछै वैद्यवेकीपरिक्षाकरै वेरोगीकोमूत्र पाणीसिरीसोहोय लूषोहोय अरघणोहोय अरक्यूंनीलोभी होयतो वायकाविकारको मूत्रजाणिजे. अरवेमूत्रकोलालकुसुंभासिरीसोरंगहोय अरगरमऊतरै अथवा पीलो केसूलाकारंगसिरीसो रंगऊतरै अरथोडोऊतरै तोगरमीका आजारका मूत्रजाणिजेअरवे रोगीकोजाडोअरसुपेदअरचीकणो मूतऊतरैतोकफका आजारको मूत्रजाणिजे. अरओचारीघडीका तडकाकोरोगीको मूततावडेमेलि घडीचारि पाछै वेमूत्रऊपरिवैद्यहैसोकपडासेतीतैलकी बूंदनाषै वा तेलकी बूंदमूतऊपरिफैलिजायतो ओरोगी साध्यजाणिजे. अरओ रोगीवेगो आछ्योहोय अरवेंतेलकीबूंदमूतऊपरिफैलैनहीं अरस्थिरहोय रहैतोओरोगीकष्टसाध्य जाणिजे. अर वा तेलकीबूंदरोगीका मूतमैंडुबिजाय अथवाचाककीसीनाईं भ्रमणलागिजाय तो ओरोगीनिश्चैमरै अर वे रोगी कामूतमैं तेलकीबूंदनाषतांबूंदमैंछेद्र पडिजाय अथवा येचिन्हहोजायषडगके आकारवादंडके आकार वाधनुषके आकारतैलकीबूंद होयजायतो वोरोगीनिश्चैमरै अररो

न. टी. जीवायुकाकोपकीनीगैराषणी अरनाडीज्ञानतोविशेषछै अन्यग्रंथांसूंजाण्योजाशी परंतुसंक्षेपसौंलिष्योछै लौकीकमैभीकहैछै रोगी पागीपारषीनाडीवैद्यअरन्याव एताकैगुरुतो षरापण हीयातणौउपाव रागीगवैयो पागीषोजीपारषी जहवेरी इत्यादि.

गीकामूतऊपरि तेलकीबूंदतलावके आकारहोजाय अथवा हंसके आकारहोय अथवा पद्मकेआकारहोय अथवाहाथीकेआकारहोय अथवा छत्रकेआकारहोय अथवा चमरकै तोरणकेआकारतेलकीबूंदहोयतौओरोगीताजोहोयअरसरस्यूंकातेलसिरीसोजींकोमूतहोय तींकैवायपित्तको रोगजाणिजे. अर कालो अरबुदबुदानैं लीयांजीं कोमूतहोय तींकैसन्निपातको आजारजाणिजे. अरमूततांजींरोगी कीधारलाल उतरैसो दीर्घरोगजाणिजे. मूततांजींकीधारकालीउत रैसोरोगीमरिजायअरजींका मूतमैंबकरीकामूतसरीसीवास आवेतीं कै अजीर्णकोआजार जाणिजे. जीकोमूतगरमअरलाल अथवाके सरी सरीसोपीलोजींकोमूतहोयतींकै ज्वरकोआजारजाणिजे. अर जींकैकूवाकापाणीसिरीसोमूतउतरै तींपुरसनैनिरोग्य जाणिजे इति मूत्रपरिक्षा संपूर्णम्. २

अर रोगांको अहवाल वांकाप्रसंगमें कहस्यां ३ अथ रोगी कीपरिक्षालिष्यतेरोगीकी परिक्षा अतनाप्रकारसैंहोयछैदेषवासैंस्प र्शकस्यांसें अरबूझिवासै अरस्वप्नसैंदूतसैं अर सुकनसैं अर काल ज्ञानसैं अरओषधदेसकालअवस्थाअग्निबलकाविचारसैंअरसाध्य असाध्यसैंइतना प्रकारसूंरोगीकीपरिक्षा करिजेसो अनुक्रमसैंलि षाछांपील्यानैंआदिलेरकेईक रोगतोरोगीनैं देष्याथकाई वैद्यनैंग्या नहोयछैअरज्वरनें आदिलेरकेईक रोगरोगीनैंस्पर्शकस्याविनावैद्य नैंनहींज्ञान होयछे. अर उदर, सूलपार्श्वशूल मस्तकपीडाववासीर उपदंश सुजाषहोलदिल अर भूतादिक कोलागिवो प्रमेहनैंआदि लेर केईकरोग रोगीने बुझ्याविनावैद्यनै रोगकोयथार्थग्यान नहीं

न. टी. बुद्धिवान्‌कौरोगीकीपरिक्षा अनेक तरांसौं करणीपडै छैसोलिष्यांसूं कठातांई पारआवै. श्री परमेश्वरजी शुद्धवैद्यपुरुष छै. ज्यांकाहियामैं घणीहीतोमोठीजायगांराषीछै. ान. सुविचारवा निदान चिकित्सा परिक्षा क्रियाका भंडार भरराष्याछै प्रजाका उप कारकैवास्ते.

होयछे. अथ सुपनपरिक्षालिष्यते रोगीनै ईसासुपनाआवैतो आ
छयानहीं. रोगीनें सुपनामै नागा अरमुंडित अर लालअरका
लावस्त्र पहरयांथका आदमीदीषै अरनकटाअरबूचाअरकालाअर
आयुधनैलीयांथका अरफांसीनैलीयांथका मारताथकादीषैतो ओ
रोगी असाध्य जाणिजै. अरभैंसाऊपर ऊंटगधाऊपरचढ्यादक्षि
ण दिशानें जातो सुपनामै देषैतो रोगीनें आछयोनहीं. अरऊं
चासुंनीचैपडै जलमैं डूबजाय अग्निमेंबलजायसिंहनैं. आदिलेर
वैनै षातोहोय दीवानैं बूझातोदेषैतेल दारुपीवतोदेषै लोहनैलेतो
देषै पक्वान्ननैषावतोजाय कूवामै पडतोजायइसा सुपनारोगीनैआ
वैतोरोगीको असाध्य जाणिजैअरईनै आदिलेरईसा सुपनाकोईदे
षैतोकहीनें कहजेनहीं. अरपरभातेही भस्मादिकको स्नानकरै वेसु
पनामाफिक होमदानपाठनेंआदिलेकरिदीजैतो सुपनाको दोसदूरि
होय १ अररोगीनेंइसासुपना आवैतोआछयासुपनामेंदेवता राजा
जाचकमित्र ब्राह्मणगऊ अग्नी तीर्थ देषैतोओरोगीवेगोअछयोहोय.
अरसुपनामेकादानेंतिरजाय वेस्यानेंजीतै महलरथपर्वत परचढै तो
ओरोगीवोगेआछयोहोयसुपनामेंसुपेदवस्त्रसुपेदपुष्पधारैअरमांस
मीनफल यांनैषायतो ओरोगीवेगोआछयोहोय. अरसुपनामें अग
म्यागमन करै अरसरीरकौं विष्ठाको लेपकरै अररोवै अर आपकी
मृत्युदेषै अर काचो मांसषाय सुपनामें तो ओरोगी वेगोआछयो
होय अरजोक सांप भौरा मांस सुपनामैं जीनैयेकाटै ओरोगीवेगो
आछयोहोय. येसुपना आछया आदमीनें भीआवैतो वेनैभी सुभ
जाणिजे इतिसुपनपरिक्षासंपूर्ण. २

अथदूतपरिक्षालिष्यते वैद्यकाबुलावावास्तैदूतभेजेसोकाणोषो

न. टी. स्वप्नादिकअर सकूनादिकछैसोएकाया भीईश्वरीसत्ताछै. ज्यांकाजिसाफल भो
गणाछै जिसाही प्रगट. सुभअसुभकारणांसूंजाण्या जायछै. अरमनकोअरबुद्धिको कारणछै
जैसाज्यांकाकर्मछै वैसीही सूचनाकरैछै. जींसूं अंतर्लक्षकीवातसाचीछै.

डो नकटानैंआदिलेनहींभेजो अरइसानैंभेजैतो ओरोगीवेगोआ छ्योहोयसोलि० चतुरमनुष्य अरनिर्मलवस्त्रपहर्‍यांहोय अरसुर्ष. होयऐसानैंभेजै अरघोडा रथऊपरिचढिकरिजायक्यूंवैद्यकैवास्तैंभे टलेजाय आछीउत्तमजातिकोअरआछ्योचेष्टावान्होय जैठीकोऊं कोसुरचालतोहोय जैठीनैंवैद्यकनैंजायउभोरहै ऐसोदूतवैद्यका बुला वावास्तैजायतो ओरोगीवेगोआछ्योहोय इतिदूतपरिक्षासंपूर्णम्.

३ अथसकुनविचारलिष्यते वैद्यहैसोरोगीकाजतनकरिवावास्तै जातोहोय तीनैंसीतल सगुनमिलैतो वेशकुन आछ्याअरवैद्यनैंरो गीकीजातां अग्निनैंआदिलेरगरमसकुनसामेमिलैतोरोगी आछ्यो नहींहोय अरदूत वैद्यनें बुलावानें जातोहोयतीनें जलनेंआदिलेर सीतलसकुनसामेंमिलैतो आछ्योनहीं अरवें दूतनें अग्निनेंआदिलेर गरमसकुन सामेमिलैतोवेगोआछ्योहोयइतिसकुनपरिक्षासंपूर्णम्.

४ अथकालग्यानलिष्यते जीरोगीकैरातिनैंतोदाहहोय अरदिन मैंसीतलागे अरकंठमें रोगीकैकफबोलै ओरोगीनिश्चैमरै जीरोगी- कौनाककीअणीसीतलहोय अरवेरोगीका सिरकैविषैसूलचालैतो ओरोगीनिश्चैमरै अरजींरोगीकी कांतिजातीरहै अरवेकोप्रताप जातोरहै अरवेंकीलाजजातीरहै अरवेकोसुभावक्रोधी होजाय सो रोगीछमहिनामैंमरै अरजींरोगीकीअंगकांपतोहोयअरवेरोगीकीग तिभंगहोय अरवेरोगीकासरीरकोवर्णओरसोहोजाय अरवेरोगीनैं सुगंधदुर्गंधकोग्याननहींहोयसोरोगीनिश्चैमरै अरवृक्षकापेडमेंअर वृक्षका डालामें रोगीनें अग्निकातरवरासादीसै ओरोगी छमहिनामें मरै अरओरोगीकामकरिकैहीनहोय अरओरोगीकैप्रस्वेदनहींआ वैओरोगीतीनमहिनामैंमरैअरजोरोगीकानकाछिद्रनेंमूंदिअरशब्द

न. टी. वैद्यनैं बुलावा आवै ज्यानै जोशकुनहोय छैवांकाउपयोगीसोवैसकुनवैद्यनैं आवतांवि परीत छै. कारणावैद्यका उपयोगीसकुनदूतनैंनहीं चाहिजै. अर दूतकाउपयोगी सकुन वैद्यनैंनहीं- चाहिजै. परंतु यावात आपकै हातनहीं भावीकै वंसछै.

सुनैनहींसोरोगीनिश्चैमरै अरजींरोगीकी आंष्यांअरदेह अरमूंढा कोवर्ण ओरसोहोजायसोरोगीनिश्चैमरै अर जींरोगीनेंआपकीजी भकीअणी अरनासिकाको अग्रभाग अरभंवाराकोवीचदीसैनहीं ओरोगीनिश्चैमरै अरजींरोगीकामूंढाकोवर्ण ओरसोहोयअरवेरो गीका लालनेत्रहोयसोरोगीनिश्चैमरै अरजींरोगीकीइंद्रियां आप आपका विसयनें ग्रहणकरैनहींसोरोगीनिश्चैमरै अरजींरोगीकी बो लवासूं वाणीथकीजायसामर्थ्यथकासोरोगी निश्चैमरै अरजींरोगी नेंकाचमें अरजलमें आपकीछायादीषैनहींसोरोगीनिश्चैमरै अरजीं रोगीकोमूंढोलालपद्मसिरी सोहोजाय अरजींकीजीभकालीहोजाय अरजींकासरीरमेंपीडाऊठिआवै सोरोगी निश्चैमरै अरजींरोगीको हीयोअरनाभिअरकांधोकांपणलागिजाय सोरोगीनिश्चैमरै अरजीं आदमीकै अश्लेषा शतभिषा आर्द्रा स्वाती मूल पूर्वाफाल्गुनी पूर्वा षाढा पूर्वाभाद्रपदा भरणी यानक्षत्रांमें अरदीतवार शनैश्चरवार होय मंगलवारहोय अरचौथिअरछठि वारसीयेतिथिहोयतीमें रो गउपजै तोओरोगी निश्चैमरै अरजींरोगीनें पैलाकी आंषिकीपूत लीमें आपकोस्वरूपदीसैनही ओरोगीनिश्चैमरै अरजींरोगीको सू र्योदयहुवाथकाजीवणोस्वरचालै अरसंध्यासमें वांवोस्वरचालै ओ रोगीमरैसही इतिकालज्ञानसंपूर्णम्. ५

अथऔषधीविचारलिष्यते वैद्यहैसो औषधीकागुणागुणवि चारै अररोगीनैं रोगकाप्रमाणमाफिक औषधिदेकैसेंदेजोरोगथोडो होय तो औषधि घणीदेनहीं अर रोगघणोहोयतो औषधिथोडीदे नहीं अरकडवी अरकसायली औषधिरोगीषायनहीं अर वे औष धीसेतीरोगी द्वेसकरैऐसोरोगी जीवैनहीं इतिऔषधिविचारसंपूर्ण.

न. टी. कालज्ञानतोएकयोगाभ्यासछै. सदासौं ज्याकौसाध्यछै. ज्यानैपूर्णषवर पडैछै अर-मनुष्यजैसै तुरतकू वोषोदेछै. लाय बुझावानैंतो. वाकूपेषोदैजितैलायतोरोकी रहैनहीं. जीसूं कोईउत्तम मनुष्य होयछैसो याभी साधनरांषै तो कामआवै.

अथदेसविचारलिष्यते देसहैसोतीनप्रकारकाछै अनूप१ साधारण २ जांगल३ जैठेघणोंजलसदावहतोहोय अरकफदेसामैं घणों होय ऐसो पूर्वनैअनूपकहजे १ अरऐसोलक्षण औरठैभीहोयजीने भीआनूपदेसकहजे अरजींदेसमें वायपित्तकफ बराबरिहोय तींदेसनें साधारणदेस कहजे २ अरजींदेसमैं ओआदमीउपजै तींआदमीकी याहीप्रकृतिहोयछै ३ इतिदेसविचारसंपूर्णम् ७

अथकालविचारलिष्यते कालतीनप्रकारकोछै सीतकाल १ उष्णकाल २ वर्षाकाल ३ सोयांकोविचारलिषूंछूं सीतकालमैंसीतथोडोपडै अरघणोंपडैतोरोगहोय अरसीतकालमैं गरमीपडैतो ओविपरीतछै १ ओभीआछोनहीं ईमैंभीरोगहोय इसीतरैऊष्णकालमैं उष्णथोडोपडै अथवा घणोंपडै अथवा ईमैंसीतपडैतोरोगकी उत्पत्तिहोय २ ऐसैहीवर्षाकालमैं वर्षाथोडीहोय अथवा घणीहोय अथवा होयनहींतो मनुष्यांकोंरोगउपजै ३ इतिकालविचारसंपूर्णम् ८

अथअवस्थाविचारलिष्यते अवस्थाछैतोघणांप्रकारकी परंतु-तीमैंतीनतो मुष्यछै एकतो बालअवस्था १ दुसरी तरुणअवस्था२ तीसरी वृद्धअवस्था ३ तीमैंजो उत्तममध्यम अधमजीमैंमुष्यहोय तींकै भीजो रोगउपज्योहोय तींकासरीरअर अवस्थामाफिकै सदवैद्यहैसो जतनकरै इतिअवस्थाविचारसंपूर्णम् ९

अथअर्थविचारलिष्यते अर्थपांचप्रकारकोछै एकतो शब्द १ दूसरोस्पर्श २ तीसरोरूप ३ चौथोरस ४ पांचवोगंध ५ शब्दकोठिकाणोंतो कानमैं, स्पर्शकोठिकाणों त्वचामैं, रूपकोठिकाणों नेत्रमैं, रसकोठिकाणों जीभमैं, गंधकोठिकाणोंनासिकामैं. शब्दकोधर्म कानमैंछै सोसुनवाका समर्थथका थोडोसुणै अथवा घणोसुणै अथवा

न. टी. देसकाल.अवस्थायांकाविचारछैसोमुष्यवैद्यनैंध्यानमैराषणायोग्यछै कारणदेसविचारमैतीनदोसकोबलाबलअरउठाकीहवा. जलयेध्यानमैरहै. अरकालजोछैसोसीतकाल. उष्णकाल. वर्षाकालयेतीनकास्वभावअरअवस्थाविचारध्यांनमैंराषै.

मिथ्यासुणै क्यूंकोक्यूंसुणै १ स्पर्शकासामर्थथका थोडोस्पर्शकरैवा घणोस्पर्शकरै वामिथ्यास्पर्शकरै क्यूंकोक्यूंईस्पर्शकरै २ देषवाका सामर्थथकांथोडोदेषै अथवा घणोदेषै अथवामिथ्यादेषै क्यूंकोक्यूं ईदेषै ३ छयरसकाषावाकासामर्थसूं थोडोषाय अथवा घणोषाय अथवा मिथ्याषाय क्यूंकोक्यूंहीषाय ४ सूंघवाकासामर्थथकांथोडो सूंघै अथवा घणोसूंघै मिथ्यासूंघै अथवा क्यूंकोक्यूंहीसूंघैतोनिश्चै रोगकीउत्पत्तिहोय ५ अरयापांचहीकोभेलोसाधनराषिवोकरै तोम नुष्यसदाहीनैरोग्यहोय इतिअर्थविचारसंपूर्णम् १०

अथकर्मविचारलि० कर्मतीनप्रकारकोछै एकतोकायक १ काया मैरहैसोकायककर्मकहिये २ करिवासोंतोकायककहिये एकमानस कर्म मनमैरहैसोमानसकर्म ३ एकवाचक वाणीमैरहैसोवाचककर्मक हिजे सोकायाकाकर्मकीसामर्थथका थोडोकर्मकरै अथवा घणोंकरै अथवा मिथ्याकरै क्यूंकोक्यूंकरै १ अरमानसकर्मका सामर्थथका थोडोकरै अथवा घणोंकरै अथवामिथ्याकरै क्यूंकोक्यूंकरै २ बोल वाकासामर्थथका थोडोबोलै अथवा घणोंबोलै अथवामिथ्याबोलै क्यूंकोक्यूंहीबोलै ३ तोमनुष्यकों रोगकीउत्पत्तिहोय अरयांतीन्यां हीकर्मकोमनुष्य भेलोजोगराषिवोकरैतो ओमनुष्य सदाहीनैरोग्य रहै इतिकर्मविचारसंपूर्णम् ११

अथअग्निबलविचारलिष्यते अग्निपांचप्रकारकोछै एकतो मंदा ग्नि १ दूसरोतीक्ष्णाग्नि २ तीसरोविषमाग्नि ३ चोथोसमाग्नि ४ पां चवोंभस्माग्नि ५ सोकफकीप्रकृतिजींकेअधिकहोय जींकेमंदाग्निहो यछैसोतो कफकारोगकूंउपजावै सोआच्छीनहीं १ अरजींकीपित्त कीप्रकृतिहोयतींकैतीक्ष्णअग्निहोयसो आछ्योषायोथको सर्वपचि

न० टी० ईग्रंथमैंजोसंक्षेपलिष्याछैसोबुद्धिवांनपुरुषांकैवास्तैतोघणांछै. अरमूर्षांकेतो गाडाभ रयालिषाहोयतोथोडाछै. कारणयेछै. जामैंआपकापूरबपुन्यकाबलसौंबुद्धिश्रेष्ठछैसोतोस्मृतिमा त्रमैंहीसमजै. अरहीनपुन्यहोयछैज्यांनैपढायाबीयादरहैनहीं.

जाय पणवोभीगरमीका आजारनैंउपजावैछै २ अरजींकीवायकीप्र कृतिहोय तींकैविसमाग्निहोयसोबोबायकारोगानैंउपजावैछै सोवाक देतौअन्ननैंपचायदेअरकदेकअन्ननेंनहींपचावै ३ अरवो चौथोसमा ग्निछैसोसर्वअग्निसूंश्रेष्ठछै. आछीतरैमनुष्यभोजनकरैसोपचायदेछै अरकोईहीरोगकूंउपजावैनहीं ४ अरपांचमो भस्माग्निछैसो भस्म ककारोगानैंउपजावैछै. कैसें कहींभी औषधीकासंजोगसूं स्वरीरमा हिलोकफ घटिजायछै अरपित्ततोअग्निरूप वधिवोहीवायकासंजो गसेंप्रेर्योथको महातीव्रअग्निनैंउपजावैछै तबभस्मकअग्निहोजाय छै तबवेनैंषावाकानैंहींमिलैतौतिसपसेवदाह मूर्छानैंआदिलेरबेनेंकर आदमीनैंमारिनाषैछै. सोमनुष्यहैसोअग्निकाबलनैं विचार्यांविना जतनकरै अथवा भोजनादिककरैतोवेंकैनिश्चैरोगहोय अरवेकीचि कित्सा सफलहोयनहीं ५ इतिअग्निबलविचारसंपूर्णम् १२

अथरोगीकेअसाध्यपरिक्षालिष्यते रोगीनेंरातनैं नींदनहींआवै अरवेंकाकंठमेंकफबोलैअरवेंकासरीरमैंदाहहोय अरवेंरोगीकीनाडी मंदहोय अरवेंकीबोलवामैंजीभथकिजाय अर वेरोगीकीसर्वइंद्री आपआपका धर्मनेंछोडदेसोरोगीनिश्चैमरै अर जिंरोगीकीअग्निमं दहोय जाय अर वेकीप्रकृतिविगडिजाय ओभीरोगीअसाध्यजा णिजे. अरजींरोगीकीआंषलालहोजाय अरस्वासहोय आवैअरहि यामेसूलचालै अरवेंकैतंद्राहोय आवैअरहिचकीचालिजाय अर तृ षाबहोतहोय आवै अरघणासोवै. अरघणोदाहहोयआवै अरपसे ववैकैघणांअरचीकटाआवैसोरोगीनिश्चैमरैइतिरोगीकीअसाध्यपरि क्षासंपूर्णम् १३ अथरोगीकीसाध्यपरिक्षालिष्यते जोरोगीआपकी प्रकृतिमैठिकाणैरहै. अरजींकोअग्नितीव्रहोय अरकहींतरैकारोग

न. टी. वैद्यमूर्षछैसोकर्मविचारमैंतोसमझैनहीं. अकर्मविचारमैं बलवानहोयछै. जैसैहीअर्थ विचार. अग्निबलविचार. समझणायोग्यछै. परंतुशुद्धकर्मकीबातछै जो मनुष्य धर्मरहितहोय छैजींकै तोआपकोस्वार्थमुष्यमानकरपरायाअकाजकरैछै.

उपद्रवहोयनहीं अररोगयेकदोसकोहोय अर वेंरोगीकीचिकित्सा चारुपांयांमिलैएकतो भलाशास्त्रकोजाणिवावालो वैद्यमिलैदूसरीउ सीहीवेंहीरोगकीदूरिकरिवावाली औषधीमिलै अरउसाहीचतुरचा करमिलै अर वेंसोहीरोगीसुजानहोयजितेंद्रिहोयरोगका घटवाव धवाकोजाणवावालोहोय सोरोगीसाध्यजाणिजैइतिरोगीकीसाध्यप रिक्षांसं० १४ अथ रोगांकाभेदलि० सोत्र्प्रोरोगका यामैंरहैतीं कोनामव्याधिछैसोवह १४ चौदाप्रकारकोछैसोलिषूंछूंसहजरोग १ गर्भजरोग२जातजातरोग३पीडासैंउपजैसोरोग ४ कालसैंउपजैसो रोग५प्रभावसूंउपजैसोरोग६स्वभावसूंउपजैसोरोग७देससूंउपजै सोरोग८ आगंतुकरोग९ कायकरोग१०अंतररोग११ कर्मसैंउपजै सोरोग१२दोससूंउपजैसोरोग १३ कर्मदोससूं उपजैसोरोग १४ अवयारोगांका जुदाजुदालक्षणलि ० मातापिताकावीर्यकादोससें वाकीसंतानकैभी ओहीरोगहोय आवै ववासीरकोढनैंआदिलेर ती नैंसहजरोगकहिजे १ गर्भमैंहीकुबडो पांगुलो छआंगुली रावणषं ड्यानें आदिलेरहोयतीनेंगर्भजरोगकहिजे २ गर्भथकां माताकामि थ्याअहारमिथ्याविहारकाबसथकिबालक उपजतांईर तबावबुरीतर हकोसरीरगुंगापणानैं आदिलेरजोरोगहोयतींरोगनैंजातजात कहि जै ३ अरशस्त्रादिककाप्रहारसूंउपज्योजोअस्थि भंगपीडादिकरोग त्यानैंपीडाजनितरोगकहिजे ४ अर सीतकाल उस्नकाल वर्षाकाल सूंउपज्योरोग सीतघणोंलाग्यो तावडोलूघणों लाग्यो वर्षामैंघणो भीजे त्यांरोगानैंकालजरोगकहिजे ५ अरदेवतागुरु वडाकासरापसूं उपज्योजोरोग अर ग्रहांकाप्रतिकूलपणासूंउपज्योजोरोग त्यांनैप्र भावजरोग कहिजै ६ अरक्षुधा तृषा जरानैं आदिलेर उपज्याजो

न॰ टी॰ रोगीकादुषकीबातआपकाहियामैंविचारकर जोदुषरोगीनैंछैजीसोंज्यादाआधिकामन मैंमानैअरदयायुक्तउपचारविचारैसोहीवैद्यविजयपावै. अर दूजामूर्षअरलोभी होयसोजमराज कादूतछै. पणदूततोहुकमकोचाकरछै. मूर्षवैद्यतोअधर्मरूपछै.

रोग त्यांनै स्वभावजरोगकहिये ७ अरभूतादिकांको अरक्रोधराग द्वेसलोभमोहादिकयेजींकासरीरमैं प्रवेसकस्याहोय त्यांनैआगंतुक रोगकहिजे ८ अरजरादिविसपर्यंत मुष्यरोगछै त्यांनैंकाइकरोगक हिजे ९ अरहौलदिलनैंआदिलेर गहलौहोजावै यांनैंआदिलेररोग छै त्यांनैंअंतररोगकहिजे १० अरजींदेसमैंमनुष्यकालाहीकालाअ रलालहीलालअरभूराहीभूरा आदमीउपजैतीनैंदेसजरोगकहिजै ११ अरपूर्वजन्ममैं अथवा ईजन्ममैंब्रह्महत्यादिकपाप करिउपज्या जोरोगत्यांनै कर्मजरोगकहिजे १२ अरवायपित्तकफसूंउपज्याजी रोगत्यांनैं दोसजरोगकहिजै १३ अरब्रह्महत्यादिकजोपापअरवा यपित्तकफादिकजोदोस यांदोन्यांसूंमिल्याथका उपज्याजोरोग त्यां नैकर्मदोसजरोग कहिजै १४ अब येहीसारारोगदोयप्रकारकाछै. येकतोसाध्य १ दूसरोअसाध्य २ सोसाध्यभीदोयप्रकारकोछै. एक तोघणाजतनकीयां नीठीआछ्योहोय १ अरथोडाहीजतनकीया आ छ्योहोय सोसाध्यकहिजै २ अरअसाध्यरोगभीदोयप्रकारकोछै. ए कतोजाप्य १ सोगंभीरादिक ववासीरमृगी अर्धांगक्षयी स्वासादि कअरज्यांमैं घणांरोगमिल्याहोयसो औषदिषावोकरै अरपथ्यचालै अरभलावैद्यकाकह्यामाफिक चालवोकरै. जैठातांई रोगकी आयुर्ब लहोयजैठातांई वेरोगरहै. त्यांरोगानैंजाप्यकहिये. अरएकऐसाउ पजे त्यांकोइलाजहीनहीं. ओमारिहीनाषै. ओरोगमहाअसाध्यअ प्रतीकारछै. अररोगांकाभेदतोअनंतछै त्यांकोपारनहीं त्यारोगांको ग्यानतोश्रीपरमेश्वरजीकूंछै. पणसदवैद्यहैसोशास्त्रकाबलसूं अर आपकीबुद्धिकाबलसूंयांसारां रोगानैयांचौदारोगानैं यांकोअंतरभू तजाणिलीज्यो. येसारारोगयांहीमैंअंतरभूतछै इतिरोगभेदसंपूर्णम्

न.टी.-जोव्याधिहोयजींकारणसौंहोयजींकीध्यानमैंराषै. बुद्धिवानवैद्यनिरंतरविचारकरैकैयो रोगदोषांकौछै. अथवासहजछै अथवापापांकौछैजींकैवास्तैउपचारकरै सोध्यानमैंलेकरकरै.वात पित्त. कफयांकोंतोओषधीनिवारैछै. वाकीकापुन्यसौंजायछै.

१५ अथप्रकारांतरसूं सारारोगांकी उपजावाकीऔरहीविधिलिष्यते अरसर्ववातसूं सावधानमनुष्य०हैसो १४ चौदाप्रकारकोवेगछै त्यांनैं हकनाहक प्रगटकरैनहीं अरसुतैसिद्धिप्रगटहुवाछैतो वानैंरोकैनहीं वाको कारजकरैतोमनुष्यकैरोगहोयनहीं अरवाचौदावेगानैं हकनाहकप्रगटकरै अरवेप्रकटहुवाछैत्यांकोधारणकरैतो रोगहोयहीसो चौदावेगलिषूंछूं अथचौदावेगलिष्यते. एकतोअधोवाय १ जंगलकीबाधा २ मूत्रकीबाधा ३ डकारकोरोकिवो. ४ छींककोरोकिवो ५ तृषाकोरोकिवो ६ भूषकोरोकिवो ७ नींदकोरोकिवो ८ षासकोरोकिवो ९ षेदकास्वासकोरोकिवो १० उवासीकोरोकिवो ११ आसूंकोरोकिवो १२ छर्दिकोरोकिवो १३ कामदेवकोरोकिवो १४ येचौदावेगछै. अरयांकावेगनैंहकनाहक रोकै अरयांकाउपज्यावेगको धारणकरै तोमनुष्यकैनिश्चैरोगउपजैछै सोअनुक्रमसूंलिषूंछूं. जोपुरुष अधोबायकूंरोकैतोऊंके गोलाकोआजारहोय. फियाकोउदरको आफराको पेटमैंपीडाको येरोगहोय पाछैवेंकै अधोवायआछीतरह होयनहींअरवेंकैमूत्रकृच्छ्रकोअरबंधकुष्ठकोरोगहोय जायअरनेत्ररोगअरअग्निमंद अरहियोदूषै १ इतिअधोवायरोकिवाकोरोगसंपूर्णम्

१६ अथमलकारोकिवाको रोगलिष्यते जोपुरसमलकी बाधाकूंरोकै जींकैयेरोगहोय हाथपगांमैंफूटणीहोय अरपीनसहोय मस्तकपीडा होयवायकी ऊर्ध्वगतिहोयआवे अधोवायकी आच्छीतरहप्रवर्तिहोयनहींहीयोदूषैउदावर्त रोगआगैकहस्यांसोहोय आवैअरगोलोफीयोउदरकोरोगउदरपीडा मूत्रकृच्छ्र बंधकुष्ट नेत्ररोगअग्निमांद्य येभीरोगहोयआवै २ इतिमलकारोकिवाकारोगसंपूर्णम्.

अथमूत्ररोकिवाकारोगलिष्यते जोमनुष्य मूत्रकीबाधानैं रोकै

न.टी.याबातप्रत्यक्षछैजोरोगतोअल्पछै. जींपरमोटामोटाउद्योगअरघणोद्रव्यषरचहोयकरभी वेंकीसांतिनहींहोयसोकर्मजुजाणकरशास्त्रकाआधारसौंवैंकोप्रायश्चित्तकूरावणो. जीसौंसांतिहोयछैअरछातीकाजोरसौंकरउपावकरैतौ चोटंषालीजायछै.

तींकैयेरोगहोय. अंगकैफूटणीहोयपथरीकोरोगहोय अथवागोलाफि यानैं आदिलेरपाछै मलकारोकिवाका जोरोगकह्याछैसोभीईमूत्रका रोकिवामैंहोय ३ इतिमूत्रकारोकिवाकारोगसंपूर्णम् अथडकाररोकि वाकारोगलिष्यते जोमनुष्य डकार आवतीनैंरोकैतींकैइतनारोगहोय छै. अरुचीसरीरकांपै हियोरुकै आफरो षासी हिचकीयेरोग डका रकारोकिवाकरिकैहोयछै ४ इतिडकाररोकिवाकारोगसंपूर्णम् अथ छींकरोकिवाकारोगलि० जोपुरषछींककावेगनैंरोकै तींकैयेरोगहोय छै मथवायहोय अरसरीरकीसारी इंद्रीदुर्बलहोजाय अरगरदनमुडैनैं हीं मुषकैक्यूंवांकापणो होयजाय ५ इतिछींकरोकिवाकारोगसंपूर्णम् अथतिसरोकिवाकारोगलि० जोंपुरसनैंतिसलागिहोय अरतीनैंओ रोकैतोयेरोगहोय ईकैमुषसोसहोय सर्वअंगमैं फूटणीहोयबहराप णोहोयअर मोहहोयआवै भ्रमहोयआवै अरहियोदूषै ६ इतितिस रोकिवाकोरोगसं० अथभूषरोकिवाकारोगलि० जोपुरसभूषकावेग नैरोकैतींकै अतनारोगहोय सबअंगटूटिवालागिजाय अरुचिहोय- आवै अरसर्ववस्तुऊपरिग्लानिहोयजाय अरसरीरकृसहोयडाये सूलचालै अरभ्रमहोयआवैअरविनाश्रमहीश्रमहोय आवैअरसर्व इंद्रिसिथलहोय जायअरसरीरकोवर्ण ओरहोयजाय ७ इतिभूषका रोकिवाकारोगसं० अथनींदरोकिवाकारोगलि० जोमनुष्यनींदआ वतीनैंरोकैतींकैयेतारोगहोय वेंकैमोहहोय आवैमाथोअरआंषिभारी होयजाय. आलसआवैउवासीआवैअंगमैंपीडाहोय ८ इतिनींदरो किवाकारोगसंपूर्णं अथसास रोकिवाकारोगलिष्यते जोमनुष्यआ वतासासनैंरोकैतोऊंकैषासकी वृद्धिहोय अरुचिहोय हियामैंरोगहो य सासहोय सोसकोरोगहोयहिचकीइतारोगहोय ९ इतिसासरोकि

न०टी. सरीरसाधनीभूतछैजींसरीरकासाधनसौख्याणामनुष्यांकैसांतिहोयछै परंतुयेवातांसं सारकाप्रपंचसौंज्यांकासरीरनिर्बलहोय अरअहारव्यवहारविपरीतहोयछै ज्यांकैव्याधिहोयछै. अरहीनबलकीवातछै.

वाकारोग संपूर्णम् अथश्रमकास्वासरोकिवाकारोगलिष्यते जोपुरस श्रमकास्वासनैंरोकैतींकैइतारोगहोय गोलोहृद्रोगमोहयेरोगश्रमकास्वासरोकिवासूहोय १० इतिश्रमकास्वासरोकिवाकारोगसं०

अथउवासीरोकिवाकारोगलि० जोमनुष्यआवतीउवासीनैंरोकैतींकैमथवायहोयइंद्रियांकीदुरबलताहोय गरदनकोअरमुषकोवांकापणोहोथजाय११ इतिउवासीरोकिवाकारोगसं० अथआंसूंरोकिवाकारोगलिष्यते जोपुरुषआंसूंआवतानैंरोकैतींकैयेरोगहोयछै पीनसहोय नेत्ररोगहोयअरमथवायहोयहियोदूषै गरदनमैंपीडाघणीहोय अरुचिहोयअरगोलोहोय आवताआंसूनैंरोकैतींकैएतारोगहोय१२ इतिआंसूंरोकिवाकारोगसंपूर्णम् अथवमनकारोकिवाकारोगलिष्यते जोमनुष्य वमनकाआवतावेगनैंरोकैतींकैयेरोगहोयरतवावपित्तकोढनेत्ररोग षाजीपांमरोगज्वरषासीसासहियोदूषै मुषकैकिल अथवा छायासोजोयेतारोगवमनकारोकिवासूहोयछै १३ इतिवमनकारोगसंपूर्णम् अथकामदेवरोकिवाकारोगलिष्यते जोपुरषकामदेवजाग्यानैंरोकैतींकैयेरोगहोयछै सुजाषप्रमेह इंद्रीकैविषैपीडाअरइंद्रीसूजिजाय अरचित्तबहकिजाय अरभोजनविषैअरुचिहोय एतारोगहोय १४ इतिकामदेवरोकिवाकारोगसंपूर्णम्.

इतिप्रकारांतरसूं सारोरोगांकाउपजावाकीविधिसंपूर्णम् १६इति श्रीमन्महाराजाधिराज महाराजराजराजेंद्रश्रीसवाइ प्रतापसिंहजी विरचितेअमृतसागरनामग्रंथेरोगविचारनाडीपरिक्षा मूत्रपरिक्षा रोगपरिक्षा सुपनपरिक्षा दूतपरिक्षा सुकुनपरिक्षा कालग्यानपरिक्षा औषधिविचारदेसकालअवस्था, अर्थकर्मअग्निबल, रोगांकोसाध्यासाध्यविचाररोगकाभेद रोगांकीउत्पत्तिनिरूपणंनामप्रथम

न.टी.ज्यांकासरीरमैंबल. अवस्था. विचार. अरसाधनसर्वसावूतछै. ज्यांकाघरओरसरीरओरव्यमवज्यांकातो. वैद्यलोकदूरसौंहीदेषैनहींछै. ज्यांकाविचारसाधनविपरीतछै. ज्यांकीहीवैद्यलोकमालाफेरवोकरैछै.

स्तरंगःसमाप्तः १ अथकायकरोगांमैंसर्वरोगमात्रकोराजाज्वरछैसो तींकोअहवालपूर्वलक्षणअरवेंकोजतनक्रमसैंलिषजेछै अथप्रथमज्व रकीउत्पत्तिलि० सतीजीकापितादक्षप्रजापतीजग्यकोप्रारंभकरयौती मैंअहंकारकेबलसूंत्रिलोकीकेपतीजोसाक्षातूशिवजीनैं आपकाजग्य मैंबुलायानहीं औरसर्वदेवतानकूंबुलायजग्यकोप्रारंभकरयौ तहांस तीजीआपकापिताकैविनाबुलायांगईशिवजीकाभेज्याविनाहीगई त बजग्यकेविषैवेकेपितासतीजीकोअनादरकियो तहांसतीजीजोगबल सूं आपकासरीरकोत्यागकरयो तबयाबातशिवजीसुणीतबशीवजीके क्रोधउपज्यौतबक्रोधउपजतांही शिवजीकाललाटकोनेत्रखुलिगयोतीं नेत्रमैंवीरभद्रगणप्रगटभयोवीरभद्रगण किसोकछै अतिक्रोधी अर पीलोसरीरछैजींको अरनेत्रजींकैतीन भस्मलगाया प्रलयरूपपीला जींकानेत्र वाघंबरधारया अग्निकोसोरूपछोटीजांघतीन वडोउदर ऐ सोप्रकटभयोसोशिवजीसूं अरजकरीकहाकरूं तबशिवजी आग्या देतभये तुमवांकोजग्यविध्वंसकरो तबवाकूंमारि वाकोजग्यविध्वंस किये अरवाजग्यकीसामग्री आपषायगयो तबवीरभद्रकोनामशि वजीज्वरपाड्यो सोओज्वरहैसोमनुष्यांकैमिथ्या अहारमिथ्याविहा रकावसथकीनाभिअरस्तनकेबीच जोआमकोघरतीमैंरहतोजोवाय पित्तकफ त्यानैंरोगीकासरीरमैं आमासयकीजगामैंदुष्टहोय अरआ मासयकी जगामैंरहतोजोअहार तीसैंउपज्योजोरसतीनैविगाडिअ रवेआमासयेमैंरहतोजोउदरकोअग्नीतीनैंउदरमैंसेंवारैकाढि सारा रोगीकासरीरनैंतातोअग्निरूपकरिदेछैसोओज्वररूपहोयछै वाहीस मयसरीरका पराक्रमनैंषायजायछै सोज्वर आठप्रकारकोछै एकतो वायकोज्वर १ पित्तकोज्वर २ कफकोज्वर ३ वातपित्तकोज्वर ४ वा

न. टी. बडाबडाराजा साह बादसाहहुवा अरमोटामोटाग्रंथवणाया परंतुप्रजामैं इसीकानून नहीचलायसक्या जीसौं तालेवरमुजबतालेवरकासाधन अरगरीबमुजबगरीबकासाधनकोईसैं भी नहींबणसक्याजोअहार व्यवहाररीतका होतातो आरोग्यतारहती.

तकफकोज्वर ५ कफपित्तकोज्वर ६ सन्निपातकोज्वर ७ आगंतुक ज्वर ८ एआठप्रकारकाज्वरछैसो अबयांका जुदाजुदालक्षण कह स्यूं अथप्रथमज्वरमात्रकोसामान्यलक्षणलिष्यते जींकासरीरमैंइक समचैइसोलक्षणहोयजीनैंज्वरकहिजे सरीरतातोहोयआवैअरपसे वभीनहींआवै अरभूषजातीरहैसारोअंगजकड्योसोहोय अरमथ वाइहोय अरहाथ पगांमैंफूटणीहोई अरकठैहीमनलागैनहींऐसाल क्षण जींरोगमैंहोयतीनैंज्वरकहिजे १ अथज्वरकोपूर्वरूपलिष्यते हा थपगांमैं फूटणीहोय मथवायहोय जंभाईहोय विगरिषेदहीसरीरमैं षेदहोय ऐसालक्षणजींमनुष्यकेहोय तबजाणिजेज्वरउपजसी ऐसो लक्षणवैद्यजाणै २ अथज्वरकोविशेषलक्षण जीमैंप्रथम वायज्वरल क्षणलिष्यते सरीरकांपै ज्वरकोविसमवेगहोय कंठहोटसूकै नींदआ वैनहीं छींकआवैनहीं सरीरलूषोहोय मथवायहोय सरीरमैंपीडाहो य मुषमैंछऊंरसकोस्वादजातोरहै जंगलउतरैनहींपेटमैंसूलहोय आ फरोहोय उवासीघणीआवै तौवायकोज्वरजाणिजे ३ अथसामान्य ज्वरमात्रको जतनलिष्यते गरमपाणीपाजै आच्छाहलकालंघनक राजे मलकाबलमाफिकअरहलकोपथ्यकराजे पवननहींआवैऐसा घरमैंराषिजे आछ्यामिहींनवस्त्रांपरसुवाणिजै तौज्वरजायअरतीन दिनतांईतोज्वरमैंकडवीकषायलीजुलाबउगैरै औषदिदीजैनहीं यों हीजतनकीजेपाछैसूंठी मासा २ धणौंमासा १ इनकोक्काथकरिपाजै तौज्वरजाय अरभूषलागै १ अथवायज्वरकोजतनलिष्यते अतना पुरसांनैलंघनकराजैनहीं वायज्वरवालानैं क्षयीरोगवालानैंजींकैअ ग्निघणोहोयजीनै गर्भिणीस्त्रीनैंदूबलानैंबालकनैं बूढानैंडरपस्यालनैं तिसवालानैं येतामनुष्यांनैंलंघनकराजेनहीं हलकापथ्यकराजे वाय

न. टी. जैसेस्त्री अरपुरुषयांकीअवस्थातोनहींछै अरयांकैस्त्रीपुरुषकोव्यवहारहुवो ज्याका सरीर आरोग्यनहींहै अरस्त्रीपुरुषअवस्थामैंकमज्यादाविपरीतहोयतोभीसरीरआरोग्यनहींरहै अरईमजामैंजैसोपुरुषकोव्यहारछै जैसोस्त्रीकोभी नहीछै.

ज्वरवालानैं औषद्यांकोक्काथदीजे १ चिरायतौनागरमोथो नेत्रवा लोदोनूंकट्याली गिलवैसूंठि येसारीऔषदि छदामछदामभरले त्यां नैजौकूटकरियांकोक्काथदिन ५ दीजैतौवायज्वरदूरिहोय २ अथवा यज्वरकादूरिकरवाकोदूसरोक्काथलि० सूंठि नींबकीछालि धमासो पाठकचूर अरडूसो एरंडकीजड पुहकरमूल येसारीऔषदि छदाम छदामभरले त्यानैंजौकूटकरियांकोक्काथदीजेतौवायज्वरदूरिहोय ३ अरहिंगुलेस्वररससूंवायज्वरतत्कालदूरिहोय हिंगलू पीपल सींगी मोहरोसोध्योएतीन्यूं बराबरिलेयांनैमिहीवांटिपाणीमैंरतीआधप्रमा णकीगोलीबांधैगोली ५ मैंवायज्वरनिश्चैजाय ४ अरबायज्वरवाला नैंमुंगाको मसूरकोकुलत्थकोमोठको यांकीदालकोपाणीपथ्यछै अथ सतावरीगिलवैयेदोन्योंतीमैसूं छदामभर त्यांकोक्काथकरैक्काथमैछदा मभर पुराणोगुडनाषै ईतोलदिन ५ लेतौ वायज्वरजाय ५ अरमि नक्कादाष पीपलि, पित्तपापडो सोंफ येसबछदामछदामभरिले इन कोक्काथदीजेतौवायज्वरजाय ६ इतिवायज्वरजतनसं०

अथपित्तज्वरकोअहवालअरलक्षणजतनलि० नेत्रांमैंदाहहोयमूं ढोकडवोरहैतिसघणीहोय भौंलिआवैबकैघणो अरसरीरतातोघणो रहै अरवेगभी घणोआवैमलपतलोहोय वमनहोयनींदआवैनहीसुष सूकै अरपकिजाय पसेवआवैअरमलमूत्रनेत्रयेपीलाहोय येलक्षण जींमनुष्यकैहोयतींकैपित्तज्वरजाणिजे अथपित्तज्वरकालक्षणलिष्य ते नागरमोथो धमासोपित्तपापडो नेवालात्रे चिरायतौ नींबकीछालि येसब औषदि छदामछदामभरिले त्यानैजौकूटकरि यांकोक्काथकरी पीवैतौ पित्तज्वरदूरिहोय १ अथवा गरमपाणीकैसाथषैरसारकोचूर्ण छदामभर अरकुटकीमासा २ मिश्रीटंक २ यांकोचूर्णकरिलेतौ पित्त

न. टी. जीसोंपुरुषांको तोस्वतंत्रपणोछै अरस्त्रियांको परतंत्रपणोछै पुरुषकी यथारुचि होयसकै अरस्त्रियांकीयथारुचिनहीं होयसकैजीसौं तुल्यतामैंफरकछै जीसूंभी व्यवहारविपरीत छै अरस्त्रियांकीपराधीनताविद्याहीनतासौं विषमव्यवहारहुवो.

ज्वरदूरिहोय २ अथवाचंदनटंक १ षसटंक १ इनकोंमिहीवांटि पईसा च्यारभरपालसाकासरबतमैंमिश्रीपईसा २ घालिपीवेंतौपित्त ज्वरदूरिहोय ३ येजतनत्रिंशतीमेंकह्याछे अथवा चावलांकीषीलका पाणीमैंमिश्रीमिलायपीवेंतौपित्तज्वरदूरिहोय ४ अथवा कुटकीकिर मालाकीगिरी नागरमोथो हरडेकीछालि पित्तपापडो येसारी छदाम छदाम भरिले त्यांनेजौकूटकरियांको काढोदेतौपित्तज्वरनैंअरतिसनें अरदाहनें अरमूर्छानेंप्रलापनें भौलिनेंयांसारानेंयोक्काथदूरिकरेंछे. योवैद्यविनोदमें कह्योछे ५ अथवागोहांकाआटानेंसिजाय तीमें मिश्रीघालितीनेपतलोषुबसिजायपतलोहरीरोकरिदेतौ पित्तज्वरदूरिहोय ६ अथवामीठीदाडयूंकोसरबतदेतौपित्तज्वरकोदाहदूरिहोय ७ अरयाहीदाहज्वरहोयतौमहासुंदर सर्वगुणांकरिकैसंयुक्त ऐसी जोस्त्रीषोडशवरसकीफूलांकोजीकेआभरणमहासुंदरझीणोवस्त्र अर महाचतुरऐसीस्त्रीसौंसंगकरैतौदाहकीव्यथादूरिहोय अरअतनीवस्तभीदाहकीव्यथानेंदूरिकरेंछे सोलिषजेहे सुवाकीवाणी मैनाकीवाणीबालककीवाणीमनोहर वागफूलांकोहारकमलकाफूल मनोहरशृंगारकीकथाकपूरको लगावोसुंदरस्त्रीयांकोसंग फवांरानेंआदिलेरये साराहीदाहकीव्यथानेंदूरिकरेंछे ८ अथवा पालसांकासरबतमैंसींधोलूणघालिपीवेंतौपित्तज्वरदूरिहोय ९ अथवा मूंगांकीदालकोपाणीतीमैंमिश्रीमिलायपीवेंतौ पित्तज्वरदूरिहोय १० अथवामिनक्कादाषकोसरबतमिश्रीमिलायपीवेंतौपित्तज्वरदूरिहोय ११ अथवापित्तपापडोनागरमोथोचिरायतौटंक ५ यांकोक्काथदिन ३ लेतौपित्तज्वरदूरिहोय १२ येसाराजतनज्वरतिमिर भास्करमैंलिष्याछे अथवारक्तचंदन पदमाष धणौंगिलवैनींबकीछालि येसारीऔषदि छ

न. टी. जोविषमव्यवहारकाहोवासूंशरीरांकीआरोग्यताकमहुई अरज्यांकैयेव्यवहारअर अहार समछै सांकासरीर प्रकृती अरसंतती अरव्यभवसबश्रेष्ठछै जीसौंजोसुज्ञानीपुरुषछैसोया आहार व्यवहारांसूं अरपथ्यअपथ्यसौंअरसंविचारसौं आरोग्यता करणी.

दामछदाम भरिलीज्यैत्यांनैंज्यौकूटकरित्यांकोकाढोदिन.९ लेतौपि त्तज्वरनैदाहनैंतिसनैंवमननैंयांसारांनैंयोदूरिकरैछे १३ येजतनलो लिंबराजमैंलिष्याछे अरयोहीपित्तज्वरघणोदाहज्वरहोयतौकमल काफूलांकीसेजपरऊनैंसुवाणिजैतौदाहज्वरदूरिहोय अरकेलिकापा नाऊपर सुवाणिजैतौदाहज्वरदूरिहोय १४ अथवा आछ्यावनमैं राषिजैतौदाहज्वरदूरिहोय १५ अथवा आछ्यापसषानामैंराषिजै तौ अरषसकापंषाकी पवनकीजैतौदाहज्वरदूरिहोय १६ येजतन लोलिंबराजमैंकह्याछे. अथवा गुलाबकाफूलांकीपांषड्यांकोतिलांकै पांचसातपुटदे अरवांकोतेलकाढैचवेलीकातेलकीसीनांईतीनैंगुलरो गनकहैछेहकीम अरइंहीनैंहिंदगीमैंगुलाबकोतेलकहैछे. तींकोदाह ज्वरवालाकैमर्दनकरैतौदाहज्वरदूरिहोय १७ अथवासौवारकोधो योघृतअथवाहजारवारकोधोयोघृततींकोसरीरकै मर्दनकरैतौ दाह ज्वरकी व्यथा तत्काळदूरिहोय १८ अथवा नींबकाकोमलपानानैं वांटिवामैंपाणीघालवानैं बिलोयवामैझागउठायबांझागांकोदाहज्वर वालाका सरीरकैलेपकरैतौ अथवा ईझागांमैंवहेडाकीमींगीमिलाय लेपकरैतौदाहकीविथा तत्कालदूरिहोय १९ येजतनवैद्यजीवनमैंअ रवैद्यविनोदमैंलिष्याछे इतिपित्तज्वरदाहज्वरकालक्षणजतनसं० २

अथकफज्वरकालक्षणअरजतनलि० अन्नकीअरुचिहोयसरीर भार्योहोयरोमांचहोय मूत्रअरनषजांकासुपेदहोय नींदघणीआवैस रीरठंडोहोय मूंढोमीठोहोय वेगघणोनहींहोय आलसघणोआवैसा सहोयषासहोयपीनसहोय येजीमैंलक्षणहोय सोतीनैंकफज्वरकहि जै अथकफज्वरकोजतनलि० नींबकीछालि सूंठिगिलवै कटाली पो हकरमूल कुटकीकचूर.अरडूसो कायफल पीपलि सतावरी. येसारी

न. टी. ज्वरको भेदकह्योसोसर्वज्वरपचीस प्रकारको अनुक्रमसौंलिषूंछुं वातज्वर १ पित्त ज्वर २ कफज्वर ३ वातपित्त ४ वातकफ ५ कफपित्त ६ सन्निपात ७ जीसन्निपातमैंसूंसंत तादि ५ जुमलै १२ हुआे १ आगंतुकजीमैं १३ हुंवा जुमलैपचीस २५ हुवाछै.

औषधि छदामछदामभरिले पाछैयानें जौकूटकरि यांकोक्काथदिन ७ लेतौकफज्वरदूरि होय १ अथवा कायफल पीपलि काकडासींगी पुहकरमूल यांसारानै मिहीवांटी छदामभरि सहतमैंचटावैतो कफ ज्वर सास कासनैंयोअवलेह दूरिकरै येजतन वैद्यविनोदमैंलिष्याछै २ अर कफज्वरवालानें गरमपाणी सेरकोतीनपावरहै ऐसो थोडो थोडोपाजे लंघन १२ कराजे पाछैमूंगाको अथवामोठाको अथवा कुलत्थको पाणीको पथ्यदीजे. दिनमैं सोवादीजैनहीं अरविजोराकी केंसरि सींधालूणकैसाथदीजैपथ्यमैं आदोदीजे अथवा योपाचनभी दीजे सोलिषैहैं सूंठि मिरचि पीपलि चित्रकपीपलामूलदोन्यूजीरा ल वंग इलायची सेकीहींग अजवायणअजमोद येसवेबराबरिलेयांको चूर्णकरैपाछैईनें छदामभर गरमजलकैसाथदीजैतौ पाचनहोय भूष लागै कफज्वरदूरिहोय ३ अथवा कटालीगिलोय सूंठिपुहकरमूल अरडूसोयहक्षुद्रादिकहैसो येसबऔषदि अधेलाअधेलाभरलीजे त्यानेंजौकूटकरि ईतोलक्काथकरिदिन ७ सात दीजैतौकफज्वरदूरि होय ४ अथवा कटालीपीपलिकाकडासींगीगिलवे अरडूसो येसब औषदि टंक दोयदोय २ लीजेइनकोक्काथकरिदिन १० देतौ कफ ज्वरकूं सासकूं षासकूं मंदाग्निकूं यहक्काथदूरिकरैछै ५ अथवा अरडू साको काढो छदामभरतोल प्रमाणदिन १० दीजैतौकफज्वरतत्काल निश्चैदूरिहोय ६ अथवासीतभंजीरसरती २ दोय अरडूसा अरसूं ठिकाकाढाकेआनूपानसूं ईतोलदिन ७ लेतौकफज्वरनिश्चैतत्कालदू रिहोय ७ सोवैकफज्वरकूंसीतभंजीरसलिष्यते पारोसोध्योहिंगलू कोकाढ्योटंक ५ गंधकसोध्योटंक ५ तामेश्वरटंक ५ सिंगीमुहरोसो

न.टी.सन्निपातज्वरकाभेदतोबहुतछै परंतुसंतत १ सतत २ अन्येद्यु ३ तृतीयक ४ चातुर्थिक ५ येपांचछै अरआगंतुकका १३ भेदजीमैंअभिचार १ ग्रहावेश २ शाप ३ अर श्रम १ अग्नि २ क्षत ३ शस्त्रादि ४ अर इच्छितअप्राप्ति १ भय २ शोक ३ विष ४ गंध ५ क्रोध ६ जुमलै १८ अर ७ पहले जुमलै २५

ध्योटंक २ सूंठिटंक ५ मिरचिटंक ५ पीपलीटंक ५ सुहागोसोध्योटंक ५ येसबमिहीवांटियांकैचित्रककारसकीपुट ३ दीजैपाछैआदाकारसकीपुट ७ दीजैपाछैईकैपानाकारसकीपुट ३ दीजैपाछैईकीगोलीरती १ प्रमाणकीकीजैयोसीतभंजीरसछैईसूंकफज्वरअरसीतांग अरवायकासर्वरोगांनैंदूरिकरैछै ७ इतिकफज्वरकालक्षण अरजतनसं०

अथवातपित्तज्वरकालक्षणजतनलिष्यते जींमनुष्यकै वातपित्तज्वरहुईहोयजींकैमूर्छाहोय अरभौंलिदाहहोय नींदआवैनहींअरमथवायहोय कंठमुषसूकै अरवमनरोमांच अरुचिहोयअंध्यारीआवै अरसर्वआंगमैंपीडाहोय जंभाई अरबकिवो येलक्षणजींज्वरमैहोय तीनैंवातपित्तज्वरकहिजै अथवातपित्तज्वरकाजतनलिष्यते षरैटीगिलोयअरंडकीजड नागरमोथो पदमाष भाडंगीपीपलि षसरक्तचंदन येसर्वऔषदिमासापांचपांचप्रमाणलै पाछैयानैंजौकूटकरि छदामभरिक्काथदिन १२ देतौ वातपित्तज्वरदूरिहोय १ अथवागिलोय पित्तपापडो चिरायतो नागरमोथो सूंठि यहपंचभद्रकोक्काथछैइनको बराबरिलेजौकूटकरिछदामभरिकोक्काथरोजीनादिन १२ बारादेतौवातपित्तज्वरदूरिहोय २ अथवागिलोयपित्तपापडो सूंठि नागरमोथो अरडूसो यांनैंबराबरिलेजौकूटकरिछदामभरिको क्काथदीजेतौवातपित्तज्वरदूरिहोय ३ अथवापटोल नींबकीछालि गिलोयकुटकीयेबराबरिलेत्यांकोछदाम भरिकोक्काथदिन १२ लेयतौवातपित्तज्वरदूरिहोय ४ अथवामहुवो महलौठी लोद गोरीसर नागरमोथो किरमालाकीगिरियेसर्व बराबरिलेयांनैंजौकूटकरि छदामभरिकोक्काथदिन १२ लेयतौ वातपित्तज्वरदूरिहोय. ५ अथवाचावलांकीपीलांकापाणीमैंमिश्रीअरसहतमिलाय दिन १० पीवैतौवातपित्तज्वरदूरिहोय

न. टी. आगंतुककातेराकह्याजींमैतीनभागछै. जींमैआगंतुक ३ अभिघात आगंतुक ४ अभिषंग आगंतुक ६ ईरीतसौं जुदाजुदाछै. ग्रंथांसौं जाण्याजायछै. जोजाण ज्योअर अमृतसागरग्रंथमैतोश्रीदरबारफुरमायाछै सोई अनुक्रमसौंनहींछै. संदेहनहींकरणो.

६ अथवासूंठिमिरचिपीपलिइनकी सममात्रालेइनकीबराबरिमिश्री मिलाय चूर्णकरिअधेलाभरिरोजीनासहतकासंगसूंदिन १० लेतौ वातपित्तज्वरदूरिहोय ७ इतिवातपित्तज्वरजतनसंपूर्णम्

अथवातकफज्वरलक्षणजतनलि० जींमनुष्यकै ज्वरमैंयेलक्षण होय षासी अरुचिसंधिसंधिमैंपीडा मथवाय पीनस संताप अंगकंप सरीरको भाय्यापणो नींद आवैनहीं पसेव सास पेटमैसूलअरजीं मनुष्यकीनाडी सर्पकी अथवा हंसकी चालचालैधूसरो अथवा सुपेद चीकणो अथवा सुरमासिरीसोजींकोमूतहोय कालोजींको मल होय अरचीकणो होय धूंसरीआंषिहोय मुषकषायलो अथवामीठो होय. जीभकालीहोय अथवा सुपेदआली ऐसीहोय कंठमैं कफको घूंघरोबोलै सरीरठंढोलागै येलक्षण जींकैहोय तीनैं वात कफ ज्वर जानिये येलक्षण ज्वरतिमिर भास्करमैं लिष्याछै १ अथ वातकफ ज्वरको जतन लिष्यते ईज्वरवालानैं लंघन दश कराजे आधोओटायोपाणी पाईजे अरदिनदशपछै चिरायतो नागरमोथो गिलोय सूंठि येसब बराबरिले त्यांनैंजौकूटकरि छदाम भरको क्वाथदीजे पाछै ऊनेपथ्यदीजेतो अरकोईतरैको उपद्रवऊठैनहीं अरइहीं ज्वर मैंदिनतीनपाछैक्वाथदीजैतौ इहज्वरकौंदूरिकरैछै सोक्वाथलिषूंछूं कायफल देवदारु भाडंगी नागरमोथो धणो पित्तपापडो हरडैकीछालि सूंठि कणगचकीजड येसर्व औषदि बराबरिले इनकूंजौकूटकरिटंक २ भरको काढोकरि देयतौ वातकफ ज्वरषासीसोजोसास इनकू इहदूरिकरैछै १ अथवानागरमोथोपित्तपापडो सूंठि गिलोय धमासो येसर्व बराबरिले यांनै जौकूटकरि छदाम भरको क्वाथदिन १० ले

* हिंगलूतोला ७ लेकरनींबुकारसमै षरलपहर २ करणींपछैहांडीमाटीकीनग २ लेणी हांडीकैपींदैहिंगलूकीबडीतोडदेणी. पछैहांडीदुजीकोमुंढासूंमूंठोजोडकर कपड माटीहांडीका मूंढाकैदेकरचूलैचढायकरआंचसाधारणदेणी ऊपरलीहांडीकैपाणी कोपोतोफेरणो. पहर १ सीतलहुवाउतारहांडीषोलकर ऊपरलीहांडीमैं पारो आटासिरीसो नीकलसीसोशुद्धजाणज्यो.

यतौ वातकफज्वरकूं वमनकूं दाहकूं मुषसोसकूं यह काढौदूरिकरैछै. २ अथवा कट्याली सूंठिपीपलि गिलोय येसब तीमैसौं छदामभरि लेतींको काढोदीजैतौ वातकफज्वरदूरिहोय ३ अथवा सालपर्णी पृष्ठपर्णी कट्यालीदोन्यूं गोषरू बीलकीगिरि अरएयू अरलू कुंभेर पाठ येदसमूलछैतीनैं जौकूटकरि तींको क्वाथकरि पीपली मिलाय दिन १० देवैतौ वातकफज्वर दूरिहोय ४

अथवा ईजूरमैं मुष अरतालवोसूकिजाय जीभलठरहोयजायतौ विजोराकीकेसरीमैं सींधोलूण अर मिरचिलगाय अर जीभकैलेपकरैं तौमुषको अर तालवाकोसोस अरजीभकीलठरताईनैं यहलेपदूरिकरैछै ५ अथवा चिरायतौ गिलोय देवदारु कायफल वच येऔषदि बराबरिले त्यांको छदाम भरको क्वाथ करिदीजैता वातकफज्वर दूरिहोय येजतन ज्वरतिमिरभास्करमैंलिष्याछै ६ इतिवातकफज्वर जतनसं० ५ अथकफपित्तज्वरकालक्षणलिष्यते मूंढो अरजीभ कफसूंलिप्याथका होय अरतंद्राहोय मोहहोय षासीहोय अरुची तिसधणीहोय वारंवारमैं दाह होय अरसीतहोय सरीरमैंपीडाहोय हियोदूषै भौलिआवै भूषनहींहोय सरीर जकड्यौसोहोयजाय जीं कीनाडी हंसकी अथवा मींडकाकीसी चालचालै मूतजींकोसुपेद ललाईनैलीयांचीकणोहोय मलभीललाईलीयां होय जींकानेत्रंमीडकाका वर्णसिरीसा होय मुषमीठोरहैअथवा कडवो होय जीभललाईलीयां सुपेद होय जींमनुष्यकै येलक्षणहोय तींकै कफपित्तज्वरकहजे. येलक्षणज्वरतिमिरभास्करमैंलिष्याछै १ अथकफपित्तज्वरका जतनलि० ईज्वरवालानैं लंघन १४ कराजे ईज्वरमैं अष्टावसेसजलपावजे अरयां औषध्यांको काढोदीजैसोलिषूंछूं. गिलोय रक्तचंद

न.टी. ज्वरमात्र एकएक दोषको छैसोतोसाध्यछै. अरदोयदोय दोषकीछैसो कष्टसाध्यछै. अरतीनूंदोषजीमैं भेला होय जायसोत्रिदोषनाम सन्निपातकीछै. सोअसाध्यछै. जीमैंउपावक र्‍यांसूंतोअसाध्यकोकष्टसाध्यकष्टसाध्यकोसाध्यहोयछै.

न · सूंठि नेत्रवालो कायफल दारुहलद ये औषदिबराबरिलेइनकौं जौकूटकरि छदाम भरको काढोदिन १० देवैतौकफपित्तज्वरदूरिहो य १ अथवा नींबकीछालि रक्तचंदन पदमाषगिलोय धणौं यांऔष धांको काढोकरिदिन १० दीजेतौ यो जुरदूरिहोय अर दाहतिसव मनयेभीदूरिहोय २ अथवागिलोय इंद्रजव नींबकीछालि पटोल कु टकी सूंठि सुपेदचंदन नागरमोथो पीपली येसब औषदि बराबरिले इनकौंमिहीं चूर्णकरि मासाच्यारि ४ अष्टावसेस जलकै साथिदीजे तौ ज्वरकूं सासकूं ऊणताकूं हिया दूषवाकूं अरुचिकूं यह चूर्णदू रिकरैछे ३ अथवा गिलोय दोन्यूकट्यालीकचूर दारुहलद पीपलि अरडूसो पटोल नींबकीछालि चिरायतौ येसर्व औषधिसमलीजे इ नकूं कूटकरि छदाम भरको क्काथकरि दोन्यू बगतदिन १० लेतौ पि त्तकफज्वरदूरिहोय ४ अथवा दाष किरमालाकीगिरि धणौं कुटकी नागरमोथो पीपलामूल सूंठि पीपलियेसर्व बराबरिले इनकूं जौकूट करि छदामभरको काढो दोन्यूं वषतां दिन १० दीजेतौ सूलभ्रम मू र्छा अरुचिछर्दिकौंपित्तकफज्वरकौं यहक्काथ दूरिकरैछे. ५ अथवा ईरससेतीयोज्वर तत्काल जायछे सो लिषूंछूं हींगलूकोकाढ्योपारो टंक ५ गंधकसोध्योटंक ५ मिरचि कालीटंक ५ सुहागोसोध्योटंक ५ येसर्व मिहींवांटि आदाका रसकी पुट ७ दे पाछै पानाकारसकी पुट ७ दे पाछैगोली रती ४ प्रमाणकीकरैगोली १ प्रात गोली १ संध्या रोजीनादिन ७ षायतौ कफपित्तज्वर निश्चैदूरिहोय ७ अ थपित्तकफज्वर संपूर्णम्

६ अथसन्निपातकीज्वरकीउत्पत्तिलक्षण जतनलि० जोमनुष्य बहुत चीकणौं घणोंषट्टो घणोंगरम घणोंतीषो घणोंमीठो घणोंलूषो

न. टी. जोसाध्यहोय जाय सोउत्तमजतनकीया आरामहोयछै. अरजोसाध्यछैपण विनाज तन कष्टसाध्यहोयछै. अरजोकष्टसाध्यछै. पणविनाजतनअसाध्यहोयछै. अरजोअसाध्यछैसो विना जतनसौंमहा असाध्यहोयछै. सो वोमरजायछै.

भोजनकरै अरविरुद्ध वस्तुषाय अर घणों षाय अर दुष्टपाणीपीवै अरक्रोधवतीरोगलीस्त्रीसूं संगकरै अरदुष्टमांस अर कचोमांसषाय अरसीततावडो देसरितुग्रह इनकेविपरीतपणैतेमनुष्यकै सन्निपात कोरोग होय सोयातोईकीउत्पत्तिछे अथसन्निपातका लक्षणलि० अकस्मात क्षणेकमैं तो दाह होय आवै क्षणेकमैसीतलागै. अरसु भावफिरिजाय अर सर्वइंद्री अपने अपने धर्मकूं छोडिदे अरसरी रका हाडांमै सबसंध्यामैं अरमाथामै घणीपीडाहोय आंष्यांमै आं सूं आबो करै अरनेत्र वेंका काला अरलाल होयजाय अरकानामैं शब्द होवोकरै अर कानमैं पीडा होय कंठमैं कांटापडिजाय तंद्राहो य मोहहोय अर बकै. कास सास अरुचि भ्रम येभीहोय अर जी भकाली षरधरी लठरऐसीहोय अर लोहीसूं मिल्यो कफ थूकै दि नमैं नींद आवै रात्रिमैं जागै पसेव घणोंआवै कैनहीआवै अर अकस्मात गावै नाचै हसै रोवै माथोधुणै प्यासघणीलागै हीयो दू षैमलमूत्रउतरैनहीं जो उतरैतो थोडोउतरै सरीर कृस होजाय कं ठमै कफको घुंघरोबोले गूंगो होजाय होठउगैरे इंद्री पकिजाय पेट भारीहोजाय नाडीकीगति महामंदसिथल महा सूक्ष्म टूटिसीहोयअ रमूत्र हलदसिरीको कै कालो कै लोही सरिकोहोय अर मलकालो सुपेदाईलीयांहोयकैसूरकामांससरीकोहोय येजीं ज्वरमैं लक्षण होय तोतींकैसन्निपातज्वर कहिजे सोयेसन्निपातज्वरका स्वरूपछे ऐसो सन्निपातज्वरको जोवैद्य औषधकरै अर रसकरै अर मंत्र यंत्र तंत्र करि और दंभ दंसनै आदिलेरकहींतरै ईसन्निपातज्वरकूं दूरि क रैछैतींवैद्यसैं रोगीहैसोद्रव्य उगैरै देकर कहींतरै उरण होयनहीं इ तिसन्निपातज्वरलक्षण संपूर्णम्

न. टी. ईरीतसौंध्यानमैंराषणी अर जोमुदतकी ज्वरछैजीनैंवैकीमुदत याकैनहीं जठातांई वैज्वरनैंरीतसौंसाधनमैंराषणी. घणीढीलीबीछोडणीनहीं. घणीप्रबलऔषदबीदेणी नहीं. अर मुदतपुरीहुवांसहजमैं आराम होयछै.

अथ सन्निपातज्वरका जतन लिष्यते सन्निपातज्वरवालामनु ष्यनैं अर्धावसेस जीमैं सूंठिटंक १ नाषि आछ्या कूवाकोपाणिपा इजे दिनको औटायोतौ दिनमैं पाजेरात्रिको औटायो रात्रिमैंपाजे चतुर आदमीनैं कनैंराषिजे जीमैं पवननहीं आवै ऐसी जागामैं रा षिये सातदिन पाछे यो काढो दीजे सीतल जतन करजैनहीं शिवउ गैरै पूजन कराजे होममंत्र मणिधारण दानादिक कीजे अथवा का यफल पीपलामूल इंद्रजव भाडंगी सूंठि चिरायतौ कालीमिरचि पी पलि काकडासींगी. पोहकरमूल रासना कटाली दोन्यूंअजमोद छडवच पाठचव्य ये सर्वऔषदि बराबरिले इनकूं जौकूटकरिटंक २ को क्वाथकरि दोन्यूंवषतांदीजैतौ सन्निपातकूं अर सर्ववस्तुकोज्ञान जातोरह्योहोय जीकूं अर पसेव घणां आवता होय जीकूं सीतांग उपज्यो होयजीकूं पेटकिसूलकूं आफराकूं वायका अर कफकारोग कूंयांसर्वरोगानैं योक्वाथ दूरिकरैछे. १ अथवा आककीजड जवा सो चिरायतौ देवदारु रास्ना निर्गुंडी वच अरणी सोहीजणौं पीपली पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठि अतीस जलभांगरो ये सब औषदि बराबरिले यांनै जौकूटकरि टंक २ प्रमाणको काढो दोन्यू वषतांदी जैतौ महासन्निपात ज्वरकौंधनुर्वातकूं जवाडाभीचि गयाहोय तीकूं सीतांगकौं सूवाकारोगकूं स्वासकूं षासीकूं अर वायकारोगानैं यो काढो दूरिकरैछे. येजतनलोलिंबराजमैंलिष्याछे २ ईसन्निपातमैंजी भजडहोयगई होयतौजीभकै विजोराकी केसरिमैं सींधोल्लूण अर मिरचिमिलाय ईकोलेप करैतौ जीभकी जडताई दूरिहोय. ३ अथ वा जीसन्निपातमैंज्ञानजातौरहैजींकोजतन बच महुवो. सींधोल्लूण.

न. टी. ज्वरकारोगीनैंपथ्यअपथ्य जरूर करणो योग्यछै. आहार व्यवहारविचारकरणा योग्यछै पथ्य नामतो ग्रहण करणो अपथ्यनामछोडणो जींवास्तेग्रंथमैंपथ्यअर अपथ्यरोगां कैव्यवहारसाथलिष्याछै सोध्यानमैंराषणां अर आहारनामषानपानछैसोलिष्या मुजब षाणा पीवणा. अर व्यवहारछैसोसरीरकीरहणी मुजब सीत ऊष्णसौं जतनराषणौ.

मिरचि पीपलि येसर्व बराबरिले इनकूंमिहीपीसि गरम.जलमैं नासदीजैतौ ग्यानहोय आवै. ४ अथसन्निपातकौंदूरिकरवेकी और नास लिष्यते. पारोटंक ५ गंधकटंक ५ इनदोऊनकी कजली षरलमैं कीजे पाछैयांदोन्यांकी बराबरि सूंठि मिरचि. पीपलि येमिही वांटि फेरि इनकूं मिलाय यांपांचाके धतूराका फलकारसकी पुट ३ दीजैदिन १ तांईषरलकरै योउन्मत्तनाम रसछैतींकी नासदेयतौ सन्निपातकूंदूरिकरै ५ अथ सन्निपात दूरि करवाको अंजन जमालगोटाकीमीजीटंक १० कालीमिरचि टंक १ पीपलामूल टंक १ यांतीन्यानैं जंभीरीका रसमै दिन ७ तांईषरलकरै पाछै ईको अंजन कीजैतौसन्निपातदूरि होय ६ अथवा पारो गंधक कालीमीरचि पीपलि येसब बराबरिले याचार्‌यांको चौथोहिंसो जमालगोटो ले पाछैपारागंधककी षरलमैं मिही कजलीकरैपाछैयेदोन्यूकजलीमैंमिलाय इनसबनकूं जंभीरीके रसमैं दिन ८ षरलकरै पाछै इनको अंजन करैतौ सन्निपात दूरिहोय उपद्रवमिटै ईअंजनकोनाम भैरवांजन छै योवैद्यरहस्यमैलिष्योछै ७ अथवा सिरसकाबीज पीपलि कालीमिरचि सींधोलूण लसण मैणसिल वच येसबबराबरिले तिनकूं मिही वांटि गोमूत्रमैंदिन १ षरलकरै पाछै ईको अंजन करैतौ सन्निपात दूरि होय ८ अथसन्निपात दूरि होवाको पंचवक्ररस लिष्यते हिंगलूको काढ्योपारो टंक ५ सोध्योगंधक टंक ५ सोध्योसींगी मुहरो टंक ५ सोध्योसुहागोटंक ५ पीपलिटंक ५ कालीमिरचि टंक ५ पारागंधककी कजलीकरिपाछै कजलीमैं येऔषदिमिलाय धत्तूराकाबीजका तेलमै घडिच्यार षरलकरै पाछै ईकीगोली रतीएककीबांधैगोली १ आदाका रसमैंदेवैतौ सन्निपात दूरिहोय ईऊपर दहीं अरभात षुवाजे

न.टी. ज्वरीपथ्यलि० मूंगकीदाल मौठकीदाल. तूरकीदाल. गहूंकोफांफरो. छालीकौदूध हलकोअन्न चंदलाई पानमेथी तुराई अलपभोजन उक्तलंघन ककोडा जाडालालचावल नवीजुरवालानैं पथ्यछै अरजीर्णज्वरवालानैं पथ्यजुदाछै सोलिषूंछूं

योजतन वैद्यरहस्यमैंलिष्याछे ९ अथसन्निपातकेदूरिहोवेकूं स्वच्छं दभैरवरस लिष्यते हिंगलूकौ काढ्यौ पारोटंक ५ सोध्योगंधकटंक ५ सोध्योसींगीमुहरोटंक ५ जायफल टंक २ पीपलि टंक १० पारा गंधककीकजली करै पाछैयेसारी औषदि ईमैं मिलाय आदाकारस मैं दिन १ षरलकरै पाछैरती १ प्रमाणदीजैतौ सन्निपातज्वर सीतज्व र विसूचिका विषमज्वर जीर्णज्वर मंदाग्नि माथाकारोग यांनैयोरस दूरिकरैछे यहवैद्यरहस्यमैं लिष्याछे. अथसन्निपातमैं सीतउपज्यो होय तींको उवटणोलिष्यते मिरचि पीपलि सूंठि हरडैकीछालि लोद पुहकरमूल चिरायतौ कुटकी कूट कचूर इंद्रजव येबराबरिले इनकूंनि पटमिहीपीसि सरीरकै मर्दन कीजेतौपसेवनैं सीतांगनैं दूरिकरै १० अथवा पारोटंक ५ सींगीमुहरो टंक ५ मिरचि टंक २० धत्तूरा का फलकीराष टंक ४० येसर्वमिहीबांटि सरीरकै मर्दन करैतो अ तिपसेव अतिसीतांगसन्निपात दूरिहोय ११ अथमहासन्निपातदू रिकरवेको जतन लिष्यतेपारोसींगीमुहरौ कालीमिरचि नीलोथू थो नौसादर येसर्व बराबरिले यांकूंमिहीवांटि धत्तूराकारसमैं अर लसणकारसमैं रोटीकरै पाछै रोगीका मस्तककै क्षौरकराय मस्त क ऊपर वा रोटीराषै पहर १ जदिवेकासरीरकै तापहोय आवै अरवोचैतन्यहोय आवै तौ औपुरषजीवै अरऊंकै तापनहींहोय तौ ओमनुष्य जीवैनहीं १२ अथवा लसण राई सहजणाकी जड यांनै गोमूत्रमैं मिहीवांटि तींकीरोटीकरै वारोटी माथाऊपरि क्षौर कराय पहर १ राषै चैतन्य अर ताप वैंकै नहींहोयतौ ओजीवैन हीं येजतन वैद्यविनोदमैं लिष्याछे १३ अथ सन्निपात दूरि करिवे कोजतनलिष्यते महाभयंकर सन्निपात वारैकौं विछू कटाइजैतौ

न.टी. रेचन वमन स्त्रीसंग अभ्यंग सीतलउपचार मृगकुर्कटमांस गऊकोदूध छालीकोदू ध घृत सीतल जल चांदणीमैं बैठणो श्रेष्ठवार्तालाप हलको भोजन धोयावस्त्र इत्यादिजीर्ण ज्वरवालानैं पथ्यछै.

सन्निपात दूरिहोय. १४ अर सन्निपात वारेकूंसर्प कठावोबीलिष्यो छे. सो लोकविरुद्धहैसो नहींकीजे १५ अथवा सन्निपातवारेकौंलो हकी सलाका निपटताती करिवेकी पगथल्यांकै अरवेंका भंवारा कैवीचि अर वेकाललाटकैवीचि वेलोहंकी सलाकाको डाहदीजैतौ सन्निपात दूरिहोय १६ यो वैद्यविनोदमैंलिष्याछे. अरमंत्रजंत्रउ गैरैकी साधनसूंभी सन्निपात दूरिहोयछे सुश्रूत चरक वाग्भट्टकेमत सेंतौ सन्निपात जुर एहीछे पण और ऋषीश्वरनकैमतसौं सन्निपा तज्वर ५२ बावन प्रकारकोछे. तीमैं १३ तौ मुष्यहै. तिनके जुदे जुदे नाम अर लक्षण अर जतन लिषूंछू. अथ तेरासन्निपातका नामलिष्यते संधिग १ अंतक २ रुग्दाह ३ चित्तभ्रम ४ सीतांग ५ तंद्रिक ६ कंठकुब्ज ७ कर्णक ८ भग्ननेत्र ९ रक्तष्टीवी १० प्रला प ११ जिव्हक १२ अभिन्यास १३ अवयांकी आयुर्बल लिषूंछूं संधिगदिन ७ रहै. अंतक दिन १० दसरहै रुग्दाहदिन २० रहै चित्तभ्रमदिन ११ सीतांग दिन १५ रहै तंद्रिकदिन २५ रहै. कंठ कुब्जदिन १३ रहै कर्णक महिना ३ रहै भग्ननेत्र दिन ८ रहै रक्त ष्टीवीदिनदस १० रहै प्रलापदिन १४ रहै जिव्हकदिन १६ रहै अभिन्यासदिन १५ रहै येतेरा सन्निपातकी आयुर्बल कहीपण यांमैउपद्रव उठि आवैतौ ततकाल आदमी मरजाय अर सन्निपा त ज्वरवारे मनुष्यका सीतल जतन कीजैनहीं दिन्नैसोवादीजैनहीं अर्द्धावसेस जलपाइजे अर आम अर कफ हरैऐसोजतनकीजे स न्निपातके दोष माफिक लंघन कराजे अथ संधिगसन्निपातको लक्ष णलिष्यते जीं मनुष्यकै संधिगसन्निपात उपजे जींकासरीरका सं धि संधिमैं घणोसूल चालै सरीरसूजिजाय पेटभार्यौ होजाय अं

न.टी. नवीन ज्वरवालानैं अपथ्यलि० स्नान रेचन अभ्यंग व्यायाम दिवानिद्रा दूध घृत चिणांकी उडदांकी मसूरकीदाल मांस पानविडा छाछ मद्य मीठोपदार्थ जड अन्न क्रोध उतावलोबोलणो इत्यादिनवीनज्वरमैं मनाईछे.

गसिथलहोजाय बल जातोरहै वायको अर कफको कोपघणोंहोय नींद आवैनहीं येलक्षणसंधिगसन्निपातकाजाणिजै १ अथसंधिग सन्निपातदूरिकरिवेकोजतनलि० रासना हरडैकीछालि गिलोय स हजणों चित्रक लजालु सूंठि देवदारु कुटकी कचूर अरडूसो वाय विडंग सालपर्णी पृष्ठपर्णी दोन्यूकट्याली बीलकीगिरि अरण्यू अ रलू कुंभेरपाठ पीपलि येसर्व बराबरिले इनकूं जौकूटकरिटंक २ को काढोकरि दोन्यूवषतांदीजैतौ सर्वलक्षण संयुक्तसंधिगसन्निपात दू रिहोय १ अथ अंतकसन्निपातके लक्षणलिष्यते सरीरमैंदाह घणों लागिजाय सरीरकांपै माथोधुंणैघणोपासै हिचकीहोय बकै बहुत ग्यान जातोरहै सास होय आवै जीं मनुष्यकै येलक्षण होय तीनैं अंतकसन्निपात कहजे योना इलाजछै. ईसन्निपातवारो जीवैनहीं. २ अथरुग्दाह सन्निपातका लक्षण लिष्यते बकै सरीरमैं दाहघणों होय पेटमैसूल चालै सरीरव्याकुल होय तिस घणी होय जीमैंयेल क्षणहोय तींकै येरुग्दाह सन्निपात जाणिजै योभी असाध्यछै ३ अ थ रुग्दाहको जतन लिष्यते हरडैकी छालि पित्तपापडो नींबकीछालि कुटकी देवदारु किरमालाकीगिरि मिनक्कादाष नागरमोथो ये सब बराबरिले इनकूं जौ कूटकरि टांक २ को क्वाथदोन्यूवषतां दिन १५ दीजैतौ रुग्दाह सन्निपातजाय ३ अथ चित्तभ्रम सन्निपातका ल क्षणलिष्यते जींकै भ्रमहोय अर मंदताप मोह येहोय अर बकैबा वलाकासा नेत्रहोय अर हसै गावै नाचै सास बोत आवै येजीं रो गीकै लक्षण होय तींकै चित्तभ्रमसन्निपात जाणिजै अथचित्तभ्रम को जतन लिष्यते ब्राह्मी वच लजालु त्रिफला कुटकी षरैंटी किर मालाकीगिरि नींबकीछालि नागरमोथो कड़वी तोरूंकी जड मिन

---

* श्लोक सन्निपातस्यकालस्यकश्चिद्भेदोनविद्यते ॥ चिकित्सकोजये द्यस्तं तस्मात्कोस्तिप्र तापवान् ॥ १ ॥ अर्थ सन्निपातओर काल यामैं भेदनहींछै जोवैद्यईंसन्निपातनैजीतैतींसु शि- वाय पराक्रमी कोई दूजोनहीं जींका उपकारकै अर्थ सर्व स्वदियाथका प्रत्युपकार होयनहीं.

क्कादाष सालपर्णी पृष्ठपर्णी दोन्यूंकट्याली गोषरू बीलकीगिरि अरण्यू अरलू कुंभेरपाठ येसर्व बराबरिले इनकूं जौकूट करि टंक २ को काढोदोन्यू वषतांदिन ११ देतौ चित्तभ्रमसन्निपात दूरिहोय ४

अथसीतांगसन्निपातको लक्षणलि० जींमनुष्यको सरीर सारो सीतलपालासिरीसो होजाय अरकांपैहिचकीआवै अंगसिथल होजाय स्वासहोय आवै अरषासीहोय वमन होय मुषमें लाल पडे. जींकैयेलक्षणहोय तींकैसीतांगसन्निपातजानिये. येभीमहाअसाध्यछेईसन्निपातवालो जीवैनहीं नाइलाजछे तथापि ईंकोजोजतनं छेसोलिषजेछे ईसन्निपातवालारोगीकौंविछूकटाजै अरसींगीमुहरो तेलमें मिलाय षुबमर्दनसरीरकैकीजे. अरसींगी मुहरो लसनराई इनकूंपीसिगोमूत्रमें इनकी रोटीकीजे रोगीकोंक्षौरकरायरोटीवेंकैमाथैबांधे सरीरताती होयतबतांईरोटीराषै तापनहीं आवै तो आरोगीमरिजाय अरईको उवटणों लिषूंछूंपारोटंक ५ सींगीमुहरोटंक ५ कालीमिरचिटंक २० धतूराका डोडांकीराषटंक ४० यांनेंमिहींवांटि सरीरकैमर्दनकरैतौ सीतांग दूरिहोय ५ अथतंद्रिकसन्निपातकोलक्षणलि० जींमें तंद्राघणीहोय अर ज्वरको वेगघणोंहोय तिसघणी होय जीभकालीहोय अरषरधरीहोय स्वासहोय अतिसारहोयअर दाहहोय कानांमेंपीडाहोय येलक्षणजींकैहोय तींकैतंद्रिक सन्निपात जाणिजे ६ अथतंद्रिकको जतनलि० भाडंगी गिलवै. नागरमोथो कट्याली हरडैकीछाली पुहकरमूल येबराबरिले इनकूं जौकूट करि टंक २ को काढोदिन १५ देयतौ तंद्रिकसन्निपात दूरिहोय ६ अथ कंठकुब्जसन्निपातको लक्षणलिष्यते माथोघणो दूषै अर दाह होय

न. टी. सर्व ज्वरवालानैं अपथ्यलि० जोसर्वज्वरभुक्तरोगीहोय तौसरीरमैंसक्तिआया विना इतीवातनहींकरणी. भारीअन्न. अशुद्धवाणी. षटाई. तेल. आचार. पानाको साग. उग्यो धान्य. मतीरो. कटहर. पानवीडा. पुष्टचीज. महनत. स्नान. स्त्रीसंग. दंतकाष्ठआंगलीघाल करउलटीकरणी. इत्यादि.

अरदाहमैंपीडाघणीहोय सरीर बहुत तातो होयगलोरुकिजाय अ र सूकिजाय अर वांकासरीरमैंपीडाहोय अरबकैये जीमैंलक्षणहो यतीनै कंठकुब्जसन्निपातजाणिजे योसन्निपातकष्टसाध्यछै ७ अथ कुब्जककोजतनलि० काकडासींगी, चित्रक, हरडैकीछालि अरडू सो कचूर चिरायतो भाडंगी दारुहलद कटालीपुहकरमूल नागर मोथो कूडाकीछालि इंद्रजव कुटकी कालीमिरचि येसारी बराबरिले इनकूं जौकूटकरि टंक २ को काढोदोन्यूवषतांदिन ८ तांईदेयतो कं ठकुब्जसन्निपात जाय ओरभी उपद्रवांसमेतदूरिहोय ७ अथ कर्ण कसन्निपातकाजतनलि० रास्ना आसगंध नागरमोथो दोन्यूकटा ली भाडंगी काकडासींगी हरडैकीछालि वच पोहकरमूल कुटकी येसबबराबरिले इनकूं जौकूटकरिटंक २ कोकाढोदोन्यूवषतांदिन ३० देतो कर्णकसन्निपात जाय १ अथ कर्णकरोदूसरोजतनलि० हलद हिंगोटाकी जड कूट सहजणाकीजड सींधोलूण. दारुहलद देवदारु इंद्रायणकी जड येओषदि बराबरिले इनकूंकूटि आककेदू धमैंमिहीषरलकरै अर कर्णमूलकै ठंडोहीलेपकरै तो कर्णमूल बैठि जाय अर कर्णमूलको रोग दूरिहोय २ अथवा कर्ण मूलकै उठतां हीकै जोक लगावै कर्णमूलमाफिक लोहीकढाजे तो कर्णमूल निश्चै जाय आछ्योहोय ८ अथ भग्ननेत्रसन्निपातकोलक्षणलि० जीरोगी कौ स्मरणजातोरहै ज्वरको वेगहोय बांकानेत्रहोय अर चंचलनेत्र होय अर भ्रम कांपणीहोय बकवोहोय येजीमैं लक्षण होय जीकै भग्ननेत्र सन्निपात कहिये योभी असाध्यछै ९ अथ भग्ननेत्रसन्निपा तको जतनलिष्यते दारुहलद पटोल पत्रज. नागरमोथो कव्याली कुटकी हलद नींबकीछालि त्रिफला येसब बराबरिले टंक २ को का

न.टी. तेरासन्निपातलिष्याछैजीमैंसाध्य. कष्टसाध्य. असाध्य. छै. ज्यांका कारण' बरोबर समझकरउपचारकरणा. साध्यसौंअसाध्यततकालहोयछै. अरकेईकसद्यः प्राणहरवावालाछै. ज्यांमैंसूंवैद्यनैंसूक्ष्मविचारकरणोंयोग्यछै.

ढो दोन्यूवषतांदिन १५ देयतौ भग्ननेत्रसन्निपात दूरिहोय ९ अथ रक्तष्ठीवीसन्निपातको लक्षण लिष्यते १० लोहीथूकै घाणों तिसघणीहोय मोहहोय स्वास घणोंहोय पेटमैंसूलहोय भ्रमहोय वमन होय आफरो होय येजीमैं लक्षणहोय तीकूं रक्तष्ठीवी सन्निपात जाणिये. योमहा असाध्यछै अथ रक्तष्ठीवीको जतन लिष्यते नागर मोथो पद्माष पित्तपापडो रक्तचंदन महुवो नेत्रवालो सतावरी मलयागिरीचंदन बकायणकीछालि येसब बराबरिले तिनकूं जौकूट करिटंक २ को काढोदिन १५ देतौ रक्तष्ठीवी सन्निपातदूरिहोय १ अथवा दूबकारसकी दाड्यूंकाफूलांका रसकीनासदेतौ रक्तष्ठीवी सन्निपात दूरिहोय २ अथ प्रलाप सन्निपातको लक्षण लिष्यते सरीरकांपै बकैबहुत सरीरतातो घणोहोयजाय दाहघणोहोय जुरकोवेग घणोहोय संज्ञा जातीरहै सास आंगविकलहोजाय येलक्षण प्रलापसन्निपातको जानिये अथप्रलापको जतनलिष्यते नागरमोथो नेत्रवालो सालपर्णी पृष्ठपर्णी दोन्यूं कटाली. बीलकीगिरि अरलू कुंभेरपाठ सूंठि पित्तपापडो चंदन अरडूसो ये सब बराबरिले इनकूं जौकूटकरि टंक २ को काढो दोन्यूवषतां दिन १० देयतौ प्रलापसन्निपात दूरिहोय ११ अथजिव्हकसन्निपातको लक्षणलिष्यते जीमैं सासहोय कासहोय तापघणोहोय अरजीभलठरहोय अरजीभकै कांटाहोयजाय गुंगो होजाय अर बहरो होय जाय अर बल जातो रहै येजीमैं लक्षण होय तीकौं जिव्हक सन्निपात कहिये योभीकष्टसाध्यछै अथजिव्हककोजतनलि० वच कट्याली जवासो रास्ना गिलवै नागरमोथो सूंठि कुटकी काकडासींगी पुहकरमूल ब्राह्मी भा

न. टी. भग्ननेत्रसन्निपातअसाध्यछै. परंतु उक्तसाधनसौंजींकोगयोथकोविस्मरणपणोपाछो आवै. अरसंग्यापाछीआवै. सावचेतहोय. ज्वरकोवेगघटै. अरउपद्रवजोसन्निपातकोछैसोवीघटै. इसाउपचारलिष्यामुजब धीरजसौंकरणा.

डंगी नींबकीछालि अरडूसो कचूर, येबराबरिले इनकूंजौकूटकरि टंकदोय कोकाढोदिन १० देतौ जिव्हकसन्निपात दूरिहोय १२

अथ अभिन्याससन्निपातका लक्षणलिष्यते नींद आवैनहीं खासघणो उतावलो चालै सरीरकांपै सरीरकी सर्वचेष्टा जातीरहै घांघो बोलै काष्ठवत होजाय ये जीमैंलक्षणहोय तींकै अभिन्याससन्निपात कहजेयोमहाअसाध्यछै. मृत्युरूपछै. १३ अथअभिन्याससन्निपातदूरिकरिवेको जतनलिष्यते भाडंगी रास्ना पटोल देवदारु हलद सूंठि पीपलि अरडूसो इंद्रायणकीजड ब्राह्मी चिरायतो नींबकीछालि नेत्रवालो कुटकी वच पाठ अरलू दारुहलद कव्याली गिलवै निसोत झांउरूषकीजड पुहकरमूल त्रायमाण नागरमोथो जवासो इंद्रजव त्रिफला कचूर येसब बराबरिले इनकूं जौकूट करिटंक २ कोकाढो दोन्यूवषतां दिन १२ देयतौ अभिन्याससन्निपातजाय १३ अथसन्निपात दूरिहोवाको अंजन लिष्यते लसण पीपलि मिरचि वच अरलूकाबीज सींधोलूण येसब बराबरिले इनकूं गोमूतमैं मिहींवांटि नेत्रांमैं अंजन करै तौ सर्वसन्निपात दूरिहोय १ अथ सन्निपातकूं नासलिष्यते कालीमिरचि महुवो सींधोलूण चित्रक जायफल पीपलि येसब बराबरिले इनकूं मिहीवांटि गरम पाणीमैं नास दीजैतौ सन्निपात दूरिहोय २ अथ आठों ज्वरका दूरिकरि वेकौं चिंतामणिरस लिष्यते हींगलूको काढ्योपारो सोध्योगंधक अभ्रक तामेश्वर सूंठि कालीमिरचि पीपलि हरडैकीछालि आंवला सोध्याजमालगोटा येसबबराबरिले इनसबनकूं दडघलका पानाका रसमैं षरलकरैपहर दोयताईं पाछै तावडै सुकाय रती १ प्रमाण गोलीबांधै गोली १ दीजै

* दाक्तरकामतमैं वातकासन्निपातकेजोरघणौहोयतोदिन १४ दरदरहैपित्तकाजोरमैदिन २० कफकाजोरमैंदिन २४ दरदरहै. अरसन्निपातका आदिमैंतथा मध्यमैं. तथाअंतमैं कानाकैनीचैगांठिहोय. सोजोघणोहोय. चसकघणोंहोय तौ कौईनैं आछ्यौकरै अथवा कोईनै घातबी करैछै.

तो आठौंही ज्वर दूरिहोय अरपेटकीसूल जाय अजीर्णदूरिहोय आ मवात दूरिहोय यो वैद्यरहस्यवैद्यविनोदमैंलिष्योछै. ३ अथ अमृत संजीवनीगुटिका लिष्यते हिंगलूकौ काढ्यौ पारो टंक २ गंधकसोध्यो टंक २ सींगीमुहरो सोध्योटंक १ कालीमिरचिटंक ४ प्रथमपारागंधककी कजलीकरैपाछैये औषदि मिलाय इनसबनकौं ब्राह्मीकारसकी पुट १ दीजे पछै चित्रककीपुट १ दीजे पछै ईंकीगोल्लीरती १ प्रमाणबांधै गोली १ आदाकारसमैं दीजैतौ सन्निपातनैं मूर्छानैंदूरिकरै यहरसमरेमनुष्यकूंजिवावहै. अर आमवातकूं वायकीसूलकूं सिया दाहकूं विषमज्वरकूं मंदाग्निकूं सन्निपातकूं यहचिंतामृतसंजीवनीगुटिकाइतने रोगकूं दूरिकरैछै. १७ योरस मंजरीमैंलिष्योछै. ४ अथ कालारिरसलिष्यते पारो मासा १२ सोध्योगंधक मासा २० सोध्योसींगीमोहरोमासा १२ कालीमिरचि मासा २० पीपलिमासा ४० लवंगमासा १६ धत्तूराकाबीज मासा १३ सुहागो सोध्योमासा २० जायफल मासा २० अकलकरो मासा १२ प्रथम पारागंधककी कजलीकरै पाछै वेकजलीमैंयेऔषधिमिहीवांटिमिलावै पाछै इनकौं आदाकारसमैं दिन ३ षरलकरै पाछैनींबूकारसमैं दिन ३ षरलकरै पाछै केलीकारसमैंदिन ३ षरलकरै पाछैरती १ तथा २ प्रमाणगोलीबांधै गोली १ षायतौ वायकोरोग अरसन्निपातदूरिहोययोरसयोगचिंतामणीमैंलिष्योछै. ५ अथत्रिपुरभैरवरसलि० सूंठिपईसा ४ कालीमिरचिपईसा ४ तेलिया सुहागो सोध्योपईसा ३ सींगीमुहरो सोध्योपईसा १ भर पाछै इनकूं मिहीवांटिदिन ३ नींबूकारसमैं षरलकरै पाछै आदाकारसमैंदिन ५ षरलकरैपाछै पानाकारसमैं दिन ३ षरलकरै. पाछैईंकीगोलीरती १ प्रमाण बांधैगोली १ आ

न.ºटी. सन्निपातवालानैं नेत्रांजन. नास. डांभ. इत्यादिकलिष्याछै. जामैजोदेसकालमुजबवैद्यनैंविचारसौं उपावकरणौयोग्य छै. अरजौंकीसंग्याजातीरहैछैजीनैनाक मैंनासदेणी. अरनेत्रांमैं अंजनघालणो. सोविचारसौंनेत्रकौमलहोय छै.

दाकारसमैंदीजैतौ सन्निपातदूरिहोय ६ अथसंज्ञाकरणरसलि० सो
ध्योसींगीमुहरो सींधोलूण कालीमिरचि रुद्राक्षकटाली कायफल सुद्दु
वो समुद्रफल येसारीऔषदि बराबरिले पाछै यानैंमिहीवांटि आक
काषारकी पुट ३ देपाछैईनैंरती १ तथा २ तथा ३ कानकाछिद्रमैंत
थानाकमैं देअर फूकदेतौ संज्ञाहोय आवे अर सन्निपात दूरिहोय
७ अथ ब्रह्मास्त्र रसलिष्यते पाराकी भस्म टंक ३ सोध्योगंधक टं
क ३ यांदोन्यांकीबराबरिसोध्योसींगीमुहरो यांसारांकीबराबरि का
लीमिरचिलेपछै यांसारांकोयेक जीवकरि कलहारीबंदाल अरज्वाला
मुखीयांजड्यांकारसमैं अर आदाकारसकापुट २१ इकीसदेरयोर
सतयारकरै पाछैरती १ योरसदेतौसन्निपातदूरिहोय ८ इतिसन्नि
पातका जतनसंपूर्णम् अथ आगंतुक ज्वरकानाम उत्पत्तिलक्षणज
तनलि० शस्त्रादिकांका चोटसूंउपजीजोज्वर १ अरभूतादिकांकाला
गि वाकासंगसें उपजीजोज्वर २ अरविषादिकांकाषावासैंउपजीजो
ज्वर ३ अर कामक्रोध सोक भयस्नेह द्वेषादिकांका आधिक्यतें उ
पज्योजोज्वर ४ अरराजागुरु मातापितानें आदिलेरयांकातिरस्का
रसूंउपज्योजोज्वर ५ त्यांसाराहीज्वरानें आगंतुकज्वर कहिजे अथ
शस्त्रादिकतें उपज्योजोज्वरतींकालक्षणलिष्यते शस्त्रादिककालागि
वासूं उपजीजोपीडातीसूं वायको कोपहोय पाछैवावायलोहीनैं वि
गाडै पाछै वेंकैपीडाहोय अर वेंकै सोजोहोय अर वेंकासरीरकोव
र्ण औरसोहोयजाय पाछै वेंकासरीरकोवाय वेंकैज्वरनैं करैछै १ अ
थ शस्त्रादिकसूं उपज्योजोज्वर तींकोजतनलिष्यते ईंज्वर वालानैं
लंघन कराजेनहीं कषायली वस्त गरम द्रव्यकोजतनकरजेनाहीं म
धुर चीकणा द्रव्यषुवाजे अरसेकिवो सीवणो पाटीबांधवानैं आदि

न. टी. कालारिरसमैं पारोमासे १२ बाराहैसोपारोशुद्धकरयोहोय सोईमैंयोगकरणो. अर
ारभीधणीजायगांपारोलिषैछै जैठैशुद्धपारोकह्योछै. अरकठैही नहैबीक हैतो कुछकारणनहींछै.
राकोतो योगशुद्धकोहीकरणो अशुद्धमैं औगुणछै.

लेर जथायोग्य जतनकीजे सोरवाउगैरै पवाजे १ अथ भूतादिकका लागिवासूं उपज्योजोज्वर तींकोलक्षणलिष्यते शरीरमें उद्वेग होय आवै कदेक हंसैकदेक रोवै कदेक कांपै चित्तथिरनहींहोय तींकै भूतादिकको प्रवेश जाणिजे २

२ अथभूतादिकको दूरिकरिवाको जतन लिष्यते वेनैबांधिजे ताडनादिकरिजे अरमंत्रजंत्रतंत्रकीजे अर नासदीजे यांसूं येदूरिहोयछै सो थोडो थोडोसबही अजमायालिषूंछूं अथ भूतादिकका काढिवाकोमंत्र ऊँ ह्राँ ह्रीं ह्रूँनमोभूतनायकसमस्तभुवनभूतारिसाधय २ हुं ३ ईमंत्रको मोरकी पांषसूं झाडोदीजेतौभूतादिकनीकलै १ अथ भूतादिकका काढिवाको दूसरोमंत्रलि० ऊँनमोनारसिंहायहिरन्यकश्यपुवक्षस्थलविदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूतप्रेतपिशाच शाकिनीकोलोन्मूलनायस्तंभोद्भवसमस्तदोषान्हनहन सरसरचल २ कंप २ मंथ २ हुंफट ३ ठः ठः महारुद्रोजापयतिस्वाहा इतिनृसिंहरक्षामंत्र ईमंत्रको मोरकीपांषसूं झाडोदेतौ भूतादिकरहैनहीं २ अथ भूतादिककावकारावाको मंत्र लिष्यते ऊँनमोभगवते भूतेस्वरायकिलिकिलिताक्ष्याय रौद्रदौंष्ट्रं करालवक्रायत्रिनयनभूषितायधगधगीतपिसंग ललाटनेत्रायतीव्रकोपानलायामितितेजसेपाशशूलखट्वांग डमरुकधनुर्बाणमुद्गरभयदंड त्रासमुद्रा व्यग्र दशदोर्दंडमंडिताय कपिलजटाजूटकूटार्धचंद्रधारिणभस्मरागरंजितविग्रहायउग्रफणिपतिघटाटोपमंडितकंठदेशायजय २ भूतडामरेशआत्मरूपंदर्शय २ नृत्यय २ सर २ वल २ पाशेनबंध २ हुंकारेणत्राशय २ वज्रदंडेन हन २ निसितखड्गेनछिंधि २ शूलाग्रेणभिद्य २ मुद्गरेणचूर्णय २ सर्वग्रहाणां आवेशय २ ईमंत्रसेतीगऊकाघृतमैंगूगलमिलायघणो

न. टी. संग्याकरणरसमैंसींगीमोहरो. जीनैवछनागकहैछै. सोशुद्धकियाविनालेणोनहीं. कारण ओगुणघणोछै. जीसूंडोलकायंत्रमैदूधकीसाथशुद्धकरणो. अररुद्राक्षलिष्याछै जींकी जायगांघणावैद्यरुद्रवंतीलेवैछै.

धूपमेंवैभूतादिकलाग्योहोयजींकनैं अरइहिंमंत्रसूंउडदानैंमंत्रअरवां उडदांकीवैकदेतौ ओमनुष्यमुकरवकरैजिसोहोयतिसोकहै ३ पा॰ वामंत्रसूं काढैअरधूपमैंनींबकापान अरसापकी कांचलीमिलावै अ रभूतादिककाकाढवाकी नास अर अंजन लि॰ हींगनैं लसणकापा णीमैंवांटि नासदेतथा अंजन करैतौभूतादिकदूरिहोय ४ येतंत्रोप चारग्रंथांमैंलिष्याछै. अथभूतादिककाकाढिवाको तंत्रलिष्यते तुल सीकापान ८ कालीमिरचि ८ सहदेईकीजडदीतवारनैंपवित्रहोय ले पोछैयेतीन्यूंमिलाय कंठकैबांधैतौभूतादिकदूरिहोय ५

अथ क्रोधज्वरकालक्षणलि॰ सरीरकांपैमथवायहोय अरपित्त ज्वरकालक्षणमिलैतीनैंक्रोधज्वर कहिजे ६ अथक्रोधज्वरका जतन लि॰ आछ्यासीतल वचनकरि मनकूं प्यारालागैऐसालोभकरियो ज्वरदूरिहोय ७ अथमानसज्वरकीउत्पत्तिलक्षणलिष्यते पुत्रमित्र स्त्रीधनयांनैं आदिलेर ज्यांको नासहोय अर आपका इष्टको नास होय अर राजा अर वडाजीकोतीरसकार करै त्यांकैयो मानसज्वर होयछै अथ ईकालक्षणलिष्यते सोचघणौहोय अतिसारहोय आ वै सर्व वस्तुमें ग्लानि होय आवै ये लक्षण होयतीनें मानसज्वर कहिजे ८ अथ मानसज्वरको जतन लिष्यते ईज्वरको जतनग्यान सुष्यछै. अर धैर्यल्यावणो अर मिष्टान्न रुचिकारि नानाप्रकारका भोजन अर व्यंजन षाणा यांसूंयोज्वर दूरिहोयछै ९ अथपुरुषकै कामज्वरका लक्षणलिष्यते. जींकै कामज्वर प्रगट हुवोहोयतींकै भोजनादिकमैं अरुचिहोय मनमैं दाहहोय अर लाजनींदबुद्धिको धैर्यपणो येसारा जातारहै हियोदूषैसंभोगमैही ध्यानरहै निःस्वास

* भूतप्रेतादिकांकोउपावलिष्याछैसुहींदुस्थानीवैद्यांको घणांकोमततो मंत्रयंत्रादिकसूंआ छ्योहोवाकोछै. ओरघणाषराईनैंढूंगबतावैछै. पणई एलमवाळाएलमीथोडादीषैछै. बाकीढूंगीधु ताराठगघणाछै. धनठगवाकैवास्तैहाथमैं लोहकोकडोसिंदूरकोतिलकलालआंष करलेछै. विचा राभोलामनुष्य लुगायांनैं डराताफिरैछै.

होयआवै येजीमैंलक्षणहोयतींकै कामज्वरकहिजे अथ.कामज्वर का जतनलिष्यते सर्वगुणां करिकैसंयुक्त महास्वरूप सुंदरजीकाने त्र महागाढाअरऊंचा जीका कुच अरसोलावरसकीमोट्यार जोस्त्री तीसूंआछीतरहसूं संभोग करैतौ कामज्वरदूरिहोय १० अथवा सुंदर महबूबसूं संग करैतौ कामज्वर दूरिहोय ११ अथ स्त्रीके कामज्वर हुईहोय तींका लक्षण लिष्यते जीस्त्रीकै कामज्वर प्रगट हुईहोय तींकै मूर्छा होय आवै अर वेका सारा अंगमैं मरोडी आवै अरतिसहोय नेत्र चपलहोय कुचमसलावाकी इच्छा मनमैं आवै पंसेव आवै अरहियामैंदाहहोय अर भोजनमैं रुचि नहीं अर लाज नींद धैर्य एभीजातारहै येजींका लक्षण होय तींकै कामज्वर कहिजे १२ अथ ईंको जतनलिष्यते जींकै कामज्वर प्रगट हुवोहोय सो स्त्रीआछी सारी सामग्री लियां आपका भरतारसूं संभोग करैतौ कामज्वर दूरिहोय १३ अथ भयज्वरको लक्षण लिष्यते जींकै भयज्वर प्रगट हुवोहोय तींकै प्रलापहोय अर अतिसारहोय चित्त स्थिरनहीहोय भोजनमैं अरुचिहोय येजीमैं लक्षण होय तीनैं भयज्वर कहिये १४ ईंको जतनलिष्यते वेनैं हर्षकी वातांकहणी अर वेंको कहीं तरैसूं भयदूरि करणो १४ अथ विसमज्वरका लक्षण लिष्यते जींपुरसकै ज्वर आयांपाछै कहींतरैका कुपथ्यसूं रस धातनैछोडि अर लोहीनैं आदिलेर वांधातानैंप्राप्तिहोय पित्त कफहैसो विषम ज्वरनै करैछै. अथवा ज्वरआयाविनाभी ज्वरहोय आवैछै जींपुरसकै सीयो दाहआवै अरसीको अरदाहको घणाथोडा कोनेमनहीछै अर समय कोभीनियम नहींरहै किहीवषत आयजाय येजीमैं लक्षण होय तीनैंविषमज्वर कहिये सोविषमज्वर च्यारि प्र

न. टी. मनकीधासतीसूंमनुष्यांकै मानसज्वरहोयछै. सोईज्वरमैं औरऔषधीविशेषकाम करैनहींछै. कारण जोमनमैं भयप्राप्तिहुवी है संपदाकानासतै अथवा राजागुरुऔरभीमहात्मा पुरुषांकातिरस्कारसौंजीनैतोसंतोषआयासूं आरामहोयछै.

कारकोछै एकतो संतत जोरोजीनाआवै १ अरयेक इकांतरै आवै जीनै इकांतरो कहिजे २ एकतीसरैदिन आवै तीनैं तेजरो कहिजे ३ येक चौथेदिनआवै तीने चतुर्थक कहिजे ४ विसमज्वरका भेदतो घणाछे त्यांमैं च्यारिमहा मुष्यछे सो लिष्याछे अथ विसमज्वरका जतनलि० विसमज्वरवालानैं मूगांकी अथवा मौठांकी दालको पाणीदीजे हलको राषिजे ठंडोपाणीपाजेनहीं अर पटोल हरडैकीछालि इंद्रजव गिलवै जवासो येसारी औषदि बराबरिले यांनैजोकूट करि टंक २ कोकाढो दोन्यूवषतांदिन ७ लेयतौ संततज्वर दूरिहोय १५ अथवा सीतज्वर वालानैं यहक्षुद्रादिक देयतौ सीतज्वरजाय सोलिषूंछूं कट्याली धणौं सूंठि गिलवै नागरमोथो पदमाष रक्तचंदन चिरायतौ पटोल पत्र अरडूसो पुहकरमूल कूटकी इंद्रजव नींब कीछालि भाडंगी पित्तपापडोयां औषद्यांनैं बराबरिले त्यांनैं जौ कूटकरिटंक २ कोकाढोरोजीना दोन्यूवषतां दिन १० लेतौसीतज्वर दूरिहोय १६ अथवा षोडसांगचूर्णसूंभीविषमज्वरदूरिहोयछैसो लिषूंछूं चिरायतौ नींबकीछालि कुटकी गिलवै हरडैकीछाल नागरमोथो धणौ अरडूसो त्रायमाण कट्याली काकडासींगी सूंठि पित्तपापडो फूलप्रियंगू पटोलपीपली कचूर येसारींऔषदि बराबरिले त्यानैंमिहीपीसि कपडासूंछाणिटंक १। सवा सीतलजलसूं दिन ८ लेतौविषमज्वर दूरिहोय १७ अथवा चिरायतौ कुटकी निसोत नागरमोथो पीपलि वायविडंग सूंठि नींबकीछालि येसारी औषदि बराबरिले त्यांनैमिहीपीसि तींचूरणनै टंक १ गरमपाणीसूं दिन ७ लेयतौ विसमज्वर दूरिहोय अरभूषलागै १८ अथवा साराही सियादाह इकांतरा तेजरा उगेरै त्यांनैज्वरांकुस

न. टी. जोकामज्वरतथाभयज्वर तथा क्रोधज्वर मानसज्वरयेमात्रज्वरकह्याछैआरऔरभी ज्वरशास्त्रमैंघणांप्रकारकाछै. परंतु ईंग्रंथमैंजो कह्याछै ज्यांकाजतनभीविधिपूर्वकलिष्याछै. अर विषमज्वरचारप्रकारकालिष्याछै. परंतु पांचछैसोलिषूं.

दूरिकरैछे सोलिषूंछूं सोमलनैं मारु वेंगणका पेटमैं वार १४ पकालै तींकौं भडीतौ करिले पाछैवे बराबरि पीपलिअर हिंगलू ले यांती न्याकी राईजिती गोली बांधै पाछै गोली १ पतासामैंदेसीतलागै जिहपहलीतौ निश्चैसीयो वेलांजरौ तेजरौ दूरिहोय गोली ३ तथा ५ मैं १९

अथ जीर्णज्वरका लक्षणलिष्यते दिन २१ उपरांत ज्वरतींका सरी रमैंरहै. सूक्षम होयकरअरजींकी भूष जातीरहै सरीर दुबलो होय जाय अरपेटमैंफियोहोय आवै जीनैं जीर्णज्वर कहिजे अथ जीर्ण ज्वरका जतनलि० प्रथमवसंतमालतीरसजीर्णज्वरादिकांनैं दूरिक रैछे सोलिषूंछूं सोनाकाउरख १ भाग बुकाकामोतीं दोय २ भाग हिं गलूतीन ३ भाग कालीमिरचि ४ भाग षापख्यौ गोमूत्रमैंसोध्यो ८ भाग यांसारानैंषरलमैं मिहीवांटि पाछै वासारानैं गऊका माषनमैं वांका तोल माफिक षरलकरै वाचिकटाई मिटै जैठा तांई पाछै ओ रस तयार करैपाछै योरस रती १ तथा २ पीपलि सहतकासंयोग सूं देतौ जीर्णज्वरनैं धात गरमीकारोगनैं संग्रहणीका रोगनैं मूत्रकृ छ्रनैं सासनैं षासनैं प्रदरनैं यांरोगानैं योदूरिकरैछे अनुपानकासंजो गसूं २० अथवा कठ्याली गिलवै सूंठि यांतीन्याकौ काढोदिन १० लेतौ जीर्णज्वरनैं दूरिकरैछे २१ अथवा कचूर पित्तपापडोसूंठि ना गरमोथो कटुकी कटाली चिरायतोयांनैं बराबरिले त्यानैं जौकूटकरि टंक २ रोजीनादोन्यावषतांदिन ११ लेतौजीर्णज्वर विषमज्वरदूरि होय २२ यो वैद्यविनोदमैंलिष्याछे अथ लाक्षादितैललि० पीपलकी लाष शेर १ पाणीमीठोशेर ६ लोदटंक १० यानैंयौओटाय मधुरी आंचसूंईकौ चतुर्थांसरसकाढैपाछै ईरसमैं गउकौ मठोशेर १ नाषै

न. टी. विषमज्वरसन्निपातसौंहोयछै. सोपांचप्रकारकोछै. संतत. सोतो दसबारादिन रहै. सतत २ रातदिनमैं २ वगत आवै अन्येद्यु ३ रातदिनमैंयेकवारही आवै ३ तृतीयक येकदिनछोडकरआवै. ४ चातुर्थकजोदोयदिनछोडकर आवै ५ एविषमज्वरछै.

मीठोतेलसेर १ नाषै अरसौंफ टंक २ आसगंधटंक २ हलदटंक २ देवदारु टंक २ संभालुटंक २ पित्तपापडोटंक २ कुटकीटंक २ मूर्वा टंक २ महलौठीटंक २ नागरमोथोटंक २ रक्तचंदनटंक २ रासना टंक २ यांसारी औषद्यांनैंमिहीवांटि ईतैलमैंनाषै पाछैसारांको येक जीवकरि मधुरीआंचसूं औटावै वेकौरसवलिजाय तेल आयरहै त दिउतारिलैपाछै ईतेलको मर्दन करैतौजीर्णज्वर दूरिहोय अरसरी रमैं बलहोय २२ अथवा पीपलितीनसूयेकेकरोजीनावधैइकवीसतां ई अर एकेकहीघटैतीनआय रहैजठातांईदेवैइनै वर्धमानपीपलि क हैछै ईसूंजीर्णज्वर विसमज्वरदूरिहोय २३ अथवा बकरीकादूध का झांगासूंभीजीर्णज्वर दूरिहोयछै २४ अथवा नींबकापत्रत्रिफला सूं ठि कालीमिरचि पीपलि अजमोद सींधोलूण संचरलूण बिडलूण जो षार चित्रक चिरायतो पित्तपापडौ येसारी औषदि बराबरिले यानैं मि हीपीसै कपडाछाण करिटंक १ प्रातकालही जलसेती लेतौविषमज्व र जीर्णज्वर दूरिहोय २५ योनींबादिचूर्णछै. अथवा त्रिफला दारु हलद दोन्यूकटाली कचूर सूंठि कालीमिरचि पीपलि पीपलामूल मु र्वा गिलवै धणो अरडूसो कुटकी त्रायमाण पित्तपापडो मोथो नेत्र वा लो नींबकीछालि पोहकरमूल महलोठी अजवायण इंद्रजव भाडंगी सहजणाका बीज फिटकडी वच तज कमलगट्टा पदमाष चंदन अती स षरैटी वायविडंग चित्रक देवदारु पटोल चव्य लवंग वंस लोचन प त्रज येसारी औषदि बराबरिले यांसारी औषद्यांसूं आधो चिरायतो ले त्यांनैमिहीवांटि कापडाछाणकरि पाछै टंक १ सीतल जलसूं लेतो सर्वज्वर मात्रनैं विषमज्वरनैं जीर्णज्वरनैं यो दूरि करैछै यो सुदर्शन चूर्णछै २६ अथवा कहींतरैविषमज्वर अरजीर्णज्वर जाती दीसै न

---

* दूजीओलीमैंचूर्णछैजीमैंमोटीहरडैकीछालएकऔषधाकाअनुमानमाफिक घालणी. औरनीं बकीछाललीषछैसु जूनोनींबअतिकडवोजींकी अंतर छाललेणी.

हीं तौ वेनै वेकारोगमाफिक जुलाब अरवमन कराजे तौ विषमज्वर अरजीर्णज्वर दूरिहोय २७ अथ अजीर्णज्वरका लक्षणलि० वारं वारपतलौ जंगल जाय षाटीडकार आवै वमनकी इच्छारहै उदरमैं पीडाहोय अर आफरौ होय पेटमैंगुडगुडाटशब्दहोय तदिअजीर्ण ज्वरजाणिजे अथ अजीर्णजुरकी औषदिलि० अजमोद हरडेकी छालि संचरलूण कचूर यांनैबराबरिलेयांकौचूर्ण मिहींकरिटंक १ गरमपाणीसूं लेतौ अजीर्णज्वर जाय १ अथ दृष्टिज्वरका लक्षणलि० जंभाईघणीआवै उदरमैं पीडाहोय हाथपगांमैं फूटणी होय सरीर कीसक्तिजातीरहै तौदृष्टिजुर जाणिजे अथ दृष्टिजुरको जतनलि० सेकीहींग कालीमिरचि पीपलि सूंठ येमिहीवांटि टंक २ गरपाणीसूं लेतौदृष्टिजुर दूरहोय १ अथवा मुहरा उगैरेकौंघुलाय पाणीपावैतौ दृष्टिजुर दूरिहोय २ अथ लोहीविगड्योहोयतींकी जुरकालक्षण लि० अंगमैफूटणीहोय मुहडाकरिसास आवै सरीरसिथलहोय तिसहोय मूर्छाहोय आफरौहोययेजीमैं लक्षण होयतीनैं लौहीकीज्वर जाणिजे अथ लौहीकी ज्वरकौ जतन लिष्यते दाष अरडूसौ कट्याली हलद गिलवै हरडैकीछालि एनैंबराबरिलै त्यांनै जौकूटकरि टंक २ कोकाढोकरिदे काढोसीतल हुवां काढामैं अधेलाभर सहत मिलाय दिन ७ देतौ लौहीविगड्यांसूं उपज्योजोज्वर तीनैंयोदूरिकरैछे १ अथ मलज्वरका लक्षण लिष्यते जीमै मुष सोसहोय दाहहोय भ्रमहोय वमनहोय मूर्छाहोय मथवाय होय हिचकीहोय पेटमैं सूलहोय येसारालक्षण जीमैहोयतीनैं मलज्वर कहिजे अथ मलज्वरकी औषधिलि० कुटकी पीपलामूल नागरमोथो हरडेकीछाल

न. टी. औषधिकोतेलतथाघृतवणैछै. वाऔषध्यांकागुणअरशक्ति मात्र तेलमैं तथाघृतमैं आवैछै. सोवैतेल अथवाघृतछै ज्यांकीशक्तिमास २ तांईतो बलवानरहैछै पाछैवेतेल. घृत ज्यूंज्यूं जूनाहोयछै त्यूंत्यूंयांकीशक्तिघटैछै लाक्षादितैलादिकमैं निगाराषणी.

किरमालाकीगिरि येसारी औषदि बराबरिले यांनैं जौकूटकरिटंक २ कौकाढोकरि देतौ मलज्वरदूरिहोय औकिरमालपंचकछे १

अथगर्भिणीस्त्रीकीजुरकौजतनलि० रक्तचंदन दाष, गौरीसर षसमहलौठी महुवो धणौं नेत्रवालौमिश्री यांसारानैं बराबरिलै त्यां कौ काढोदिन ७ देतौ गर्भिणीस्त्रीकीज्वरजाय १ अथ सूतिकाज्वर कीलक्षणलि० अंगांमैंफूटणीहोय सरीर तातौहोय कांपणीहोय तिसहोय डीलभार्योहोय सोजोहोय अतिसार होय येजीमें लक्षण होय तीनैं सूतिकाज्वर कहिजे १ अथसूतिकाज्वरकी औषदिलि० अजमोद जीरो वंशलोचन षैरसार विजैषारसौंफ धणौ मोचरस ये सारी बराबरिलै त्यांनै जौकूटकरि टंक २ कौ काढोदिन १० लेतौ सूतिकाज्वरदूरिहोय १ अथवा दसमूलको काढोदेतौसूतिकारोग दूरिहोय सोलिषूंछू सालपर्णी पृष्ठपर्णी दोन्यूकटाली गोषरू वीलकी गिरि अरण्यु अरलू कुंभेरपाठ पीपलि येसारी बराबरिले त्यांनै जौकूटकरि टंकदोय कौकाढौदिनदसलेतौ सूतिकारोग जाय २ अथ बालककै जुरहोय तींकीउत्पत्तिलक्षणलिष्यते बालककीमाता अथवा धायकुपथ्य करै गरिष्ठवस्तषाय तदि बालककै नानाप्रकारकारोग होय अर ज्वरहोय सो बालकका रोयवासूं जाण्योजाय ज्वरप्रत्यक्ष मालुमहोय अथ बालककी ज्वरकौ जतनलि० बालककीमातानैं अथवा धायनै पथ्यराषिजे. अर हलका भोजनदीजे अथवा बालककी माताकै दूध नहींहोयतौबकरीकौ दूधदीजे अथवा नागरमोथौ हरडैकीछाल पटोल महलौठी येसारीऔषदि मासा १ भरलै तींकौ क्वाथकरिदिन ७ देतौबालककीज्वरदूरिहोय १ अथवाषील महलौठी छडमहूवोयांकौमिहीं चूर्णकरिचूर्ण १ सहतमै देतौ बाल

न. टी. तेलअथवाघृतसिद्धहुवाथकाबहुतगुणकरैछै. परंतुहीनवीर्यहुवा थकानिकमाहोयछै सोयावैद्यसंप्रदायनैंसमजणी. कारण चूर्ण तथाघृत तेल मासदोयपाछैहीनवीर्यछै. अरगोली मासबारापाछै हीनवीर्यछै अररसादिकदिनंदिननवीनछै.

ककी ज्वरदूरिहोय २ अथवाबालककै अतिसारनैं लीयां ज्वरहोय तौ अतीस वीलकीगिरि इंद्रजव धावड्याकाफूल लोद धणौ नेत्रवालौ यांकौ मासा २ भरकौ काढोदेतौ बालककौ ज्वरातिसारदूरिहोय ३ अर बालककी सूंडी पकिगईहोयतौ घृतसूं सेकैतौ आछी होय ४ अथपेटमैं क्रमि पडगईहोय तीसूं उपजीजोज्वर तींकौलक्षणलिष्यते जुरहोय आवै सरीरको वर्ण औरसोहोय पेटमैं सूलहोयहियोदूषै वमन आवै भ्रमहोय भोजनमैंरुचिहोय नहीं अतिसार होयतौ कृमिसूं उपजीज्वरजाणिजे अथ ईंकोजतन लिष्यते पलासपापडौ नींबकीछालि सहजणाकी जड नागरमोथो देवदारु वायविडंग यां ओषद्यांनैं बराबरिले त्यांनै जौकूटकरि टंक १ कौकाढौदिन ७ देतौपेटकी कृमीदूरिहोय अरयौ ज्वरजाय १ अथ कालज्वरका लक्षणलिष्यते ज्वरकौवेगघणौ होय ऊर्ध्वस्वास होय सरीरकी कांति जातीरहै पसेव आवैसरीरसिथलहोजाय नाडीहाथ लागै नहीं. सारीइंद्रियांका धरम जातारहै तौ कालज्वरजाणिजे अथ ईंका जतनलि० गऊ पृथ्वीनैं आदिलै श्रद्धामाफिक दान कराजे ईश्वरकौ स्मरण कराइजे अर सन्निपातका जतनपाछैकह्याछैसो करिजे अथ ज्वरका दस १० उपद्रव छैसोलिषूंछूं तिसघणीलागै १ षासीहोय २ सासहोय ३ हिचकीहोय ४ वमनहोय ५ अतिसारहोय ६ अरुचिहोय ७ बंधकुष्ठहोय ८ आफरोहोय ९ मूर्छाहोय १० उपद्रवांकौलक्षणलि० प्रथम ज्वरहोयपाछैओररोग होय वोजुरको जतन करि वादेनहीं ईनै उपद्रवकहिजैतिसतौज्वरकी स्त्रीछै. सास षास ज्वरकाबेटाछै हिचकी अर वमन ज्वरकीबेटीछै अतिसार ज्वरकौभाईछै अरुचि ज्वरकीवहिणछै. बंधकुष्ठ ज्वरकौ

न.टी. रसादिकधातु भस्म सार अभ्रक पारद इत्यादिकछैसोज्यूंज्यूं जूनाहोयत्यूंत्यूं अधिकवीर्यवान पराक्रमिहोयछै अरगुणकीवृद्धि करबावाला होयछै. सोवैपदार्थछै ज्यांकासंग्रह करणायोग्यछै या श्रीधरकीविनंतीछै.

भाणिजोंछै आफरो ज्वरकोसुसरोछै मूर्छा ज्वरकीवांदीछै यांमैजो बलवानहोय तीकों जतनकीजे अथज्वर अतिसार येदोन्यूं एकठां होय तींकोजतनलि० सूंठि अतीस नागरमोथो चिरायतो गिलवै कुडाकीछालि यांनें बराबरिलै यांनें जौकूटकरि टंक २ कौकाढो रोजीनादिन ७ देतो योदूरिहोय १ अथवा पीपलि पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठि बिलकीगिरि नागरमोथो चिरायतो कुडाकीछालि इंद्रजवयांसारानें बराबरिलै यानै जौकूटकरि टंक २ कौकाढो करिदिन ७ लेतो ज्वरातिसारनैंहिचकीनें मुषसोसनें वमननें स्वासनें षास नें यांसाराहीनें योदूरिकरैछै २

अथ ज्वरमैंतिसघणीहोयतींको जतन लिष्यते धणों नागरमोथो पित्तपापडो यानें जौकूटकरि टंक २ कौकाढौदिन ३ देतौतिस दाह अतिसार दूरिहोय ३ अथवा वडका अंकुर चावलांकीषील कमलगट्टा यांनें बराबरिलै त्यांनैमिहीवांटि सहतमैं गोलीकरै गोली १ मूंढामैराषै तौतिसदूरिहोय ४ अथ ज्वरमैंषास होयतींको जतनलि० पीपलि पीपलामूल सूंठि भाडंगी षैरसार कव्याली अरडूसो कुलिंजन बहेडा यानै बराबरि टंक १ कौकाढौदिन ७ देतौ जुरकोषासजाय १ अथ जुरमैंस्वासहोयतींको जतनलि० सूंठि मिरचि पीपलि मोथौ काकडासींगी भाडंगी पुहकरमूल येबराबरिलै यांकौटंक १ कौकाढौदिन ७ देतौ जुरकोसास दूरिहोय १ अथ ज्वरमैंहिचकीहोयतींको जतनलिष्यते जलमैंसींधोल्लूणनै मिहीवांटि तींको नासदेयतौहिचकी दूरिहोय १ अथवा मौरकाचंदवाकीराष अरपीपलि सहतमैं चटावै तो हिचकी अर वमनदूरि होय २ अथवा जुरमैं वमनहोय तींकौजतनलिष्यते गिलवैटंक १ कौकाढौ सहतमै

---

* रोगिनैंरातिमैंतो दाहहोय भयलागै दिनमैंतोसीतलहोय समाधानीरहै कंठमैंतोकफबोलै मूंढाको वर्णजातोरहै लालनेत्रहोजाय जिव्हाकालीकठिणहोजाय नाडीतोमंदतेजीचालै जरां वैद्य हैसोरोगीनैंरामनामकीऔषदि देवै और औषदीबीकरै. स्वासजितै आसछै.

मिलाय देतौ ज्वरको वमनदूरिहोय १ अथवा माषीकीवींटरली २ सहतमैं चटावैतौछर्दिदूरिहोय २ अथवा चावलांकीषील पीपलि सहतमैं चटावैतौ छर्दिदूरिहोय ३ अथज्वरमैंमूर्छा होय तींकौ जतन लि० किरमालाकीगिरि दाष पित्तपापडो हरडैकीछालि यांकौ काढौ टंक २ कौकरिदेतौ मूर्छादूरिहोय १ अथ जुरमैं बंधकुष्ठ होय अर आफरौ होय तींकौ जतनलि० साबणकीवातिकरि गुदामैंमे लैतौ बंधकुष्ठ अर आफरौ दोन्यूदूरिहोय १ अथ ज्वरमैं मुषसो सहोय आवै अरजीभकौविरसपणौ होय तींकौ जतन लिष्यते नि श्रीअरदाड्यूंकाबीजांका कुरलाकरै अथवा दाषअर दाड्यूंका बीजांका कुरलाकरैतौ मुषसोस अरजीभकौ विरस पणौ दूरिहोय १ अर जुरमैं नींद जातीरहै तींका आवाकौ जतनलि० आलूबुषारौ १ सेकी भांगिरती १ सहतमैं चटावै तौ नींदआवै अर अतिसार संग्रहणीदूरिहोय. भूष लागै १ अथवा पींपलामूल टंक १ गुडमै षायतौनींद मुकर आवै २ अथवा अरंडकोतेल अर अलसीकोतेल येदोन्यूं कांसीकी थालीमैं घासिंईकौ अंजन करैतौ नींदमुकर आवै ३ अथ ज्वरऊतरिगईहोय तींकौ लक्षण जतनलि० सरीर सारोहलकौहोजाय मस्तकमैं षुजालि आवै होटामै पापरी होंय सर्वइंद्रियांआपका विसयनैं ग्रहण करिवालागिजाय सरीरकीसारी व्यथा जातीरहै सारासरीरमैं पसेव आजाय भूषघणीलागै छींक आवै मलकीप्रवर्तिहोय येलक्षणहोय तदिज्वरनिश्चैदूरि हुवौजानि

न. टी. ज्वरका कारणमैं जो उपद्रव होयछैसो दसप्रकारकोछै. सोवैउपद्रवरूपी कुटुंबछै जीसन्निपातकै सो वोसन्निपातनामज्वरछै कुटुंबसहितसोसर्वरोगांको अरसर्वज्वरांको राजाछै. सोवैराजाकास्वभावमुजब उपाव करणो.

अथवा ज्यांकासरीरमाहसौं ज्वरकीनिवृत्तिहुई होय ज्यांका सुलक्षणग्रंथमैं यथार्थलिष्याछै. सोमनुष्यांकाहितकारकछै. परंतु जोमनुष्यमिथ्याआहारव्यवहारसौंपूरीनिगाराषसीसोसुषी होसी. कुपथ्यसौंतोपाछोउथलसी.

येस्याणौ पुरुष दूरिहुवापाछेहेही अतनी वस्तकरैनहीं बलसरीरमैं वापरे जबतांई अरपथ्यमैरहे मैथुन व्यायाम बोजउठावौ घणो षावौ यांनैआदिलेर येतीवस्तकरैनहीं इतिश्रीआठौ ज्वरकीउत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्णम् इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्र० सर्वज्वरकीउत्पत्ति अर सर्व ज्वरलक्षण अरसर्व ज्वरकामुष्य मुष्य जतननिरूपणंनामद्वितीयस्तरंगःसमाप्तः २

अथअतिसाररोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनलि० इतनीवस्तांसूमनुष्यांकै अतिसारकौ रोगपैदा होयछे. भारीवस्त मैंदाउगैरैकाषावासूं घणीचीकणी वस्त काषावासूं लूषीवस्तकाषावासूं गरमवस्तकाषावासूं पतली सीतल वस्त काषावासूंविरुद्धवस्तकाषावासूंभोजनऊपर भोजनकरिवासूं विषकाषावासूं मलकीबाधाकारोकिवासूं इतनी वस्तांसूं मनुष्यांकैअतिसारकौरोग पैदाहोयछे. अथअतिसारकौस्वरूपलि० मनुष्यांकासरीरमैं यांकुपथ्यांसूं मल धातवधै तदिउदरकी अग्निनैं सांतिकरैतदिऔजलहैसौविष्टासूंमिलिपवनकौ मार्यौ थकौ गुदाका मारगसूंपतलौमल नीचेकूं घणौचलैतीनैंअतिसाररोग कहिजैछे. सोअतिसाररोगछे ६ प्रकारकौछे. एकतौवायकौ १ पित्तकौ २ कफकौ ३ सन्निपातकौ ४ सौचकौ ५ आमकौ ६ अथअतिसारकौ पूर्वरूपलि० प्रथमहियानाभिगुदाउदरपेडूयांमैंपीडाहोय अंगमैं फूटणीहोय गुदाकौपवनरुकिजाय बंधकुष्टहोय आवै आफरौहोय अन्नपचैनहीं तदिजाणिजेमनुष्यकैअतिसारहोसी अथवायकाअतिसारकौ लक्षणलिष्यते क्यूंयेक ललाईनैंलीयांमलहोय अर मलमैं झागमिल्याहोय मललूषौहोय अर थोडौथोडौ वारंवारजाय अर आमसूंमिल्यौथकौ मलजाय अर मलजातां पेडूमैं पीडाहोय

न. टी. ज्वरका अंतमैं अतिसाररोगकी प्रवर्तिलिषीछै सोवैकोपूर्वरूप अर मिथ्याअहार व्यवहारसौं ईरोगकी उतपत्ति होयछै. सोभी अरनिदान अर जतन लिष्याछै सोमनुष्यांका वाय, पित्त, कफ, कोपकी प्राप्तिहुवासौं होयछै.

तौवायकौ अतिसारजाणिजै अथ वायका अतिसारका जतनलि०
वच अतीस नागरमोथो इंद्रजव सूंठि यांनैबराबरिलै त्यांनै जौकू
टकरि टंक २ कौ काढौदिन ७ देतौवायको अतिसार दूरिहोय अ
थवाइंद्रजव नागरमोथो लौदवीलकीगिरि आंवकीगुठली धावड्या
काफूल यांनै बराबरिलै त्यांनैमिहीवांटि चूर्णकरिटंक २ भैसिकी
छाछिमैदिन ७ देतौ वायकौ अतिसारदूरिहोय २ अथ पित्तकाअ
तिसारकौलक्षणलि० मलपीलौहोय जाय अरलाल अरहर्‍यौ अ
र दुर्गंधनैलीयां मल जाय अर पतलौजाय अर गुदापकिजाय
सरीरमै पसेव आवै तिस लागैसरीरमैदाह होय मूर्छाहोय येलक्ष
णजीमै होय तीनैं पित्तको अतिसारकहजे २

अथ पित्तकाअतिसारकौ जतनलि० बीलकीगिर इंद्रजव नागर
मोथौ नेत्रवालौ अतीस यांनै जौकूटकरिटंक २ कौकाढौ दिन ८ देतौ
पित्तको अतिसार जाय अथवा रसोत अतीस इंद्रजव धावड्याका
फूल सूंठि ये बराबरिलै त्यांकौमिहीचूर्णकरि चावलांका पाणीसूं टंक
२ तीमैं सहतमिलाय दिन ७ लेतौ भयंकर भी पित्तकौ अतिसार
जाय२ अथवा बीलकीगिर नेत्रवालो मोथो इंद्रजव अतीस यांऔष
ध्यानैं लेतींकौकाढौ टंक २ कौदिन ७ करिदेतौ पित्तको अतिसार जा
य ३ अर पित्तअतिसारको रक्तातिसारभी भेदछै जोघणीगरम वस्त
षाईहोय तींकै पित्तवधै वेकौ लोहीविगडै तदिवेंका लोहीमैंमिल्यौ
मल उतरै तदिवानैं रक्तातिसार कहैछै अथ रक्तातिसारकौ जतन
लि० कुडाकीछाल दाड्यूंकाछ्योंडा यां दोन्यानैं टकाभरिलै त्यांकौ
काढौकरि काढामै टंक ५ सहत मिलाय दिन ७ लेतौ रक्तातिसार

* अतिसारनै अनाररसबी-योग्यछैसोलिषूंछूं जूनूअमलतोलो १ जायफल तोलो १ जाव
त्री तोलो १ पीपलामूल तोलो १ मिसरी तोला ४ यांऔषधांनै कूटबारीककरै. पाछैकाची
दाढ्यूंका फलमै भरै कपडामाटीदेकर अगनमैं पचावै पाछै काढकर षरलकरै गोली बोरप्र
माण करै गोली १ सीतल जलसूं देतौ अतिसार जायछै.

जाय १ अथवाकुडाकीछाल अतीस मोथो नेत्रवालो लोद रक्तचंद
न धावड्याकाफूल दाड्यूंकाछोडा पाछेयांनें बराबरिले पाछे यानें
जौकूटकरिटंक २ कौकाढोकरितीमे टंक २ सहत नाषिदिन ७ देतो
रक्तातिसारनें दाह मलसंयुक्तनैंयोदूरि करेछे २ अथवा सुपेदचंदन
टंक १ मिहीवांटि तीमें सहतटंक २ मिश्रीटंक २ सूं दिन ८ चाटैतो
रक्तातिसारजाय ३ अथवामीठीदाडमकोपुटपाकदे सहतमिलायचा
टैतौरक्तातिसार जाय ४ अथवा बकरीको दूध माषन सहतमिश्री
येसारीमिलायषायतो रक्तातिसार जाय बंध होय ५ अथगुदापकि
गईहोय तींकोजतनलि० पटोल महलोठी महुवो यांनें औटायपा
छे ठंडो करि वेपाणीसूं धोवैतो गुदाको पाक आछ्योहोय अथवा ब
करीका दूधमें सहत मिश्रीमिलाय वेसूंधोवैतो गुदाको पाक आछ्यो
होय २ अथवा गोहाका चूनमें घृतमिलय पाणीसूं ओसणि गरम
करवेसूंसुहावतो सुहावतो सेकै तो गुदाको पाक आछ्योहोय ३
अथ कफातिसारकालक्षणलि० जींकेमलचीकणो अरसुपेद अरजा
डो अर दुर्गंधनेंलीयां अरसीतल अरथोडी पीडानेंलीयां जाय अर
सरीरभार्‍यो रहे येजीमें लक्षणहोय तीनें श्लेष्मातिसार कहजे १ अ
थ श्लेष्मातिसारको जतन लिष्यते कफातिसार वालानें दोयचार लं
घन कराजे के मूंगाको थोडो पथ्य दीजे चव्य अतीस कूठवीलकी
गिरि सूंठि कुडाकी छालि तजयांनें जोकूटकरि टंक २ कोकाढोदिन
७ देतो श्लेष्मातिसार जाय १ अथवा सेकीहींग संचरलूण सूंठि
कालीमिरचि पीपलि अतीस येबराबरिले त्यांकोचूर्णकरिटंक १
दिन ७ लेतोश्लेष्मातिसारजाय अथसन्निपातका अतिसारको लक्ष
णलि० जींको सूरकामांस सिरसोमलहोय अर जींमलमें अने

न. टी. पुटपाकलिष्योछैसो दाडिमहरी मिठीलेकरऊंकैऊपर आमजामूणकापानेंलपेटक
र आलावस्त्रमें लपेटै. पाछै वेकैमृत्तिकासौ गोली करै पाछै अग्निछाणाकीमेंधरै. वोगोलोला
ल होय जदांकाढकरतीकोरस निचोयलेजीनैं दाडको पुटपाक कहेछै.

क रूपसोदीषै अर वेपुरसकै नेत्रांमैं तंद्रा होय तिसहोय मुष सो सहोय भ्रमहोय मोहहोय अरयौ बालककै वृद्धकै स्त्रीकै होयतौ असाध्यजाणिजे १ अथ ईंका जतनलिष्यते पींपलि पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठि षरैटी बीलकींगिरि गिलवै मोथौ पाठ चिरायतौ कुडाकी छालि इंद्रजव यांनै जौकूटकरि टंक २ कौकाढौ करिदिनद श १० देतौसन्निपातकौ अतिसार दूरिहोय १ अथवा जांगीहरडै सूंठि मोथौ येबराबरिलै त्यानैं मिहींवांटिपुराणागुडमैंटंक २ दिन ७ षायतौत्रिदोषकौ अतिसारदूरिहोय २ अथवा कुडाकी छालले तीं कौ पुटपाककरि रसकाढै पाछै वेरसमैं सहत मिलावै टंक ५ पाछै दिन १० लेतौ सन्निपातकौअतिसारजाय ३ अथसौचका अतिसा रकौ लक्षणलि० जीं पुरुषकी पुत्रमित्र स्त्रीधन यांका नासका सौच सूं उदरकी अग्निहैसौमंदहोय शरीरकौ वाहिरलौतेजहैसौउदरमैं जाय पाछै रक्तविगाडैछै पाछै ओरक्तविष्ठासूंभिलिअथवानहिमि ल्यौ औहीगुदाकी द्वारनीकलै चिरमिसिरीकौतीनैंसोकातिसार क हिजे यो दोहरौजाय अर ईसीतरहही कहींतरैकाभयसूंभी उपज्यौ सौ भयातिसारभीजाणिलीज्यौ अथ सौकातिसार अरभयाति सा रकौ जतनलि० ज्योवायका अति सारकौ जतनछै सोही जाणिली ज्यौ अथ आमातिसारको लक्षणलिष्यते जींपुरसकै प्रथम भोज नको अजीर्ण होय पाछै ओगरिष्ठवस्तषाय तदि वेकै वाय पित्त क फ हैसो कोठामैं जाय धातका समूहनै अर मलनैं विगाडि अर वें मलनैं सूलसंयुक्त दुर्गंधिनैलीयां जीमैं अनेक वर्ण इसा मलनैं गुदा द्वारा काढै तीनै वैद्य आमातिसार कहैछै अर मलहैसो जलमैंतिरै आंव हैसो जलमैं डूबिजाय अर आंव दुर्गंधिनैंलीयां अरसुपेदा

न. टी. अतिसारसर्वजातकोछै जीमैत्रिदोषको अतिसारमहादुष्टछै. अर आमातिसारभी व डोप्रबलछै ज्यांका कारणसमझकर उपचारकरै. अर साधारण अतिसारनैंवारक्तातिसारनैं तौ धणियांपंचक बलवानछै.

ईनें लीयां.अरचिकटाईनेंलीयां होयछे. योईकौ लक्षणछे अथ आमातिसारकौजतनलि० धणौं सूंठि वीलकीगिरि नागरमोथो नेत्रवालौ यांनें बराबरिलै त्यांनें जौकूटकरि टंक २ कौ काढौ करिदिन ७ देतौ रोग माफिक दिन १० तथा १५ देतौ आमातिसारनें सूलनेंयोदूरिकरेंछे योधणापंचकछे १ अथवा जांगीहरडे मोथो सूंठि अतीस दारुहलद ये बराबरिलै त्यांनें जौकूटकरिटंक २ कौ काढौ दिन ७ देतौ आमातिसार दूरिहोय २ अथवा जांगी हरडै अतीस सेंकीहींगसंचरलूण सींधोलूण यानें बराबरिलै त्यांनेंमिहीपीसिटंक २ गरमपाणीसूं लेतौ आमातिसार दूरिहोय ३ अथ पक्कातिसारको जतनलि० लोद धावड्याकाफूल, वीलकीगिरि मोथो आंबकीगुठली इंद्रजव येबराबरिलै त्यांनेंमिहीपीसिटंक २ भैंसिकीछाछमें लेतौ पक्कातिसार दूरिहोय. ४ अथवा अजमोद मोचरस सूंठि धावड्याकाफूल जामुणकीगुठली आंबकी गुठली यांनै बराबरिलै त्यांनैमिहीपीसिटंक २ गऊकीछाछि मैंलेतो पक्कअतिसारजाय यौ लघुगंगाधरचूर्णछे ५ अथ सोजातिसारकौ जतनलिष्यते साठीकीजड इंद्रजव पाठ वायविडंग अतीस नागरमोथो कालीमिरचि यांनेंबराबरिलै त्यांनें कूटकरि टंक २ कौकाढौकरिदिन ७ देतौ सोजातिसार जाय १ अथ अतिसारमैं छादणी होय तींकौ जतनलिष्यते आंबकीगुठली बीलकीगिरि येदोन्यूं टंक २ लेतौ त्यांकौ काढौकरि काढामें सहतटंक २ मिश्रीटंक २ मिलायदिन ७ लेतौ अतिसारछर्दिसमेत दूरिहोय. १ अथवासेक्यामूंग चावलांकीषील यां दोन्यांनें औटाय तीमें सहतमिलाय दिन ५ पीवैतौ छर्दिअतिसार दाहज्वर दूरिहोय २ अथ अतिसारकौ भेद मोडानीवाहीछे तींकौ लक्षण

न. टी. जीं अतिसारमैं जोकोईभी कारणासौं उपद्रवहोय अथवाफैटोषडो होयतौवैकीपूरीनिगाराषकरउपावकरणो. कारण जोउपद्रवकांइकारणसौं हुवोछै ज्यांकीसमाधानी वैद्यनै प्रथमकरणी. पछै ओरउपाव करणो.

लिष्यते कुपथ्यका करिवावालो जोपुरस तींकै वाय वध्यो थकौ कफसैं मिलि मौडानीवाहिनैं करैछै. वा मौडानिवाही पुरसकै स्याय तमैं मरोडो चालै थोडा अथवा घणां मलनैं गुदाद्वारा काढैछै. तीनैं मोडानिवाहि कहिजे सो मौडानिवाहि च्यार प्रकारकीछै. वायकी १ पित्तकी २ कफकी ३ लोहीकी ४ जीमैं पीडा घणीचालै मल उतरै तीनैं वायकी कहिजे जीमैं दाहघणौहोय तीनैं पित्तकी कहिजे. जीमैं कफसूं मिल्यौ मल जाय तीनैं कफकी कहिजे. अथ यां च्यारुंहीका जतन लिष्यते वीलकीगिरि लोद कालीमिरचि येतीन्यूं पईसा पइसा भरिलै पाछैयांनै मिही वांटि टंक १ सहतमैं चाटै तौ मौडानिवाही दूरिहोय १ अथवा धावड्याका फूल टंक २ यांनै मिही वांटि दहीकैसाथि दिन ७ षायतौ मौडानिवाहीजाय २ अथवा कैथकौ रस टंक ५ सहतकै साथि दिन ७ षायतौमौडानिवाही जाय ३ अथवा लोद टंक २ दहीकैसाथि दिन ७ षायतौ मौडानिवाही जाय ४ येसाराहीलक्षण अर जतन भावप्रकासमैं कह्याछै अथ आमातिसारका और जतन लिष्यते हरडैकीछालि मिहीवांटि टंक २ सहतसूं दिन ५ षायतौ आमातिसार दूरि होय १ अथवा भांगराको रस टंक ५ दहीकै साथि दिन ७ षायतौ सर्व प्रकारका अतिसारानैं दूरिकरै. २ अथवा रालटंक २ मिश्रीटंक १० मिलाय ईतौलदिन १० लेइतौ घणाहीदिनाकौ भी अतिसार जाय ३ अथवा वीलकीगिरि टंक २ बकरीकादूधकैसाथिदिन ७ पीवै तौ रक्तातिसार जाय ४ ये वैद्यविनोदमैं लिष्याछै. अथवा धणौ सूंठि पीपलि सींधोलूण अजमोद सेकीहींग जीरौ यांनै बराबरिलै यांनै मिही वां

* अतिसारका रोगनैं वृद्धगंगाधर चूर्णबी देवैछै सोलिषूंछूं. नागरमोथो. टेटू. सूंठि. धावडी फूल. लोद. कसबालो. बीलगिरि. मोचरस. पाठ. इंद्रजव. कुडाकी छाल. आंबकी गुठली. अतीस. लजालू. यहचवधाऔषधको चूर्णछैसो चावलांका धोयापाणीमैं सहतमिलाय करलैवैतौ अतिसारजाय. योवृद्धगंगाधर चूर्णछैसो संग्रहणीनैंबी आछी करैछै.

टि दहीका मठामें टंक २ रोजलेतो सारा अतिसारसूल आम दूरिहोय भूषलागे रुचिहोय योवृंदमैंलिष्योछे ५ अथवासूंठिनेजलसूंमिही पीस वेको गोलोकरि गोलानें अरंडकापानासूं लपेट सूत बांधि पाछेवेऊपरिमाटीलपेटमधुरी आंचसूं पकावे पाछेमाटीउगेरे सबदूरिकरि सूंठिकाढिले पाछेवेनेंठंडीकरिटंक २ सहतसूं दिन ७ षायतो आमअतिसारजाय ६ अथवा येकभागअफीम दोयभाग हिंगलू तीनभाग लवंग च्यारिभाग मोचरस तीनभागमिश्रीयांनेंमिहीवांटि रती १ तथा २ साठ्याचावलांकापाणीमें अथवाछाछिके साथिलेतो भयंकरभीअतिसारजाय ७ अथवा नागरमोथो मोचरस लोद धावड्याकाफूलबीलकीगिरि इंद्रजव अफीमसोध्योपारो सोध्यो गंधक यांनेंबराबरीले प्रथम पारागंधककी षरलमें कजलीकरे पाछे येसारी औषधि मिहीवांटियेकजलीमेंमिलावे. पाछे ईनेरती ३ छाछिसूंदिन १० लेतो अतिसारने मोडानिवाहीनें संग्रहणीनें सारांहीनेंयोगंगाधररसदूरिकरेछे ८

अथवा सूंठि जायफल अफीम काचीदाडमकागुला ये सारा बराबरीलेपाछेसर्वत्र येकठाकरि काचीदाडुंमेंभरेपाछेवेंको पुटपाक करि पाछेवेंकीगोली चिरमीप्रमाणबांधे पाछेगोली १ गऊकीछाछिसूंदिन ७देतो पक्कातिसारनें दूरिकरे. ९ अथवा अमलनें ठीकरामें मधुरीआंचसूं सेकिके पाछे अनुमानमाफिकदेतोअतिसारनिश्चेदूरि होय १० अथवा जायफल लवंग धावड्याकाफूल वीलकीगिरि नागरमोथो सूंठि मोचरस हिंगलू अमल येसारी औषदि बराबरीले यांनेंनिपट मिहीवांटि छोंतराका पाणीसूं रती १ तथा २ कीगोली बांधे गोली १ चावलांका पाणीसूं अथवा छाछीसूंदिन ७ लेतोनिश्चे

न. टी. घणाग्रहस्थ पुन्यवान होयछैसोई अतिसारका रोगीनै पुन्यऔषधि देवैछैसोवा औषधिलि० नारेलकोमाहलो गोलो लेकरवेमैं छिद्रकरकै अफीमचोषो तोला २ अर अनारकाफलकोरसतोला २ वेमैंभरकरऊपर आटाकी वाटी बणावै.

सरब अतिसारजाय ११ अथवा जायफल छैंवारो अफीम येतीन्यो बराबरिलैत्यानैंपानाकारसमैं रती १ प्रमाणकीगोळीबांधैपाछैगोली १ छाछिसूंदिन ७ देतौ भयंकरभी अतिसार दूरिहोय १२ अथजीं कोंअतिसार होयसो अतनीवस्तकरैनहीं. नयोअन्न, गरम वस्त, भाख्योचीकणों भोजन तावडोषेद मैथुन सनान चिंता येअतिसारवा लोकरैनहीं येवैद्यविनोदमैंलिष्याछै १३ अथ अतिसारको असाध्य लक्षणलि० सूरका मांससिरीसो मलहोय अरतिस दाहअरुचि सा सहिचकीपसवाडामैंसूल मूर्छा अरकोईवातमैंमनलागैनहीं येजीमैं लक्षण अरगुदापकिजाय अग्निजींकीजातीरहै. तिसजीनैंघणीलागै अरज्वरभीरहै अर मूत्रबंधहोय अरसरीरको बलजातो रहैयेजींअ तिसारमैं लक्षणहोय सोपुरसमरिजाय अथ अतिसारजींको जातो रह्योहोय तींको लक्षणलिष्यते जींकै जंगल विनामूतऊतरै अरगुदा कोपवन आछीतरहसूंचलै. अर आछी भूषलागै अर कोठाहलको हुवोहोय येजीमैं लक्षणहोय तींकों अतिसारकोरोगदूरिहुवोजाणिजे इतिअतिसाररोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्णम् १

अथ संग्रहणीरोगकी उत्पति लक्षणजतनलि० प्रथमसंग्रहणी कीउत्पत्तिलि० प्रथम मनुष्यकों अतिसारहोयकरि ओ अतिसारतो जातोरहै. पाछै ओमनुष्यकुपथ्यकरै तदि अग्निमंदहोयसो अग्निमंद हुईथकी पुरसका उदरमैं रहती जो छठीकलाजींकोनामसंग्रहणीछै वाकला अग्निकोस्थानछै अन्नादिक जोपाइजेछै तीनैं वाग्रहणकरैछै सोवामंदाग्नि वेकलानैं विगाडैछैसोवाकलाविगाडिथकी काचा अन्ननैं तोग्रहणकरैछै. अरपाका अन्ननैं गुदाद्वारा काढैछै ईवास्तै वैद्यहैसो इरोगको नामसंग्रहणी कह्यो. ग्रहणी कलाकै अग्निहीकोबलछैसोवा

न. टी. पाछैवेचूनका लपेट्या आछ्यागोलानैंअग्निछाणाकीमैं काठो सेकै. अरफेरतो जाय. बलवादेवैनहींईसीरीतगोलो सेकै पाछैवै भोभरमैंभारदेपाछै ठंडो होयजदां काढलेवै पाछैवैषोपराकीचिटकीउनमानसौं पाणीमैंघसकर॰

कला अग्निनें दुष्ट करैछै अथ संग्रहणीरोगका लक्षणलिष्यते. प्रथम संग्रहणी च्यारप्रकारकीछै. येकतौ वायकी १ पित्तकी २ कफकी ३ सन्निपातकी ४ येवायपित्तकफहैसोघणांवध्याथकाकुपथ्यसूंवाग्रहणीकलाघणोषाय पाणि काचाही अन्ननें गुदाद्वारा काढैछै अथवा पक्याअन्ननें काढैतौभी पीडाचलाय काढैमलनें कदेकतो वंध्योमल जाय अर कदेकपतलोहीजाय योईसंग्रहणीरोगको लक्षणछै. अर अतिसारसंग्रहणीमैंयो भेदछै अतिसारवालोतो पतलौमलजाय अरसंग्रहणीवालो बंध्योमल पीडानैलीयांजाय १

अथवायकी संग्रहणीका उत्पत्तिसमेत लक्षणलि० जोपुरष वायल वस्तको घणो सेवनकरै अरमिथ्याविहार मैथुनादिक घणां करैतौं पुरसकै वायकुपित हुवोथको जठराग्निनैंविगाडि वायकि संग्रहणीनैं करैछै तींपुरसकै अन्नषायो दोहरोपचै अर वेंको कंठसूकै. भूषलागै तिसलागै कानामैं शब्दहोय अर पसवाडामैं जांघामैं पेडूमैं कांधामैं पीडाहोय अरकदेकविसूचिकाभीहोय हीयोदूषै शरीर दुबलोहोय जीभकोस्वाद जातोरहै मीठा उगैरेसारारसांका षावाकीइच्छारहै अर भोजनकस्योहोयसोपचिजायतदि आफरोहोय अर भोजनकरैतदि जीवचैनपावै अरपेटमैं गोलाकी फियाकीआसंका रहै अर मरोडो दुपनैलीयांथोडोसोझांगासमेत पवन सरतो थको वारवारमैं जंगल जाय अरजींकैषास सास भी होय. येजीमैं लक्षणहोय तीनैं वायकीसंग्रहणीकहिजे १ अथ वायकी संग्रहणीको जतनलि० सूंठि गिलवै नागरमोथो अतीस यांनैं बराबरिलै पाछै यांनै जौकूटकरि टंक २ को काढोदिन १५ देतौ आंवसमेत वायकी संग्रहणी जाय अर भूष वधै १ अथवा गऊकीछाछि तीमैं, सूंठि पीपलामूल पीप

न. टी. जीघस्यांहुवापाणीमैंसहतमासा २ नाषकरवोपाणीपावैईरीतवार ३ अथवा ९ वार पीवैतौ घणादिनाको अतिसार आराम होयछै. अरसंग्रहणीनैबीदेवैतौ फायदोकरैछै. परंतु चिटकी उनमानसौं देणी ज्यादानहींदेणी.

लि चित्रक चव्य येसारीबराबरिले तींको चूर्णकरि टंक २ रोजीना छाछिमें मिलाय योपीवे छाछिहीको षुवसेवनकरैतो वायकी संग्रह णीमुकरजाय २ अथवा सोध्योगंधक टंक २ पारोटंक १ यांदोन्यां की कजली करै पाछै सूंठिमासा १० मिरचिकाली टंक २ पीपलि मासा १० पांचूलूण मासा १० सेकी अजमोद टंक ५ सेकीहिंग टंक ५ सेक्यो सुहागो टंक ५ सेकीभांग पईसा ४ भर यांसारानैं मिहीपीसि पारागंधककी कजलीमैं मिलाय पाछै ईनैं दिन २ परल करै तदियो लाईचूर्ण होय पाछै ईनैं मासा २ तथा ४ गऊकीछाछिमैं देतो वायकी संग्रहणीनैं दूरिकरै अर मंदाग्निनैं अतिसारनैं ववासी रनैं पेटकी क्रमीनैं क्षयीरोगनैं यांरोगानैं योलाईचूर्ण दूरिकरैछै १ अथपित्तकी संग्रहणीकी उत्पत्ति अर लक्षण लिष्यते जोपुरष गरम वस्त प्रतिकालीउगैरे तीषीवस्त षाटी वस्तषारीवस्त घणीषाय तींकै पित्तदुष्टहोय पाछै ओदुष्टपित्त हैसो जठराग्निनैं बुझाय देवै तदि वेंकै काचाही मलनैं काढै नीलोपीलो पतला पाणीनैंलीयां अर वेनैं षाटीडकारआवै हियामैं कंठमैं दाहहोय अरुचिहोय तिस लागै ये जीमैं लक्षण होय तीनैं पित्तकी संग्रहणी जाणिजै. १ अथ पित्तकी संग्रहणीको जतन लिष्यते रसोत अतीस इंद्रजव तज धावड्याका फूल येसारी बराबरिलै यांको मिहीचूर्णकरि टंक २ गऊकी छाछिसूं अथवा सहतसूं अथवा चावलांका पाणीसूं दिन १५ लेतो पित्तकी संग्रहणीजाय. १ अथवा जायफल चित्रक सुपेदचंदन वायविडंग इलायची भीमसेनी कपूर वंसलोचन जीरो सूंठि कालीमिरचि पीप लि तगर पत्रज लवंग येसारी ओषदि बराबरिले पाछै यानैंमिही पीसि यांसूं दूणीं मिश्रीमिलावै अर सारी ओषदि बराबरिविनासे

---

* श्लोक ॥ ग्रहणीपंचधामतापृथग्दोषः सन्निपातात्तथाचामेनपंचमी ॥ अर्थ—संग्रहणीपांच प्रकारकीछै. जीमैं च्यारप्रकारतोमुष्यछै. ओरत्रिदोषकीसंन्निपातसंग्रहणीजीमैंआमसंग्रहणीछै. सोईको भेदछैजांकालक्षण आगैलिष्याछै.

की भांग ईमैमिलावै पाछै यांसारानैं मिहीपीसि मासा ४ तथा ६ गऊकी छाछिकैसाथि दिन १५ लेतौ पित्तकी संग्रहणीजाय २ ये वैद्य रहस्यमें लिष्याछै अथकफकी संग्रहणीकीउत्पत्तिलक्षण लि० भारीवस्त अति चीकणीवस्त सीतल वस्त जोषाय अरभोजन करिकै सोय जाय तींपुरसकै कफको कोपहोय तदि वेंकौं अन्नदोहरोपचै अरहीयोदूषै अर वेंकैछर्दिहोय अरोचकहोय मुषमीठोरहै षासी होय पीनसहोय पेटभार्योरहै मीठीडकार आवै स्त्रीप्यारी लागैनहीं आमसूंमिल्यौ मलजाय बलविनासरीरपुष्टदीषैआलस घणोआवै येजीमैं लक्षणहोय तीनैं कफकी संग्रहणीकहिजे. १

अथ कफकी संग्रहणीका जतनलिष्यते हरडैकीछालि पीपलि सूंठि चित्रक संचरलूण कालिमिरचि यांनै बराबरिले यांको मिहीं चूर्ण करि टंक २ रोजीना छाछसूं दिन १५ देतौ कफकी संग्रहणीजाय. १ अथसन्निपातकी संग्रणीको लक्षण लिष्यते जीमैंवाय पित्त कफका साराही लक्षणमिलैतीनैसन्निपातकी संग्रहणी कहीजे १ अथ सन्निपातकी संग्रहणीको जतनलि० बीलकीगिरि मोचरस नेत्रवालो नागरमोथो इंद्रजव कुडाकीछालि यांनै बराबरिले त्यांनैमिहीपीसि पाछै टंक २ बकरीकादूधमैंदिन २५ लेतौसन्निपातकी संग्रहणी जाय १ अथवा अनार दाणा टंक १ भर जीरोटंक १ भर धणौपईसा २५ भर सूंठिटका १ भर कालिमिरचिटका १ भरमिश्री टका ८ भर यांसारांनै मिहीवांटि टंक २ गऊकीछाछिमैं महिनो १ लेतौ सन्निपातकी संग्रहणीजाय अर आमातिसार पसवाडाकी पीडा अरुचि गोलाको आजार येसारा दूरिहोय २ अथवा पारो सोध्योगंधक सोध्योसींगीमुहरो सूंठि कालिमिरचि पीपलि सेक्यो सुहागो सार अ

न. टी. वसंतमालतीवाराजवसंत वावसंत वा. क्षुद्रवसंत ये च्यारप्रकारसौंयोरसहोयछैं. जीमैं स्वर्णमोतीं. यांकाकमजादा. सौं वोरसजुदा जुदानामयुक्त हुवोछै. जीमैंहिंगलू अरषपरचो तो याच्यारांमैहीपडैछै.

जमोद अमल येसारी बराबरिलै अरयांसाराकी बरावरिकी अभ्र कले पाछैयांसारानैंचित्रकका काढाका रसमैंदिन १ परलकरैपाछै कालीमिरचि प्रमाण गोली बांधै गोली १ रोजीनामहिना १ ताई षायतो संन्निपातकी संग्रहणीजाय ३ योअभ्रकगुटिकाछै. अथवा सोधीगंधक पारो अभ्रकहींगलू षार जायफल वीलकीगिरि मोचरस सोध्योसींगीमुहरो अतीस सूंठि कालीमिरचि पीपलि धावड्याका फूल घृतमैसेकि हरडैकीछालि कैथ अजमोद चित्रक अनारदाणा इंद्रजव धतूराकाबीज कणगज अफीम येसारीबराबरिलै प्रथमपा रागंधककी कजलीकरैपाछै ईकजलीमैं येओषदिमिहीवांटिमिलावै पाछै ईकीगोली मिरची प्रमाणबांधैछयौंतरांका रसमैं योग्रहणी क पाट रसछै ईकीगोली १ देतोसन्निपातकी संग्रहणीनैं सूलनैंअति सारनैं विसूचिकानैं यांसारारोगानैं योदूरिकरैदिन १५ सेवन कर्‍यां येवैद्यविनोदमैंलिष्याछै ४ अथ त्रिदोषकीसंग्रहणीकोभेद आम वातकीसंग्रहणीतींकोलक्षणलि० पतलो सुपेद चीकणोमलजाय क टीमैंपीडाचालै आंवनैंलीयां मलऊतरैवावघणोहोय पीडघणीहोय कदेआछयोदीषैपाछैपंद्रवैदिन महिनामैं फेरिहोय आवे अथवा रो जीनाही योरोगरहै आंतबोलवोकरै आलस आवोकरैसरीरदुबलो होजाय पेटमैं पीडरहवो करैदिनमैरहैरातिनै आछयो होय येजीमैं लक्षणहोय तीनैं आमवातकी संग्रहणी कहिजे योभी असाध्यहीछै ईकोजतन अरसन्निपातकीसंग्रहणी काजतन येकहीछै. अथसंग्रह णीकोभेदघटीयंत्रछैतींकालक्षणलि० सरीर सूनोरहै पसवाडामैंसूल चालै पेटबोलवो करै अर संग्रहणीका लक्षण छै सो होय ईनैंघटि यंत्रकहिजे योभी असाध्यछै. ओर अतिसारको असाध्यपाछैलि

न. टी. यासंग्रहणीरोगपरषपरचो बलवानछैजीसूं वसंतमुष्यछै. ओरएकग्रहस्थरतलाम नामनगरमैं आगैछो. जींकैनेमइस्योछो. ईषपरचानैं शुद्धकर करईकैतीजाराकारसकापुटएक हजारदेकरपाछैंपीसकपडछाणकरपुण्यलेषै देवैसोसंग्रहणीजायछै.

प्योछै सोई संग्रहणीकावेहीजाणिलीज्यो अर अतिसारका आ
छ्या आछ्या जतनपाछैलिष्याछै सोईकाभी वेहीजाणिलीज्यो अथ
संग्रहणीका ओरविसेस जतनलि० कैथकाभाग ८ मिश्री ६ भाग
अजमोद ३ भाग पीपलि ३ भाग बीलकीगिरि ३ भाग. धावड्या
का फूल ३ भाग दाड्यूंकागुलांका ३ भाग डासस्याका ३ भाग
संचरलूण १ भाग नागकेशरि १ भाग धणों १ भाग तज १ भाग
पत्रज १ भाग मिरचि १ भाग अजवायण १ भाग पीपलामूल १
भाग नेत्रवालो १ भाग इलायची १ भाग. यांसारानैमिहीवांटिग
ऊकीछाछिमैं टंक २ लेतौसंग्रहणीनैं अतिसारनैं गोलानैं थांसारांनै
योकपित्थाष्टक चूर्णदूरिकरैछै. अथसंग्रहणीं रोगवालो इतनी वस्त
षायनहीं सोलि० भारीवस्त आंवनहीं करै इसीवस्त भूषबंधकरै
इसीवस्त और अतिसारमैं वरजीछै वस्त सो नहींकरै अर ज्यांव
स्तांसूं भूषवधैसो षायतौ संग्रहणीजाय. ५ इति संग्रहणीरोगकी
उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम् १

अथववासीर रोगकीउत्पत्तिलक्षण जतनलि० प्रथमववासीरकीउ
त्पत्तिलिष्यते मनुष्यकै गुदाहैसो संषकी माहिली नाभिकीतरह आं
टाचारिआंगुलीका तीनआंटाछै. येक ऊपरलो आंटो १ येकवीचर
लो आंटो येकवेंकै नीचलोआंटो ३ ऊपरला आंटाकानाम प्रवा
हिनी. सोतो मलपवनउगेरैवारैकाढैवीचरलो आंटो मलपवन उ
गेरैनैंछुटायदे सारो तीसरो नीचरलो आंटो वांछोड्यां पछैगुदानैं
ज्यूंकीज्यूं ढकिदे यांतीन्यां आंटामैं ववासीर पैदाहोयछै. योववा
सीरको स्थानछै. पहला आंटामैं ववासीर होयसो तो साध्य वीच
रलोमैं होयसोकष्टसाध्य अरमाहीलामैं होयसो असाध्यछै सोव

न. टी. संग्रहणीरोगनैपथ्यलि० मूंग. मसूर. तूर. गाय. छालीकोदूध. निद्राउलटी कडा
को जुनाचावल. माषन. दहीं. छाछ. अफीम इ० कुपथ्यलि० रक्तश्राव. जागरण. स्त्रीसंग
नस्य. अंजन. गहूं. चीणा. मोठ. बाजरी. चवला. औरकुपथ्यचीजइत्यादि.

वासीर रोग ६ प्रकारकोछै. येकतो वायकी १ पित्तकी २ कफकी ३ सन्निपातकी ४ लोहीकी ५ येक सरीरकीलारही उपजै जकी ६ अथवायलवस्त अथवा गरमवस्त अथवा कफकारीचीकणीमीठी वस्तु जोपुरुष येघणीषाय अरवाय पित्त कफनै करवावाला मिथ्या अहार करै मिथ्याविहार करै त्यांदोन्यामिथ्या अहार अरमिथ्या विहार करिकै कोपकूं प्राप्तिहुवोजो वायपित्त कफ येतीन्यूं दोषसो गुदाकी तीन्यू आंवल्या ऊपरि त्वचाअर मांस अरमेद यांनै वि गाडि नानाप्रकारका मांसका अंकुरानै मस्साका आकार करि गु दाकै ऊपरि करैछै. तीनै वैद्यहैसो ववासीर कहैछै. सोछप्रकारकीं ईनै लौकीकमैं दोय प्रकारकी कहैछै येक षूनी १ अर २ बादी. षूनीतोजीमैं घणों लोहीजाय १ अर बादीजीमैं लोहीजाय नहीं अर पीडचिमीचिमी अर षुजाल उगैरैजींमैहोय ये दोन्यूवां छ वां हीका भेदछै. अथसारी ववासीरांको पूर्वरूपलिष्यते अन्नकोपरि पाक आछी तरह होयनहीं अन्नकूषिमैंहीरहै बंधकोष्ठ होय अर अग्निमंद होजाय डकारघणीआवै सरीर कृसहोजाय कूषिमैं आ फरोहोय अंगमैपीडरहै येजीमैं लक्षण होय तदि जाणिजै ईपुरस कै ववासीरहोसी. अथवायकी बवासीरको लक्षणलि० जींकीगुदा का मस्साहैसो सूका अरचिमीचिमीनैंलीयां होय अर काला अर ललाईनैलीयां अरषरधरा अर कठोर अरवांकातीषा फाटा मूंढा काइसा गुदाऊपरिम स्सा होय अर छोटा बोरसरीसा कुपास्यासं रीसा अथवा सरस्यूंसिरीसा अथवा कदंबकी फूलसिरीसा मस्सा होय अर जींकै मथवाय होय अर पसवाडामैं कांधामै कटीमैं जं घामैं पेडूमैं यांमैं घणीव्यथा होय अर छींक अर डकार आवै नहीं

---

* अथ गंधक शुद्धकरवाकीविधिछै. आंवलाषार. गंधक चोषोलेणो. जीनैंगावाघृतमैं ग रम करणो. कुडछीमैं. पछैगावादूधमैंऊंधायदेणो. घृतकीसाथमैं गंधक रसपतलो होयजाय. ज दांथोडी आंचसूं करणो. घणी आंचसूं कालोपडैछै. इसी भांति शुद्धकरणो.

हीयोदूषै. भूष लागैनहीं षासस्वास अग्निमंद कर्णमै शब्द भ्रमये भीहोय गोलोफियो उदरको रोगये जीमैं लक्षण होय तदि वायकी ववासीर जाणिजे अथ वायकी ववासीरको जतनलि० जमीकंदनैं माटीसूं लपेटि भाडमैं षूब भडीतोकरि तेलसूं अथवाघृतसूं लपेटि टकायेक भरि रोजीनादिन ३१ षायतौ वायकी ववासीर मुकरदूरिहोय यो भावप्रकासमैं छै १

अथवा आककानवापानामैं पाचूंलूण अनुमानमाफिकलगाय तेल अरषटाई और लगाय वांपानानैं दग्धकरि वांकीराषकरि पाछै वाराष टंक सवा १। तथा टंक २॥ गरमपाणीसूं दिन १५ देतौ वायकीववासीरजाय २ ये वैद्यविनोदमैंलिष्याछै अथवा गऊकी छाछिमैंसींधोलूण अनुमानमाफिकघालि ईंछाछिकोआछीतरैंसूं घणा दिनतांईं सेवनकरैतौ वायकी ववासीरजाय अरसरीरघणोजाडोरहै योभावप्रकासमैलिष्याछै ३ अथवाहरडैकीछालिटंक ५ भर काली मिरची टंक १ भरपीपलामूल टंक १ भर पीपली टका १ भर जीरोटका १ भर चव्य टका १ भर चित्रक टका १ भर सूंठि टका १ भर सोध्याभिलावा टका १ भरपकायो जमीकंद ऽ। जवषार टका १ भर पाछैयांसारानैंमिहीवांटि यांसारासूं दूणोगुडले पाछैयांमैमिलाय गोलीटका १ भरकीबांधै गोली १ रोजीनाषायतौवायकी ववासीर निश्चैजाययो कांकाय नमुनि गुड कह्योछै ४ अथवावनालकापानानैं औटायतींका पाणीसूं सौंचलेतौ ववासीरकामस्सा दूरिहोय अथवा वनालकाडोडाकी धूनीदेतौ ववासीरकामस्सा दूरिहोय ५ अथवा वनालकाडोडा कांजीमैपीसि ववासीरकौ लेप करैतौमस्सादूरिहोय ६ अथवा नींबकापान अरकनीरकापान गुड कडवीतुंबीकी जड यांनैं

न. टी. संग्रहणीरोगकैपाछै ववासीरकोरोग अनुक्रमसूंकह्योछै. जीकायतनभीअनुक्रमसौं लिष्याछै. कोईक मनुष्यशस्त्रांकीसहायतासौंईकामसाकाढैछै. परंतु जौऔषधीसौंउपचारछैसो मुष्यसुषदाईछै. अरदूजाउपाव कातोफरेकहोयछै.

कांजीकापाणीमैं वांटि मस्साकौं लेपकरैतौमस्सा दूरिहोय.७ अथवा हलद कडवी तुरईकी जड आककापान सहजणाकीजड यांनैकांजीका पाणीसूं मिहीपीसि ईनैं मस्साकै लेप करै तौमस्साझडिपडै ८ अथवा अरंडकीजड महलौटी रास्ना अजवायण महुवो यांनैंकांजीमैंवांटि गरमकरि लेपकरै अथवा ईंसूं सेककरै मस्साकैतौ मस्साकीचिमचिमीजाय अर मस्साझडिपडै ९ येजतन वैद्यरहस्य वैद्यविनोदमैंछै अथवा हीराकसीस सींधोल्लूण पीपलि सूंठी कूठ कलहारीजडीकीजड पाषाणभेद कनींरकीजड वायविडंग दांत्युणी चित्रक हरतालचोष यांनैंबराबरिलेयांनैंवांटी यांसूंतिगुणों तेलले अरथोहरीको अर आकको दूध अर गोमूत येतीन्यूं औषद्यांसूं अर तेलसूं चौगुणो लेअरयांनें सामिलकरिपचावै अरवे बलिजाय अर तेल आय रहै तदितेलउतारिले पाछै ईंतेलको मस्साकै मर्दन करैतौ मस्सा दूरिहोय ववासीरजाय आंवली दूषैनहीं यो क्षारतैल वैद्यरहस्यमैं लिष्योछै १० अथवा पकायो जमीकंद भाग १६ चित्रक भाग ८ सूंठि भाग ८ कालीमिरची भाग ४ त्रिफला भाग २ पीपलामूल भाग ८ सोध्याभिलावा भाग ८ इलायची भाग ४ वायविडंग भाग ८ सतावरी भाग ८ वधायरो भाग १६ भांगि भाग ८ पाछैयांसारानैंमिहीवांटि पाछै यांसारां औषद्यांसूं दूणोगुडले तींकी टंक ५ प्रमाणगोलीबांधै पाछैगोली १ रोजीना महिनाएकतांईषायतौ ववासीरनैं हिचकीनैं सासनैं राजरोगनैं प्रमेहनैं यांसारां रोगानैं यह ब्रहत् सूरणमोदक छैसो दूरिकरैछै ११ यो वैद्यरहस्यमैंछै अथवा पित्तका ववासीरका लक्षणलिष्यते मस्सा कालानीला मोटा होय अर लालपीला सुपेदाईलीयां मस्साहोय अर वांमस्सामैं मिहीधा

न. टी. मूलव्याधिनाम ववासीर. हरष. यांकौपथ्यलिषूंछूं. हलको अन्न. कुलथी. दूध. चावल. घृत. तुराई लस्सण. चंदलाई. छाछ. मांषन. आंवला. श्रद्धा. सुद्धहवा. आछीतरह पालषतीसौं वैठणी. कबजीनहींराषणी. शुद्धअहार. व्यवहारइत्यादि.

रलियां गरम गरम लोहिजाय अरवहीकोमलमस्सा होय अर जोक सरीरसामूंढाहोय अरसरीरमैंदाहहोय अरजुरभीरहै अरपसे वआवै अर घणीतिसहोय मूर्छाहोय अप्रीतिहोय अरवोकोमलनी लोपीलोलालहोय अर त्वचा नषनेत्रजींकापीलाहोय येजींमैंलक्ष णहोय तींकैपित्तकी ववासीर जाणिजै. १

अथ लोहीकी ववासीरको लक्षणलि० गुदाकामस्सा चिरमीकारं ग सिरकाहोय अर वांमस्सामैं लोहीकीधार गरमघणी वहोत पडै. अर वेंकोमलगाढो दोहरो उतरै अर लोहीकाघणां जावासूं वेंकोस रीरमींडकाका वर्णसिरको होय अरवेंको बलवर्ण उत्साह पराक्रम येसाराही जातारहै सरीर लूषोहो जाय गुदाकोपवन आछीतरैच लैनहीं अर मस्सामैं लोहीजातांझागहोय आवै अर कंठमैं जांघा मैं गुदामैं पीडहोयआवै अरसरीरदुबलोहोय तो लोहीकीववासीर मैं वायकोभी मिलापजाणिजै अर वेंकोमल सुपेद चीकणों भार्यो ठंडोहोय अर मस्साका लोहीकीधारजाडीतातीनैंलीयां होय अर जींकी गुदाकै कफसो लाग्योही करैतो ववासीरमैं कफका संबंधनैं लीयां लोहीकाजाणिजै अथ ववासीरकोलोही जावैजींका थंभिवा की औषधि लिष्यते वडवोरकापान पईसा ४ भर सूका आंवलाप ईसा ४ भर पाछैगायको माषन पाव ।. लेतीनैं लोहकीकडाहीमै षूबतपावै ओघृत षूब तपिजाय तदियां दोन्या वस्तांनैंई घृतमैं ना षैं पाछै येतीन्यूहीमिलिजाय तब उतारि ठंडोकरि धातकावासणमैं घालणी पाछै यांसारानैं षरलमैं घालि मिही वांटियांको येकजीव क रणोपाछै ववासीर वाला रोगीनैं मासा ४ दिन २१ प्रभातदे पाछै पाणीका कुरलाकरै कुरलाकोपाणी पीवै नहीं अरगरमवस्त बाजरो

न. टी. ववासीरमैंकुपथ्यलि० नसाकी जीनस बाजरी. बाटी. गुवारफली. दहीं. उडद. लालकोलो. पाकाआंव. जागरण स्त्रीसंग कवजीकरवावालापदार्थ. महनत. घणोफिरणो. मी ठोभोजन. षीर. लाडूसिवालपूडीवैंगणमिरच तेलउंठघोडाकीसंवारीइ०

करेलाप्रतकालीपैंडा अथाणुंवेंगण कैर उडद उगैरैपायनहीं तौववा
सीरको लोही थंभै १ अथववासीरका लोही थंबिवाको दूसरो ज
तनलि० नींबोलीकीमींगी अर ओलियो ये दोन्यू बराबरिले त्यांनै
परलमें पाणीसूं मिही वांटिरती १ प्रमाण गोली बांधेगोली १ येक
रसोतका पाणीसूं प्रभातरोजीना दिन ११ लेतौ ववासीरको लोही
निश्चैथंबै.२ अथ ववासीरका मस्सा दूरिहोवाकी औषदिलि० रसो
तचिणियां कपूर नींबोलीकीमींगी यांतीन्यांनैं पाणीसूंमिहि वांटि व
वासीरका मस्साकै लेपकरै तौ मस्सा मुरदार होय पाछैनीलाथूथ
कौलेप करैतौववासीरका मस्सा दूरिहोय ३ अथ पित्तकीववासीर
अर लोहीकी ववासीर यां दोन्यां ववासीरको जतन येकहीछै सोलि
ष्यते रसोतनैंमिहीवांटि टंक २ पाणीमैंघडी ४ भेइपाछैं वेपाणीनैं
छांणि ईतोल महिना २ लेतौपित्तकी अर लोहीकी ववासीर मुकर
जाय ४ अथवा पीपलीकोलाष हलद महलौठी मजीठकमलगट्टाकी
मींजीयेबराबरिले यांनैमिही वांटिरोजीना टंक २ दिन ४९ लेतौये
दोन्यू ववासीर जाय ५ अथवा नागकेसरि माषन मिश्रीये टंक ५
रोजीनादिन ४९ लेतौयेदोन्यूंववासीरजाय ६ अथवा कुडाकीछाल
टका १०० भर तीनें वांटि १६ सेरपाणीमें औटावैपाछे वेंकोआठ
वोंहिंसोरहै तदि वेनैं उतारि रस छाणिले पाछै वेंरसमैं नागरमोथो
टका १ भरसूंठि टका १ भर कालीमिरचिटका १ भर पीपलिटका
१ भर त्रिफलाटका ३ भर रसोत टका २ भर चित्रकटका २ भर इं
द्रजव टका १ भर वचटका १ भर पाछैंयांकोमिही चूर्णकरि गुडकी
चासणीमें मिलावै योचूरणअरईमैंसेर १ सहतमिलावै सेर १ गऊ

---

* भिलावाशुद्धकरवाकीविधि. चोषा ताजा अर जाडाभिलावा लेणा ज्यांकीटोपलीमा थाऊपरली उतारणीं तजवीजसौं पछैमोटा मोटा टूक चाकू सौं करणापछैंईंटाडीका कांकरा कीराष करटाटपटीकीकोथलीमैंभरसवेरैपछैकाढ गरमपाणीसैं धोयकरगावादूधमैंउकालैतौ शुद्ध होय. वाको जहरमिटै परंतुहीनवीर्यहोय जायछै..

कोघृत मिलावे पाछे ईनैटका १ भर रोजीना षायतौ येदोन्यू ववा सीर जाय और साराही ववासीर ईसूं जायछै अर अमलपित्तनैं अतिसारनैं पांडुरोगनैंसंग्रहणीनैं षीणपणानैं सोजानैंजुदाजुदाअनु पानसूं ईंऊपरि छाछिका सेवासूं इहकुडाकीछालिको अवलेह हैसो अतनारोगानैंयो दूरिकरैछै अथवाबकायणकाबक्का ६ तथा ७ तथा ८ रोजीना महिना २ दोय तांईमिश्रीकैसाथि लेतौ यांदोन्या प्रका रकी ववासीरजाय ८ अथवा गिलोयसत सोध्योपारो सोध्योगंधक बीजाबोल मोचरस येबराबरिलेपाछैंपारागंधककी कजलीकरैपाछैं क जलीमैं येऔषदि मिलावैयोबीजाबोलबद्दरसछै सोसहतसूंमासा ३ रोजीना दिन २१ लेतौ येदोन्यूं ववासीरजाय अतिसार प्रमेह स्त्री कोप्रदर भगंदर येसारा ईसूंजाय ९

अथवा वसंतमालतीरसरती २ पीपलि २ तथा ४ सहत मि श्रीका संजोगसूंदिन २५ लेतौयेदोन्यूं ववासीरजाय संग्रहणीजा य १० येजतन वैद्यरहस्यमैं लिष्योछै. अथवा ववासीरकरि बंधकु ष्ठहोय आवे अर मस्सा ऊंचाहोय आवे अर मस्सामैंषाज आवे अर मस्सामैं लोहीकीधारपडे तदि वामस्साकै जोकलगाय लोही कढाय नाषैतदि वा ववासीर जाय. ईंसिरषो और उपायछैनहीं यो वैद्यहरस्यमैंलिष्योछै. ११ येपित्तकी अर लोहीकीववासीर दोन्यूं छैसोषुनीववासीर जाणिज्यो. अर औरसारीववासीरवादीकी जा णिलीज्यो. अथ कफकीववासीरका लक्षणलि० गुदाका मस्सा जा डाहोय मंदपीडाहोय ऊंचाहोय भाय्याहोय कफसूं लपट्याहोय वा मैंषुजालि घणीहोय आवे अरषुजालि घणीप्यारीलागै अर पेडूमैं आफरोरहै. गुदामैं षाजिघणीआवे अर षास सास भीहोय अर

न. टी. जोमूलकामस्सामैं रक्तकोजोरघणोहोयतौ रक्तश्रावसौंमस्साहलकाकरै. पाछैवेंकै और उपचारलेपादिक. याधूणीउगैरै जतन करै. अरपेटमैं औषधिकरै जीसूंववासीर आरा महोय. अरऊंठाकोरक्तजौंकसौं कढाणौ..

हियोदूषै. अरुचिहोय पीनस होय अरप्रमेह मूत्रकृच्छ्र मथवाय सीतलागै येभीहोय अर अग्निमंदवमन आमवातभी होय अर कफसूं लपेट्यो मलजाय अर गुदाका मस्सामें लोहीजाय नहीं स रीरकोरंग पीलो होय ये जीमें लक्षण होय तींकै कफकी ववासीर जाणिजे अथ कफकी ववासीरको जतनलि० आदो टका १ भर तींको काढोदिन २१ लेतो कफकी ववासीर जाय १ अथवा हल दकै थोहरका दूधकीपुट ७ दे वे हलदको मस्साकै लेप करैतो म स्सादूरिहोय २ अथवा त्रिफला दसमूल चित्रक निसोत दांत्युणीं येपांचूं शेर १ ले अरपाणी अधौंण ॥. लेपाछे ईंपाणींमें औषदि कूटिनाषैदिन २१ ईंमेराषै अर औषद्यांकीसाथिपाणिमें गुडसेर ७ पाछे ईनें दारुका जंत्रमें दारू कीसी नाईं अरककाढैपाछे ईनेंटक १ भर रोजीना लेतो कफकी ववासीर जाय ३ योदांत्युणीकोअर्क छै. योवृंदमें कह्योछै अथसन्निपातकीववासीरको लक्षणलिष्यते वाय पित्त कफकामिल्यो लक्षण छैसोई ईंकाजाणिलीज्यो अथस न्निपातका ववासीरकाजतनलिष्यते आदो टका ३ भरकालीमिर चि टका १ भर पीपलि पाव भर चव्यटका १ भर नागकेसरि टका ५ पीपलामूल टका १ चित्रक टका १ इलायची टंक ५ अज मोद टका १ भर जीरो टका १ भर येसारी औषदि मिहीपीसि गु डटका ३० भर तींमें गोलीटंक ५ प्रमाण बांधै पाछैगोली १ प्रात समय षायपाछे भोजनकरैपथ्यरहैतो सन्निपातकी ववासीरनें मूत्र कृच्छ्रनें वायका रोगनें विषमज्वरनें पांडुरोगनें गोलानें फियानें षा सनें स्वासनें वमननें अतिसारनें हिचकीनें यां सारां रोगानें जुदा जुदा अनुपान सूं दूरिकरैछे. जैसै जलमें तेल नाष्यो स्यायतेकमें

न. टी. जोमूलमैत्रिवलीछै जीमैंमिहीलीत्रिवलीकीववासीर असाध्यछै. सो कोईऔषधी काजोरसौं वोमूल वाहरैनीकलै पछैवेमाहिलामस्साछै ज्यांका जतन औषधीसौंवा चतुर जहराका हातसौं वहमस्साषारजकरैतो आराम होयछै. रोगीमजबूतहोयतो.

फैलि जाय तैसे औषधी अनुपानका बससूं ततकाल गुणकरै या प्राणदा गुटिका छैसोसर्व संग्रहमैंलिषीछै १ अथवा त्रिफलासूंठि कालीमिरचिपीपलि तज पत्रजइलायची वच सेकीहींग पाठ साजी जवषार दारुहलद चव्य कुटकी इंद्रजव सौंफ पाचूंलूण पीपलामूल बीलकीगिरि अजमोद येसारी बराबरिले पाछैयांनैं मिहीवांटि गरम पाणीसूं टंक २ रोजीना लेतौ सन्निपातकी ववासीरनैं सासका रोगनैं हिचकीनैं षासनै भगंदरनैं पसवाडाकासूलनैं गोलानैं उदरका रोगानैं प्रमेहनैं पांडुरोगनैं अंत्रवृद्धिनैं संग्रहणीनैं विषमज्वरनैं जीर्णज्वरनैं उन्मादनैं यां सारांरोगानैं जुदा जुदा अनुपानसूं यो विजयानामचूर्ण दूरिकरैछैयो भावप्रकासमैंलिष्योछै. २ अथवा सोध्योपारो टका १ भर सोधीगंधक टका २ भरतामेश्वर टका ३ भर सारटका ३ भर सूंठि टका ३ भर कालीमिरचिटका २ भर पीपलि टका २ भरसोध्योसींगीसुहरोटका १ भर दांत्युणी टका १ भरचित्रकटका २ भरवीलकीगिरिटका २ भर जवषारपईसा ५ भरसुहागोपईसा २ भरसींधोलूणटका ५ भरगोमूत्र टका ३२ भर थोहरकोदूध टका ३२ भर यांसारांनैं येकठाकरि कडाहीमें मधुरीआंचसूं पकायले पाछै वैकीपींडी होयजाय तदिमासा २ भरताता पाणीसूंलेतौ असाध्यभी सन्निपातकी ववासीरजाय ३ योहरस कुठार रसछै योजोगतरंगिणीमैंलिष्योछै अथशिवजी कामतको वणायो लोहसार जीसूंववासीरउगैरै घणारोगजाय छै सोलि० ववासीरको महाअसाध्यरोग जाणि मनुष्यांकै अर्थ श्री नारदजी महादेवजीसूं बुझताहुवा सोमलउगैरै लगावासूंगुदाका मस्सा दूरिहोयछै पण वासूं मनुष्य मरिमरिनीठी वचैछै ईंवास्तै

न. टी. कांतिसारलोहकीक्रियालिषीछै. परंतु असलकांतिसारलोह लेणो. जोशास्त्रमैं परिक्षालिषीछै. जींलोहकापात्रमैंदूध ऊफणैसोतोलोह नहीं लेणो. अर जीं लोहकापात्रमैं दूध उफणै नहीं सोलेणो. अबारकावैद्यतोगजवेललेवैछै.

ईविनासुगमही कोई उपायसूं ववासीरजाय इसो जतन बतावो त दि श्रीमहादेवजी बहुत करुणाकरि नारदजीनें ईसारकी वणावाकी क्रियाबताई ईंतरैका करिवाका सारसूं ववासीरउगैरै घणांरोगजा य सोलिषूंछूं कांतिलोहले अथवा गजवेलिको लोहले तींका पत्र कराय वानें तेलमें छाछिमें गोमूत्रमें कांजिमें त्रिफलामें वार ७सा त सात ७ बुझावा देकर प्रथमसोधै पाछै वानेंरेतीसूंरितायवांबरा बरिमैणसिल सोणमषी येदोन्यूले पाछै यां दोन्यांको अर तींलो हको सरावामें मेल्हि अग्नि झालका रससूं वादोन्यांनें ओसणि वेंका अनुमानमाफिक रेत्या लोहके मांहि वां दोन्यांनेंघालि वास रावानें मूंदिल्हारीकोईलांसूं धोंणीसुषूबधवें तदिवेदोन्यूं बलिजाय वास आवासूं रहे तदि वेनें काढिले ईसीतरें वानें बालिदे वार दसे क पाछैत्रिफलांकारससूं पारांनें वेंरेत्या लोहमें चरावे लोहका आठऊ भाग चरावे इही विधिसूंवारचार च्यार भस्म करैपाछै वा सारनें परलमैमिहीपीसि तदियोहपाणीमें तिरवावालो सारहोजाय पाछै लोहकासरावामें वेसारकेविसषापराकारसकीपुट १० वेहीवि धिसूंदेपाछै छीलाकारसकीपुट १० देपाछै थोहरीका दूधके पुट१० दे पाछैसाटीकारसकी पुट १० देपाछैसतावरीकी पुट १० देपाछैगि लवैकारसकी पुट २० दे पाछै जामुणीकावकलकीपुट ७ देपाछैगु लरीका वकलकी पुट ७दे पाछैगवारकापाठाकी पुट १० देपाछैतींदू की पुट ७ दे पाछै आंवलासारकी पुट २० दे पाछैनींबूकारसकीपुट २० दे पाछैछिलाका बकलकी पुट १० देपाछैसारको बारऔं १२ हिसोहिंगलूदे तीनैकंवारका पाठाकारसमैंमिलायवेंकीपुटदेपाछै वें

---

* कांजीकीविधि. माटीकी नवीमटकीजीमें सिरसूंकोतेल चोपडैमायनें पछैनिर्मल पाणी भरै ओरराई. जीरो. सींधो. हिंग. सूंठ हलदी. यांको चूर्ण ओर मांडसमेत चावल कुलथी को काढो बांसकापान उनमानसूंघालै मठकीमें घृतकातल्योडा बडा थोडासा घालि दिन ३ तीन अछेडरापैतो पाणी षाटो होयछै. सुवाद होयछै. कांजी कहिजै.

के घृतकीपुट १० देपाछै सहतकीपुट १० देपुटपुटमैषरल करतो जाय इसीतरै ईसारनैं सिद्धिकरै पाछै ईसारनेरती १ प्रमाणले स हत पीपलका संजोगसूं अरशिवजीको पूजन करै ईमंत्रसूं ईनैषाय ऊंअमृतभक्षयामिस्वाहा अरईकीपरम मात्राचढतीबलमाफिक देतो रती ३ कीछै प्रभातसमैहीलेईऊपरिषरैटीको काढोले इसीतरैमहि ना ३ ईको सेवनकरैतो ववासीरमात्र दूरिहोय अरबूढापणोंदूरिहोय तरुण होजाय अरईका सेवनमैंमंदाग्निजाय षाससास पांडुरोग वा तरक्त मूत्रकृच्छ्रअंत्रवृद्धीनैं आदिलेर असाध्यभी रोगजाय अर ब लवर्णबहोतवधै पुष्टाईसरीरमै होय आयुर्बलवधै सर्वरोगमात्रईसूं जाय अर ईकोसेवावालो इतनी वस्तषायनहीं पेठोतेलउडद राई दारुषटाईयेषाय नहींयहविधि वडा आत्रेयमैं अरभावप्रकासमैं लिष्याछै. ४

अथवावडीहरडैकीछालिटंक २ पुराणो गुडटंक ५ येदोन्यूमिला यजलसूं रोजीनाले ऊपरसूंगऊकीछाछीकोसेवनकरैतो या ववासीर जाय ५ अथवा आंधाहोलीनीलाफूलकी जडी होयछै सोले षरैटी दारु हलद पृष्ठपर्णी गोषरू इंद्रजव सालरीकाफूल वडका अंकुर गू लरकाअंकुर पीपलका कोमलपत्र येसारीऔषदिदोयदोय टका भ रले पाछैयानैं जौकूटकरिटंक २ कोकाढो करिछाणिले पाछै जीवंती कीजड कुटकी पीपलामूल कालीमिरचि सूंठि देवदारु सतावरी चं दन रसोत कायफल चित्रक मोथो प्रियंगू षरैटी सालपर्णी कमलग ट्ठाकी मींगी मजीठ कव्याली बीलकीगिरि मोचरस पाठ येसारीऔ षधिअधेला अधेला भरले पाछै यांनैमिहीवांटि सेर ४ यां औष धांका काढाकोरसले तीमैंगऊको घृत सेर १ घालैपाछै यांदोन्यांनैं

न. टी. आंधाहोली नाम जडीछै. जीनैं ऊंधाहोकहैछै. अर शास्त्रमैंअधोपुष्पीकहैछै. जीं काफूल औंधा होयछै. छोटीजडीछै. लंबातीषापान होयछै. जींकाफूलकोरंग असमानी अर छोटोफूलपांचपाषडीको जींनै आंधोहोलीलिषीछै.

कडाहीमैंघालिऔटावै काढोबलिजाय घृत आयरहै तदिउतारिछा णि टका २ भर रोजीनापायतौ ववासीरजाय ६ अथवा पारोसो ध्योगंधकसोध्यो येबराबरिले यादोन्यांकी कजली करि पाछैवेकज लीनें घृतसूं चोपडै पाछै वांदोन्यांसूं दूणोबीजाबोल कजलीमैं घा लि और रगडै टीकडीबांधै पाछै वेटीकडीनें लोहका पात्रमैं आंच देकरि पतली करि केलीकापानाऊपरि ढालै वेंकीपापडीकरैतदिवें को नामपर्पटीरसहुवो. ईंरसको सेवन रती ३ रोजीनादिन १५ क रैतौसन्निपातकी ववासीर जाय ७ योवैद्यविनोदमैंलिष्योछै अर गु दाका मस्साविना औरसरीरमैं कहीं ठिकाणै मस्साहोयतीनें चर्म कीलकहजेछै तीनेंअग्निकरिकै अरषारांकरिकैदूरिकीजे ओर मस्सा को जतनलि० पावाकोचूनों साजी सुहागो नीलोथूथोयानें बराबरि ले पाछैनींबूकारसमैं दिन ३ भेवैपाछैमस्साकै लगावैतौमस्सा मूकर दूरिहोय ८ अथवा सीसाकीगोलीनेंगऊका घृतमैंघसि ववासीरका मस्साकै दिन १० लगावैतौ ववासीरदबिजाय ९ अथवा विष्णु क्रांताजडीटंक २ कालीमिरचि टंक २ भांगमासा आध रोजीना घोंटपीवैतो ववासीर दबिरहै १० अथ ववासीरका असाध्यलक्षण लि० जींववासीरमैं सोजो अतिसार वमन अंगमैंपीडातिस ज्वर अ रुचि अग्निमंद गुदाकोपकिवोहियामैंसूलये लक्षणजींववासीरवाला कैहोयसो निश्चैमरै अर ववासीरवालो इतनीवस्तकरैनहीं मलमूत्र नें रोकैनहीं स्त्रीसंगघणो करैनहीं घोडाऊपरै चढैनहीं उकडूवैठैन हीं कैरकरेला वाजराउगैरैगरम वस्तषायनहीं इतिववासीरकीउत्प त्तिलक्षण जतन संपूर्णम् इतिश्रीमन्महाराजाधिराज राजराजेंद्रश्री सवाईप्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागरनामग्रंथे अतिसार संग्र

न. टी. अतिसार. संग्रहणी ववासीरयेतीन रोगछै ज्यांरोग्यांनै पथ्यापथ्य अर आहार व्यवहार तुल्यछै. परंतु कोई कोईमैं पथ्य जुदोछै. जींकी निगाराषणी. जैसै अतिसारवालानै दहीं पथ्यछै अर संग्रहणी ववासीरवालानै कुपथ्यछै ऐसैही ओर देषणा.

हणी बवासीरकीउत्पत्ति लक्षण जतननिरूपणंनाम तृतीयस्तरंगः समाप्तः ३

अथअजीर्णरोगकी उत्पत्तिलिष्यते प्रथम मनुष्यांके जठराग्नि हैसोचारिप्रकारकीहै येकतौ मंदाग्नि १ येक अतितीक्ष्णाग्नि २ येक विषमाग्नि ३ येक समाग्नि ४ जींपुरषकै कफकीप्रकृतिहोयतींकैमंद अग्निहोय १ जींकी पित्तकी प्रकृतिहोय तींकै अतितीक्ष्णाग्निहोय जींकीवायकीप्रकृति होय तींकैविसमअग्निहोय ३ जींकै वायपित्त कफकी मिलीप्रकृति होयतींकै समाग्निहोय ४

अथ मंदाग्निको लक्षणलि० मंदाग्निवालाकै थोडोसोहितकारी भी षायोथको भोजन आछीतरैपचैनही अर वेंकोसिरउदरभार्‍यो रहवो करैअरवेंकाअंगामैं फूटणीरहवोकरै १ अथ तीक्ष्णाग्निकोलक्षणलि. घणासूं घणोभोजनकर्‍योजींको आछीतरहपचिजाय योअग्निआ छ्योर अथविसमाग्निकोलक्षणलि० कदेतोभोजनआछीतरहपचैक देभोजन आछीतरहपचैनहीं अरआफरोहोयआवै पेटमैंसूलचालै उदरभार्‍योरहै अतिसारहोय आवै अरपेट बोलिवोकरै येलक्षण होयतौविसमाग्निजाणिजे ३ अथ समाग्निकोलक्षणलि० जींकैसमा ग्निहोय तींकैप्रमाण भोजनकर्‍यौआछीतरहपचै घणोषायो अजी र्णमैभीपचै भार्‍योअन्नभीपचै येसमाग्नितीन्यूंअग्निसूंश्रेष्ठछै ईंअग्नि सूं कहींतरैको विकारहोयनहीं अरभूषलागीछै तीनैं कहींकारणरो कैतौभी तत्काल रोगनैंउपजावैनहीं. अरतीक्ष्णअग्निहैसो भूषनैं बंधकरि तत्कालपित्तकारोगनैंउपजावैछै. ईंवास्तैसमाग्निश्रेष्ठछै ४ अर मंदाग्निसूंतो कफका आजारहोयछै तीक्ष्ण अग्निसूं पित्तकारो गहोयछै. विसमाग्निसूं वायकारोगहोयछै समाग्निसूं कोईभीरोगहो

न. टी. तीनौदोष समान भावमैंरहैजीनैं आरोगताकहिजै अर येतीन्यू दोषविसमहुवासौं रोगकहिजै जैसैसरीरमैकुपथ्यका कारणसौं जदां कफको दोषघट जावै अर वायपित्त जादा होयकर पित्तपवनकै आसरै होय अग्निवधावै वायु अग्निका जोगस्यूं भस्मकाग्निहोयछै.

यनहीं अथ भस्मकरोगकी उत्पत्तिलक्षणजतनलि० तीपीवस्तनैं आ
दिलेर लूपोअन्नजोपायतींकैकफ घटै अरवायपित्त वधै तदिपित्तहै
सोपवनसूं प्रेरयोथको भस्मकअग्निनैं रोगरूप पैदाकरै तदिजोपाय
सो एकस्यायतमैं भस्महोयजाय इनैं भस्मक रोग कहिजे योतिस
दाह मूर्छानैं प्रगट करि भोजन कर्यानैं पाय सारी धातानैंपाय जा
यछे योमारीनाषैछे ५ अथ अजीर्णरोगकी उत्पत्ति लिष्यते घणो
पाणीपीवे विसमासनसूं भोजनकरै मलमूत्रका वेगनैरोकै दिनमैं
सोवै रातिनैं सोवैनहीं इसा पुरुषकै पथ्यभोजनभी आच्छी तरह प
चैनहीं अथवा इतनी वस्तसूं मनुष्यकै आच्छीतरह अन्नपचैनहीं
जींकै अष्टप्रहर इर्षारहवोकरै भयरहवोकरै क्रोधरहवोकरै लोभर
हवोकरै कोईक रोगरहवोकरै दीनता रहवोकरै आछ्योमनमाफिक
भोजन मिलैनहीं तींपुरसकै भोजन आछीतरैहपचैनहीं अथ अजी
रणको सामान्य लक्षण लिष्यते मनमैं ग्लानिरहै सरीर भार्योरहै
उदरमैंआफरो रहै भ्रमरहै गुदाकोपवन आछीतरह चलै नहीं बंध
कुष्ठ होय आवै अथवा वारंवार पतला मलकी प्रवृत्तिहोय येजीमैं
लक्षणहोय तदिजाणिजे मनुष्यांकै अजीर्णछे १ अथ अजीर्णको भे
दलिष्यते अजीर्ण ६ प्रकारकोछे येकतो आमकहिजे मीठोकाचोही
भोजनगुदाद्वाराजाय अर जींकै कफकीप्रकृतिकरि मंदाग्निहोय जींकै
१ अर दूसरो विदग्ध कये केवल षटाई नैलीयां मलगुदाद्वारा
जाय जींकै पित्तकी प्रकृतिकरि तीक्ष्ण अग्निहोय जींकै २ अर ती
सरोविष्टब्ध अन्नहैसो कूषिमैहीरहै पचैनहीं आफरो पेटमैकरै अर
सूलकरै अर काचोही अन्नगुदाद्वाराजाय जींकै वायकी प्रकृति करि

---

* ववासीरका मस्साकाढवांनैं घणाधुताराठगलोकाफिरैछै. और हात चालसौं मस्साजड
समेत काढदिखावैछै सोभूलछै. मस्साकैषारकी औषद लगाय निजीवाकर नस्तरसूं काढैछै.
पछै कोई जानवरकी आंतहतफेरीसूं दिषाय कराठिगैछै यहबांचकर अकलवाला मनुष्यठी
गासी नहीं.

विसमाग्निहोय जींकै ३ अर चोथोर सभोजनकर्यो आछीतरह प चैनहीं मल पतलोही जाय ४ अर पांचऊ अजीर्णदिनकी येकराति दिनमैं पचैनहीं दूसरैदिन भूष लागैयो आछ्यो निरदोस ५ अर छठो अजीर्ण सुतैसिद्धि सदाही रहै वेनैंप्रतिवासर कहिजे वावां प सवाडांका सोवासूं गरमपाणी पीवासूं मिहनत करवासूं हरडेका षा वासूं योजाय ६

अथ आमाजीर्णको लक्षण लिष्यते सरीर भार्योहोय वमनकी इच्छारहै जीसोभोजन कर्यो होयउसीहीडकार आवै कच्चोही मल जाय १ अथ दग्धाजीर्णको लक्षण लिष्यते भ्रमहोय तिसहोय ग रमीका नानाप्रकारकारोगहोय धूवानैलीयां षाटीडकार आवै दाह अर पसेवहोय २ अथ विष्टब्ध अजीर्णको लक्षणलिष्यते पेटमैंसूल होय आफरोहोय वायकी नानाप्रकारकी पीडाहोय अरमल अधो वाय रुकिजाय शरीर जकडबंधहोय ३ अथरससोष अजीर्णको ल क्षणलिष्यते अन्नमैं अरुचिहोय हियोदूषै सरीर भार्यो होय ४ अ थ अजीर्णकाउपद्रव लिष्यते मूर्छा होय प्रलापहोय वमन होय अं गमैं पीडाहोय भ्रमहोय अजीर्णमैं उपद्रवहोय तो ओमरिजाय ५ मूर्षआदमीअजीर्णमैंपशुकीसीनाईं भोजन करै वेआदमीकै अ नेक रोग होयछै स्वल्प आंवछैसो दोसांसूं बंध होय ओअग्निका मारगनैं रोकै नहीं तदि अजीर्णमैंभी भूषलागै वेकाचीभूषमैं जोषा यसो पुरसमरिजाय अथविसूचिकाकोलक्षणलि० पुरसकै मंदाग्नि सूं प्रथम आमाजीर्णहोय पछैवेमैं मूर्षपणासूं पषूकीसीनाईं घणी गरिष्ट वस्तुषाय तदि वेकैविसूचिकाहोय जींकै मूर्छा होय अतिसा र अर वमनभीहोय अर तिसभीहोय पेटमैं. अथवा औरठैभी सूल

न. टी. जोउपद्रव अजीर्णरोगकाछै जीमैं वांअजीर्णका उपद्रवांकी निगैराषणी. कारण योरोगदिषतकोतो साधारणछै. अर उपद्रवांसूं मिलै तोयोरोगघातकीछै. अर विसूचिकारोग की याजन्मभूमिछैजींसौं अहारविहारतपासणा.

होय भ्रमहोय पींडी फूटै जंभाईआवै दाहहोय सरीरकोवर्ण ओरसो होय जाय कांपणी होयहियो माथो घणोदूषै सारासरीरमैं सूईका साचभका होय येजीमैं लक्षण होय तीनैंविसूचिका कहिजे लौकीक मैं ईनैं वासीकहैछै. येईका उपद्रवछै नींद आवैनहीं सर्वत्र अप्रीतिहोय सरीर कांपै. मूत्ररुकिजाय संज्ञाजातीरहै येउपद्रव होइतौ ओमरिजाय १ अथ अलसको लक्षण लिष्यते पुरसकै विष्टध्ववायका अजीर्णसूं येलक्षणहोय पेटमैं आफरो होय आंतबोलै पवनाफिरिवासूं रुकिजाय कूषिमैं फिरैमलमूत्र गुदाकोपवन येरुकिजाय तिसघणीलागै डकार घणीआवै येजीमैं येलक्षणहोय तदिअलस जाणिजे २ अथविलंबिकाको लक्षण लिष्यते जोभोजनकर्योहोय सो पचैनहीं ऊपरनीचै जाय नहींवेनैंविलंबिकाकहिजे अर यांतीन्याहीमैंयेलक्षण होयसो मरिजाय दांतजींकाकालाहोय होठ नषभी काला होय संग्या जातीरहै छादणी लागि जाय नेत्रमांहिं घुसिजाय स्वरघांघो होय जाय सरीरकी संग्या सिथलहो जाय जीमैं येलक्षण होय तौ ओ मरिजाय अथ अजीर्णदूरिहुवो होय तींका लक्षण लिष्यते डकार शुद्ध आवै सरीरमैं उत्साह होय मल मूत्र पवनकी आछीतरै प्रवर्ति होय सरीर हलको होय भूषतिस आच्छी तरैलागै तदि जाणिजे अजीर्ण दूरिहुवो १ अथ मंदाग्निनैं आदिलेर अजीर्णविसूचिकाकालक्षणलिष्यते हरडैकी छालि सूंठि यांनैं मिहीवांटि टंक २ गुड टंक १० कैसाथि जलसूं रोजीनालेतौ आमाजीर्ण दूरि होय अर भूषवधै १ अथवा हरडैकी छालि सींधोलूण ईको सेवन रोजीना करैतौ अजीर्ण जाय भूषवधै२ अथवा सींधोलूण सूंठि कालीमिरचि येबराबरिले त्यांनैं मिहीवांटिटंक २ गऊकीछाछिकै

न. टी. अजीर्णमैं गउछाछ अर सैंधवलूण पथ्यछै. जीमैं आमाजीर्ण नहीं हुवोचाहिजे जो कदास आमाजीर्णविकार होयजाय तौ आमकापाचनकै वास्तै सधिो. संचर. सांभर. समुद्र. विड. ये पांच लूणगाई छाछमैं त्रिकुटाकायोगसूं लेणा. आराम होय.

साथि दिन १५ लेतौ भूषवधै मंदाग्निजाय पांडुरोग जाय ववासीर जाय ३ अथवा आमाजीर्ण होयतौ पंचलवणका सेवनसूंजाय वि दग्धाजीर्ण होयतौ लंघनसूं जाय विष्टब्धाजीर्ण होयतौ सेकसूं जाय रससेस होयतौ सेकवासूं जाय ४ अथवा सूंठि काली मिरचि पीपलि अजमोद सींधोलूण दोन्यूजीरासेकीहींग ये बराबरिले त्यां कौ चूर्ण टंक १ तथा २ षीचडीकैसाथि घृतसूंमिलाय प्रथम ग्रास कै साथि रोजीना षायतौ अजीर्ण कदेभीहोयनहीं अर भूषवधै गोलो फीयोदूरिहोय यो हींगाष्टकछै ५

अथवा जवषार साजी चित्रक पाचूलूण इलायची पत्रज भाडंगी सेकीहिंग पोकरमूलकचूर निसोत नागरमोथोइंद्रजव डांसस्या अ मलवेदजीरो आंवला हरडेकी छालि पीपलि अजवायण तिलांको षारसहजणाकोषार छीलाकोषार येसारीऔषदिबराबरिले त्यानैंमि हीवांटिछांणितींकै विजोराकारसकीपुट ८ दे सिद्धिकरिलेपाछैईंचूर्ण नैटंक २ रोजीनांजलकैसाथिलेतौभूषघणीलागै. अर अजीर्णनैं गो लानैंउदरनैं अंत्रवृद्धिनैवातरक्तनैं यांसारारोगांनैं योअग्निमुषचूर्ण दूरिकरैछै ६ अथवा थोहरआकचित्रक अरंडकोषार साटीतिल आं धीझाडो केली छिलोडासस्यां यासारांकाषारकाढै पाछैयांका जुदा जुदा षारले अर अजवायण अजमोद जीरोसूंठि कालीमिरची पी पलि सेकीहींग येसारीबराबरिलेयांनैंमिहीवांटि ईंकै आदाकारसकी पुंट ५ दे योवैश्वानरचूर्ण तयारकरै पाछैईनैटंक १ सीतलजलसूंले प्रातसमैतो अजीरणकदे रहैनहीं अरईंसू भूषघणीवधै अर जुदा जुदा अनुपानसूं यो अनेक रोगानैं दूरिकरैछै ७ अथवा सांभस्यो लूणपईसा ४ भर संचरलूण पईसा २ भर. वायविडंगटंक ५ सींधो

न. टी. अजीर्णसौं जो विसूचिका होयसोजीमै सावचेतियाछै. विसूची लागतांही साध न दस्तबंधको करणो. कारण उलटी होवापाछै तो महामुसकल होयछै. जीसौं प्रथम उद्यो गकरैतो फायदो ओछै रोगी असाध्य नहीं होय अर नेत्रभी चढैनहीं.

लूण टंक ५ धणौटंक ५ पीपलि टंक ५ पीपलामूलटंक ५ पत्रजटंक ५ कालोजीरोटंक ५ नागकेसरिटंक ५ चव्यटंक ५ अमलवेतटंक ५ मिरचिकालीटंक २ जीरोटंक २ सूंठिटंक २ अनारदाणाटंक १० तजटंक १ इलायचीटंक १ यांसारांकोमिहीचूरणकरिमासा ४ गऊकी छाछिसूं अथवाकांजीसूं लेतौ गोलानैं फीयानैं उदरकारोगनैं ववासीरनैं संग्रहणीनैं बंधकुष्ठनैं सूलनैं सोजानैं षास सासनैं आंवका विकारनैं पांडुरोगनैं मंदअग्निनैं सर्व अजीर्णमात्रनैं यो लवणभास्करचूर्ण दूरिकरैछै ८ अथवासींधोलूणटंक १ पीपलामूलटंकर२ चव्य टंक ३ चित्रकटंक ४ सूंठिटंक ५ हरडैकीछालिटंक ६ यांकी बराबरिमिश्रीलेपाछैईतोल योचूर्णकरै पाछै ईचूर्णनै टंक २ रोजीनालेतौ अजीर्ण दूरिहोय भूषघणीलागै ९ यो वडवानलचूर्णछै अथवा सोध्योगंधकटंक २ भर पारोटंक १ भर सारटंक ५ तामेश्वर टंक ५ प्रथम पारागंधककी कजलीकरै पाछै कजलीमैं येदोन्यूंमिलावै पाछैयांचार्य्यांनैं लोहाकापात्रमैं अग्नि उपरिचढाय पीघलावै चतुराईसूं पीघल्यांपछै अरंडका पानाऊपर वेनैढालै पाछैवेनें मिंहीवांटिलै पाछैपरलमैं ईनैघालि टका १०० भर जंभीरीकोरससुलावै पाछैईमैं विजोराको रस टका १०० भर सुलावै पाछै ईमैं पीपलि पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठि यांको काढोकरि यांकोईकैपुट ५० दे अर सुकायलै पाछैईकै चुकाकारसकी पुट ५० दे पाछै ईकै अमलवेदका रसकी पुट ५० देपाछै योसारासूकिजाय तदिवां सांरांबरारि सेक्यो सुहागो ईमैंनाषै अरसुहागासूं आधो संचरलूण ईमैंनाषै अरसारांकीबराबरि ईमैकालीमिरचिनाषेपाछैईकैचणाका

---

* ईक्रव्यादरसमैं सोध्यो सींगी मुहरो पाराका उजनपरवाणैमिलावै तौवहुतगुण करैछै. सोधवाकी विधिलिषूंछूं प्रथम बछनाग तोला ७ लेणी तेलियाजातकी पछै वाकी छोटा छोटाटूक करणा. बारीक कपडामैं पोटली बांध कर डोलायंत्रमैं घरणीगऊका दूधमैं पकाय काढणी जदां शुद्ध होयछै. छाया सुकाय लेणी.

षारकीपुट ७ देपाछे ईनें तयारकरिले पाछेईक्रव्यादरसनें निपट जावतासूं आछयापात्रमें धरिराषे पाछेईक्रव्यादरसनेंमासा २ ले ईऊपरसींधोलूण मिलायगऊकीछाछिमें पीवैतौअजीर्णमात्रततकाल ईसूंदूरिहोयछे अरघणोभीगरिष्ट भोजनकर्योईसूं तत्कालपचिजाय अरयोरस सूलनेंगोलानें आफरानेंफियानेंउदरकारोगनें योदूरिक रैछे१०इतिक्रव्यादरसअथवा जवषार साजी सुहागो पारोसोध्योगं धक पीपलि पीपलामूल चव्यचित्रक सूंठि ये सारी बराबरिलेयां सर्व की बराबरिसेकी भांगिले अर भांगिसूं आधी सहजणाकी जडले प्र थम पारागंधककी कजलीकरैपाछे कजलीमें येसारी औषधि मि लावे षूबमिहीवांटेपाछेयांनें भांगिकारसमें दिन १ षरलकरैपाछेयां नैसहजणाकी जडकारसमेंदिन१षरलकरैपाछेचित्रककारसमें दिन१ षरल करै तावडैसुकावतौजाय पाछेईनें सरावामें मेल्हिकपडमिट्टी देरफुकिदेपाछे ईनें काढिदिन ७ आदाकारसमें षरलकरै योज्वा लानल रसतयारकरैपाछे ईरसनें रती १तथा २ सहतसूले ऊपरिसूं गुडकौ क्वाथलेतौ तत्काल अजीरणमात्रनें अतिसारन संग्रहणीनें कफका रोगनें वमननें अरुचिनें इतना रोगांनें योदूरीकरैछे अर यो भूष घणीवधावेछे १० यो ज्वालानलरसछे येसारा भावप्रकाश मेंलिष्याछे ११

अथवा सोध्योगंधक कालीमिरचि चूक संचरलूण यांनें बराब रिले यांनें मिहीवांटि मिलाय टंक १ पाणीसूं लेतौबंधकुष्ठदूरिहोय १२ अथवा पारो टंक ५ सोध्योगंधक टंक ५ सोध्योसींगीमोहरो टंक ५ कालीमिरचि टंक १० जायफलटंक २ प्रथम पारागंधककी कजलीकरैपाछे वेकजलीमेंयेमिलावेपाछेयांनेंडांसर्‍यांकारसमेंदिन

न. टी. अजीर्ण अर अग्निमांद्य येरोग औषधीका साधनसौं तुरतनिवृत्त होयछै. अर यां रोगांपररसादि लिष्याछैवै रसयथोक्त क्रियासौं करणा. जैसौ ज्वालानलरसछै जीमैं जो औषधीकोपुटदेणोसोरीतसौं भीतसौं करकैदेणो.

५ परलकरैपाछैईरसनैं रती १ रोजीनादिन ७ लेतौभूषघणीवधै अजीर्ण तत्कालमिटै योरामबाणरसछै १३ अथवा सोध्योपारो सोध्योगंधक अजमोद त्रिफला साजी जवषार चित्रक सींधोल्लूण जीरो संचरल्लूण वायविडंग सांभरोल्लूण सूंठि कालीमिरचि पीपलि येसारी बराबरिलेअर यांसारांकी बराबरि बकायणका बक्काले प्रथम पारा गंधककीकजली करै पाछैं कजलीमैं येमिलावै पाछै जंभीरीकारसमैं दिन ७ षरल करै पाछैरती १ प्रमाण गोलीकरै पाछैगोली १ रोजीना षायतौ भूष घणीवधै ईऊपरि हरडैकीछालि सूंठि गुड यांकी काढोलेतौ सर्वरोगमात्रनैंदूरिकरैछै. याअग्नितुंडावतीगोलीछै १४ अथवा सूंठि१भाग कालीमिरचि २ भाग पीपलि ३ भाग सींधोल्लूण ४ भाग पाछै यांसारानैं मिहीवांटि पाछैयांनैं निंबूकारसमैं दिन१० षरलकरैपाछैरती १ प्रमाण गोली बांधै गोली १ रोजीनाषायतौ भूषघणीवधैयोक्षुद्रबोधरसछै १५ अथवा विडल्लूण संचरल्लूण अजवायण दोन्यूजीरा हरडैकीछालि सूंठि कालीमिरचि पीपलि चित्रक अमलवेद अजमोद धणौं डासरयां यांनैं बराबरिलेपाछै यांको मिहीं चूर्णकरि टंक २ रोजीना लेतौ पथरभीपचिजाय तौभोजनको कांई कहणो १६ अथवा सोधीगंधक कालीमिरचि पींपलि सूंठि सींधोल्लूण जवषार लवंग येसारी बराबरिले त्यांनैंमिहीवांटि नींबूका रसमैं दिन १० षरलकरै पाछैरती १ प्रमाण गोलीबांधै पाछैगोली १ रोजीनाषायतौ भूष घणी वधै. १७ अथवा हरडैकीछालि भाग ६ पीपलि भाग ४ चित्रक भाग २ सींधोल्लूण भाग २ वांकोमिहीं चूर्णकरिटंक२ जलकैसाथिलेतौ अजीरणजाय भूषलागै.१८ अथवा सेक्यो सुहागो टंक २. पीपलि टंक २ सोध्योसींगीमुहरो टंक २

न. टी. डासरया नाम औषधी लिषीछैसो देस भाषामैं डासरया नाम कहैछै. अरपसारिलोकतंतडीक कहैछै. परंतु वर्षारितुमैं येफल होयछै. जंगलमैं. पहाडमैं होयछै. अर हरया रंगका छोटाफल षाटा होयछै देसप्रसिद्धछै.

हिंगलू टंक २ कालीमिरची टंक २ यांनेंमिहीवांटि नींबूकारसमैं दिन १०षरलकरै पाछे मटर प्रमाण गोली बांधै गोली१ तथा २ जलसूं लेतौ ततूकाल अजीरण अर विसूचिका दूरिहोय. यो अजीर्ण कंटकरसछे १९

अथवा सोध्योसींगीमुहरो टंक २ सेक्योसुहागो टंक २ मिरचि टंक २ सींधोलूण टंक २ यांनें मिहीं वांटि पाछे यामैं आदाको रस सेर १ सुसायदे अर दहीनें बांधि वेको जल सेर १ ईमैंसुसायदे अरनींबूको रससेर १ ईमैंसुसावै पाछे ईकीगोलीरती २ प्रमाण बांधै गोली १ रोजीना जलसूं लेतौ अजीर्ण ततूकाल दूरिहोय अरई को सेवन करैतौ आफराको रोग उदरको रोग गोलोसूल ये सारा जाय अरभूषवधै यो क्रव्यादिरसछे २० अथवा दालचिनी टंक १० इलायची टंक १० लवंगटंक १५ सेक्यो सुहागोटंक १० चित्रकटंक १० कालीमिरचि टंक ५ सींधोलूण पईसा ३ भार यांनेंमिहीवांटि टंक १। गरमपाणीसूं लेतौ ततूकाल अजीरणजाय योभी क्रव्यादि चूर्णछे २१येसाराजतन वैद्यरहस्यमैंलिष्याछे. अथवा सूंठि कालीमिरचि पीपलि त्रिफला पाचूलूण सेक्यो सुहागो जवषार साजीपारो सोधीगंधक सोध्योसींगीमुहरो येसर्व बराबरिले पाछें पारागधंककी कजलीकरै पाछेकजलीमैंयेमिलावैपाछे आदाकारसकीपुट७दे पाछे रती१प्रमाणकीगोलीबांधैगोली१तथा२लवंगका क्वाथके साथिलेतौ अजीर्ण तत्कालजाय भूषवधै यो क्षुधासागररसछे २२ अथवा वडी हरडै१००लेत्यानें गऊकीछाछिमैं औटावै पाछेवांकीगुठलीकाढीनाषै पाछे वाहरडैमैं ये औषदि भरैसोलिषूंछूं सूंठि कालीमिरचि पीपलि चव्य चित्रक दालचिनी पाचूलूणसेकीहींग जवषार साजी दोन्यूंजीरा

न. टी. अमृतहरीतकीमैं हरडैमोठीताजी होय जीमैं विनाचुयोडी होय अर पुराणीगली विधीसडेल नहीं चाहिजे अर सेरमैंनग पचास तथा चालीस आसरै चढैवेसी हरडैलेकरवा नैं गऊकी छाछमैं शुद्धकरै गुठली जुगतसौं काढै.

अजमोद निसोत येसर्वबराबरिलेपाछेयांनैं मिहीवांटियांकै नींबूकार सकीपुट १०दे अर यांबराबरि यांमैं चूकोमिलाय वाहरडैमैभरैपाछेयां नैं तावडैसुकायलेपाछे हरडै १ रोजीना पायतौ भूष घणीवधै अजीर णयेक हरडैसूंजायअरमंदाग्निनैंउदरका रोगांनैं गोलानैंसूलनैंसंग्रह णीनैं बंधकुष्ठनैं आफरानैं आमवातनैं यांसारांनैं याहरडै दूरिकरैछे २३ या अमृतहरीतकीछे अथवा कालीमिरचिटंक ७ अजवायणट का २ भर चित्रक टका २ भरपीपलिटंक ७ संचरलूण टंक २ सांभ रोलूणटंक २ सींधोलूणटंक २ पारोटंक १ सोध्योगंधकटका १ भर पीपलामूल टका २ भर सूंठिपईसा ५ भर हरडैकीछालिपईसा ५ भर बहेडाकीछालिटंक ५ जीरोटका १ भर चव्यटंक ५ यांसारासूं आधीलवंग प्रथम पारागंधककी कजलीकरै पाछैये औषदि मिही वांटि कजलीमैं मिलावै पाछैयांकै आदाका रसकी पुट १० दे अर यां बराबरि यांमैं चूकोमिलावै पाछे ईंकीगोलीमासा २ प्रमाण करै गोली १ जलसूंषायतौ अजीरण ततूकाल जाय अर ईंको सेवनक रैतौ भूषघणी वधै सर्वरोगमात्र ईंसूंदूरिहोय सरीरनैंपुष्टकरै यालवं गामृतगुटिकाछे २४ ये सारावैद्यविनोदमैं लिष्याछे. ४ अथवा दाल चिनी टंक ५ लवंगटंक १० दोन्यूजीरा टंक १० सूंठिटंक १० का लीमिरचिटंक ५ अजमोदटंक ५ हरडैकी छालिटंक ५ पत्रजटंक ५ डासख्याटंक १० सींधोलूण टंक २० संचरलूण टंक २० निसोतटं क १५ सोनामुषी । पावअनारदणा अधशेर ॥ यांसारांनैमिंही वांटि यांकैनींबूकारसकी पुट १० दे पाछे यांबराबरि यांमैं चूकोमिला वै पाछैईनैं सुकायजाव तासूं अमृवानमैं भरिराषै पाछे ईनैं टंक २ जलसूं लेतौ अजीरण.ततूकालमिटै अर ईंकोसेवनकरैतौ बंधकुष्ठनैं

* ऊपरकहीछै अमृतहरीतकी सो ऊत्तम हरडै नग १०० लेणी. और मंदआंचसूं छाछ मैं पकावणी. जीमैं गुठली तजबीजसैं काढणी. कारण हरडै साबूतरहै. और मुसाला औष धीकामाहिनैं षूब दाबकर भरणा ऊपर दोरा बांधणा चूकोनहींमिलैतौ षटोडी घालणी.

मंदाग्निनैं उदरकारोगनैं गोलानै फियानें सर्वरोगानै योदूरिकरैछै ईचूरणको नामराजवल्लभछै २५ अथवाहरडैकीछालि पीपलि संच रलूण येबराबरिलेयांनैंमिहीवांटि टंक २ गरमपाणीसूंलेतो आफरानें आदिलेर सर्व अजीरणजाय २६ अथवा मिनक्कादाषहरडैकीछालि मिश्री यांतीनोंकीगोलीकरै सहतसूं टंक २ प्रमाणपाछैगोली १ जल सूंलेतो अजीरणजाय २७ येवृंदमैलिष्याछै अथवा जीरो संचरलूण सूंठि मिरचि पीपलि सींधोलूण अजमोद सेकीहींग हरडैकीछालि येसारी अधेलाअधेलाभरिले निसोतटका २ भरलेयांकोमिहीचूर्ण करिटंक २ गरमपाणीसूंलेतो ततकालअजीरणजाय अरभूषवधै योजीरकादिचूरणछै जोगतरंगिणीमैंलिष्योछै २८ अथवा अजमो द हरडैकीछालि चित्रक लवंग दालचिनी सींधोलूण येबराबरिले यां नैंमिहीवांटिटंक २ पाणीसूंलेतो अजीरणजाय भूषलागै योअजमो दादिकचूरणछै २९ योसर्वसंग्रहमैछै अथवासोधीगंधकटंक २ भर चित्रकटका २ भर कालीमिरचिटंक २ पीपलिटंक २ सूंठिटंक ५ ज वषारटंक २ सींधोलूणटंक १ संचरलूणटंक १ सांबरो लूणटंक १ यांनैमिहीवांटि नींबूकारसमैंदिन ७ षरलकरै पाछैटंक १ भरकी गो लीकरै गोली १ जलसूंलेतो अजीरणनैं सूलनैं आंवकादोसनैं गो लानैं आफरानैंततकाल दूरिकरै यागंधकवटीछै ३० यासर्वसंग्रहमै लिषिछै. इति अग्निमांद्यअजीरणकाजतनसंपूर्णम्

अथविसूचिकाकाजतन लिष्यते इकपोत्या लसणकीगुली जीरो सोध्योगंधक सींधोलूण सूंठि कालीमिरचि पीपलि सेकीहींग ये सारी बराबरिलेपाछैयांनैं षरलमैं मिहीवांटि नींबूकारसकीपुट ५० देपाछैईंकी गोली छोटा बोरप्रमाणकीजे गोली १ पाणीसूं दीजैतो

न. टी. जीरकादिचूर्ण प्रसिद्धछै. ईंका सेवनसौं अरुचिरोगजायछै. भूषवधै. चित्तप्रसन्न रहै अर अन्नस्वाद लागै. परंतु ईंमैंसौंनिसोत काढिकै सुध वचनाग घालै अर नींबूकारस का पुट ७ देतौयो बहुत गुणकरै.

विसूचिकाततकालजाय अर अजीरणमिटै भूपलागै ३।१ योंजीरका दिकछै १ अथवा वायविडंग सूंठि पीपलि हरडैकीछालि आंवला वहेडा वच गिलवै सोध्याभिलावा सोध्योसींगीमुहरो ये सारा बराव रिले पाछैयांनैं षरलमैं मिहीवांटि गोमूत्रमैंदिन १ परलकरै पाछैर तीप्रमाण गोलीबांधैपाछै गोली १ आदाकारससूं अजीरणवालानैं देतौ अजीरणजायगोली २ सूंविसूचिकाजायगोली ३ सूंसांपकोका ट्यौ आछोहोयगोली ४ सूंसन्निपातजाय यासंजीवनीगुटिकाछै २ अथवा सेक्योसुहागोटंक ५ पारोटंक ५ सोधीगंधकटंक ५ सोध्यो सींगीमुहरोटंक ५ पीलीकौडीकीराषटंक ५ साजीटंक २ पीपलिटंक २ सूंठिटंक २ कालीमिरचिटंक २ भरप्रथमपारागंधककीकजलीकरै पाछैये औषदिमिलावैपाछैजंभीरीकारसमैंदिन ८ षरलकरै पाछैर ती १ प्रमाणगोली १ वासीवालानैंदेतौवासी ततकालआछीहोय यो अग्निकुमाररसछै ३ अथवा आककापानाकोरससेर १ धतूरा का पानकोरससेर १ थोहरीकोदूधसेर ऽ१ सहजणाकीजडकोरस सेर १ कूटटका २ भरसींधोलूणटका २ तेलसेर १ कांजीकोपाणी सेर ४ येसारायेकठाकरि कडाहीमैंमधुरिआंचसूं पकावै योरसमात्र बलिजाय तेल आयरहै तदिईतेलकोमर्दनकरैतौ विसूचिकाअर पक्ष घात ये दोन्यूदूरिहोय ४ ये सरबवैद्यरहस्यमैं लिष्याछै अथवा कि णगचकीजड आंधीझाडाकीजड नींबकीछालि गिलवै कुडाकीछालि यांनैं बराबरिलेपाछै टंक २ कोकाढोकरिदिन ३ लेतौ विसूचिका जाय ५ अथवा हरडैकीछालि वच सेकीहींग इंद्रजव भांगरो संचर लूण. अतीस यांनैं बराबरिले त्यांनैमिहीपीसि टंक २ पाणीसूंलेतौ ववासीरजाय ६ अथवा इलायची मासा ४ लवंग मासा ४ अमल

न. टी. विसूचिका रोगनै बहुधा औषधीलिषीछै. परंतु देसप्रसिद्ध औषधी पलांडूको रसकाढकरवैमैं कालीमिरच अर घृत मिलायकरषावैछै. सोभी आराम होयछै. अरयाहवा प्रवर्तहोतांही देसमैं पलांडू नाम कांदाका साधन

मासो १ जायफल मासा १० यांनेमिहीवांटि मासा ४ गरमपाणी सूंलेतो विसूचिका ततकालजाय ७ अथवा चूकानैं औटाय वेकोर ससेर ऽ१ काढेईरसमैंसींधोल्लूणटंक ५ कूठटंक १० तेल ।. यांसा रानैं येकठाकरिमंदाग्निसूंपकावै औरसर्वबलिजायतेलमात्रआयरहै तदिवैतेलको मर्दन करैतो विसूचिकादूरिहोय. ८

अथवा जौवांको चूनपईसा ४ भर जवषारटंक ५ यांनेछाछिमैं सिजोय ईंकोगरमगरमलेप करैतो पेटकीसूल विसूचिकाकोसूल दूरि होय ९ अथवा कडवातेलकोगरमगरममर्दन करैतो कूषिकोदरददूरिहोय १० अथवा विसूचिकामैं तिसघणी लागैतोलवंगांको काढो देतौतिसदूरिहोय ११ अथवा विसूचिकाघणीवधैतो वेकापसवाडा मैंडांभदेतो विसूचिकादूरिहोय १२ अथवा विजोराकीजड सूंठि काली मिरचि पीपलि हलद कणगचकी बीज यांनैं बराबरिलै पाछैयांनैं कांजीकारसमैंमिहीपीसि ईंको अंजनकरैतौविसूचिकाजाय १३ ये सर्व संग्रहमै लिष्याछै. इतिविसूचिकाका जतनसंपूर्णम्

अथ अलसविलंबिकाका जतनलि० साबण टंक ६ नीलोथूथो टंक १ यांनैं जलमैंमिहीवांटि गुदाकै लगावैतो तत्काल बंधछूटै अरअलसविलंबिकाजाय १४ अथवा दारुहलद चोषकूठ सोंफ हींग सींधोल्लूण यांनैं बराबरिले यांनैंकांजीका पाणीमैं मिही वांटि गरमकरै पाछै उदरकै लेपकरैतो अलस अरविलंबिकादूरिहोय १५ अथवा जौवांको चून अधपाव ऽ१ ईमै साजीटंक ऽ१ भरनाषिईनैं पकाय कूषकै गरम लेपकरैतौविसूचिका अलस विलंबिका दूरिहोय १६ इतिविसूचिका अलसविलंबिकाका जतन संपूर्णम् अथ कृमिरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनलि० प्रथमकृमिदोय प्रकारकीछै जीमैं

न. टी. कृमिरोगकैवास्तै अनेक औषधीछै. परंतु विलायती वैद्यांका उपायमैं एक तरहका मिठाईका अनेक आकारका ष्यालआवैछै. जीनैं उनमानमाफिक बालककाहातमैं सूंपैतौवो बालक मीठाकालोभसूंषाय जावै. जदांवैं बालकका पेटकी कृमीसर्व नीषलपडैछै.

येकतौ वाहरली १ दूसरी माहिली २ वाहरल्यांकौ जनमतौच्यारि जागांछे. एकतोमूलनामगुदासूं उपजैलट १ एकपसेवसूंउपजैजूं २ लीष ३ चमजूं ४ अथमाहिलीकृमिकी उत्पत्तिलि० अजीर्णमें भोज नकरैरोजीनामीठोषाटो अर पतलोभीषाय अर भोजन करिपेदकरै नहीं अरदिनमेंसोवे अरविरुद्ध भोजनकरै तींपुरसकैपेटमेंकृमिपडि जाय गिंडोलाउगैरैसर्व २१ प्रकारका जीमें दोय भागछे. अथजीं कापेटमें गिंडोलाउगैरै कृमिपडिगईहोय तींको लक्षणलि० जुरहोय आवे शरीरको रंग औरसो होय जाय पेटमें सूलचाले हियो दूपे छादणी आवे भ्रमहोय आवे भोजनमें रुचिनहीं. अतिसारहोय आ वे येलक्षणजींके होय तदिजाणिजे ईंकापेटमें कृमिगिंडोलाछे १ अ थ कृमिरोगका दूरिकरिवाको जतन लिष्यते पुरासाणी अजवायणटं क २ वास्यापाणीसूं लेतोंपेटकी कृमि झडिपडे २ अथवा पलास पा पडानें पाणीमें वांटि टंक १ सहत टंक २ वेरसमैंघालिदिन ५ पीवे तों पेटकी कृमिजाय ३ अथवा वायविडंग टंक २ मिहीवांटि रोजी नादिन ७ सहतसूं लेतो पेटकी कृमिजाय ४ अथवा वायविडंग सीं धोलूण हरडेकीछालि जवषार येबराबरिले पाछे यांनै मिहीवांटि टंक २ छाछिसूं दिन ७ पीवे तोंपेटकी कृमिझडिपडे ५ अथवा नींबका पत्राको रसटंक १० मिलायदिन ७ पीवेतो पेटकी कृमिजाय ६ अ थवा पारो टंक १ सोधीगंधक टंक २ पुराषाणी अजवायणी टंक ३ बकायणकावक्का टंक ४ पलास पापडो टंक ५ यांनैमिहीवांटि टंक २ सहत टंक ५ सूं रोजीनादिन ७ चाटैतो पेटकी कृमिजाय ७ ये सा

विसूचिका रोगछैसो संकृतनामछै. ओर यांग्रंथमैं ईंको नामवासी कहैछै. ओर घणालो कईरोगनै मरीकहैछै तथामरकी. तथा महामारी तथा जरीमरी तथा हैजाको रोगबी कहैछै. दाक्तरलोककोलेरामारवश कहैछै. ईंरोगकी उत्पत्ति अजीर्णसूं औरगंदी बदवोहसूं पेटमैं मलविगडवासूं होयछै. ईंवास्तै चोषो भोजन, धोयाकपडा. सफाजायगां. निर्मल हवा. निर्म लजल आछी षसबो ईसी जायगां योरोग होय नहीं. तथा थोडो होयछै.

रासर्वसंग्रहमैंलिष्याछै अथवा नागरमोथो त्रिफला देवदारु सहज णाकीजड यांनैं बराबरिलै पाछैयांनैं जौकूटकरि टंक ५ कोकाढो दिन ७लेतौपेटकीकृमिजाय ८अथवा वायविडंगसींधोलूणसेकीहींग पीपलि कपेलो संचरलूण यांनैं बराबरिले यांनैंमिहीपीसिटंक २ ग रम पाणीसूं दिन ७ लेतौ पेटकी कृमिजाय ९ ये सर्ववैद्यविनोदमैं लिष्याछै. अथमाथामैंजूं लीषपडगईहोय तींकादूरिकरिवाको जतन लिष्यते. धत्तूराका पानाका रसमैं अथवा नागरवेलीका पानाकार समैं पारानै मिलाय यांको बालामैंलेपकरै जूंपडिहोय जठैतौ जूंली षमरिजाय १ अथ गुदामैं चूरण्याहोय तींकादूरिकरिवाको जतन लिष्यते लसण मिरचि सींधोलूण हींग येसर्व बराबरिले पाछै यांनैं जलमैं वांटि गुदामांहि लेप करैतौ चूरण्या मरै १

अथवा महुवाका फूल वायविडंग कलहारीकीजड मैंडल चंदन राल षस कूठ भिलावा लोहबान यांनैं बराबरीले पाछैयांकी धूंणीदे तौ माछर षटमल येसारा घरमैंसूं जातारहै. २ येवैद्यरहस्यमैं वै द्यविनोदमैं लिष्याछै इति कृमिरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्ण. अथ पांडुरोग कामलारोग हलीमकरोग यांकी उत्पत्ति लक्षण जत न लि० अथ पांडुरोग पांच प्रकारसूं ऊपजैछै. वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ येकमाटी काषावाको ५ अथ पांडुरोग कीउत्पत्तिलिष्यते घणांषेदकाकरिवासूं घणी षटाईका षावासुं दिन का सोवासूं घणीतीषीवस्तका षावासूं इतनी वस्तका सेवासूं वात पित्त कफहैसो पुरुषकालोहीनै विगाड अरवेंका सरीरकी त्वचानेंपि लीकरिदेवै १ अथ पांडुरोगका पूरबरूपको लक्षणलि० त्वचाफा टिवालागिजाय. अंगामैं पीडाहोय माटी षावाकीइच्छारहै. आं

न. टी. कृमिरोगकाजतनसर्व जातका ईग्रंथमैं लिष्याछै. जोरीतसौंकरसीतौरोगीसुषीहोसी अरसरीरकैमाहिलाकृमितौऔषधी काषावासौं जायछै. अरसरीरकैवाहरलालेपादिकसौंजायछै जूंलिष. चमजूं. अरओरषठमला दिकधूंणीसौंजायछै.

ष्यांऊपरि क्योंसोईहोय मल मूत्रपीलोहोय अन्न पचैनहीं येलक्षण जींकैहोय तदि वैद्य कहैथारै पांडुरोग होसी. ईपांडुरोगनैं लोकीक मैं पील्यो कहैछै. १ अथवायका पांडुरोगको लक्षणलि० जींकीत्व चा मूत्र नेत्र येलूषाहोय अथवा कालो होय अथवा लालहोय अ रसरीरमैं कंपहोयपीडाहोय आफरोहोय भ्रमादिकहोय तदिजाणि जे वायको पांडुरोगछै १ अथपित्तका पांडुरोगको लक्षणलि० मल मूत्रनेत्रजींकापीलाहोय सरीरमैं दाह तिस अरजुर येभीहोय मल पतलो जाय सरीरकी त्वचापीलीहोय तदिजाणिजैपित्तको पांडुरोग छै. २ अथकफका पांडुरोगकोलक्षण लिष्यते मुषसूं कफनीकलै स सरीरकैसोजोहोय तंद्राहोय आलसहोय सरीर भार्‍योहोय सरीर कीत्वचा मूत्र नेत्र येसुपेदहोय तदिजाणिजै कफको पांडुरोगछै. ३ अथ सन्निपातका पांडुरोगको लक्षण लिष्यते कषायली माटी षाय जींकै वायको कोपहोय मीठीमाटीषाय जींकै कफको कोपहोय पाछै वामाटीषाई हैसो सातूधातानैं अरभोजनकर्‍योहोय तीनैं लूषोकरि नाषै पाछै वापेटमैं माटीहोयसोविगरि पकी थकीनसानैं फुलायदे अथवा रस वहवासूं रोकदे तदि सारीइंद्रियांको बल जातोरहै. अर सरीरकोवीर्य अर पराक्रमभीजातोरहै तदिवापेटमैं षाईमाटी सरी रकीत्वचानैं पीलीकरि बलवर्ण अग्नि यांको नासकरै तदि वेंकै तंद्रा होय आलसआवै षाससास सूल ववासीर अरुचि आंष्यां ऊपरि सोजो पगांकै सोजो इंद्रीकै सोजोपेटमैकृमी. अतिसार मल कफ लो हीसौंमिल्यो येसर्व लक्षणहोय तदि जाणिजैईकै माटी षावाको पांडु रोगछै. अथ पांडुरोगको असाध्यलक्षणलिष्यते. सरीरको लोही जा तोरहै सरीर सुपेदहोजाय. दांत नख नेत्र पीलाहोजाय संपूरण बैनै

न. टी. पांडुरोगकीसंप्राप्तिहोयपाछै औषधीनहीबणैतौकमलादिकहोयछै. जीसौंपांडुरोग होतांहीजतनकरणो. अरघणोबालकांकैअथवास्त्रियांकै योरोगहोयछै. सोमृत्तिकाका षावासौं होयछै. पेटमैं जमावटसौंजीनैं मांडूरषुवाजो.

पीलोही पीलोदीषै. अर सारासरीरमै सोईहोय आवै अतिसार अ रज्वर होयआवै ऐसो पांडुरोगी मरिजाय १ अथ कामलारोगको लक्षणलिष्यते. जोपांडुरोगीगरमवस्तघणीषाय वेंकै पित्तहैसो लोही अर मांसनैं दग्ध करै वेंकानेत्र हलद सिरका करै अरवेंकी त्वचा नषमूंढोहलदका रंगसिरको करिदे अरवेंको मल मूत्र रुधिर सरीसो करिदे मींडकाका वर्णसिरीसो होजाय इंद्रियांको बल जातोरहै दाह होय आवै अन्न पचैनहीं दुर्बलताहोय अरुचिहोय येलक्षण होय तदि कामला रोगजाणिजे अथहलीमकरोगको लक्षणलि० जींपांडु रोगींकैवायपित्तवधैतदिवेंकीत्वचाहरी कालीपीलीहोजाय अरवेंको बलउत्साहजातोरहै अर तंद्रामंदाग्नि मिहीज्वर दाह तिस अरुचि भय येसाराहोयआवै स्त्रीसंगप्यारोनहींलागै अंगामैंपीडहोय तदि हलीमकरोग जाणिजे. अथ पांडुरोगको जतन लिष्यते सारनैं गोमूत्रमैंदिन ७ पकावै पाछैईनैंमिहीवांटि जलसूं टंक १ रोजीनादिन १५ लेतोपांडुरोगजाय १ अथवागोमूत्रमैं पकायोमांडूरतीनै टंक १ गुडकैसाथि दिन १५ लेतो पांडुरोग जाय २ अथवा साठीकी जड निसोत सूंठि मिरचि पीपलि वायविडंग दारुहलद चित्रक कूठ हलद त्रिफला दांत्युणी चव्य इंद्रजव कुटकी पीपलामूल नागरमोथो काकडासींगी. करेलणी अजवाणी. कायफल येसारा टका टका भरि लेपाछै यांनैंमिहीवांटि यांसूं दूणो ईमैं मांडूर मिलावै पाछैयांनै आठगुणा गोमूत्रमै पकावै पाछै ईकीगोली टंक १ प्रमाण बांधै पाछै गोली १ गऊकीछाछिकै सामिल दिन १५ लेतो पांडुरोग असाध्य भीजाय अर योही कामलरोगनैं हलीमकरोगनैं सासनैं षासीनैं ज्वरनैं सोजानैं सूलनैं फियानैं आफरानैं ववासीरनैं संग्रहणीनैं कृमि

न. टी. मांडूरकहासो लोहाकाकीटसौंबणैछै पुराणी लोहकीकांटीजीनैं बुझावासौंसुद्धकरै. अग्निमैंपुटांसूंफूकिलैजींकीक्रियाग्रंथमैंछै. सोवोमांडूर. अरपुनर्नवादिऔषधिलिषीछैसोवासाठीकी जडछै. येक्रियासौंकरैजीनैपुनर्नवादिमंडूरकहैछै. गुणऊपर लिष्याछै.

रोगनैं वातरक्तनैं कोढनैं यांसारां रोगानैं ईंका सेवनसूंयेदूरि होयछै.
योपुनर्नवादि मंडूरछै. १ अथवा हरडैकीछालि टंक ५ आंवला टंक
५ बहेडाकीछालि टंक ५ सूंठिटंक ५ कालीमिरचि टंक ५ पीपलि
टंक ५ नागरमोथोटंक ५ वायविडंग टंक ५ चित्रकटंक ५ माख्यो
सार पईसा ९ भरयां सारांनैंमिहीवांटि यांमैंसारमिलावे पाछैरती ९
ईनैं सहतकैसाथिले अथवा घृतकैसाथिले अथवा गऊकीछाछिकै
साथिले अथवा गोमूत्रकैसाथिलेतौ पांडुरोगनैं सोजानैं अग्निमांद्यनैं
ववासीरनैं यांरोगांनैं योनवायसचूरणदूरि करैछै दिन १५ ईंको से
वनकरै प्रथमदिवस ईनैंरती २ पाय पाछै ईनैं रतीदोय २ रोजीना
वधे अठराररतीतांई यो नवायसचूर्णवधावैछै २ अथवा अरडूसो गि
लवै नींबकीछालि त्रिफला चिरायतौ कुटकी ये बराबरिले यांनैं जौकू
टकरि टंक २ कोकाढो करितीमैंसहत मिलाय दिन १० लेतौ पांडु
रोगनैं रक्तपित्तनैं कामलारोगनैं हलीमकरोगनैं यां रोगांनैं यो दूरि
करैछै ३ अथवा त्रिफलाकोरस अथवा गिलवैकोरस अथवा दारुह
लदकोरस अथवा नींबको रस यांरसांमैं सहतमिलाय दिन १० पी
वैतौ पांडुरोग कामला हलीमक येसर्व जाय ४ अथवा* दडघल को
रसनेत्रांमैं आंजेतौ पांडुरोग कामलारोग हलीमकजाय ५ यो वैद्य
रहस्यमैं लिष्योछै. अथवा चिरायतौ कुटकी देवदारु नागरमोथो गि
लवै पटोल धमासो पित्तपापडो नींबकीछालि सूंठि कालीमिरचि पी
पलि चित्रक त्रिफला वायविडंग यांनैं बराबरिले पा० मिहीपीसि
यांबराबरि ईमैं सार मिलावै पाछै ईनैं टंक १ सहतसूं अथवा छा
छिसूं रोजीना लेतौ पांडुरोगनैं कमलानैं हलीमकनैं सोजानैं प्रमे

---

* दडघलनामऔषधीछैसूंराजसस्थानमैंईनैंदडघलकहैछैओर कुकरडीबीईनैकहैछै. जींकै सिट्टो लालऊपरसूंनीचैसूंसुपेदआवैछै. सिट्टामैंबीजकाला अरछोटाबारीकहोयछै जींकापान तींखातीषाखोराऊपरनीचैसूंगोलहोयछै. ओर मारवाड देसमैं दडघलकोसाग करैछै. कडी बीकरैछै. कूकरडीतथादडघलप्रसिद्धछै.

हनें संग्रहणीनें सासनें षासनें रक्तपित्तनें ववासीरनें आमवातनें गोलानें कोढनें यांरोगानें यो अष्टादशांग अवलेह दूरि करेंछे. ६ यो भावप्रकासमें कह्योछे. अथवा कडवी तूंबीकीगिरिका रसकी नास देतौ तत्काल पील्योजाय ७ अरपांडुरोग वालोजव गोहूं चावल मूंग अरहड मसूर येषाय. इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्र श्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचितेअमृतसागरनामग्रंथेअजीरणमंदाग्निभस्मक विसूचिका अलसविलंबिकाकृमिरोग पांडुरोग यांकी उत्पत्तिलक्षणजतननिरूपणंनामचतुर्थस्तरंगःसंपूर्णम् ४

५ अथरक्तपित्तरोगकीउत्पत्ति लक्षण जतनलि० घणातावडामें रहवासूं घणाषेदसूं घणाचालिवासूं घणामैथुनसूं तीषीवस्तकाषावासूं घणासोचसूं गरमवस्तकाषावासूं षारीवस्तकाषावासूं लूण षटाईकाषावासूं कडवीवस्तका षावासूं यांसूंपित्तदग्धहोय शरीरकालोहीनेंदग्धकरेंछे. तदिवेकोलोही २ दोयतरहकरिप्रवर्तहोयछे. येकऊपर १ येकनीचै २ ऊपरतोनांकमाहिंकर नेत्रांमें कानमें मूंढामें यांमेंप्रवर्तहोयछे. अरलिंगेंद्रीमेंयोनिमेंगुदामें याद्वारांनीचेंप्रवर्तहोयछे. अरघणोलोही कुपितहोयतो सर्वबालांमांहिप्रवर्त होयछे. अथरक्तपित्तकोपूर्वरूपलिष्यते अंगांमेपीडाहोय ठंडी सुहावें मूंढामें धूंवोनीकलै वमनहोय लोहीमुंढामें आवें येलक्षणहोय तदिजाणिजे रक्तपित्तहोसी अथ कफकारक्तपित्तको लक्षणलि० जाडोपीलोचीकणो मोरकाचंदवासिरको लोहीहोयतो कफको जाणिजे. अथ वायका रक्तपित्तको लक्षणलिष्यते कालो झागासमेत मिहीं धारनेलीयांलूषोलोहीहोय तौवायकोजाणिजे अथपित्तकारक्तपित्तको लक्षणलिष्यते. षैरका काटा सिरकोकालोगोमूतसिरको स्याहीसिरीसोचीकणो इसो लोही

न. टी. कामलापांडुरोगांपरपथ्यलि०. जुलाबउलटी. लालचावल. मूंग. तूर. गहूं. तुराई काचा वैंगण. कांदा. लसण. छाछ. केंशर. ऊषलाल. घृत. माषन. गरमभोजन. गरम जलसूंस्नानशुद्धवस्त्र. पवित्रहवा. इत्यादिकरणा.

होयतौपित्तको जाणिजे अरये सर्वलक्षण लोहीमैंमिलैतौ संनिपात कोजाणिजे नाकमूंढो आंपि कानमैं होय लोहीजायतौ साध्यजाणि जै. गुदालिंगयोनिमैं होयकरि जायतौ जाप्यजाणिजै दोन्यूं मार्गांसूं जायतौ असाध्यजाणिजे. अथरक्तपित्तका उपद्रवलिष्यते रोगांसूंजीं कोषीण शरीरहोय अरबूढोहोय लंघन करतोहोय दुर्बलहोय जींके योरोग असाध्यछै. अर षास सासज्वर वमनमदलियां पांडुरोगीकै दाहमूर्छा अधैर्यवानकैहीयोदूषतोहोयजींकै तिसवालाकै अतिसार वालाकै भोजनकीअरुचिवालाकै इतनाकै होयतौ उपद्रवजाणिजैं. अररक्तपित्तवालानैं आकाश भीलालदीषै सोअसाध्य अर लोही दीषै अरलालजींकानेत्रहोय अरलोहीकीजींकैडकारआवै अरसर बत्र लोहीसोदेषैतौं ओअसाध्य अथ रक्तपित्तकोजतनलिष्यते नक सीरवालानैं मूंढामैं लोहीपडैजीनैं जुलाबदीजे हरडै त्रिफलानिसोत किरमालो यांका जुलाबसूं रक्तपित्तजाय १ अथवा नीचरला मार्गको रक्तपित्त वमनसूंजाय. २ अथवा षस कमलगट्टा अरडूसो गिलवे महलौठी महुवो नागरमोथो रक्तचंदन धणो येसारा बराबरिले यां कोटंक २ को काढोसहतनाषिलेतौ रक्तपित्तजाय ३ अथवा फूल प्रि यंगू लोद रसोत चाककी माटी अरडूसो यांनैं बराबरिलेपाछै टंक २ को काढोसहतमिश्रीमिलाय दिन १० लेतौरक्तपित्तजाय ४ अथवा दोबका रसकी अथवादाड्यूंकाफूलांका रसकी अथवा अलताका रसकी अथवा हरडैकी सीतल जलमैं वांटितींकारसकी नासदेतौ नकसीरदूरिहोय ५ अथवा दोब आंवला वांटमाथाकै लेपकरैतौ नकसीरतत्काल बंधहोय ६ अथवा पक्यागुलरीकाफल अथवाछु वाराअथवादाष येसहतसूं षायतौ रक्तपित्तजाय ७ येसारावैद्यवि

न. टी. पांडुरोगीनैं इतनीवरजीछै. हुकोपीणो. गांजो. तमाषू. चिलम. स्त्रीसंग. मूंगफली. सर्वजातकीपानकीभाजी. हिंग. मिरच. तेल. आचार उडद. मद्य. पानतमाषू. सुपारी. पटाई मात्र. गरमदाहकाकरवावालापदार्थ लालमिरचनैं आदिलेरमनाछै.

नोदमैं लिष्याछै. अथवा धणों आंवला अरडूसो दाष पित्तपापडो येसारा बराबरिले पाछै टंक ४ सीतलजलमैं भेय वेपाणीमै वांटि छाणि पीवैतौ रक्तपित्तजाय जूर दाह तिस सोसयेभीजाय ८

अथवा मिनक्का दाष चंदन लोदफूल प्रियंगु येबराबरिले यांनैं मिहीवांटी सहतसूंदिन १० चाटैतौरक्तपित्तजाय सर्वप्रकारको ९ अथवा वसंतमालतीरस बोल बद्ध पर्पटीरस पाछैलिष्याछै त्यांसूंभी नकसीर आच्छीहोय १० अथवा प्याजकारसकी नासलेतौ नकसीरबंधहोय ११ अथवा सौवारको धोयोघृत मस्तगकै लेपकरैतौ नकसीर बंधहोय १२ अथवा बडोपक्कोपेठोलेतींका बीजछोंत दूरि करि पाणीमैं पकाय वेनैंठंडो करिगाढवस्त्रसूं वैपेठाको जल काढै ओजल जुदाबासणमैं राषै अरपेठानैं कडाहीमैं घृतघालितलिलेवे नैषरोकरै बलिवादेनहींपाछै वेपेठाकारसमैं मिश्रीकीचासणीकरै पाछै वेंचासणीनैं वैपेठामैं नाषै अरपीपलिटका २ भर सूंठिटका २ भर जीरोटका २ भर धणोटंक ५ पत्रज टंक ५ इलायची टंक ५ कालीमिरचि टंक ५ तजटंक ५ वंसलोचनटंक ५ यांनैमिहीवांटि वे चासणीमैंनाषै अरपाव सहत ईंचासणीमैं नाषै पाछैईनैटंक १ तथा २ भर रोजीना षायतौ रक्तपित्तनैं ज्वरनैं तिसनैं दाहनैं प्रदरनै पीणतानैं वमननैं स्वरभंगनैं षासनै सासनैं क्षयीनैं यांसारांनैं योपेठाको अवलेह दूरिकरैछै. अर सरीरनैं घणोपुष्ट करैछै. इतिपेठाको अवलेह १३ अथवा इलायची पत्रज वंसलोचन तज दाष पीपलि येसारी पईसा पईसा भरिले पाछै यांनैं मिहीवांटि मिश्रीटका १ महलौठी टका १ दाषटका १ छवांरा टका १ भरयानैंमिहीवांटि वामै मिलाय सहत टंक २ मैंगोलीबाधै गोली १ रोजीना षायतौ रक्तपि

न. टी. रक्तपित्तरोगछैसोमहाषराबछै जैसोसीतपित्तवैसोहीयेछैसोघणादिनरह्यासूं असाध्य होयसोअसाध्यहुवो नाक मुषवगैरै सर्वइंद्रियांहोयकरलोहीपडवालागजाय अरसारासरीरफूटजायजीसूंमनुष्यबोतदुषपावैछै. ईंवास्तैजल्दीउपावकरणो.

त्तनैं सासनैं षासनैं पित्तज्वरनैं हिचकीनैं मूर्छानैं मदनैं भ्रमनैं तिस
नैंपसवाडाकी सूलनैं अरुचिनै सोसनैं स्वरभंगनैं क्षयीनैं याएला
दिगुटिकायांरोगानैं योदूरिकरैछै अर पुष्टाई करैछै. इति एलादि गु
टिका येजतन वैद्यरहस्यमें लिष्याछै १४ इतिरक्तपित्तका जतनसंपू
णम् अथ राजरोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनलि० राजरोगतो ५ प्रका
रकोछै वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ हियांमेंचोट
लागिवाको ५ अरसोसरोग ६ प्रकारकोछै. एकतौ स्त्रियांका घणा
संगकरिवासूं १ घणासोचसूं २ गंभीरादिकव्रण अर हियामैं चोट
घणीलागिहोय जीसूं ३ मार्गका घणाचालिवासूं ४ घणाषेदसूं ५
बूढापणासूं ६ अथ राजरोगकी उत्पत्ति लिष्यते मलमूत्र अधोवाय
कारोकिवासूं अर वीर्यकाक्षीणपणासूं घणासाहसपणा करि आपसूं
नहोय सोकरैतीसूं विगरिसमैं घणां भोजन करिवासूंयांसूं यो त्रिदो
षरूपी राजरोग पैदाहोयछै सोईरोगमैं कफप्रधानछै सोयो कफ घ
णांस्त्रीसंगकरिवासूं रसनैं वहवावालीनाड्यांनैं रोकैछै. वीर्यनैं षीण
करैछै पाछैसारीधातांनैं षीणकरैछै. तदिओमनुष्य दिनदिनसूंकिवा
लागै याईकीउत्पत्तिछै अथ राजरोगको पूर्वरूप लिष्यते सास अं
गामेंपीडा षासीकरि कफकोथूकिवो तालवाकासोस वमन अग्निकी
मंदता पीनस षासी नींदघणीआवै आष्यांको सुपेद होवो मांसकी
षावाकी इच्छा मैथुनकी इच्छारहै येलक्षण मनुष्यकै होयतौ जा
णिजे राजरोग पैदाहोसी अथराजरोगकोलक्षणलि० कांधामैं अर
पसवाडामैं संतापहोय अर वेकाहाथपगवलै अर सर्वांगमैं जुररहै
तदिजाणिजे ईकै राजरोगछै १ अथवा भोजन मात्रमैं रुचिनहोय.

* रक्तपित्तकोरोगअसाध्यछै. जीसूं. हात. पग. नष. कैंस. नाक. रोमरोम. गुदा. इं
योनीं. यांमार्गांसूंवातपित्त. कफसूंविगड्योथकोरक्त अनेकप्रकारकारंगनैंलीयांसरीरमाहिसूं
नींकलवालागजायछै. सरीरविगडजायछै. सूंईरोगवालानैं भीलावासंबंधी औषधी गुणघणो
करैछै. जाबतासूंदेवैतो.

ज्वरहोय षास स्वास होय मूंढामें लोही आवै अरस्वरभंगहोययेछे
६ लक्षण होयतौजाणिजेये राजरोगछे २ अथवायका राजरोगको
लक्षणलि० स्वरभेदहोयसूलहोय कांधा अरपसवाडाको संकोचहो
यतौ वायकौ जाणिजै अथपित्तका राजरोगको लक्षणलि० जुरहोय
दाहहोय अतिसारहोय लोहीमूंढामें आवैतौराजरोग पित्तकोजा
णिजै. अथ कफका राजरोगकोलक्षणलि० माथो भारयौरहै. भोजन
मैरुचिनहींरहैषासीहोय कंठसूंबोल्यौजायनहीं तौराजरोगकफको
जाणिजै ३ राजरोगका ५ सोसरोगछे ६ येग्यारा ११ सर्वलक्षण
मिल्याहोयतौ राजरोग सन्निपातकोजाणिजे ४ अथहियामें चोटला
गिवासूं उपज्योजो राजरोग तींकोलक्षणलि० सिरमैंपीडाहोय मूंढा
मैसूं लोहीकोवमन होय सरीर लूषो पडिजाय ओराजरोगी असा
ध्यजाणिजे १ अथवासुपेदसुपेदजीकैआंषिहोय अन्नकापावामैं अ
रुचिहोय अरसासकोरोगजीकै वधिजाय प्रमेहकोरोग घणोहोजाय
अरघणोमूतै ओराजरोगी मरिजाय २ अथ ईराजरोगीकी अव
धिलि० भलोसास्त्रकोवेत्तासर्वजतनउगैरैक्रियामैंकुसल इसोवैद्यतो
जतनकोकर्त्तामिलै अर ओरोगीतरुणहोय अरद्रव्यवानहोय वैद्यक
हैसो करै अरजितेंद्रिहोय सोभीदिन १००० दिनताईजीवै उपरांति
नहींजीवै अथक्यूंकसाध्य राजरोगको लक्षणलिष्यते जींकै जुरनहीं
होय अर वो बलवानहोय अर वैद्य कडवीऔषधि कषायली देजी
नैषाय जाय अरभूषजींकीतीव्र होय अरसरीरपुष्टहोय येराजरोगी
काजतनकरजे १ अथघणां मैथुनकरवासूं उपज्योजो सोसरोगतीं
कालक्षणलि० लिंगेंद्रीमैं पोतामैं पीडहोय मैथुन करवामैंशक्तिनहीं
होय पाछै हाडांको नासहोय अर राजरोगका उपद्रव कह्यासोहोय

न. टी. राजरोगपांचप्रकारको कफ. वात. पित्त. सन्निपात. शस्त्रादिककाप्रहारको. अरसो
सरोग ६ प्रकारकोजुमलैग्याराहोय ११ योग्याराकालक्षण. एकहीमैं. एकहीबगतमैरोगीकास
रीरमैंनिजरआवैतौवेनैंसन्निपातकोराजरोगजाणिज्यो. राजरोगकीसासरोगकीसमीपताछै.

सरीरपीलोहोय चिंताग्रस्तहोय शिथलअंगहोय येलक्षण होयं त दिजाणिजे ईकेमैथुनकरिसोस हुवोछे २ अर सोचकर सोसरोग हुवोहोय तींकोभी योही लक्षणछे. येकईमें वीर्यकोक्षयनहीं ३ अथ जरासोसीको लक्षणलि० कृसहोय जाय वीर्य बुद्धि बलये जातारहे सरीरकांपे भोजनमें अरुचिहोय घांघोबोले अर कफघणोंथूके स रीर भाख्योहोय पीनसहोय लूषो सरीरहोय येजीमें लक्षण होय तदि जाणिजे योजरासोसीछे. ४ अथ मार्गसोसीकालक्षणलि० अर जरासोसीकालक्षणसूं मिल्याछे पणिवेंके हियामें पीडनहीहोय ५ अथगंभीरादिकव्रणसूं उपज्यो जो सोसतींको लक्षणलि० घणी तीरंदाजीकरिवासूं भारकाउठावासूं यांसूंहियामेंजोर आयपडे अर घणोमैथुनकरे लूषोषाय तदिवेंकाहियामें योरोग पैदाहोय तींको हियोघणोंदूषे पसवाडादूषे अंगसूके अंगांमें कांपणीहोय अरवी र्यबलवर्णरुचि अग्नियेसर्व घटिजाय लोहीछादे लोहीमूतेपसवाडो पीठीकटियेदूषे अर ज्वर होय आवेगरीबसोहोयजाय अतिसार होय षासीहोय येसर्वलक्षणहोय तदिजाणिजे ईके व्रणसोसको रोगछे ६ अथ राजरोग अरसोसरोग यांका जतनलि० वंसलोच नटंक ८ पीपलिटंक ४ इलायचीटंक २ तजटंक १ मिश्रीटंक १६ यांनेमिहींवांटिसहत माषनकेसाथिचाटेतो राजरोगनें सासषासनें पित्तज्वरनें पासूंकासूलनें मंदाग्निनें अरुचिनें हाथपगांकादाहनें रक्तपित्तनें यांसारांनेंयोदूरिकरेछे. योसीतोपलादिअवलेहछे. अथ वा गिलोयसत सार येटंक १ ले पाछे सहत माषनसूं चाटेतो राज रोगजाय २ अथवा माख्योपारो ३ भाग सोनाकीराष २ भाग मे णशिल १ भाग गंधक १ भागयांसारांनें येकठांकरि वडीपीलीको

न. टी. राजमृगांकमें स्वर्णभस्मलिषीछै सोयथोक्तरीतछै. परंतु केईकवैद्यस्वर्णका वरषमि लावैछै. सोयोअनुक्तछै. अरशुद्धपारदघालेछै. सोवीअनुक्तछै. पाराकीभस्मको योगकरणो. मणौशीलशुद्ध. अरगंधकशुद्धलेणी.

डीमैं भरै पाछैं बकरीकादूधमैंसुहागानैं वांटिवेसुहागासूं वांकौड्या का मूंढानैं मूंदै पछैवांकौड्यांनैं कूल्हडीमैंमेल्हिषामदे गजपूटमैंफूं किदे पाछै स्वांगसीतल हुवां वेनेंकाढै योराजमृगांकरसछैइनैरती ४ महिनो १ वर्द्धमानपींपलिसूंपीपलि ३ सूं २१ तांई सहत माषन मिलाय लेतो राजरोग मूकर जाय योराजमृगांकरसछै. ३ अथवा भीमसेनीकपूर टंक ५ तजटंक ५ कंकोल मिरचिटंक ५ जायफल टंक ५ लवंगटंक ५ नागकेसर टंक ७ पीपलि टंक ८ सूंठिटंक ९ यांसर्वकीबराबरिमिश्रीयांनैमिहीवांटिसहतउगेरै अनेक अनुपान सूंटंक १ लेतौराजरोगनैं अरुचिनैं क्षयीनैं सासनै षासनैं गोलाव वासीरनैं वमननैं कंठकारोगनैंयां सारांनैं योदूरिकरैछै. ४ योकपू रादिचूर्णछै अथवासोधीगंधकटंक ५ अभ्रकटंक ५ सोध्योपारो टंक ५ हींगलू टंक २ मैणसिलटंक १ प्रथमपारागंधककीकजली करै पाछैंईमैंयेऔषदिमिलाय पाछैयां सारांसूं आधोईमैंसारमिला वैपाछैषरलमैं यांनैघालियांकैसतावरीकारसकीपुट १४ देर ईनैंसु कायलेपाछैरती २ तथा ३ मिश्रीकैसाथिप्रातःसमयषायतौराज रोगनैं वायपित्त कफकारोगांनैं सर्वज्वरनैं योदूरिकरैछै. योकुमुदेश्व ररसछै येसारावैद्यरहस्यमैछै अथवा चौलाई रांधितीमैंघृतघालि नित्यभोजनकरैतौ राजरोग बहुमूत्रतादूरिहोय. ६ अथवा हरया आंवला बडापकापांचसैं ५०० लेत्यांनै जलमैंपकावै त्यांकोरसका ढै वैरसमैंपांचसौ ५०० टकाभरिमिश्रीकी चासणीकरिचांदीका वा सणमैं घालिपाछैईचासणीमैं येऔषधिनाषैसोलिषूंछूं मिनक्का दाष अगर चंदन कमलगट्टा इलायची हरडैकीछालि काकोली षीरका कोली रिद्धी वृद्धी मेद महामेद जीवकरिस भक गिलवै काकडासींगी

न. टी. अष्टगणनामऔषधी च्यवनप्रासावलेहमैंलिषीछै सोवैऔषधीशास्त्रमैंलिषीछै. ज्यां कानामइणभांतछै. काकोली १ क्षीरकाकोली २ ऋद्धि ३ वृद्धि ४ मेदा ५ महामेदा ६ जी वक ७ ऋषभक ८ येऔषदिमिलैनहींछै. सोयांकायेवजदूजीछैसोलेणी.

पोहकरमूल कचूर अरडूसो विदारीकंद परेटीजीवंती सालपर्णी पृ ष्ठपर्णी दोन्यूकटाली बीलकीगिरि अरण्यू अरलू कुंभेरपाठ नागर मोथो येसर्व औषधिटकाटकाभरिले त्यांनैंनिपटमिहीवांटि ईंआंव लाका संजोगकीमिश्रीकीचासणीमैंनाषैपाछै ईंचासणीमैंटका ६ भर सहतनाषैपाछै ईंमैंपीपलिटका १ भर नाषैपाछैंईमैं तजटंक २ पत्रजटंक २ नागकेसरिटंक २ इलायचीटंक २ वंसलोचन टंक २ भरयांनैंमिहीवांटिईचासणीमैंनाषै पाछै यांकोयेकजीवकरिटका १ भर रोजीनाषायतौ राजरोगनैं सोस रोगनैं योचिमनप्रास अवं लेह दूरिकरैछै अरयो बलकर्ताछै. सरीरनैंपुष्टकरैछै अरबूढापणा नैंदूरिकरैछै अरसरीरनैंजुवान करैछै. ७ इतिचिमनप्रासअवलेह संपूर्णम् अथवा अरडूसाकोरस अर कट्यालीकोरस टका १ भर तीमैं सहत टका १ भरपीपलिटंक २ मिलाय रोजीनाषायतौ राज रोगदूरिहोय ८ अथवा मृगांक १ भाग पारो १ भाग मोतीअ विंध २ भाग सोधीगंधक २ भाग प्रथम पारागंधककीकजलीकरि सरावामैं मेल्हि वेंकै कपडमाटीदे अर लूणसूं भांडो भरितींकैवीचि सरावोमेल्हिदिन १ आंचदे वेनैं पकाय लेतादिओसीतलहोय पाछै वेनैंकाढै ओकुमुदेश्वररससिद्धिहोय पाछै ईंरसनैंरती १ तथा २ प्र भातही मिश्रीकैसाथि लेतौ राजरोगजाय इतिकुमुदेश्वररसः ९ ये सर्व वैद्यविनोदमैंलिष्याछै अथवापीलीकौडीवडीले अरपारागंध कनैं बराबरिले तींकी कजलीकरि वाकोड्यामैंभरै कौडीकैमूंढैसुहा गोदे सेककरिपाछैसरावामैं वाकौड्यानैं मेलि वेसरावानैं गजपूटमैं फूंकिदेसीतलहुवांकाढै पाछै ईंनैंरती १ षायतौ राजरोगसोसरोग

न. टी. राजरोगनैंपथ्यलि० हलकोभोजन. गरमजलकोस्नान. साठदिनमैंपाकै छैसोषैचाव ल. गोहांको हलकोपथ्य. जवांकीथूली. मूंग. कुलथी. हरणकोमांस बकरीकोदूध. बकरीको घृत. मीठीदाडिम. आंवला. शिलाजितशुद्ध. तालिसादिचूरणइ०

सासनैं षासनैं संग्रहणीनैं ज्वरातिसारनैं येसारारोग ईरससूं जा यछै योकपर्देश्वररसछै योरुद्रदत्तमैंलिष्योछै १०

अथवा राजरोग सोसरोग वालानैंये वस्तहितकारीछै सोलि षूंछूं. साठ्याचावल गोहूं जव मूंग हिरणकोमांस कुलत्थ बकरीको घृत बकरीको दूध मीटी दाड्युम आंवला येसारा आछ्या येवृंदमैं लिष्याछै ११ अथवा सिलाजित् शुद्धका सेवासूं राजरोगजाय १२ ये चरकमैं लिष्योछै अथवा तालीसपत्र टंक १० चित्रक टंक १० हरडैकीछालिटंक १० अनार दाणा टंक १० डासख्याटंक १० अजमोद टंक २ गजपीपलि टंक २ अजवायण टंक २ झाउरूषकी जड टंक २ जीरो टंक २ धणों टंक २ जायफल टंक २ लवंग टंक २ पत्रज टंक २ तज टंक २ इलायची टंक २ यांकीबराबरि मिश्रीले पाछै यांनैंमिहीवांटि टंक २ रोजीना बकरीका दूधमैं लेतो राजरोगनैं क्षयीरोगनैं पीनसनै फियानैं अतिसारनैंमूत्रकृच्छ्रनैं पांडुरोगनैं वाय पित्त कफकारोगांनैं प्रमेहनैं योचूरण दूरि करैछै १३ इतिमहातालिसादिचूरण योहारीतमैंलिष्योछै अथवा सूंठि कालीमिरचि पीपलि तज पत्रज इलायची लवंग जायफल वंसलोचन कचूर वांवची अनारदाणा येसर्व बराबरिलेपाछैयांनैं मिही वांटि यांबराबरि ईमै चोषो सार मिलावै पाछै यांबराबरि ईमै मिश्रीमिलाय टंक २ ईनै रोजीना बकरीका दूधकै साथिलेतो राजरोगनैं मंदाग्निनैं वीस प्रमेहनैं योदूरि करैछै इतिगगनायसंचूरणम् १४ अथवा लवंग कंकोल मिरचि षस चंदन तगर कमलगट्टा कालोजीरो इलायची अगर नागकेसरि पीपलि सूंठि चित्रक नेत्रवालो भीमसेनीकपूर जायफल वंसलोचन यांसारानैं बराबरिले यांसारांकी आधी मिश्रीले

न. टी. राजरोगीनैं अपथ्यलि० दिनमैंनिद्रारातमैं जागरण. काचो अन्न. गरिष्टभोजन. षटाई स्त्रीसंग. धूम्रपान. क्रोध. महनत. धूप. अतिसीत. रेचनपदार्थ. अतिगर्म. षोटीहवा. वास्योभोजन. करडोजुलाब. करडीउलटी इत्यादि नहींकरणा.

पाछै टंक १ रोजीना षायतौ राजरोगनैं मंदाग्निनैं पासनैंहिचकीनैं संग्रहणीनैं अतिसारनैं भगंदरनैं प्रमेहनैं यो दूरि करैछै. १५ इति लवंगादि चूरणम् अथवा मार्यो अभ्रक टका २ भर भीमसेनीकपूर मासा ४ जावत्री मासा ४ षसमासा ४ तज पत्रमासा ४ लवंग मासा ४ तालीसपत्र मासा ४ दालचिनी मासा ४ दालचिनीकाफूल मासा ४ धावड्याफूल मासा ४ हरडैकी छालि मासा ६ आंवला मासा ४ बहेडाकी छालि मासा ६ सूंठि मासा ६ प्रथमपारा गंध ककीकजलीकरै पाछै कजलीमैं ये औषदिमिहीवांटिवैमैंमिलाययेकं जीवकरिपाछैपाणीसूं चणाप्रमाणईकीगोलीबांधैपाछै गोली ४ रोजी नासीतल जलसूं षायतौ राजरोगनैं सोसनैं सासनैंषासनैं सूलनैं प्रमेहनैं वमननैं अमलपित्तनैं अरुचिनैं संग्रहणीनैं वातरक्तनैं यां सारांरोगांनैं यागोलि दूरिकरैछै सरीरनैं पुष्टकरैछै १६ या शृंगाभ्र भ्रकगुटिकाछै अथ मधुपक्कहरडैकीक्रियालि० दसमूल पीपलि चि त्रक कौंछिकाबीज वहेडाकीछालि कायफल काकडासींगी देवदारु साठीकीजड धणों लवंग किरमालाकीगिरि गोषरू वधायरो कूठ इं द्रायण येसारी औषदि टका २ दोय दोय भरलीजे सौयानैं जौकू टकरि सेर १६ सोला पक्काजलमैं यांऔषद्यांनैं नाषि अर औष द्यांकी लारचोषी मोटी हरडैबडीसेर ४ पक्की नाषि मधुरीआंचसूं मटकीमैंघालि औटाइजे औट्यां पाछै वाहरडैको पाणीकाढि वानैं ठंडीकरिपाछै चोषी सहतमैं नाषि दिन ५ राषिजे पाछै वाहरडैनैं सहतमैंसूं काढि और सहतमैं नाषिजे सहतमैं डूबीरहै इसीतरैदिन १५ ताई राषिजे पाछै वानै औरू काठिमहिना १ ताई औरसह तमैं राषिजै सहतमैं डूबीरहैपाछैवाहरडैसमेत सहतका वासणमैं

न. टी. राजरोग. मंदाग्नि. षास. स्वास. अरुचि. येसारारोगछै. सोभाईबंधछै. यामैं आ पस्मरीकोभेदघणोनहींछै. जीसौंलिषूंछूं. वांकैऊपरबलवानरसयोपंचामृत नामछै. जोयो रस स्याणावैद्यकाहाथसौं वणाईथकीसेवनकरैतोयेरोगजांयछै.

तज पत्रंज नागकेसरि इलायची पीपलि यांसारांको चूर्णटका ८ भर मिहीवांटिईमैमिलाय दीजे पाछै हरडै १ रोजीनाषायतौ राजरोग सोसरोग षास सास हिचकी बवन जुर मूत्रकृच्छ्र प्रमेह वातरक्त व वासीरसंग्रहणी रक्तपित्त दाहविभूति व्योंचि कोढम्रगी पांडुरोग यां सारां रोगांनैं इहमधुपक्कहरडैदूरिकरैछे. १७ इतिमधुपक्कहरडैकी विधिसंपूर्णम् याधन्वंतरीसंहितामैं लिष्याछै अथवा पुराणोगुड सेर १ अरआदाको रससेर १ ईरसमैंगुडकीचासणीकरैमधुरीआंचसूं पतली ईचासणीमैं तज पत्रज नागकेसरि इलायची लवंग सूंठि काली मिरचि पीपलि येसारी औषधिटका १ येकेक भरिलै त्यांनैमिही वांटि ईमैं मिलाय टका येकेकभरि रोजीना षायतौराजरोगनैं मंदाग्निनैं षासनैं सासनैं अरुचिनैं यांनैयोदूरिकरैछे. १८ इतिआदाको अवलेह अथवा बकरीका दूधमैं बराबरिकोपाणीघालितीमैंपीपलि ३ नाषे अर एकेक रोजीना वधै महिनायेकतांई वधै पाछै येकेक

अरदूध

पलि षाजाय पाछै ओदूधपीजायतौ राजरोग अरषास सासयेजा तारहै योकाशिनाथ पद्धतीमैलिष्योछे १९

अथवा मिनक्का दाष सेर ४ पक्कीले त्यांमैंमण १ पाणीमैं औटावै वेंकोचतुर्थांशराषै पाछैवेमैं पुराणो गुडनाषै अर वेमैं वायविडंग फूलप्रियंगु तज इलायचीपत्रज नागकेसरि येटकाटकाभर नाषि दारुकायंत्रसूं यांको अर्ककाढै पाछै टका १ भर रोजीनालेतौ राज रोग सास षास दूरिहोय २० योदाषांको आसवछे. योजोगतरंगिणीमैंलिष्योछे. अथवाम्रगांक १ रूपरस २ तामेस्वर ३ पाराकीभ

* गजपूटकी क्रियालिषूंछूं. गज. एकचोडीगज. एकउंडींगोल षाडषोदणी. जीमैंजंगली गोबरी आधी षाडमैं भरणी. वीचमैं. औषध धरणी. कपडामाटी पछै. ऊपर फेर गोबरी भरणी. ऊपर आंच देणी. सीतलहुवां काढणी. सुगजपूट होय. कजली शुद्धपारो १ सुद्ध गंधक २ पारासूं दूणोगंधक षरलमैं महर २ षरलकरैतौ कज्जली होयछे.

स्म ४ अभ्रक ५ ये येकेकभागवधतालेपाछेयांनै येकठा मिलाय यांकैजुदी जुदीयेकेक पुटदे प्रथम वायविडंगकी १ नागरमोथाकी १ कायफलकी १ निर्गुंडीकी १ दसमूलकी १ चित्रककी १ हलदकी १ सूंठिकी १ कालिमिरचिकी १ पीपलिकी १ यांकीपुटदेपाछे गोली रती आध प्रमाण बाधै गोली १ रोजीनाषायतौ राजरोग पासी फियो गोलो जाय योपंचामृत रसछे. योसारसंग्रहमैं लिष्योछे. २१ अथवा वडासंषनैं गऊका मूत्रमैं वालि वेंकीराष करि वेकी बडीमूस बनावे वैमूसमैं पारोटंक ५ गंधक टंक ५ यांकी कजलीकरि मिलावै पाछे ईंकै कपडमिट्टीदे अरगजपूटमैं फूंकिदे पाछे ईनैं मूषसमे त वांटिरती १ सहतसूं लेतौ राजरोग जाय २२ यो रसार्णवमैं लि ष्योछे. अथवा थोहरीकी लकडी आलीऽले सींधोलूण टका १ भर संचरलूण टका १ भर सांभरोलूण टका १ भर वैंगण शेर १ चि त्रक टका २ भर यांनैं येकठां वांटिसरावामैं मेल्हि गजपूटमैं फूंकि दे पाछेईनै मासो १ भोजनउपरांत जलसूं लेतौ तत्काल भोजनप चै अर राजरोग सास ववासीर जाय अर आंब ततकाल भस्महो य सूलजाय योक्षुद्रादिक षारछे २३ योरसराजलक्ष्मीग्रंथमैछे. अ थवा संषकीराषनींबूका रसमैं बुझायकरि वाराष टका १ भरले अर चव्य टंक १० जवषार टंक १० सेकीहींगटंक १० पाचूंलूण टंक १० सूंठि टंक १० कालीमिरचि टंक १० पीपलिटंक १० पारोटंक १० सोध्योसींगीमुहरोटंक १० सोधीगंधक टंक १० प्रथमपारागंध ककीकजलीकरैपाछे कजलीमैंयेमिलावै पाछेनींबूकारसमैं गोलीच णाप्रमाण बांधैगोली १ रोजीना लवंगांका पाणीमैं लेतौ राज रोग संग्रहणी सूल गोलो येसारा दूरिहोय २४ यासंषवटी जोग

न. टी. अगस्तिहरीतकीवृंदग्रंथकाप्रमाणसूंलिषीछै. अरभावप्रकासादिकमैछैसोभी इंहीविधि सौंमिलतीछै. परंतु या हरीतकीकाससासहिचकी अरराजरोगादिकनैं बलवान औषधीछै. यथोक्तरीतसौं करणी.

तरंगिणीमें लिषीछे. अथ अगस्थि हरडेकी विधिलिष्यते दसमूल कौंचकाबीज संषाहुली कचूर षरेटी गजपीपलि आधींझाडो पीपलामूल चित्रक भाडंगी पोहकरमूल येसारी औषदि दोय दोय टकाभरलीजे अर हरडे १०० लीजे पाछेयां औषद्यांनेंजोकूटकरि सेर २० वीस पाणीमें ओषदि अर हरडे सामलकरिओटाजे पाछे ओपाणी चतुर्थांशरहेतदिवेनेउतारि वेमांहिसूं हरडेकाढलीजे पाछे हरडेकी गुठली काढ हरडेनेंवाटिराषे पाछे पुराणो गुड टका १०० भर तींकी चासणीकरे वेचासणीमें ईहरडेका चूनने मिलावे वेमें गऊको घृत टका ८ भर नाषे चासणीमें पाछेईनेटका १ भर रोजीना षायतौ राजरोगने सोसनें षासीनें सासनें हिचकीनें विसमज्वरनें संग्रहणीनें ववासीरनें अरुचिनेंपीनसनें याअगस्तिहरडे इतना रोगांनें दूरिकरेछे. अरसरीरनें पुष्टकरेछे भूषवधावेछे कोष्टनें शुद्ध करेछे २५ इतिअगस्तिहरडेकीविधि यावृंदमेंलिषीछे अथवा अरडूसोटका १०० भरले तींको काढो करि चतुर्थांस राषिजे जुदोछाणिपाछे ईकाढाका रसमें टका १०० सोभर गुडकी चासणीकरि टका ८ भर तिलांको तेलनाषे अरटका ८ भर गऊको घृत नाषे अरई चासणीमें वडीहरडे १०० काबकलको चूर्णमिहीवांटि नांषे पाछे पीपलि टंक २ पीपलामूल टंक २ कालीमिरचि टंक २ पोहकरमूलटंक २ चव्यटंक २ चित्रकटंक २ सूंठि टंक २ येमिहीवांटि ईंचासणीमें यांको चूर्णनाषे पाछे यांको येकजीवकरि टका १ भर रोजीना षायतौ राजरोग निश्चेदूरिहोय अर ईसूं ववासीर षासी स्वरभेद सोजो अमलपित्त पांडुरोग उदररोग अग्निमांद्य नपुंसकताये सारारोग ईसूं जायछे. या चरकमे लिषीछे २६ इतिराजरोग सोसरोग क्षयीरोग यांकीउत्पत्ति लक्षण जतन संपू०

न. टी. षास. सासरोग वातपित्त कफ सौं जो होयछै सो साध्यतामैं गिणैछै. अर यांका उपावकीया विना येही रोगवृद्धि पावै जदां क्षयीरोग होय जावै.

अथ पासरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनलिष्यते अथ पासकीउ त्पत्तिलिष्यते मूंढामें धूवांका जावासूं मूंढामें धूलिकाजावासूं लूषा अन्नका षावासूं भोजनका कुपथ्यसूं मलमूत्रका रोकिवासूं छींकका रोकिवासूं चिकटाई मूली उगेरैऊपर जलका पीवासूं यांसूषास पैदा होयछे पाछे ओषास हैसोहियाका प्राण पवनसौंमिले अर

दुष्टकठका

सरीसो होय मूंढासूं वेगदेर नीकलै तदि मनुष्य ईनैषास कहै सोओ षास रोगपांच ५ प्रकारकोछै वायको १ पित्तको २ कफको ३ चोटलागिवाको ४ क्षयीरोगको ५ अर अनुक्रमसूं षासहैसो पाछिलोपाछिलो बलवान जाणिजे वायसूं पित्तको बलवान ईक्र मसूं जाणिल्यो अथषासकोपूर्वरूपलि० कंठमेंगलामें कांटापडि जाय कंठमें षुजालि आवे भोजनकरयो जायनहीं तदिजाणिजे षा सहोसी अथ वायका षासको लक्षणलि० हियामें कनपट्यांमें मा थामें उदरमें पसवाडामें सूलचालै मूंढो उतरिजाय बल पराक्रम स्वरयेक्षीण पडिजाय गासषातां कंठमें विथाहोय सूकोषासे टूटा सुरबोले येलक्षणहोय तदि जाणिजे वायको षासछे अथ पित्तका षासको लक्षणलिष्यते हियामें दाहहोय ज्वरहोय मूंढो सूकै फी कोमूंढोरहै तिसलागे कडवो वमनकरै सरीरपीलो होयजाय येलक्ष णहोय तदि पित्तकोजाणिजे. अथ कफका षासको लक्षणलिष्यतें कफसूंमूंढोलीप्योरहै मथवाय रहै. भोजनमेंरुचिनहिहोय सरीरभा र्योरहै कंठमें षुजालि आवै कफका गलषा थूकै येलक्षणहोयतो कफकी षासी जाणिजेअथक्षतजषासको लक्षणलिष्यते घणोस्त्रीसं

न. टी. जोअसाध्यक्षयीहोय जावैतोसांके प्रबलऔषधीकौसेवनसौं आराम होयछै. जैसै राजयक्ष्मारोगपरराजमृगांकलिषीछै अर ऐसेहीमहानप्रबल रसकांतिसार. अभ्रकस्वर्णभस्मा दिकसोदेणा. सोयेराजवैद्यकनैंमिलैछै.

गकरै भारउठावै मारगचालिवासूं जुद्धकाकरिवासूं घोडा हाथीका दौडवासूं लूषा षावासूं वायहैसोहियामैं जायषासनैं प्रगटकरै. ओषासप्रथम सूको षासै. पछै लोहीथूकैकंठघणोदूषै सूलचालै संधिसंधिमैंपीडा चालै. जुरहोय सासहोय तिसहोय स्वरघांघोहोय कबूतरकीसीनांई बोलवोकरै येलक्षणहोय तौक्षतजको षासजाणिजै. अथ क्षयीरोगसूंउपज्यो जोषासतींकोलक्षणलि० कुपथ्य अर विषमासन उगेरै करैघणोमैथुनकरै मलमूत्रनैरोकै घणो सोचादिककरै तदिमनुष्यांकै मंदाग्निहोय वायपित्तकफतीन्यूंकोपैतदि ईक्षयीरोगकाषासनैं पैदाकरै तदि ओषाससरीरनैषीणकरै. ज्वरदाह मोह यांनै करै तदियो प्राणनासकरै सूकोषासैदुबलो होतोजाय रुधिर मांससरीरको जातोरहै राधिथूकै तदियो असाध्यजाणिजै अथ षासका असाध्यलक्षणलि० वायपित्त कफकी तौषासीसाध्य अरक्षतजरोगकीषासी अरक्षयीरोगकीषासी असाध्यजाणिजै अर बूढा आदमीकीषासी असाध्यजाणिजै अथ षासरोगकाजतनलि० लवंग टंक ५ कालीमिरचि टंक ५ बहेडाकीवकल टंक ५ षैरसार टंक ५ यांनैमिहीवांटि बंबूलकीवकलकाकाढामैंगोलीरती २ भरकी बांधैगोली १ तथा २ तथा ३ रोजीनादिन ७ षायतौषासीजाय १ यालवंगादिककीगोलीलोलींबराजमैंलिषीछै अथवा पारोटंक १ सोधीगंधकटंक २ पीपलिटंक ३ हरडैकीछाल टंक ४ वहेडाकीवकल टंक ५ काकडासींगीटंक ६ यांनैमिहीवांटि बंबूलकीबकलका काढाकी पुट २१ देपाछै गोलीटंक १ भरकीबांधै गोली १ रोजीना

---

* हिंगलूछैसो मुष्यपारोछै. आंवलाषारतथापारोदोन्यूपचायाहिंगलूहोयछै. सूवैद्यकाहात विनाहिंगलूकौ औषधलेणौनहीं कारणधातूचीजछै सोजहरछै पण क्रियासूं अमृत होयछै. सुक्रियावैद्य लोक जाणैछै. योग्रंथछैजीमैंनवीनटीपणकरीछै जीमैंवर्तमानग्रंथोक्तलिषीछै. रसायण. औषधी. वैद्यकाहाथ शिवाय लेणीयोग्यनहीं. योग्रंथवांचकर वाकबहोणो पणमोटी औषधतोविद्वान् वैद्यकी सहायतासौं लेणी.

षायतौ ऊपरिसूंसूंठिको काढोपीवैतौ षास मुकर जाय २ योरसस
मूहमैं अरयोगचिंतामणिमैंलिष्योछै अथवाकालीमिरचि टंक २
पीपलिटंक २ दाज्यूंकाछोडाटंक १० गुडटका २ भर जवषारटंक
१ यानैमिहीवांटि गोलीचणाप्रमाण बांधैगोली २ तथा ४ रोजी
नाषायतौ षासीजाय ३

अथवापीपलि पोहकर मूलहरडैकीछालि सूंठि कचूर नागरमोथो
यांनैंमिहीवांटिगुडमैंगोलीकरैरती ३ प्रमाणगोली १ तथा २ तथा ३
षायतौषासीजाय ४ अथवा सूंठिकाकाढासूंषासिजाय ५ अथवा
आदाकोरससहत मिलाय लेतौषासीजाय ६ अथवा कट्याली गि
लवै सूंठि पोहकरमूल येबराबरिले अरईमै अरडूसोमिलावै योक्षु
द्रादिकको काढोछै तीसेतीषासीजाय ७ अथवा छोटीकट्यालीतीं
कोभडीतोकरिवेंकोरसकाढीवेंका रसमैंपीपलिको चूर्णमिलाय रोजी
नापीवैतो षाससासजाय ८ अथवा हरडैकीछाल पीपलि सूंठि का
लीमिरचि यांनै मिहीवांटिगुडमैं गोलीकरि गोली १ त. २ त. ३
रोजीनाषायतौ षासीजाय ९ अथवा सूंठिटंक २ कालीमिरचि टंक
२ पीपलि टंक २ अमलवेद टंक २ चव्य टंक २ चित्रक टंक २ जी
रोटंक २ डासख्या टंक २ तजमासा ४ पत्रजमासा ४ नागकेसरी
मासा ४ यांनै मिहीवांटि पाव ऽ। येकगुडमैं टंक २ प्रमाणगोली बां
धैगोली १ रोजीना परभातषायतौ षास सास जाय १० अथवा ल
वंग टंक २ पीपलि टंक २ जायफल टंक २ कालीमिरचि टंक ५
सूंठि पईसा ८ यांसर्वकी बराबरिमिश्रीपाछै यांनैंमिहीवांटि टंक २
जलसूं लेतौ षासीनैं जुरनैं प्रमेहनैं अरुचिनैं सासनैं मंदाग्निनैं सं
ग्रहणीनैं यां सारां रोगांनैं योचूर्ण दूरिकरैछै इतिलवंगादिचूर्णम् ११

न. टी. भृगुहरीतकीलिषीछै सोवै हरडैनग १०० मोटीउत्तमलिषीछै. ज्यानैं वैकाढाकाज
लमैं मंदमंद आंचसैंसिजाय करवेकीगुठली काढै अर जुनोगुडलिष्योछै सोतिवरसोतीनवर
सकोलेणो. घणोजूनोनहीं एकवर्ष ऊपरांत तीनवर्षतांई.

अथवा हिंगलू कालीमिरचि नागरमोथो सोध्योसींगीमुहरो यांनें बराबरिले यांनेमिहीवांटिजंभीरीका रसमैं मूंगप्रमाण गोलीबांधै अथवा आदाका रसमैं बांधै गोली १ रोजीनाषायतौ षाससास जाय १२ अथवा कालीमिरचि नागरमोथो कूठवच सोध्योमुहरो यांनै बराबरिले यांनै आदाका रसमैं मिहीवांटि मूंगप्रमाण गोलीबांधै गोली १ रोजीना षायतौ षासनैं सासनैं कफकारोगनैं सूतकारोगनैं संग्रहणीनैं यां रोगांनै यागोली दूरि करैछै १३ अथवा वंग टंक १ पीपलि टंक २ हरडैकीबकल टंक ३ बहेडाकीवकल टंक ४ अरडूसो टंक ५ भाडंगी टंक६ यांसारांकी बराबरिषैरसारले पाछैयांनै मिहीवांटिबंबूलकी वकलका काढाकी पुट२१ दे अर सहतसूं गोलीबांधै चणाप्रमाणकी गोली १ रोजीनाषायतौ सास षास क्षयी येसारा जाय १४ इतिषासकर्तरी अथवा भीमसेनी कपूर टंक १ कस्तुरी टंक १ लवंग टंक १ मिरचि टंक २ पीपलि टंक २ बहेडाकीछालि टंक २ कुलिंजन टंक २ दाड्यूंका छोडा टका १ यां सारांकी बराबरि षैर सार यांमैमिलावै यांसारानैं मिहीवांटि पाणीसूं चणाप्रमाण गोली बांधै गोली १ रोजीना षायतौ षासीजाय १५

इति कर्पूरादिगुटिका येसाराजतन वैद्यरहस्यमैछै. अथवा आकका फूलांकीविचलीफूली अर वांबराबरि मिरचि यां दोन्यांनें वांटि मिरचीप्रमाण गोली बांधै गोली १ रोजीनाषायतौ षासीजाय १६ अथवा आकका फूलांकी विचलीफुली यांबराबरिलवंग यांकीगोली रतीप्रमाण बांधै गोली १ रोजीनाषायतौ षासीजाय १७ येरुद्रदत्तमैं लिष्याछै अथवा पसर कट्यालीको पंचांगले सेर ४ ईमैंपाणीघालिकाढोकरै ईंकाढामैं हरडै सो १०० वडीपकावै वेसीजिजा

न० टी० कासस्वासकारोगपरआनंदभैरवादिरसतोलेणो. अरपथ्यलि० लालचावल० मूंग. उडद० गहू० कुलथी० मूलीकाची, छालीकोदूध० घृत० कोमलवैंगण० लहसण० गरमपाणी० सूंठ० मिरच. पीपल० सहत. आर्द्रक. इत्यादि.

जाय तदि काढिले काढा माहिसौं पाछे वानैसीतलकरि गुठली काढि वांटिले पाछे पुराणो गुड टका १०० भरले तींकी चासणीकरै पाछे ओहरडैको चूरण वेचासणीमैं मिलावै पाछेयेचासणीमैं ये औषधि नाषै सोलिषूंछूं सूंठि टका १ कालीमिरचि टका १ पीपलि टका १ पत्रज टका १ तज टका १ नागकेसरि टका १ इलायची टका १ भर येमिहीवांटि वेचासणीमैं नाषै अर सहत आधशेर ईमैंनाषै पाछै ईको येकजीवकरि टका १ भर रोजीना पायतौ सर्वप्रकारकी षासीजाय १८ योभृगुहरीतकीछै अथ कट्याली को अवलेहलि० कट्यालीसेर ४ कोकाढोकरै ईकाढामैंसेर ४ मिश्रीकी चासणीकरि ईमैं येओषदिनाषै सोलिषूंछूं गिलवै टका १ काकडासींगीटका १ चव्यटका १ चित्रकटका १ नागरमोथो टका १ सूंठि टका १ पीप लिटका १ धमासो टका १ भांडंगीटका १ कचूर टका १ यांनैमिही वांटि वेचासणीमैंनाषैईमैंसेर १ सहत नाषै पाछैईनै टका १ भर रो जीनाषायतौ सरब प्रकारको षास जाय १९ इतिकट्यालीको अव लेह संपूर्णम् योभावप्रकासमैं लिष्योछै अथवा अरडूसाका का ढामैं सहतनाषिपीवैतोषासीजाय २० अथवा आककापान मैंण सिल सूंठि कालीमिरचि पीपलि येबराबरिले तींकी गुडाषू वणावै वाहुक्कामैंपीवैतौषासीनिश्चै जाय २१ अथवा पारो सोध्योगंधक हिंगलू सोध्योसिंगीमुहरो सूंठि कालीमिरचि पीपलि सेक्योसुहागो येबराबरिलै पाछे पारागंधककी कजलीकरै पाछे ये औषधिमिहीं वांटि ईकजलीमैं मिलावै पाछे ईकजलीनैंभांगराकारसमैं दिन १ षरल करै पाछैं विजोराको रस दिन ३ षरल करै पाछे ईकीगोली रतीआधकीकरै पाछे गोली १ रोजीनादिन १० षायतौ षासीनैं

न. टी. कासादिकपरकुपथ्यलि० स्त्रीसंग. दिनमैंनिद्रा. दूध. दही. छाछ. थंडोपाणी. वासी भोजन. पिष्टअन्न. षीर. धूम. तावडो. श्रम. तेल. आचार. षटाई. मिथ्याअहार. मिथ्याव्यवहार युद्ध. चिंता. जडअन्न. अतिभाषण इत्यादि.

क्षयीनैं संग्रहणीनैं सन्निपातनैं मृगीयांनैं योरस दूरिकरैछै २२ इति आनंदभैरवरससंपूर्णम् इतिषासरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्

अथहिचकीरोगकीउत्पत्तिलक्षण जतनलि० गरमवस्त वायल वस्त भारीवस्त. लूषीसीलीनैं. आदिलेर जोवस्त तींका षावासैं मुषमैं रंजका जावासैं षेदका करिवासैं मार्गकाचालिवासूं मलमूत्रका रोकिवासूं इतनीवस्तांसूं मनुष्यकै हिचकी होयछै सास षास पैदा होयछै अथहिचकीको स्वरूपलि० वायहैसो दोन्यू पसवाडानैं अर आंतांनैं दूखदेर मूंढामैं होयकर वडाशब्दनैंलीयां प्राणाको नास करतोथको मूंढामाहिसूं भयंकर शब्दनैकाढैछै तीनैं मनुष्यहिचकी कहैछै सोओ वाय कफसूं मिलि पांच प्रकारकी हिचकीनैं करैछै ये कतो अन्नजा १ यमला २ क्षुद्रा ३ गंभीरा ४ महती ५ अथहिचकीको पूर्वरूपलि० कंठहियो भास्योहोय मूंढोकसायलो होय कूषिमैं आफरो होय तदि जाणिजेईकैहिचकीपैदा होसी. अथ अन्नजाहिचकीको लक्षण० अन्न घणोषाय अरपाणीघणोपीवै तींकरि वायकोपै वेगदेर तदि ओवाय ऊर्ध्वगामीहोय मनुष्यकै अन्नजाहिचकीनैं पैदाकरै १ अथ यमलाहिचकीकोलक्षणलि० मोडीमोडी दोयदोयहिचकीचालैसिरकांधीनैं कंपावतीथकी तीनैं यमलाहिचकी कहिजै २ अथक्षुद्रा हिचकीकोलक्षणलि० मोडीमोडी मंदमंद चालै कंठहियाकी संधिसूं तीनैंक्षुद्राहिचकीकहिजै ३ अथगंभीराहिचकीकोलक्षणलि० नाभीसूं भयंकरऊठै जीमैंपीडघणी. अनेक उपद्रवानैं

---

* जवषारकी विधितरंग २४ मैंपान ५१२ लिषीछै जीमुजब बणायकर षासकी औषधि मैंदेवैतौ षासजाय. और षातरीको वणायो मिलैतौ लेणों. ॥ दोहा ॥ सूंठिमिरच अरुपीपली श्रीधरजवकोषार ॥ जूनैंगुडगोलीकरै षासजाय ततकार ॥ चोफूली रविफूलकी तामै त्रिकुटाधाल ॥ श्रीधरगुडसंगदीजिये जवपारइकवाल ॥ जूनागुडमै गोली बोरप्रमाण कर देणी. षासजाय.

करतीथकी तीनैं गंभीराहिचकीकहिजे ४ अथ महती हिचकीकोल्लक्ष णलि० सर्वमर्मस्थानमैं पीडतीथकी अर सर्वगात्रनैं कंपावतीथकी चालै वेनें महाहिचकी कहिजे ५ अथ हिचकीको असाध्यलक्षणलि० हिचकी चालतां जींकोसरीर कांपिउठे अर ऊंचीदृष्टि होजाय अर अंधेरी आजाय सरीरक्षीणहोजाय भोजनमैं अरुचिहोजाय अर छींकघणीआवै ऐसीये दोन्यूहिचकी गंभीरा अर महती असाध्य जाणिजे अथहिचकीको जतन लिष्यते प्राणायामका करिवासूं कहीं तरैका डरपीवासूं भयंकरवातका कहवासूं वाय अर कफ घटै इसी वस्तका षावासूं हिचकी दूरिहोयछे १

अथवा बकरीका दूधमैं सूंठिनैं पचाय ओदूध सूंठिसमेत पीवै तौ हिचकीजाय २ अथवा विजोराकोरस तींमैं जोकोसातू अर सीं धोलूण मिलाय षायतौ हिचकीजाय ३ अथवा सूंठि पीपलि सहत सूं चाटैतौ हिचकीजाय ४ अथवा माषीकीवींटनै दूधमैंवांटिवेंकी नासलेतौ हिचकीजाय ५ अथवा गुड सूंठि पाणीमैं वांटि वेंकी ना सलेतौ हिचकीजाय ६ अथवा कांसकी जडकोरसतींमैं सहत मिलाय तींकी नासलेतौ हिचकीजाय ७ अथवा मोरकी पांषकी राषसहतसौं चाटैतौ हिचकीजाय ८ अथवा विजोराकी केसर सींधोलूणसूं मि लाय षायतौ हिचकीजाय ९ अथवा गवारकापाटाकोरस तींमैं सूंठि मिलाय षायतौ हिचकीजाय १० अथवा पोहकरमूल जवषार का लीमिरचि ये बराबरिले यांनैं मिहीपीसि टंक २ गरमजलसूं ले तौ हिचकीजाय ११ अथवा हलद उडद यांनैंवांटि निर्धूम अंगिरापरि मेलि हुकामैं घालवेंको धूंवोपीवैतौ भयंकर हिचकी जाय १२ ये वैद्यविनोदमैंलिष्याछै. अथवा सणकी छालिको चूरण तींको हूको

न. टी. हिक्का रोग. जीनैहिचकीकहैछै. जीनैंसाध्य. कष्टसाध्य. असाध्य. अरएकहिचकी सुषदाईविनारोगकीहोयछै. सोतोघडी १ त. अधघडी. तथापावघडीरहैछै. वे आपसौंहीमि टजायछै. बालकनैदूधचूंग्यापाछै आवोकरै सोसुषकीछै. बाकीकीरोगलीहोयछै.

पीवैतौ हिचकीजाय १३ अथवासूंठि कालीमिरचि पीपलि जवासो कायफल करेलण पोहकरमूल काकडासींगी येसर्व बराबरिले यांनें मिहीवांटि टंक २ सहतसूं चाटैतौ हिचकीजाय अरषासीसास ये भीजाय १४ अथवा पित्तपापडो पीपलि येदोन्यूं टंक २ गुड टंक ५ यांका काढो देतौहिचकीजाय १५ अथवा असाल्यूं टंक १० को काढोकरिछाणिपीवैतौ हिचकी ततकाल दूरिहोय १६ यो वैद्य रहस्यमैलिष्योछै अथवा महलौठीटंक १ सहतसूं चाटैतौ हिचकी जाय १७ अथवापीपलि टंक १ मिश्रीकैसाथिलेतौहिचकीजाय १८ अथवा दूधमैंघृतघालि गरमगरमपीवैतौ हिचकीजाय १९ ये सुश्रुतमैंलिष्याछै अथवा विजोराकोरस सहत संचरलूणयेमिलाय षायतौ हिचकी निश्चैदूरिहोय २० योवैद्यरहस्यमैंलिष्योछै. अथवा कैथकोरस अथवा आंवलाकोरसतीमें सहतमिलाय पीवैतौ हिचकीस्वास जाय २१ योकाशिनाथपद्धतीमैंलिष्योछै.

अथवा इलायची १ दालचिनी २ नागकेसरि ३ कालीमिरचि ४ पीपलि ५ सूंठि ६ ये वधती वधतीले त्यांनें मिहीवांटिईमें घृतमिलाय अर यां सर्वबराबरिमिश्रीमिलाय टंक २ जलसूं लेतौ हिचकीनें अजीर्णनें उदररोगनें ववासीरनें सासनें षासनें यां रोगांनें योदूरिकरैछै. २२ यो एलादिचूर्ण वृंदमें लिष्योछै इतिहिचकीरोगकी उत्पतिलक्षणजतनसं० अथसासरोगकी उत्पत्तिलक्षणलि० ज्यांवस्तां काषावासूं हिचकी पैदाहोय त्यांही वस्तांकाषावासूं सासरोग होयछै सोवोसासरोग ५ प्रकारकोछै येकतौ महास्वास १ ऊर्ध्वस्वास २ छिन्नस्वास ३ तमकस्वास ४ क्षुद्रस्वास ५ अथस्वासरोगको पूर्वरूपलि० हियोदूषै सूलहोय आफरोहोय मलमूत्र उतरै

न. टी. तमकस्वासतो जाप्यछै. अरछिन्नस्वासमहाअसाध्यछै. कारणजोस्वासटूटै अरफेरसंधै. फेरटूटै. फेरसंधै ईमुजबहोवोकरै सोस्वास भरोंसोराखवायोग्य नही. जोटूटकर फेर जुडै. ईसोस्वास पाछो स्थान पर जुडैतौ जीवनछै. नहीं तो छूटको होय जावै.

नहीं मूंढामैं रसको स्वादआवै नहीं कनपट्टीदूषै तदिजाणिजै सा
सरोगहोसी. अथसासरोगकोस्वरूपलि० सर्वसरीरमैं फिरतोजो
वाय सो कफसूं मिल्यो सर्वनसांनैरोकैतदि वोवायफिरिवासूं रहेत
दिसासनैं प्रगटकरै अथमहास्वासको लक्षणलि० तदिमनुष्य सा
ससूंदुषीहुवोथकोऊचैप्रकार मस्तबलदकीसीनाईं सासनिरंतरले
अर नष्ठहुईछेसंज्ञाजींकी अर नष्टहुवोछे ग्यानजींको अरजींका
नेत्र तरतराटकरै अरसासलेता मूंढोफाटिजाय अर नेत्रफाटिजाय
अर बोल्यो जायनहीं गरीब होजाय अर वेंकोसास दूरिसुणै ये
जीमैं लक्षण होय तदि ओ महास्वास जाणिजै ईसासवालोतत्का
ल मरिजाय १ अथऊर्ध्वस्वासको लक्षणलि० ऊंचोस्वासले नीचो
आवैनहीं. कफसूं मूंढो भरिजायऊंचीदृष्टिहोजाय नेत्र तरतरकरै
ईसाससूं दुषी हुवोथको नेत्रभ्रमताहोजाय मोह होय आवै ग्लानि
होय आवै येलक्षणहोय तदि ऊर्ध्वस्वासजाणिजै. यो मनुष्यनैं मा
रिनाषै २ अथछिन्नस्वासको लक्षणलि० सर्वसरीरकापांचूं पव
नासूं पीड्योथको मनुष्य टूटो स्वासले अथवा दुषीहुवोथको सास
नहींलेवै. ईकामर्मस्थानटूटिजाय तदिआफरो होय आवै प्रस्वेद
होय नेत्रफाटिजाय सासलेतांनेत्र लालहोयजाय चेतजातोरहै. स
रीरकोवर्ण औरहोय वोप्राणीततकालमरिजाय ३ अथतमकस्वा
सको लक्षणलि० शरीरकोपवनउलटोफिरि नसांनैं रोकिदे तदि
कांधीसीरनैंपकडि कफनैं प्रगटकरैतदिओकफकंठमैं जाय शब्दघु
रघुरनैं करै प्राणांका हरवावाला स्वासनैं प्रगटकरै. तदि मनुष्य
स्वासका वेगकरि ग्लानिनैंप्राप्तिहोय तदिवेंकी अग्निरुकिजाय

न. टी. सासरोगमैं धूम्रपानलिष्याछै सो बहोत गुणकारीछै. परंतु पथ्यलि० रेचनवमन दिवानिद्रा. भात. कुलथी. ससो. तीतर. लावो यांको मांस. छालीकोघृत. मद्य. तुराई. काच. वैंगण. लहसण. गोमूत. गरमपाणी. चंदलेई. इ. कुपथ्यलि० पूर्वकीहवा. छालीको दुध. षराबजल. राई. कंद. इ०

तदि ओषासै जदि मोहनैं प्राप्तिहोय अर कफसूं छूटै तदि दूषी होय अर मुषमाहीसूं कफ नीकलजाय तदि ओघडी दोयेक सुष पावै तदिवेसूं बोल्योजाय अर वो सोवै तदिसासहोय आवै तदि वैनैंनींद आवैनहीं बैठ्योहीरह्यां चैननपडै अरगरमी सुहावै आंष्यांऊपरि सोजो होय ललाटमैं पसेव आवै मूंढोसूकै धंवणीकीसी नांईसासलै मेहका पवनसूं सीतल वस्तसूं ओवधै मधुर वस्तसूंवधै. येलक्षणहोय तदि तमक सास जाणिजे. येसासजाप्यछै. ४ अथ क्षुद्रस्वासको लक्षणलि० षूलीवस्तकाषावासूंषेदका करिवासूं कोठामैं पवनहैसो क्षुद्रस्वासनैं प्रगटकरै तदिओमनुष्यांकीषाज पानकीगतिनैं रोकैनहीं इंद्रियांनैं पीडाकरैनहींयेलक्षण होय तदिक्षुद्रस्वास जाणिजे. ५ योबलवानपुरसकैसाध्यछै. क्षुद्रस्वाससाध्य तमकस्वासकष्टसाध्य अरमहास्वासऊर्ध्वस्वासछिन्नस्वासयेतीन्यूअसाध्यप्राणाका हरवावालाछै अथ स्वासरोगकोजतनलि० लूणमैं तेलघालि सुहावतो सुहावतोहियानैंसेकैतो सासदबै १

अथवा आदाकोरस सहतमैंमिलाय चाटैतो सासजाय २ अथवा आदाकोरससेर ऽ१ तीमैंसूंठिपाव ऽ। बहेडाकी छालपाव ऽ। बकरीकोमूतसेर २ यांसारांनैं गरमकरिक्यूंजाडो करैपाछैईमैंसहतसेर ऽ॥ मिलाय टंक १ भररोजीनाषायतोषाससासजाय ३ अथवा दसमूल कचूर रास्ना पीपलि सूंठि पोहकरमूल भाडंगी काकडासींगी गिलवै चित्रक यांनैं बराबरिले यांको काढो टंक २ भरकोरोजीना लेतो सासषास पसवाडाकोसूलजाय ४ अथवापेठाकी जडकोचूर्ण टंक १ गरमपाणीसूं लेतोषास सासनिश्चैजाय ५ अथवा हलद कालीमिरचि

* स्वासरोग महाकठिणछै. जींकैऊपर अनेकप्रकारकारंसादिक उपाव कह्याछै और काष्टादिकभी कह्याछै. परंतु योरोगजावणो मुसकलछै. जुवानीअवस्थामैं होयतो साधनपथ्य औषधीसूं दबिजायछै. पण बुढापामैं हुवातो परमेश्वरकी कृपासूं विद्वानवैद्यकीसहायतासूं दबै. और बुढापामैं स्वासरोगलाग्याथकां अफीमकोसाधन सुषदाईहोयछै.

दाष पीपलि रास्ना कचूर यांनैं बराबरिले यांनैंमिहीवांटि टंक १ गुड अरकडवातेलकै साथि चाटैतौ सासकोरोगनिश्चैजाय ६ अथवा भाडंगीसेर ऽ१ तीनैंऔटायतींको रसकाढिईमैं टकासौ १०० भरगुडकीचासणीमैंहरडैकीछालको चूर्णसेर ऽ१ नाषै चासणीपकताहीमैं पाछैचासणीठंडीहुवां टंक ६ भरईमैं सहतनाषै सूंठिटका १ भरकाली मिरचिटका १ भरपीपलि टका १ भर तजटका १ भरपत्रजटका १ नागकेंसरिटका १ जवषार टंक २ यांनैंमिंहीवांटि वेचासणीमैंमिलायदे पाछैपईसा १ भर रोजीनाषायतौ सासक्रोरोगजाय षास ववासीर गोलो क्षयीरोग उदररोग येसाराजाय ७ यो भाडंगीको अवलेहछै. येसारा जतन भावप्रकासमैं लिष्याछै. अथवा पारो टंक २ गंधक टंक २ सींगीमोहरो टंक २ सुहागोफुलायो टंक २ मैणसिल टंक २ मिरच टंक २ सूंठि टंक २ पीपलि टंक २ प्रथमपारागंधककी कजलीकरि तीमैं येऔषधि मिलावै पाछै ईकै आदाका रसकी पुट १ देपाछै रती १रोजीनाषायतौ सासजाय ८इतिस्वासकुठाररस अथवा पारो १ भाग गंधकआधोभाग यांकीबराबर तामेश्वरलै यांनैं कंवारका पाटाकारससूं षरल करै पाछैईनैं तांबाकी डाबीमैं घालि वालुकाजंत्रमैं दिन १ पचायसिद्धिकरै पाछै ईरसनैं रती २ पानमैं षायतौ सारा रोगजाय ९ इतिसूर्यावर्तरसः यो वैद्यविनोदमैं लिष्यो छै अथवा काकडासींगी सूंठि पीपलि नागरमोथो पोहकरमूल कचूर कालीमिरचि यांनैं बराबरिले अरयांकीबराबरिमिश्रीलै पाछै यांनैंमिहीवांटि टंक २ गिलवै अरडूसो पीपलि पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठि यांका काढासूं योचूरण लेतौ सास रोगजाय ११ येचक्रदत्तमैछै. अथवा पीपलि पौहकरमूल हरडैकीछालि सूंठि कचूर क

न. टी. मेघडंबरनामरसजोंई ग्रंथमैंलिष्योछै. प्रमाणीकछै. रुद्रदत्तमैंलिष्योछै. स्वासकी व्याधिमैंबलवानछै. परंतु रतीदोयकाउजनसूंषावणो. लिष्योछै सोयोसाधारणमध्यवर्ती वचनछै. अवस्थाभेदसौं बलाबल देषकर कमजादाकरणो.

मलगट्टा यांनैं बराबरिले याको चूर्णकरि यांबराबरि गुडसूं गोलीबा
धै चणाप्रमाण गोली १ तथा २ तथा ३ रोजीनाषायतौ सासजाय
१२ अथवा पारो गंधक सोध्योसार सूंठि कालीमिरचि पीपलि प
त्रज नागकेसरी नागरमोथो वायविडंग संभालु कपेलो पीपलामू
ल येसारी वांसूं दूणीले पाछै यांसारांनैं मिहीवांटि जलपीपलिका
रसकी पुट ३ दे पाछैईंकी चणाप्रमाण गोलीबांधे गोली १ रोजी
नाषायतौ सासनैं ववासीरनैं भगंदरनैं हियाकी सूलनैं पांसूकी सू
लनैं संग्रहणीनैं उदररोगनैं प्रमेहमात्रनैं यांसारानैं यो महोदधिचू
र्ण दूरिकरैछै १३ इति महोदधिरस येसर्वसंग्रहमैं लिष्योछै अथवा
पारो सोध्योगंधक सार सुहागो रास्ना वायविडंग त्रिफला देवदारु
सूंठि कालीमिरचि पीपलि गिलवै कमलगट्टा सोध्योसींगीमुहरो ये
बराबरिले पाछै पारागंधककी कजलीकरै कजलीमैं येमिलाय सह
तसूं रती १ तथा २ प्रमाणकी गोलीबांधे गोली १ रोजीनाषायतौ
सासरोगजाय १४ इति अमृतार्णवरसयो वैद्यरहस्यमैंछै अथवा
पारोगंधक बराबरिले यांकी कजली करि चौलाई कारसमैं दिन ५
परलकरै पाछै वज्रमुसीमैं ईंनैं घालिवालुकाजंत्रमैं ईंनैं पकावै दिन
१ पाछैईंने रती २ पानसूं षायतौ सास हिचकी दूरिहोय १५ इति
मेघडंबररस योरुद्रदत्तमैं लिष्योछै. इति श्रीमन्महाराजाधिराजम
हाराजराजराजेंद्र श्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागरना
मग्रंथेरक्तपित्त राजरोग क्षयीरोग सोसरोग हिचकी सासरोग यांकी
उत्पत्ति लक्षण जतननिरूपणंनाम पंचमस्तरंगः संपूर्णम् ५

अथ स्वरभेदरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते मनुष्यहैसो
घणांबोलवासूं काठा सुरका पढवासूं कंठकै कहीं तरैकी चोट लागि

न. टी. कव्यालीकोअवलेहछैसोछोटीपसरकव्यालीचाहिजे. अरपाकीनहींलेणीरसदारफलासूंधी जडासूंधी जोरवानजमीकींगंदी. गली. काणी. किडषाईनहींलेणी. आकंटकारीमहाप्रबलछै. श्वेतफूलकीलक्ष्मणाहोयछै.

वासूं अरविसादिकांका षावासूं कोपकों प्राप्तिहुवो जोवाय पित्त कफ सो कंठकास्वरनैं वहवावाली जोनसां त्यामैंरहि अर स्वरका भंगनै करै सोओ स्वरभंग हैसो. ६ प्रकारकोछै वायका १ पित्तका २ कफको ३ सन्निपातको ४ सरीरका स्थूलपणाको ५ क्षयीरोगको ६ अथवायका स्वरभंगको लक्षण लिष्यते कालाछै नेत्रमूंढो मलमूत्र जींका टूटोथकोशब्दजींनैबोलै गंधाकोसो शब्दहोय तौ वायको स्वरभंग जाणिजे. १ अथ पित्तका स्वरभंगको लक्षण लिष्यते नेत्रमूंढो मल मूत्रजींकापीलाहोय अर गलामैं दाहहोय. बोलवा कैसमै. तदि पित्तको स्वरभंगजाणिजे अथ कफकास्वरभंगको लक्षण लिष्यते सदाही कंठकफसौं रूक्योरहै अर मंदमंद दोहरोबोल्यो जाय रात्रिमैंवधजाय तदियोस्वरभंग कफको जाणिजे ३ सन्निपातका स्वरभंगको लक्षण लिष्यते जीमैं वाय पित्त कफका सर्व लक्षण मिलै तीनै सन्निपातको स्वरभंग कहिजे यो असाध्यछै ४ अथ क्षयीरोगको स्वरभंग लक्षण लिष्यते बोलतां मूंढोमैसूं धूवांनीसरै सोक्षयी रोगको स्वरभंग जाणिजे सो असाध्यछै ५ अथ सरीरका मोटापणासूं उपज्योजो स्वरभंगतींको लक्षण लि० गलाकै माहिहींबोलै शब्दजाएयूं जाय नहीं अर मोडो बोलै गलो बोलै तिस घणो लागै जींका येलक्षण होयतौ सरीरका मोटापणाको स्वरभंग जाणिजे ६ योभी आछयो नहीं अथ स्वरभंगको जतनलि० वायको स्वरभंग होयतो लूण तेलकीवस्त षावासूं जाय १ पित्तको स्वरभंग घृतका अरसहतका षावासूं जाय कफको स्वरभंग षारीकडवी अर सहत उगेरैकाषावासूं जाय ३ अथवा गलाको तालवाको मसूढांको लोही कढावासूंस्वरभंग.जाय ४ अथवा गरमजलकापीवासूं वायको

न. टी. स्वरभंगरोगजीसूं कंठविगडजाय आछी तरैबोलणी आवै नहीं. धीरैबोलैतौ कोई सुणै नही. उतावलोबोलैतौ जोर धणोपडै. योरोगउपावविनाअसाध्य होय तोसारी जींदगी ताई भोगणो पडैछै. जीसौं जतन करणो. ईका पथ्यापथ्य सास षासमैंछै.

स्वरभंग जाय ५ घृतगुडका पावासूं वायको स्वरभंग जाय ६ गरम दूधसौंपित्तको जाय ७ पीपलि पीपलामूल कालीमिरचि यांनैं गोमूत्रसूं पीवैतौ कफको स्वरभंग जाय ८ अथवा कव्याली टका १०० भरलेईसूं आधोपीपलामूल लेईसूं आधोचित्रकलेचित्रक बराबरि दसमूलले यांनैं मण एकपाणीमैं औटावै ईको पाणी सेर ६४ राषै अर पाणीछाणलेपाछै ईपाणीमैं टका १०० भर पुराणा गुडकी चासणी पतलीकरैपाछैईचासणीमैं ये औषधिमिहीवांटि नाषै ईमैं सहतसेर १ नापै पाछै टका २ तथा ३ रोजीनाषायतौसर्व प्रकार स्वरभंगनैं सास षासनैं मंदाग्निनैं गलाकारोगनैं आफरानैं मूत्रकृच्छ्रनैं यांसारानैं योदूरिकरैछै. ९ इति कव्यालीको अवलेह येसारा भावप्रकासमैंलिष्याछै. अथवा अजमोद हलद चित्रक जवषार आंवला ये सारा बराबरिले यांनैमिहीवांटि टंक २ घृतसहतकै साथि चाटैतौ भयंकर भीस्वरभंग जाय १० अथवा हरडैकीछाल वच पीपलि यांनैं मिहीवांटि गरम जलसूं लेतौ मेदकाक्षयीरोगको स्वरभंग जाय ११ यो वैद्यविनोदमैं लिष्योछै. अथवा बहेडाकी छाल पीपलि सींधो लूण आवला यांनैमिहीवांटि गऊकी छाछिसूं अथवा गोमूतसूं लेतौ स्वरभंग जाय १२ योवृंदमैछै अथवा जायफल पीपलि नील बिजोराकी केसरि ये सारी मिहीवांटि सहतमैं चाटै तौ स्वरभंग जाय अर स्वरनिपटचोषोमिहीं होजाय योजायफलको अवलेहछै योसर्व संग्रहमैछै. १३ अथवा कुलिंजन मूंढामैंराषै वेंकोरसचूषैतौ स्वरभंग जाय १४ अथवा चव्य अमलवेद सूंठि कालीमिरचि पीपलि डांसख्या पत्रज तज जीरो चित्रक इलायची येसारी बराबरिले यांनैं

* अरुचिरोग महानेष्टछै. अग्नि मंद होयकरशरीरको बलजातोरहै. और अनेक उपद्रव उठै ईवास्तैनींबूकोरस. सींधोलूण. आदाको रस येतीन्यू औषधि सममात्रारुचिमाफिक लेतौ अन्नऊपर रुचिआवै. भूषवधै. चित्तषुसिरहै. औरचिंताकी अरुचितौ चितादूरहुवैजदि मिटै. अरुचितातो ज्ञानविनाजावणी कठिणछै. सत्संगसूंजाय.

मिहीवांटि टंक २ पुराणा तिगुणा गुडमैं लेतौ स्वरभंग पीनस क
फकारोग अरुचि येसाराजाय १५ इतिचव्यादि चूर्ण अथवा पारा
कीराष तामेस्वर सार येबराबरिले तींकै कट्यालीका फलांका रस
की पुट २१ दे पाछे वेंकीगोली मूंग प्रमाणबांधै गोली १ मूंढामें
राषैतौ स्वरभंग दूरिहोय या गोरषनाथ जीकी गोलीछे १६ अ
थवा ब्राह्मी वच हरडैकी छालि अरडूसो पीपलि यांनैं बराबरिले
यांनै मिहीवांटि टंक २ सहतकै साथिदिन १४ लेतौ स्वरभंगनि
श्चैजाय अर वेंको सुरकिन्नर कोसोहोजाय १७ ये साराजतन वैद्य
रहस्यमैंलिष्याछे इतिस्वरभंग रोगकीउत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्
अथ अरोचक रोगकीउत्पत्ति लक्षण जतनलि० सोचसूं क्रोधसूं मो
हसूं अतिलोभसूं डरपवासूं मनपकड्यो जाय इसा भोजनसूं अर
बुरीतरैकारूपका देषिवासूं बूरीतरैका गंधकासूंघिवासू तदि मनु
ष्याकै वायपित्तकफ हैसोअरुचिनाम रोगनैं पैदाकरैछे सोवा अरु
चिपांचप्रकारकीछे. वायकी १ पित्तकी २ कफकी ३ सन्निपातकी ४
सोकादिककी ५ अथ वायकी अरुचिकोलक्षणलि० षोटा कषाय
लोमूंढोहोय हियामैं सूल चालै रुचिजातीरहै भोजनसूंतौ वायकी
अरुचि जाणिजे १ अथ पित्तकी अरुचिको लक्षणलिष्यते कडवो
षाटो गरम विरस सलूणो जींको मूंढोहोय अरसरीरमैं दाहहोय
मुषसोसहोयतो पित्तकी अरुचि जाणिजे २ अथ कफकी अरुचि
को लक्षणलिष्यते मूंढोमीठोहोय अरचिपचिपोहोयसरीरभार्‍योहोय
बंधकुष्ठहोय लालपडै सरीरमैं जागां जागां पीडाहोय भोजनमैं अ
रुचिहोयतो कफकी अरुचि जाणिजे ३ येसर्वमिलैतदि सन्निपातकी
अरुचि जाणिजै ४ अथ.सोकादिकसूं ऊपजीजोअरुचितीको लक्षण

न. टी. लवंगादिचूर्ण अठाराऔषधीकोछै. जीमैंभीमसेनीकपूरलिष्योछै जीनैशास्त्रमैशुद्ध कर्पूरलिषैछै. अर बरासकपूरभीकहैछै. जीसौंयोचूर्ण राजमान्यछै. अरगुणविशेषकरैछै. घणांरोगांनै शांतिकरैछै. चित्तप्रसन्नराषै.

लि० पेटमैं भूषलागै मूंढामैं चलैनहीं या सोकादिककी अरुचि जाणि जै ५ अथ अरुचिको स्वरूप लिष्यते मूंढामैं अन्नको ग्रासले तदि पुरसनैं क्यूंभीस्वाद आवै नहीं तदि जाणिजै ईकै अरुचिको रोगछै अथ भुक्तद्वेषको लक्षण लिष्यते भोजनको चिंतवन कस्यो अथवा भोजननैं देष्यो तदिवो भोजन रुचै नहीं तदिवेंकै भुक्तद्वेस नामकहिजै अथ अरुचिरोगका जतन लिष्यते भोजन पहली सींधोलूण लगाय आदो पायतौ अरुचिजाय भूष लागै कंठ जीभ शुद्धहोजाय अर सहत आदाको रसमिलाय पीवैतौ अरुचि षाससासजाय २ अथवा पकी आमलीको सरबत मिश्रीघालि करैतीमैं इलायची लवंग भीमसेनीकपूरको प्रतिवासदे अरयो सरबतषाय

अथवा ईंका कुरलाकरैतौ अरुचिजाय ३ अथवा राई जीरोसेकीहींग सूंठि सींधोलूण येमिही वांटि अनुमान माफिकगऊका दहींको मठो करितींमैं येघालि पीवैतौ अरुचिजाय भूषवधै ४ अथवा गऊका दहीनैं वस्त्रसूं छाणि तीमै मिश्रीमिलाय अर ईमैं इलायची लवंग भीमसेनीकपूर कालीमिरचि येअनुमानमाफिक ईमैंमिहीवांटि नाषिषायतौ अरुचिततकाल जाय ५ इतिसिषरणकीक्रिया अथवा अनारदाणा टका २ मिश्री टका ८ सूंठि टका १ कालीमिरचि टका १ पीपलि टका १ तज टंक २ पत्रज टंक २ नागकेसरि टंक २ यांनैंमिहीवांटि टंक २ जलसूं रोजीना लेतौ अरुचिजाय षासीजाय ६ इतिदाडिमादिचूरण अथवा लवंग कंकोल मिरचि षस चंदन तगर कमलगट्टा कालोजीरो नेत्रवालो अगर नागकेसरि पीपलि सूंठि चित्रक इलायची भीमसेनी कपूर जायफल वंसलोचन येसर्व बराबरिले यांसारांसूं आधी मिश्री लेपाछै यांनैमिहीपीसि टंक१ रोजीना

न. टी. अग्निकुमाररसमैं अजवायणकाअर्ककीपुटलिषीछै सोअर्क हाजरनहीं होयतौयेअजवायणकाफूल घालणा. जोयंत्रसौंडडायाथका लोवानकाफूलांमुजबहोयछै. अर आमलवेत नहींमिलैतौविजोराकोरसदेणो.

जलसूंलेतो अरुचिनैं मंदाग्निनैं क्षीणपणानैं बंधकुष्ठनैं पासीनैं हिच कीनैं राजरोगनैं संग्रहणीनैं अतिसारनैं प्रमेहनैं यांसारांरोगांनैं ल वंगादिचूर्णदूरिकरैछै. ७ येसाराजतन भावप्रकासमैंछै अथवा सोंफ जीरो कालीमिरचि डासख्यां अमलवेद संचरलूण गुड सहत विजो राकीकेसर तज पत्रज वंसलोचन इलायची डोडाकाबीज अनारदा णाजीरो येसारा अधेलाअधेलाभरिले ८ अथवा पीपलि पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठि कालीमिरचि अजमोद डासख्यां अमलवेद आ सगंध अजवायण कैथ येभी अधेलाअधेला भरले मिश्रीटंक ४ भरले यांनैंमिहीवांटि टंक २ रोजीनाजलसूं लेतो अरुचिनैं सासनैं षासनैं सूलनैं वमननैं रक्तपित्तनैं यांसारां रोगांनैं योदूरिकरैछै. ९ इति बृहदेलादिकचूर्ण योसारसंग्रहमैं लिष्योछै. अथवा जवषार साजी सेक्योसुहागो पांचूलूण सूंठि कालीमिरचि पीपलि त्रिफला सार भीमसेनी कपूर चव्य चित्रक अनारदाणा डासख्यां आदो ये सर्व बराबरिले यांनैंमिहीवांटि अजवायणका अर्ककी पुट ३ तीनदे पाछै नींबूका रसकी पुट ५ देपाछै अमलवेदका रसकी पुट ३ दे पाछै ईरसकी चणाप्रमाण गोलीबांधै गोली १ रोजीनापायतो अरु चिनैं मंदाग्निनैं गोलानैं प्रमेहनैं सासनैं षासनैं कफनैं नानाप्रका रका अनुपानसूं यो अग्निकुमाररस अरुचिनैं दूरिकरैछै. १० इति अग्निकुमाररससंपूर्णम् यो सर्वसंग्रहमैंछै. इति अरुचि रोगकी उ त्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्

अथ छर्दिरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनलि० घणीपतली वस्तका षावासूं घणीचीकणी वस्तका षावासूं सुगली वस्तकाषावासूं पेटमैं क्रमिकापडिवासूं दुरगंधका देषवासूं स्त्रीकै गर्भकारहवासूं अतिउ

न. टी. छर्दिरोगदोषांकाप्रभावसूंहोय ज्यांदोषांकीतासीरमुजबऔषधिलिषीछै. ज्यांसूंशां तिहोयछै. परंतु गर्भिणीस्त्रीकैगर्भकाकारणसौं होयछै. अरमनमैंकोईवगतमाषीकी संकासौंबी होयछै. ऐसैंचित्तकाबिगडवासौंबीहोयछै. सोछर्दिसाधारणजाणिजै.

तावला भोजनका करिवासूं वायपित्तकफ यांसूं दुष्टहोय अंगानैं पी डाकरताथका मूंढाऊपर दौडै मूंढा द्वाराषायोपीयो सर्व कढायदेछे तदि ईनैमनुष्यछर्दिकहैछे. सोवाछर्दि ५ प्रकारकीछे वायकी १ पित्तकी २ कफकी ३ सन्निपात ४ सूगलीवस्तनैं आदिलरतींकादेष वाकी ५ अथ छर्दिको पूर्वरूपलि० हियासूं षारोषाटो प्रथमहीनी कलै अर डकार आवैनहीं लालपडनैं लागै षारो मूंढो होजाय अन्नपानऊपरिरुचि जाती रहै तदिजाणिजे वमनहोसी अथवायकीछर्दिकोलक्षणलि० हियामैं पसवाडामैं पीडाहोय मुषसोस होय मथवायहोय नाभिदूषै षासहोय स्वरभेदहोय. डकारकोशब्दऊंचोहोय वमनमैं झाग आवै वमनकोरंग कालोहोय कसायलो होय घणोवेगसूं थोडोछादै छादतां दुषघणो पावै जीमैं ये लक्षण होयतौ वायकीछर्दि जाणिजे १ अथ पित्तकी छर्दिको लक्षण लिष्यते मूर्छाहोय तिसहोय मुषसोसहोय माथो तातो होय तालवोनेत्रये ताताहोय अंधेरीआवै भौंलि आवै अरउन्हूहर्‌यो लालगरमनै लीयां छादै ये लक्षण होयतौ पित्तकी छर्दिजाणिजे. २ अथ कफकी छर्दिको लक्षण लि० तंद्राहोय मूंढोमीठोहोय कफछादै नींदआवै भोजनमैं अरुचि होय सरीरभार्‌योरहै चीकणोमीठोजाडो कफलीयां छादै रोमांचरहै ये लक्षण होय तदि कफकीछर्दि जाणिजे ३ अथ सन्निपातकी छर्दिकोलक्षण लिष्यते सूल होय अन्नपचैनहीं अरुचिहोय दाहहोय तिस होय सासहोय प्रमेह येसारा घणां निरंतर रहै अर सलूणो षाटोली लोजाडो ऊनोलाल इसो वमन होयतौ सन्निपातकी छर्दि जाणिजे अथ सूगली वस्तनैं आदिलेर तींकादेषवासूं उपजीजोछर्दि तींको

---

* छर्दिरोग संस्कृत नामछै. और देसभाषमैं ईंकानाम उलटी कहैछै अथवा छादणी वासी धरतीदेखणो. औरदक्षिणमैं बांतीतथा वामीट कहैछै. योरोग वासी तथा मरीकारोगसूं जुदोछै. मरीको रोग अजीर्णसूं होयछै. जीनैंविसूचिका कहैछै. छर्दिरोग वालानैं शुद्ध मृत्तिकातींकीगोलीनग ७ अग्निमैंलालकरि जलमैं बुझाय बोजलपावोकरैतौ छर्दिजाय.

लक्षण लिष्यते उत्क्लेदहोय छर्दिकरवालागिजाय ५ अथ छर्दिरो गका जतनलिष्यते धणा सूंठि दसमूल यांका काढासूं वायकी छर्दि जाय १ अथवा घृतमैं सींधोल्लणघालि पीवैतौ वायकीछर्दिजाय २ अथवा मूंग आंवला यांनैं औटाय यांको रसकाढि ईमैं घृत अर सींधोल्लण नाषिपीवैतौ वायकी छर्दिजाय ३ अथवा मूंग मसूर जव यांका चूनकी राबकरितीमैं सहत नाषिपीवैतौ पित्तकी छर्दिजाय ४ अथवा आंवलाकारसमैं चंदन सहत मिलाय पीवैतौ पित्तकी छर्दि जाय ५ अथवा पित्तपापडाका क्काथमैं सहत नाषि पीवैतौ पितकी छर्दि जाय ६ अथवा गिलवै नींबकीछालि पटोल त्रिफला यांको काढोकरितीमैं सहत नाषि पीवैतौ पित्तकी छर्दि जाय ७ अथवा माषीकी बींट मिश्री चंदन सहतसूं चाटैतौ पित्तकी छर्दि जाय ८ अथवा षीलांको सातू घृत मिश्री सहत मिलाय षायतौ पित्तकी छर्दि जाय ९

अथवा मसूरको सातू मिश्रीमिलाय षायतौ पित्तकीछादजाय १० अथवा दाड्यूंका रसमैं सहतनाषि पीवैतौ वायपित्त कफकी छ र्दिजाय ११ अथवा चावलांका पाणीमैं सहत नाषि पीवैतौ पित्तकी छर्दिजाय १२ अथवा इलायची नागरमोथो नागकेसरि चावलां कीषील गौरीसर चंदन बहुफली बोरकीमींगी लवंग पीपलि येब राबरिले यांनैमिहीपीसि टंक १ तथा २ सहतसौं चाटैतौ त्रिदो षकीछर्दिजाय १३ अथवा पीपलका छौडानैं वालि पाणीमैं बुझाय औपाणी पीवैतौ छर्दि जाय १४ अथवा बोरकीमींगी आंवलाकी मींगी पीपलि माषीकीवींट यांको काढोकरि तीमैं सहत मिश्रीमि लाय पीवैतौ छर्दिजाय १५ येसर्व वैद्यविनोदमैंलिष्याछै. अथवा

न० टी० तीनदोषसूं तृषाकोरोगहोयछै. ज्यांदोषाका लक्षणपिछाणजै. अरत्रिदोषसौं होय छै. ज्यांकालक्षण मिल्याथका होयछै सोप्रसिद्धछै. परंतु गरमीका कारण सौंवाविपरीतपणा सौंभी होयछै. ज्यांकातो सहजका उपावसौं आराम होयछै.

जामूणका आमका पल्लवले त्यांनें औटाय पाणीकरि वे पाणीमें पी
ळांको चूंन नापि सहत मिलाय वेनै पीवैतो भयंकरभी छर्दिजाय
१६ अथवा सूगली वस्तसूं उपजीजोछर्दितीनें आछी वस्तदिषायां
छर्दिजाय १७ अथवा आंवसूं उपजीजो छर्दितीनें लंघन करायां
छर्दिजाय १८ येजतनभावप्रकासमेंछे. अथवा केसर मासो १ इ
लायचीमासो २ हिंगळूरती २ यांनें सहतसूं चाटैतो छर्दिजाय १९
इतिछर्दिरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम् अथतिसरोगकीउ
त्पत्ति लक्षण जतनलि० भयसूंपेदसूंबलका नासथकी वध्यौजोपि
त्तहै सो वायसूंमिल्यो अर तालवामें प्राप्तिहोय तिसकारोगनेंप्रग
ट करैछे. अरजलनें वहवावालीनसांनें रोकिकरियेवायपित्त कफ
हैसोसात प्रकारकी तिसनें करैछे सोलिषूंछूं वायकी तिस १ पित्त
की २ कफकी ३ सस्त्रादिककीचोटसूं उपजी ४ बलका नाससूं उ
पजी ५ आंवसूं उपजी ६ भोजनकरिवासूं उपजीजोतिस ७ अथ
तिसरोगको स्वरूपलि० निरंतरपाणीपीतो जाय अर तृप्तिहोय
नहीं अरपाणीपीवाहीमें मनरहै तदिजाणिजे ईकैतिसरोगछे अथ
वायकी तिसको लक्षणलि० मूंढोउतरिजाय कनपटी अरसिरमैंपी
डाहोय आवै. नसांरुकिजाय मूंढामैंसूं रसकोस्वाद जातोरहै ठंडो
पाणीपीयां तिसवधैं. तदिजाणिजे वायका तिसको रोगछे. १ अथ
पित्तकी तिसको लक्षणलि० मूर्छा होय भोजनप्यारो लागैनहीं दा
हहोय नेत्रलालहोय मुषमें घणोसोस होय ठंडी सुहावै मूंढो कड
वोहोय सरीरमें तापहोय मल मूत्रनेत्र पीलाहोय येलक्षण होयतदि
पित्तको तिसरोग जाणिजे २ अथ कफकीतिसको लक्षण लिष्यते
जठराग्निनें कफरोकै तदि अग्निकी गरमीहैसो जलनैं वहवावाली

न. टी. जोमोटा कारणासौं तृषाको रोग होय ज्यांपरतो पुरी दृष्टि राषणी चाहिजे. कारणमनोक्तउपावतो साधारण व्याधि जीतवाकोछै. अर दोषांकी व्याधितो प्रबल हुईथकी निदानपूर्वक शास्त्रसौं उपचार करणौं योग्य छै.

नसांनैं सोसि. अर कफहैसो मनुष्यकैतिसनैं उपजावैछै. तदि वेंति सकरिपीडित मनुष्य हैसो नींदनैंसरीरका भारयापणानैं प्राप्तिहो यछै. अर वेंको मूंढोमीठोरहै. अर ओमनुष्य सूकतोजाय तदि जा णिजै ईंकैकफकीतिसछै. ३ अथ शस्त्रादिकांकी चोटसूं उपजीजोतिस तींको लक्षणलि० शस्त्रादिकांकालागिवासूं सरीरको लोही नीकलै. तीसूं पीडाहोय तदि घणोतिस लागै. ४ अथ क्षीणतासूं उपजीजो तिस तींको लक्षणलिष्यते. हियो दूषै कफहोय मूंढोसूकै सरीरमैं सू न्यता होय तिसघणीलागै पीतो पीतो धापैनहीं. ५ अर येहीलक्षण आंबकीतिसकाजाणिजै. ६ अथ भोजन उपरांति तिसलागै तींको लक्षणलि० घणोचीकणोषाटो सलूणो भारयो अन्नषायो होय तदि ततकाल तिसलागै. ७ अथतिसका उपद्रवलिष्यते. जींकै मुषकोस्व रबैठिजाय कंठ गलो तालवो सूकै अर ज्वर मोह सास षास ये होय तो वेतिसवालो मरिजाय अथ तिसरोगकाजतनलि० वायकी तिसवालानैं गरमअन्न अर जल आछ्या तीसूं वायकी तिसजाय १ अथवा दहीं गुडसूं वायकी तिसजाय २ अथ पित्तकी तिसको जतन लिष्यते सोनो रूपो गरमकरिवे पाणीमैं वुजाय पाछै. ओ पाणी पीवैतोपित्तकी तिसजाय ३ अथवामिश्रीका ठंडासरबतसूं पित्तकी तिसजाय ४ अथवा धणोरात्रिमैं भेवै पछै वेनैं प्रभात घोटि वेमैंमिश्रीमिलाय पीवैतो पित्तकीतिसजाय ५ अथवा दाख्यूंका सर बतमैं मिश्रीमिलाय पीवैतो पित्तकीतिसजाय ६ अथवा सीतलज गामैं रहवासूं अर जलक्रीडासूं सीतल वस्त्रांका पहरवासूं पित्तकी तिसजाय ७ अथवा कपूरचंदन अगरका लगावासूं पित्तकीतिस जाय ८ अथकफकी तिसकोजतनलि० तीपीकडवीऊनी वस्तकाषा

न. टी. मूर्छादिक रोग ज्यांकायथोक्तउपचारयोग्यछै. येरोगदीषतातो अल्पमालमपडैछै परंतुयांका विशेषवध्यांकाआवांतर भेदघणाहोयछै. जींसौंयांरोगांका पूर्वरूपलक्षमैं देणा. प रंतु जो अज्ञान वैद्यछै सोरोगनैं विगाडदेवैछै.

वासूं कफकी तिसजाय ९ अथवा लवंगका काढासूं कफकी तिस जाय १० अथवा जीरो सूंठि संचरलूण यांकोचूरण जलसूं लेतौ कफकी तिसजाय ११ अथवा सुंदर मद्यकापीवासूं कफकी तिसजाय १२ अथ क्षीणताकी तिसको जतनलिष्यते सांठाका रससूं तिस दूरिहोय १३ ॥

अथवा वडका अंकुर महलौठी षील कमलगट्टा यांनैं मिहीवाटि गोलीकरि मूंढामैं रापैतौ तिसजाय १४ अथवा महुवाको गूंद मूंढामैं रापै तौतिसजाय १५ अथवा विजोराकी जड कैथ दाड्यूंकी जड चंदन लोद बोरकीजड यांनै जलमैमिहीवांटिसिरकैलेपकरैतौ तिसदाह सोसयेसाराजाय १६ अथ शस्त्रप्रहारसूं उपजीजोतिस तींको जतन लि० बकराकालोहीकापीवासूं यातिसजाय १७ अथवा बकराका सोरवामैं सहत मिलाय पायतौ शस्त्र प्रहारकी तिसजाय १८ अथवा षीरमैं मिश्री मिलाय षायतौ यातिसजाय १९ अथ आंवकी तिसकोजतन लिष्यते वच बीलका काढासूं आंवकी तिसजाय २० अथ दुर्बल आदमीकी तिसको जतनलि० दूधकापीवासूंईकीतिस जाय २१ तृषासूं दुषी पुरस मोहनैं प्राप्तिहोय मोहसूं मनुष्य प्राणानैं छोडिदे ईकारण कहीं अवस्थाकै विषै मनुष्यहैंसो जलनैं वज्र्योनहीं जलथोडो थोडो सदाहीपीवै येजतन वैद्यविनोदमैं अरभावप्रकासउगेरै सर्व ग्रंथांमैं लिष्योछे. इतितिसरोगकीउत्पत्तिलक्षण जतन संपूर्णम् अथमूर्छाहोय भ्रमतंद्रानिद्रा सन्यास यांरोगांकीउत्पत्तिलक्षणजतनलि० षीणपुरसकै घणाकुपथ्यका करवावालाकै मलमूत्रका रोकिवासूं चोटकालागिवासूं यांसूंपुरसकै वाहरलीइंद्रि

* मूर्छारोग घणो असाध्यछै. जोमनुष्य मूर्छित होय जाय सो तलावमैं बावडीमैं कूवामैं बनमैं घरमैं कठैही होय पण वीनैं संज्ञानहींरहैछै. ओरदांत बंध जायछै. जडसिरीखो होय जायछै. सोचतुर वैद्यहैसो सिणका कागदकी भोगली बणाय अग्निसूं सिलगाय मूर्छितका नाककै लगाय बलती बाजू वैद्य फूंक देवैतौ तत्काल जागृत होय.

यां जोनेत्र करणनैं आदिलेर त्यांनै वायपित्त कफधसिकरि संज्ञानें वहवावाली जोनसां त्यांनै वेवाय पित्तकफ रोकि अर अंधकारनैं तत काल वेप्राप्तिहोय मनुष्यनैं काठकीसीनाईपृथ्वी ऊपरिनापि देवै सोवेनैं सुप दुषको ग्यानरहैनहीं तीनैं वैद्य हैसोमूर्छा अर मोह कहैछै. सोवामूर्छा ६ प्रकारकीछै वायकी १ पित्तकी २ कफकी ३ लोहीकी ४ मद्यकी ५ विसकी ६ यांछवांही मूर्छाविषैपित्तहैसो मुष्य प्रधानछै. अथ मूर्छा कोसामान्यस्वरूपलि० कुपथ्यका सेवावालो अरहीनछै. पराक्रमजींको अर क्षीण अर मद्यादिकको पीवावालो ऐसोजो पुरस तींकै अग्यानको हेतु ऐसोजो तमोगुण पित्तरूप सोवधिकरि ग्यानरूप ऐसोजो सतोगुण अर रजोगुण त्यानैं छादितकरि अर दसौ इंद्रियांका स्थानाकै विसै वायपित्त कफ हैसो ग्याननैं वहवावाली जोनसां त्यांनैं आछादनकरि ओसुष दुषको नासको करवावालो ऐसो अग्यानको हेतु जो तमोगुण सोवधिवेगदेकरिकै मनुष्यकौं पृथ्वीपरि काष्ठकीसी नाई नापिदेछै. सो वेनै वैद्य हैसो मूर्छा कहैछै १ अथ मूर्छाको पूर्वरूप लिष्यते हियोदूषै जंभाई घणीआवे मनमैं ग्लानिहोय आवै संग्याकी दुर्बलता होयजाय तदिजाणिजे ईपुरसकै मूर्छाको रोगहोसी अथ वायकी मूर्छाका लक्षणलिष्यते आकास नीलो अथवा कालो अथवा लालजीमैं दीसै पाछै अंधकारमैं प्रवेस होय करि ग्यान होयछै. सरीर कांपै अंगामैं फूटणीहोय हियोदूषै सरीर कृशहोय लाल काली जीनैं छाया दीषै येलक्षण जींकैहोय तींकै वायकी मूर्छा जाणिजे १ अथ पित्तकी मूर्छाको लक्षणलिष्यते आकास लाल हर्यौपीलो जीनैं दीषै पाछै वेनै मूर्छा आवे पाछै पसेव आवै तदि ग्यानहोय अर तिसलागै स

न. टी. मूर्छा. भ्रम. तंद्रा. निद्रा. सन्यास. यांकाकारणसरीरमैं तत्वांका. अर तीन दोषांकायोगसौं होयछै. सोग्रंथकर्ताभिन्नभिन्न लिष्याछै. अर सन्यासको अधिकता कारण ओछै हियामैं रहता जोवात. पित्त. कफ. येत्रिगुणांसौं मिलै जदमहा अचेत होयछै.

रीरमें संताप होय लाल पीला जींका नेत्रहोय मुषमाहिसूं टूटा अ
क्षर नीसरे सुद्धनीकलेनही सरीरकी कांति पीलीहोजाय तदि पित्त
कीमूर्छा जाणिजे. २ अथ कफकी मूर्छाको लक्षण लिष्यते मेघकी
घटानेलीयां आकास जीनेंदीपे पाछे वेनें मूर्छा आवे पाछे मोडोजीनें
ग्यानहोय अर जींकोसरीर जाडो पसेवां सेती व्याप्त होय अर ला
लजीके घणीपडे कडवो गरम थूके तो कफकीमूर्छा जाणिजे. ३ अर
सर्वलक्षणमिलेतदि सन्निपातकी मूर्छाजाणिजे. ४ योमूर्छामृगीकतु
ल्यछेसूगलीवस्त देष्याविनाही आवे ४

अथलोहीकी मूर्छाको लक्षणलि० मनुष्यनें लोहीकी दुर्गंधि आवे
पृथ्वी अर आकास अंधकाररूपहीदीसे अर सर्वत्र लोहीकीवास
आवे निश्चल दृष्टिहोय सास आछीतरेंआवेनहीं पाछेमूर्छाआवे त
दिवेंके लोहीकी मूर्छाजाणिजे. ५ इसीतरहचंपाकापुष्पादिकांकासूं
घिवासूं मूर्छाहोयछे. योंईकोसुभावछे. अथ मद्यकीमूर्छाको लक्षण
लि० घणोमद्यपीयांमनुष्यबके घणो अरसोयजाय पाछे संग्याजा
तीरहे. अरपृथ्वीपरहाथपगपटकेजैठाताईवेमद्यकोसरीरमें अमल
रहेसरीरकांपेसोवेघणो तिसलागे येलक्षणहोयतदिमद्यकी मूर्छाजा
णिजे ६ अथविसकी मूर्छाको लक्षणलि० विषषायो होयतींकोसरी
रकांपे अरनींदघणीआवे तिसघणीलागे संज्ञा जातीरहे मूंढोकालो
होजाय अतिसार लागजाय भोजनमें रुचिजातीरहे. येजीमें लक्षण
होयतदिविषषायाकी मूर्छा जाणिजे. ७ अर तमोगुण अरपित्तका
आधिक्यपणातें मूर्छा होयछे. अथभ्रमकोलक्षणलि० अररजोगुण
अरवायपित्तमिले तदि भ्रमहोयछे अथतंद्राको लक्षणलि० तमो
गुण अर वाय कफमिले तदितंद्रा जाणिजे.. आधानेत्रषूल्यारहे. अ

न. टी. मद्यघणी जातका होयछै. मदिरा. माध्वी. पैष्टी. वारुणी इ० जोमदकारी पदा
र्थछै ज्यांसूं बणैछै. जीमें जोघणीऊंची होयछै. ज्यामैं घणोद्रव्यलागै. अर ज्यांकी रीतिसौं
प्रमाणसौं जोमद्यग्राही पुरुष सेवन करैछै. ज्यानैं गुण होयछै.

थनिद्राको लक्षणलि० तमोगुण अरकफमिलै तदि वेपुरषको मन षेदकूं प्राप्तिहोय अर दसूंइंद्रियां भीषेदकूं प्राप्तिहोय तदि वेइंद्रियां हैसो आपका विसयनें ग्रहणकरैनहीं तदि पुरससोवै अथसंन्यास कोलक्षणलि० हियामैंरहताजोवायपित्तकफ येदोषसूंवाणीदेह मन कीचेष्टाकूंग्रहणकरिनिर्बल पुरसकूंकाष्ठकीसीनाईमूर्छितकरैछै. तीनैं सन्यास कहिजै. अथ मूर्छाको जतनलि० तिलादिकांका सेकसूं वा यकीमूर्छाजाय १ अथपित्तकीमूर्छाको जतनलिष्यते सीतल सरबत मात्रसूं पित्तकी मूर्छाजाय २ चमत्कारिमणिका धारिवासूं मूर्छाजाय ३ कपूरचंदन उगेरै सीतल द्रव्यका लेपसूं मूर्छाजाय ४ अथवा बोरकीमींगी सीतल मिरचि षस नागकेसरि येचारूं टंक ५ लेयांनैं भिजोय सीतलजलसूं निचोय सरबतकरि ईमैं सहतमिलाय मिश्री मिलाय पीवैतोमूर्छाजाय ५ अथमीठी दाड्यूंका सरबतमैं मिश्री मिलाय पीवैतो मूर्छाजाय ६ अथवा मिनक्का दाषांका सरबतमैंमि श्रीमिलाय पीवैतो मूर्छाजाय ७ अथवा साबणनैं जलमैं घसि अं जन करैतो मूर्छाजाय ८ अथवा सिरसकाबीज पीपलि कालीमिरचि सींधोलूण येगोमूतमैंवांटि अंजन करैतो मूर्छाजाय ९ अथवा मैण सिल वच लसण यांनैं गोमूत्रमैंवांटि अंजन करैतोमूर्छाजाय १० अथवा मैणसिल महुवो सींधोलूण वच कालीमिरचि येबराबरिले यांनैं जलसूंमिहीवांटिनासदेतोमूर्छाजाय ११ अथलोहीकीमूर्छाको जतनलि० सर्वसीतलजतनसूं यामूर्छाजायछै १२ अथमद्यकीमूर्छा कोजतनलि० मद्यकीमूर्छाविसैं थोडोसोमद्य औरपावै तौमद्यकीमू र्छाजाय १३ अथवा सोवासूं मूर्छाजाय १४ अथविसकीमूर्छाको जतनलि० विषषावा कलानैं वमनकराजेमैंढलसूं अथवालीलाथू

न. टी. अर वाही मदिरा हलकी कीमतकी अर विपरीत वर्णीथकी विपरीतपणासौंली वीथकीमनुष्यकासरीरनैं विगाडैछै. जीसौं. मूर्छा. भ्रम. तंद्रा. आलस्य आदिलेर विकार म गटकरैछै. अरशुद्धमद्यरीतसौंलियोथकोकांति. तेज. स्मृतीनैंकरैछै.

थासूं अथवाफिटकडीसूं गरमपाणी पीपलि उगैरै कहींतरै वमन क
रावैतौ विसकी मूर्छाजाय १५ अथवा पीपलि माख्योपारो तामेसु
र पस नागकेसरि येबराबरिले यांनैरती १ सीतल जलसूं देतौ सर्व
प्रकारकी मूर्छाजाय १६ अथ भौंलिकोजतनलि० धमासाका का
ढामें घृतनाषिपीवैतौ भौंलिजाय १७ अथवा हरडै आंवलाकाका
ढामें घृतनाषि पीवैतौ भौंलिजाय १८ अथवा सूंठि पीपलि सौफ हर
डैकीछालि येटकाटका भरले गुड टका ६ भरले तींकीगोली टंक ५
भरकी करै गोली १ रोजीनाषायतौ भौंलिजाय १९ अथ तंद्रा अ
तिनिद्राको जतनलिख्यते सींधोल्लूण कपूर सरस्यूं मैणसिल पीपलि
महुवाकाफूल यांनैं घोडाकीलालसूं मिहीवांटि अंजन करैतौ तंद्रा
जाय अर अतिनिद्रायेदोन्यूंदूरिहोय २० अथवा सहजणांका बीज
सींधोल्लूण सरस्यूं कूठ यानै बकराका मूतसूं मिहीवांटि नासदेतौ
तंद्रा अतिनिद्रा येदोन्यूजाय २१ अथवा कालीमिरचि सहजणां
काबीज सूंठि पीपलि येबराबरिले यांनैं अगस्त्याकारसमैंमिहीवांटि
नासदेतौ तंद्राजाय २२ येसाराजतन भावप्रकासमैछै. अथवा सूंठि
कारसमैं सहतमिश्रीमिलायपीवैतौ मूर्छाजाय अथवा कौंछकीफली
का लगावासूं मूर्छाजाय २४ इतिमूर्छाभ्रमतंद्रानिद्रासन्यासयांरो
गांकी उत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्णं० इति श्रीमन्महाराजाधिराजमहा
राजराजराजेंद्रश्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागरनाम
ग्रंथे स्वरभेद अरोचक छर्दि मूर्छानैंआदिलेर यांका भेदसंयुक्त उ
त्पत्तिलक्षणजतननिरूपणं नामषष्ठःस्तरंगः ६

न. टी. प्रभातसमैं सोचदांतण स्नानकरचापाछै शुद्धमद्य तोला ८ आसरै पीवै पछै दो प्रहरकैआंतर भोजनसीरोषीरमीठो आदिलेर षावैमांसउगैरै. पछैरात्रिकाआरंभमैंचौगुणोपीवै तथाआपकीसक्तिमाफिकलेस्वस्थचित्तसौंअंतःकरण शुद्धसौंपीवैयाविधिसौ लेतौयोमद्यरसाय ण तुल्यगुणकरै. आयुष्यवधै. सरीरसुषपावै. बल. पुष्टिदे अमृततुल्यछै. अरइहींरीतसौंकम अथवाजादालेवै तौवोहीमद्यविषहोय करदांहादिक रोग. मदात्ययरोगकरैछै.

अथमदात्ययरोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनलि० जोगुणविषभंक्षण मैंछे सोहीगुणमद्यकापीवामैंछे. बुरीतरैषाणो कुपथ्यकैसाथिजोपुरस मद्यपीवैवेकै मदात्ययनैंआदिलेरघणारोग होयछै ईवास्तैमद्यआ छीतरै सूंपीवोजोग्यछै. ईनैंआछीरीतसूंपीवैतौअमृतकासागुणकरैछै. अरईनैंबुरीतरैसूंपीवैतौरोगांनैं उपजायविसकीतरह मांरिनाषैछै. य हांदृष्टांतदीजैछै. जैसो मनुष्यहैसो आछीतरै आपकी भूषमाफिक अन्नको भोजनकरैवषतऊपरिअर प्रमाणपूर्वकतौ अन्नअमृतकीतु ल्यगुणकरै अर सरीरनैंनिरोगराषै अरओही अन्नको भोजनपसूकी तरैषायअरघणा थोडाकोग्याननहींराषै तौवो भोजनवासीनैं आदि लेररोगानैं उपजावैछै. मनुष्यनैं तत्कालमारिनाषै ऐसेहीमद्यअरवि सैये दोन्यूप्राणका हर्ताछै. पणि यांनैं युक्तिसूंसेवनकरैतौ येदोन्यूं अ मृतकीतुल्यगुण करैछै. रोगमात्रनैंदूरिकरैछै. सदापुरुषनैंतरुणराषै अथविधिसूं मद्यपीवै तींको फललिष्यते प्रातसमैंसोचादिकजाय स्ना नादिककरि टका २ भरसेतिसूं मद्यपीवैमध्यान्हसमै चीकणा भोजन कैसाथि टका ४भरपीवै. रात्रिका भोजनकैसमैं प्रहररात्री प्रथमटका ८ भर मद्यपीवैतौयोमद्य अमृतका गुणकरै भूष वीर्यादिकवधावै रोग आवादेनहीं अर चोषोकाढ्यो नसाकोपीवै अरक्यूंआछ्या भोजनकै साथिहीपीवै मनप्रसन्नराषिपीवै समैंकी समैंतौ मद्यमैं कह्याछे सोगुणकरै सोगुणलिषूंछूं. काम वधावै. मनप्रसन्नराषै. ते जनैं पराक्रमनैं बुद्धिनैं स्मृतीनैं हर्षनैं सुषनैं भोजननैं नीदनैं मैथुन नैं यांसारांनैं आछीतरैपीयोमद्यवधावैछै. अर अन्यथापीवैतौ मदा त्ययनैं आदिलेर अनेकरोगांनैं अनेकवार्तानैं उपजावैछे सोलिषूं छूं बकवालागिजाय स्मरणजातोरहै. वाणीकी अरसरीरकी चेष्टा

न. टी. मदरोगतथामदात्ययरोगलिष्योछै. सोयेरोगमद्यका प्रसंगसौं घणा होयछै. जीमैंम दात्ययरोगकह्योसो मदसौं प्राणाकी हानीहोयसो मदात्ययरोगछै. जींकैमदकोमदात्ययहुवो होयतीको प्राणाको नास मोडो अरवेगोहोय.

गहलाकीसीतरै करवालागिजाय आलस्य आवैनहीं कहवाकीवात कहै काष्ठकीसीनाहीपड्योरहै अगम्यागमनकरै वडानैं मानैनहीं अभक्षाभक्षकरै संज्ञाजातीरहै गुह्यवार्ता कहदे और रोगांनैं उपजाय सरीरको नास करैइसीतरैपीवै सो तरहलिषूंछूं. भोजनविनापीवैनिरंतरपीवोहीकरै क्रोधकरिपीवै भयकरिपीवैतिसायोपीवैषेदयुक्तपीवै मलमूत्रकावेगमैं पीवै घणापटाईकैसाथिपीवैनिर्बलहुवो पीवैकहीतरैकीगरमीको पीड्योथकोपीवैजोपुरसत्यांकै मदात्ययनैं आदिलेर रोगहोयछै. अथ वायका मदात्ययको लक्षणलिष्यते हिचकीहोय स्वासहोय माथोकांपै. पसवाडामैंसूलहोय नींद आवै वकै वहुत येलक्षण होयतौ वायको मदात्यय जाणिजे १

अथ पित्तका मदात्ययको लक्षणलि० तिसघणी लागै दाहहोय जुरहोय पसेव आवै मोहहोय अतिसारहोय भौंल आवै सरीरको हस्यौ वर्ण होय येलक्षण होयतौ पित्तको मदात्यय जाणिजे. २ अथ कफका मदात्ययको लक्षणलि० छर्दिहोय अरुचिहोय सलूणो षाटोछादै. तंद्राहोय सरीर भार्‍योहोय येलक्षण होयतो कफको मदात्यय जाणिजे. ३ अर ये सर्वलक्षण मिलैतौ सन्निपातको मदात्यय जाणिजे ४ अथ परमदको लक्षणलि० पीनसहोय मथवायहोय अंगामैंपीडाहोय सरीर भार्‍योहोय मुषको स्वाद जातोरहै. मलमूत्र रुकिजाय तंद्राहोय अरुचिहोय तिसहोय येलक्षण होयतौ परमद जाणिजे. ५ अथ पानाजीर्णको लक्षण लिष्यते घणो आफरो होय वमनहोय दाहहोय अजीर्णहोय येलक्षण होयतौ पानाजीर्ण कहजे. अथ पानविभ्रमको लक्षणलि० हियोदूषै अंगमैंपीडाहोय कफथूकै मूंढासूं धूवोंनीसरै मूर्छा होय वमनहोय जुरहोय मथवायहोय मि

न. टी. मदात्ययरोगसांतिहोवानैं जोउपावलिष्योछैसोउपावघणाश्रेष्ठछै. अरदाडम, विजोरो द्राष वगैरै औरभीऔषधीघणीछै. अरशुद्धवनमैं स्त्रियांकीसाथरहणोयेउपचारश्रेष्ठछै. धनधराकाधण्यानैंमिलै. परंतु औरगरीवकैंतौं औरोग होयतौ कुत्ताकीमोतमरैछै.

ठाइमें दारुमेंरुचिनहींहोय येलक्षण होयतो पानविभ्रम कहजे. अथ मदात्ययको असाध्य लक्षण लिप्यते नीचलो होठ लटकि जाय सरीर उपरेसूं ठंडो लागे सरीरमाहि दाहहोय मूंढामें तेलकी बास आवे जीभ होठ दांत कालाहोय नीलापीला लालजींका नेत्रहोय अरहिचकी जुर वमन पसवाडामें सूल पासी भौंलि येलक्षण होयतो मदात्यय असाध्य जाणिजे अथ मदात्यय परमद पानाजीर्ण. पानविभ्रमयांको जतन लिप्यते. अथ वायका मदात्ययको जतन लिप्यते आसवांकाचोषी दारुका विधिपूर्वक सेवासूं वायको मदात्यय दूरिहोय १ अठे दृष्टांतदीजेछे. अग्निका दाझ्यानें अग्निसूं तपावेतो ओ आछ्योहोय अथवा विजोराकी केसर अमलवेद मीठाबोर मीठीदाड्यूं अजवायण जीरो सूंठि यांतीन्यांनेंमिही वांटि विजोरादिकका रसकी यांका पुटदे योचूर्ण अनुमान माफिक चोषा मद्यमैनाषि विधिपूर्वक मद्यनें पीवेतो अर पुराणो मद्यपीवे अथवा संचरलूण सूंठि कालीमिरचि पीपलि यांकोमिहीं चूर्णकरि अनुमान माफिक मद्यमें मिलाय मद्यपीवेतो वायको मदात्यय जाय २ अथवा चव्य संचरलूण सेकीहींग सूंठि अजवायण यांकोमिहीं चूर्णकरि मद्यमें नाषिपीवेतो वायको मदात्यय जाय ३ अथवा लावो तितर मुरगाकामांस भक्षणसूं वातको मदात्यय जाय ४ अथवा सर्वगुणसंपन्न यौवननें लीयां षोडश वरषकी स्त्रीका सेवनसूं वायको मदात्यय जाय ५ येजतन भावप्रकासमें लिष्याछे. दाष दाड्यूं छुंवारा महुवा यांकीदारु मिश्रीका संजोगकीपीवेतो वायको मदात्यय जाय ६ अथवा गऊका दहींकोमठो मिश्रीमिलाय पीवेतो वायको मदात्यय जाय ७ येसार संग्रहमें लिष्याछे. अथ पित्तका मदात्य

म. टी. सोंवाकुत्ताकीमीतकियांनहोयछैसोलिषूंछूंप्रथम जुवानहोयजदांकुत्तीके प्रसंगसोंउन्मत्तहोयकर घरकातथावाहरलानें फाडषाय. पछैअंधदसागयांकोईतरैसों वेकामाथामैंक्षतपडैजहांवेकीजीभपहुंचैनहींजदांमाथामैकीडापडैपछैविनाउंपाव भ्रमतोहीमरजाय.

यको जतनलि० सर्व सीतल जतनासूं पित्तको मदात्ययजाय ८ अथवा सीतलजलमैं मिश्री सहत मिलाय पीवैतौ पित्तको मदात्यय जाय ९ अथवा मीठी दाड्यूं कारसमैं मिश्री मिलाय पीवैतौ पित्तका मदात्यय जाय १० अथवा सुस्याहिरण लावोयांका मांसकाषावासूं पित्तको मदात्यय जाय ११ अथवा बकराका सोरवासूं साठी चावलांका षावासूं पित्तको मदात्यय जाय १२ अथवा कफकामदात्ययको जतन लिष्यते चंदन पस यांका लेपसूं कफको मदात्यय जाय १३ अथवा जवगहूं कुलत्थ यांका षावासूं कफको मदात्यय जाय १४ अथवा कडवी षाटी सलूणी वस्तका षावासूं कफको मदात्यय जाय. १५ अथवा वमनसूं लंघनसूं कफको मदात्यय जाय १६ अथवा संचरलूण जीरो अमलवेद तज इलायची कालीमिरचि मिश्री यांनैं बराबरिले यांनैमिही पीसि जलकै साथि लेतौ कफको मदात्यय जाय १७ अथ सन्निपातका मदात्ययको जतन लिष्यते आंवलाकारसमैं पारागंधककी कजली टंक १ मिलाय पीवैतौ सन्निपातको मदात्यय जाय १८ अथ पानविभ्रमको जतन लि० दाषांका सरबतमैं अथवा कैथका सरबतमैं अथवा दाड्यूंका सरबतमैं सहत मिश्रीमिलाय पीवैतो पानविभ्रम जाय १९ योवृंदमैंछै. अथ धत्तूराका फलका मदको जतन लिष्यते पेठाका रसमैं गुडघालि पीवैतौ धत्तूराको मदजाय अथवा दूधमैंमिश्रीनाषि पीवैतौ धत्तूराको

न. टी. अठैमद्यकढावाकायंत्रकोचित्रछै. जीनैलिष्योनहीं. कारण ईंकोविशेष प्रयोजन नहींछै. जीमूं अर मदात्यय परमद. पानाजीर्ण. विभ्रम. इत्यादि अरधत्तूरो भांग. गांजो. चर्स. कन्हेर. घरभूली. अरयांकी क्रियाविलक्षणछै जैसै भांगनैं तांबाकापात्रमैं सेकै. नसाकी तेजीवधावै. अरधत्तूराका वीज घालै अर घरभूली घालै वेमैंमिसरि. खांड. दूध. मुसालाभे वाउगैरै घालकर आछी स्वाद वणावै पाछै वेनै पानकरै. जींका पान करवासौं मनुष्यबहुत सुषमानैछै. अर केईतो मनुष्य घणांगाफल होयछै. ज्यांनैं दोयदिनतांईं विस्मृतीरहै. स्मृतीआवणीबी कठिण होयछै. जीसौं लिषीछै. इसाविपरीत कार्य करणैसौंबी मदात्ययरोगांनैं आदिलेरदाहादिक उपद्रव होयछै.

अर भांगकोमदजाय २० अथ भांगका मदको जतन लिष्यते क
पासकी जडको रसपीवै अथवा बैंगणकी जडको रसपीवै अथवा
पतली छाछि पीवै अथवा घृत पीवै अथवा मिश्रीका सरबतमें नीं
बूको रसनाषि पीवैतो धत्तूराको अरभांगको मदजाय अथवा दूध
मिश्रीपीवैतो भांगको मद दूरिहोय २१ अथ विसका मदको जतन
लिष्यते नींबोलीकीमींगी नीलोथूथो मासा २ वांटि कांजीका पा
णीसूं पीवैतो सर्व विसमात्रको मद दूरिहोय २२ येजतन वैद्योपचा
रग्रंथमैछै इतिमदात्यय परमद पानाजीर्ण पानविभ्रम धत्तूरा भांग
विसमद्ययांकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्

अथ दाहरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनलिष्यते दाह हैसो ७ प्र
कारकोछै. पित्तको १ दुष्टलोहीकावधवाको २ शस्त्रादिकांसूं निसर्‍यो
जोलोही तींकरिपूर्ण कोष्ठहोयजावाको ३ मद्यादिककापीवाको ४
तिसका रोकिवाको ५ धातुक्षयको ६ मर्मकीचोटलागिवाको ७ अथ
पित्तका दाहको लक्षणलिष्यते पित्तज्वरकासर्वलक्षणमिलै १ लोही
का दुष्टपणासूं उपज्योजोदाहतींको लक्षणलि० सर्व सरीरमैं दाह
लागिजाय अर सर्वसरीरमैं धूवोसोनीसरै सरीरकी तांबाकीसी आ
कृतिहोय अर तांबाका रंग सरीसा नेत्रहोय मूंढामैं लोहीकीसी
गंध आवै अरसगला अंग अग्निकीसीनाईबलैयेलक्षणहोयतौदुष्ट
लोहीको दाहजाणिजे २ अथ सस्त्रादिकसूं नीसर्‍यो जोलोही तीसूं
कोष्ठपूर्णहोय तींका दाहकापूर्वरूपलक्षणलि० लोहीसूं कोठो भर
जाय अर दाहलागि जायसो असाध्यछै. ओमरिजाय ३ अथ म
द्यादिककापीवाकादाहका लक्षणलिष्यते हृदाको पवन हैसो पित्त
अर लोहीसूंमिलिये सारीत्वचामैं आय प्राप्तिहोय अरसारासरी

न. टी. चंद्रकलारस वैद्यरहस्यमैछैजींमैं ताम्रभस्म पारासौं डोढोलिष्योछै. अर अन्यग्रंथ
मैं पाराकी समान ताम्रलिष्याछै. परंतु प्रबल रसविना डोढो उजन सिवाय होय नहींसूं उप
रलिष्या मुजब लेणा. पारोशुद्धलेणो. कजली प्रहर एक घोटणी ईकै पुट सर्व देणा.

रमें भयंकरदाहनें करैछे४अथ तिसकारोकिवाकादाहकोलक्षणलि०
तिसका रोकिवासूं शरीरकोजलधातुक्षीणहोय तदिसरीरमें गरमी
वधेतदिसरीरनें दग्धकरै पाछे वेंकोचित्तमंदहोवे अर वेंकोगलोताल
वोसूकै जीभवारै काढी कांपणलागै.५अथधातक्षयकादाहको लक्षण
लिष्यते धातक्षयकादाहसूं मूर्छाहोय आवैतिसलागै सुपकोस्वर वैठि
जाय सरीरको सामर्थ्य जातोरहै योदाहअसाध्यछे.६ अथमर्मकी
चोटलागिवाका दाहकोलक्षणलि० शिर हृदयपेडूनेंआदिलेरमर्म
स्थानमें चोटलागिवासूं उपजैसो असाध्य जाणिजे अथ दाहको
असाध्यलक्षणलि० सरीरठंडो होजाय अरमांहिदाहहोय सोमर
जाय अथदाहकोजतनलि० हजारवारको धोयो अथवा सोवारको
धोयोघृततींको सरीरकैमर्दनकरै तौ सरीरको दाहजाय १ अथवा
जवांका सातूमेंमिश्रीमिलाय षायतौ दाहजाय २ अथवा आंव
लाका पाणीमें कपडो भिजोय वेनैंओढैतौसरीरकोदाहजाय ३ अ
थवा पस अर रक्तचंदननेंघसिसरीरकौलेपकरैतौ दाहजाय ४ अ
थवा केलीका पांनाकीअथवा कमलका पाषड्यांकी सज्या ऊपरि
सोवैतौ दाहजाय ५ अथवा फवांरा चादरिउगैरे जलक्रीडासूंदा०
६ अथवापसषानाका रहवासूंदा०७ अथवा सीतल जलकापीवा
सूंदा०८ अथवा उपवन उगैरे सीतलस्थानमे रहवासूंदा०९ अ
थवा चंदनपित्तपापडो पस कमलगट्टा धणों सौंफ आंवलायांकोटंक
२ भरकोक्वाथकरितीमें सहतमिश्रीमिलायपीवैतौ दाहततकालजाय
१० अथवा धणानें रातिनेंभेवैपाछैवेहीजलमें प्रातसमैंवेनैघोटिछां
णिमिश्रीमिलाय पीवैतौ दाह दूरिहोय ११ ये सर्व भावप्रकासमैं
लिष्याछे. अथवा लोहीका विगडवाको दाहकोजतनलि० वेकैसीरछु

न. टी. उन्माद रोग वहुत प्रकारसौं होयछै. अर जो भूतप्रेतादिकांकालागवाछै सो वैये सर्व उन्मादरोगमेंछै. परंतु घणामनुष्यभूतोन्माद जिस्यांरोगानै व्रथा उपाव करकै मनुष्या नैं भयमेंराषि अरवांकनैं द्रव्य ठगैछै परंतु रीतसौं उपचार करैतौ आराम होय.

डायदीजैतो दुष्टलोहीको दाहदूरिहोय १२ अथवापारो सोध्योगंधक भीमसेनी कपूर चंदन षस नागरमोथो येसारा बराबरिलेपाछैं पारागंधककी कजलीकरि तींकजलीमें येऔषदि नाषे पाछै यांकी जलसूं गोलीबांधे गोली १ मूंढामैंराषि चूंषैतो सरीरकोमाहिलो दाहजाय योदाहदूरिकरिवाकोरसछै. १३ अथवा पारो तोलो १ तामेस्वरतोलो १ अभ्रकतोलो १ अरसोध्योगंधक तोला २ प्रथमपारागंधककी कजलीकरि पाछै येऔषदि जलमैंमिलावै पाछै यांकै नागरमोथाका रसकीपुट १ देपाछैंमीठी दाड्यूंका रसकीपुट १ दे पाछैं केवडाका अर्ककीपुट १ देपाछैं सहदेईका रसकीपुट १ दे पाछैपीपलीकारसकीपुट १ दे पाछै चंदनकारसकीपुट १ देपाछै दाषकारसकी पुट ७ देपाछै छायासुकाय चणाप्रमाण गोली बांधे पाछैगोली १ रोजीनाषायतो दाहनैं अमलपित्तनैं मूत्रकृच्छ्रनैं प्रदरनै प्रमेहनै यांसारांरोगांनै यो चंद्रकलारस दूरिकरैछै. १४ इतिचंद्रकलारसः योवैद्यरहस्यमैंलिष्योछै इतिदाहरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्. अथउन्माद रोगकी उत्पत्तिलक्षण जतनलिष्यते विरुद्ध भोजनसूं अपवित्र भोजनसूं मनुष्यको चित्त विगडैछै अर देवता गुरु ब्राह्मण तपस्वी राजा यां सारांका तिरस्कारासूं पुरसकोमन विगडैछै अर कहींतरैका भयसूं अर कहीं तरैका हर्षसूं पुरषको मनविगडैछै अर धत्तूरानैं भांगिनैं आदिलेर त्यांका षावासूं भीपुरषकोमन विगडैछै तदि औ पुरसकोमन विगड्यो थको वाय पित्त कफकूं प्राप्तिहोय पुरषकूं मदजुक्त करिदेछै नाम पुरसनैं गहलो करिदेछै तीनैं लोकीकमैं हौलदिल कहैछै सोयोरोग ६ छ प्रकारकोछै वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ मनका

न. टी. पारोसर्वजायगांलिष्योछै सोपारो तोसर्वजागां शुद्धयोगकरणो. कारण पाराकी शुद्धीशास्त्रमैंजोयथोक्तलिषीछैजींक्रियासौं अरगंधकलिषीछैसो आवलाषार शुद्धकरिथकी मात्रऔषधीमैंयोगकरणो. गंधक शुद्धकरतयाररराषणो.

दुषको ५ विपकापावाको ६ अथ उन्मादकोस्वरूपलिष्यते विरुद्ध भोजनादिक पाछै कह्या त्यांसेती अर पीए पुरसकै वाय पित्त कफ दुष्ट होय बुद्धिको नासकरै पाछै वैकाहियामैं पीडाकरै पाछै मननैं वहवा वालीजोनसा वानैं वे दोष मोहितकरै तदि मनुष्यको चित्त विगडिजाय थिर रहैनहीं ईनै हौल दिल कहैछै अथ उन्मादको पूर्वरूपलि० बुद्धिथिररहैनहीं शरीरको पराक्रम जातोरहै दृष्टि थिर रहैनहीं धीरजजातोरहै आछीतरह बोलै नहीं त्हदोसूनो होजाय येलक्षणहोयतौ जाणिजै पुरसकै उन्माद होसी अथ वायकाउन्मा दकोलक्षणलि० लूपीवस्तका अरठंडीवस्तका पावासूं घणा जुलाबका लेवासूं धातका पीणपणासूं वायवधैतदिओवाय हियानैवि गाडै अर बुद्धिको अर स्मरणको तत्काल नासकरै तदि मनुष्यहै सो विनाकारणही हंसै गावै नाचै वोहाथसूं मूंढानैं वानराकीसी नाई करवालागिजाय अर रोवालागिजाय शरीर कठोर अरकालो लाल होजाय अर भोजन पच्यांपछै योरोगवधै येलक्षण होयतौ वायको उन्मादजाणिजै १

अथ पित्तका उन्मादको लक्षणलिष्यते अजीर्णमैं भोजन कस्यां कडवो षाटो गरम यां भोजनसूं पित्तवधै तदिमनुष्यका हृदाको पित्त हैसो विगडिउन्मादनैं करै तदि ओपुरषकहींकी वातनैं मानैनहीं अर नागो होजाय मारवालागिजाय डोलवा लागिजाय वैंको सरीरतातो होजाय सीतलवस्तकी वांछाराषै अरसरीरकी आकृतिपीलीहोजाय येलक्षण होयतौ पित्तको उन्माद जाणिजै २ अथ कफकाउन्मादको लक्षणलिष्यते भूषमंदहोय अरजीमैं घणोषाय तदि

---

* भूतादिककोउन्मादरोगछै. जींवास्तै उपावमंत्र. तंत्र. धूप उतारावगैरै घणाधुतारा लोकठगताफिरैछै. परंतुयाग्रंथमैंउपावलिष्याछै. यथायोग्यछै. अर देवताकोउन्मादरोगछैसो तोपवित्रछै. उत्तमउपावकियां आरामहोयछै. वास्तै ईग्रंथमैंआछीभांतसौं वांचसीविचारसी जीनैंफायदोहोसी.

पुरसकै कामकरिवामैं आलस घणो आवै तदिवेंकैपित्तहैसो कफसूं मिलि अरमर्मस्थानानैं वधावै तदि पुरसकीबुद्धिको अरस्मरणको नासकरै पाछैवेंका चित्तनैं विगाडिवैंपुरसनैं उन्मतकरिदे अर ओपुरसकमबोलै भूषजातीरहै स्त्रियांप्यारीलागै येकांतस्थानप्यारोलागै नींदघणीआवै छर्दिहोय बलजातोरहै नषादिकसुपेदहोजाय येलक्षणहोयतौ कफको उन्मादजाणिजै ३ अर येसर्वलक्षणहोयतौ सन्निपातको उन्मादजाणिजै ४ अथ मनकादुःख उन्मादको लक्षणलि० चोरांकाभयसूं राजाकाभयसूं प्रबल शत्रुका भयसूं और कहीं भयंकर कर्मका भयसूंडर्योजो पुरसतींकै अथवा धनकानाससूं अथवा पुत्रादिकांकानाससूंयांवस्तांसूं पुरसकै मननैं चोटलागै अर घणो मैथुन करैजींकै तदिवेंकोमनविगडै पुरसकौ उन्मत्तकरिदेतदिवो मनमैं आवै सोबकै संज्ञाजातीरहै अर गावालागिजाय हसिवा लागिजाय येलक्षणहोयतौ मनका दुखको उन्माद जाणिजे ५ अथविषषावाका उन्मादको लक्षण लिष्यते लालनेत्रहोय बलसरीरको जातोरहै सर्वइंद्रियां कीकांति जातीरहै गरीब होजाय मूंढो कालो पडिजाय येलक्षण होयतौ विसषावाको उन्मादजाणिजै ईउन्मादवालो मरिजाय ६ अथउन्मादमात्रको असाध्यलक्षणलिष्यते केतोनीचोही मुष राषकै ऊंचोही मुषराषै अर सरीरकोबलमांस जातोरहैनींद आवैनहीं जागिवोहीकरै येलक्षण होयतौ ओपुरस मरिजाय ७ अथ भूतादिक जीनैं लाग्यो होय जीसूं उपज्योजो उन्माद तीको लक्षणलिष्यते जीपुरसनैं भूतादिक लाग्योहोय तींपुरसकी वाणी मनुष्यकीसी नाईहोय विचित्रहोय अर वेंकोपराक्रमभी विचित्रहोय अर वेंका शरीरकीचेष्टा विचित्रहोय अर वेंकोग्यानभीअर वेंका

न. टी. देवदोषादिकलिष्याछैसोभीमनकाआवेशमात्रछै. सोवो आवेशसत्यछै. जैसैमनका पूर्णभावसौंभक्तिप्रियभगवान् प्रसन्नहोयछै. सुषदाईहोयछै. अरभयकाआवेशसौंभय संबंधी फलप्राप्तीहोयछै. मुष्यमनोमयीकारणछै.

अज्ञानभीविचित्रहोय येलक्षण जीमें होय तींके भूतादिक लाग्याको उन्माद जाणिजे १ अथ जींकासरीरमें कहीं देवताको प्रवेस हुवो होय तींका उन्मादको लक्षण लिष्यते. सर्ववातसूं श्रोसंतुष्टरहै अर ओ पवित्ररहै अर सुंदर पुष्पादिककी मालाधारै अर सुंदर अत्तर सूंघिवोकरै अरवेंकी आंपमिचै नहीं अरविगरिपढ्यो संस्कृत बोलै अर सरीरमें तेज वधै अर जोमागेजीनें वरदे अर ओ ब्रह्मएय होजाय येजीमें लक्षण होय तींमें देवताका प्रवेसको उन्माद जाणिजे. २ अरजींका सरीरमें असुर प्रवेस कस्योहोय तींसूंउपज्यो जो उन्मादतींकोलक्षणलि० पसेव आवे अर ब्राह्मणगुरु देवता यामें दोषकाढै कुटिलजींकी दृष्टि होय कहींतरैको वेंकोकौ भय होय नहीं पोटामार्गमेंदृष्टिहोय कहींतरै तृप्ति होय नहीं भोजनादिकमें दुष्टात्माहोय येलक्षण जीमेंहोय तीनें असुर लाग्यो जाणिजे ३ अथ गंधर्व लागिवासूं उपज्योजो उन्माद तींकोलक्षणलिष्यते दुष्टात्माहोय अर फूलिनमें वनमें रहवासूं मनराजीरहै आचारमें मनरहै गावो नाचिपोसुहावै थोडो बोलै येलक्षण होयतौ गंधर्व लाग्यो जाणिजे ४ अर येही जक्षग्रहका लक्षण जाणिजे ५ अथ जींकासरीरमें पितरांको सतीको दोषहुवो होय तींकोलक्षणलि० डाभकेऊपरि पिंडमेलवोकरै सतोगुणी होजाय तर्पण करवोकरैमां समैंतिलमें गुडमें षीरका भोजनमें मनरहै येलक्षण जीमें होयतौ पित्रेसुरांको दोष जाणिजे ६ अथ सतीको दोषजींकासरीरमें होय तींकोलक्षणलिष्यते मननिश्चलरहैनहीं संतानादिकको अवरोधकरै सतीकी वार्ता सुहावै बोलैनहीं बोलैतौ वरदेतौ बोलैपवित्ररहै आछी वस्तांमें मनरहै येलक्षण होयतौ सतीको दोष जाणिजे ७

न. टी. मनुष्यांकाकालमृत्यु अथवा अकालमृत्युयेजोछैसोकालमृत्युवालाकैगतिहोयछै अकालमृत्युवालाकीगतिनहींहोयछै. ईंवास्तैउत्तमक्रियासौं आगतीछूटजायछै. श्रेष्ठगति होयछै. मृत्युसमयकासाधनयुक्तजीनें कालमृत्युकहैछै. वाकीअकालमृत्युछै.

अथक्षेत्रपालकादोषको उन्मादलिष्यते सुपनासिकामे लोही चलावे स्मशानकीराष मस्तगमें नाषे षोटा सुपनाआवे पेटमें पीडरहे अर संधिसंधिमेंपीडरहे चित्तस्वस्थिर रहेनहीं येलक्षण होयतो क्षेत्रपाल को दोष जाणिजे ८ अथ बिझासणीका दोषसूं उपज्योजो उन्माद तींको लक्षण लिष्यते पष्याघातहोयसरीर अर रुधिर सुषिजाय मुष पग वांका होय जाय शरीर क्षीणहोय जाय स्मरणादिकजातो रहे. येलक्षण होयतो बीझासणको दोष जाणिजे ९ अथकामणका दोससूं उपज्योजोउन्माद तींको लक्षण लिष्यते कांधौमाथो भारयो होय मनास्थिररहेनहीं सर्व अंगक्षीण होय जाय नासिकामें नेत्रांमें हाथांमें पगांमें दाहहोय वीर्यको नासहोय सरीरका आठूं अंगामें सुईकासा चभकाचालिवोकरे सरीरसूकि जाय येलक्षण होयतो कामणका दोसको उन्मादजाणिजे १० अथ शाकिनीडाकिनीलागिवासूं उपज्यो जोउन्माद तींको लक्षण लिष्यते सारा अंगांमें पीड होय नेत्र घणादूषे मूर्छा होय सरीर कांपे रोवे बके भोजनमें अरुचि होय हसे स्वरभंग होय सरीरकोबल अर भूषजातीरहे भौंलिहोय जुरभीहोय येलक्षण जीमें होय तो शाकिणी डाकिणीको दोस जाणिजे ११ अथ षोटी गतीसूं मूवो जोमनुष्य वेप्रेत होय तीसूं उपज्याजो उन्माद तींको लक्षणलिष्यते सवारे घरमेंसूं ऊठिऊठि भागे षोटावचन काढे बहुतबके सरीरकांपे रोवे षावेपीवेनहीं बूरीतरे सास लेवोकरे मनमें आवेसो षावे येलक्षण होयतो प्रेतको दोष जाणिजे. १२ अथ जींका सरीरमें राक्षस लाग्यो होय तींसूं उपज्योजो उन्माद तींको लक्षण लिष्यते मांसका षावामें अर लोहीका पीवामें जींकी रुचिरहे अर दारूका पीवामें रुचिरहे अरनिर्लज्ज घणोरहे

म. टी. शरीरमें भूतादिकांकालागिवाकीरीतलिषीछैसोसत्यछै. कारणभयकामसंगसौमनमें आवेशमात्र होयछै. जैसैकाचमें वा. जालादिकमें प्रतिबिंबप्रवेशहोयजींमुजबहोयछै. परंतु मनुष्य अज्ञातहुवाथका ईउन्मादरोगमें भ्रमघणाजायछै.

घणोदुष्टपणासूं बोलै घणासुरापणा जीनैं चढिजाय क्रोधजीनैं घ
णोहोय रात्रिमें एकलोफिरै अपवित्र रहै येलक्षण होयतौ राक्षस
लाग्यौ जाणिजे १३ अथ ब्रह्मराक्षस जीने लाग्यौ होय तीसूं उ
पज्योजो उन्माद तींको लक्षण लिष्यते देवता ब्राह्मण गुरु यांसूं
वैरराषै वेद अर वेदांतको जाणिवावालो आप होजाय अर आ
पका सरीरमैं आपहीपीडाकरै अरमारै नहीं येलक्षण होय
तौब्रह्मराक्षसलाग्यौ जाणिजै १४ अथपिसाच जीनैलाग्यौ
होय तींसूं उपज्योजो उन्मादतींको लक्षणलि० ऊंचाहाथराषिवो
करै सरीरकृस होजाय क्यूंकोक्यूंमिथ्यावकै सरीरमैं दुर्गंधिआवै
अपवित्ररहै अतिचंचलहोजाय घणोपाय उद्यानमैं मनरहै भ्रम
घणो होय रोवै येलक्षण होयतौपिसाच लाग्यौ जाणिजै १५ अथ
उन्मादको असाध्य लक्षणलिष्यते आंषि फटीसीहोजाय डोलवो
करै मूंढे झागआवौकरै नींद घणी आवै पडिजाय कांपै येलक्षण
होयतौ असाध्यजाणिजै अर पुन्यूनै आजार घणो होयतौ देव
ताको दोसजाणिजै १६ अर सांझमैं कोई लागैतौ असुरको दोस
जाणिजे अमावसनैं येलक्षण होयतौ पितरांको दोस जाणिजे आ
ठैने येलक्षण होयतो गंधर्वको दोस जाणिजे पडिवानैंयोविकार हो
यतौ जक्षको दोस जाणिजे रात्रिनैं येलक्षण होयतौ राक्षसपिशा
चांको दोसजाणिजै अथ यांसारांकी लागिवाकी तरहलिष्यते जैसैं
मनुष्यादिकांको प्रतिबिंबदर्पणादिकांमैं धसिजायछै तैसेही प्राणि
मात्रमैं सीतउष्णधसिजायछै जैसैंआतसी काचमैं सूर्यकीकिरण ध
सिकरिअग्निनैं उपजाय देछै तैसैही मनुष्यादिकांकासरीरमैं भूत

* उन्मादरोगनैंउपावकह्याछैंसुउत्तमउन्मादनैंतो उत्तमउपावछै. नारायणकवचसप्तशती दुर्गा, मृत्युंजय, इत्यादिक. और नेष्टउन्मादनैं उताराउगैरै क्षेत्रपालादिकह्याछै. परंतु औषधी उपावतो तत्कालसिद्धछै. और विद्वान पुरषांकोसत्संगछै सोभीतत्कालसाधनछै. परंतु गुरु ब्राह्मण. देवताकापूजनसूं आशीर्वादसूंभी उन्माद जायछै.

प्रेतादिक धसिजायछे अरदीषैनहीं चिन्हासूं जाएया पडेछे अथ उ न्मादनें आदिलेर यांसारांका जथाजोग्य जतनलिष्यते घृतादिक का पीवासूं वायकोउन्मादजाय १ आछयाजुलावका लेवासूं पि त्तको उन्मादजाय २ वमनका करावासूं कफको उन्मादजाय ३ अरलिंगमें गुदामें औषधकी पीचरकीका देवासूं योबस्तिकर्मछे ईं काकरिवासूंभी उन्माद जायछे ४

अथवा लुणष्याको रसकाढि तीमें बराबरिकोगुड मिलाय ती में गऊकी छाछि नाषि पीवैतौ उन्मादजाय ५ अथवा पर वैठाकी डाल्यांको रस काढिपीवै तौउन्मादजाय ६ अथवा कडवा तेलको मर्दनकरितावडे राषैतौ उन्मादजाय ७ अथवा कोई अद्भूत वस्त दिषावै अथवा कोईइष्टकोनाम सुणावै तौ उन्मादजाय ८ अथवा ताताघृतको अथवा तातातेलको अथवा ताता जलको स्पर्शकरावै तौ उन्मादजाय ९ अथवा कौंछकी फलीको स्पर्श करावैतौ उन्माद जाय १० अथवा कोरडाकीदेतौ उन्मादजाय ११ अथवा शस्त्रसूं हाथीसूं सिंहसूं सर्पसूं रोकिवासूं कहींतरैसूं डरावै तौउन्मादजाय १२ याकारणांसूं चित्तठिकाणै आवै. सोसर्वदुःखसूं प्राणकोराषि वो सिरैछे ईंवास्तै येजतनशिरैछे अथवा कूठ आसगंध सींधोलूण अजमोद दोन्यूंजीरा सूंठि कालीमिरचि पीपलि पाठ संषाहुली ये सारी औषदि बराबरिले अर यांसर्वकी बराबरि वच ले पाछे यांसर्व नैमिहीवांटि ईंकै ब्राह्मीकारसकीपुट १० दे पाछे ईनें छायासुकाय टंक २ घृतसहत कैसाथि ईंसारस्वत चूर्णनेंदिन १५ लेतौ सर्वप्रका रको उन्माद जाय. १३ अरयो सर्ववायका विकारनें प्रमेहनें दूरि करैछे. अर योबुद्धिनेंवधावैछे अरयोकवितानैं करावैछे. योचूर्णब्र

न. टी. कल्याणघृतमैं औषधीकाष्ठादिकछै ज्यांकासंग्रहकरणोतोनवीनबलयुक्तल्यावणी. कोईतोपसारीकीछै. अरकोईवनकीछै. अरकोईसरोवरनदीकीनाराकीछै. अरकोईबागबगी चामैंमिलैछै. ज्यांकीपरिक्षाकरलेणी. सोगुणलिष्यांमुजबछै.

ह्माजीवणायोछे. इतिसारस्वतचूर्ण अथवा त्रिफला पित्तपापडो देवदार सालपर्णी जवासो तगर हलद दारुहलद इंद्रायणकीजड गोरीसर चंदन पद्माष कूठ कमलगट्टा इलायची कव्याली मजीठ पत्रज निसोत वायविडंग रुदंती नागकेसरि महलौठी पृष्ठपर्णी चमेलीकाफूल बेसारी औषदि अधेला अधेला भरिले पाछे येऔषदि सेर ४ जलमैंकूटिनापै अरईमेंसेर १ गऊको घृतनाषेपछेमधुरी आंचसूं पकावैतदि ओजल बलिजाय घृतमात्र आयरहैतदिईनैउतारिले पाछे ईनैटंक ५ रोजीना भोजनकैसाथि षायतौ उन्मादनैं मृगीकारोगनैं अर पांडुरोगनैं योघृतदूरिकरैछे इतिकल्याणघृतम् १४ अथवासूंठि कालीमिरचि पीपलि हींग वच सिरसकाबीज सींधोलूण सिरस्यूं येबराबरिले यांनैं गोमूतमैंमिहीवांटि अंजनकरैतो उन्माद जाय १५ येजतन वैद्यविनोदमैंछे अथवा अजमोद हलद दारुहलद सींधोलूण वच महलौठी कूठ पीपलि जीरो येसर्व बराबरिले यांनैं गोमूतमैंमिहीवांटि टंक २॥ घृतकैसाथि लेतौ उन्मादजाय अर वेंकीजीभऊपरि सरस्वती आयवसै इतिविश्वाद्यचूर्ण १६ योभावप्रकासमैछे अथवा ब्राह्मीकोरस अथवा पेठाकोरस अथवा पीपलामूलकोरस अथवा सांषाहुलीकोरस टंक १० पीवैतौ उन्माद जाय १७ अथवा वच कूठ सांषाहुली धत्तूराकी जडयेबराबरिले यांकौ ब्राह्मीका रसकी पुट ७ दे अर काला धत्तूरांकाबीजांका तेलकी पुट ५ दे पाछे ईंकी नासदेतौ उन्माद दूरिहोय १८ येसर्व वैद्यरहस्यमैंछे अथवा सिरसकाफूल मजीठ पीपलि सरस्यूं वच हलदसूंठि यांनैं बराबरिले यांनै बकरीका मूतमैं मिहीवांटि गोली करैपाछे गोली १ घसि अंजनकरैतौ उन्मादजाय १९ यो जोगरत्नावलीमैछे अथवा

न. टी. भूतप्रेतादिकांकाजतनलिष्याछै जीमैंतंत्रशास्त्रकालिष्याछै. अरसाबरीमंत्र भी. लिष्याछै सोजामैंदिसतकातो अडंगफडंगदीषैछै. अरकेईक मनुष्ययांनैकमकबूलकरैछै. परंतु यां मंत्रकाअक्षरांमैं बीजगुप्तधर्योछै जीसौंसाध्यांसिद्धछै.

सेकीहींग संचरलूण सूंठि कालीमिरचि पीपलि येसारी बराबरिले दोयदोय टका भरि २ पाछे गऊको घृतसेर ४ ले अर घृतसूं चौगुणो गोमूत्रले पाछे यांसारांनै एकठाकरि मधुरी आंचसूं पकावै तदिवैमैंको गोमूत्र वलिजाय घृतमात्र आय रहै तदि ऊनैं उतारि टंक ५ भोजनकै समै लेतौ उन्माददूरिहोय २० इति उन्मादरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्

अथ भूतनैं आदिलेरजो उन्मादतींको मंत्रतंत्र सर्वशास्त्रकै अनुस्वारलि०प्रथमभूतनैं आदिलेरयांका जतन करैतौ आप पवित्रहोय आपकी रक्षाकरिवैंको जतनकरैकालीमिरचि पीपलि सींधोलूणगोरोचनयांनैं मिहीवांटि सहतमै अंजनकरैतौ भूतप्रेतजाय १ अर ज्वरकाप्रकर्णमैं भूतज्वरऊपरि श्रीनृसिंहजींको दिव्यमंत्रलिष्योछै तीसूं भूत प्रेतादिकको सर्वहीउन्माद दूरिहोयछै. सोदेषिलीज्यो. अथ उड्डीसमैं यांका साबरमंत्र जंत्रलिष्याछै महादेवजीसोलिषूंछूं ऊंनमोभगवते नारसिंहाय घोररौद्रमहिषासुररूपाय त्रैलोक्य डंबराय रौद्रक्षेत्रपालाय ह्रोंह्रोंक्रींक्रीं क्रिमितिताडय ताडय मोहय मोहय द्रंभिद्रंभि क्षोभयक्षोभय आभिआभिसाधयसाधय ऱ्हीं हृदये आंशक्तयः प्रीतिं ललाटे बंधय बंधय ऱ्हीं हृदये स्तंभय स्तंभय किलिकिलि ईऱ्हीं डाकिनीं प्रच्छादय प्रच्छादय शाकिनीं प्रच्छादय प्रच्छादय भूतं प्रच्छादय प्रच्छादय अप्रभूति अदूरिस्वाहा राक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय ब्रह्मराक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय आकाससं प्रच्छादय प्रच्छादय सिंहनीपुत्रं प्रच्छादय प्रच्छादय एतेडाकिनीग्रहसाधयसाधय शाकिनीग्रहसाधयसाधय अनेन मंत्रेण डाकिनी शाकिनी भूतप्रेतपिशाचादि एकाहिक द्वाहिक त्र्याहिक चातुर्थिकं पंचमकं वातिक पैत्ति

न. टी. बडीचिमत्कारीकवातहैउड्डीशतंत्र शास्त्रकोप्रमाणछै. औरभीमंत्रशास्त्रको प्रमाणछै. जीमैंसाधनकीयांअक्षरांमैं शक्तीप्रगटहोयछै. जींकाजोअधिष्ठानतादेवछैज्यांकीजीक्रियाछै तीसूंशुद्धमनसौंयथोक्तसाधनासिद्धहोयछै. पवित्रतासौंकरैतौ.

क श्लेष्मिक सन्निपात केशरी डाकिनीग्रहादि मुंचमुंचस्वाहा गुरुकी शक्ति मेरीभक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाचा ईमंत्रसूं झाडोदीजे वार २१ मोरकी पांपसूं अथवा लोहाकी वस्तसूं

अथवा छानिकी पानीसूं तौ भूतादिकका सर्व उन्मादको दोस दूरिहोय २ अथडाकिनीशाकिनीका वकरावाकोमंत्र. ऊंनमो आदेसगुरुकूं ऊंनमोजयजय न्रासिंह तीनलोक चवदाभवनमैं हाथचाविओ होठचावि नयनलाल लाल सर्ववैरीपछाडिमारि भगतनकीपणरापि आदेस आदेस पुरुषकौ ईमैत्रकैक्रिया योमंत्र पढिरोगीनें वैठाय ईमत्रसूं पाणीमंत्रिआप पवित्रहोय ओपाणी वैनेपावैपाछैवैनें बूझै शाकिनीडाकिनीबोलैसही ३ अथडाकिनीबुलावाकोमंत्र ऊंनमोचढोचढोसूर वीरधरतीचढि पातालचढिपगपालिचढिकुणकुणवीर चढ्या हणवंतवीरचढ्या धरतीचढी पगपाणीचढि एडीचढी एडीचढी सुरचैचढी सुरचैचढी पींडीचढी पींडीचढी गोडाचढी गोडाचढी जंघाचढी जंघाचढी कटिचढी कटिचढी पेटचढी पेटसूं धरणी चढी धरणीसूं पांसल्यांचढी पांसल्यांसूं हीयांचढी हियांसूं छातीचढी छातीसूं पवांचढी पवांसूं कंठचढी कंठसूं मुषचढी मुपसूंजिव्हाचढी जिव्हासूं कानाचढी कानासूं आंष्यांचढी आष्यांसूं ललाटचढी ललाटसूं सीसचढी सीससूंकपालचढी कपालसूंचोटीचढी हनुमान नारसिंह करवारत्त्या चल्याबीर समदवीरदीठवीर आग्यावीरसो संतावीरयो वीर चढ्यो वकरावैतौ वेपुरसमैं वैनिश्चैआयबोलै ४ अथ डाकिनीकैचोटलागिवाको मंत्र ऊंनमो महाकाय जोगिणी जोगिणीपार साकिनी कल्पवृक्षाय दृष्टिजोगिनी सिद्धिरुद्राय कालदंभेन साधय साधय २ मारय मारय चूरय चूरय अपहर शाकिनी सपरिवारंनमः ऊंठं ६ ऊंह्रीं ६ होहोफट्स्वाहा ईमंत्रकीक्रियापवित्रहोय वार ७ गूगलनैं मंत्रि उषलमैंनाषिमूसलसूं कूटिजै तौ वैचोटडाकिणीक

लागे अर ईंमंत्रसूं गोडोमूंडिजैतो डाकिनीकोमाथो मूंड्यौजाय अर ईंमंत्रसूं उडदमंत्रिनाषिजे तौ तींकैघरआय पेलै अरजलनै ईंसूंमंत्रि आंष्या छांटैतौबाबोलउठै ५ अथ डाकिणीकादोस दूरि होवाको झाडोमोरकीपांषसूंदीजे अथवा लोहका राछसूं दीजे ॐ नमो आदेसगुरुकौ डाकिणीसिहारीकिन्नैमारीजतीहणवंतनैमारी कहांजायदबक्कीकीनौंनैदेषीजतीहणवंतनै देषीसातवे पातालगई सातवां पातालसूं कुणपकडि ल्याया जतीहणवंत पकडिल्याया जती हणवंतवीरपकडिल्यायाएक तालदे एककोठातोड्या दोयतालदे दोयकोठा तोड्या तीनतालदे तीनकोठातोड्या च्यारितालदे च्यारि कोठातोड्या पांचतालदे पांच कोठातोड्या छत्तालदे छक्कोठातोड्या सात वींकोठोपोलिदेषैतौ कुणकुडषडीछै डाकिणी सिहारी भूतप्रेत चल्या जतीहणवंत तरै झाडैसूं चल्या ॐनमो आदेसगुरुकूं गुरुकी

इहजंत्रनैं बालककै गलै वांधिजै. जंत्र.

१।९	६६		९
७		७	
९		।।	।·
		ऽ	४०

शक्तिमेरीभक्ति फुरोमंत्रईश्वरोवाचा ६ अथ डाकिणीकादूरिहोवाको बालककैगलै बांधवाको येदोययंत्र ईंहेजंत्रनैं अछूतापाणीमैंघोलिपाजैतौ डाकिनी

इहजंत्र पाणीमैं घोलि पाजै. जंत्र.

७	७	९	८
ऽ	६	६	९
४	।।।	ऽ	१.१
७।	६	१।।	·।।।

शाकिनीदूरिहोय दूजाजंत्रनैं बालककै गलैबांधिजै ७ अथ प्रत्यक्षहाजरायतलि० अथहांजरायतमंत्रः* ॐनमः कामाख्यायै सर्वसिद्धि

* साबरीमंत्र अथवा उत्तममंत्र अथवा यंत्रादिक तंत्रादिक नाटक चेटक चतुराई इत्यादिक घणा एलमसंसारमैं मनुष्य पेटभरवा वास्तेकरैछै. परश्रीधर ब्राह्मण गौडतोयाकहैछै श्रीदरबारफरमायाछैसु सत्यछै. पणयो एलमतो कोई शुद्धपुरुष भजनानंद जितेंद्रीहोयछै. सत्यबोलै जींकनै होसी. ओर सरब मिथ्याछै.

न. टी. हाजरायत एकतंत्रसौं. अरमंत्रसौंभीहोयछै. अर ओरभीघणा मनुष्यचतुराईसौं भीमनुष्यानैं ठगवानैकरैछै. परंतुयाग्रंथमैं हाजरायतप्रमाणीकछै. यथोक्तरीतसौं करैतौदेवगणवाला बालकनैं वचनामोंमनचिंतकफलमिलसी परंतुश्रद्धाचाहिजे.

दायै असुककर्मंकुरु कुरु स्वाहा २४ अस्यमंत्रस्यबाल्हिकऋषिः जगतीछंदः कामाख्या ऊंनमः अंगुष्ठाभ्यांनमः कामाख्यायै तर्जनीभ्यांनमः स्वाहा सर्वसिद्धिदायै मध्यमाभ्यां वषट्. असुककर्म अनामिकाभ्यां.हुंकुरुकुरुकनिष्ठिकाभ्यां.वौषट्स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां अस्त्रायफट् ऊंनमोहृदयायकामाख्यायै सिरसेस्वाहा सर्वसिद्धिदायै सिषायै वषट् असुककर्मकवचायहुं कुरुकुरु नेत्रत्रयायै वौषट् स्वाहा अस्त्रायफट् अथध्यानम्. योनिमात्रशरीराया कुंगुवासीनिकामदा रजस्वलामहातेजा कामाक्षीध्येययासदा ॥ मंत्रस्यसहस्त्रजपः १००० गुडहलकाफुलांकी १०० आहुती मेंढलकीराषकरिराषेरुईमैंमिलायवेकीवातीकरणी वावाती तेलकादिवामैं मेलणी दीवाकी पूजाकरणी दीवाकै आगैबालक आठवरसको अथवा दसवरसको पवित्रशुद्धवंसको देवता गणको वालकस्थापणो अर आपभीपवित्रहोयमेंढलकाफलऊपरि ईमंत्रका जपका संकल्पको जल नाषणो. अरदीपकआगै यो मंत्रलिषि जंत्रकोपूजनकरणो. अर योमंत्रबालकनैंदिषावणो वेंकीहथेलीमैं अर मेंढलकी राषतेलसूं औसणिवेंकीहथेलीकै मसलणी. पाछैवेनैं बुझाणो ओदेषैसो सर्वसमंचार सत्यकहै अथवा आठदसवर्षकी देवतागणकी कन्यावैठावणी पवित्रकुलकी वेनैंदीषैसोकहै. दशांशमार्जन दशांशतर्पण. दशांश ब्राह्मणभोजन इतिहाजरायतकीविधी संपूर्णम् ८ यासत्यहाजरायत छैं. येसर्व उड्डीशमैं लिष्याछै ८ अथवा नींबकापत्र वच हींग सापकी कांचली सिरसूं यांकी धूणीदेतौ डाकिणी भूतनैं आदिलेर सर्वदोष जाय अथवा कपासकाकाकडामोरकाचंदवाकट्याली शिवकोनिर्माल्य मरवो. तज छडवलधकोदांत मार्जारकीविष्टा तुस वच्च केंस सापकीकां

यो जंत्रहाजरायत कोवांधिजैछै.

१	८	३	८
५	६	३	६
७	२	९	२
७	४	५	४

चली गउको सींग हाथीकोदांत हींगकालीमिरचि यांसारांनैंबराबरिले यांनैंकुटि ईंकी धूणीदेतौ सर्वप्रकारकाभूतांनैं आदिलेर जोदोस होय येसारादूरिहोय योमहामाहेश्वरधूपछै योचक्रदत्तमैं लिष्योछै ९ अथवा पीपलि कालीमिरचि सींधोल्रूण गोरोचन यांनैं सहतमैंवांटि अंजन करैतौ सर्वभूतादिकको दोसजाय १० अथवा कणगचकी जड दारुहलद सिरस्यूं कूट हींग वच मजीठ त्रिफला सूंठि कालीमिरचि पीपलि फूल प्रियंगू येबराबरिले यांनैं बकराकामूतमैं वांटि नासदेतौ अथवा अंजन करैतौ सर्व भूतादिकांको दोसजाय ११ अथवा गोरषकाकडीनैं गोमूतसूंवांटि नासदेतौ ब्रह्मराक्षसको दोसजाय १२ अथवा सांपाहुलीकीजडनैं चावलांका पाणीमैंवांटि अथवा घृतमैंवांटि वेंकीनास देतौ भूतादिकजाय १३ इतिभूतादिकांकाउत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम् अथ मृगीरोगकीउत्पत्ति लक्षण जतनलि० चिंतासोकादिकांका करिकै क्रोधकूं प्राप्ति हुवोजोवाय पित्तकफसो ऱ्हदाकी नसांमैं पैठि स्मरणमात्रको नास करि मृगीका रोगनैं प्रगट करैछै. सोओ मृगीरोग ४ प्रकारकोछै वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ अथ मृगीकोपूर्वरूपलिष्यते हियो कांपै अर हियो सूनो व्है जाय पसेव आवै ध्यानलागिजाय मूर्छा होयआवै ग्यानजातो रहै नींदआवैनहीं येलक्षण होय तदि जाणिजे ईकों मृगीकोरोगहोसी. अर वेनैंसर्वत्र अंधकारहीदीसैं स्मरण जातो रहै. अरहाथपगांनैं आदिलेरसाराअंगानैं पृथ्वीऊपरि पटकिबोकरै तदि जाणिजे मृगीकोरोग हुवो १ अथवायकीमृगीको लक्षणलि० कांपणीहोय दांत चावै मूंढैझागआवै सासहोय कालोपीलो वेनैंदीसै. येलक्षण होयतौ वायकीमृगी जाणिजे. १

न. टी. भूतोन्मादरोगछै. जीमैचतुर मनुष्यहैंसो ईंरोगवास्तैमिथ्याअहारमिथ्याविहारमैं प्रीतिछोडकरशुद्धव्यवहारअंगिकारकरैं. अरसमयदेषै. देसकालदेषैअरऔषधीकी क्रिया. तंत्र मंत्रादिकांकीक्रियामैश्रद्धाविश्वासमुख्यछै. आतोएकमनकीसाथलडाईछै.

अथ पित्तकी मृगीको लक्षणलि० मूंढामैं पीलाझागआवै अर सरीरकी त्वचा मूंढो आंषि येपीलाहोजाय वैनैंलालपीलो सर्वदीसैं तिसघणीलागै सर्वसरीर उन्होरहै अरवैनैंसर्व अग्नि बलतीसीदीसैं येलक्षण होयतौ पित्तकीमृगीजाणिजे २ अथ कफकी मृगीकोलक्षण लिष्यते मूंढैसुपेदझागआवै सरीरकी त्वचा मूंढो नेत्र येसारा सुपेद होजाय सीतलागै रोमांचहोय वैनै सर्व सुपेदहीदीसै येलक्षणहोयतौ कफकीमृगी जाणिजे ३ अथ सन्निपातकी मृगीकोलक्षणलि० येपाछै कह्यासोजींकै सर्वलक्षणहोय तीनैं सन्निपातकीमृगीजाणिजे ४ अथ मृगीको असाध्यलक्षणलि० जींकोसरीर घणोफुरकैसरीरक्षीणहोजाय भंवाराचढिवालागि जाय नेत्रांकीविकृति औरहोजाय तौ ओमृगीवालो मरिजाय अथ मृगीका समयलि० बारवे १२ दिन आवैतौ वायकी जाणिजै पंद्रवैदिन आवैतौ पित्तकी जाणिजै एक महिना १ में आवैतौ कफकी जाणिजे अठै दृष्टांतदीजैछै. जैसैं इंद्रजलनैंवरसैछै तदिसर्ववस्तुउगै परजव गोंहू चणानैं आदिलेर पृथ्वी ऊपरि सरद ऋतुमैंहीउगै तैसैं सरीरमैं येरोग है. तोसदाही पणिवां रोगांको समय आवै तदि कोपकरै. अथ मृगीकोजतनलिष्यते तिलकै साथि लसण षायतौ वायकी मृगीजाय १ दूधकै साथि सतावरीषायतौ पित्तकी मृगीजाय २ ब्राह्मीको रस सहतकैसाथि षायतौ कफकी मृगीजाय ३ अथवा राईसिरस्यूंनै षायतौ अथवा यानैं गोमूत्रमैं वांटि सरीरकै लेपकरैतौ मृगीजाय ४ अथवा तेल सेर १ सहजणाकोरस सेर ४ कंवारकापाठाकोरससेर ४ चिरचिराकोरससेर ४ नींबकीछालिकोरससेर १ गोमूत्रसेर ४ यां

न. टी. उन्माद. अपस्मार. मृगी. उगैरैजोइस्याहीरोगछै ज्यांकापथ्यलि० चावल. मूंग. गहूं. जूनघृत. दूध. तुराई. दाडम. इ० कुपथ्यलि० चिंता. भय. क्रोध. अद्भुतदेषणो. मद्य. तीपो. गरम. स्त्रीसंग. महनत. पत्रशाक. तोरू. उडद. तूर. तृषा. निद्रा. क्षुधा. वेगधारण इ० नहीं करणा.

में तेलनैंपकावै पाछै ये सारारसबलिजाय तेलमात्र आय रहै तदि ईतेलनैं जुदो राषै पाछै ईतेलको मर्दनकरैतौ मृगीजाय ५ अथवा मैणसिल नील टांचकीबीट अथवा कबूतरकीबीट यांदोन्यांनैंमिही वांटि अंजनकरैतौ मृगीजाय ६ अथवा पारो मार्‍यौ अभ्रकसार सोध्यो गंधक मार्‍यौ मैणसिल मारीहरताल रसोत येसारी बराबरिले पाछै यांनैं गोमूतमैं दिन १ परलकरै पाछै लोहका पात्रमैं यां सारांसूं दूणी गंधकमेलि अर गंधककैवीचि यांनैं मेलि यांनैं पकायले पहरयेकमैं पाछै ईनैं रती १ रोजीनादिन ७ ताईं षायतौ मृगीजाय ७ अथवा सूंठि कालीमिरचि पीपलि संचरलूण सेकीहींग ये सर्व बराबरिले यांनैंमिहीवांटि टंक २ रोजीना घृतकैसाथि दिन १५ लेतौ मृगीजाय ८ अथवा महलौठीनैंमिहीवांटि टंक २ पेठाका रसमैं दिन ७ पीवैतौ मृगीजाय ९ अथवा ब्राह्मीका रसकै साथि वच कूठ यांदोन्यानैं मिहीवांटि टंक २ पीवैतौ अथवा सांषाहुलीका रसकी साथि पीवै अथवा पुराणागुडकै साथिदिन १५ पीवैतौ मृगीजाय १० अथवा गऊको घृत सेर १ पेठाकोरस सेर ८ महलौटीका काढाको पाणीसेर २ यांतीन्यांनैं पचावै यां दोन्यांको रस बलिजाय घृत आय रहैतदि ईघृतनैं षावैतौ मृगीजाय ११ अथवा सहजणाकीछालि कूठ नेत्रवालो जीरो लसण सूंठि कालीमिरचि पीपलि हींग येसर्व पईसापईसाभरले तेलसेर ऽ॥ बकाराको मूतसेर २ लेपाछै यांनैं मधुरी आंचसूं पकावै येसाराबलिजाय तेलमात्र आय रहै तदि ईंकी नासदेतौ मृगीजाय १२ ये सर्व जतन

---

* मृगी रोग एक जुलमीछै. कपालमैं मगजको रोगछै. जींऊपर अनेक प्रकारका उपावछै वेहोस आदमीहोजायछै. और कोईक मस्तकमैं कीड़ोबी कहैछै. पण बहुधा प्रमाण नहींछै. बहुधातोयोरोग हृदासूं उपज्यो कहैछै. इसारोगवालामनुष्यको घणो जाबतो राष्यो चाहिजै असाध्य मृगीरोगको उपाव नहींछै.

भावप्रकासमैलिप्याछै. अथवा पीपलि पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठि त्रिफला वायविडंग सींधोलूण अजवायण धणों जीरो यांनें बरावरिले त्यांनेंमिहीवांटि टंक २ गरपाणीसूं लेतो मृगीजाय संग्र हणीजाय उन्मादजाय ववासीरजाय योचूरण यांनें दूरिकरैछै १३ अथवा पुष्यनक्षत्रकेदिन कुत्ताका पित्ताकाढ वेंको अंजनकरै अ थवा घृतकैसाथि ईंको धूपदेतो मृगीजाय यो जोगतरंगिणीमें लि प्योछै १४ अथवा वचको चूर्ण टंक २ दूधकैसाथि पायतो अथवा सहतकै साथिपाय महिनो येकतो मृगी जाय १५ यो जोगतरंगि णीमें लिप्योछै. अथवा नौल्याकी विष्टाबिलावकीविष्टा कागलाकी वीठ यांकी धूणीदेतो मृगीजाय १६ यो चक्रदत्तमैं लिप्योछै इति मृगीरोगको लक्षण जतन संपूर्णम् इतिश्रीमन्महाराजाधिराज म हाराजराजराजेंद्र श्रीसवाई प्रतापसिंहजी विरचिते अमृतसागर नाम ग्रंथे मदात्यय उन्माद मृगी यांका सर्वभेदसंयुक्तउत्पत्ति लक्षण जतननिरूपणंनाम सप्तम स्तरंगः ७

अथ वातव्याधिरोगकी उत्पत्ति लक्षणजतनलिप्यते. कषायली क डवी तीषीवस्तका पावासूं स्वल्प भोजनसूं लूषीवस्तका षावासूं षे दसूं सीतल भोजनसूं घणामैथुनसूं धातका षीणपणासूं मलमूत्रका रोकिवासूं सोचसूं भयसूं घणालोहीका नीकलवासूं मांसका क्षीणप णासूं घणावमन विरेचनसूं आंबका दोपसूं बूढापासूं मनुष्यांकै व र्षाऋतुमैं अथवातिसरै पहर अथवा पहरकैतडकै बलवान वाय हैसो मनुष्यका सरीरकी रीतिजोनसां त्यांमैं आय धसिकरि नाना प्रकारका जोरोग त्यां सारांनें अंगामें अथवा येकेक अंगमैंही ओ वांवस्तांसूं कुपित जोवाय सो चोरासी प्रकारका रोगांनें करैछै.

न. टी. वायकारोग ८० प्रकारकाछै. अरईग्रंथमैंचोरासीप्रकारकालिप्याछै. सोऔरग्रंथां का मतसौंछै. जामैंनामतुल्यलक्षणछै. अरजठैजोवायुकोरोगछै. जींजायगांहीनिदानलिषकर पाछैऔषधीलिषीछै. अर कोईकोईरोगभेलाहीलिप्याछै. सोआमैदेषज्यो.

सो वेचोरासीं वायका रोग लिषूंछूं. सिरोग्रह रोग १ अल्पकेस २ जंभाई घणी आवै ३ डाढीमूंडैनहीं ४ जीभहालैनहीं ५ वकाईपा तोंबोलै ६ हौलूं बोलै ७ गुंगापणोंहोय ८ घोटोहीबोलै ९ घणो बकै १० जीभको स्वाद जातोरहै ११ वहरोहोजाय १२ कानांमैंगुं गाट शब्दहोय १३ त्वचामैस्पर्शकोग्यान जातोरहै १४ अर्दितरो ग १५ कांधीसुडै नहीं १६ भुजासूसिजाय १७ भुजासुंडैनहीं १८ चर्चितरोग १९ विश्वाचीरोग २० ऊर्ध्ववातडकारघणीआवै २१ आध्मान आफरो होय २२ प्रत्यध्मानरोगहोय २३ अष्ठीलारोग २४ प्रत्याष्ठीलारोग २५ तूनी २६ प्रतितूनी २७ अग्निकी विस मता २८ आटोपरोग २९ पसवाडाकीपार्श्वशूल ३० पीठिमै शूल चालै ३१ बहुमूत्रता ३२ मूत्ररुकिजाय ३३ मलगाढोहोजाय ३४ मलउतरैनहीं ३५ ग्रध्रसीरोग ३६ कालापषंजता ३७ षोडापणों ३८ पांगलापणों ३९ क्रोष्टशीर्षक गोडांकोरोग ४० षल्वरोग ४१ वातकंटकरोग ४२ पगसोजाय ४३ पगवल्वोकरै ४४ आक्षेपरोग ४५ दंडकरोग ४६ वाताक्षेपक ४७ पित्ताक्षेपकरोग ४८ दंडिपता नक ४९ अभिघाताक्षेपक ५० अंतरायाम ५१ बाह्यायाम ५२ ध नुर्वात ५३ कुब्जक ५४ अपतंत्र ५५ अपतान ५६ पक्षाघात ५७ अभिलाषिक ५८ कंप ५९ स्तंभ ६० व्यथा ६१ लोद ६२ भेद ६३ स्फुरण ६४ लुषापणो ६५ कालापणों ६६ क्षीणपणों ६७ सी तलपणों ६८ रोमांच ६९ अंगमर्द ७० अंगविभ्रम ७१ नसांको संकोच ७२ अंगकोसोस ७३ डरपपणों ७४ उन्मादपणों ७५ मो हपणों ७६ नींदनहींआवै ७७ पसेवनहींआवै ७८ बलकीहानि

न. टी. भाषामैंवायरोगकानामलिष्याछै. ज्यानैंसंस्कृतकाअनुसारसौंसमजलीज्यो. कारण भाषामैंइयाहीहोयछै. जैसै (हनुस्तंभ) जीनैंदाढीमूंडैनहींईस्योकहैछै. जैसै (मूत्रबंध) ईनैंमूत्र रुकिजाय कहैछै. अरजैसै (भुजासोष.) जीनैभुजासुषिजायकहैछै. ईरीतसौंजाणज्यो.

७९ वीर्यकोनास ८० स्त्रीधर्मकोनास ८१ गर्भकोनास ८२ विना श्रमहीश्रम ८३ श्रमनास ८४

अथवातव्याधिकासर्व रोगांकांलक्षण अर जतन लिष्यते अथ वातव्याधिको सामान्यजतनलिष्यते इतनीवस्तांका करिवासूं वाय का सर्वरोग दूरिहोयछे. मीठीवस्तकाषावासूं सलूणीवस्तका षाबा सूं चीकणीवस्तका पावासूं वायकासर्वरोग दूरिहोयछे. आंवलाका षावासूं गरमवस्तका षावासूं नींदकालेवासूं तावडाकासेवासूं पसे वकालेवासूं तृप्तिभोजनसूं गरमउवटणासूं तेलका मर्दनसूं औषद्यां कालेवासूं यांवस्तांकासेवासूं सामान्यवायकारोगदूरि होयछे अथ शिरोग्रहकोलक्षणलि० वायहैसो लोहीसूंमिलि माथानें नषानें लूषी करे पाछैवामैं घणीपीडकरै नसांनें कालीकरै योरोग असाध्यछे. अथ शिरोग्रहकोजतनलिष्यते. दशमूलकोकाढोकरि वेंकोरसकाढे अर विजोराकोरसकाढे अरईरसमें तेलपकावैपाछे ईतेलको मर्दन करैतो सिरोग्रहदूरिहोय २ अथवा कूट अरंडकी जड धत्तूराकीजड सहजणाकीजड सूंठि कालीमिरचि पीपलि सींगीमोहरो यांनें बरा बरिले अरमिहीवांटि गरमकरि लेपकरै सुहावतो २ तो सिरोग्रह दू रिहोय ३ अथ अल्पकेसीकी चिकत्सालिष्यते देसीगोषरू तिलांका फूल यांनें बराबरिले अरयांकीबराबरि सहत घृतले तीमैं यांदोन्यानैं केंसाकै लेपकरैतो केसघणावधै. निश्चैछे. अथवा महलौठी नीला क मलकीजड मिनक्कादाष इनकों तेलमैं घृतमैं दूधमैं मिहीपीसि ले पकरैतो केस लंबाघणा होय अरयां औषद्यांसूं छछुंदरिकोदोसदूरि होय ४ अथ जंभाईको लक्षणलिष्यते मूंढाका एकस्वासनें प्रथम पीजाय पाछे ओश्वास अपूठो काढिदे वेगदेर अर आलस

* टी. जोवातरोगछैजींकोलक्षणलिष्योछै. जैठैहीअनुक्रमसौंअंकलिष्योछै. प्रथमवायुरोगां कींगिणती ८४ चोरासींकीलिषीछै. जिहीरीतसौंज्यांग्रंथमैंनिदानअरजतनलिष्याछै. सोचढता अंकप्रथमगिणतीकाछै. जीयानहींनिदानंजतनमैंछै परंतु अनुक्रमसौंनहींभेलाहीछै.

अरनींदनैंलीयाआवै वेनेंजंभाई कहजे अथजंभाईघणीआवै तींको जतनलिष्यते सूंठि पीपलि कालीमिरचि अजमोद सींधोलूण यांनैं जुदाजुदा अथवा येकठा मिहीवांटि गरम पाणीसूं लेतौ जंभाईको रोगदूरिहोय १ अथवा कडवातेलको मर्दनकरै अथवा मीठोभोजनकरै अथवा तांबुलको भक्षण करैतौ जंभाईको रोगदूरिहोय २ अथ हनुग्रहरोगको लक्षणलिष्यते दांतणकी फाडसूं जीभनैं घणी घसैतौ अर चबीणाका षावासूं अथवाकहीं तरैकीचोटसूं दाढीका जडमैं रहतोजोवाय सोकुपितहोय ओ मूंढांनैफाड्योहीराषिदे अथवा मीच्योही राषिदे तदि पुरष हैसो बडाकष्टसूं बोलिवामैं अर षावामैं समर्थ होय तीनैं वैद्यहैसौ हनुग्रह रोग कहैछे. अथ हनुग्रहको जतन लिष्यते जींकोमूंढो मिचिगयोहोय तीनैं चीकणी वस्तसूं सेकी पसेव लिवावैतौ मूंढो उघडिआवै. अरजींकोमूंढो फाड्यौ रहजाय तींकै सीतल वस्तसूं फाड्यापणो दूरिहोय अरजींकीडाढी मूंडिवासूं रहजाय तीनैं पीपलि आदो चवाय चबाय थुकायदेतौदाढीमूडिवाको रोगदूरिहोय १ अथवा तेलमैं लसणनैं तलि सींधोलूण लगाय षायतौ हनुग्रहरोग दूरिहोय २ अथवा उडदांका वडामैं लसणसींधोलूण आदो हींग मिलाय तेलमैं वडाकरिषायतौ हनुग्रह रोगजाय १ अथवा तेलनैं गरमकरिसुहावतौ सुहावतौ माथाकै मर्दन करैतौ हनुग्रहरोगजाय ३ अथवा प्रसारणी तेलकामर्दनसूं इतनारोगजायसोलि० पीपलकोपंचांग टका १०० भरलेतीनैं सोला १६ सेरपाणीमैं औटावै वेनैंकूटिपाछे वेंकोचतुर्थांश आयरहै. तदि वेनैंछाण वेपाणीमैं तिलांकोतेल टका १०० भरि नाषै अर इहीमैं द

* चोरासींप्रकारकोवातरोगछै. मुख्यमुख्यशास्त्रादिकमै प्रमाणमाफिकछै. मूंयथार्थलिष्या छै. औरयान्याधीकाउपावबीघणाछै. परंतुयाग्रंथाकापत्रांक १७६ मैंनारायणतेलछै सूंसर्वव्याधिवातरोगनैंदूरिकरैछै. जैसै नारायणपातकांनैंनाशकरैछै. जियानयोतेल चोरासीं ८४ प्रकारकावातरोगनैं नासकरैछै.

हीको मठो टका १०० भरनापै अरटका १०० भरकांजीको पाणी नापै अरतेलसूं चोगुणो गऊकोदूधनापै अर चित्रक पीपलामूल महुवो सींधोलूण वच सौंफ देवदार रास्ना गजपींपलि छड छडीलो रक्तचंदन अरंडकीजड परेटीकीजड सूंठि येसारी ओषदि टकाटका भरिले त्यांको काढोकरि वेंकाढाकोरस वेंतेलमें नापै अरषींपकोरस सेर १ वेंतेलमें नापै पाछै मधुरी आंचसूं पकावै येसर्वरस बलि जाय तेलमात्र आयरहै तदि तेलनें उतारिले पाछै ईतेलको मर्दन करै अथवा नासदे अथवा ईनेंपुवावै अथवा ईकोसेककरैतो सर्व वायकाविकारनें हनुस्तंभनें पांगुलानें जिव्हास्तंभनें अर्दितरोगनें बकाईका रोगनें कांधाकास्तंभनें पीठीकासूलनें ग्रध्रसीनें षोडानें चां यलानें धनुर्वातनें कुबडापणानें इतना वायका रोगांनें योतेल दूरि करैछै. इतिप्रसारणीतेल अथ जिव्हास्तंभको लक्षणलिष्यते. वा णीनें वहवावालीजोनसां त्यांमेंरहतोजोपवन सोकुपितहोय जीभनें स्तंभितकरैछै. सोवाजीभ जलकापीवामें अर बोलवामें असमर्थहोय छै ईनें जिव्हास्तंभ रोगकहिजे अथ जिव्हास्तंभको जतनलिष्यते मीठो रस लूण षटाई चीकणीउन्हीयां वस्तांसूं जीभनें यथायोग्यसें मर्दनकरै

अथवा सुहावता गरम पाणीसूं कुरला करैतो जिव्हा स्तंभको रोगदूरिहोय अथगूंगापणो गदगदपणो बकाई षायबोलैयांरोगां को लक्षणलिष्यते कफ करिके संजुक्तवाय हैसो धमनीनाडीनें वह वावाली जोनसांत्यांनें आच्छादनकरि मनुष्यांनें गूंगा अर नाकमें हीबोलै अरबकाई षाय बोलै इसा रोगांनें करैछै. अथगूंगाको अर गनगन्याको अरबकाई षाय बोलै त्यांको जतन लिष्यते ग

न. टी. जिव्हास्तंभ पांचमोरोगछै. पछै आठको अंकमैंलोहीलिष्योछै सूजीभकास्तंभ पाछै गूंगापणाको गदगद्यापणांको बकाईषायरबोलैजींको भेलोहीजतनअरनिदान समुदाय सूचनामात्रछै. परंतुवैद्यतौसर्वजाणैछै. अज्ञातलोगांकैवास्तैभाषामैंछै.

ऊको घृत सेर १ सहजणाकीजड टका १ भर वच टका १ भर सींधोलूण टका १ भर धावड्याका फूल टका १ भर लोद टका १ भर यां सारांनैं वांटि बकरीको दूधसेर ४ तीमैं घृतसेर १ नापि अर येऔषदिमिलाय मधुरी आंचसूं पकावै पाछै दूध अर औष धीवलिजाय घृतमात्र आयरहै तदिवेनैं काढिले पाछै ईंघृतको सर स्वतीमंत्रसूं विधिपूर्वकसेवनकरैतो गूंगापणों अरगनगन्यापणों अर बकाई षायवो येसारारोगदूरिहोय अरवेंकीस्मृति बुद्धि मेधा कांति बहुत वधै. इतिसारस्वतघृतम् अथसरस्वतीमंत्रलि० ऊंन्हीं ऐंन्हीं ऊंसरस्वत्यैनमः योसरस्वतीसिद्धि मंत्रछै. ईंको याअछरां बराबरि सहस्त्रकरै ईंमंत्रनैंसिद्धि करि ईंमंत्रसूंयोघृतषाय अथवा माल कांगणीको तेलषायतो येसर्व रोगजाय अरवेंकी बुद्धितत्काल चमत्कारिकहोजाय अथवा हलद वच कूठ पींपलि सूंठि जीरो अज मोद महलौठी महुवो सींधोलूण यांनैंबराबरिले पाछै यांनैंनिपट मिहीवांटि टंक २ माषनकैसाथि लेतो रोजीनादिन २१ तोयेसर्व रोगदूरिहोय अर वोपुरस श्रुतिधरहोजाय हजार श्लोकरोजीनांकं ठकरै इतिकल्याणकावलेह अथ प्रलाप अरवाचालरोगकालक्षण लिष्यते आपका कुपथ्यसूं कुपितजोवाय सोअर्थरहित क्यूंकोक्यूं वचनबोलै तीनैं प्रलाप रोगकहिजै. अर अर्थलीयां षोटाशब्द मु षसूं काढै तीनैं वाचालकहिजै अथ वाचाल प्रलाप रोगका जतन लिष्यते. तगर पित्तपापडो कुटकी नागरमोथो आसगंध ब्राह्मी दाष अगर दसमूल सांषाहुली यांसारांनैं बराबरिले पाछै यांनैं जोकूटकरि यांको काढोकरिदेतो प्रलापनैं अर वाचालरोगनैं दूरि करैछै अथ जीभकारसग्यानको लक्षणलिष्यते जोमधुर रसनैं आ

न. टी. प्रलाप. वाचाल. येलिष्याछैसोतोदोयरोगांकोभेलोएकहीसमुदायलिष्योछै जींमैंवि चारकरणोचाहिजै. वायुकाजोरसौंझूटाझूटागपाटामारै अरबकवोहीकरैजींनैंप्रलापकहै. अर वाचालछैसोवायकाजोरसौंघणीअद्भुतवातांकहै. जींसूंयेदोन्यूरोगामिलताछै.

दिलेरछ ६ रसछै त्यांका पावामें जथार्थज्ञानजीभकोजातोरहै जा
णिजैक्यूंई. पाइजैछै. तीनैरसाग्यानरोग कहिजै अथ रसाग्यान
रोगको जतनलिष्यते सूंठि कालीमिरचि पीपलि सींधोलूण अम
लवेद चूकयांओपद्यांनैंमिहीवांटि यांको येकजीव करिजीभकै आ
छीतरहलेपकरैतौ रसा ग्यानकोदोसदूरिहोय १ अथवा ब्राह्मी प
लासपापडो राई कालोजीरी पीपलि पीपलामूल चित्रक सूंठि यांनै
मिहीवांटि जीभकैवारंवार लगावै अथवा यांको काढोकरि ईंका कु
रला करैतौजीभका रसका अग्यानपणाको दोसदूरिहोय १ अ
थवा आदो वारंवारषायतौजीभकारसाग्यानपणाको वहरापणाको
कर्णनादको दोसदूरिहोय अथ सरीरकी त्वचासूनीहोयगईहोयतीं
कोलक्षणलि० जींपुरसनैंसीतऊष्णको मलकठिणपणाकोग्यान जा
तोरहैतीनैं त्वचासूंनीपणाको रोगजाणिजे अथ त्वचाशून्यको जत
नलिष्यते त्वचासून्यपणावाला कैलोहीकढायजेतौ योरोगजाय १
अथवा लूण धमासो यां दोन्यांनैं तेलमैं मिलाय तींको सरीरको
मर्दन करैतौ त्वचाकी सून्यपणाको दोष दूरिहोय १ अथ अर्दित
रोगको लक्षणलिष्यते ऊंचासूंपडतीजोभारीवस्त तीनैंहाथांसूं ऊंचो
मूंढो करि ग्रहणकरै अथवा करडीवस्तनैं घणीषाय अथवा घणों
हसै घणीजंभाईले अथवा बोझानें माथासूं घणोवहै अथवाविस
मस्थानमें सोवै तींपुरसकैसिरमें नासिकामें होंटमें डाढिमें लला
टमें नेत्रांमें यांस्थानामें रहतोजोवाय सो पुरसकामूंढामैंअर्दितरो
गनैंउपजावैछै. सोवैपुरसकोमूंढो आधोवांकोहोजाय अर वैंकीकां
धीमूंडैनहीं अर वैंकोसिर हालवोकरै आछी तरह बोल्योजायनहीं
आछीतरहदेष्यौ जायनहीं. अर वेपुरसकै कांधामैं अर डाढीमैं

न. टी. ईंग्रंथमैंजभिकारसअज्ञानको लक्षणलिष्योछैजीमैंहीबहरापणाकोअरकर्ण नादको निदानपूर्वकउपचारछै. जीनैंविशेषताकैवास्तैविस्तारनहीकियो. कारणग्रंथकर्ताकीइसीइच्छा छै. विस्तारतोमोठाग्रंथमैंछै. अरयोरोगतौतुल्यसरीरसोछै.

अर दातामें पीडरहै येजीमें लक्षणहोय तीनें अर्दित रोगकहिजे १ सो अर्दितरोग ३ प्रकारकोछै वायको १ पित्तको २ कफको ३ अथ वायका अर्दितकोलक्षणलिष्यते लाल घणीपडै सरीरमेपीडा घणीहोय सरीरकांपै फुरकैघणो डाढीमूंडैनहीं होठसूजिजाययेल क्षणहोयतौ वायका अर्दित जाणिजे. १ अथपित्तका अर्दितकोल क्षणलिष्यते मूंढो पीलो होजाय जुर होय आवैतिसघणीहोयतौ पित्तका अर्दितजाणिजे २ अथ कफका अर्दितकोलक्षणलि० मो हघणोहोय आवैगलामैसिरमैंकांधीमैं यांतीन्यास्थानांमें सोजो होय आवै अरयेतीन्यूंमुडैनहींतौकफको अर्दितरोगजाणिजै ३ अथ अर्दितरोगको असाध्यलक्षण लिष्यते क्षीणपुरसकै निमेषनहींला गैजींपुरससूं बोल्यौ नहींजाय अरसरीर कांपतातीनी वरस होय गयाहोयतौ अर्दितरोग असाध्यजाणिजे. १ अथ अर्दितरोगको ज तन लिष्यते अर्दितरोगवालानें चीकणूं षुवाजे. नारायण विसग र्भनें आदिलेर त्यांको मर्दन कराजे गरम वस्तको सेवन कराजे डाहदिवाजे गरम औषद्यांसूं पसेवलिवाजे शिरऊपरि वायका ते लनाषजे यां वस्तांसूं अर्दित रोगजाय २ अथवायका अर्दित रोग को जतनलि० दसमूलका काढासूं वायकोअर्दित जाय १ विजोरा कारसकासेवासूं वायको अर्दित जाय १ अथवा परैटी पीपलि पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठि यांकाकाढासूं वायको अर्दितजाय १ अथवा उडदांका वडामैं हींग आदो लसण मिलाय षाय उपरसूं मासको सोरवोपीवैतौ वायको अर्दितजाय १

अथ पित्तका अर्दितरोगको जतनलि० घृतकोबस्तिकर्मकरै अ थवा दूधको सेवनकरैतौ पित्तको अर्दितरोग दूरिहोय १ अथ क

* दसमूलकोकाढो अथवा पंचमूलको काढोसात्र वायूकारोगांनैं आछ्याकरैछै. परंतु येऔषधी प्रसूतीरोगऊपरि अथवा जापामैंक्काथकरिदेवैतौ याऔषधी मुख्यछै. यांऔषद्यांनैं जुदीजुदीयाग्रंथमैंघणी जायगांलिषीछै वैद्यहैसो सूचीपत्रमैं देषसीतोमिळसी.

फका अर्दित रोगको जतनलिष्यते वमन करायांसूं कफको अर्दित जाय १ अथवा तिलांका तेलमैं लसणमिलाय षायतौ सर्वप्रकार को अर्दित तत्कालजाय १ अथ मन्यास्तंभको लक्षणलि० दिन कासोवासूं घणाबठ्यारहवासूं विकारकूं प्राप्तिहुवो जोकफ सोवायसूं मिलि कांधीनैंमूंडिवादेनहीं तीनैं मन्यास्तंभरोग कहिजे१ अथ म न्यास्तंभको जतनलि० दसमूलका काढासूं अथवा पंचमूलका का ढासूं मन्यास्तंभजाय अथवा पसेव लेवासूं अथवानासिकालेवासूं मन्यास्तंभजाय १ अथवा तेलको मर्दनकरि तींऊपरि एरंडका पा नबांधेतौ मन्यास्तंभका १ अथवा कूकडाका अंडाको रसतींमैं सीं धोलूण अर घृतमिलाय तींकोकांधीकै मर्दन करैतौ मन्यास्तंभ जाय १ अथ बाहुशोषको लक्षणलिष्यते कांधामैंरहतोजोवाय सो कुपित होय भुजानैंसुसायदे अर भुजानैंस्तंभितकरिदे वेनैं बाहुसो सरोगकहिजे १ अथ बाहुसोसको जतनलिष्यते पाछानैं कल्या णघृत उन्मादरोगमैं लिष्योछे तींको सेवनकरैतौ बाहुसोस रोग जाय १ अथवा परेटीको काढो तीमैं सींधोलूणमिलाय पीवैतौ बा हुसोस अर मन्यास्तंभरोगजाय १ अथअवबाहुक रोगको लक्षण लिष्यते भुजाकीनसांमैं रहतोजोवाय सो नसांनैं संकोचकरि भु जांनैं स्तंभितकरिदेछे १ अथ अवबाहुक रोगको जतनलिष्यते सी तल जलकी नासदेतौ अवबाहुक रोगजाय १ अथवा गूगल मोई जंडीकीजड तींको काढोकरि तीमैं गूगल मिलाय तींकी नासदेतौ अवबाहुक रोगजाय १ अथवा उडदांका पाणीकी नासदेतौ अव बाहुक रोगजाय १ अथवा उडद अलसी जव कटसेलो कट्याली गोषरू अरलू कौंछीकीजड कपास्या सणकाबीज कुलत्थ बोर

न. टी. बाहुशोष आपबाहुकयेदोयरोगछै जीमैंबाहुशोषछैसोधीरैधीरैभुजानैंसुकायदेछै. अरकोईकोईकी भुजामध्यभागमाहसौं सुकायदेवैछै. सोवाभुजाज्यारिनीचैतौजाडीदीषै अरम ध्यभागमाहिसोंसूषकरपतलीहोयजायछै. कमजोरहोजाय.

कीजड साठीकीजड पींपकीजड रास्ना परेटीकीजड गिलव कु टकी येभीतेलमें पचावे पाछें ईतेलको मर्दन करेतो अवबाहुक रोग जाय १ इति माषतैलम् इतिविश्वाची रोगको लक्षणलिष्यते हा थकी अंगुल्यांके नीचे षाजिआवे अर भुजाके पाछे षाजिको रोग करे भुजानें निकमी करिदेतीनें विश्वाची रोग कहिजें १ अथ वि श्वाचीरोगको जतन लिष्यते दसमूल षरेटी उडदयांको काढोकरि तीमें तेल मिलाय पीवेतो विश्वाची रोगजाय १ अथवा उडद सीं धोल्लूण षरेटी रास्ना दसमूल हींग वच सूंठि यांनें मिहीवांटि पा णीमें औटावे पाछे वेपाणीमें तेलनाषे तेलनें पकावे तदि पाणी ब लिजाय तेलआयरहे तदितेलनें उतारिले पाछे ईको मर्दन करेतो विश्वाचीरोगनें बाहुसोसनें अवबाहुकरोगनें पक्षाघातनें योमाषादि तेल दूरि करेछे १ अथ ऊर्ध्ववात रोगको लक्षणलिष्यते कुपथ्यका सेवनसूं नीचलो पवन कुपित होय मूंढाका कफसूं मिलि वारंवार डकार घणीहीलेतो ऊर्ध्ववात रोग कहिजे १ अथ ऊर्ध्ववातको जतनलिष्यते सूंठि भाग १० दस वधायरो भाग १० हरडेकीछा लि भाग ५ आसगंध भाग १ सेकीहींग भाग १ सींधोल्लूण भाग १ यांसर्वकी बराबरि चित्रक निसोत भाग ५ यां सारांको मिहीचू र्णकरि टंक २ गरमजलसूं लेतो ऊर्ध्ववात रोगजाय १ अथ आ ध्मान रोगको लक्षण लिष्यते सारापेटमें आफरो घणोहोय अर पीड घणीहोय अर गुदाको पवनरुकिजाय तीनें आध्मान रोगक हिजे १ अथ आध्मानरोगको जतनलिष्यते आध्मानरोगमें लं घन कराजे पाचनकीऔषदिदीजे भूषलागिवाकी औषदिदीजे ब स्तिकर्म कराजे अथवा.पीपलि टंक २ निसोत टंक १० मिश्रीटंक

न. टी. विश्वाचीवायुछैजीमैचर्तितबीमेलीहीकहीछै. कारण. घणो फरकनहींछै जींवास्तै यांकीऔषधीभीएकसीछै. घणांग्रंथकावधवाकैतांईमिलायाछै. जोप्रबलवायूरोगअरदुजामें मिलैनहींजींकैवास्तैप्रबल औषधी यथोक्तनिदानलिष्यांछै.

१० यांको चूर्णकरि टंक २ सहतसूं लेतौ आफराको रोगजाय १ योनारायण चूर्णछे अथवा वच कूठ सौंफ सेकीहींग सींधोलूण ये बराबरिले त्यांको चूर्णकरिकांजीसूंमिहीवांटि गरमकरि सुहावतो फेटकें लेपकरेंतौ आफरोदूरिहोय १ अथवा महानारायणरससूं आफरो जाय सोलिषूंछूं हरडेकीछालिटका १ किरमालाकीगिरि टका १ आंवलाटका १ दांत्युणीटका १ कुटकीटका १ निसोतटका १ नागरमोथोटका १ थोहरकोदूधटका १ यांसारानें वांटिसेर ४ पाणीमें औटावेपाछेई पाणीको आठऊहिंसो आय रहेतदिपाणीमें जमालगोटाकोछौंत उतारि टका १ भरमिहीवस्त्रमेंबांधिसनैसनै जमालगोटानें पचावें ओपाणीवलिजाय तदिजमालगोटानें काढिले पाछें यांजमालगोटाको भाग आठऊंले सूंठितीनभागले कालीमिरचि दोयभागले पारो १ भागलेसोधीगंधक १ भागले पाछें पारा गंधककी कजली करिले पाछेंवेकजलीमें येसारा मिलावें पहरयेक १ परलकरें पाछैरतीयेककीगोली बांधे गोली १ सीतल जलसूं देतौ आफरानें सूलनें आनाहनें प्रत्याध्माननें उदावर्तनें गोलानें उदरकारोगनें यांरोगांनें योमहानाराचरसदूरिकरेंछे. ईंकादस्तलागिचूकेंतदि मिश्रीमिलाय दहीं घुवाजे पाछें चावलांनें दहींसूं मिलाय उनुमान माफिक सींधोलूण वेमेंघालिथोडासायेघुवाजैतौ आध्मानको रोगजाय १ अथ प्रत्याध्मानको लक्षणलि० पसवाडामें अर हियामेंतौ आफरोहोयनहीं अरनाभीसूं लेरपेटहीपेटमें आफरो होयतौनैप्रत्याध्मान कहिजे अथ प्रत्याध्मानको जतनलिष्यते लंघन कराजे पाचनादिकदीजे बस्तिकर्म कराजैतौ प्रत्याध्यानजाय १ अथ अष्ठीलाको लक्षणलिष्यते नाभिकैनीचैपवनकीगांठि भाठास

न. टी. आध्मानजोवायुकोरोगछे सोवायूसौं ही होय जोतोआध्मान अरदूजाकारणासौं वी होयछे. आध्माननामपेटमें आफराकोरोगहोय सोतो आफरासूसाकीमींगणीजगैरै षावामें आवैतौवीआफरोहोयछे. सोतोसाधारणछैः रोगकोतो कठिणछे.

रीसीवधिमलमूत्रनैं रोकिदे अर ऊठेपीडघणीकरै तीनैंअष्टीला प्र त्यष्टीला कहिजै अथयादोन्यांको जतनलिष्यते सेकीहींग पीपला मूल धणो जीरो वच चव्य चित्रक पाठ कचूर अमलवेद संचरलूण सींधोलूण सांभरोलूण सूंठि कालीमिरचि पीपलि जवषार साजी अनारदाणां डरडैकीछालि पोहकरमूल डासस्यां झाउरूपकीजड येसारा सम्मभागलेयांनैंमिही वांटि आदाकारसकी पुट ३ तीन दे पाछे ईंचूर्णनैं छाया सुकाय टंक २ गरमपाणींसूंलेतो वाताष्टीला अरप्रत्यष्टीला जाय १ अथ तूनीरोगको लक्षणलिष्यते मलमूत्र कास्थानमें रहतोजो पवन सो गुदालिंगमैंपीडाकरै तीनैतूनीरोग कहिजे १ अथ प्रतीतूनीरोगको लक्षणलिष्यते गुदालिंगमें रहतो जो पवन सोवानैं पीडाकरै पेडूमें जायपीडाकरै तीनैं प्रतितूनीरोग कहिजै १

अथ यांदोन्यांको जतनलिष्यते यादोन्याकै स्नेहकीवस्तिदीजै तोतूनीरोग प्रतितूनीरोग जाय१ अथवा सूंठि पीपलि कालिमिरचि सेकीहींग जवषार साजी सींधोलूण यांनैंमिहीवांटि टंक२ गरम पाणी सूंलेतो तूनीअरप्रतितूनीरोगजाय १ अथत्रिकसूलको लक्षण लि ष्यते कटीका तीन्यूं हाडांमें अरपीठीकातीन्यूं हाडांमें अर वासां का हाडांमें पीडा होयतीनैं त्रिकसूल रोगकहिजे १ अथ त्रिकसूल को लक्षण लिष्यते वालू रेतसूं सेककराजे अथवा आणाछाणाकी राषको सुहावतो सेक कराजेतो त्रिकसूलजाय अथवा गुल्हीबो लीकी जडकीबकल आसगंधझाउरूषकीबकल गिलोय सतावरी गोषरू रास्ना निसोत सोफ कचूर अजवायणि सूंठि यांनै बराबरि ले यांसर्वकी बराबरि सोध्योगूगलले गूगलसूं चौथाई घृतले यांसा

* वातरोगऊपरिप्रस्वेदकर्मलिष्योछै सूकोईबीऔषधीकाजोगसूंपसेवलिवावणाजीनैंप्रस्वेद कहैछै. ओरबास्तिकर्मकहैछै. जींकर्ममैंलिष्याप्रमाणै औषधीकोरसतथाकाढोतथाओरपतलो तेलरसघृतआदिलेरपिचरकीमैं भरमलद्वारमैंअथवाइंद्रीमैं प्रवेश औषधीकरैसो बास्तिकर्मछै.

शांको एकजीव करि पांचमासा रोजीना दारूकैसाथिले अथवा गरमपाणीकैसाथि अथवा मांसका सोरवाकैसाथि लेतौ त्रिकसूलनैं जानुग्रहनैं भुजास्तंभनैं संधिगतवाय होय जीनै हाडटूटिगयो होय तीनैं पीडा पणानैं ग्रध्रसीनैं पक्षाघातनैं यांसारांरोगांनैं योत्रयोदशांगूगल दूरिकरैछै. इति त्रयोदशांगूगल १ अथ बस्तिवातको लक्षण लिप्यते पेडूको वाय कुपितहोय अरमूत्र आछीतरै चालतौ होय तीनै रोकिदे अरघणांरोगांनैं प्रगटकरैतीनैं बस्तिवात रोगकहिजे १ अथ ईकोजतनलिप्यते परैटीकीजडकी बकल तींबराबरि मिश्री मिलाय टंक २ गऊका दूधकैसाथि लेतौ वारंवार मूतवाको रोग दूरिहोय १ अथवा त्रिफलाको चूर्ण करितींबराबरि सारमिलाय मासा ४ सहतकैसाथचाटैतौ वारंवार मूतवाको रोगजाय अथमूत रूकिगयोहोय तींको जतन लिप्यते जवषार मासा ५ मिश्रीकैसाथिलेतौ मूत्रकोबंध छूटै १ अथवा पेठाकाबीज अरतेवरसीकाबीज यांनैं पाणीमैं घोटिमासा २ तीमैंजवषार नाषिमिश्रीमिलायपीवैतौ मूतरूकिगयोहोय तींकोबंधछूटै १ अथवा चिणियां कपूरकी वत्ती करि लिंगमैं अथवा भगमैं देतौ मूतकोबंधछूटै अथग्रध्रसीरोगको लक्षणलिप्यते पहली कुलाबामैं पीडहोयपाछैकटिमैंपीडहोय पाछै पीठिमैंपीडहोय पाछैगोडामैंपीडहोय पाछैजांघमैं पीडहोयपाछै पगांमैंपीडहोय अर पगांनैं स्तंभितकरिदे अरपगनिपटहोलूऊठैईनैं ग्रध्रसीरोग कहजे. सोग्रध्रसीरोग २ दोय प्रकारकोछै. एकतौ वायको येकवायकफको २ वायकामैतौ पीड घणीहोय अरसरीर वांको होयजाय अरगोडामैं जंघामैंसंधि संधिमैं फूरकणीहोय अर स्तंभितहोय अरवायकफकीग्रध्रसीमैंसरीरभाख्यौहोयजायअग्निमंद

न. टी. जोपृष्ठमैं मोठोहाडछैजीनैधोरीमाकडोकहैछै. अरठेठगरदनसौंलेकरनीचैंबैठकतां ईआयोछै. जींकोआधारसर्वशरीरनैछै. औरवींकैसंबंधमैं घणाहाडछै. अरवींकैत्रिसंधीमिलीछै. जीमैंकोईबीरीतकीवायू हवामवेसहोयजीसौंसूलचालैतीनैत्रिकसूलकहैछै.

होजाय अरतंद्राहोय लालघणीपडै अथग्रध्रसीरोगको जतनलि० वमनकरावासूं ग्रध्रसीरोगजाय १ वस्तकर्मसूं ग्रध्रसीरोगजाय १ सरीरनै हरडैकाजुलाबसूं निरामकरि पाछै वस्तकर्मकरै १ अथवा अरंडकोतेल अरगोमूत्रमिलाय महिनाएकतांई पीवैतौग्रध्रसीरोगजाय अथवा तेल घृत आदाको रसविजोराकोरस चूकगुड येअनुमान माफिक मिलायमहिनाएकतांईपीवैतौ ग्रध्रसीरोगजाय अरइहींसूं कटिकी पीडजांघकीपीडत्रिकसूल गोलोउदावर्त येभीरोगजाय १ अथवा अरंडोल्यांकीदूधमैं षीरकरि महिनायेकतांई पायतौ ग्रध्रसीरोगनैं पोताकी सूलनैं दूरिकरै १ अथवा अरंडकीजड बीलकी गिरी कव्याली इनको काढोकरि यामैं तेलमिलाय पीवैतौ ग्रध्रसीनैं पोताकी सूलनैं दूरिकरै १ अथवा विडलूण संचरलूण यांनैं मिही वांठि गोमूत्र अरंडकोतेलमैं येघालिपीवैतौ कफवातकी ग्रध्रसीजाय १ अथवा अरडूसो दांत्युणी किरमालाकीगिरियांकोकाढोकरितीमैं अरंडको तेलनाषिपीवैतौ ग्रध्रसीरोगजाय १ अथवा निर्गुंडीकाकाढासूं ग्रध्रसीरोगजाय १ अथवा रास्ना टका ५ गूगल टका ५ यां दोन्यांनैं वांटि घृतमैं गोली मासा ४ कीकरिपाछैगोली १ रोजीनाषायतौ ग्रध्रसीजाय १ अथवा गिलवै रास्ना किरमालाकीगिरीदेवदारू गोषरू अरंडकीजड सूंठि यांकोकाढोकरि देतौग्रध्रसीरोगनैं अरजांघकीपीडनैं पेटकीपीडनैं पसवाडाकी सूलनैं यांसारां रोगांनैं योकाढोदूरिकरैछै १ इतिरास्नादिककोकाढो.

अथ षोडा पांगलारोगको लक्षणलिष्यते कटिमैं रहतोजोवाय सो जांघकीनसानैं पकडियेक पगमैं स्तंभित करिदेतीनैंषोडोकहिजे अरकटिमैंरहतोजोवाय सोजांघकी नसानैं ग्रहणकरि दोन्यूं जांघां

न. टी. चिणीयोकपूरलिष्योछैसोवोकपूरचीणदेसमैंहोयछै. अरचीणदेसमाहिसौंपेटीभरि आवैछै. अरमोटादिसावरामैं आयकरयंत्रकीसहायतासौंअग्निकायोगसौंऊर्ध्वपातकरचौजाय छै. जीसौं सुपेदरंगअरपापडीजाडीजिस्योजमैछै. सौवोआरती कपूरछै.

को नासकरै चालवादेनहींतीनैं पांगलो कहिजै. १ अथ यादो न्याको जतनलिष्यते जुलाबका लेवासूं औषद्यांका गरमपसेवासूं योगराजउगैरैगूगलका पावासूं तैलादिकांका मर्दनसूं वस्तकर्मसूं येदोन्यूंरोगजाय १ अथ कलापपंज रोगको लक्षणलिष्यते दर्दचा लैजीसमैं सरीरकांपै अरपोडाकीसीनाईंदीसैजाणिजे नसां आपको ठिकाणो छांडिदियोछै. तीनैं कलापपंज रोगकहिजे १ अथ ईंको जतनलिष्यते विसगर्भादिक तैलका मर्दनसूं योरोगजाय १ अथ क्रोष्टुसीर्परोगको लक्षणलिष्यते गोडामैं वात लोहीका विकारसूं सोईहोय अर गोडामैं घणीपीडहोय अरस्यालाका माथा सिरीसो गाढोहोय तीनैं क्रोष्टुसीर्ष रोगकहिजै. अथ क्रोष्टुरोगको जतनलिष्यते गिलवै टंक २ त्रिफला टंक १० यांदोन्यांको काढोकरि तीमैं गूगलटंक २ नाषि ईंतेलनैं महिना १ ताईंपीवैतौ योक्रोष्टुसीर्षरोग दूरिहोय १ अथवा दूधसेर १ अरंडकोतेलटंक १० नाषिमहिना १ तांईपीवैतौ क्रोष्टुशीर्ष रोगदूरिहोय १ अथवा वधायराको चूर्ण टंक २॥ गऊकोदूधसेर॥ तींकीसाथि पीवैतौ क्रोष्टुशीर्ष रोगजाय १ अथवा तीतकां मांसका सोरवामैं टंक २ गूगल नाषि षायतौ योरोग जाय १ अथवा किसोर गूगलका सेवासूं योरोगजाय १ अथ गोडादूपिवाको जतनलिष्यते तेलको मर्दनकरि तींऊपरिवांटि सूंठिको मर्दनकरै पाछै वैऊपरि तेलसूं चोपडि अरंडका पानगरमकरि बांधैतौ गोडा दूपतारहे १ अथवा कौंछिका बीज टंक २ दहींकै साथि दिन ७ तथा १४ लेतौ गोडा दूषता रहै १ अथ षल्ली रोगको लक्षण लिष्यते पगमैं जंघांमैं पहुंच्यामैं कांषनमैं वायटां आवै तींकौं षल्लिरोग कहिजै १ अथषल्लीको जतन लिष्यते कूठ सींधोलू

न. टी. रास्नादिकऔषधीकोकाढोलिष्योछै सोयणीवायुकीविकृतीपरछै. परंतु ईंकीसाथ योगराजगूगलकोयोगदेणायोग्यछै. कारणजोछोटाछोटावायूकारोगछै. सोईसौंसर्वआछ्या होयछै. अरजोषोडा. पांगला. कालापपंजी. इस्याओरभीरोगईसूंजायछै.

ण यांको काढोकरि ईंकाढाका रसमैं तेल अर अमलवेदको रसना पि ईंतेलनैं मधुरीआंचसूं पकावै पाछै रसबलिजाय तेलमात्र आ यरहै तदि ईंतेलको मर्दन करैतौ पल्ली रोगजाय १ अथ वात कंटक रोगको लक्षणलिष्यते ऊंचीनीची जगामैं पगमेलतां पेदहोय पीछै टंकोएयामैं पीड आयरहै तींकूं वात कंटक रोगकहिजे अथ ईंको जतनलिष्यते टंकूएयाकी जगांसू यासूंपोदि लोही कढाहिजे तौ वात कंटक रोग जाय १ अथवा एरंडको तेल टंक ५ रोजीना महिना १ तांई पीवैतौ वातकंटक जाय २ अथ पाददाहको लक्षणलिष्यते वात पित्त लोही येतीन्यूंमिलि पगथलीनमैं दाह करैतींकै पाद दाहको रोग कहिजे १ अथ पाद दाहको जतनलिष्यते मसूरकी दालकूं मिहीपीसिऔटावैपीछै वैंको निपट ठंडोकरि वामैं आटाकोंछाणि पतलो लेपकरै वारपांचसाततौ पाददाह रोगजाय १ अथवा माषनकोपग थलीनकै मर्दनकरि पगथलीनकौं अग्निसूं तपावैतौ पाद दाह रोगजाय १ अथवा अरंडोल्यांनै गऊकादूधमैं मिहीपीसि हथेली वापगथलीकै लेपकरैतौ घणोभीदाह जाय १ अथ पादहर्षको लक्षणलि० जींका दोन्यूंपगझणझणाटकरिसोय सोयजाय कोईतरै दाविवेउगैरेकूं छोडैतौ जागि उठैतींको पादहर्ष रोगकहिजे १ अथ ईंको जतनलिष्यते कफका अर वायका दूरि करवावाला जतन करैतौ पादहर्ष रोगजाय १

अथ पगफूटणीको जतनलि० तिल सांभरोलूण हलद येबराबरिले अर इनधतूराकेवीजनकूं पाणीमैं पीसि उनतीन्यूं बराबरिगऊको माषनले पाछैयांनैं पकावै अरयांपचतांहीमैं चौगुणो गोमूत्र

---

* हाथ पगांका सांधामैं पीडा होयछै. सूअनेक कारणांसूं होयछै. परंतु उपदंशको रोग लागै जींवास्तै मूर्ख वैद्यहैसो रसकपूर तथा पारो तथा और काची धातूकी औषधी देकर तुरत फायदो करैछै. पण पछै सांधापकडायछै सूबोत दुखपावैछै. ईंवास्तै मूर्ख वैद्यकी औषधी लेणी नहीं.

नापे येसर्व बलिजाय मापन मात्र आय रहे तदिपगथलीनके मर्द नकरैतो पगफूटणीदूरिहोय १ अथपित्तसहितजोवाय तींका आक्षेप रोगको लक्षणलि० पित्तकोस्थान उदरादिकतीमें रहतो जो वाय तिनकों स्तंभित करि दंडकीसीनांईकरिदे अथवा कफमें मिल्योजोवाय सोधमनी नाडीमें रहकरि सरीरकूं स्तंभित करिदे सो ओ कष्टसाध्यछे. अथ केवल वायका आक्षेपको लक्षणलिष्यते हाथ पग माथो पीठि ढूंगा इनकूं स्तंभित करिदे अर वाय इनमें पीडभी करिदे सो इह असाध्यछे. १ अथ चोटलागिवासूं उपज्यो जोवाय तींका आक्षेपको लक्षणलिष्यते जठे सस्त्रादिककी चोट लागिहोय तींसूं उपज्यो जोवाय सोतींमाफिक साध्यजानिये अथ ईंकोजतन लिष्यते परेटीकीजड दसमूल जव बोरकीजड कुलत्थ इनसबनको अष्टावसेस काढो करि तीमें तेल नाषि अर येओषदि नाषि मधुरी आंचसूं पकाय तेल तयारकरि ये औषदि औरमिला जे सो लिषूंछूं सींधोलूण अगर रालदेवदारु मजीठ पदमाष कूठ इलायची छड पत्रज तगर. गोरीसर सतावरी असगंध सोंफ साठीकीजड येतेलकै अनुमान माफिक नाषितेलनें पकायले पाछेई महाबलीतेलको मर्दन करैतो सर्वप्रकारका आक्षेपक रोगनकूं सर्व प्रकारका वायकारोगानें हिचकीनें सासनें गोलानें अंत्रवृद्धिनें पीणातानें टूट्याहाडकूं देषकूं इनसर्वरोगानें योमहाबलीतेल दूरिकरैछे. १ अथ अंतरायामरोगको लक्षणलिष्यते पगनकी आंगुली त्रिकोण्यापेटहीयो गोलोइनमें रहतो जोवाय सो वडीनसांका समूहकूं सरीरकामाहि पकावेछे. पाछे वेंकानेत्र फाटि निश्चलसें हो जाय अरडाढी मूंडैनहीं अर वेंकापसवाडा टूटासाहोजाय कफके

न. टी. पादस्फोट रोग घणा मनुष्यांकै होयछै. जीनै पगांकी फूटणी कहीछै. सोवा फूटणी वायका रोगमेंछै. जींका जतन लिष्याछैसो करणा. अर कोईकै गरमीसूंबी पगफूटणी होयछै. सो गरमीका लक्षणसूं समज्याजायछै. अरपादहर्ष रोगछै जीनै पगसोवणो कहैछै.

छाडै अर सरीरकै भीतरि कवाणकीसीनाई वांको होजाय जीमैं ये लक्षण होय तौ अंतरायामरोग कहिजे. अथ बाह्यायामरोगको लक्षण लिख्यते घणीवायल वस्तका पावासूं कुपित हुवोजोवाय सो सरीरकी सगली नसांनैं अर कांधीनैंपीठीनैं सुसार अर मनुष्यके सरीरकूं कवानकीसीनाई वांको करिदेछै अर वैंकाहियाकूं जांघनकूं वावाय तोडिनाखै येजीमैं लक्षण होय तींकूं बाह्यायामरोग कहिजे सो अर्दितरोगकेजतनपीछैलिखैछै. सोही इनको जानिली ज्यो अथ धनुस्तंभको लक्षण लिख्यते कब्बानकीसीनाई वेंको सरीर होजाय अर सरीरको वर्ण औरसो और होजाय मूंढो मीचिजाय देहशिथिल होजाय चेत जातोरहै पसेव आवै यांकूं धनुस्तंभरोग कहिजै योरोगवालो दिन १० जीवै. ॥

अथ कुब्जकरोगको लक्षण लिख्यते कोपकूं प्राप्तिभयो जोवाय सो हियाकूं ऊंचोकरिदे अर ऊठैपीड घणीकरै तींकूं कुब्जक रोग कहिजे अथ इनतीन्यूं रोगकूंदूरिकरवावालो प्रसारणीतेल याही प्रकर्णमैं लिख्योछै. तीसूं धनुस्तंभ बाह्यायाम अंतरायाम वातव्याधि सर्वप्रकारको दूरिहोयछै. अथ अपतंत्ररोगकोलक्षणलि० वायल वस्तकासेवनसूं कोपकूं प्राप्ति भयोजोवायसो आपके स्थानकूं छोडि अर हियामैं जाय प्राप्तिहोय शिरकूं अर कनपटीनकूंपीडा करै कबानकीसीनाई सरीरकूं नवायदे अर ओ मोहकूं प्राप्ति होजाय अर वोवडाकष्टसूं ऊंचे प्रकारकरिसासले अर वैंका नेत्रफाटिजायकैमीचिजाय अर वेंको कंठकबूतरकीसीनाई बोलै संज्ञाजातीरहै. जींकै येलक्षण होय तींकै अपतंत्ररोग जाणिजे अथ अपतंत्र रोगको जतनलि० मिरचि सहजणाकाबीज वायविडंग अ

न. टी. पगसोयांसूंसुन्यहोयछै. सोवायकाविकारकीपादसुप्तीतोएकरोगछै अरसाधारणसैं तथापगहातकोइतरैसूंदबजायतोवोफिरतोलोही ठहरजायजीसूंझणझणाटकरै. अरथोडी वातमैंसावचेतहोजाय सोसाधारणछै. केईकमनुष्यांकैंहोवोकरैछै.

फीम महुवो येवराबरिले इनकूंमिहीपीसि नासदेतौ अपतंत्रजाय. अथवा हरडैकीछालि वच रास्ना सींधोलूण अमलवेद इनकूं मिही पीसि टंक २ घृतकैसाथि अथवा आदाकारसकै साथि लेवैतौ अ पतंत्ररोग जाय १ अथ अपतानक रोगको लक्षण लिष्यते नेत्र फाटासा होजाय संज्ञाजातिरहै कंठमैं कफबोलै संज्ञा आवै तवै चै नपडै अर अग्यान आवैतब औरु मोह इह भयंकर रोगछै अर इहस्त्रीकैगर्भपातसूं होयछै. अर पुरसकै घणोलोहीनीकलबासूं होयछै. अथवा घणीचोटलागिवासूं होयछै. इहरोग असाध्य जा णिये. अथ ईको जतनलिष्यते दसमूलका काढामैं पीपलि नाषिपी

अपतानकरोग जाय अथवा तेलका मर्दनसूं जाय २ अथवा तीपीवस्तकी नासलेतौ अपतानकरोग जाय ३ अथवाघृतकैपी वेसूं अपतानकरोग जाय ४ अथवा स्नेहकीवस्तिकै लेवेसूं अपता नरोगजाय ५ अथपक्षाघातरोगको लक्षणलि० कोईकारणसूं कुपित जोवाय सोमनुष्यकै आधेसरीरकूं पकडिअर सर्व सरीरकीनसांनैं सुकायदेछै. अर आधेसरीरकी नसांनैं निपटढीलीकरिदेछै. अथवा सर्वसरीरकीनसांनैंढीलीकरिदेछै. निपट निकमीकरिदेउननसनको ग्यान जातो रहै येलक्षण होय तीनैं पक्षाघातरोग कहिजे जीवनो अंगहोय अथवा वांवो अंगहोयनिर्जीवसो पक्षाघातदोय प्रका रकोछै. पित्त वायको १ कफवायको २ सरीरकैमाहीनबारै दाहहोय अरमूर्छा होयतौपित्तवायको पक्षाघात जाणिये. अर सरीरकै माहि बारैसीत लगै अर सोजो होय सरीर भार्‍यौ होयतौ कफवायको पक्षाघात जानिये पक्षाघातको साध्यलक्षण केवल वायसूं पक्षा घात उपज्यौ होइ तौ कष्टसाध्यजानिये अथ पक्षाघातको असा

न. टी. अपतंत्र वायू अर अपतानकवायू रोगछै जीमैं अपतंत्रतो साध्यछै. अरकष्टसा ध्यछै. परंतु अपतानक वायु रोगतो असाध्यछै. कारण घणो लोही नीसरजायछै. जींकै होयछै. जींवास्तैवैद्यनैं विचार करणो योग्यछै. रक्तश्राव घणो नहीं करवा देवो. बंधकरै.

ध्यलक्षणलिष्यते गर्भिणीस्त्रीकै अथवा व्यावर स्त्रीकै पक्षाघात होय सो असाध्यजाणिजे. अथवा बालककै वृद्धकै क्षीण पुरसकै घाव वालाकै लोहीनीकलिगयो होयतींकै सूनासरीरवालाकै पक्षावात असाध्यजाणिजे.

अथपक्षाघातको जतन लिष्यते उडद कौंछकाबीज अरंडकीजड परैटीकीजड इनको काढोकरि तीमैंसेकीहींग अर सींधोलूण मिलाय पीवैतौ पक्षाघात दूरिहोय १ अथवा पीपलामूल चित्रक सूंठि पीपलि रास्नासींधोलूण उडद इनकौ काढोकरि ईकाढाका रस मैं तेलपकावै रसवलिजाय तेलमात्र आयरहै तव ईकौ मर्दन करै तौ पक्षाघात जाय १ इति ग्रंथिकादितैलम् उडद कौछकाबीज अतीस अरंडकीजड रास्ना सौंफ सींधोलूण इनकूं मिहीपीसि यांको काढोकरि ईकाढामैं तेलपकावै तदिरस बलिजाय तेल आयरहै तीं कोमर्दन करैतौ पक्षाघातजाय ३ इतिमाषादितैलम् येसर्वजतन भावप्रकासमैं लिष्याछै. अथवा कौंछकाबीज परैटीकीजड अरंडकीजड उडद सूंठि सींधोलूण इनकौ काढोकरि छांणि पीवैतौ पक्षाघातजाय १ यहवैद्यविनोदमैछै. अथवा महुवाको रस गूगल टंक ५ बीजाबोल टंक ५ बकरीकीमींगणी टंक ५ कटेलीकोरस टंक ५ पलासपापडो टंक ५ आंबीहलद टंक ५ सुहागो टंक ५ विजोराकीजड टंक ५ इनकौंमिहीपीसि तेसरीरकै लेपकरै पीछै कमर बराबरि षाडोषोदि अर षाडाकूं अग्निवालि लाल करै अर वाषाडाकै आसंपास नीचै आककापान मेलैपीछै वापक्षाघातके लेपवारे आदमीकूं वाषाडामैं वैठावै वाकै पसीनो आवै जहांतांई तो पक्षाघातको रोग

---

* पक्षाघातको रोगछै सूवातरोगमैंछै. पक्षाघातसंस्कृत नामछै. लकवाको रोगईनैं कहैछै. देसभाषामैं बीजासणीको रोगकहैछै. तथा मांवल्यांको विमाणबी कहैछै योरोग मंत्रादिक सूं आराम होयछै. ईसी लोकप्रसिद्धवात घणीछै. ओर ईवास्तै षेजडीका वृक्षनैं षींचै पूजै छै. ओरबी तंत्रादिकघणांछै परंतु औषधीतो सिद्धरूपछै.

उहीदिन जातोरहै १ अथनिद्रानास रोगको जतनलि० सेकी भां गको चूर्ण मिही पीसि रात्रिकौं अनुमान माफिक सहतसूं चाटैतौ नींदनिश्चै आवै अरयांसूं अतिसार संग्रहणीभीजाय अर भूष घणीलागे अथवा पीपलामूलको चूर्ण गुडकैसाथि लेतौ नष्टभईभी नींद आवै. १ अथवा काकलहरीकी जड सिरकै बांधैतौ नींदआवै १ अथवा कांगसीसूं सुहावतौ २ माथो वहावैतौ नींद आवै ३ अथवा कोमल हाथनसूं पगथली पलोटावै तौनींद आवै ४ अथवा वैंगणका भडीतामैं सहतमिलाय षायतौ नींद आवै ५ अथवा तेलकी कांजीकैसाथि अथवा षटाईकैसाथि भडीतोरातिकूं षायतौ नींद तत्काल आवै ६ अथवा एरंडकोतेल अर अलसीकोतेल ये दोन्यूं बराबरिले तिनकूं कांसीकी थालीमैं खूब घसि अंजनकरैतौ नींद घणीआवै ७ अथवा सौंफ अरभांगी इनकूं मिहीपीसिबकरीकादूधमैं निवायो सुहावतौ लेप करैतौ नींदआवै ८ अथवा बकरीका दूधसूं पगथली धोवैतौ नींद आवै अरपगथल्यांको दाह दूरिहोय ९ अथवा कस्तूरीनैं स्त्रीका दूधमैं मिहींपीसि अंजन करैतौ घणादिनकी गईभीनींद आवै १० येसर्वजतनवैद्य रहस्यमैं लिषेहै अथ सर्वांगमैं वायहोय तींको लक्षणलिष्यते सर्व अंगमैं कोपकों प्राप्ति हुवो जो वाय सो साराही अंगमैं पीडा करै अथ ईको जतनलिष्यते विस गर्भकूं आदिलेर तेलनसूं सर्वांग वायजाय १ अथसातू धातनमैं प्राप्तिहुवो जोवाय तींका जुदा जुदा लक्षण अर जतनलिष्यते त्वचाकूं सूनीकरिदे अर त्वचाकूं पीली करिदे सरीरकूं क्रसकरिदे सर्वत्र सरीरमैं पीडाकरै २ अथ लोहीमैं प्राप्ति भयोजोवाय तींको लक्षण लिष्यते सरीरमैं पीडा घणीहोय वर्ण और

न. टी. पक्षाघातवायूजीनैंलौकीकमैंबिझासणीकीअसवारीसैंफिटहुईकहैछै. अरईरोगवालाकै वास्तैवीझासणमाताकीमावल्यांकीपूजनकरैछै. योरोगवालकांकौंघणौहोयछै. जीसौंलौकीकमैंभयघणोराषैछै. परंतु पक्षाघाततोलकैवाकोरोगप्रसिद्धछै.

सो होजाय सरीर कुस होजाय सरीर भार्यो होय अरुचिहोय मू ढापैं कीलहोय भोजन पचैनहीं ३ अथमांसमैंप्राप्तिभयोजोवाय तींको लक्षणलि० सरीर भार्यो होय पीडाहोय सरीरस्तंभित होय ४ अथ मेदमैं प्राप्ति भयो जोवाय तींको लक्षणलि० सरीरमैं फो डाकरै ५ अथहाडनमैं रहतो जोकुपितवाय तींको लक्षणलिप्यते संधिसंधिमैं पीडाहोय मांसबलिजाय नींद आवै नहीं. अर मज्जामैं वाय हाडकीसीनाई जानिये ६ अथ विरजमैं प्राप्तिभयो जोवाय तींको लक्षणलिप्यते स्त्रीसंगकरैतौ वीर्यतत्काल गिरिपडै कैपडैनहीं अरगर्भकौविगाडतौ उपजावै ७

अथ इन सबनके जतनलिप्यते रसमैं विगाड्यौ जोवाय तींकै तेलको मर्दनकरिये १ रक्तमैं विगड्यौजोवाय तींकै सीतल लेपसूं अथवा जुलाबसूं अथवा लोहीके कढावेसूं सांति करिये २ मांस मे दमैं रहतोजोवाय तीनैं जुलाबसूं सांति करिये ४ हाडनमैं विगाड्यो जोवाय तींकौं चीकणी वस्तके पावासूं ४ अथवा लगावासूं सांत कीजिये ५ अर मज्जामैं गयो जोवाय सोचीकणी वस्तके पावाल गावासूं आछ्योहोय ६ अथवा वीर्यमैंविगाड्यो जोवाय सो पुष्टा ईकी औषदि पावासूं आछ्यो होय ७ अथ कोष्टमैं प्राप्तभयो जो वाय तींको लक्षण लिप्यते उदरमैं रहतौ जोदुष्टवाय सोमलमूत्रकूं रोकिदे अरपेटकौंहियाकौं गोलाकौं ववासीरकौं पसवाडाके सूलकौं उपजावेछे ८ अथ ईंको जतनलिप्यते पाचनादिकनसूं ईंको जतन कीजे अथवा दूधपाजे अथ आमासयमैं रहतोजोवाय तींकोलक्षण लिप्यते हियामैं पसवाडामैं नाभिमैं इनमैंपीडाहोय तिसलागै ड कारघणी आवै विसूचिकाहोय षास होय कंठ मूंढो सूकिजाय सा

न॰ टी॰ सर्वसरीरगतजोवायूरोगछैजींकाजुदाजुदा आकारवधैछै. अरज्यूंज्यूंवायू उत्तरोत्तर आगैवधैछैत्यूंत्यूंप्रबलपडतीजायछै. जैसैत्वचासौंतोलोहीमप्रबलछै. अरलोहीसौंमांसमैं अरमां ससौंचरबीमैंहाडामैं. मज्जामैं. पाछैशुक्रमैंसोईयानवधींप्रबलहोयछै.

सहोय अथ ईंको जतनलिष्यते दीपन पाचनकी औषदिदीजे लं घन कराजे वमन कराजे जुलाबदीजे षावामैं पुराणा मूंगचावल दीजे अथवा रोहीस हरडैकी छालि कचूर पुहकरमूल बोलकी गिरि गिलवै देवदारु सूंठि वच अतीस पीपलि वायविडंग येसर्वे बराबरिले इनंकौ काढोकरिदेतौ आमासयकी वाय जाय १

अथ पक्वासयमैं रहतो जोवाय तींको लक्षण लिष्यते आंत बोलो पेटमैं सूलचालै आफरो होय मलमूत्रकष्टसूंऊतरै पीठि मैं पीड होय अथ गुदामैं रहतोजो दुष्ट वाय तींकोलक्षण लि ष्यते मल मूत्र पवनसूं रूकि जाय पेटमैं सूलहोय आफरो होय पथरीको रोगहोय जंघामैं पीठिमैं पसवाडामैं पीडा होय अथ ईंको जतन लिष्यते बस्तिकर्मसूं इह रोगजाय अथ हियामैं प्राप्ति भयोजो वाय तींको लक्षण लिष्यते गिलवै मिरचि इनकूं मिहीपी सिंनिवाये जलसूंपीवैतौ यहवाय जाय १ अथवा आसगंध वहेडा कीछालिमिहीवांटि गुडमैं मिलाय षायतौ इहवाय जाय २ अथवा देवदारु सुंठि मिहीपीसि निवाये पाणीसूं पीवैतौ इह वायजाय ३ अथवा कर्णादिकनमैं प्राप्त भयोजोवाय तींको लक्षणलिष्यते उन कर्णादिक इंद्रियनको नासकरै अथ ईंको जतन लिष्यते सेकसूं ते लादिककै मर्दनसूं इहवाय जाय अथ सरीरकी नसनमैं प्राप्ति भ योजोवाय तींको लक्षणलिष्यते नसनमैं सूल चालै नस येकटी हो जाय अथ ईंको जतन लिष्यते सीर छुटावैतौ इहरोगजाय अथ सं धिमैं प्राप्ति भयोजोवाय तींको लक्षण लिष्यते संधि संधिमैं सूल होय संध्याने विगाडिदे अथ ईंको जतनलिष्यते सेकसूं तैलके म र्दनसूं इहवायजाय अथवा इंद्रायणकीजड पीपलि टंक २ गुडमैं

न. टी. वातरोगसर्वसरीरमैंफैलजाय. जींवास्तैमोठोउपचार करणोयोग्यछै. जैसैनारायण तेलअरयोगराजगूगल अरमहारास्नादिकाढो अरओरभी उत्तमरसअथवाभस्मइत्यादिकउपाव करैतौमनुष्यकौसरीरआरोग्यहोयसुषप्राप्तिहोयछै.

पायतौ संधिगत वायजाय अथ वात व्याधिको सामान्य लक्षणलि
ष्यतेअथनारायण तेलकी विधिलिष्यते आस गंध. परेटीकीजड बी
लकीगिरी पाटल दोन्यू कटेली गोपरू गंगेरणीकीछालि नींबकी
छालि अरलू साठीकीजड पींप अरण्यूं येसव ओपदिटका दसदस
भरिले अर पाणीसेर १६ लेतीमें येओपदिनापि सनैसनैपचाय
यांको काढो चतुर्थांश रापै पाछेईमें तीलांको तेलसेर ऽ ४ नापै अर
ईमें सतावरीको रससेर ४ नापै तेलसूं चौगुणो इमेंगऊकोदूधना
पै पीछैयाकूं मधुरीआंचसूं पकावै. यांनें पचतांही ईमें येऔषदिनापै
कूठ टका १ इलायचीटका २ रक्तचंदनटका २ वचटका २ छडटका
२ सिलाजितटका २ सींधोलूणटका २ आसगंधटका २ परेटीटका
२ रास्नाटका २ सोंफ टका २ इंद्रायणटका २ सालपर्णी टका २
पृष्ठपर्णी टका २ मांसपर्णी टका २ ऊर्द्धपर्णीटका २ रास्ना टका २
ये सर्वबराबरिले ईमें नाषि मधुरीआंचसूं पचावै सर्वरसबलिजाय
तेलमात्र आय रहै तब ईंकूं उतारिछाणि पीछे ईंतेलको मर्दन करै
तौ अथवा पायतौ अथवा यांकोबस्तिकर्म करैतौ इतनारोगजाय
पक्षाघात हनुस्तंभ मान्यास्तंभ गलग्रह. वधिरपणो गति भंग क
टिग्रह गात्रसोस नष्टशुक्र विषमज्वर अंत्रवृद्धि गोसो शिरोग्रह
पार्श्वशूल ग्रध्रसी वायका सर्वरोग ईंनारायण तेलसूं सर्व दूरि हो
यछै. इति नारायण तैलम् अथ जोगराज गूगलकीविधि लिष्यते
सूंठि पीपलि चव्य पीपलामूल चित्रक सेकीहींग अजमोद सिरस्यूं
दोन्यूजीरा संभालु इंद्रजव पाठ वायविडंग गजपीपलि कुटकी अ
तीस भाडंगी वच मूर्वा ये सर्व औषधि मासा च्यारि च्यारिले अर

---

* ओरबी वातव्याधिऊपरउपावतोघणाहीछै. पणमुष्यमुष्यतोकह्याछै. परंतुमस्वेदविधि लिषीछैसूतपासकरकरसीजिनैं घणोफायदो होसी. महाअसाध्यवातव्याधिहोयजींवास्तैजमी नमैंखाडखोदजीमैं जूनीकांटाकिझूरलेकर खाडामैं जलायकर गरमकरणो. पाछै यथायोग्यखा डामैंबुठावणोतपासकर. देहकाबलाबलदेषकर तो वातारोगजाय.

त्रिफला सगली औषधि तीसूं दूणीले पाछे इनसब औषधांनें मि हीवांटि कपड छाणकरै अर यांसारी औषधांबराबरि सोध्योगू गलले पाछेगूगल अर ये सारी औषधि त्यांको येकजीवकरि मासा च्यारि च्यारि भरकी गोली करै अर घृतका वासणमें मेलि राषे पाछे रास्नादिकका काढासूं गोली १ ले सोलिषूंछूं रास्ना साठीकी जड सूंठि गिलवे अरंडकी जड यांका काढासूं योगराज गूगल लेतो सर्व वायका विकारजाय अरकिरमालापंचकका काढासूं लेतो कफका रोगजाय अरदारु हलदका काढासूं लेतो प्रमेहका रोग जाय अर ईनेंगोमूत्रसूं लेतो पांडुरोगजाय सहतसूं लेतो वाय रक्त कोरोग जाय अरपुनर्नवादिकका काढासूं लेतो सर्वउदरका रोग जाय अर गूगलको सेवावालो इतनीवस्त करैनहीं मैथुन करैनहीं षटाई उगेरैषायनहीं इतिजोगराजगूगलकीविधिसंपूर्णम् अथवा ल्हसणको रस टका १ भर काढितीमें बराबरिको तेलमिलाय अ नुमान माफिक सींधोलूण नाषि पीवेतो वायका सर्वरोग जाय अ थवा दूधकेसाथि अथवा घृतकेसाथि अथवा तेलकेसाथि अथवा मांसका सोरवाके साथि लसण दिन १४ षायतो सर्व प्रकारकी वाय जाय अर विषम ज्वरनें सूलनें गोलानें अग्निकी मंदतानें फि यानें सिरकारोगनें वीर्यका रोगनें यांनें योलसण यांका संजोगसूं दूरिकरैछे. इतिलसण कल्प अथवा रास्ना धमासो षरैटीकी जड अरंडकीजड देवदारु कचूर वच अरडूसो हरडैकीछालि चव्य ना गरमोथो साठीकीजड गिलवे वधायरो सोंफ गोषरू आसगंध अ तीस किरमालाकीगिरी सतावरी पीपलि सहजणाकि वकल धणों

न. टी. नारायणतेलऊपरलिष्यामुजवकरणो अरयोगराजगूगलबीकरणो. जीमेंगूगलती नजातकोशास्त्रमेंलिष्योछै येकतोकालागूगल. एकसोसनीरंगका. अरयेकपीलारंगकोहोयछै. जीमेंपीलारंगकोतोमनुष्यानें देणो. अरदूंजोतोहाथीघोडाकाकामछै.

दोन्यूं कट्याली येसर्व बराबरिले त्यांकोकाढोकरि तींकीसाथि यो योगराज गूगल लेतौ सर्व प्रकारका वायका विकारजाय

इति महारास्नादिक क्वाथः येसाराभावप्रकासमैं लिप्याछै. अ थवा थोहरीका पानाकोरस अरंडकापानाको रस बकायणका पा नाकोरस संभालूका पानाकोरस सहजणाका पानाकोरस कंडीरका पानाकोरस यांसारांसूंचौथाई तेलनाषि पकावै पाछै ईमैं सूंठिनाषै येसर्वबलिजाय तेलमात्र आयरहै तदि ईंतेलको मर्दनकरैतौ सर्व प्रकारको वायजाय इति अष्टांगतैलम् अथविसगर्भतैललि० धं तूराकीजड निर्गुंडी कडवीतूंबीकीजड अरंडकीजड आसगंध पवाड चित्रक सहजणाकीजड काकलहरी कलहारी जडीकीजड नींबकीछा लि बकायणकी छालि दसमूल सतावरी चिरपोटणी गोरीसर विदा रीकंद थोहरीका पान आकका पान सनाय दोन्यूकनीरकीछालि आंधीझाडो पीप येसारी औषधि तीनतीन ३ टका भरलेयांऔषद्यां बराबरि काला तिलांको तेलले अर इतनोही अरंडको तेलले अर ईमैं चौगुणो पाणीनाषै ये औषधि कूटियांमैंनाषि पाछैयांनैं मधुरी आंचसूं पकावै येसर्व जलसमेत वलिजाय तेलमात्र आय रहै तदि ईनैं उतारिले पाछै ईतेलमैं येऔषदि नाषै सोलिषूंछूं सूंठि मिरचि पीपलि आसगंध रास्ना कूठ नागरमोथो वच देवदारु इंद्रजव ज वषार पाचूंलूण. नीलोथूथो कायफल पाठ भाडंगी नौसादर गंधक पोहकरमूल सिलाजित हरतालये सारी औषदि अधेला अधेला भरिले सींगीमोहरो टका २ भरले पाछै यांसर्वेनैं मिहीवांटि ईंते लमैं नाषै पाछै ईंतेलको मर्दन करैतौ सर्व वायकारोग दूरिहोय अ रकूषिको अरभंवाराको अरपीठिको जांघाको अर संधिसंधिको

न. टी. रास्ना आदमै लिषीछै जीसूं ईनैं महा रास्नादि काढो कहैछै. सोया औषधिवाय कारोगपरबलवानछै. अर ईंकी साथ जोगराजगूगलषायतौ अतिगुणकारी होयछै. जैसैअग्नि पवनकी सहायतासौं बहोत समर्थ बहोतसमर्थ होयतैसै ईंकाढामैंयोगराजवातव्याधिमैंबलवानछै.

वायजाय पगांको सोजो दूरिहोय अरगृध्रसी रोगनें सिरका रोगनें फूटणीनें कर्णकीसूलनें गंडमालानें यां सर्वरोगानें यो विसगर्भ तेल दूरिकरैछे. इति विसगर्भतैलम् अथवा मजीठ देवदारु चीढ कट्याली वच तज पत्रज सोधीगंधक कचूर हरडेकीछालि बहेडाकी छालि आंवलो नागरमोथो येऔषधिटंक २ भरिले त्यानेंवांटि औटाय रस काढिले पाछे ईरसमैं सेर १ तेलनाषि पाछे ईतेलनैप कावै पाछे ओरसबलिजाय तेलमात्र आयरहै तदि ईमैं येऔषदि नाषै सो लिषूंछूं छड मूर्वा मैंढल चंपाकीजड तज पींपलामूल नेत्र वालो संचरलूण ये औषदि टका २ भरले अर लोहबान बेरजो आसगंध नख छड येटका टका भरले अर इलायची लवंग चंदन जाईकीकलि कंकोल अगर केसर येसारी पईसा पईसा भरिले कस्तूरी टंक २ ले ये सारि मिहीवांटि तेलमैं मधुरी आंचसूं पकावै तदि सर्व रस औषिधि समेत बलिजाय तेलमात्र आयरहै तदि ईमैं टंक २ कपूर वांटि नाषै पाछेईको मर्दन करैतो सर्व वायका रोग जाय सर्वप्रकारको प्रमेहजाय अर सोजानें गोलानें जुरनें यांरोगांनें यो तेल दूरिकरैछे. इति लक्ष्मीविलास महासुगंधि तैलम् यो चक्रदत्तमैं लिष्योछे. अथवा सूंठि टका ७ भर अर ईबराबरि इकपोत्यो लसण अर सूंठिनें मिहीवांटि बराबरिका घृतमैं भूनिले पाछे लसणनें वांटि वेमैं मिलाय पाछे ईमैचोषि सहत टका ७ भरनाषै पाछैयां सारांको एकजीवकरि टका येकेक भर रोजीना षायतौ पक्षा घातनें हनुस्तंभनें कटिभंगनें भुजाकीपीडनें सर्व वायका रोगांनैं योलसण दूरिकरैछे. १ अथ विजैभैरव तेलकी विधि लिष्यते मालकांगणी असाल्यूं कालोजीरो अजवायण मेथी तिल

न. टी. विसगर्भ तैल वायूपरमालीस करैतौ महा प्रबलछै. जींमैं धतूराको मूलप्रथमलिष्योछै. पछै औरभी औषधी बलवानछै. जैसे निर्गुंडीजीनैं नेगडकहैछै. कलहारीकी जडनैं लांगलीकहैछै. औरभी औषधी विषसहितपराक्रमीछै. श्रेष्ठछै परंतुषावाकै योग्यनहींछै.

येसर्व बराबरिले अरतेलकी घाणीमें यांको तेल काढैपाछे ईतेलको मर्दन करैतौ वायका सर्वरोगजाय १ इतिविजैभैरवतैलम् अथवा पारो गंधक हरताल मैणसील येसर्व बराबरिलेपाछे यांसारांनैंमि हीवांटि कांजीमैंदिन ३ तांई पाछेएक १ हाथमिहीं कपडोले तींकै यो चारांको लेपकरि वेकपडाकीवातिकरि वेंकैसूतलपेटै पाछेवे वाती ऊपरितिलांकोतेल चौगुणोनाषै अर वैवातीनैं नीचीरापिभिजोय देवेवातीकैनीचै लोहको पात्र मेलै वेलोहका पात्रमैं उनटपकांको तेलपडै सो जुदो लेपाछे ईविजयभैरवतेलको मर्दन करैतौ सर्व प्रकारकी वायका रोग जाय इतिविजयभैरवतैलम् अथ विजयभैरवरसलिष्यते हरडैकीछालटका ३ चित्रकटका ३ इलायची तज पत्रज नागरमोथो येचारयूं पईसापईसाभरले अरसंभालू टंक २ सूंठिटंक १० कालीमिरचि टंक १० पीपलि टंक १० पीपलामूल टंक १० सोध्योसींगीमोहरो टंक १० सारटंक १० वंसलोचन टंक १० पारो टंक १० सोधीगंधक टंक ५ प्रथमपारागंधककी कजली करै पाछे वेकजलीमैं वेसारीऔषदि मिलावै पाछेयां औषद्यांमैं पुराणो तिवरस्यो गुड टका ५० भरमिलाय ईको येकजीवकरि पाछे घृतसूं ईकीगोली बोरकीमीजी प्रमाण वणावै वांगोल्यांनैं घृतका वासणमैं राषै पाछैगोली १ तथा २ तथा ३ रोजीना महिना २ तांईषायतौ कफका अर पित्तका सर्वरोग जाय अर ईरसनैं महिना च्यार तांई सेवन करैतौ वायका सर्वरोगजाय अरवरष १ तांई ईरसको सेवन करैतौ सर्व प्रकारको रोगजाय अर वरस दोय तांई ईरसको सेवन करैतौ बुडापोदूरिहोय अरतरुणहोजाय अर वरस

---

* नारायणतेल योगराज गूगल रास्नादिकाढा. विसगर्भतैल. लक्ष्मीविलास महासुगंध तैल. बिजयभैरवतैल. आदिलेर जोकह्याछै सोवातव्याधिकैं वास्तै बलवानछै. परंतु औषधी विचार करलेणी. औषधी आली होयतो उजनसूं दूणी लेणी. सूषीहोयतो उजन बराबर लेणी. मधुरी आंचसूं पकावणी औषधीको गुणक्रियामैछै.

३ तांई ईरसको सेवन करैतौ आयुर्बल घणी होय सरीरनिरोगो रहे इतिविजैभैरवरसः

अथ वातारिरसलिप्यते पारो भाग १ सोधीगंधक भाग २ त्रिफला भाग ३ चित्रक भाग ४ सोध्योगूगल भाग ५ यांसारानें अरंडका तेलमें दिन १ षरलकरें पाछेईमें हिंगाष्टक चूर्ण नाषै औरुं येकदिन १ षरलकरै पाछैईकीगोलीटंक २ प्रमाण बांधै पाछे लौंग सूंठि अरंडकीजडका काढासूं रोजीना महिनाएकतांईले अर ब्रह्मचर्य रहेतौ सर्व प्रकारकीवायजाय अरसाधारण वायतौ ईका सातदिन सेवाहीसूं दूरिहोय १ इतिवातारिरसः अथ समीरपन्नग रसलि० सोधीगंधक सोध्योसींगीमुहरो सूंठि कालीमिरचि पीपलि पारो येसारा बराबरिले पाछे पारागंधककी कजलीकरै पाछे कज लीमें येऔषधिनाषि अर भांगराका रसकी पुट ७ दे पाछे ईकीर तीयेकेक प्रमाण गोलीबांधे गोली १ आदाका रससूं लेतौ सर्व प्र कारकी वायजाय १ इतिसमीरपन्नगरसः अथसमीर गजकेसरी र सलीष्यते अफीम चोषीनई कुचिला मिरचि काली येबराबरिले पा छेयांसारांनें मिहीवांटिरती १ प्रमाणकी गोली बांधे पानाका रसमें गोली १ रोजीना प्रभात षाय अर ऊपरसूं पान चावैतौ सर्व प्र कारको वायजाय १ अर सोजो विसूचिका अरुचि मिरगी येसारा जाय इतिसमीरगजकेसरीरसः येसर्व वैद्यरहस्यमैछे. अथवृद्धचिंता मणि रस लिप्यते पुरासानी अजवाणि जीरो अजमोद काकडासीं गी आसगंध येसर्व बराबरिले यांनें मिहीवांटि मासा १ ताता पा णीसूं लेतौ सर्व प्रकारकी वायजाय १ अर षास सास प्रलाप अ तिनिद्रा अरुचि येसाराजाय इति वृद्धचिंतामणिरसः

न. टी. विजैभैरवतेल वायुरोगपरसमर्थछै. परंतु विजैभैरवरसलिष्योछै सोबीमहाबलवा नछै. ईरसनैं यथोक्त क्रियासूं वणायकर ऊपरलिषीछै. जींरीतसौंलेवैतौ सर्व गुणकरैछै. प रंतु औषधमें फेरफार नवाजूनीको नहीं होणो चाहिजै ईकोगुणसद्यछै.

अथ अमृतनामगुटिका लिप्यते चित्रक टका ३ हरडैकी छालि टका ३ पारो टका १ सूंठि टका १ मिरचि टका १ पीपलि टका १ पीपलामूल टका १ नागरमोथो टका १ जायफल टका १ वधाय रो टका १ इलायची टंक ५ कूठ टंक ५ सोधीगंधक टंक ५ हिंगलू टंक ५ आकलकरो टंक ५ मालकांगणी टंक ५ तज टंक ५ अभ्रक टंक ५ सोध्योसींगीमहुरो टंक ५ गुड टका ८ प्रथम पारा गंधककी कजली करि पाछै येऔषदि मिहीवांटि कजलीमें गुडस मेत मिलावै पाछै ईंकै जलभांगराका रसकी पुट १ दे पाछैरती २ तथा ३ भरकी गोलीबांधैगोली १ रोजी नाषायतौ सर्व प्रकारकी वायनैं कोढानैं प्रमेहनैं मृगोनैं क्षयीनैं सासनैं सोजानैं आमवातनैं पांडुरोगनैं ववासीरनैं यांसारांरोगांनैं योरस दूरिकरैछै. इति अ मृतनामगुटिकालि० योजोगतरंगिणीमैंछै. अथ राक्षसरसलि० सोध्योपारो सोधीगंधक येदोन्यूं वरारवरिले यांदोन्यांकी कजलीकरै पाछै ईंकै दूधिकारसकी पुट १ दे पाछै तुलसीकारसकी पुट १ दे पाछै वावचीकारसकी पुट १ देपाछै मोरसिषाकारसकी पुट १ दे पाछै महलौठीका रसकी पुट १ दे पाछैवाराहीकंदकीरसकी पुट १ दे पाछै बहुफलीकारसकी पुट १ दे पाछैयांकारस सुकायपारा गंधककी कजलीनैं कुकडाका अंडामैं भरै अंडानैं धोयसोधिले पाछै वेअंडाकैकपड मिट्टी ७ दे अंडानैं सुकायले पाछै वे अंडानैं गजपूटमैंपकावै इसीतरै वारतीन करै पाछै ईनैंरती १ षायतौ सर्व प्रकारकी वाय जाय अरयो भूष घणीकरै इति रसराक्षस रसः यो रसार्णवमैंछै. अथवंगेस्वर रसलिष्यते पारो सोध्यो गंधक सोध्यो.

न. टी. वायुरोगांकी सुरवातमैं जो संष्यालिषीछै सोवा संष्याकी अनुसार औषधनिदान छै परंतु कोईकोईजागां उथलपाथलछै. जीमैं संदेहनहीं करणो. जोवायूका प्रवलरोगहै ज्यां कैतां ईतो निदानबीजादा अर औषधी बीघणीछै अरसाधारणछै ज्यांकासाधारणउपावभे

यांकी कजलीकरै यां दोन्यांसू आधीसोधीहरताल नाषैयांबराबरि रांगनाषै पाछै यांनै आकका दूधमैं दिन ७ षरल करै पाछै सुकाय कांचकी आंतसी सीसीकै कपडामिट्टीदेर वैमैंभरिदेपाछै सीसीनैं वालुका जंत्रमैं पहर १२ पकावै सीतल हुवां काढै पाछै रति आध पानमैं षायतौ सर्वप्रकारकी वायजाय अर उन्मादक्षीणता मंदाग्नि कोढ व्रण विसमज्वर येसाराजाय इतिवंगेस्वररसः यो जोगतरंगि णीमैंछै. सोधीहरताल सोध्योगंधक पारो हिंगलू सुहागो सूंठि मि रचि पीपलि येसर्व बराबरिले पारागंधककी कजलीकरि येमिलावै पाछै आदाका रसकी पुट १ दे अर मूंग प्रमाणगोली बांधै गोली १ प्रभात षायतौ सर्व प्रकारकी वाय अर सूतिकारोग मंदाग्नि सं ग्रहणी सीतज्वर येसाराजाय इति हरतालगुटिका योरस रत्नप्रदी पमैंछै. अथ लसण पाककी विधि लिष्यते लसण पईसा ५ भरयो लीजे तींकौमिही जीरोसो कतरीलीजे फेरि दूध पईसा १ भरयौ पाणीतीमैं अधेला भरयौ तीमैं चढाय आंचदीजे सोदूध लसणमैं सुसिजाय तदि लसणनैं षरलकीजे सोलुगदीवधिजाय तबघृत अ धेला भरिवैमैंनाषि आंचदीजे आंचसूं सुरषी पडिआवै तदि उतारि लीजै शिवाय घृतरहैसो काढिनाषिजे फेरिमिश्री पईसा दोय भ रकी चासणीकीजे तीमैं कस्तूरी रती आधी लौंगरती ४ जायफल मासा १ दालचिनीमासो १ सोनाकीतबक २ येसारीऔषदिपी सिचासणीमैं नाषणीपाछै ओलसणनाषिगोली ४ बांधणीगोली १ प्रभातषाय अर घणीवाय होयतौदूजीगोली आंथणाउषायतौ वा यको आराम होय पथ्यमैं रह्यांगोलीदिन २१ षाय जादावाय हो

न. टी. वायुरोगपरपथ्यलि० तैलमर्दन. अंगमसलै. स्नान. पवनबंध. भूमिसयन. पसेवले णो. घृत. तैल. मीठो. षाटो. षारो. छाछकोपाणी. गहूं. उडद. लालचावल. कुलथी. प टोल. सोईजणो. वैगण. लसण. दाडम. आंब. सिंघाडा. वहतोपाणी. पेमलीवोर. दाष. ना रंगी मिसरी. पानविडा. जुलाब. इ०

यतोदिन ४९ पायओर गोली शिवायकरणी होयतो इहींसावसूं औ षदि वा लसण तोलमाफिक वधायले ईलसण पाकनें पायांसर्ववा यका विकार दूरिहोय अरयो लसणपाक सरीरनें पुष्टकरेंछे. अर भूषनें वधावेंछे इतिलसणपाककीविधिसंपूर्णम् इतिवातव्याधिरोग चोरासीभेदांसमेतयांकीउत्पत्ति लक्षण जतनसंपूर्णम् इतिश्रीमन्म हाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्र श्रीसवाई प्रतापसिंहजीविरचि ते अमृतसागर नामग्रंथे वातव्याधिरोगकीचोरासींभेदांसमेतउत्प त्तिलक्षणजतननिरूपणं नामअष्टमस्तरंगःसमाप्तः ८

अथ उरुस्तंभरोगकी उत्पत्तिलक्षण जतनलिष्यते सीतल वस्त का षावासूं गरम वस्तका षावासूं पतलीवस्तका षावासूं भारीवस्त का षावासूं चीकणीवस्तका षावासूं दिनका सोवासूं रातिका जागि वासूं पुरषके घणीभूषसूं अथवा थोडा अजीर्णमें येषाछे कहींसो वस्तषाय तदिवे पुरसके वायहेसो कोपकूंप्राप्तिहोय अरपित्तनेंवि गाडे अर पुरसके दोन्यूंजंघानें स्तंभितकरिदेछे. अरवेंकी जंघानें सूनीकरिदेछे. जाणिजेये जांघ पैलाकीछे. हालवा चालवादेनहीं तीनें उरुस्तंभरोग कहिजे अथउरुस्तंभरोगको पूर्वरूपलिष्यते नींदघ णी आवैध्यानलागिजाय क्यों ज्वरको अंसहोय रोमांचहोय अरु चिहोय छर्दिहोय दोन्यूंजंघामें पीडहोय येलक्षणहोय तदिजाणिजे ऊरू स्तंभरोग होसीधन्वंतरजी ईरोगनें सुश्रुतमें महावात व्याधि रोगक ह्योछे तींकोलक्षण लिषूंछूं दोन्यूंपग सोजाय अर वामें पी डहोय वडाकष्टसूं दोन्यूं पगऊठे दोन्यूं जांघामें पीडाहोय अर दाह होय अर धरतीमें पग मेलै तदि पीडहोय सीत स्पर्शकूं जाणे

---

* लहसण औषधीछै. सूतीक्षणछै. उग्रगंधाछै. वातरोग ऊपरबलवानछै. हरकोईयुक्तिसूं ईनैषायतो पराक्रमीछै. पणदूजीऔषदीकायोगसूंयथायोगलेणीचाहिजे. घणालोकईनैगंध का कारणसूंछोडैछै. परंतु औषधीमैंउपयोगी होयछै. जीनैं जरूरलेणी. औषधीनिमित्तदोष

नहीं चाल्यौ जायनहीं जाणिजै जांघकाठकीछै. मानूं टूटीसीदीषै येलक्षणहोयजीनैं महावात व्याधिकहिजै. इहीनैं ऊरुस्तंभकहिजै अथ ऊरुस्तंभको असाध्य लक्षण लिष्यते ऊरुस्तंभवालारोगीकै दाहहोय पीडहोय अर सरीरकांपै ओ ऊरूस्तंभीमरिजाय १ अथ ऊरुस्तंभको जतनलि० त्रिफला पीपलामूल सूंठि कालीमिरचि पीपलि यांकोमिही चूर्णकरि टंक २ रोजीना सहतकैसाथि लेतौउ रुस्तंभित रोगजाय १ अथवा सूंठि पीपलि सिलाजित गूगल ये सारा मासा ५ गोमूत्रकैसाथि रोजीनापीवैतौ ऊरुस्तंभजाय १ अ थवा दसमूलका काढाकैसाथि गूगलषायतौ ऊरुस्तंभजाय १ ये भावप्रकासमैं लिष्याछै. अथवा भिलावा टंक १ गिलवै टंक १ सूंठि टंक १ देवदारु टंक १ हरडैकीछालि टंक १ साठीकीजड टंक १ दसमूल टंक २ यांकोकाढोलेतौ ऊरुस्तंभजाय १ अथवा गूगल टंक १ गोमूत्रकै साथिदिन १५ लेतौ ऊरुस्तंभजाय १ अ थवा सहतस्यूं बंबीकीमाटीईनैंमिहीवांटि यांको मर्दन करैतौ ऊरु स्तंभजाय १ अथवा वचकोचूर्ण टंक २ गरमपाणीसूं लेतौ ऊरु स्तंभजाय १ अथवा ऊरुस्तंभवालो इतनी वस्तकरै नहीं लोही कढावैनहीं वमन विरेचन करैनहीं बस्तिकर्म करैनहीं येसर्व वैद्यर हस्यमैंछै. अथवा षसको रस अथवा नींबूको रस गुडकैसाथि अ थवा सहतकैसाथिपीवैतौ उरुस्तंभजाय १ यो काशिनाथ पद्धती मैंछै. अथवा चव्य हरडैकीछालि चित्रक देवदारु कणगचका फूल सिरस्यूं यांको चूर्णकरि टंक २ सहतसू लेतौ उरुस्तंभजाय १ ये सर्वसंग्रहमैंछै. इति उरुस्तंभरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्

न. टी. वातरोगपरकुपथ्यलि० चिंता. जागरण. मलमूत्ररोकणा. उलटी. श्रम. उपवास. चिणा. वटाणा. तृणधान्य. चवलामूग..गुड. जामूंण. सुपारी. ठंडोपाणी. तीषो. कडवो. कषायलोयेरस. स्त्रीसंग. हाथीघोडापरवैठणो. हवामैंफिरणो. पलंगपर सोणो. दांतणकाष्ठसौं घसणो. इत्या०

अथ आम वात रोगकी उत्पत्तिलक्षण जतन लिष्यते मंदाग्निवाला पुरसकै कुपथ्यकरिकै चीकणो अन्नपाय अर पेद करैनहीं ऐसो जो पुरस तींकै वाय करिकै प्रेस्यो ऐसोजो कच्चा अन्नकोरस सो कफको स्थान जोहीयो तीनैं प्राप्तिहोय अर ओकच्चोहीरस वायकरिकै न सांमैंजाय प्राप्तिहोय अर वाय पित्त कफकरिकै घणो दूपित हुवो जो कच्चा अन्नकोरस सो सरीरकी नसांनैं पूरितकरै अग्निकामंदप णानैं प्रगट करैछै. अर हियानैं घणोभाखो करिदेछै अरयो कच्चा अन्नको रस आमको अर सर्वरोगकूं करैछै.

अथ ग्रंथांतरसूं भी इहरोगको लक्षणलि० मंदाग्नि वालोपुरस अजीर्णमैं भोजनकरै वेंकापेटमैं आमपैदा होयतदिवा आमअनेक रोगांनैं पैदाकरै मथवायनैं करै सर्वगात्रमैं पीडाकरै अरकांधामैं पीठिमैंकटिमैं गोडांमैं यांमैं घणीपीडहोय अर नसांनैं संकुचित करिदेछै. अर सरीरनैं स्तंभित करिदेछै. येलक्षण जीमैंहोय तीनैं आमवात रोग कहिजे अथ ग्रंथांतरसूं आमवातको लक्षणलि० अं गांमैं पीडाहोय भोजनमैं अरुचिहोय तिसघणीलागै आलस घणो आवै सरीर भाखो होजाय जुरहोय अन्नपचैनहीं अंगसूनोहोजाय येलक्षण होय तीनैं आमवात रोगकहिजे. अथ आमवात रोगको जतनलि० ईमैं लंघन कराजे अरसेककीजे ईमैंतीषोरसदीजे. अर भूपलागै इसी औषधिदीजे. ईनैं जुलाबदीजे ईनैं बस्तिकर्म कराजे ईकै वालुरेतसूं सेककीजे अर लूणसूं सेकिवो ईनैं जोगछै. डाह ईनैं जोग्यछै. बथवाकी अरबैंगणकी तरकारी ईनैं पुवाजे करेला ईनैं जोग्यछै. कोद्रू जव साठीचावल पुराणाचावल इतनीवस्तईनैं जो

न. टी. उरुस्तंभरोगवालानैपथ्यलि० ताजोभोजन. साधारणघृत. तेलमर्दन. निर्वातस्थान. भूमिसयन. अजीर्णमैभोजन. इ० कुपथ्यलि० रक्तश्राव. वमनलेनहीं. विरेचन. बस्तिकर्म. वायलवस्त. ठंडोपाणी. हवामैंफिरणो. चावल. मोठ. चीणा. घणोमेवो. घणोघृत. भारी भोजन इ०

ग्यछै. गऊकीछाछि ईनैं जोग्यछै. अरकुलत्थ मठर चिणायेईनैं जो ग्यछै. अथवा चित्रक कुटकी हरडैकीछालि वच देवदारु अतीस गिलवै यांको काढो टंक २ कोरोजीनागरमपाणीसूं लेतौ आमवात जाय. अथवा कचूर सूंठि हरडैकीछालि वच देवदारु अतीस गिलवै यांकोकाढो टंक २ को रोजीनालेतौ आमवात जाय अथवा अरंड कोतेल टंक ५ रोजीना पीवैतौ आमवात निश्चैजाय अथवा अरं डकोतेल हरडैकी वकलको चूर्ण ईंको सेवन करैतौ आमवात अर ग्रध्रसीनिश्चै जाय अथवा किरमालाका पानानैं कडवा तेलमैं भूंनि करि रोजीनाषाय चावलांकै साथितौ आमवात जाय अथवा अरं डका बीजानैं दूधमैंपकाय षीरकरि षायतौ आमवात अर ग्रध्रसी ये दोन्यूंजाय १ अथवा रास्ना अरंडकीजड अरडूसो धमासो कचूर दारुहलद परैटी नागरमोथो सूंठि अतीस हरडैकीछालि गोषरू सहीजणो चव्य दोन्यू कट्याली यांनैं बराबरिले अर रास्ना येक ओषदिसूं तिगुणीले पाछै यांनैं जौकूटकरि टंक ५ को काढो रो जीना करिदेतौ इतना रोगदूरिहोय पक्षाघात अर्दित कांपणी कु बडापणो संधिसंधिकीवायगोडांकीपीड ग्रध्रसी हनुग्रह. उरुस्तंभ वातरक्त बवासीर बीर्यको दोसस्त्रीकोवंध्यापणो इतना रोगांनैं यो दूरिकरैछै. इतिमहारास्नादिक्काथः अथवा अजमोद कालीमिरचि पीपलि वायविडंग देवदारु चित्रक सोंफ सींधोलूण पीपलामूल ये सारीओषदि टका टका भरिले सूंठि टका १० भरले वधायरो टका १० भरले हरडैकीछालि टका ५ भरले यां सारांनैं मिही वांटि यांसारांकी बराबरि गुडले पाछैयांकी टंक २ भरकी गोली बां धैगोली १ रोजीनागरम पाणीसूं लेतौ आम वातनैं आफरानैं सू

न. टी. आमवातपरपथ्यलि० पुराणो अन्न. लंघन. कुलथी. तक्र. लहसण. पटोल. सोही जणो. वैंगण. भिलावा. गरमजल. इ० कुपथ्यलि० दधि. दूध. गुड. उडद. अरुचि भोजन. जागरण. ठंडोजल. जडअन्न. घणोफिरणो. एकजगाहीबैठणो इत्यादि.

लनैं ग्रध्रसीनैं गोलानै प्रतितूनीनैं कटिकी फुटणीनैं पीठकी फुट णीनैं जांघाकी अर हाडांकी फुटणीनैं सोजानैं यांसारां रोगांनैं यो चूर्णदूरिकरैछै. इति अजमोदादिचूर्ण. अर जोगराज गूगल पाछै वातव्याधिमैंलिष्योछै तीसूंभी आमवातकोरोग दूरिहोयछै अथवा सूंठि टका ८ भर गऊको घृतसेर १ दूधसेर ४ सूंठिनैंमिहीवांटि घृतमैंमकरोय दूधमैं पकाय कसार करिलै पाछै पांडटका ५० भ रकी चासणीकरै ईचासणीमैं घृतसूं मकरोई सूंठि मावा समेंत नाषै पाछै चासणीमैं येऔषदिनाषै सूंठि टका १ भर नागकेसर टका १ येसारीऔषदि मिहीवांटि चासणीमैं नाषै पाछै ईंकीगोली टकाये केक भरकी बांधै पाछै गोलीयेकेक दोन्यूंवषतां षायतौ आमवा तनैं दूरिकरैसरीरनैं पुष्टकरै बलकरै पराक्रमकरै इतिसूंठिपाकः अ थवा मेथी टका ८ भर सूंठि टका ८ भर यांदोन्यांनैं मिहीवांटि ग ऊको दूधसेर ४ मैंपकावै यादोन्यांनैं घृतमैं मकरोय यांकोपरोमा वोकरै पाछैसेर ४ पक्की मिश्रीकी चासणीकरै पाछै चासणीमैं यो मावो नाषै अरये औषदि नाषै सोलिषूंछूं मिरचि टका १ भर चि त्रक टका १ भर पीपलि टका १ भर धणों टका १ भर सूंठि टका १ भर पीपलामूल टका १ भर अजवायण टका १ भर जीरो टका १ भर सौंफ टका १ भर जायफल टका १ भर कचूर टका १ भर तज टका १ भरपत्रजटका १ भर नागरमोथो टका १ भर यां सा रांनैं मिहीवांटि चासणीमैं नाषै पाछै सारांको येकजीवकरिटकाये केक भरकी गोलीकरै पाछै गोली १ रोजीना षायतौ आमवातनैं वातव्याधिनैं विसमज्वरनैं पांडुरोगनैं उन्मादनैं मृगीनैं प्रमेहनैं

* रास्नानाम औषधीजीनैंरायसेण कहैछै. याऔषधी वातव्याधि दूरिकरैछै. औरगर्भनै पोषण करैछै. रास्नामिश्री. यांकोसाधारणकाढो देणोचाहिजै. स्त्रीकैगर्भकादूषण. उदरकादू षण. दूरकरैछै. + वधायरोनाम वृद्धदारु तथा वरधारोगर्भवधावाको काष्ठ. सोचीकणी मदबूतलकडीछै. जीनैं गऊकादूधमैं घसकरदेवैतौ गर्भनैवधावैछै. वीर्यनैं वधावैछै. बलकरैछै.

अर वातरक्तनैं अमलपित्तनैं मथवायनैं नेत्रविकारनैं प्रदरनैं यासा रारोगांनैं योदूरि करैछे. वीर्यनैं वधावैछे इतिमेथीपाकः अथवा लसणको रस टंक २ गऊकोघृत टंक २ यांदोन्यांनैं मिलाय रोजीनापीवैतौ आमवात जाय अथवा सींधोलूण टंक ५ हरडैकीछालि टंक ५ पोहकरमूल टंक ५ महुवो टंक ५ पीपलि टंक ५ यांसारांनै मिहीवांटि पाछै अरंडको तेल सेर १ ले सौंफको अर्क सेर १ ले कांजीसेर २ लेदहींकोमठो सेर ४ ले यांसारी औषद्यां समेत एकठांकरि कढाहीमें चढावै नीचै मंद आंचदे सर्व रसबलिजाय तेल मात्र आयरहे तदि उतारिले पाछैईनैं टंक २ रोजीना षायतौ अथवा लगावैतौ आमवात जाय भूष वधावै इतिब्रह्मसिंधवाद्यं तैलम् अथवा पारो सोधीगंधक सूंठि कुटकी त्रिफला किरमालाकी गिरि येबराबरिले हरडैकी छालियेक औषधीसूं तिगुणीले प्रथम पारा गंधककी कजली करैपाछै ईमैं ये औषदि मिलावै पाछै ईनैं मासो १ सूंठि अर अरंडकीजड यां दोन्यांका काढासूं लेतौ आमवातको रोग ततकाल जाय १ इति आमवातारिरसः

आम वातवालो इतनीवस्त षाय नहीं. दहीं. दूध. गुड. मछलीकोमांस उडदका चूनकी वस्त मांस येषायनहीं येसारा भावप्रकासमैंछे. अथवा गूगल सेर १ कडवोतेल टका ८ भर हरडैकी छालिको चूर्ण सेर १ बहेडाकी छालिको चूर्ण सेर १ आंवलाको चूर्ण सेर १ पाणीसेर २४ तीमैं येऔषदिसर्व नाषै पाछै कडाहीमैं पाछै जलको चतुर्थांशआय रहैतदिउतारिलेपाछै अग्निऊपरि औरु चढाय ईनैंक्यूं गाढोकरिले पाछैईमैं ये औषदि औरनाषै सूंठि टंक २ मिरचि टंक २ पीपलि टंक २ त्रिफला टंक २ नागरमोथो टंक

न. टी. आमवातवालोरोगी सूंठिको सदासेवन करैतौ यारोगकी वृद्धि नहीं होय. अरपथ्य मरहैतौ यामहाव्याधिषूंदुष नहीपावै. अरईपुस्तकमैं सूंठिपाकलिष्योछै सोपाकविधि सौं करलेअरगोली टका १. भरकीलिषीछै सो वैद्य रोगनैं देषकर देणीयोग्यछ.

२ देवदारु टंक २ सोधीगंधक टंक २ सोध्याजमालगोटा १०० प्रथम पारागंधककी कजली करै पाछै कजलीमें येसारी वस्त मिलावै पाछै गूगलका रसमैं येमिलावै पाछै मासो १ ताता पाणीसूं ईनै लेतौ आमवातनैं ततकालदूरिकरै अरयो भूपघणीकरै धातनैं वधावै बूढासूं जवान करै अर वायका रोगांनैं भगंदरनैं सोजानैं सूलनै ववासीरनैं यांसारांरोगांनैं योदूरिकरै इतिव्याधिशार्दूलगूगल. अथवा हरडैकीछालि सींधोलूण निसोत इंद्रायणकीजड सूंठि इंद्रायणका फलकी मींगी. यांसारांनैं मिहीवांटि लोहका पात्रमें जलघालि तीमें येनाषै पाछै मधुरी आंचसूं पकाय छोटाबोर प्रमाण गोली बांधै गोली १ गरमपाणीसूंले उपरें घणाघृतसूं चावलषाय तौ आमवातको रोगजाय इति आमारि गुटिका येसाराजतन वैद्यरहस्यमैंछे. अथवा सूंठि कालीमिरचि पीपलि त्रिफला नागरमोथो वायविडंग चव्य चित्रक वच इलायची पीपलामूल झाउरूपकीजड देवदारु तुंबरु पौहकरमूल कूट दोन्यूंहलद सोंफ जीरो सूंठि पत्रज धमासो संचरलूण जवषार साजी गजपीपलि सींधोलूण येसारीऔषदि बराबरिले यांकी बराबरि सोध्योगूगल लेपाछै यांऔषद्यांनैं मिहीवांटि गूगलमें मिलावै पाछै ईनैं टंक २ घृतकैसाथि अथवा सहतकैसाथि रोजीनालेतौ आमवातनैं उदावर्तनैं पांडुरोगनैं क्रमिका रोगनैं विषमज्वरनैं उन्मादनैं आफरानैं कोढनैं सोजानैं यांरोगानैं योदूरिकरैछे धन्वंतरजी ईको नाव द्वात्रिंशतगूगलकाढ्योछे यो वीरसिंहावलोकनमैंछे, अथवा सोध्योगूगलसेर १ कडवोतेल टका ८ भरत्रिफलासेर ३ पाणीसेर २४ तीमैंत्रिफला

न. टी. व्याधिसार्दूल गूगललिष्योछैजीमैं गूगलसेर १ हरडैचूर्णसेर १ वहेडा तथा आंवला यांको चूर्णसेर २ जुमलैसेर ४ च्यारमैं चोईसंसेरजलघालिकरमधुरी आंचसौं सेर ६ कैउनमानरहैंजदांउतारछाणकरफेरवै जलनैं आंचऊपरगाढोकरपछै दूजी औषधी लिष्या मुजबघालणी.

नापि औटावै पाछै पाणीको चोथोहीसो सेर ६ आयरहै तदि ईंपाणीनैं छाणि औरु अग्निऊपरि चढाय काढोकरिले पाछै ईंत्रीफलाका जलमैं येऔषदिनाषै गूगल नाषै तेल नाषै अर सूंठिटंक २ मिरचिटंक २ पीपलि टंक २ त्रिफला टंक २ नागरमोथो टंक २ देवदारु टंक २ गिलवै टंक २ निसोत टंक २ दांत्युणी टंक २ वच टंक २ जमीकंद टंक २ पारो टंक २ सोधीगंधक टंक २ धतूराका बीज टंक ४ यांसारांनैंमिहीवांटि वेत्रिफलाका जलमैं मिलाय येक जीवकरि पाछै ईनैं मासो १ रोजीना ताता पाणीसूं लेतौ भूष अतिघणीलागे योधातनैं वधावैछै सरीर निरोगो करिदेछै अर आमवातनैं मथवायनैं कटिकीवायनैं भगंदरनैं गोडांकीवायनैं जांघांकी वायनैं पथरीनैं मूत्रकृच्छ्रनैं इतनारोगांनैं योगूगल दूरिकरैछै इति सिंहनादगूगल संपूर्णम् योजोगतरंगिणीमैंछै अथवा सोधीगंधक टंक ५ तामेसुर टंक ५ पारो टंक २ सारटंक २ यांसारांनैं येकठाकरि अरंडका पानाऊपरि ढालै पाछै ईनैं षरलमैं वांटि पीपलि पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठि यांको काढोकरि ईंकीपुट १ दे अर वहेडाका काढाका रसकीपुट २० दे अरगिलवैका रसकीपुट १० दे अरयां सारां औषद्यांकी बराबरी ईमैं सेक्यो सुहागो नाषै सुहागासूं आधोईमैं विडलूण नाषै विडलूण बराबरि ईमैं कालीमिरचि नाषै अर मिरचि बराबरि ईमैं डासस्यांनाषै अरसूंठि पीपलि त्रिफला लवंग येसारा येकेकमिरचि बराबरिनाषै पाछै यां सारांनैं मिहीवांटि यांको येकजीवकरै पाछै ईनैं मासो १ रोजीना जुदाजुदा अनुपानसूं षायतौ सर्व रोगमात्रनैं योरसदूरिकरैछै. भूषघणीवधावैछै. अर आमवातनैं दूरिकरैछै स्थूलपुरसनैं कृशकरैछै· अरकु

न. टी. व्याधिसार्दूलमुजबसिंहनादगूंगललिष्योछै. ज्यामैंकाथकरतीवषतवैद्यईमैं चोवीस सेरपाणी बांचकरविसमयनहींल्याणो. क्रारणघणांपाणीकायोगसूं औषध्यांको अंससर्व आयजावै. पछैफेरघट्टकरकै औषध्यांमिलाय्न प्रमाणमाफिकराषै.

सनैं पुष्टकरैछे ईकीच्यारि रतीकीमात्राछे सो कंठपर्यंत भोजन क
ह्योभी ततकालयो पचायदेछै. इतिआमवातेसुररसः योसारसंग्र
हमैछे. अरदहींमछली गुड दूध उडदके चूनये आमवातवालो न
षाय इतिआमवातरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्

अथपित्तव्याधिकी उत्पत्ति लक्षण जतनलि० कडवारसका षा
वासूं षटाईका षावासूं गरम वस्तका षावासूं दाह करिवा वाली व
स्तका षावासूं तीषीवस्तका षावासूं उपवासका करिवासूं तावडा
का सेवासूं घणामैथुनका करिवासूं घणाल्लूणका षावासूं क्रोधका
करिवासूं तिसकारोकिवासूं भूषका रोकिवासूं षेदका करिवासूं म
द्यादिकका पीवासूं इतनी वस्तांका करिवासूं गरमीको कोपहोयजा
यछे कदे भोजननैं जीर्ण होतांथकां सरदऋतुकै समैं ग्रीष्मरितुकै
विषैमध्यान्हके समै आधीरातकेसमैं पित्तहैसो कोपकूं प्राप्ति होय
छै सो पित्तका ४० रोगछै. त्यांका नाम अर लक्षण लिष्यते ज
वानीमैं सुपेदवाल होजाय १ लालनेत्रवहवोकरै २ मूत्रलालरहै
३ नेत्रपीलारहै ४ मूत्रपीलोरहै ५ मलपीलोरहै ६ नषपीलारहै ७
दांतपीलारहै ८ सरीरपीलोरहै ९ अंधेरी आवोकरै १० सर्वत्रपी
लोदीषवोकरै ११ नींदथोडीआवै १२ मूंढोसूकै १३ मुषमैंदुर्गंधि
आवै १४ मूंढोतीषोरहै १५ गरमसासनीसरै १६ मूंढोषाटोरहै
१७ डकारमें धुवोनीसरै १८ भौंलिआवै १९ इंद्रीसिथिलहोजाय
२० क्रोधघणोआवै २१ दाहरहै २२ अतिसार रहवोकरै २३ ते
जसुहावैनहीं २४ सीतलतासुहावै २५ कहींवस्तसूं धापैनहीं २६ सर्व
वस्तसूं अतिप्रीतिरहै २७ भोजनकर्‍यां दाहहोय २८ भूष घणी
लागै २९ नकसीरादिकहोय ३० मलपतलोरहै ३१ मलगरम ऊतरै

* आमवातरोगको निदानतोविशेषछै. परंतु याग्रंथमैंसंक्षेपकह्योछै. ईरोगवालानैं पथ्य
कोसाधनजरूरराषणो योग्यछै. कारणपथ्यसूंरोगकीवृद्धिथोडीहोयछै. औरगूगलक्षार. रसा
यण. आदिलेर उपायछै. परंतुपथ्यऔर औषधीकोयोगजीमैषारसंबंधीऔषधी श्रेष्ठहोयछै.

३२ मूत्रगरमऊतरै ३३ मूत्रकृछ्होय ३४ वीर्यकोअल्पपणोहोय ३५ सरीरगरमरहै ३६ पसेव घणोआवै ३७ पसेवमैं दुर्गंधिआवै ३८ हाथ पगांमैंव्याऊघणीहोय ३९ सरीरमैं फुटणी अरफोडा फुणसी घणांहोय ४० येचालीसरोग गरमीकाछै अथ येसाराही पित्तकारोग त्यांका सामान्यपणासूं जतनलि० नींबकीछालिनेंआदिलेरतीषा द्रव्यका षावासूं मिश्रीनैंआदिलेर मीठाद्रव्यका षावासूं चंदननें आदिलेरसीतलवस्तका लगावासूं सीतलपवनकासेवासूं सीतल छाया कारहवासूं रात्रिमैं रहवासूं षसकाबीजणाका पवनसूं चंद्रमाकीचांदणीसूं तहषानाकारहवासूं दूधका पीवासूं जुलाबकालेवासूं रुधिरका कढावासूं इतनीवस्तांकाकरिवासूं पित्तकारोग दूरिहोयछै इति पित्तव्याधिकी उत्पत्तिलक्षण जतनसंपूर्णम् अथकफकीव्याधिकी उत्पत्तिलक्षणजतनलि० भारी वस्तका षावासूं मीठीवस्तका षावासूं घणीचीकणीवस्तका षावासूं मंदाग्निसूं घणादहींका षावासूं दिनकासोवासूं सीतल वस्तका षावासूं घणांवैठारहवासूं इतनी वस्तांसूं कफको कोपहोयछै. परभातकैसमैं भोजन करिचूकै जींवषतमैं वसंतऋतुमैं कफको कोपहोयछै अथ कफका २० वीस रोगछै त्यांको लक्षण लिष्यते मूंढोमीठोरहवोकरै १ मुष कफसूं लीप्योरहै २ लालपडै ३ नींदघणीआवै ४ कंठमै घूंघरोबोलै ५ कडवा रस कीवांछारहै ६ गरमवस्तकीवांछारहै ७ बुद्धिकीजडतारहै ८ चेतथोडोरहै ९ आलसघणो आवै १० भूषलागैनहीं ११ मंदाग्निहोय १२ जंगलधणोजाय १३ मलसुपेदहोय १४ मूत्रघणों ऊतरै १५ मूत्रसुपेदहोय १६ वीर्यकीअधिकताघणीहोय १७ निश्चलपणोरहै १८ सरीरभारीहोय १९ सरीरठंडोरहै २० येकफका वीसरोगछै

न. टी. आमवातरोगपाछैपित्तरोगलिष्योछै ज्यांकीसंख्या ४० छै. अर अन्यग्रंथमैंधूमोद्गार सौंआदिलेकरचालीसपित्तरोगछै. सोनामांको आगोपीछोछै. अरयांमैं औरअंतरनहींछै. जीसौंकाईबीसंकानहींकरणी. अरयांकाजिस्यानामछै उस्यांहीलक्षणसमजलेणा.

अथकफकारोगांको सामान्य जतनलिप्यते. लूपीवस्तका पावासूं कपायली वस्तका पावासूं कडवीवस्तका पावासूं पेदका करिवासूं कुरलांका करावासूं वमनकाकरावासूं पसीनासूं लंघनका करिवासूं तिसकारोकिवासूं हुकाकापीवासूं कुस्तीका करिवासूं जलक्रीडासूं गरम वस्तका षावासूं चित्रककापावासूं नासकालेवासूं मारगकाचालिवासूं जागिवासूं मैथुनसूं इतनीवस्तकाकरिवासूं कफकावीसरोगदूरिहोयछै. इतिकफव्याधिकीउत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्णम् इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्रश्री सवाईप्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागर नामग्रंथे ऊरुस्तंभ आमवात पित्तव्याधिकफव्याधियारोगांका भेदसंयुक्तउत्पत्ति लक्षणजतननिरूपणंनाम नवमस्तरंगः समाप्तः ९

१०अथवातरक्तरोगकीउत्पत्ति लक्षणजतनलिष्यतेलूणका षावासूं उन्हीवस्तका षावासूं अजीर्णसूं गल्यामांसका पावासूं बडामूगांका षावासूं कुलत्थका षावासूं उडदका पावासूं घणीतरकारीकाषावासूं दारूका आसवका पीवासूं मांसका पावासूं माछलीका षावासूं दहींकाषावासूं कांजीकापीवासूं बीरुद्धवस्तका पावासूं अजीर्णमें भोजनकर्यांसूं क्रोधसूं दिनमें सोवासूं हाथीघोडा ऊंटका दोडावासूं इतनीवस्तांसूं सुकुमार पुरसकै सुषीपुरसांकै वातरक्तको आजार कोपकूं प्राप्त होयछै. अथ वातरक्तको स्वरूपलिष्यते सर्वसरीरमैं लोही दग्ध होजायछै. पाछैओरक्त दुष्ट हुवोथको दोन्यूंपगांमैं चुयवा लागि जायछै. अथ वातरक्तको पूर्वरूप लिष्यते पसेव घणाआवै. अथवा आवैनहीं सरीर कालोपडिजाय सरीरकास्पर्शकोग्यानहोयनही थोडीसी चोटमैंपीड घणीहोय संधिसंधि सिथिल

न. टी. पित्तव्याधीमैं मुख्यगरमीछै. जीसौं जोउपचार कह्याछै सोसर्व सीतल कियाछै. अर जो निगाह पहुंचासी तीमैं ज्यांका उपावछै जीमैं आप आपकीतर्क जुदीछै. केईकवपत मैं इसीहोयछै. पित्तको रोगछै. अरसीतल उपावसौं नहीं जायतौ बुद्धिपहुंचाय औषधदेणी.

होजाय आलस घणा आवै सरीरमैं फुणस्यांहोय आवै गोडामैं जांघमैं कटिमैं हाथपगांकी संधिमैं पीड होय सरीर भाखोरहै सूनो होजाय सरीरमैं दाह होय सरीरको रंग औरसो होजाय सरीरमैं लाल चाठा पडिजाय येलक्षणहोय तदिजाणिजे वातरक्त होसी. अथ वायका अधिकको वातरक्तको लक्षण लिष्यते. पगांमैं सूलादिक घणीहोय अरफुरकै अरसोजो होय अरलूषो होय अर कालाहोय अर चोवीसूं नाड्यांमैं अर आंगुलीकी संध्यांमैं संकोच होय सरीर जकडबंधहोय सरीर कांपै अर सरीर सूनोसोदीसै ये लक्षण ईमैं होयतौ वायका अधिकको वातरक्तजाणिजे अथरक्ताधिवातरक्तको लक्षण लिष्यते जीमैं सोजो होय पीड घणीहोय ललाईनें लीयां होय जीमैं चिमचिमीहोय षूजालिहोय येजीमैं लक्षण होय तीनैंरक्ताधिक वातरक्त कहिजे. अथ पित्ताधिकवातरक्तको लक्षणलिष्यते. जीमैं दाह होय, मोह होय, पसेव आवै, मूर्छाहोय, मद होय तिसहोय स्पर्श सह्यो जाय नहीं पीडाहोय सोजोहोय पकिजाय गरम घणो होय येलक्षण जीमैं होय तीनैं पित्ताधिक वातरक्त कहिजे अथ कफाधिक वातरक्तको लक्षण लिष्यते. सरीरमैं सल पडिजाय सरीरभाखो होजाय सरीर सोजाय सरीरचीकणो होजाय सरीर ठंडो होजाय सरीरमैं षुजालि आवै येलक्षण जीमैं होयतीनैं कफाधिक्य वातरक्त कहिजे अरये सर्वलक्षण जीमैं होय तीनैं सन्निपातको वातरक्त कहिजे. अथ वातरक्त हाथामैं होयछै. तींको लक्षणलिष्यते जैयांपगथलीमैं होयछै तैसेहथेलीऊपरि फुणस्यां उगैरै होयछै. पाछै सारासरीरमैं होय. अथ वातरक्तको अ

न. टी. वातरक्तरोग ८ प्रकारकोछै. सो ईग्रंथमैं नही लिष्याछै. सोअठैटीकामै लिषूंछूं. वाताधिक्य १ पित्ताधिक्य २ कफाधिक्य ३ रक्ताधिक्य ४ सन्निपात ५ वातपित्त ६ वातकफ ७ कफपित्त ८ जीमैं पांचको इलाजछै. जोद्वंद्वज दोष नहींछै. कारण पांचमैंये मील रह्याछै.

साध्य लक्षण लिख्यते. पगथलीसूंलेर गोडातांई फुणस्यांहोय अर फाटिवा लागिजाय अर चूयवा लागिजाय अरवलमांस अग्निको नास होजाय वोवातरक्त असाध्य जाणिजे अर ईनेंवरस येकको येक १ जाप्यजाणिजे

अथ वातरक्तकाउपद्रवलि० नींद आवैनहीं. रुचिजातीरहै सा सहोय आवै मांसगलिजाय मथवाय होय पीडाहोय तिसहोय जु रहोय मोहहोय सरीरकांपै हिचकीहोय अंगुल्यांगलिवालागिजाय व्योंचिहोयफुणस्यांपकिजाय पीडहोय भौंलि आवै अंगुल्यां वांकि होजाय फोडांमैंदाहहोय येईकाउपद्रवछै अथवातरक्तका जतनलि० वातरक्तवालाकै लोहीकढाजे जोकां करिकै अथवासींगीकरिकै अ थवा पाछणांकरिकै अथवा सिरकरिकै पणिलोही अतनूं अनुमान माफिककढाजे वाय वधैनहीं जैठातांई. अरवातरक्तवालानैं इतनो वस्त करिवो जोग्यनहीं. दिनमैं सोवो कोपकरिवोपेदकरिवो मैथुनक रवो कडवो षावो गरम वस्तको षावो भारी वस्तको षावो लूणको षा वो षटाईको षावो इतनीवस्तको करिवो योग्यनहीं. अरएतीनवस्त को करिवो जोग्यछै. पुराणाजव पुराणागोंहूं पुराणीषीली. इतनीव स्तषाजे अथवा लावोतीतरवटेर अरहड चणामूग मसूर कुलत्थधणों चीरपोटणी. वथवो लूणष्योचीलवो वथवाकोभेद बकरीको घृत ब करीकोदूध. इतनीवस्तको करिवो जोग्यछै. अथवा अरंडकीजड़ गिलवै यांको काढो जोग्यछै. अथवागूगल टंक १ गिलवै काका ढासूं लेतो जोग्यछै. १ अथवा अरंडको तेल टंक २ गिलवैका का

---

* वातरक्तको रोग महाप्रबलछै. वातव्याधिमैं रक्तदुष्ट होयकर सरीरको नासकरैछै. ई वास्तै विद्वानवैद्यकी सहायता लेकरनिदानपूर्वक उपाव अर चिकित्सा करणी योग्यछै. ओ रसन्निपातको वातरक्त त्रिदोष युक्त होयछै. सोमहाअसाध्यछै. यथायोग्य उपाव करणो शास्त्रकी आज्ञाछै.

ढामें नापिपीवैतौ वातरक्तजाय अथवा मंजिष्ठादिकका काढासूं वा
तरक्त जायसो लिषूंछूं मजीठ त्रिफला कुटकी वच दारुहलद गिलवै
नींबकी छालि ये सर्व बराबरिले यांनें जौकूट करिटंक २ को काढो
रोजीनालेतौ वातरक्तनें कोढनें पांवनें फोडानें यांरोगांनें योदूरि
करैछै. येकमंडलतांईले इतिलघुमंजिष्ठादिकक्काथ. अथवा गिलवै वा
वची पवाड नींबकीछालि हरडैकीछालि हलदआंवला अरडूसो स
तावरी. नेत्रवालो परैटी महलौठी महुवो गोषरू पटोल षसमजीठ
रक्तचंदन येसर्वबराबरिले पाछै यांनें जौकूट करिटंक २ कोकाढो
रोजीनालेतौ वातरक्तनें कोढनें पांवनें दादनें यांरोगांनें योकाढो दू
रिकरैछै. इति गडूच्यादिक्काथ. येसर्व भावप्रकासमैंछै अथवा सोध्यो
भैंसागूगलसेर १ पाणीसेर ६४ हरडैकीछालिसेर १ वहेडाकीछा
लिसेर १ आंवला सेर १ गिलवै टंक ३२ भरयांसारांनें कूटि
चौसठसेर पाणीमैं यांसारी औषद्यांनें औटावै पाछै यां औषद्यांसं
मेतपाणीआधोआयरहे तदिईनेंउतारि छाणिले पाछै औरकढाईमें
घालिवेमें औटायगाढोकरि पाछैईमैयेऔषदिनाषै पारोटंक२ गंधक
टंक २ वायविडंग टंक १ निसोत टंक २ गिलवै टंक २ दांत्युणी टंक २
प्रथम पारागंधककी कजलीकरै पाछैकजलीमैं येऔषदि मिहीवांटि
मिलाय येसारी वैगूगलमैं नाषि यांसारांको येकजीवकरि पाछै मासा
४ अथवा मासा ८ रोजीना ईमें मंजीष्ठादिकका काढासूं लेतौ वा
तरक्तनें फोडा फुणसीनें व्रणनें सासनें गोलानें कोढनें सोजानें उ
दररोगनें पांडुरोगनें प्रमेहनें मंदाग्निनें यांसारां रोगांनें योदूरिक
रैछै. ईको पावावालो इतनी इतनीवस्तकरैनहीं. षेदकरैनहीं तावडै
रहैनहीं अग्निकनैंजाय नहीं षटाईषायनहीं मांसदहीं षायनहीं मै

न. टी. वातरक्तकाजो असाध्य लक्षण. ईकाउपद्रव. ईकाजो आवांतरभेद पूरानिगाहमैंरा षणा. ग्रंथकर्ता कठातांई कहै. जोरोगछै. जीमैं अल्पतादीषै अरमोठो भयकारी होयजीनैंअ ल्पनहीं समझो. उपद्रव मोठोछै. अनिद्रा: स्वास. कास. अरुचि. मांसगलै. मस्तक सूल इ०.

थुनकरैनहीं. मार्गचालैनहीं. तावडैरहैनहीं. लूणषाय नहीं तेलपाय नहीं इति किसोरगूगल संपूर्णम् अथवा भिलावा भाख्या जलमें डू बिजाय ऐसासेर २ लेत्यांकामूंढा सारसूं घसिसेर १६ पाणीघालि औटावै ईऔटतां पाणीमें गिलवे सेर २ कूटिनापे तदि ईंपाणीको चतुर्थांशरहै तदिईमें येऔषदिकूटिनाषे सोलिपूंछ्छ गिलवे टंक २ वावची टंक २ नींबकीछालि टंक २ हरडैकीछालि टंक २ आंवला टंक २ हलद टंक २ नागरमोथो टंक २ तज टंक २ इलायचो टंक ५ गोषरू टंक ५ कचूर टंक ५ रक्तचंदन टंक ५ यांनै मिहीवांटि ईभि लावा समेत एकजीवकरि अमृतवानमें रापै पाछै ईनै टंक ५ जलसूं रोजीना लेतौ वातरक्तनें कोढनें ववासीरनें विसर्पनें पांवनें वायका सर्वविकारनैं रुधिरका सर्वविकारनैं इतना रोगांनैं यो दूरि करैछै. ईंका षावावालो इतनीवस्तकरैनहीं षेदकरैनहीं तावडैरहैनहीं अ ग्निकनें रहैनहीं षटाई षायनहीं मांसषायनहीं तेल लगावैनहीं मा र्गचालै नहीं इति अमृतभल्लातकावलेह संपूर्णम् अथवा अलसीनें दूधमें पीसि अथवा अरंडकी अरंडोलीनें दूधमें वांटि हाथ पगांकै लेप करैतो वातरक्त जाय १ अथवा गोरीसर राल मोम मजीठ येबराबरिले त्यांनें तेलमें पकावै पाछै ईंतेलको मर्दनकरैतो वातरक्त जाय १ अथवा अरंडकीजड गिलवे अरडूसो यांको काढोकरि तीमें गूगल मासा ४ अरंडको तेल टंक २ नापि पीवैतो वातरक्तनें मूर्छानें मथवायनें सासनें फोडानें यांनें दूरिकरैछै. ये वैद्य रहस्यमें छै. अथवा हरतालकापत्र चोषाले त्यांनैसाठीका रसमैंदिन २ ष रलकरै पाछै वेनै गाढोकरि वेकी ठीकडीकरि सुकायले पाछै सटी कासारकैवीचिवे हरतालकीटिकडीमेल्हि ठीकरामें पाछै औठिवरो

न. टी. जैसे वातव्याधिमैं गूगलकी साथ रास्नादिक काथछै. वैसैहीया वातरक्तका रोग ऊपरगूगलकी साथ मजीठादिकाथछै. जीमैं सर्व औषधीछै. जींकी तपास करविधियुक्त दे. अररोगीकै रक्तमोक्षकरायकर गूगलकी साथ योकाथदेवै तो वातरक्त निश्चै जाय.

चूल्हाऊपरिचढावै पाछैमधुरीआंचदे दिनपांच ५ पांचतांईरातदिन पाछे वेनैं स्वांगसीतल हुवांकाढै वाहरताल सुपेदनीकलै तौलऊ तरै पाछे ईनैंरती १ गडूच्यादिकका काढाकीसाथि षायतौ वातर क्तनैं अठरा प्रकारका कोढनैं फिरंगवायनैं विसर्प रोगनैं पांवनैं फोडांनैं सर्वरोगांनै योदूरिकरैछै. ईको पावावालो लूण षटाई कड वोरस तावडो अग्निकनैं वैठिवो येछोडै अर सींधोलूण मीठो रस पाय इतिहरतालकेस्वररसः याहरतालकी क्रियाछै सोभावप्रकास मेंलिष्याछै. इतिवातरक्तकीउत्पत्तिलक्षण जतन संपूर्णम् अथ सूल रोगकीउत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते सूलरोग आठ प्रकारकोछै वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ आंवका रसको ५ वात कफको ६ कफपित्तको ७ वातपित्तको ८

अथ वायका सूलकी उत्पत्ति लक्षण लिष्यते पेदसूं घोडादिका का दौडवासूं अतिमैथुनसूं घणाजागिवासूं घणा जलादिककापी वासूं चोटकालागिवासूं कषायली वस्तका पावासूं कडवीवस्तका पावासूं भेयाअन्नकापावासूं विरुद्धवस्तका पावासूं सूकामांसका षा वासूं मलमूत्रकारोकिवासूं मैथुनका करिवासूं अधोवायका रोकिवा सूं सोचका करिवासूं लंघनका करिवासूं घणा हसिवासूं इतनी व स्तांसूं वायवधै तदि इतनाठिकाणांमैं सूलका रोगनैं प्रगटकरै हि यामैं दोन्यूं पसवाडामैं रोमांमैं याठिकाणांमैं सूल चलावै संध्यास में बादलामैं सीतकालमैं यामैं घणी चालै वारंवार थंबिजाय वारं वार चालिवा लागिजाय मलमूत्ररूकिजाय सूलचालै. पीड घणी होय यावायका सूलकी उत्पत्ति लक्षणछै. १ अथ पित्तका सूलकी

---

१. टी. वातरक्तनैं पथ्यलि० चीणा. मूग. गहूं. लालचावल. छालीको गायकोदूध. तूर. माष्न. नवोघी. मुरगाको मांस. कडवो. षाटो. भारचौअन्न. कुपथ्यलि० अग्निकनैं वैठणो. दिन निद्रा. पसेवलेणा. श्रम. स्त्रीसंग. उडद. कुलथी. वालोल. मोठा. वटाणा. दधि, षांठा मिर्चां. षांड. इ०

उत्पत्तिलक्षणलिष्यते. पारीवस्तका पावासूं प्रतकालीनें आदिलेर घणीतीषीवस्तका पावासूं गरमवस्तका पावासूं तिलांका पावासूं क्रोधका करिवासूं पलकापावासूं कुलत्थकापावासूं पटाईकापावासूं कांजीकापीवासूं दारूका आसवकापीवासूं षेदकाकरिवासूं तावडा कासेवासूं घणामैथुनकाकरिवासूं इतनीवस्तांसूं पित्तको कोपहोय अरसूलनें प्रगट करै तदितिस घणीलगावै दाह घणोकरै नाभिकै पसेव आवै मूर्छाहोय भ्रमहोय क्रोधहोय मध्यान्हमैं आधीरातिमैं ग्रीष्मरितुमैं सरदरितुमैं इतनीजायगां घणीसूलचालै तदि जाणिजे पित्तकी सूलछै. अथ कफकीसूलकोलक्षणलि० अनूपदेसकामांस का षावासूं माछलीकाषावासूं पैडाउगैरै दूधकाषावासूं सांठाका चूषिवासूं मैदाका षावासूं घणामधुररसकाषावासूं इतनी वस्तांसूं कफ कोपकौं प्राप्तिहोयछै. सूलनैंपैदा करैछै. हीयोदूषै. वमनसी आवै. षासिहोय पीडहोय भोजनमैं अरुचिहोय पेटमैंपीडचालै. मलऊतरै नहीं मथवाय होय आवै सरीरभाख्योहोजाय भोजनकर्यांपीडघणी होय प्रभातसमैं वसंतऋतुमैं घणीहोयतदिजाणिजे कफकीसूलछै. अथसन्निपातकीसूलको लक्षणलि० येकह्या सोपाछिलालक्षणसो साराहीमिलैतीनैंसन्निपातकी सूलकहिजे. अथ आंवकीसूलकोल क्षणलि० आफरोहोय पेटमैंगुडगुडशब्द होय हीयोपकड्यो जाय वमन आवै सरीरभाख्यो होजाय लालपडै अरकफकीसूलकासारा लक्षणमिलैतीनैं आंवकीसूलकहिजे. अथ वायकफकीसूलको लक्ष णलिष्यते पेडुमैं हियामैं कंठमैं दोन्यूंपसवाडमैं सूलचालैजीनैं वायकफकी सूलकहिजे ६ अथ कफपित्तकीसूलको लक्षण लिष्यते

---

* सूलरोग जीनैंलौकीकमैं चसकतथाचभको जुदाजुदाआंगामैंउठैछै जीमैंघणां कारणछै. परंतु ईमैं एक पार्श्वशूलछै. सोमहाकठिणछै. जीमैंसासकी साथदूषै. औरथूकमैंलोही आवै सोरोगरुधिरकढायां आराम होयछै. सीरछुडायां तथाजोकां. तथासींगडी. तथाकुलडा. तथाडांमभीदेवैछै. जलदी उपाव लागैतौं जीवैछै.

कूपिमें हियामें नाभिमेंसूलचाले तीनें वातपित्तकीसूल कहिजे ८ अथ सूलरोगका उपद्रवलिष्यते पीड घणीचाले. जीमें तिसहोय मूर्छा होय आफरोहोय सरीर भार्यो होय अरुचि होय षासहोय सासहोय येसूलकाउपद्रवछे. अथ सूलरोगको भेदपरिणाम सूलछे तींको लक्षण लिष्यते जेता भेदसूलकाछे तेताही परिणामसूलकाछे. वाहीवेंकी उत्पत्तिछे. ईमें इतनो विशेपछे. कुपितवायहैसो कफ पित्तसूं मिलिसूलनें करैछे अथ ईंकोलक्षणलि० भोजनपच्यांपीछेसूल उपजे जीनेंपरिणाम सूलकहिजे १ अथ अन्नद्रवसूलको लक्षण लि० भोजन कर्‍योपचजाय अथवा नहींपचै सदाहीसूल रहै पथ्य चालतांभी कहींतरै सूलकी सांति होयनहींतीनें अन्नद्रवसूल कहिजे अथ जरत्पित्तकासूलको लक्षणलि० जो भोजन पचतां सूल होय तीनें जरत्पित्तसूल कहिजे.

अथ सूलरोगका जतनलिष्यते सूलरोगवालानें वमन कराजे और लंघन कराजे औषद्यांसूं पसेव लिवाजे पाचनदीजे बस्तिकर्मकराजे साजीषारनें आदिलेर त्यांका चूर्णदीजे कव्यादिकदीजे गरमगरम कुलत्थको सेककीजे रेतनें गरमकरिजीमें पाणीनाषिवेनें गरमागरमलेकर कपडामें घालि तींको सेक कराजे अथवा काकडाकीमींगी कुलत्थ तिल जव अरंडकीजड अलसी साठीकीजड लहसणका बीज यांनें कांजीमेंसिजाय जेठै सूलचालै तैठेही सेक करा जेतो सूलजाय अथवा तिलांनें वांटि कांजीमेंसिजाय वेमें क्यूंतेल नापि वेंको सेक कराजे कपडाकीपोटलीसूं तो सूल ततकाल जाय १ अथवा मेंढलनें कांजीमें वांटि नाभिकै लेपकरैतो सूलजाय १ अथवा सूंठि अरंडकीजड यांकोकाढोदेतो सूल जाय १ अथवा

न. टी. सूलकालक्षणसर्वकह्याछै. परंतु निदानयुक्तसंक्षेपसूंछै. ग्रंथका घणाविस्तारका भयसूं अन्यग्रंथांकीसहायतासौं जाणसीतो बहोत सुपहोसी. अठैतौ प्रयोजनपूर्ति करवानैं तौ घणाहीछै.

सूंठिअर अरंडका काढामैंहींग संचर लूण नापि पीवैतौ सूलजाय १ १ अथवा गुडनैं औटायतीमैं जवपार नापि पीवैतौ सूल जाय१ अथवा कांसीका रूपाका तांबाका पात्रमैं जलघालि जठै सूल चालै तींऊपरिवेपात्रनैंफेरै तौसूलजाय १ अथवा पित्तकी सूलहोयतौ जुलाबसूं दूरिहोय १ अथवा गुडहरडैकीछालि तीनैंवांटितीमैं घृत मिलाय षायतौपित्तकीसूलजाय १ अथकफकीसूलकोजतनलि० आंवलाकोचूर्णसहतमैं चाटैतौ कफकीसूलजाय १ अथवा नींबकी छालि तींकोकाढोकरितीमैंपीवाकी दारूनाषिपीवैतौ कफकी सूल जाय १ अथवा जवषार सींधोलूण संचरलूण सांभरोलूण पीपलि पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठिसेकीहींगयांकोचूर्णकरिईचूरणनैं टंक २ गरम पाणीसूं लेतौ कफकीसूलजाय येजतन कफकी सूलकाछै. सोयेहीआमसूलका जाणिलीज्यौ अथवा राई त्रिफलाकोचूर्ण स हत घृतसूं लेतौ सर्व सूलमात्र दूरिहोय १ अथवा दारुहलद चोष कूठ सौंफ हींग सींधोलूण यांसारांनैं कांजीमैंपीसि गरमकरि सुहा वतौ सुहावतौ लेपकरैतौ सूलदूरिहोय १ अथवा बीलकीजड अरं डकीजड चित्रक सूंठि सेकीहींग सींधोलूण यांनैं बराबरिले यांनैंमि हीवांटि त्यांको चूरणकरि टंक २ गरम पाणीसूं लेतौ सूलजाय अ थवा पक्कापेठानैं लेतींका टूकडाकरितावडैसुकावै पाछै वाटूकडानैं पीतलका कचोलामैंबालिवांका कोईला करै जुगतिसूंराषकरि बेनहीं चूल्हापर चढायनीचैअग्निबाल कोयला करै पाछै यां कोइलानैं वां टिईमैं सूंठिको चूरण मासा २ मिलाय ईनैं जलसूं पीवैतौ असा ध्यभी सूलको रोगजाय १ इति कूष्मांडक्षार. ये सर्व जतन भाव प्रकासमैंछै. अथवा अजवायणी सींधोलूण सेकीहींग जवषार संच

न. टी. जोसूल आठप्रकारको कह्योछै. वात १. पित्त २. कफ ३ वातपित्त ४ पित्तकफ ५ कफवात ६ आम ७ सन्निपातसूल ८ जोयेअष्टसूलछै. यांकालक्षण सूलरोगका जुदाजुदालिष्या छै जीयांनहीं. ईमैं दूजो सूलरोगछै. सोपरिणामशूलछै.

रलूण. हरडैकीछालि येबराबरिले यांकोमिही चूर्णकरि टंक २ गरम पाणीसूं लेतौ वायको सूल जाय १ अथवा संचरलूण टंक १ जीरोटंक ३ कालीमिरचि टंक ४ यांनैमिहीवांटि ईकै अमलवेदकारसकी पुट ७ दे पाछैविजोराका रसकी पुट ७देपाछै ईकीगोली मासा ४ भरकीवांधे पाछैगोली १ रोजीना गरम पाणीसूं लेतौ वायकी सूलजाय १ अथवा सूंठि हरडैकीछालि पीपलि निसोत संचरलूण येबराबरिले यांनैमिहीवांटि टंक १ गरम पाणीसूं लेतौ सूलनैं आफरानैं ववासीरनैं आमवातनैं योदूरिकरैछै. इति पंचसमचूरण. अथवा सूंठिका काढामैं अरंडको तेलनाषि अरसेकीहींग संचरलूण मिलाय पीवैतौ ततकाल सूलजाय १ अथवा संषको चूर्ण संचरलूण सेकीहींग सूंठि कालीमिरचि पीपलि येबराबरिले त्यांको चूर्णकरि टंक २ गरम पाणीसूं लेतौ ततकाल सूलजाय १ अथवा सोध्योसींगीमोहरो चित्रक सूंठि कालीमिरचि पीपलि जीरो सेकीहींग येबराबरिले यांनै निपट मिहीवाटि ईकै भांगराका रसकीपुट ३ देपाछै ईकीगोली चणा प्रमाणबांधैगोली १ गरम पाणी सूंलेतौ सूल ततकाल जाय १ अथवा संषनैं भस्मकरिले अरकणगचकी जड सेकीहींग सूंठि कालीमिरचि पीपलिसींधोलूण येसर्व बराबरिले यांनैमिहीवांटि टंक २ गरम पाणी सूंलेतौ सूलको रोग जाय १ इतिसूलनासनचूर्णम्. अथवा चित्रक सेकीहींग पाठ सूंठि कालीमिरचि पीपलि पांचोलूण जीरो धणौ छड अजवायण पीपलामूल येबराबरिले यांनैमिहीवाटि यांकै जंभीरीका रसकी पुट ५ देपाछै ईकीगोलीबांधै पाछैगोली १ गरम पाणीसूं लेतौ सूलनैं हि

न. टी. जीनैं परिणामशूल कहैछै. सोपरिणाम भोजन पचन होतां होयछै जीनैं कहैछै सोलि० वातपरिणामशूल १ पित्तपरिणाम २ कफपरिणाम ३ वातपित्तपरिणाम ४ पित्तकफपरिणाम ५ कफवातपरिणाम ६ आमपरिणाम ७ सन्निपातपरिणाम शूल. ८

याकी सूलनैं पसवाडाकी सूलनैं आंवकी सूलनैं अरुचिनैं असी प्रकारकी वायनैं यागोली ततकाल दूरिकरैछै.

इतिचित्रकादिगुटिका अथवा हरडैकी छालि सूंठि कालीमिरचि पीपलि कुचीलासोधीगंधक सेकीहींग सींधोल्लूण येसर्वं बराबरिले पाछैयांनै मिहीवांटि चणा प्रमाण गोली बांधे गोली १ रोजीनाप्र भातसमैं गरम पाणीसूं लेतौ सूलनैं संग्रहणीनैं अतिसारनैं अजी र्णनैं मंदाग्निनैं यागोलीदूरिकरैछै इति सूलनाशिनीगोली अथवा कूठटंक २ सूंठि टंक २ संचरल्लूण टंक १ सेकीहींग टंक १ यांनै मिही वांटि सहजणाकी जडका रससूं अथवा लसणकारससूं गोलीबांधे गोली १ रोजीनागरपाणीसूं लेतौ सूलततकालजाय इतिकुचिलादि गुटिका अथवा त्रिफला सार महलौठी महुवो यांनैं बराबरिले यांनैं मिहीपीसि टंक १ सहत घृतमैं चाटैतौ त्रिदोषकीसूलजाय १ अ थवा सोध्योपारो टंक १० सोध्योसींगीमोहरो टंक १० कालीमिरचि टंक २० पीपलि टंक २० सूंठि टंक २० सेकीहींग टंक २० पांचूल्लूण टंक ५ भरआमलीकोषार टंक ८ भरजंभीरीकोरस टंक ८ भरअ रसंपनैवार ७ दग्धकरितींकोचूर्णटका ८ भरले पाछैयांसारांनैं ये कठांकरि नींबूकारसमैं दिन ५ षरलकरै पाछै ईनै टंक १ गरम पा णीसूं लेतौ ततकालसूलजाय इतिसूलदावानलरस अथवा हीराक सीसेर ऽ॥ लाहोरीफिटकडीसेर १ सींधोल्लूणसेर १ कलमीसोरा सेर १ यांनैंवांटिढीकलीयंत्रसूं यांनैं चुवाययांकोरसकाढिले चीणी कावासणमैं पाछैमासो १ रोजीना जीभकै घृतलगाय अरईनैं दांतां कै लगावैनहीं इसीतरैलेतौ सूलरोगनैं गोलाकारोगनैं फीयानैं उद .

---

* सूलरोगऊपर लेपनानाप्रकारका कह्याछै. परंतुलौकीकप्रसिद्धलेपयाटीपमैंलिषूंछूं राई. सकर. दोऊसम भागलेकर जलकीसाथबारीकपीसकरलेपकरै जाडोजाडो ऊपरजूनी रुईचेपैतौ सूलआछ्यौहोय. तथासामरासींगकोलेप ;अथवा हींगकीभातडीबांधै तौसूलमिटै. अथवा सरेसकीपट्टीसूंवी आरामहोयछै.

रकारोगनैं ववासीरनैं अजीर्णनैं वायकारोगनैं यांसारांनैं योदूरि करैछे. इतिसंषद्राव अथवा सोधीगंधकतोसूं आधोसोध्योपारो यां दोन्यांकीवराबरि सोध्याकंटकवेधीतांबाकापत्र यांतीन्यांनैं षरलमैं घालि मर्दनकर दिन १ पाछैयांको गोलोकरि हांडीमैं लूण भरितीं कैबीचि योगोलो मेलैपाछै आंच दिन ३ कीदेर ईंगोलानैं पकावै पाछै ईनैं स्वांगसीतलहुवां काढै पाछै ईनैरती १ नागरवेलीका पानसूं पुवा वैतौ ततकालसूलमात्रदूरिहोय १ इतिसूलरोगेकेसरीरसः अथवा जीरो सूंठि कालीमिरचि सेकीहींग वच येबराबरिले यांनै मिहीपीसिटंक २ गरमपाणीसूं लेतौसूलजाय १ अथवा त्रिफला टका १ सोधीगंधक टंक ५ सारटंक २ यांनैमिहीवांटि यांको येक जीवकरिपाछैसहत टंक २ घृत टंक २ यांदोन्यांकीसाथियांनै लेतौ सूलमात्रनैं वायकाविकारनैं फोडांनैंमहिना ३ सेवनकर्‌यां यांनैदूरिकरैछे. १ इतिगंधकरसायनं अथवा गुडटका १ आंवला टका १ मांडूर टका ३ भर यांसारानैं मिहीवांटि टंक २ सहत घृतकै साथि ईनै षायतौसूलनैं अन्नद्रवनैं जरत्पित्तनैं अम्लपित्तनैं परिणाम सूलनैं योदूरिकरैछे. इतिगुडाद्यमंडूरं. अथवावायविडंग चित्रक चव्य त्रिफला सूंठि कालीमिरचि पीपैलि येसारा बराबरिले अरयासारांकीबराबरिमंडूर लेयांबराबरिगुडले पाछैयांसारांसूं दसगुणो गोमूत्रले पाछैयानैं कडाहीमैंघालिमधुरीआंचसूंपकावै पाछैयांको एकपींडोकरिचीकणा वासणमैंमेलिराषै पाछै ईनैं टंक २ भोजनकै पहलीलेतौसूलनैं पंक्तिसूलनैं कामलारोगनैं पांडुरोगनैं सोजानैं मदाग्निनैं ववासीरनैं संग्रहणीनैंक्रिमिरोगनैं गोलानैं उदरकारोगनैं अम्लपित्तनैं यांसारांनैं योदूरिकरैछे. १ इतितारामंडूरः अथवा ह

न. टी. शूलदावानलरसमैं सोध्योसींगीमोहरोलिष्योछै सोशुद्धवचनागछै जींबचनागनैं गावादूधमैं डोलकायंत्रसौंपचावै. दोय तोलावछनाग. दोयसेरदूध. पात्रमैंघालचूलहैचढायपोटली कपडाकीपात्रमैंअधबीचमैंराषै मंदमंदपचावै तौशुद्धहोय.

रडैकीछालि सुहागो सूंठि सेकीहींग कालीमिरचि चित्रक सोधींगं धक सींधोलूण येसाराबराबरिले यांसारांकी बराबरि कुचिला लेपा छे यांसारांनैं मिहीवांटि यांको येकजीवकरि मासो १ जलसूं लेतों सूलनैं आफरानैं बंधकुष्ठनैं कफका आजारनैं अजीर्णनैं मंदाग्निनैं ज्वरनैं यागोली दूरि करैछै.

इति सूलगजकेसरी गुटिका अथवा कणगचकी जड सेकीहींग सेक्यो सुहागो सूंठि येसारा बराबरिले यांनैं मिही वांटि टंक २ गरम पाणीसूं लेतों महासूलदूरिहोय येसाराजतन वैद्यरहस्यमैंछै. अथवा निसोत वायविडंग सहजणाकीफलि हरडैकीछालि कपेलो ये सारा बराबरिले यांनैंमिहीवांटि घोडाका मूत्रमैं पकायलै पाछै इनैं टंक २ पीवाका दारूकैसाथि लेतों वायकी सूलजाय १ योच क्रदत्तमैंछै अथवा सेकीहींग अमलवेद पीपलि संचरलूण अजवायण जवषार हरडैकी छालि सींधोलूण येसर्व बराबरिले यांनैंमिही वांटि टंक २ पीवाकी दारूकैसाथि लेतों वायकीसूलजाय १ अथवा संचरलूण अमलवेद जीरोमिरचि येसारा येकसूं येक दूणोलै यांनैंमिहीवांटि विजोराका रसमैं गोली करै पाछै गोली १ गरमपाणीसूं लेतों सूलजाय १ इति सौवर्चलादिगुटिका अथवा सेकीहींग अमलवेद सूंठि कालीमिरचि पीपलि अजवायणि संचरलूण सांभरो लूण सींधोलूण येसर्वबराबरिले यांनैंमिहीवांटि विजोराकारसमैं गोलीकरै पाछै गोली १ गरम पाणीसूं लेतों सूलजाय इति हिंग्वादिक गुटिका अथवा विजोराकीजड टंक २ तीनैंमिहीवांटि घृतसूं पीवैतो वायकी सूल दूरिहोय १ इतिविजैपूरादिजोग येजतन सर्वसंग्रह मैछै. अथवा सूंठि कालीमिरचि पीपलि संचरलूण यांनैं बराबरिले

न. टी. शूलगजकेसरीरसमैंकंटकवेधी ताम्रपात्रमैंलिष्याछै. सोतांवानरमकापत्राकरायकर अग्निमैं लालकरताजावै अरतक्र तेलत्रिफलाकाकाढामैं. कांजीकापाणीमैंएकएकतक्रतेलादिक पदार्थमैंसातसातबुझावादेतौकंटकवेधी होयछै.

पाछै यांनैंमिहीवांटि विजोराका रसकी पुट ३ देरससुकायलै पाछै ईनैं टंक २ सहतमैं चाटैतौ त्रिदोषकी सूलदूरिहोय १ अथवा संपकी भस्म संचरलूण सेकीहींग सूंठि कालीमिरचि पीपलि येसर्वब राबरिलै यांनैंमिहीवांटि टंक २ गरमपाणीसूं लेतौ त्रिदोषकी सूल जाय १ अथवा हलद सहजणाकी छालि सींधोलूण अरंडकीजड भैंसागूगल सिरस्यूं मेथीदाणा सौंफ असगंध महुवो यानैं बराबरिलै यांनैंमिहीवांटि कांजीका पाणीमैं रोटीकरि वेनैं पकाय अग्नि ऊपरि पाछै वैंका पेटऊपरि सेक करैतौ पेटकी सूल दूरिहोय १ अथवा कौड्यांकीराप सोध्योसींगीमुहरो सींधोलूण सूंठि कालीमिरचि पीपलि येसर्व बराबरिलै यांनैं मिहीवांटि नागरवेलका रसमैं गोली रती १ प्रमाण बांधै पाछै गोली १ रोजीना षायतौ सूलको रोग जाय १ इतिसूलगजकेसरी रसः अथवा पारो सोध्योगंधक अभ्रक तामेस्वर अमलवेद सोध्योसींगीमुहरो येबराबरिलै पाछै यांनैंमिहीवांटि आदाकारसमैंरती ३ प्रमाण गोली करै पाछै गोली १ रोजीना जलसूं लेतौ वायकीसूल दूरिहोय १ इति अग्निमुषरसः अथवा वडासंपनैं बार २१ गरम करि नींबूका रसमैंबुझावैपाछै वैंको चूर्णकरैपाछै आमलीकोषार ईमैं टका १ भरनाषै संचरलूण टंक ५ ईमैंनापिसींधोलूण टका १ भर इमैं नाषि सांभरलूण टका १ भर ईमैनापि अर कचलूण विडलूण टका १ एकेकभरनाषि सूंठि मासा ६ मिरचि मासा ६ पीपलि मासा ६ नाषै सेकीहींग टका १ भर सोधीगंधक टका १ भर पारो टका १ सोध्योसींगीमुहरो टंक १ पाछै यांसारानैं मिहीवांटि अर पारागंधककी कजलीकरि ईकजलीमैं यां सारांनैं मिलाय पाछै यांको येकजीवकरि यांकीगोली

न. टी. सोवैकंटकवेधीताम्रपत्र. भस्मक्रियामैं अररसक्रियामैंयथोक्तयोगकरणासिद्धछै. अरसेकीहींगलिषैछैसोहिंगनैंगवाघृतमैंतलै वासेकै फुलाय-लेवैसोहींगशुद्धछै. अरकोईकोरीअग्निऊपरिसेकैछैसो अशुद्धछै.

छोटा बोरप्रमाण बांधैगोली १ लवंगका काढासूं लेतौ सूलततकाल दूरिहोय १ इति संपवटीरसः अथवा सीसाकी भस्म टंक २ ता तापाणीसूंपीवैतौ भोजन कस्यांपाछेसूल चालैसोदूरिहोय १ अथवा सोध्योपारो टंक १ सोधीगंधक टंक १ सोध्योसींगीमोहरो टंक १ कालीमिरचि टका १ पीपलि टका २ काकडासींगी टका २ सेकी हींग टका २ पाचूलूण टका ८ आमलीको पार टका ८ जंभीरीका रसमैं बुझाइसंषकी भस्म टका ८ भर प्रथम पारागंधककी कजली करिपाछै ईकजलीमैं येसारी औषदिमिलाय नींबूका रसमैं येकजी वकरैपाछै ईंकीगोली टंक १ प्रमाण गोलीबांधै पाछै गोली १ ज लसूं लेतौ सूलनैं अजीर्णनैं उदरका रोगनैं मंदाग्निनैं दूरिकरैछै. इति सूलदावानलरसः येसाराजतन सर्वसंग्रहग्रंथमैंछै. अथ पस वाडाकी सूलका जतनलिष्यते सींगीमोहरो हरताल हींग. राई. नौ सादर. मैणसिल. लसण. वच.एलियो यांनैं बराबरिले यांनै मिही वांटि गरम पाणीसूंले गरम सुहावतौ लेपकरैतौ पसवाडाकी सूल जाय इति सूलरोग ८ प्रकारकी अर परिणाम सूल अन्नद्रव जर त्पित्तका जतन संपूर्णम् इतिश्रीमन्महाराजाधिराज महाराज राज राजेंद्रश्रीसवाई प्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागर नामग्रंथे वा तरक्तसूल परिणामसूल अन्नद्रव जरत्पित्त यांकी उत्पत्तिलक्षण ज तननिरूपणंनाम दशमस्तरंगः समाप्तः १०

११ अथ उदावर्त रोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनलिष्यते मनुष्यकै तेरा १३ वस्तका धारण कस्यांसूं उदावर्तरोग पैदाहोयछै. सो तेरा

---

* श्रीधरकहैछै. एकदिनरामजी गणोजी दाक्तरनैं पूछी. दाक्तरसाहेब सूल रोगऊपरमु ख्यउपाव कहो. दाक्तरकह्यो. हे श्रीधरमहाराजसूलका उपावतो घणाछै. परंतु जुलाब. फस्त जोक. तूमडी रक्तश्रावनै आदिलेर मुख्यछै. परंतु नहीं बणसकैतौलेप करणो. राई. सूंठ हिंग. वछनाग. गूगल. मैदालकडी. असालू. आंबीहलद. बीजाबोल. अफीमसमभाग गोमू तमैं पीसी जाडो लेपकरैतौ आराम होय.

वेग १३ लिषूंछूं अधोवायको वेग १ मलको वेग २ मूत्रको वेग ३ जंभाईको वेग ४ अश्रुपातको वेग ५ छींकको वेग ६ डकारको वेग ७ वमनको वेग ८ मैथुनको वेग ९ क्षुधाको वेग १० तृषाको वेग ११ स्वासको वेग १२ निद्राको वेग १३ यां तेरावेगांनें जो मनुष्यरोकै तींकै उदावर्तरोग पैदाहोय १ अथ अनुक्रमसूं अधोवायनें आदिलेर १३ वेग लिष्या त्यांकालक्षणलि० अथ अधोवायनें रोकै तीसूं रोगपैदा होयसोलि० जो अधोवायनें रोकै तींकै मलमूत्रकारोकिवाको रोगहोय आफरोहोय पेडूमैं पोतामैं इंद्रीमैं पीडहोय अरपेटमैं वायका औरभीरोग पैदाहोय तीनें अधोवायका रोकिवाको उदावर्तरोग कहिजे १ अथ मलका रोकिवाका उदावर्तको लक्षणलिष्यते पेटमैं गुडगुडाट शब्द बोलै पेटमैं सूलचालै पेडूमैं पीडाहोय मलउतरै नहीं डकारघणीआवै मल मूंढामैं निकली आवै येजीमैं लक्षणहोय तीनें मलका रोकिवाको उदावर्त कहिजे अथ मूत्रका रोकिवाका उदावर्तको लक्षण लिष्यते पेडूमैं इंद्रीमैं सूलहोय मूत्रकष्टसूं ऊतरै मथवायहोय आंवविनाही पेडूमैं आफरोहोयतौ मूत्रका रोकिवाको उदावर्त जाणिजे ३ अथ जंभाईका रोकिवाका उदावर्तकोलक्षणलि० जीमैंकांधीगलो रुकिजाय माथाको रोगहोय आवै जंभाईघणीआवै वायका औरविकार होय नेत्रांमैं नासिकामैं पीडघणीहोय कानमैं पीडघणीहोय येलक्षणहोयतदि जाणिजे जंभाईका रोकिवाको ईकैउदावर्तकोछै. ४ अथ आंसूंका रोकिवाका उदावर्तको लक्षणलिष्यते आनंदका आंसूंनें रोकै अथवा सोचके आंसूंनें रोकैतौ वेकै माथो भार्योहोय अर नेत्रका आजार होय ५ अथ छींककारोकिवाकाउदावर्तको लक्षण

न. टी. पसवाडाकी सूलछै. जीनैं लौकीकमैं गुजरातीरोग कहैछै. परंतु योगुजरातीछै. सोतो सूलरोगको भेदछै. लोहीवीकारसौं होयछै. सोवोलोही नसांमैं अटकजायछै. जीनैंकढायांसूं मनुष्यजीवै नैकढावै तौ ततकाल मरै.

लिष्यते कांधीमूंडैनही माथामें सूलचालै आधासीसीहोय सर्वइंद्री दुर्बल होजाय ६ अथ डकारकारोकिवाका उदावर्तको लक्षणलि० कंठअरमूंढो भोजनसूं भाख्योदीपै मोहनिपट घणोदीपै सरीरमें विथाहोय पवन सरैनहीं और वायका घणा विकार होय ७ अथ छर्दिकारोकिवाका उदावर्तको लक्षणलि० सरीरमें पुजालि होय दाफड होय अरुचिहोय मूंढाऊपरि छायापडिजाय सोजोहोय पांडुरोगहोय जुरहोय कोढहोय हियोदूपै विसर्परोगहोय ८ अथशुक्रकारोकिवाका उदावर्तको लक्षणलिष्यते. पेडूमें गुदामें पोतामें इंद्रीमै पीडहोय अरसोजोहोय मूत्ररुकिजाय वीर्य आपरतें इंद्रीमैंसूं पडिवालागिजाय पथरीको आजारहोय नेत्रकाविकारहोय ९ अथ भूपकारोकिवाकाउदावर्तको लक्षणलि० तंद्राहोय हातांमें फूटणीहोय अरुचिहोय विनाश्रमही श्रमहोय सरीरक्षीणपडिजाय दृष्टिमंदहोजाय १० अथ तिसकारोकिवाका उदावर्तको लक्षणलि० कंठ मूंढोसूकै थोडोसुणै हियामें पीडहोय ११ अथस्वासकारोकिवाकाउदावर्तको लक्षणलिष्यते दोडतां सासहोय आवे तीनें रोकै जींकै येलक्षण होय हीयोदूपै मोह घणोहोय पेटमें गोलाको रोग होय १२ अथनींदकारोकिवाका उदावर्तको लक्षणलिष्यते जंभाई घणीआवै अंगांमें फूटणीहोय आंषि भारीहोय माथो भाख्योहोय तंद्रा होय १३ अथ उदावर्तकी उत्पत्तिलिष्यते कोठामैंरहतो जो वाय सोलूषा कषायला कडवा भोजनासूं कुपितहुवो थको उदावर्त रोगनैं करैछै. अथ उदावर्तको सामान्य लक्षणलिष्यते जहांवायको ऊर्ध्वभ्रमहोजाय तीनैं उदावर्त कहिजे १ अथ उदावर्तको विशेष लक्षणलिष्यते. कफ मेदनैं वहवावालीजो नसां सो अधोवायनैं

न. टी. उदावर्तरोगत्रयोदशजातका कारणांमूं होयछै. सोकारणविचारणाचाहिजै. वा-कारणांकीतपासराषै तौशरीरमैं जोमुष्य वायुप्रधानछै वोवायु कोपनैं प्राप्तिहोयकर ऊर्ध्वगामीनहींहोणोचाहिजै.

अर मलमूत्रनैं ऊंचोलेजाय अर मलनैं सुकायदे अर हियामैं पेडूमैं सूल चालै वमन सो रापै अरुचिहोय अर अधोवाय मल मूत्र येनिपट कष्टसूं उतरै सास पास पीनस दाह मोह तिस ज्वर वमन हिचकी माथाकोरोग हौलदिल सुणैथोडो अरवायका घणा आजार होय अर तिसकरिकै पीडित अर सरीरक्षीण पडिजाय सूल घणी चालै मलको वमनकरै इसा उदावर्तवालो मरिजाय १ अथ क्रमकरिकै उदावर्तका जतनलिष्यते अथ अधोवायका रोकिवासूं उपज्योजो उदावर्त तीनैं स्नेहपान कराजैतौ उदावर्त जाय १ अथ मलका रोकिवाका उदावर्तको जतनलिष्यते ईनै जुलाबदीजे अर मलनैं दूरिकरवावाली औषदि दीजे इसाही अन्नदीजे. फलवर्ति दीजे तेलको मर्दनकीजे बस्तिकर्म कराजे २ अथ मूत्रका रोकिवासूं उपज्योजो उदावर्त तींको जतनलि० जवषार टंक १ वच टंक १ यांनैं पाणीमैं मिहीवांटि पीवैतौ मूत्रका रोकिवाको उदावर्तजाय अथवा कठ्याली अर्जुनव्रच्छकीजड ईंको काढोलेतौ मूत्रकारोकिवाको उदावर्तजाय अथवा तेवरसीकाबीज त्यांनैं पाणीमैं वांटि जीमैं सींधोलूण नापि पीवैतौ मूत्रका रोकिवाको उदावर्त जाय अथवा मिश्री सांठाको रस दूध दाषांकोसरबत पीवैतौ मूत्रका रोकिवाका उदावर्तजाय अर औरभीवायका रोगजाय ३ अथ जंभाईका रोकिवासूं उपज्यो जोउदावर्त तींको जतनलिष्यते स्नेहकापानसूं अथवा मर्दनकियासूं अथवा इहीकासूं पसेवलिवायासूं योजाय अर औरभीवायका रोग जाय.

अथ आंसूंका रोकिवासूं उपज्यो जो उदावर्त तींको जतनलि० ऊंचा प्रकारसूं रूदनकरै अर आंसूंकाढैतौ अथवा सुषपूर्वक

न. टी. जोकदाचवायूऊर्ध्वगामीहोयतौ शरीरनै महाभयमैंनाषिदेछै. जीसूंपराक्रमहीनहोयजाय. लोहीविगडजाय. अरजीमैं अनेकरोगांकी प्रतिभासपडचोकरैजदवैद्यनैंनिदानकरतां घणोंविचारपडैछै.

आच्छीतरेंसोवैंतो योजाय अथवा मनोहर कथासुणैंतो योजाय ५ अथ छींककारोकिवासूं उपज्योजो उदावर्ततींको जतनलि० काली मिरची राई नकछींकणीनें आदिलेर तींकीनासदेतौ अथवा सूर्य नें देषि तींकरिछींकलेतो उदावर्तजाय अथवा तैलमर्दन करायजे अथवा पसेवलिवावैंतो यो रोगजाय ६ अथ डकारका रोकिवासूं उपज्योजो उदावर्त तींको जतनलिष्यते तेलकामर्दनसूं प्रस्वेदसूं यो जाय ७ अथ छर्दिकारोकिवासूं उपज्यो जो उदावर्त तींको जतन लिष्यते ईनें वमन कराजे लंघनकराजे जुलाब दीजे तेलको मर्दन कराजे बस्तिकर्म कराजे नासिकासूं पाणी पाजेतो योरोग जाय ८ अथ शुक्रकारोकिवासूं उपज्यो जो उदावर्त तींको जतन लि० सुंदर षोडश वरषकी स्त्रियांसूं भोग कराजैतो योजाय अथ वा तैलाभ्यंगकराजे मदिरापाइजे कूकडाको मांस पुवाजे साठी चावल पुवाजे बस्तिकर्मकराजेतो ये रोगजाय ९ अथ भूषका रो किवासूं उपज्यो जोउ० चीकणा गरम रुचिकारी हलका हितकारी भोजन कराजे सुगंध पुष्पांको धारण कीजेतो योरोग जाय १० अथ तिसकारोकिवासूं उपज्यो जोउ० सीतल क्रियासर्व हितकारी फवारा चादर उगैरे जलक्रीडा साराईनें हितकारी अरसीतल ज लमें भीमसेनी कपूर नाषि तीनें सनै सनै पानकरैतो योरोगजा य ११ अथ श्रमकासास रोकिवासूंउ० वेकोषेद दूरिकराजे विश्रा मकरि अथवा सौरवाकेसाथि चावल पुवाजेतो योजाय १२ अथ नींदकारोकिवासूं उपज्यो जो उदावर्तती० गरम दूधमें मिश्रीना षिसुहावतो सुहावतो रुचिमाफिकपीजे अथवा सुषसूं सोजे अथ

* उदावर्तस्त्रयोदशः तेराजातकाउदावर्तलिष्याछै जींमें कोईतो लौकीकमैंविरुद्धछै. कोई तौलौकीकमैंसाध्यछै. वास्तैईग्रंथका वाक्यनैंविचारणोचाहिजै. जैसैंसीलव्रतवालामनुष्यनैं कामकोवेगवधैतौस्त्रीप्रसंगकियांतोव्रतखंडितहोयछै.. नहींकरैतौ उदावर्तरोगहोयछै. वास्तैस्त्री प्रसंगी व्रतसुणवोयोग्यनहीं. सत्संगज्ञानकावचनसुणिजै इसीतरै वैद्यनैंविचारकरणोघटैछै.

वा मनोहरकथा सुणाजैतौ यो रोग जाय १३ अथवा लूषीवस्त
का पावासूं उप० तथासर्व जातका उदावर्त जाय सोजतनलि० हीं
ग सहत सींधोलूण यांनै पीसि यांकी बत्ती करि घृतसूं चोपडि गुदा
में मेलै सुहावजैठातांई तौ योउदावर्त जाय १ इति हिंग्वादिफल
वर्ति अथवा मैंढल पीपलि कूठ वच सिरस्यूं गुडयांनै दूधसूं वांटि
यांकी वाती करि गुदामें सुहावती रापैतौ यो उदावर्त जाय १ इति
मदनफलादिफलवर्ति अथवा पांडटका १ निसोत टका ३ पीपलि
टका ५ यांको चूर्णकरिभोजनकै पहलै टंक २ सहतसूं लेतौ मल
गाढो दोहरो उतरतो होयतौ दूरि होय योउदावर्त ईसूं जाय १
इतिनाराचचूर्णं अथवा सूंठि मिरची पीपलि पीपलामूल निसोत
दांत्युणी चित्रक येसर्व बराबरिले यांनै मिहीवांटि टंक १ गुडकै सा
थिपरभातही जलसूं लेतौ उदावर्तनैं फीयानैं गोलानैं सोजानैं पां
डुरोगनैं योदूरिकरैछै. इतिगुडाष्टकम् अथवा सूकीमूली साठीकी ज
ड पीपलि पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठि दसमूल किरमालाकीगिरी
यांऔपद्यांनैं घृतमें पकाजे पाछै ईंघृतनै षायतौ सर्वप्रकारको उदा
वर्त जाय १ इति शुष्क मूलकाद्यं घृतं येसर्व जतन भावप्रकासमैं
लिष्याछै. अथवा सोध्याजमालगोटा पारो सोधी गंधक सेक्यो
सुहागो सूंठि मिरची पीपलि येसर्व बराबरिले प्रथम पारागंधककी
कजली करै पाछै ये औषदि ईंकजलीमें मिलावै पाछै ईनै रती ४
अथवा मासो १ मिश्रीकैसाथि लेतौ उदावर्तनैं आफरानैंउदरका
रोगांनैं गोलानैं योदूरिकरैछै १ इति अजैपालरसः यो वैद्यरह
स्यमैंछै. अथवा निसोत थोहरीकापान तिलनैं आदिलेर औरगरम
वस्त तींका सेवनसूं उदावर्तजाय अथवा निसोत दांत्युणी तजथो

न. टी. तृषाकारांकिवाको जोउदावर्तहोय तींवास्तैश्रीदरबार कोफुरमायो जोउपावछै सो तौभाग्यवानाकै वास्तैछै. परंतु जोगरीबछै ज्यानैं तोमिसरीकैसाथगट्ठलकोसरबतबणायकर देवैतौ आराम होयछै.

हरी सांपाहुली किरमालो कपेलो कणगचकीजड चोप येसर्व बराबरि ले यांनें जौकूटकरि टंक २ रोजीनादिन ७ काढोदे काढामे तेल टंक २ घृत टंक २ नाषिलेतो उदावर्तजाय अर उदरका सर्वरोग जाय आफरोजाय तिसरोग जाय गोलो जाय योकाढो इतनारो गांनें दूरिकरैछे १३ इति उदावर्तरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनसं०

अथ अनाहरोगकी उत्पति लक्षण जतनलि० उदरमें आंवका वधिवासूं अथवा मलका वधिवासूं अथवा अधोवायका रुकिवासूं अथवा सरीरमैं दुष्टपवनका वधिवासूं मनुष्यकै उदरमैं अनाहनाम आफराको रोग पैदा होयछे. अथ आंवका आफराको लक्षणलि० जींआफराकारोगमैं तिसघणीहोय पीनसहोय सिरका विकारसाराहोय पेटमैं सूलहोय सरीरभार्योरहे हीयोदूपै डकार आवै नहीं येलक्षण जीमैं होय तीनैं आंवको आफरोकहिजे १ अथमलकावधवाका आफराको लक्षणलिष्यते सरीरजकडबंद होय अर कटिमैंपीठमैं मलमैं सूलहोय मूर्छाहोय मलमैं छर्दिकरै. सास होय अरविसूचिकाहोय अर पाछै लक्षण कह्याछै सोभीहोय तदि मलका वधिवाका आफराको लक्षण जाणिजे. अथ आफराका जतनलिष्यते. जो उदावर्तका जतन पाछै लिष्याछै सोही आफराकाजाणिलीज्यो. ओरक्यूं विशेषलिषूंछूं निसोत भाग २ पीपलि भाग ४ वडी हरडैकी छालिका भाग ५ यांनें मिहीवांटि यांतीन्यां की बराबरि गुडमिलाय गोली टंक १ प्रमाण करै पाछै गोली १ रोजीना जलकै साथि दिन १५ लेतो आफराको आजारदूरिहोय १ अथवा सूंठि कालीमिरचि पीपलि सींधोलूण सिरस्यूं धमासो कूठ मैंडल येसारी बराबरिले यांनैंमिहीवांटि गुडमैं मिलाय पकावै

न. टी. फलवर्तीलिषीछै. सोवाबातीउनमानकीएकसरीषीजाडी उपरनरमासजीसारोगी होय जीसाप्रमाणसूं देषकर वैबातीकै ऊपरऔषधकोलेप करणो अरवाबातीमूलमैं सुहावै ज डाताईराषणी.

पाछे वेंकी वातीकरै अंगुठा सिरीसीजाडी पाछे वेंकै घृतलगाय वा वाती गुदामैं मेलै तो आफराकोरोग अर उदावर्तकोरोग उदरकोरोग अर पेडूको रोग गोलो येसारा दूरिहोय येसाराजतन भावप्रकासमैं लिप्याछे. इति अनाहनामआफराका रोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम् अथ गुल्मरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनलि० वायपित्त कफहेसो मिथ्या अहार अर मिथ्या विहारका कुपथ्य पणासूं दुष्ट हुवाथका पुरुषांकै अथवा स्त्रियांकै हियामै लेर पेडुमांहिगोलाकै आकार एक गांठिनैं करैछे. सोओगोलो पांचप्रकारको छै वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ लोहीको ५ अथ कोष्ठकै विषैजींस्थानमैं गुल्महोय सोस्थानलि० दोन्यांपसवाडामैं २ हियामैं ३ नाभिमैं ४ पेडूमैं ५ अथ गुल्मको सामान्यलक्षणलि० हिया अर पेडूकै वीचि गांठी होय अरफिरै अथवा नाहिं फिरै गोलहोय अर वधतीहोय तीनैं गुल्म कहिजे अर ईंगुल्म रोगमैं अरुचिहोय अर मलमूत्र दोहरो ऊतरै वाय वधै आंत बोलै आफरो होय पवनकी ऊर्ध्वगति होय येजीमैं लक्षणहोय तीनैं गुल्मको आजार कहिजै. अथवा गोलाकी उत्पत्तिको लक्षणलि० लूपा अन्नका षावासूं विषमासनका बैठिवासूं मलमूत्रका रोकिवासूं सोचका करिवासूं चोटका लागिवासूं मलका क्षीणपणासूं लंघनका करिवासूं विरुद्धचेष्टासूं बलवानसूं युद्धकाकरिवासूंयांवस्तांसूं वायको गोलोपैदाहोयछै अथ वायकागुल्मको लक्षण लिष्यते जो गोलाका स्थानमैं पीडाको घटत वधत पणोहोय अधोवायकी प्रवर्ति आछीतरै होयनहीं मलऊतरै नहीं मूंढोसूकै गलोसूकै सरीरकीकांतिकालोहोयसीतज्वरहोय हियामैं कूषिमैं पसवाडामैं यांसारांमैं पीड

न. टी. अनाहनाम आफराकोरोगछै परंतुमुष्यकारण ईमै बंधकुष्ठछै. सोईको जतनकरणो. मलसफारहै. अर मूत्रसफाऊतरै अरमलमैं छर्दिलीषीछै. सोतोमलकीसाथही छर्दि होयछै.

होय हियामैं भोजनपच्यांपाछै पीडा घणीहोय भोजन कस्यांहल कीहोय अरलूषा कषायला कडवारसांसूं पीडावधै येलक्षण जीमें होय तीनैं वायकोगोलो कहिजै १

अथपित्तका गोलाकी उत्पत्तिलि० कडवोपाटोतीषो ऊन्हूं यांर सांका सेवासूं क्रोधका करिवासूं अति मद्यका पीवासूं तावडाका बैठिवासूं अग्निका सेवासूं आंवका वधिवासूं चोटका लागिवासूं रुधिरका विगडवासूं यांवस्तांसूं पित्तको कोप होयछै. अथपित्तका गोलाको लक्षणलिप्यते ज्वरहोय तिसहोय. सरीरमैं पीडाहोय सूलहोय भोजन पचतां घणो पसेव आवै दाहहोय व्रणहोय गोलाकै हाथ लगातां पीड घणीहोय येलक्षण होयतो पित्तको गोलो जाणिजै. २ अथ कफका गोलाकी उत्पत्तिलि० ठंढीवस्तका षावासूं भारीवस्तका षावासूं चीकणीवस्तका षावासूं वैठारहवासूं दिनका सोवासूं इतनीवस्तांसूं कफकोगोलो पैदाहोयछै अर येसर्व कारण मिलै तदि सन्निपातको गोलो पैदाहोयछै. अथ कफका गोलाको लक्षणलि० जीमैंसीतज्वरहोय सरीरमैं पीडाहोय मूंढासूं कडवो पाटो वमनहोय षासीहोय भोजनमैं अरुचिहोय सरीर भास्योहोय येलक्षण जीमैंहोय तीनैं कफकोगोलो कहिजै ३ येसर्व वायपित्त कफका जीमैंहोय तीनैं सन्निपातको गोलो कहिजै ४ अथ स्त्रीधर्म रूपजो रुधिरतीसूं उपज्योजोगुल्म तींको लक्षणलिप्यते योलोही गुल्म स्त्रीकैहोयछै. नवमा महिना पहलीस्त्रीको काचोगर्भपडै कुपथ्य भोजनासूं प्रथमगर्भकारितुसमैं अथवा रितुविना तींस्त्रीकै वा

---

* पेटका आफराकोरोग मनुष्यनैं निर्बलकरैछै. जीमैं अरुचिआदिलेर घणा उपद्रव होयछै. वास्तै रेचक. पाचक. दैदीप्य. क्षारादिक. औषधी देणी. साधारणजुलाव देणो. घणाजुलाब. कठिण जुलाब देणो नहीं. सुवर्ण. चांदी. पोलाद. ताम्र. कथिर. जसद. सीसो. याधातवांनैं गरमकरकर गुलाब जलमैं बुझायबुझाय गुलाब जलछाणकरपावणो. नित्य प्रभातसमैंतौ आफरोमिटैछै.

यहैसो लोहीसूं ग्रहणकरि गोलानैं पैदाकरैछै वेगोलामैं पीड घणी चालै वेमैं दाहहोय अर पित्तका गोलाका सर्व लक्षण मिलै जीमैं अर ओसर्व जागांफिरै अंगाविनाही तीमैं सूल चालै वेस्त्रीका पेटका गोलामैं गर्भका सर्व लक्षण मिलै वेनै रुधिरसूं उपज्यो गोलाको रोगजाणिजे पणिवेंस्त्रीकै दशवो महिनोव्यतीत होय चूकै तदि गोलाका वैद्यहैसो जतन करै ५ अथ गुल्मरोगको असाध्यलक्षणलि० जींमनुष्यकै गोलो फिरै तौ अथवा नहींफिरैतौ अरपीड घणी चालै सरीरमैं दाह घणो होय पथरीकीसीगांठि ऊंची होय वागांठी मननैं विगाडि नाषै सरीरनैं दुर्बल करिदे अग्निका बलको नासकरिदे तींगोलाका रोगनैं त्रिदोषको जाणिजे यो असाध्यछै ६ अथगोलाका और असाध्य लक्षणलिष्यते गोलो क्रमसूं वधै जीमैंसूलचालै काछिवाकीसीनाईं गाढोहोय सरीर दुर्बल होय भोजनमैं रुचि जातीरहै कडवोषाटो वमनकरै जुरहोय तिस होय तंद्राहोय पीनसहोय अर अतिसारहोय हियाकै नाभिकै पगांकै सोजोहोय तिस घणी लागै. येरोगांवाला मनुष्यकै असाध्य लक्षण जाणिजे ७ अथ गोलाका जतनलिष्यते गरम दूधमैं अरंडोल्यांकोतेल अर हरडैको चूर्णनाषि रोजीना पीवैतौ जुलाब लागिकरि गोलो दूरिहोय १ अर तेलका मर्दनसूंभीगोलोजाय अथवा साजी कूठ जवषार केवडाकोषार यांको चूर्णकरि ईमैं अरंडको तेल मिलाय पीवैतौ वायको गोलोजाय १

अथ पित्तका गोलाको जतन लिष्यते निसोतका चूर्णको सेवन कराजे अथवा त्रिफलाको सेवन कराजे अथवा कपेलानैं मिश्रीकै साथि अथवा सहतकै साथि दीजैतौ पित्तको गोलोजाय २ अर

न. टी. स्त्रियांका पेटमैं कोईक कारणांसूं अथवा मिथ्या अहार मिथ्या विहारसूं. कुपथ्यका करिवासूं स्त्रीधर्मको जो रजछै तींको गुल्म पैदाहोयछै. अर जीमैंगर्भकासा लक्षण सर्वहोय.

वायका गोलाका जतनसो कफका गोलाका जाणि लीज्यो ३ अ
थवा यांका जतन लिष्यते सेकीहींग. पीपलामूल. धणों. जीरो. वच.
चव्य. चित्रक. पाठ. कचूर. अमलवेद. संचरलूण. सांभरोलूण. सीं
धोलूण जवषार साजी अनारदाणा. हरडेकीछालि पोहकरमूल डांस
स्यां झाउरूषकीजड येसर्वबराबरिले यांनेंमिही वांटि यांकें आदा
कारसकीपुट ७ देअरविजोराकारसकीपुट ७ देपाछे टंक २ ईनें
रोजीनालेतो गोलानें आफरानें ववासीरनें संग्रहणीनें उदावर्तनें
उदरका रोगनें ऊरुस्तंभनें उन्मादनें सूलकारोगनें यां सारांरोगां
नें योदूरिकरैछे. इतिहिंग्वादिचूर्णं अथवासाजी मासा ४ गुडमा
सा ४ यांनेंमिलाय रोजीना षायतो गोलोजाय १ अथवा पला
सकोषार थोहरकोषार आंधीझाडाकोषार आमलीकोषार आक
कोषार तिलांकोषार जवषार साजी यांनेंमिहीवांटि टंक १ अथवा
टंक २ गरम पाणीसूं लेतो गोलानें सूलका रोगनें योदूरिकरैछे
१ इतिक्षाराष्टकम् अथवा सांभरोलूण सींधोलूण कचलूण जव
षार संचरलूण सुहागो साजी येबराबरिले यांनेंमिही वांटियांने थो
हरका दूधमेंदिन ३ भिजोय राषे पाछे तावडे सुकावें पाछे यांनें
आकका पानामें लपेटि माटीका वासणमें मेलि गजपूटमें पकाय
लेपाछे ईमेंसूंठि कालीमिरचि पीपलि त्रिफला अजवायण जीरो
चित्रक यांनें वांषारांकी बराबरिले पाछे यांनें मिहीवांटि वांषारांमें
मिलावें पाछे ईनें टंक २ गरम पाणीसूं अथवा गोमूत्रसूं लेतो गो
लानें सूलनें अजीर्णनें सोजानें सर्व उदरका रोगांनें मंदाग्निनें उदाव
र्तनें फियानें यांरोगांनें योदूरिकरैछे. इति वज्रक्षारचूर्णम् अथवा ग
वारका पाठाकीगिरि तीमें सूंठि कालीमिरचि पीपलि सींधोलूण. यांनें

न. टी. पेटमें वोगोलो गर्भकीसीनांईंफिरै अरसाराचिन्ह गर्भजीसा होयछे. परंतु वैद्य आपकीबुद्धिसों वैस्त्रीकापेटमें जोगुल्मकोदरदहोय जींपर लक्षदेणोंचाहिजै.

मिहीवांटि टंक २ वेंकै लगाय घृतकैसाथि रोजीना षायतौ गोलो.
फियो दूरिहोय १ अथवा गवारका पाठाकिगिरिमण १ जीमै गु
डटका २०० भर नाषि सहत टका १०० भरनाषै धावड्याका
फूलसेर २ नाषै सूंठि टका २ मिरचि टका २ पीपलि टका २ त
जटका २ पत्रजटका २ चव्यटका २ इलायचीटका २ कचूरटका२
चित्रकटका २ नागकेसरिटका २ झाउरूषकीजडटका २ अजमो
दटका २ जीरोटका २ देवदारु टका २ बौंलकी बकल टका २ आ
सगंध टका २ रास्नाटका २ वधायरोटका २ इंद्रजवटका २ यांनैं
मिहीवांटि गवारका पाठाका रसमैं नाषै पाछै यांको येकजीवकरि
चीकणावासणमैं घालि दिन २१ पृथ्वीमैं गाडीराषै पाछै ईनैं का
ढिटका २ भरपीवैतौ गोलानैं उदावर्तनैं उदरकाविकारनैं विसूचि
कानैं ग्रध्रसीनैं षासनैं सासनैं पांडुरोगनैं सर्व वायका विकारनैं
योदूरि करैछै. इतिग्रुवारका पाठाको आसव येसर्व जतनभावप्र
कासमैंछै १ अथवा सोरोटंक १ आदोटंक १ यांनैंरोजीना षाय
तौ गोलो जाय १ अथवा सींपकीभस्म टंक १ गुडमासा ४ रोजी
ना षायतौ गोलोजाय १ इतिसींपप्रयोग० अथवा लसण टंक २
दूधमैंपचावै पाछै यांकीषीर करै पाछै ईयान षीरनैंरोजीना करषा
यतौ गोलो जाय १ अथवा अरंडकीजड चित्रक सूंठि पीपलामूल
वायविडंग सींधोलूण सेकीहींग यांको काढो देतौ गोलो जाय १
आफरो सूलजाय १ अथवा अजवायणी मासा १६ जीरो टंक ५
धणो टंक ५ कालीमिरचि टंक ५ कुडाकीछालि टंक ५ अजमोद
टंक ५ कालोजीरो टंक ५ सेकीहींग टंक ५ जवषार टंक ८ साजी
टंक ८ पाचूलूण टंक ८ निसोत टंक ८ दांत्युणी टंक १० कचूर

न. टी. अष्ट क्षारलिष्याछै सोषार जुदाजुदाप्रथमकाढकरतयारकरणो. सोषारकाढवा कीक्रिया तरंग २४ पृष्ठ ५१० जवषारकी क्रियाछै. जींमुजब सर्वजातकाषारनीसरैछै. जी नैं यादराषणी.

टंक १० पोहकरमूल टंक १० वायविडंग टंक १० अनारदाणा टंक १० हरडैकीछालि टंक १० चित्रक टंक १० अमलवेद टंक १० सूंठि टंक १० यांसारांनैं मिहीवांटि विजोराकारसकीपुट १० देपा छैटंक १ प्रमाणकीगोलीकरै गोली १ घृतकैसाथि रोजीनापायतौ अथवा दूधकैसाथिलेतौ पित्तकागोलानैं दूरिकरै मद्यकैसाथिलेतौ वायका गोलानैं दूरिकरै दसमूलका काढाकै साथिलेतौ त्रिदोपकागोलानैं दूरिकरै अरहियाकारोगनैं संग्रहणीनैं सूलनैं क्रिमिनैं ववासीरनैं यागोलीदूरिकरैछै. इतिकंकायनगुटिका अथवा लवणभास्कर चूर्णपाछैलिष्याछैतींकै लेवासूं गोलाको रोगजाय १ अथवातिलांको काढोलेतौगोलोजाय१ अथवा भाडंगी गुड घृत पीपलि तिल सूंठि मिरचि यांको काढोलेतौ गोलाकोरोग जाय १ अथवा पीपलि भाडंगी पीपलामूल देवदारु कणगचकीजड तिलांको काढोदेतौ गोलाको रोगजाय. १ इति कणादिक्काथः अथवा मैणसिल हरिताल रूपमषी आंवलाषार गंधक तामेसुर पारो येबराबरिले प्रथम पारा गंधककी कजलीकरै पाछै कजलीमैं ये औषदि मिलाय पाछै पीपलिका काढाकारसमैं षरल करैदिन १ पाछै थोहरीकादूधमैंदिन १ षरल करै पाछै टंक १ सहतमैंले अथवा गोमूत्रसूं लेतौ गोलो अर सूलको रोगजाय १ इतिविद्याधररसः अथवा पारो सोधीगंधक सेक्योसुहागो त्रिफला सूंठि काली मिरचि पीपलि सोधीहरताल सोध्योसींगीमुहरो तामेसुर सोध्यो जमालगोटो येसर्व बराबरिले प्रथम पारागंधककी कजली करै पाछै कजलीमैं ये औषधि वांटि मिलावै पाछै ईंकै भांगराका रसकी पुट ३ देरदिन ३ तांई परलकरै

---

* गोलाकोरोगविचक्षणहैजीमैंदोयजातप्रसिद्धहै. एकतोस्थिरछै. दूजोचलछै. विद्वानवैद्य हैसो गोलाकोउपावविचार करकरणोचाहिजै. स्त्रीकाउदरमैंगोलो बहुधाहोयछै. वास्तैगोलाकोमरजपैदाहोतांही जलदीउपावकरणो लेपसौंजुलाबजीनैंदेणो. माफिकहोय जीनैंजुलाबसूं. तक्रसूं. तैलादिकसूं. क्षारादिकसूं अथवा वारूवांकुलडांसूंकाचीवेदनसहजउपावसौंजायछै.

पाछे ईकीगोली रती १ प्रमाणकी बांधे पाछे गोली १ आदाका र समैं लेतो गोलानैं दूरिकरैछे. १ इति गुल्मकुठाररसः येसारा ज तन वैद्यरहस्यमैं लिष्याछे. अथवा हाथकी सिरछुडावैतो गोलाका सर्वरोगजाय १ अथवा सेकीहींग अनारदाणा विडलूण सींधोलूण येबराबरिले यांनैंविजोराका रसमैं षरलकरै पाछे टंक २ पीवाकी दारूकै साथि रोजीनालेतो वायको गोलो जाय १ अथवा साजी कूठ जवषार केवडाकाषार येबराबरिले यांनैं मिहीवांटि टंक २ ते लकै साथि पीवैतो वायको गोलो जाय १ अथ योनीमैं सूल चा लतीहोय तींको जतन लिष्यते. त्रिफला निसोत दात्युणी दसमूल येसर्व जुदा जुदा टका टकाभरले पाछे यांनैं जौकूटकरिईको काढो टंक ६ कोरोजीनाकरिछाणिलेपाछे ईकाढमैं अरंडको तेलनाषिपाछे ईमैंघृतमिलाय दूधसूंपीवैतो योनीकी सूल दूरिहोय.

इति मिश्रकस्नेहः यो जोगतरंगिणीमै लिष्योछे. अथवा अज वायणनैं मिहीवांटि टंक ५ लूण टंक १ गुड टंक ५ ईमैं मिलाय छाछिकै साथि रोजीनालेतो गोलोजाय भूषलागे मलमूत्र आछीतरै ऊतरै यो वृंदमैं लिष्योछे. अथवा अजवायणी सेकीहींग सींधोलू ण जवषार संचरलूण हरडैकीछालि येबराबरिले यांनैं मिहीवाटि टंक २ पीवाकी दारूकै साथिरोजीनालेतो गोलो सूलदूरिहोय १ अथवा सेकीहींग भाग १ सींधोलूण भाग २ पीपलि भाग ३ पी पलामूल ४ कंकोल मिरचि भाग ५ अजवायण भाग ६ हरडैकी छालि भाग ७ अनारदाणा भाग ८ आंबकोजडकी बकल ९ भाग चित्रक भाग १० सूंठि भाग ११ फिटकडी भाग १२ यांसारानैं मिहीवांटि टंक २ रोजीना पाणीसूं लेतो गोलानैं अरुचिनैं हृद्रोगनैं

न. टी. जोऔषधी कांकायन ऋषीकामतकीकांकायनकृतशास्त्रमैंलिषीहुई ऐठै लिषीछै. जीनैंकांकायननामसौविष्यातछै. जैसैकांकायनघृत. क्काथ. वटी. चूर्ण. इत्यादि.

आफरानैं ववासीरनैं वायका सर्व विकारांनैं योचूर्ण दूरिकरैछै. १ अथ हिंगुद्वादशकंचूर्णम् अथवा वच हरडैकीछालि सेकीहींग सीं धोलूण अमलवेद जवषार अजवायण यांनै बराबरिले यांनै मिही वांटि टंक २ गरमपाणीसूं लेतौ सूलनैं गोलानैं दूरिकरैछै. १ इति वचाद्यं चूर्णम् अथवा वडी हरडै २५ जलसेर १६ मैंपकावैजलमैं पचतां ये औषदिनाषै दांत्युणी टका १६ भरनाषै चित्रकटका १६ भरनाषै पाछै ईंकै मधुरीआंचदे अर जलको चोथोहिंसोराषै पाछै पाणीमै हरडै समेत गुडटका १६ भरनाषै पाछै औरू औटावै अ धोंराषै पाछै ईमैं पीपलि टका १ सूंठि टका १ घृत टका ४ सहत टका ४ तज टका १ पत्रज टका १ नागकेसरि टका १ इलायची टका १ यांसारांकोएकजीवकरि अवलेहकरैपाछै टका १ भररोजी नाषायतौ जुलाब लागै अर इतनारोगजाय गोलो संग्रहणीनैं पां डूरोग सोजो विषमज्वर कोढ ववासीर अरुचि फियो हृद्रोग येसारा रोग जाय इति दंतीहरीतकी अथ संषद्रावसूंभी गोलोजाय अथवा वडीजंभीरीपकी २०० तींको रसलीजे घृतका चीकणा वासणमैं वेमैं येनाषिजे सेकीहींग टका २ सींधोलूण टका १ सूंठि टका १ कालीमिरचि टका १ संचरलूण टका ४ अजवायण टका १ सिर स्यूं टका ९ यांसारी औषधांनैं मिहीवांटि जंभीरीका रसमैं नाषि दिन २१ रोडीमैंगाडिराषैपाछै टका १ भररोजीनाषायतौ गोलानैं फियानैं विद्रधीनैं अष्ठीलानैं वायकाकफका अतिसारनैं पसवाडा की सूलनैं हियाकारोगनैं नाभिकासूलनैं बंधकुष्ठनैं जहरनैं उदरका

न. टी. मिश्रकस्नेहलिष्योछै. सोस्नेहनामतेल. घृत. दुग्ध. जीं औषधीमैंयोगहोयसोमिश्र कयोगछै. जीमैं एरंडेलतेलघालै. अथवा औरभी सिद्धतेलघालै जीनैमिश्रकस्नेहकहैछै.

न. टी. गोलाकारोगमैंजोपथ्यापथ्यछैसोलि० वमन. रेचन. लंघन. निद्रा. जूनोअन्न. ग रमदूध. तुराई. क्षारएतापथ्यछै. भारीअन्न. जागरण स्त्रीसंग. उद्योग. मद्य. दालमात्र. तीषो. मलमूत्ररोध. शोक. क्रोध. मत्स्य. सुकोसाग. मीठाफलइ० कुपथ्यछै.

रोगनैं वाय कफकारोगानैं दूरिकरैछै. इति जंभीरीद्राव ये जतन भावप्रकासमैं लिष्याछै. अथवा नदीकोषार कुडाकोषार आकको पार सहिजणाकोषार कव्यालीकोषार थोहरीकोषार बीलकोषार छीलाकोषार बकायणकोषार आंधीझाडाकोषार कदंबकोषार अर इूसाको षार सांभरोलूण. येसर्व बराबरिले यांमैं यांका अनुमान माफिक सेकीहींग नाषि पाछै ईनैं टंक २ गरम पाणीसूं लेतौ गोलानैं सूलनैं उदरकारोगनैं योदूरिकरैछै. इति नादेईक्षारः योजो गसतकमैछै. अथवासौंफ कणगचकीजड तज दारुहलद पीपलि यांको काढोदे अरतिलगुड सूंठि मिरचि सेकीहींग भाडंगी येसारी औषदि काढामैं नाषि औटाय देतौ लोहीको गोलो स्त्रीधर्मपणौ जातोरह्योहोय जीनैंदूरिकरै. १ अथवा जवषार सूंठि कालीमिरचि पीपलि यांनैं औटाय पीवैतौ लोहीको गोलो जाय १ अथवा पारो भाग १ बंगकी भस्म १ सोधीगंधक भाग ४ तामेसुर भाग ४ यां सारांनैं आककादूधमैंदिन २ षरलकरै पाछैईको गोलोकरि सरावामैं मेल्है पाछैईनैं गजपूटमैं पकावै पाछै ईनैं ठंडाहुवाकाढै पाछै रती २ घृतकैसाथिईनैं लेतौ गालानैं फियानैं उदरकारोगनैं दूरि करै इति बंगेस्वररसः मछलीकोमांस सूकीतरकारी दालमीठाफल येगोलावालोषायनहीं येसर्वसंग्रहमैं लिष्याछै. इति गुल्मरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्

अथ यकृत् प्लीहारोगकीउत्पत्ति लक्षण जतनलि० यकृतप्लीह ये दोन्यूंसरीरका अंगछै. जीवणां पसवाडामैंतो यकृत् रहैछै. हीयाकै नीचै १ अरवांवापसवाडामैं हीयाकैनीचैप्लीहरहैछै. ईनैं लौकीकमैं

* क्षारकह्योछैसो. जींजीं वृक्षमैं क्षारदीषैजीं वृक्षकी तथा लतावेलडीकी. हरेक जातकी औषधी. तथा लकडी. छीलका. पंचांग. तथाजो उपयोगी होय सोही लेकरजलायकरसजीव राषकरणी. पाछैजलमैं राषनैं भिजोयकर उत्तरोत्तरगलणीसूं नीतारस्वच्छ पाणी होय जरांकडाहीमैं घाल चूल्हे चढायां जलमात्रजलकर क्षाररहैछै. इसीतरै क्षारसर्व जातका होयछै.

फियो कहेछे सोलोहीनें वहवावालीनसां त्यांको मुष्य ठिकाणोछे. अथप्लीहरोगकी उत्पत्ति लक्षणलि० मनुष्यहेसो गरम वस्तपाय अथवा दहींनें आदिलेर कफकारीवस्त घणीपाय तींके येदोन्यूंक फ अरलोहीवधै तदिफियानें वधावे. तदिओफियो वध्योथको मंद जुरनें अरअग्निका मंदपणानेंकरै अर कफपित्तका जींके लक्षण होय सरीरको बलजातोरहै. सरीरपीलो होजाय तीनें फियोकहजे. ओफियो चारप्रकारकोछे. वायकोफियो १ पित्तको २ कफको ३ लोहीको ४ अथ वायका फियाको लक्षणलिष्यते पेटकै नित्य आ फरोरहै. नित्य उदावर्तरोगरहै. पेटमें पीडरहवो करैतो वायको फियो जाणिजे १ अथ पित्तका फियाको लक्षणलिष्यते. जुररहै. तिसलागै. दाहहोय मोहहोय सरीरपीलोहोय येपित्तका फियाका लक्षणछे. २ अथ कफका फियाका लक्षणलिष्यते पीडमंदहोय फियो भार्‍यो अरगाढो होय सरीर भार्‍यो होय भोजनमें अरुचिहोय. ये कफकाफियाका लक्षणछे. ३ अथ लोहीका फियाको लक्षणलिष्य ते सर्वइंद्रीसिथिल होजाय भ्रमहोय मोहहोय दाहहोय सरीरको रंग ओरहोय सरीर भार्‍योहोय उदरलाल होय येलक्षण होयतो लोहीको फियो जाणिजे. अर त्रिदोषको फियोहोयतो असाध्यजा णिजे. अरयेहीलक्षण यकृत्रोगका जाणिजे. ४ ५ अथफियाका जतनलि० जवषार ऊंटडीका दूधसूं लेतोफियोजाय १ अथवा सीपांकीभस्म दहींसूंषायतो फियोजाय २ अथवा पीपलि टंक १ दूधकैसाथि रोजीनालेतो फियोजाय ३ अथवा आकका पानांकी राषजीमें लूणमिलाय मठाकैसाथि पीवैतो फीयोजाय ४ अथवा सेकीहींग सूंठि कालीमिरचि पीपलि कूठ जवषार सींधोलूण येबरा

न. टी. फीयोनामतापतिल्लीछै. सर्वसरीरकीनसांको मुष्यमूलछै. सोयागांठ कुपथ्यका करिवासौं वाषटाईका षावासौं नबलाईकी गांठफुल जायछै. तापका घणांदिनका रहवा सौं यागांठछै. जींके आधारतापरहवोकरैछै.

बरिले यांनैंमिही पीसि विजोराका रससूं लेतौ रोजीना टंक २ तौ फियोजाय ५ अथवा छीलाकाक्षारमैं भेईपीपल्यानै टंक २ रोजीना षायतौ फियो गोलोजाय ६ अथवा संषकी भस्ममासा ४ जंभीरीकारसकी लारषायतौ फियोजाय ७ अथवा बावांहाथकीसीर छुडावैतौ फीयोजाय ८ अथवा जीवणाहाथकीसीरछुडावैतौ यकृत् जाय ९ अथवा पक्काआंबकारसमैं सहतनाषिपीवैतौ फीयोजाय १० अथवा अजवायण चित्रक जवषार पीपलामूल दांत्युणी पीपलि येबराबरिले यांनैंमिही वांटिटंक २ मठाकैसाथि अथवा दारूकैसाथि रोजीना पीवैतौ फियोजाय ११ येसर्व भावप्रकासमैं लिष्या छे. अथवा सींधोलूण टंक ५ जलमैं औटाय रोजीनापीवैतौ फीयोजाय १२ येवैद्यरहस्यमैंछे. अथवा जवषार वायविडंग पीपलि कणगचकीजड अमलवेद येबराबरिले यांसूं दूणी हरडैकीछालिले यांनैं मिहीवांटि गुडकैसाथि पाणीसूंलेतौ फीयोजाय १३ अथवा पीपलि सूंठि दांत्युणी येबराबरिले यांसूं दूणी हरडैकीछालिले यांनैं मिहीवांटि गुडकैसाथि लेतौफीयोजाय १४ अथवा वायविडंग इंद्रायणकीजड. चित्रक येबराबरिले यांसूंदूणो देवदारुले सूंठि तिगुणीले साठीकीजड वायविडंग येबराबरिले निसोत चौगुणीले यांनै मिहीवांटि टंक १ गरम पाणीकैसाथि लेतौ फीयोजाय १५ अथवा सहजणाकीजड सींधोलूण चित्रक पीपलि यांकोकाढो करिपीवैतौ फीयोजाय १६ अथवा भिलावा हरडैकीछालि जीरो येबराबरिले यांनैंमिहीवांटि यांमैं बराबरिको गुडमिलाय टंक ५ रोजीनादिन ७ षायतौफीयोजाय १७ अथवा लसण पीपलामूल हरडैकी छालि येबराबरीले यांनैंमिहीवांटि टंक २ गोमूतसूं लेतौ फियो जाय १८

न. टी. जीसूंईरोगपरपथ्यलि० हलको अन्न. थोडोभोजन. कडवीऔषधी. पानमेथी. चंदलेई. तुराई. इ० कुपथ्यलि० कैरी. छाछ. दहीं. काचरी. कैर. उडद. भारीअन्न. कफकारीचीज. तेल. गुड. मिरचीलाल. वडा. वालोल. गवारफली. काकडीइत्यादि.

येचक्रदत्तमैंलिष्याछै अथवा रोहीसकीजड हरडैकी छालि सूंठि ये बराबरिले यांनैंमिहीवांटि टंक २ गोमूतकैसाथिलेतौ उदरकारोग प्रमेह ववासीर कफको रोग फियो कोढ येजाय १९ योजोगतरंगि णीमैंलिष्याछै. अथवा सांभरोलूण हलद राई येतीन्यूं टकायेकेक भ रिले छाछि टका १०० भरले चीकणा वासणमैं घालिदिन १५ रा षै पाछै रोजीनादिन २१ तांई टका २ भरपीवैतौ फियो जाय २०

इतितक्रसंधानं योभावप्रकासमैं अथवा रोहीस टका १०० भर ईनै कूटिले बोरकीजडसेर ४ पाणीसेर १६ ईमैंयांदोन्यांनैं औटा वैं पाछै ईपाणीको चोथोहिंसो आयरहै तदिवैनें उतारिछाणिले पा छै ईपाणीमैं सेर १ गऊको घृतनाषै अरईमैं वकरीकोदूधसेर ४ नाषै सूंठि टंक २॥ साठीकी जडटंक २॥ तुंबरू टंक २॥ वायविडं ग टंक २॥ जवषार टंक २॥ पोहकरमूल टंक २॥ झाउरूषकीजड टंक २॥ वचटंक २॥ यांसारानैंमिहीवांटि घृतमैं मधुरी आंचसूं पका वैं ये औषदि अर दूध बलिजाय घृतमात्र आयरहै तदिवैंनैं छाणी अमृत बाणमैं घालिराषैपाछै ईनै टंक २५३ भर पथ्यकैसाथि ईघृ तनैं षायतौ इतनारोगनैं दूरिकरै फियानैं प्लीहो दरनैं कूषिकीसूल नैं पसवाडाकी सूलनै अरुचिनैं बंधकुष्ठनैं पांडुरोगनैं छर्दिनैं अति सारनैं विषमज्वरनैं यो दूरिकरैछै २१ इतिमहारोहीतकंघृतम् यो चक्रदत्तमैं लिष्योछै अथवा चित्रक टका १०० भरले तीको काढो करै ईमैं कांजीको पाणी टका २०० दहींको मठो टंक ४०० भर पीपलामूल टका १ चव्य टका १ चित्रक टका १ सूंठि टका १ ता लीसपत्र टका १ जवषार टका १ सींधोल्लूण टका १ दोन्यूंजीरा टका १ दोन्यूंहलदटका १ कालीमिरचि टंक १ ये मिहीवांटि चि

न. टी. रोहीतकनामतृणछैसो रोहीसाकोघांसहोयछै. अरजींकोतेलवणैछैजीनैं रोहीसा कोतेल कहैछै. सुगंधी आवैछै. बादीकारोगपरमालीसकरैछै. सोवोरोहीसाको घांसटका १०० सौभरलेणो. अरऊपरलिष्यामुजबघृतकरणो श्रेष्ठछै.

त्रकका काढामें नाषै ईमें सेर १ घृतनाषै तदि पाणीउगैरे सर्व ब लिजाय घृतमात्रआयरहै तदिईनै उतारि छाणि चोषा अमृतवाण में घालि राषैपाछे ईंको सेवन करैतौ फियानें गोलानें उदररोगनें आफरानें पांडुरोगनें अरुचिनें विषमज्वरनें पेडूका सूलनें सोजानें मंदाग्निनें यांसारांरोगांनैंयो दूरिकरैछे. बलनें वधावैछे. २२ इति चित्रकाद्यंघृतम् योवृंदमें लिष्योछे. अरफियाका जोजतनछे सोही यकृत् रोगका जाणिलीज्यौ अथवा जवषार वायविडंग पीपलि क णगचकीजड यांका काढासूं यकृत् फियो येदोन्यूंजाय २३ इतिफि यायकृत् रोगकी उत्पत्तिलक्षण जतन संपूर्णम् अथ हृद्रोगकीउत्प त्तिलक्षण जतनलिष्यते घणीगरम वस्तका षावासूं घणीभारीवस्त का षावासूं घणी षटाईकाषावासूं घणीकषायलीवस्तका षावासूं घणीतीषी वस्तकाषावासूं घणांश्रमका करिवासूं घणीचोटका ला गिवासूं घणागाढा पिटवासूं घणीचिंताकाकरिवासूं घणां मलमूत्र कारोकिवासूं यां वस्तांसूं हियाको रोगहोयछे सोयोरोगपांचप्रका रकोछे वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ कृमिको ५ अथ हृद्रोगको सामान्य लक्षणलिष्यते अन्नको षायो रसहैसो प्रथम हियामें जाय तदिवेरसनें वायपित्तकफ हैसो विगाडि हिया नें घणोपीडित करै तीनें वैद्यहैसो हृद्रोग कहैछे अथ वायका हृद्रो गको लक्षण लिष्यते हियामें पीड फैलिजाय अर हियामें सुईका साचभका चालिजाय हियामें झेरणोसो फिरै हियामें करोत कीसी नाईफिरै हियामें पथ्थर कीसीचोटलागै हियामें कुहाडाकीसीचोट लागै येलक्षण होयतौ वायको हृद्रोग जाणिजे १ अथ पित्तका हृ

---

* फीयोरोगछै जीनैंसंस्कृतमैंप्लीहरोगकहैछै. योरोगनिर्बल आदमीकौं तापकाआजारसूं होयजींकैवधैछै. घणावैद्य ईंकोऔषधीको उपावकरैछै. परंतु जवक्षार बकरीको मूत्र उन मानमाफिक रोजसाधनसूं षायतौ योरोगजायछै. अरमंत्रकाझाडासूंबी जायछै. यकृत् नाम कालजाको रोगहोयछै.

द्रोगको लक्षणलि० तिसघणीलागै दाह होय हीयोदूपै कंठमाहीसूं धूंवोनीसरै मूर्छा आवैजींको सरीरसीतल होजाय पसेव आवै मूं ढोसूकिजाय येलक्षणजीमैं होय तीनैंपित्तको हृद्रोगजाणिजे २ अथकफका हृद्रोगको लक्षणलि० हियोभार्यो होय मुपमैंसूं कफघणो नीसरै भोजनसूंरुचि जातीरहै सरीर जकडबंध होजाय मूंढोमीठो होय मंदाग्निहोय हियामैं कफजमिजाय येलक्षण होय तदिजाणिजे कफको हृद्रोगछै ३ येसर्व लक्षण मिलै तदि जाणिजै सन्निपातको हृद्रोगछै ४ अथ कृमिका हृद्रोगको लक्षणलि० आंतांमै कृमिहोय पाछै कुपथ्यको करवावालो मनुष्यतिल दूधगुडनैं आदिलेर मीठी वस्तषाय तदिवेकाममर्मस्थानांमैं पीडहोय हियोदूषै हियो सीडि जाय तदिवेंको आत्माघणो दुषपावै येजीमैं लक्षण होय तीमैंकृ मिको हृद्रोगजाणिजे ५ वेमैं उत्क्लेलदन होय थूकै घणोहियामैं सू लचालै भोजनमैं अरुचिहोय नेत्र कालाहोजाय सरीरसुपिजाय ये कृमिहृद्रोगका लक्षणजाणिजे अथ हृद्रोगका उपद्रवलिष्यते सर्व इं द्रियांकोग्यानजातोरहै सरीरमैं पीडाहोय भौलीआवै सरीरसुपि जाय १ अथ हृद्रोगका जतनलिष्यते वहेडाका वृक्षकी वकलको चूर्णटंक २ रोजीना दूधकैसाथि अथवा घृतकैसाथि अथवा गुडका पाणीकैसाथि पीवैतौ हृद्रोगनैं जीर्णज्वरनैं रक्तपित्तनैं दूरिकरैछै अ थवा हरडैकीछालि वच रास्ना पीपलि सूंठि कचूर पोहकरमूल येसर्व बराबरिले यांनैंमिहीवांटि टंक २ जलसूं लेतौ हृद्रोग दूरिहोय २ अथवा हिरणकासींगको पुटपाककरै और गऊका घृतकै साथि षायतौ हृद्रोगनैं सूलमात्रनैं दूरिकरैछै ३ इति हिरणका सींगको पुटपाक अथवा षरैटी गंगेरणीकीछालि कहवारूंषकी वकल महलौ

न. टी. हियाकारोगनैंपथ्यलि० हलकोअन्न. पाचकपदार्थ. थोडो भोजन. मंदसिकताव आछीहवा. सुंदरस्थान. इत्या० कुपथ्यलि० षटाई. धूमपान. चीकणोपदार्थ. भारीअन्न को लोकैर. काचरी. करौंदा. काकडी. कौद्रु. करेला. इत्यादिक.

ठी येश्रौषदि बराबरिले यांनैंमिहीवांटि टंक २ यांको काढोरोजीना लेतौ हृद्रोगनैं वातरक्तनैं रक्तपित्तनैं दूरिकरैछे येसर्व भावप्राकासमैं लिप्याछै. अथवा कूठ वायविडंग यांनैंमिहीवांटि टंक २ गोमूत्रकै साथिलेतौहियाकी कृमिजायपडै हृद्रोगदूरिहोय ५ अथवा गंगेर णीकीजड अरकहवाकीबकल पोहकरमूल यांनैंमिहीवांटि टंक २ दूधकैसाथि अथवा सहतकैसाथि रोजीनालेतौ हृद्रोगनैं सासषा सनैंछर्दिनैं हिचकीनैंदूरिकरै ६ अथवा हरडैकीछालि वच रास्ना पीपलि सूंठि कचूर पोहकरमूल यांको चूर्णलेतौ हृद्रोगजाय ७ इ तिहरीतक्यादिचूर्णम् अथवा दसमूलका काढामैं अरंडकोतेल अर सांभरोलूणनाषि पीवैतौ हृद्रोगजाय ८ अथवा पोहकरमूल सूंठि कचूर हरडैकीछालि जवषार येबराबरिले यांको काढोकरि ईमैं घृत नाषि पीवैंतौ वायका हृद्रोगजाय ९ येसर्व वैद्यरहस्यमैंछे. अथवा सेकीहींग वच वायविडंग सूंठि पीपलि हरडैकीछालि चित्रक जव षार संचरलूण पोहकरमूल येसर्व बराबरिले यांनैं मिहीवांटि टंक २ गरम जलकैसाथि लेतौ हृद्रोग जाय १० यो जोगरत्नावलीमैं छै. अथवा पोहकरमूलनैं मिहीवांटि टंक २ सहतकैसाथि लेतौ हृ द्रोगनैं षासनैं सासनैं राजरोगनैं हिचकीनैं योदूरिकरैछे. ११ अ थवा सेकीहींग सूंठि चित्रक कूठ जवषार हरडैकीछालि वच वायवि डंग संचरलूण पारो पोहकरमूल येबराबरिले यांनैंमिहीवांटि टंक १ जलकैसाथि लेतौ हृद्रोगनैं अजीर्णनैं विसूचिकानैं दूरिकरैछे. १२ योरसप्रदीपमैंछे. इति हृद्रोगकीउत्पत्तिलक्षण जतनसंपूर्णम्. इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्रश्रीसवाई प्रतापसिं हजीविरचिते अमृत सागर नामग्रंथे उदावर्त अनाह गुल्म यकृत्

न. टी. दसमूलकोकाढोलिष्योछै. जीमैंसालपर्णी १ पृष्ठपर्णी. २ बडीकटाली. ३ छोटी कटाली ४ गोषरू ५ येपांचअरविल्व. ६ इरणी. ७ स्योनाक ८ कासमरी ९ पाटल १० ये दसऔषधछै. सोदसमूलछै. पांचलघु. ५ वृद्ध. मिल १० छै.

प्लीह हृद्रोग यांसर्व रोगांका भेदसंयुक्त उत्पत्ति लक्षण जतननिरूपणंनाम एकादशस्तरंगः संपूर्णम् ११

१२ अथमूत्रकृच्छ्ररोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनलिष्यते पेदकाकरिवासूं तीषीवस्तका षावासूं लूषाअन्नका षावासूं मद्यकापीवासूं नाचिवासूं दुष्ट घोडाका बैठिवासूं नदीकाजीनांवरांका मांसका षावासूं काचाअन्नका षावासूं भोजनऊपरि भोजनकरयांसूं अजीर्णसूं यां कारणांसूं मनुष्यकै मूत्रकृच्छ पैदा होयछै सो आठप्रकारकोछै वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ चोटकालागीवाको ५ मलकारोकिवाको ६ शुक्रकारोकिवाको ७ पथरीको ८ अथमूत्रकृच्छ्ररोगको सामान्य लक्षणलिष्यते. कोपकूंप्राप्तिहुवो जो वायपित्त कफ आप आपका कारणांसूं पेडूमैं प्राप्तिहोय मूत्रका मारगनैं घणी पीडाकरै अर बडाकष्टसूं चीसचालि नीठीमूतै मूत्रको बंधतो कमहोय अर मूततां पीड घणीहोय तीनैं मूत्रकृच्छ कहिजे. अथ वायका मूत्रकृच्छ्रको लक्षण लिष्यते जांघांकी अर पेडूकी संधिमैं अर पेडूमैं अर इंद्रीमैं पीडघणीहोय अरथोडो थोडो वारंवार मूतै येलक्षण जीमैं होय तीनै वायको मूत्रकृच्छ्रकहिजे. १ अथ पित्तका मूत्रकृच्छ्रको लक्षणलिष्यते पीलोलालमूतऊतरै अर घणो गरम मूत्र ऊतरै अर वडाकष्टसूं चीसदेर मूतऊतरै तीनैं पित्तको मूत्रकृच्छ्र कहिजै २ अथकफका मूत्रकृच्छ्रको लक्षणलिष्यते पेडूअरलिंग येदोन्यूंभारयाहोय अर यांदोन्यांकै सोजो होजाय अर मूत्रमैं झागआवै अरमूत्रकष्टसू ऊतरै येलक्षण होय तीनैं कफको मूत्रकृच्छ्रकहिजै ३ अर येसर्व लक्षण जीमैं होय तीनैं सन्निपातको मूत्रकृच्छ्रकहिजे ४ अथ चोटलागिवाका मूत्रकृच्छ्रको लक्षण लिष्यते मूत्रनैं वहवावा

न. टी. मूत्रकृच्छ्रमूत्रघातरोगमैं पथ्यलि० हलकोअन्न. चावललाल. गाई. छाछकोदूध. दहींमुग. मिसरी. तुराई. काकडी..षारकीऔषद. इ. कुपथ्यलि० मद्य. श्रम. मैथुन. हाथी घोडाकी सवारी. हींग. मिरच. लूण. पान. मांस. आदो. मलमूत्ररोकणा. षाटो. गरम. इ.

लीजोनसां त्यांकै कहींतरैकी चोटलागै तदि वेकोमूत्ररुकिजाय अ रवायका मूत्रकृच्छ्रका सर्वलक्षणमिलै सोई मूत्रकृच्छ्रसूं मनुष्य मरि जाय ५ अथ मलकारोकिवाका मूत्रकृच्छ्रको लक्षणलि० जो पुरस मलकी बाधानैं रोकै तीकै वायुकुपित होय अर पेडूमैं अर पेटमैं आफरो करै अर वेंजागांपीडघणीचालै अरमूत्र घणांकष्टसूं ऊतरै ये लक्षण जीमैं होयतीनैं मलका रोकिवाको मूत्रकृच्छ्र कहिजै ६ अथ शुक्रकारोकिवाका मूत्रकृच्छ्रको लक्षणलि० शुक्रका रोकिवा सूं मूत्रको मारगरुकिजाय तदिपुरषकै पेडूमैं इंद्रीमैं सूल चालै वी येनैंलीयां बडाकष्टसूं मूतै ईनैं शुक्रका रोकिवाको मूत्रकृच्छ्र कहिजे ७ अथ पथरी सू उपज्यो जोमूत्रकृच्छ्र तींको लक्षण लिष्यते पथरी अरशर्करानामरेत येदोन्यूं पोतामैं रहैछै, येदोन्यांसूं मूत्रकृच्छ्र होयछै अरवा पथरीहैसो पित्तकरिकै पचीथकी वाय करिकै सूकी थकी अरकफसूं नहीमिलि वाही पथरी रेतरूपहोय मूत्रका मार्ग होयकर नीकलै मूत्रनैं रोककर ८ अथ शर्कराकाउपद्रवलिष्यते हीयामैं पीडाहोय सरीरकांपै सूलचालै कूषिमैं मंदाग्निहोय जाय वेसेती मूर्छाहोय अर मूत्रकृच्छ्र होय येलक्षणहोय तदिमनु ष्यमरिजाय ८

अथमूत्रकृच्छ्रकारोगका जतन लिष्यते गोषरू किरमालाकीगि रि डाभकीजड कांसकीजड जवासो आंवला पाषाणभेद हरडैकी छालि येबराबरिले यांनैं जौकूटकरि टंक २ कोकाढोकरि काढामैं सहतमिलाय रोजीनालेंतौ मूत्रकृच्छ्र अरपथरीको असाध्यभीरो गजाय १ इतिगोक्षुरादिक्काथः अथवा इलायची पाषाणभेद शिला

---

* मूत्रकृच्छरोगवहुधामनुष्यांकैअनेककारणांसूंहोयछै. परंतुपथरीकारोगको मूत्रकृच्छ्रक ठिणछै, सोपथरीकोमुष्यउपावतोनस्तरछै. सोनस्तरविद्याअंग्रेजीहकुमतवालादाक्तर लोकजा णैछै. मुंबईमैंदाक्तरभाऊदाजी. मोठोविद्वानपुरुषछोजीनैंमोठीमोठी पथरीचीरकरनिकलीछै. जींपुरसकी मसंसाविद्वानदाक्तर अरुवैद्यंकूहैछै. घातकीरोगांसूंघणांमनुष्यांनैं जीवायाछै.

जीत पीपलि गोषरू तेवरसीकावीज सींधोलूण केसरि येसारी औषदि बराबरिलेयांनैंमिहीवांटि टंक २ चावलांका पाणीकैसाथिलेतौ मूत्रकृच्छ्र जाय २ अथवाआंवलाकोरस पुराणागुडकापाणीकैसाथि रोजीना लेतौमूत्रकृच्छ्रजाय ३ अथवा दूधमैंपुराणो गुडनाषि अथवा मिश्रीनाषि गरमसो धापर रोजीनापीवैतौ मूत्रकृच्छ्रजाय ४ अथवा चोटकालागिवासूं उपज्योजो मूत्रकृच्छ्रतींकोजतनलि० आंवलाका रसमैं सहत नाषिपीवै अथवा सांठाका रसमैं सहत नाषि पीवैतौ मूत्रकृच्छ्रजाय ५ अथमलका रोकिवाका मूत्रकृच्छ्रको जतन लि० गोषरूको काढोकरितींमै जवषार नाषि पीवैतौ यो मूत्रकृच्छ्र जाय ६ अथवा त्रिफला टंक ५ बोरकीजडकी बकल टंक ५ यां दोन्यांनैंरात्रिमैं भेयपरभातिवे पाणीहीमैंवांटि वेमैंसींधोलूण नाषि पीवैतौ मूत्रकृच्छ्र जाय. ७ अथवा जवषार मासा ५ मिश्रीमासा ५ यानैंवांटिजलसूंले तौ मूत्रकृच्छ्र निश्चै जाय ८ अथवा मिनक्कादाष टंक ५ मिश्रीटंक १० दहींकोमठो टंक १० येतीन्यूंमिलाय पीवैतौ मूत्रकृच्छ्र जाय ९ अथवा गोषरूकी जडसमेत ईंको काढो करि तींमैं सहतमिश्रीनाषि पीवैंतौमूत्रकृच्छ्रजाय १० येसर्वजतन भावप्रकासमैं लिष्याछे. अथवा गिलवै सूंठि आंवला आसगंध गोषरू येबराबरिले यांनैं जौकूटकरि टंक २ रोजीनाईंको काढोपीवैतौ मूत्रकृच्छ्रजाय ११ अथवापक्कानींबूकारसमैंगऊकाकच्चादूधमैंनाषि मनमैं आवै जीतो रोजीना पीवैतौ स्त्रीकी जोनिकादोषतैं उपज्यो जोरोगतीनैं अरदाहनैं प्रमेहनैं मूत्रकृच्छ्रनैं योदूरिकरैछे १२ अथवा हरडैकीछालि गोषरू किरमालाकी गिरि पाषाणभेद धमासो अरडूसो येसर्व बराबरिले यांनैं जौकूट करि टंक ५ कोकाढोकरि

न. टी. गोषरूको काढो मूत्रकृच्छ्ररोग ऊपरलिष्योछैसो. गोषरूदिषणीगोषरूकहैछै जीनैं पंचांगसूंधालेणो. जड. पेड. पान., फूल. फल. येपंचांगहोयछै. सोलेणो. अथवा कोईअंग कमतीहोयतो जडसूंधांपानफलसहितजरूरलेणो.

तीमैंसहतनाषि रोजीना पीवैतौ दाहसंयुक्त मूत्रकृच्छ्रनैं बंधकुष्ठनैं येदूरिकरैछे १३ इतिहरीतक्यादिक्वाथः अथ लोहीकष्टसूं मूततो होय तींको जतनलि० डांभकीजड कांसकीजड दोबकीजड सरक नाकीजड सांठाकीजड यांको काढो देतौ लोही मूततो आछयो होय १४ इति तृणपंचकम् अथवा पक्कापेटाका रसमैं मिश्रीमिला य पीवैतौ मूत्रकृच्छ्रजाय १५ इतिकूष्मांडरस. अथवा कव्यालीकार समैं सहत नाषिपीवैतौ मूत्रकृच्छ्र जाय १६ अथवा गोषरूटका २ भरईमै आठगुनोपाणीनाषितींको आधोपाणीराषे पाछे ईनै छाणि ईपाणीमैं गूगल टका ७ भरनाषे पाछेईनै औरू पकावै पाछे ईमैं सूंठि टका १ कालीमिरचि टका १ पीपलि टका १ हरडेकीछाली टका १ वहेडाकीछालि टका १ आंवला टका १ नागरमोथो टका १ ये मिहीवांटि गूगलमैं नाषे पाछे यांको येकजीवकरिमासा ५ रोजी नाजलसूं लेतौ मूत्रकृच्छ्रनैं मूत्राघातनैं प्रमेहनैं प्रदरनैं वातरक्तनैं शुक्रका दोषनैं यांरोगांनैं दूरिकरैछे. इतिगोषुरादि गूगलम् अ थवा जीरो टका १ गुड टका १ रोजीनाषायतौ मूत्रकृच्छ्र जाय १८ अथवा जवषार टंक २ गऊकी छाछिसूं पीवैतौ मूत्रकृच्छ्रका पथरीका दोन्यूंरोगजाय १९ इति जवषार तक्र जोगः अथवा पारो भाग १ सोधीगंधक भाग ४ यां दोन्यांकी कजली करै पाछे याकजली वडा को डामैं भरै पाछे सुहागो पाणीमैं वांटिकोडाकै मूढौलगावै पाछे वाकौडानैं कुलडीमैं मेली गजपूटमैं फूंकिदेपाछे स्वांगसीतलहुवां वे कुल्हडी माहिसूं वेकौडानैं काढिमिहीवांढिले पाछे रती ४ भरले अ रईमैं मिरचि २१ मिहीवांटि मिलाय घृतकै साथि षायतौ मूत्रकृच्छ्र जाय २० इति लघुलोकेसुररसः येसर्व जतन वैद्यरहस्यमैं लिष्या

न. टी. अरुकेवलगोषरूलिष्याछै. जैठैतोगोषरूकाफलमात्रलेणाचाहिजे. यावैद्यसांप्रदाय छै. अरजैठैपुष्टऔषधीकोउपचारछैवैठैतो दीषणीगोषरूहीलेणो. अरदूजीगोषरूछै जीनैंकां टीकहैछै. जींकैदोवडाकांटाहोयछैसोतोंईकीएवजीमैंलेणो. येनहींमिलैजदछै.

छे. अथवा निरूहबस्तिका करिवासूं उत्तर बस्तिका करिवासूं मूत्र कृच्छ्रजाय २१ अथवा सतावरी कांसकी जड डांभकीजड गोपरू विदारीकंद सालरकीजड किसोरया यांको काढोकरि तीमैं सहत मिश्री नाषिपीवैतौ मूत्रकृच्छ्र जाय २२ यो चक्रदत्तमैंछे. अथवा तेव रसीकाबीज महुवो दारुहलदयांकोकाढो करि पीवैतौ पित्तको मूत्रकृच्छ्रजाय २३ अथवा केलीका रसमैं गोमूत्रमैंनाषि पीवैतौ कफको मूत्रकृच्छ्रजाय २४ अथवा इलायची मिहीवांटि जलसूंलेतौ कफका मूत्रकृच्छ्र जाय २५ अथवा मूंगांको चूर्ण टंक १ चावलांका पाणीसूं लेतौ कफको मूत्रकृच्छ्रजाय २६ अथवा गोपरू सूंठि यांको काढो करिलेतौ कफको मूत्रकृच्छ्रजाय २७ योवृंदमैंछे. अथवा वडी कट्यालीपाठ महलौठी महुवो इंद्रजव यांको काढोलेतौ सन्निपातको मूत्रकृच्छ्र जाय २८ अथ शुक्रका रोकिवाका मूत्रकृच्छ्र० लि० सिलाजीत सहतमैं मिलाय षायतौ शुक्रकारोकिवाको मूत्रकृच्छ्र जाय २९ योचक्रदत्तमैंछे. अथवा उत्तमस्त्रीसूं संगकरै तौ योमूत्रकृच्छ्रजाय ३० अथवा षरैटीकी जडको काढो लेतौ संपूर्ण मूत्रकृच्छ्रजाय ३१ अथवा गोषरूको पंचांगटका १०० भरले तीनैं कूटि आठगुणांपाणीमैं औटावैतींको चतुर्थांशरहैतदिवेनैं छाणिले पाछे वेमैंमिश्री टका ५० भरकी चासणीकरै अवलेहकी साथमैं ये औषदिनाषै सूंठि टका २ पीपलि टका २ इलायची टका २ जवषार टका २ केसरी टका २ कहवारूंषकी बकल टका २ तेवरसीकाबीज टका २ वंशलोचन टका ८ भर यांसारी औषद्यांनैं मिहीवांटि ईमैनाषै पाछे टका १ भर रोजीनाषायतौ मूत्रकृच्छ्रनैं दाहनैं बंधकुष्ठनैं पथरीनैं लोहीका मूतवानैं मधुप्रमेहनैं योदूरिकरैछे ३२ इति गोक्षुराव

न. टी. उत्तमस्त्रीमूत्रकृच्छ्रकारोगनैं सहायकलिषीछै. सोयोग्रंथराजमान्यछै. ग्रंथकर्ताको सर्वदेशीलीषणो नहीछै. कोईबीरोगी वचनामैं षातरीनहींकरसी. कारणउक्तस्त्रीकीप्राप्तिविनाउपदंशरोगपैदाहोयकर नींबकीडालीकाचवरकरसीही.

लेह. येसर्व जतन सर्वसंग्रहमैंछै. इतिमूत्रकृच्छ्रकी उत्पत्ति लक्षण जतनसंपूर्णम् अथमूत्राघातरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनलिष्यते मनुष्य ईंकरिकै आसंका करैछै मूत्रकृच्छ्र अरमूत्राघातमैं भेदकांईसोलिषूंछूं मूत्रकृच्छ्रमैं मूततां कष्टतोघणो अरमूतको बंध थोडो अर मूत्राघातमैं मूत्रको वेधतोघणो अरमूततां पीड थोडी ये भेदछै. अथ मूत्राघातकी उत्पत्ति लक्षणलिष्यते कुपथ्य करिकै कोपकूं प्राप्ति हुवो जो वाय पित्त कफ त्यांकरिकै मूत्राघात होयछै. सो मूत्राघात तेरा प्रकारकोछै १३ वातकुंडलिका १ अष्ठीला २ वातबस्ति ३ मूत्रातीत ४ मूत्रजठर ५ मूत्रोत्संग ६ मूत्रक्षय ७ मूत्रग्रंथि ८ मूत्रशुक्र ९ ऊष्णवात १० मूत्रसाद ११ विडविघात १२ बस्तिकुंडलि १३ अथ वातकुंडलिकाको लक्षणलिष्यते लूषीवस्तका षावासूं अरमूत्रकृच्छ्रका धारिवासूं वायहैसो पेडूमैंजाय पीडा करै मूत्रकी नसांमैंजाय विचरतो थको कुपित होजाय तदि कफहैसो मूत्रका छिद्रनैं रोकै तदि वायहैसो इंद्रीका मुषमैं कुंडलकै आकार होय उठेरहै तदि पुरष हैसो थोडो थोडो मूतै अर मूततां पीडघणीहोय येलक्षणजीमैं होय तीनैं वातकुंडलिका रोगकहिजे. सोअसाध्यछै. ईंरोगवालो पुरस मरिजाय १ अथ अष्ठीलाको लक्षणलि० पेडूमैं आफरोहोय गुदाको पवन चलैनहीं गुदामैं पवनकीगांठि भाठासिरीसीहोजाय उठैपीडघणीहोय अर ओपवन मलमूत्रनें रोकिदे येजीमैं लक्षण होयतीनैं अष्ठीलारोगकहिजे २

अथवातबस्तिको लक्षणलि० सोपुरष मूत्रकावेगनैंरोकै तींकै पवनहैसो पेडूमैंजाय मूतकी नसांका मूंढानैं रोकिदे मूतउतरिवादे

---

* मूत्रकोबंधहोणोकठिणछै. ईंवास्तैऔषधीमकारतोबहुतछै. परंतुलौकीकमैं वर्तमानसमैका विद्वानछै सोईंरोगवास्तै नली द्वारामूत्र षुलासाकरैछै. सोवानली इंग्रेजी विद्वानलोक घणां राषैछै. वानलीनैं इंद्रीद्वारामूत्रकास्थानमैं प्रवेश करैछै. पछै अनेक उपावलाग सकैछै. चिमत्कारीक नलीछै. पेटको षुलासो होयछै. तत्कालरोगी आराम होय.

नहीं पेडूमें अरकूपिमें पीडाकरै वेनैं वातबस्तिरोग कहिजे योरोग कष्टकारीछे. ३ अथमूत्रातीत रोगको लक्षणलिष्यते मूतनैं घणी वार रोकै अर वेगदेर मूत्रकरै नहीं तदि पुरसकै मूत मंदउतरै ईनैं मूत्रातीतरोगकहिजे ४ अथ मूत्र जठररोगको लक्षणलि० जोपुरस मूत्रका वेगनैं रोकै तींको गुदाको अपान पवनहैसो उदरनैं पवनसूं भरि नाभिकैनीचै आफरो करै घणीपीडकरै तीनैं मूत्रजठर रोगकहिजे ५ अथ मूत्रोत्संगको लक्षण लिष्यते पेडूकैमांहि अथवा लिंगकै नसांमें आयो जोमूततीनैं करैनहीं तदि वे पुरषकै मूत्रद्वारा थोडो थोडो लोही मूतै पीडानैं लीयां अथवा नहींपीडानैं लीयां ईनैं मूत्रोत्संग रोगकहिजे ६ अथ मूत्रक्षयको लक्षणलिष्यते जीं पुरसकै षेदकरिकै सरीर लूषो पडिजाय तींका पेडूमें रहतोजोवाय पित्त कफसो मूत्रका नासनैं करैछे. पीडाअर दाहसंयुक्त तीनैं मूत्रक्षयरोग कहिजें ७ अथ मूत्रग्रंथिरोगको लक्षणलि० पेडूकै माहिगोल अरस्थिर अरछोटी आंवला प्रमाणनीपटगाढीवायकी गांठि अकस्मातउपजि आवै तीनैंमूत्रग्रंथि रोगकहिजै. ८ अथ मूत्रशुक्र रोगको लक्षणलि० मूत्रको वेग लागिरह्योहोय अर मैथुन करिवानैंस्त्रीकनैं जाय तदिवेकै वायहैसो शुक्रनैं स्थानसूं भ्रष्टकरै मूत्रकै पहली अथवा मूत्रकै पाछै नाषै आरणाछाणकी राषका पाणीसिरीसो तीनैं मूत्रशुक्र रोग कहिजे ९ अथऊष्णवात रोगको लक्षणलि० स्त्रीसंगसेती षेदसेती तावडाका पडिवासेती पुरषकै पेडूमें रहतो जोवाय पित्तसो पेडूनैं इंद्रीनैं गुदानैं दग्धकरता थका हलद सिरीसो मूतै अथवा लोहीलीयांबडाकष्टसूं मूतै तीनैं ऊष्णवातरोग कहिजे १० अथ मूत्रसादरोगको लक्षण लि० पुरसकै

न. टी. मूत्रकाशर्करा रोगको पूर्वरूपलिष्योछै जीमैं मूत्रकावेगनैं धारण कियांथका स्त्रियांका संयोग करैछै. सोकारणयेछै; मूर्ष. अदक्ष. अमासिमैं किंचित् प्राशिवालो. भययुक्त अतिव्यभिचारी. हटवादी. मूर्ष. धनी. इसापुरुषांकै योगवणैछै.

कुपथ्य करिकै पेडूमैं रहतो जो पवन सो पित्तनैं अरकफनैं विगाडै तदि वेंकै मूतनिपट कष्टसूं ऊतरै पीलो अथवा लाल अर सुपेद ऊतरै निपट जाडो ऊतरै अर गरमऊतरै गोरोचनसिरीसो संष सिरीषो कैलोहीसिरीसो कैचूनासिरीसो थोडो ऊतरै सरीरको वर्ण सुकिजाय ईनैं मूत्रसादरोग कहिजे ११ अथ विडघात रोगको लक्षणलिष्यते घणो लूषो अन्न षातो जो पुरुष सो दुबलो हुवोथको मलनैंलियां थकांमूतै वेंकामूतमैं मलकीसीदुर्गंधिआवै अर घणा कष्टसूं मूतैतीनैंविडघात रोगकहिजे १२ अथ बस्तिकुंडलि रोगको लक्षण लिष्यते घणां उतावला दौडिवासूं लंघनका करिवासूं घणा पेदसूं पेडूमैं कहींतरैकी चोटलागिवासूं पेडूमैं गोल गांठि पडिजाय तदिवेठै पीडहोय औगांठिवडीवढीथकी हालैनहीं गर्भकीसीनाईं रहै वैठेसूल चालै फुरकै उठे दाह घणो होय वेगांठीनैं हाथसूं पीडै तदि मूतकी बूंद ऊतरै अर घणी पीडै तदि मूतकी धारऊतरै अर पीड निपट घणीचालै शस्त्रकीसीचोट लागीसिरीसी ईनैंवस्ति कुंडलिरोग कहिजे यो रोग असाध्यछै. ईरोगवालो मरिजाय १३ अथ मूत्राघातरोगको जतनलिष्यते नरसलकीजड डांभकी जड कांसकीजड साठीकीजड षरैंटीकीजड यांको काढोकरि ठंढोकरि तीमैं सहतनाषि पीवैतो मूत्राघात रोगजाय १ अथवा कपूरनैं जलसूं मिहीवांटि अरमिहीवस्त्रकै वैंको लेपकरि वेंकी वातीकरै पाछै वेवातीनैं इंद्रीमैं मेलैतो मूत्राघातको रोगजाय २ अथवा धणो गोषरू यादोन्यांको काढोकरि ईकाढाका रसमैं घृतपकाय योघृत षायतो मूत्राघात मूत्रकृच्छ्र अरशुक्रको दोषयेतीन्यूंजाय ३ इतिधान्यगोक्षूरकोघृत अरजितनाजतन मूत्रकृच्छ्र अर पथरीका रोगका

न. टी. विडघातरोगनैं विटघातकहैछैं. सोरोगघणांदिनांका मूत्राघातवा. मूत्रकृच्छ्रजो रोगसांकाविनाउपचारका होवासूं मिथ्याआहारविहारसौं कुपथ्यकाकरिवासौं बस्तिकैभी तरलाअवयवसड जायछै. जदांमलमूत्रको एकमार्गहोयछै.

छे सोजितनाही मूत्राघातका जाणिलीज्यो ४ येभावप्रकासमें लि ष्याछे. अथवा तेवरसीकाबीज टंक ५ धणो टंक ५ यांनें रातनेंभेय पाछे वेही पाणीमें परभातिवांटिछाणि सींधोलूण टंक १ नाषि पी वैतो मूत्राघातजाय ५ अथवा पाटलवृक्षकोपार टंक २ संचरलूण टंक १ येदोन्यूं सुराकै साथि पीवैतो मूत्राघात जाय ६ अथवा पीवाकी दारूमें षाटी दाड्यूंको रसनापि अर वेमें इलायचीनाषि पीवैतो मूत्राघात रोग जाय ७ यो वृंदमेंलिष्योछे अमूवा सिलाजी तको सेवन करैतो मूत्राघात जाय ८ अथवा कौंछका बीज टंक ५ पीपलि टंक १ तालमषाणा टंक १ मिश्रीटंक १० मिनक्कादाप टंक १० यांनेंमिहीवांटि गरम दूधमें सहतघृतसूं पीवैतो शुक्रका रोकिवाको मूत्राघात जाय ९ अर इह प्रयोग वंध्याकै पुत्र उपजा वावालोछे. येसर्व संग्रहमें लिष्याछे. अथवा चित्रक ऽ॥ गोरीसर टंक ५ षरैटीकीजड टंक १० दापआध पाव ऽ इंद्रायणकी जड टंक ५ पीपलि टंक ५ त्रिफला टंक १० महुवो टंक १० वडा आं वला टंक १०० पाणीसेर १६ में यांकोकाढो करै पाछे यांको चतु र्थांश आय रहै तदि ईनें उतारिछाणिले पाछे ईकाढामें घृतसेर ४ नाषि पकावै तदि औषदि अरपाणी बलिजाय घृतमात्र आय रहै तदि ईनें छाणिले पाछे ईमें वंसलोचन अधपाव ऽ= नाषे पाछे रो जीना अधपाव ऽ= षायतो सर्वप्रकारकावीर्यका दोषनें योघृत दूरि करैछे. अरस्त्रीकै गर्भनेंकरैछे अर मूत्राघातनें प्रदररोगनें जोनि कादोसनें मूत्रकृच्छ्नें यां सर्वरोगांनें दूरिकरैछे. १० इतिचित्रका द्यंघृतम् यो चरकमेंलिष्योछे. अथवा त्रिफलाको काढोकरि तीमेंगु डदूध नाषिपीवैतो मूत्राघातको रोगजाय ११ अथवा पाटल अ

न. टी. जींरोगनैं महानऔषधी. रसादिकसेवनकरावैतो आरामहोय. अरजोविद्वानवैद्य हैसोइसामोठारोगांनैंजीतैछै. ज्यांकीकीर्तिअरनामजगतमैंविष्यातरहैछै. परंतु वैद्यनैंआततांईहो य करजतननहींकरणो. धीरजसौंकरणो.

रल्लू नींबकीछालि हलद गोषरू पलासकी वकल येबराबरिले यांको काढोकरितीमें गुडनाषि पीवैतौ मूत्राघात रोग जाय १२ अथवा सुंदर अर चतुरस्त्रीसूं मैथुन करैतौ मूत्राघात जाय १३ ये सर्व आत्रेयमें लिष्याछै. इति मूत्राघात रोगकी उत्पत्तिलक्षण जतनसं०

अथ मूत्ररोधको जतन लिष्यते योजतन मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात कोछै सोही ईका जाणिलीज्यो. क्यूंविसेषछै सो लिषूंछूं. काकडाका बीज त्रिफला सींधोल्लूण यांनै बराबरिले पाछैयांनैं टंक ५ मिहीवांटि छाणि गरमपाणीसूं पीवैतौ मूत्ररोधजाय १ अथवा तिलांनैं कांकडानैं दग्धकरि तींकोषार काढि ओषार टंक २ दहींसहतकैसाथि लेतौ मूत्ररोध रोगजाय २ अथ मूत्रनिपट गरमऊतरै तींको जतन लिष्यते चंबेलीकीजडनें बकरीकादूधसूं वांटि पीवैतौ योरोग जाय ३ अथवा कमलकी जडनें गोमूत्रसूं वांटि वेमैं तिलमिलाय पीवैतौ मूत्ररोधजाय ४ इति मूत्ररोधका जतन संपूर्णम् येआत्रेयमें लिष्याछै. अथ अस्मरीरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते अस्मरीनें लोकीकमें पथरी कहैछै. सो पथरीकोरोग च्यारि प्रकारको छै. वायको १ पित्तको २ कफको ३ वीर्यका रोकिवाको ४ यांचा य्यांमें कफमिल्योछै ये जमरूपछै अथ पथरीकी उत्पत्ति कहैछै. पेडूमें रहतोजोपवन सो पेडूकावीर्यनें पेडूका मूत्रनें पेडूकापित्तनें पेडूका कफनें सुकाय करिकै पथरीनें क्रमसेती उपजाय देछै. अठै दृष्टांतदीजैछैजैसे गऊकापित्तामें गोरोचन वधिजाय तैसैपुरसकै पथरीपैदाहोय अथ पथरीको पूर्वरूप लिष्यते पथरीकोरोगसन्निपातसूं पैदाहोयछै. पथरी वालाका मूतमें मस्तवकराकीसीगंध आवै

---

* तिलकालानवा. काकडानवा. दोऊऔषधीसमभागलेकरलोहकीकडाहीमैंजलावैजतनसूं घणीनिर्जीवकरैनहीं. बुझायकरठंडीहोयजदांकडाहीमें वारीकपीसिकरदुजावर्तनमैंभिजोवै. घणापाणीमैंमसलकरऊपरलोपाणीनीतऱ्यापाणीनैंकडाहीमैं औटावै जलमात्रवलजायकटाईकै नीचैक्षारहोयकरवाकीरहैसोक्षारलेणो.

पेडूमें आफरो होय पेडूमें पीडघणीहोय अरमूतबडा कष्टसूं ऊतरै ज्वरहोय भोजनमें अरुचिहोय येपथरीका पूर्वरूपका लक्षणछै. अथ पथरीरोगको सामान्यलक्षणलिष्यते नाभिमें मूत्रकीनसामें पेडूमें माथामें यांमैपीडघणीहोय मूत्रकी धारबंधि येकपडैनहीं मूतको मार्गरुकिजाय अरवापथरी मूतका मार्गनै छोडिदे तदि ईंपुरषकै सुष उपजै मूत आछीतरै पीलो ऊतरै अर वाकोपक्कप्राप्तिहोय तदिलोहीनैंलीयां वडी पीडानैं लीयां मूतै. अथ जीमैं वायघणीहोय इसीपथरीकोलक्षणलिष्यते. जीमैं मूततां पीड घणी होय दांतानैं चावें मूततां कांपण लागिजाय मूततां इंद्रीमें पीडहोय नाभिमें पीडहोय मूततां पुकार उठै मूततां मल करिदे मूतकी बुंदबुंद ऊतरै पथरीकोरंग कालो होय अर पथरी कांटासा होय येलक्षणहोय जीनैं वायकी पथरीको रोग कहिजै. १ अथ पित्तकीपथरीको लक्षणलिष्यते. पेडू अग्निसिरीसो वलैजाणिजै राधिसरीसो पकिगयोछै अथ पथरीविदामका छ्यौडासिरीसी होय अर पीली होय लालहोय सुपेदाईनेंलीयां येलक्षण होय तीनैं पित्तकी पथरी कहिजै २ अथ कफकी पथरीको लक्षण लिष्यते पेडूमें पीडघणी होय पेडूसीतलहोय अर भार्‍यौ होय अर वेंकीपथरी चीकणी गिलगिली होय अर सुपेदहोय अर कूकडाका अंडाकी बराबरिहोय येजीमें लक्षण होयतीनैं कफकीपथरी कहिजै. ३ अथ शुक्रकारोकिवासूं उपजीजोपथरी तींको लक्षण लिष्यते. जोवडो पुरप तींकै मैथुन करिवाकी इच्छा होय अर ओ शुक्ररोकै कहींतरै जावादेनहीं तींकै शुक्रकी पथरीपैदाहोय इंद्रीअर पोतांकैवीचिआपवनवीर्यनै सुकाय पथरीकरिदेपाछै वापथरी पेडूमें पीडचलावें मूत महाकष्टसूं

न. टी. अस्मरीनामपथरीहोयछै. जींकीरहवाकीजगांमूत्रवस्तिकैपासमूत्रकामार्गरोकैछै. सोवापथरीइंद्रीअरअंडकोसकैबीच० सीवणनैं जठैपोलकीजायगांछै जठैगोलाकारतथाक्यूकलंबीगोलाकारमुरमीकाअंडाजीस्यांजीकैंपुडतकांदाकासाहोयछै.

उतरिवादे पोतासूजिजाय वेंकोशुक्रजातोही रहै अरओ इंद्रीनेंपी डाकरै तदि इंद्रीद्वारा शुक्रनीसरै अथवा ओइंद्रीनें पीडित करै त दिवाय हैसो वे पथरीकानिपट छोटारेतसिरीसा टूकडा करिदे तदि ईनें शर्करा कहैछे. ४ अथ पथरीका उपद्रवलिष्यते सरीर दुबलो होजाय सरीरमैं पीडा होय कूषिमैं सूल होय अरुचिहोय सरीर पीलो होय मूत्राघात होय अर नाभिपोता सूजिजाय मूतरुकिजाय येईकाउपद्रवछे. अथ पथरीरोगका जतनलिष्यते. सूंठि अरएयू पा षाणभेद कूठ वरण्यो गोषरू अरंडकी छालि किरमालाकीगिरि ये बराबरिले यानें जौकूट करि टंक ५ कोकाढो करैतीमैं सेकीहींग ज वषार सींधोलूण येनाषि पथरीवालो मनुष्य ईकाढानें पीवैतो वें कोपथरीकोरोग मूत्रकृच्छ्र ये दोन्यूं दूरिहोय अरये कोठाकी वा यनें ववासीरनें उपदंसनें यो दूरिकरैछे. अर योदीपनपाचनछे. १ इतिसुंठ्यादिक्काथः अथवा इलायची पीपलि महुवो पाषाणभेद पित्तपापडो गोषरू अरडूसो अरंडकीजड येबराबरिले यानें जौ कूटकरि यांकोकाढोकरै ईकाढामैंशिलाजीत नाषिपीवैतो पथरीनें मूत्रकृच्छ्रनें योदूरिकरैछे.

इति एलादिक्काथः २ अथवा पेठाकारसमैं सेकीहींग जवषार नाषि पीवैतो पेडूकी पीडनें पथरीकारोगनें योदूरिकरैछे. ३ अथवा वरण्याकीछालि पाषाण भेद सूंठि गोषरू यांको काढोकरि जवषा र नाषि पीवैतो पथरीनें दूरिकरैछे. ४ अथवा गोषरूको चूर्णकरि टंक ५ तीमैं सहत मिलाय भेडका दूधसूं पीवैतो पथरीको रोग जाय ५ अथवा वरण्याकीजडको काढो करितीमैं गुडनाषिपीवैतो पथरीका रोगनें पेडूकी सूलनें योदूरिकरैछे ६ अथवा आदाकोरस

न. टी. पथरीकारोगपरउपचारशास्त्रकीरीतसौघणांछै. परंतु मोटी हुवापाछैईको इलाज होणो मुसकलछै. कारणवापथरी अनुक्रमसौंवधीथकीकठणघणी होयछै. सरीरकागरमास सौं पकजायछै. जीसौं महाकष्टहोयछै.

जवषार हरडैकीछालि मलयागिरिचंदन यांको काढो करै तीमैं हींगनाषि पीवैंतौ पथरी जाय ७ अथवा वरण्याकी वकल टका १०० भरले तीनैं चौगुणापाणीमैं औटाय तींकोचोथो हिंसो रापै तीमैं गुड टका १०० सोभरकी चासणी करै तीचासणीमैं सूंठि टका १ पेठाकाबीज टका १ बहेडाकीमींगी टका १ बथवाकाबीज सहजणाकाबीज येदोन्यूं टका एकेक भर नापै दाप टका २ इलायची टका १ हरडैकी छालि टका १ वायविडंग टका १ यांको चूर्ण करि वेमैंनाषै पाछै यांको येकजीवकरि रोजीना टका २ भर पायतौ पथरीजाय ८ इति वरण्यादिगुडको अवलेह अथवा मजीठ तेवरसीकाबीज जीरो सौंफ आंवला बोरकी मींगी सोधीगंधक आंवलासार मैणसिल ये बराबरिले यांनैं मिहीवांटि टंक १ रोजीना सहतकै साथि षायतौ पथरी निश्चैजाय ९ अथवा कुलत्थ टका २ भर तींको काढोकरि तीमैं सींधोलूण मासा २ सर पषांको रसमासा २ नाषिपीवैंतौ पथरीजाय येसर्व भावप्रकासमैं लिष्याछै १० अथवा हलदको चूर्ण टंक ५ गुड टका १० कांजीमैं मासो १ नापि पीवैं तौ पथरीइंद्री द्वाराझडिपडै ११ अथवा संचरलूण सहत दूध तिलांकी नालिकीराष पीवाकी दारूमैं नाषि दिनतीन पीवैंतौ पथरी जाय १२ योचक्रदत्तमैं लिष्योछै. अथवा तिलांकी नाली कोषार टंक २ सहत टंक ५ ये दूधकै साथि दिन १५ पीवैंतौ पथरी निश्चै झडिपडै १३ अथवा गोलकाकडीकी जड टंक २ तीनैं रातनैं भेवैं पाछै ईनैं परभात वेहीपाणीमैं वांटि दिन ७ पीवैंतौ पथरी इंद्रीद्वाराझडिजाय १४ येराजमार्तंडमैं लिष्याछै. अथवा कुलत्थ सींधोलूण वायविडंग सार मिश्री सांठाकोरस जवषार पेठाकोरस तिल

न. टी. पथरीनैंविलायतीवैद्य अथवा हिंदुस्थानीवैद्य. तथाकाविलज्जरा. नस्तरविद्यामैं निपुणहोयछै. सोईपथरीनैं उठासौंचीरकरसाबूतकाढदेवैछै. अरमनुष्यकै आरामहोयछै. पछैतोतगदीरकीवातछै. ईरोगवालाकौजीणासौंमरणौभलो.

षार पेठाकाबीज गोषरू यांको काढो करि ईंकाढामैं गऊकोघृतप काय टका १ भररोजीनाषायतौ पथरीनैं मूत्रकृच्छ्रनैं मूत्राघातनैं शुक्रकाबंधनैं यांसारांरोगांनैं यो दूरिकरैछै. १५इतिकुलत्थाद्यंघृतम् योवृंदमैं लिष्योछै. अरमूंग जव गोहूं चावल दूध घृत टींडस्यां सीं घोल्लूण ये ईंरोगनैं पथ्यछै. इति अस्मरीनाम पथरी रोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम् अथ प्रमेह रोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनलिष्यते. घणांबैठिवासूं घणा सोवासूं घणादहींका षावासूं नवीन पाणीका पीवासूं बकरा भेडका मांसका षावासूं गुडनैं आदिलेर घणां मीठा षावासूं कफकारी जोवस्ततींका षावासूं घणा श्रमकाकरिवासूं घणां मैथुनकाकरिवासूं तावडाका रहवासूं विरुद्धभोजनसूं गरम भोजनकरिवासूं घणामद्यका पीवासूं षाटा कडवा रसका षावासूं पुरषकै प्रमेहको रोग पैदा होयछै. अथ कफका पित्तकावायका जो प्रमेह त्यांकी संप्राप्तिनाम जनमसो लिष्यते. कफहैसो पेडूमैं प्राप्त हुवो जोमेद अरमांस अर शरीरको जल तीनैं दूषितकरि अर कफका प्रमेहनैं करैछै ऐसेही पित्तहैसो गरम द्रव्यांसूं कुपितहुवोथको पेडूमैं प्राप्तहुवो जोमेद अरमांस अर सरीरको जल त्यांनै दूषित करि अर पित्तका प्रमेहनै करैछै. ऐसेही वायहैसो आपकी अपेक्षा करि आपसौं क्षीण जोकफपित्त तीनें क्षीणहुवांथका पेडूमैं प्राप्तहुवो जो शुद्धमांसको स्नेह तीनैं मींजीनै अर सरीरका जलनैं पेडूकी नसांका मूंढामैं प्राप्तिकरि वायका ४ प्रमेहनैं करैछै. अर कफकातो १० प्रमेह साध्यछै क्यूंदोष दुष्याकासमान जतनथकी अर पित्तका प्रमेहछै ६ सो जाप्यछै जाप्यकाईंजतनकिये दब्यारहै क्यूं यांकाविषम जतनछै. क्यूं दोष दुष्यांका विषमपणाथकी ऐठै दोष

---

* प्रमेहरोगनैं शास्त्रमैं प्रमेहकहैछै. अरुदेस भाषामैंपरमोकहैछै. अरुसुजाकरोगभी परमाकोभेदछै. ओपरमाका भेदतो अनेकछै. परंतु मुख्यतो वात. पित्त. कफयांसूं होयछै. परमाको रोग उतपतहोतांहीउपावठीकछै.

दूषितछै. अर दुष्य रसमांसादिकछै. सीतल मधुरादिकपित्तहारी द्रव्यछै. अर वायका प्रमेहच्यारिसो असाध्यछै. वैजायनहीं क्यूं मीजीनैं आदिलेर वैगंभीरधातुछै. सोसर्व सरीरव्यापीछै अर सरीरका विनास कारीछै ईंकारणसूं वायका प्रमेह असाध्यछै.

अथ प्रमेहवीस २० प्रकारकोछै. त्यांकानामलिष्यते उदकप्रमेह १ इक्षुप्रमेह २ सांद्रप्रमेह ३ सुराप्रमेह ४ पिष्टप्रमेह ५ सुक्तप्रमेह ६ सिकताप्रमेह ७ सीतप्रमेह ८ शनैप्रमेह ९ लालाप्रमेह १० ये दसतो कफका प्रमेहछै. अरक्षारप्रमेह १ नालप्रमेह २ कालाप्रमेह ३ हरिद्राप्रमेह ४ मंजिष्ठप्रमेह ५ रक्तप्रमेह ६ येछह ६ पित्तका प्रमेहछै. अर वसाप्रमेह १ मज्जाप्रमेह २ मधुप्रमेह ३ हस्तिप्रमेह ४ ये वायका जाणिजे ये २० वीस प्रमेह वाग्भट्ट सुश्रूत चरकभावप्रकासादिककामतसूंछै. अर आत्रेयजीका मतसूं विसेसछै. सो लिषूंछूं पूयप्रमेह १ तक्रप्रमेह २ पीडितका प्रमेह ३ शर्कराप्रमेह ४ घृतप्रमेह ५ अतिमूत्रप्रमेह ६ येप्रमेह आत्रेयका मतसूं विशेष लिष्याछै. अथ प्रमेहको पूर्वरूप लि० दांत तालवो जीभ यांकै मेल घणोहोय हाथ पगांकै दाहहोय देह चीकणीहोय तिस घणी लागै मूंढो मीठोरहै ये लक्षण होय तदि जाणिजे प्रमेह होसी अथ प्रमेहको सामान्य लक्षण लिष्यते घणो जाडो अर घणोपतलो मूत्र होय तदि जाणिजे ईंकै प्रमेहको रोगछै अथ कफका दस १० प्रमेहछै त्यांका अनुक्रमसूं लक्षण लिष्यते अथ उदकं प्रमेहको लक्षण लिष्यते निर्मल मूतै घणो मूतै सुपेद मूतै सीतल मूतै गंध रहित मूतै जलसरीषो मूतै क्यूंयेक जाडोअर चीकणो

न. टी. असमरी. प्रमेह प्रमेहपीठिकायांनैंपथ्यलि० मूंग. गहू. जूनाचावल. चंदलेई. वमन लंघन. स्नान. इ० कुपथ्यलि० मलमूत्रका. शुक्रकाअवरोध नामवेगरोकणा. जडअन्न. दिनमैंनिद्रा. एकजायगांबैठणो. दही. नवीनजल. गुड. मांस. कफकारीवस्तु. हुषो. श्रम. मैथुन. इ०

मूतै तीनैं उदकप्रमेह कहिजे १ अथ इक्षुप्रमेहको लक्षण लिप्यते साठाको रससिरिसो निपट मीठोहोय तीनैं इक्षुप्रमेह कहिजे २ अथ सांद्रप्रमेहको लक्षण लिष्यते जैसे वास्यो पाणी पड्योथको वासणमें जाडोहोयजाय तिसोजाडोपुरस मूतै तीनैं सांद्रप्रमेह कहिजे ३ अथ सुराप्रमेहकोलक्षणलि० जींकामूतमैं दारूकीसी वासआवै अरवेंको मूतऊपरतो निरमल दीसै अर नीचै जाडो होय तीनैं सुरा प्रमेहकहिजे. ४ अथ पिष्ठप्रमेहको लक्षणलिष्यते चावलांनै आदिलेर जो चून तीनैंपीसि तींका पाणीसिरीसो मूतै सुपेद कष्ट करिकै अरमूततां रोमांच होय आवै तीनैं पिष्टप्रमेह कहिजे ५ अथ सुक्र प्रमेहको लक्षणलिष्यते वीर्यसिरीसो मूतै अथवा वीर्यनै लीयां मूतै तीनैं सुक्रप्रमेह कहिजे ६ अथ सिकताप्रमेहको लक्षणलिष्यते वीर्यकीरेतनें लीयां मूतै तीनैं सिकताप्रमेह कहिजे ७ अथ सीतलप्रमेहको लक्षणलिष्यते वारंवार मूतै घणो सीतल मूतै तीनैं सीतल प्रमेह कहिजे ८ अथशनैःप्रमेहको लक्षणलि० सनैंसनैंनिपट मंदमंद मूतैतीनैं शनैःप्रमेह कहिजे ९ अथ लालाप्रमेहको लक्षणलि० लालकी तांतिनेंलीयां मूतै तीनें लालाप्रमेह कहिजे १० यहदस कफका प्रमेहछै. अथछै ६ पित्तका प्रमेह तीमैं प्रथम क्षारप्रमेहको लक्षणलि० जींकामूत्रमैं षारकोसोवर्ण होय अरषारकोसोही वे मूतका रसको स्पर्शहोय अरषारका पाणीसिरीसो मूतै तीनैं षारप्रमेह कहिजे १ अथनीलप्रमेहको लक्षणलि० जींको मूतनीलटांचका रंगसिरीसो ऊतरै तीनें नील प्रमेह कहिजे २ अथ कालप्रमेहको लक्षणलि० स्याहीसिरीसो कालोमूतै तीनैं कालप्रमेहकहिजे ३ अथ हरिद्रा प्रमेहको लक्षणलि० हलदका

न. टी. प्रमेहवीसजातका. जीमैंकफका १० पित्तका ६ वायका ४ अर आत्रेयऋषीकाम तसौछवअधिकछै. जींकोनिदानऊपरलिष्योछै. परंतुयामैं जोवायका ४ स्यारछै. सोअसाध्यछै. अरवाकीकासाध्यछै.

रंगसिरीसो मूतै अर करडो मूतै तीनैंहरिद्राप्रमेहकहिजे ४ अथ मंजिष्ठप्रमेहको लक्षणलिष्यते मजीठका पाणीकारंगसिरीसो मूतै अरजीमैं दुरगंधि आवै तीनैं मजीठप्रमेह कहिजे ५ अथ रक्तप्र मेहको लक्षणलिष्यते लोहीसिरीसो मूतै जीमैं दुरगंधिघणी आवै अरगरम मूतै अर लूणनैंलीयां मूतै इनैं रक्तप्रमेह कहिजे ६ ये पित्तका ६ प्रमेहछै. अथ वायका ४ प्रमेहछै तीमैं प्रथम वसा प्र मेहको लक्षणलिष्यते शुद्ध मांसको जोघृत तीनैं लीयां मूतै अर वैंको रंगनैलीयां मूतै तीनैं वसा प्रमेह कहिजे १ अथ मज्जाप्रमे हको लक्षणलिष्यते हाड मांहिलीमींजीनैं लीयां मूतै अर वैंका रंग सिरीसो मूतै अर वारंवार मूतै तीनैं मज्जाप्रमेह कहिजे २ अथ क्षौद्रप्रमेहको लक्षण लिष्यते कषायलो जींको मूत होय सहतसि रीसो जींको मूत मीठोहोय अर लूषो मूत होय तीनैं क्षौद्रप्रमेह क हिजे. ३ अथ हस्तिप्रमेहको लक्षणलि० हाथीकोमद चूवैजीयान मूत्रझरबोही करैजीनैं हाथीप्रमेह कहिजे ४ ज्यांपुरुषांकै कोईप्रमे हहुवैछै. अरवै पुरस जतन करैनहीं अर प्रमेहानैं दिन घणांलाग जाय अर वेपुरष कुपथ्य करवोकरै तदिवा पुरुषांकै मधुप्रमेह हो जाय येमधुप्रमेह असाध्यछै. अथ कफका प्रमेहका उपद्रवलि० अन्नपचैनहीं भोजनमैं अरुचिहोय छादणी होय नींद घणी आवै षासीहोय पीनसहोय येकफका प्रमेहका उपद्रवलिष्याछै. अथ पि त्तका प्रमेहका उपद्रवलि० पेडूमैं इंद्रीमैं सूलहोय पोताफाटण ला गिजाय ज्वरहोय आवै मोहहोय तिसहोय षाटीडकार आवै मूर्छा होय अतिसारहोय येपित्तका प्रमेहका उपद्रवछै. अथ वायका प्र मेहकौ उपद्रवलि० जीमैं उदावर्तको रोगहोय आवै सरीरकांपै ही

न. टी. नीलप्रमेह अरकालप्रमेहनामछै. सूंनीलोअरकालोजाणज्यो. यांकालक्षणसूं वि चारणा. अरप्रमेहकारोगीनैं दूधकोसेवननहींकरणो योग्यछै. जोकोईवी प्रमेहीमनुष्यदूधको षान पानकरसीजींकोवैद्य मंगलगायनकरसी.

योदूषै सर्वरसका षावाकी इच्छारहै पेटमैं सूलचालै नींद आवै नहीं सरीर सूजिजाय षासीहोय स्वास होय ये वायका प्रमेहका उपद्रवछै. अथ प्रमेहको असाध्यलक्षणलि० वायपित्तकफका जो प्रमेहछै. वांउपद्रवांसूं युक्त जींपुरषकै जोप्रमेहहोय सो पुरष असाध्यजाणिजै वोपुरषमरिजाय. अर प्रमेहकीदस पीडिका कहिजैछै तींपीडका संयुक्त जोपुरष होय सो पुरष मरिजाय याउपद्रवांसंयुक्त होयतो. अथआत्रेयका मतका प्रमेहछै ६ त्यांका नाम अर लक्षणलिष्यते. पूय प्रमेह १ तक्रप्रमेह २ पीडिकाप्रमेह ३ सर्कराप्रमेह ४ घृतप्रमेह ५ अतिमूत्रप्रमेह ६ अथ पूयप्रमेहको लक्षणलि० जींका मूतमैं राधिपडैअरराधिकीसी वेमैं वासआवै तीनैं पूयप्रमेह कहिजे १

अथ तक्र प्रमेहको लक्षण लिष्यते जींकोमूत छाछिसिरीसोऊतरै. अरवेंका मूतमैंछाछिसिरीसीवासआवै तीनैं तक्रप्रमेहकहिजे २ अथ पीडिकाप्रमेहको लक्षण लि० जींकामूतमैंफिदडकी वीर्यकी पडै तीनैंपीडिकाप्रमेह कहिजे. ३ अथ शर्कराप्रमेहको लक्षण लि० जींकोमूतमिश्रीसिरीसो मीठो होय अरजींका मूतकोवर्ण मिश्रीसिरीसोहोय तीनैं शर्कराप्रमेह कहिजे. ४ अथ घृतप्रमेहको लक्षण लि० जींकोमूतघृतसिरीसो स्वादहोय अरघृतसिरीसोही वर्णहोय तीनैं घृतप्रमेहकहिजे ५ अथ अतिमूत्र प्रमेहको लक्षण लि० जीं पुरसकै मूत्ररात्रिअरदिनमैं घणासूं घणो ऊतरै अर ओ पुरषनिबलपडिजाय तीनैं अतिमूत्र प्रमेहकहिजे ६ ये आत्रेयकामतकाप्रमेहछै. अथ प्रमेहवालाकौ दस १० जातिकी प्रमेहपीडिका होयछै

---

* पृष्ठ २४४ पंक्ति १ इक्षुप्रमेहनामकफकादशप्रमेहामैंचालतांहीदूजोप्रमेहछै. जींमैं मोठीआश्चर्यरूपीवातलिषीछै. जींवास्तैदुजाग्रंथमैंलिषीछै. सोयोटिप्पणमैंलिषूंछूं. इक्षुप्रमेह. सांठातथाऊंसकारससिरीसोमीठोहोयछै. यावातसत्यछै. परंतु. ईंकीपरिक्षाकिसतरैहोयतोपरिक्षां कीडीतथाचीठीजोप्रमेहपरबहुधाआयचिपटैसोइक्षुप्रमेहजाणज्यो.

त्यांका नाम लिष्यते शराविका १ कछपिका २ जालिनी ३ विनि
ता ४ अलजी ५ मसूरिका ६ सर्पपिका ७ पुत्रिणी ८ विदारिका ९
विद्रधी १० अथ पीडिकाको लक्षण लिष्यते शरीरका ढूंगानें आ
दिलेर जोपुष्टस्थान त्यांका जो मर्मस्थान कैविसें दस १० संधिउ
पजैछे तीनेंपीडिका कहिजे १ अथ शराविकाको लक्षण लि० वा
फुणसीहैसो ऊपरतो ऊंची वीचमें जींकैपाडो तीनें शराविका कहि
जे १ अथ कछपिकाको लक्षण लिष्यते. पाछै कह्याजो सरीरकापुष्ट
स्थानाके विषै सरस्यूं प्रमाणजो फुणसीहोय दाहनेलीयां काछवा
के आकार तीनें कछपिका कहिजे. २ अथ जालिनीको लक्षण लि
ष्यते जींकै फुणसीमें दाहा घणो होय अर वामांसका समूहमें होय
तीनें जालिनीकहिजे ३ अथ विनीताको लक्षण लिष्यते जींफुण
सीमें मांहि पीडाहोय वाफुणसी वडीहोय अरपीठीपीछे होय अर
वाउदरमैंहोय वेनें विनीता कहिजे. ४ अथ अलजीको लक्षण लि
ष्यते जोवाफुणसी लाल होय काली होय वहोत फाटै पीड घणी
होय वेनें अलजी कहिजे ५ अथ मसूरिकाको लक्षण लिष्यते जोफु
णसी मसूरकै प्रमाण होय अर मसूरको सो रंगहोय वेनें मसूरिका
कहिजे. ६ अथ सर्षपिकाको लक्षण लिष्यते जोफुणसी सरस्यूं प्र
माण होय सरस्यूका रंगसिरीसो रंग होय तीनें सर्षपिका कहिजे ७
अथ पुत्रिणीको लक्षण लि० जोफुणसी उठतीही वडीऊठैतीनें पु
त्रिणी कहिजे. ८ अथ विदारिकाको लक्षण लि० जोफुणसी विदा
रीकंद सिरीसीगोल होय अर करडी होय अर ऊसोहीरंगहोय
तीनेंविदारिकाकहिजे ९ अथ विद्रधीको लक्षण लि० विद्रधीरोग ६
छे. प्रकारकोछे तींको लक्षण आगेलिषस्यांसो उठेजाणिलीज्यो ये

न. टी. प्रमेहपीडिकारोगदसप्रकारकोछै. योरोगप्रमेहरोगमैंउपचारपूरोनहींवण्योहोयजींकै मर्मस्थानमैं वाघणांजाडामातास्थानमैं फुणस्यांहोयछै. थोडीहोयवाघणीहोय परंतु फुणस्यां कालक्षणप्रमेहपीडिकामैंमिलैछै.

दस १० पीडिकाछै सोप्रमेहवाला रोगीकै होयछै त्यांही कारणांसूं पुरुषांकौ पीडिका दस होय अरज्यां पुरुषांकैसरीरमैं मेददुष्टहुवोछै त्यांकै प्रमेहविना भी ये दस पीडिका होयछै. अथ दस १० पीडिका काउपद्रव लिष्यते तिप षासी मांसकोसंकोच मोह हिचकी मंदज्वरवि सर्प मर्मकोरोकिवो येयांकाउपद्रवछै. अथ पीडिकाका असाध्य लक्षण लि० गुदाकै हीयाकै मस्तगकै कांधाकै मर्मस्थानकै मंदाग्निवालाकै यांस्थानामैं फुणसीहोय तीनैं असाध्य कहिजे केईक आचार्यांको मतछै स्त्रियांकै प्रमेहकोरोग होय नहीं क्यूंस्त्री हैसो महिना की महिनो स्त्रीधर्म होयछै. तींसेतीस्त्रीकासरीरका सारारोगजाता रहैछै. अथ प्रमेह जातोरह्यो होय तींको लक्षण लिष्यते जींको मूत निर्मलहोजाय अर पतलोपाणीसिरीसो होजाय अरजींकोमूत कडवो अरतीषो होजाय तींकै प्रमेह गयो जाणिजे. अथरक्तपित्त रक्तप्रमेहको भेदलि० जींकासरीरको हलदसिरीसो वर्ण होजाय अरजींको मूत लोही सिरीसो होजाय तींकैरुधिरप्रमेह जाणिजे नहीं. वेंकै रक्तपित्तको कोप जाणिजे अथ प्रमेहरोगका जतन लिष्यते प्रमेहवालानैं इतनी वस्तषावो ज़ोग्यछै. सांऊं कोद्रू. गोहूं. चणा अरहड कुलत्थ. जव. मूंग. मौठ साठ्याचावल येसारापुराणा षावो जोग्यछै अरतीषा साग पत्र अरहिरणको मांस इत्याप्रमेहवालाकै येकुपथ्यछै. गुडनैं आदिलेरमीठीवस्त दूध घृत तेल छाछि दारुपीवाकी षटाई सांठाकोरस पिस्यो अन्न अनूपदेसको मांस येप्रमेहवालानैं वरज्याछै अर कफका दसप्रमेहछैतीनैं यो काढो योग्यछै नागरमोथो हरडैकीछालि लोद कायफल येबराबरिले यांनैं जौकूटकरि टंक ५ ईंको काढो रोजीना सहत नाषिलेतो

न. टी. वैपीठिकादशलक्षणांयुक्तछैज्यांनैंआछीरीतसौंविचारदेषणी. अरज्यांकाउपचार रीतमुजबकरणा. जींमैंसाध्यजाण्प. असाध्यपरलक्षदेणोचाहिजे. अरजोप्रमेहसरीरमांहसौं आतोरह्योहोयजींकालक्षणध्यानमैं राषणा.

कफका प्रमेहजाय १ अथवा पस लोद कहवाकीवकल अर रक्त चंदन येबराबरिले यांनें जोकूटकरि टंक ५ यांको काढो रोजीना स हत नापि लेतौ पित्तका प्रमेहजाय २ येजतनभावप्रकासमेंछे. अथ जलप्रमेहको जतन लिष्यते धवरूपकीवकल कहवारूपकीव कल रक्तचंदन सालरूपकीवकल ईंको काढो लेतौ जलप्रमेहजाय ३ अथ रक्तप्रमेहको जतन लिष्यते वास्यापाणीमेंदापांको सरवतकरेंती में महलौठी सुपेदचंदन नापिपीवैतौ रक्त प्रमेहजाय ४ अथ क्षारप्र मेहको जतन लिष्यते सुंदरस्त्रीकासंभोगसूं क्षारप्रमेहजाय. ५ अ थवा धवरूपकी वकल कहवारूपकी वकल अरलूकीवकल किसो स्या केलीकी माहिली सुपेद वकल कमलकीजड दाप यांको काढो देतौ क्षारप्रमेह जाय. ६ अथ तक्रप्रमेहको जतन लिष्यते लोद कहवाकी वकल पैरनींबका पान आंवला रक्तचंदन यांको काढो करि गुडघालि लेतौ तक्रप्रमेह अर पीडिकाप्रमेह ये दोन्यूं जाय. ७ अथ सुक्तप्रमेहको जतनलिष्यते. दोब मूर्वा डांभकीजड कांस कीजड दांत्युणी मजीठ सालरकीवकल यांको काढो लेतौ शुक्रप्रमे हनें अरु रुधिरप्रमेहनें यांदोन्यांनें योदूरिकरेछे. ८ अथ घृत प्रमे हको जतनलिष्यते त्रिफला. किरमालाकीगिरि अरवेंकीजड मूर्वा सहजणाकापान नींबकापान केलिकीसुपेद वकल मिनक्कादाषयां को काढो देतौ घृतप्रमेह जाय ९ अथ इक्षुप्रमेहको जतनलिष्यते. कूठ पित्तपापडो कुटकी मिश्री यांको काढो देतौ इक्षुप्रमेहजाय १० अथवा अरण्यांकी जड पाडल धमासो अरलू छीलाकी जडयांको काढोदेतौ इक्षुप्रमेह जाय ११ अथपित्तका प्रमेहको जतनलिष्यते.

न. टी. प्रमेहमैंतथापीटिकामैंपथ्यालि० लंघन. वमन. रेचन. चावल. गहूं. मूग. तूर. छाछ. तुराई, घोडाकीसवारी. घणोफिरणो. गरमवस्त्र. इ० कुपथ्यालि० मलमूत्रकारोकणो. घणोबैठरहणो. धूम्रपान. दिनमैंनिद्रा. नवोअन्न. दही. मैथुन. मद्य. तेल. दूध. घृत. गुड इत्यादि.

कमलकीजड कहवाकीवकल इंद्रजव धवकीबकल आमिलीकीव कल आंवला नींबोली यांमैं मिश्रीनाषि पीवैतौ पित्तप्रमेहजाय१२ अथकफका प्रमेहको जतनलिप्यते. वायविडंग राल कहवारूषकी वकल कायफल कदंबकीवकल लोद विजयसार यांको काढो लेतौ कफका प्रमेह जाय १३ अथ संपूर्ण प्रमेहमात्रको जतन लिष्यते. नागरमोथो त्रिफला हलद देवदारु मूर्वा इंद्रजव लोद यांको काढो करि देतौ संपूर्ण प्रमेहमात्रनें अर मूत्रग्रहनें दूरिकरैछे १४ अथवा काकलहरी हरडैकी छालि हलद कहवाकी वकल येबराबरिले यांनैंमिहीवांटि यांकी बराबरि ईमैं मिश्रीमिलाय टंक ५ सहतकै साथि लेतौ सर्व प्रकारकौ प्रमेहजाय १५ अथ मधुप्रमेहको जतनलिष्यते वडकी जडकीवकल अरलूकी जडकीवकल चारोलीकारूपकी वकल आंवलाकी जडकीवकल पीपलकी जडकी वकल किरमालाकी जडकीवकल महलौठी लोद नींबकीछालि पटोल वरण्याकी वकल दांत्युणी मींढासींगी चित्रक कणगचकीजड इंद्रजव त्रिफला सोध्याभिलावा सूंठि कालीमिरचि तज पत्रज इलायची येसर्व बराबरिले यांनैंमिहीवांटि टंक २ सहतकैसाथि रोजीना लेतौ मधुप्रमेह जाय १६ अथवा वडकी जटानें आदिलेर ये औषदिछै. त्यांको काढोदे अथवा योतेलकरै अथवा यांको घृतकरै ईतेलकोतो मर्दन करै अर घृतको पानकरैतौ मधुप्रमेह जाय १७ इतिन्यग्रोधाद्यंचूर्णम् अथवा सोधी सोनामषी पाषाणभेदसोध्यासिलाजीत चंदन कचूर पीपलि वंसलोचन येसर्व बराबरिले यांनै मिहीवांटि

* वीसप्रकारकाप्रमेहछै. ज्यांपरऔषधीघणीप्रकारकीछै. अरुसद्वैद्यकीतर्कतोफेरजुदीही छै. सोलिषूंछूं. एकदिनएकप्रमेहवालारोगीनैं औषधीदेवैछो. जीतामैतोह्मारोएकमित्र अस पतकरणी. दानकही. इणरोगरीतो दवाईगुरासाहरी बताई मनैंयादछै आपद्यो. इलायची छोटीतोला १ फिटकडीतों. १ मिश्रीतों. २ कपडछाण पूडीनग २ दूधरील्हीसीरैसाथदीनौ सूआरामहुवो निजर पुगैतोदीज्यो.

टंक २ सहत टंक १० मिलाय गऊका दूधकैसाथि रोजीना पीवै तौमधुप्रमेहनैं अरमूत्रको अवरोध योदूरि करैछे. १८ येसर्वजतन आत्रेयमें लिष्याछे. अथ चंद्रप्रभागुटिका लिष्यते कचूर टंक १ वच टंक १ नागरमोथो टंक १ चिरायतो टंक १ देवदारु टंक १ हलद टंक १ अतीस टंक १ दारुहलद टंक १ पीपलामूल टंक १ चित्रक टंक १ धणो टंक १ त्रिफला टंक १ चव्य टंक १ गजपीपलि टंक १ जवषार टंक १ साजी टंक १ सींधोलूण टंक १ संचरलूण टंक १ सांभरोलूण टंक १ सार टंक ५ मिश्री टंक २ सोध्या सिलाजीत टंक ४ सोध्योगूगल टका ४ यां सारांनैंमिही जुदा जुदा वाटैपाछे यांसारांनैं येकठाकरि मिलाय यांको येकजीवकरि अर पारो टका १ सोध्योगंधक टका १ अभ्रकटका १ पाछे पारा गंधककी कजलीकरै येसारीऔषदि ईमैमिलावै पाछे मासा ४ च्यारईनैं सहतकैसाथिलेतो सर्वप्रमेहमात्रनैं ववासीरनैं क्षयीनैं वीर्यका दोषनैं नेत्रांका रोगांनैं दांतांका रोगांनैं पांडुरोगनैं पांवनैं सूलनैं उदरका रोगनैं मूत्रकृच्छ्रनैं मूत्राघातनैं फीयानैं षासीनैं कोढनैं यांसारांरोगांनैं योदूरि करैछे १९ इति चंद्रप्रभागुटिका अथवा त्रिफलाटका ४ जीरो टका ४ धणो टका ४ कौछीकाबीज टका ४ छोटीइलायची टका २ दालचिनीटका २ लवंग टका २ नागकेसरिटका २ तुकमरीयाकाबीजटका २ यांसारांनैं मिहीवांटि येक जीवकरै पाछे यांनै मिश्रीघृतमैं मिलाय यांका लाडु टकायेकेक भरकी करैपाछे रोजीना लाडु एक एकप्रातःसमै षायतो प्रमेहमात्रनैं दूरिकरैछे. इति प्रमेहहारिचूर्णं २० अथमधुप्रमेहको जतनलिष्यते सोध्योपारो सोध्यागंधक कहवाकी वकल मिश्री येवराबरिले यानैं षरलमैं मि

न. टी. प्रमेहकारोगींनैंपथ्यकरणोयोग्यछै. जीसौं दव्योरहै. जीसौंप्रमेहवृद्धिपावै इसीवस्तदेणी नहीं. जैसैदूधछै. सोप्रमेहनैं वधावैछै. सोदूधमिलैतौ प्रमेहवहुतवधै. जैसैंथोडीअग्निछै जीनैंपवनकीमदतपूगी अरवधैजैसै.

हीवांटि अर सालरकी जडकी पुट ३ देपाछे परलकरै पाछे ईंकी गोली मासा १ प्रमाण बांधै पाछे गोली १ रोजीना पायतौ मधु प्रमेह जाय २१ अथवा लोद टका १ सहतसूं ले अथवा षैरेटी का काढासूं लेतौ प्रमेहजाय २२ अथवा गिलोय सत त्रिफलासार येतीन्यूं मिलाय टंक १ सहतसूं पायतौ प्रमेह जाय अथवा मिश्री सिंघाडा रेवतचीनी येवराबरिले यांनैमिहीवांटि टंक २ जलकैसाथि रोजीना लेतौ घणादिनकोभी प्रमेह दूरिहोय २४ अथवा पक्कागू लरीकाफल टका १ सींधोलूणकीसाथि षायतौ असाध्यभी प्रमेह जाय २५ अथवा वंगेस्वर रसरती १ सहतसूंले अर ईंऊपरि प क्कागूलरिका फलांकोचूर्ण सहतसूं लेतौ असाध्यभीप्रमेह दूरिहोय २६ अथ वंगेस्वर रसकी क्रियालिष्यते रांग पांव ऽ। चोषोले ईनैंगा लि ईमैं गलतां अधपाव ऽ पारो नाषै पाछे ईकीथालीमैं पतली पाप डी करै पाछे वांका छोटाछोटा टूक करि जुदाराषिजे पाछे छाणा २ था पड्यां बडाबडासेर पांचका गोवरकाकराय येकेकछाणा ऊपरिकेसूला सेर १ को चूर्ण विछावै जुगतिसूं तीमध्ये महदीको चूर्ण सेर १ मिलावै यांदोन्यांकी बीच बीपारारांगका टूकडानैं यां दोन्यांका चूर्णसूं जुग तिसूं दाविदे ऊपरि दूसरो छाणादे पाछे वानैं निर्वातस्थानमैंजुगति सूं फूंकिदे पाछे वानैं स्वांगसीतल हुवां जुगतिसूं काढै वेका फूलासु पेद होजाय ओतोल ऊतरै यावंगेस्वरकी क्रियाछे ईंका गुणको पारनहीं योसर्वरोग मात्रनैं दूरिकरैछे. जुदा जुदा अनुपानसूं इति वंगेस्वर रसकीक्रिया संपूर्णम् २७

अथ सुपारी पाकलिष्यते दीषणी सुपारी टका ८ तीनैं मिहीवां टि गऊको घृत टका ८ तीमैं ईंने ओसणिसेर ३ गऊका दूधमैं

न. टी. सहायतासौं रोगवधैछै. जीवास्तैअठैलिषीछै. रोगकासहायताकापथ्यनहींकरणा. अरयाग्रंथमैं उपाचारतो घणाहीलिष्याछै. अरनिदानबी, घणालिष्याछै. परंतुवैद्यनैं आप कीबुद्धिको विचारकरणो चाहिजै.

ईंको परो मावोकरै पाछै ईमावामैं ये औपद्यां मिहीवांटि नापै सो लिपूंछूं नागकेसरि टंक ५ नागरमोथो टंक ५ चंदन टंक ५ सूंठि टंक ५ कालीमिरचि टंक ५ पीपलि टंक ५ आंवला टंक ५ कोयलकावीज टंक ५ जायफल टंक ५ लवंग टंक ५ धणों टंक ५ चारोली टंक ५ तज टंक ५ पत्रज टंक ५ इलायची टंक ५ दोन्यूं जीरा टंक ५ सींघाडा टंक ५ वंसलोचन टंक ५ यांनैं मिहीवांटि ईमावामैं नापिपाछै मिश्री टका ५० भरकीचासणी करै ईचासणी मैं औपद्यांसमेत मावो नापै पाछै वेंकी टका १ येकेक भरकी गोली वांधै गोली १ प्रभात गोली १ संध्या पायतौ अतना रोगांनैं दूरिकरै प्रमेहनैं जीर्णज्वरनैं आम्लपित्तनैं ववासीरनैं मंदाग्निनैं शुक्रका दोपनैं प्रदरनैं यांरोगांनैं यो दूरिकरैछै. अर सरीरनैं पुष्ट करैछै. २८ अथ सुपारी पाकः अथ गोपरू पाक लिप्यते. गोपरू सेर ऽ॥ आधईनै मिहीवांटि गऊकोघृत सेर १ मैं मकरोवै पाछै गऊको दूध सेर ५ तींमैं ईकोपरो मावो करै ईमावामैं ये औपदि नापै सो लिपूंछूं वीलकीगिरि टंक २ कालीमिरचि टंक २ सार टंक ५ जायफल टंक २ समुद्रसोस टंक २ इलायची टंक २ भीमसेनीकपूर टंक २ पत्रज टंक २ दालचिनी टंक २ हलद टंक २ कूठ टंक २ तालमपाणा टंक २ अफीम टंक २ या औपद्यांसूं आधी भांग यानैं मिहीवांटि वेमैं नापै पाछै सेर च्यारि ४ मिश्रीकी चासणीकरैइचासणीमैं औपद्यांसूंधो मावो मिलावैं पाछै ईंकी गोली टंक ५ प्रमाणकी करै गोली १ रोजीना सधती सधती पायतौ प्रमेहनैं दूरिकरै अर वीर्यको स्तंभकरै स्त्रियांनैंघणीप्रसन्नकरै इति गोपरूपाकः २९ अथवा चित्रक सोधी गंधक सूंठि कालीमिरचि पीपलि पारो सोध्योसींगी

न. टी. ईवास्तैहमारीवार वारलिपणीकीइच्छानिगहसरववाकैतांईछै. चित्तधीरजसौंविचार करउपचारकरो. अरनकातकैतांईप्राकादिकलिष्याछै. जीमैं यथार्थ औषधीकायोगछै. परंतु प्रकृतिरोगीकीदेषकरकमजादाकरणी वैद्यकैहाथछै.

मुहरो त्रिफला नागरमोथो येवराबरिले पाछै पारागंधककीकजली
करैपाछै कजलीमैं येऔषदि मिहीवांटि मिलावैपाछैई कैभांगराका
रसकी पुट १ देषरलकरै पाछैगोली रतीप्रमाणकीबांधै गोली १
रोजीनाप्रभात षायतौ अठराप्रकारका कोढानैं योदूरिकरैछै ३०
इति पंचाननगुटिका येजतन वैद्यरहस्यमैं लिष्याछै भीमसेनीकपूर
मासो १ कस्तुरी मासो १ अफीम मासा ४ जायपत्री मासा ४ यां
सारानैं नागरवेलीकापानाका रसमैं वाटैपाछैरती १ प्रमाणगोली
करै पाछैगोली १ रोजीनादूधमैं मिश्रीनाषि तींकैसाथि लेतौ प्रमेह
मात्र दूरिहोय अरस्तंभनकरै ३१ अथ घृतप्रमेहको जतनलिष्यते
गिलवै चित्रक पाठकूडाकीछालि सेकीहींग कुटकी कूट येबराबरिले
यानैंमिहीवांटि टंक २ जलसूं लेतौ घृतप्रमेहजाय ३२ अथवा आं
वला हलद ये बराबरिले अर टंक ५ यांनै रात्रिनैं भेयपरभात वेही
पाणीमैं वांटिईमैंसहतनाषिरोजीना पीवैतौप्रमेहमात्रजाय १३ अ
थवा सोधीगंधक सोध्योपारोसोधीसोनामषी सूंठि मिरचि पीपलि
त्रिफला सिलाजीत बोरकीमींगी हलद कैथ येबराबरिले पाछै पारागं
धककी कजलीकरै तीमैं येऔषदिमिहीवांटि मिलाय तींकै भांगराका
रसकोपुट २१ देपाछै टंक १ रोजीना षायतौ प्रमेहमात्रदूरिहोय ३४
इतिमेघनादरसः अथवा पारो अभ्रक बराबरिले यांनै आंवलाका
रसमैं षरलकरै दिन ७ पाछै रती १ रोजीनाषायतौ प्रमेह मात्र
जांय ३५ इति हरिशंकररसः अथवा इलायची भीमसेनी कपूर भा
डंगी जायफल गोषरू सालरकीवकल मोचारसपारो अभ्रक बंग
सार येबराबरिले यांनैं षरलमैं मिहीवांटि रती २ रोजीना सहतसूं
प्रमेहमात्रदूरिहोय ३६ इति प्रमेहकुठाररसः अथवा बका

* भीमसेनीकपूरनैं बरासकपूरकहैछै. शास्त्रमैंशुद्धकर्पूरकहैछै. यहीवस्तुपानबीडाआदिलेर घणापदार्थमैंयोजनाकरवो योग्यछै. ईकीसुगंधीघणीश्रेष्ठछै. बलवीर्यनैंवधावैछै. नेत्रकाअंजन मैं कामलागैछै. अरमुषकीदुर्गंधतादूरकरैछै. गरमीनैं. प्रमेहनैं. अरुचिनैं दूरकरैछै.

यणाकाबीज टंक ५ चावलांका पाणीमेंपीसि वेमें गऊको वृत मि
लाय रोजीनापीवैतौ घणादिनाकोभीप्रमेह जाय ३७ येसर्व जतन
सर्वसंग्रहमें लिष्याछै. इतिप्रमेहहरणकाजतनसंपूर्णम् अथ प्रमेह
पीडिकाका लक्षण अर जतन आत्रेयकामतसूं लिष्यते पित्तकीपी
डिकापीली अथवा लालहोय दाहहोय जुरहोय १ अर वायकी पी
डिका कालीहोय सरीरकांपै मूततां सूलहोय पुरस विकल होय
जाय २ कफकीपीडिका सुपेद होय जाडीहोय सीतल होय मोडी
पचै सोजानेलीयांहोय ३ येसर्वलक्षणजीमें होय तीनें सन्निपातकी
पीडिका कहिजे ४ धवकहवाकी वकल कदंबकी वकल बोरकी वक
लसिरस्यूंकी वकल नींबकीवकल यांकोकाढोकरि ईपाणीसूं वेपीडि
कानें धोवैतौ ओपीडिका आछीहोय. १ अथ इंद्रीऊपरिराधिपडि
गई होय तींको जतन लिष्यते कहवाकी वकल कदंबकी वकल तिं
दूकी अंतरछालियांका काढासूं धोवैतौ इंद्रीकी राधिआछीहोय २
अथ इंद्रीऊपरि वायकी पीडिकाहोय तींको जतन लिष्यते भांगराको
रसतुलसीकापान पटोलकापत्र यांनें कांजीसूं वांटि लेपकरैतौपीडिका
जाय ३ अथपीडिकाको जतन लिष्यते महलौठी कूठरक्तचंदन षस
रोहीस गेरू कमलगट्टा ये दूधमें वांटि पित्तकी फुणस्यांकै लेप क
रैतौ वांको दाहदूरिहोय ४ अथ इंद्रीकीफुणसी पकिजाय तींको
जतन लिष्यते. सीतल जलसूं सौ १०० वारको धोयो माषन तींको
लेप करैतौ वांको दाहदूरिहोय ५ अथवा कदंबकापानकहवाकापान
दाड्यूंका पान षैरकापान आंवलाकापान यांनें गरम पाणीमें वांटि
लेप करैतौ फूणस्यांकी राधिजाय ६ अथवा त्रिफलाका भुरकासूं रा
धिजाय ७ अथवा कांजीका धोवासूं छाछिकाधोवासूं सीतल जलका

न. टी. प्रमेहपीडिकालिषीछैसोईकोनाम भाषामैंपीडिकाकहैछै. अरशास्त्रमैंनामप्रमेहपीटि
कालिष्याछै. सोपीटिकानाम फुणसीकोकहैछै. सोवाफुणसीपीडायुक्तहोयछै. जीसूंईनैं भाषा
मैंपीडिकाकहैछै. परंतु वांचकरसंभ्रमनहींकरणो. पीटिकापीडिकाएकहीछै.

धोवासूं राधि आछीहोय ये जतन आत्रेयमें लिष्याछे. ८ इति प्रमेहपीडिकाका जतनसंपूर्णम्. अथ रसरत्नाकरकोजतन लिष्यते कपासकीमींगी भैंसिकी छाछिमें दिन ७ परलकरै पाछे वेनें मासा २ रोजीना पायतो लाला प्रमेह जाय १ अथ बहुमूत्रप्रमेहको जतन लिष्यते मूर्वा पारो वंग अथवा वंगेश्वरसार अभ्रक यांनें बराबरिले त्यांनेंसहतमें दिन १ परलकरै पाछे मासा १ सहतसूं रोजीना पायतो बहुमूत्रपणो जाय २ इति तालकेसुर रसः ईंरसने लियांपाछे पक्का गूलरकाफल टंक २ ईंकोचूर्ण ईंरस ऊपरिलेतो बहुमूत्र पणो जाय ३ अरपंचवक्त्ररस मासा २ लेतो बहुमूत्रपणो जाय ४ ये जतनरस रत्नाकरमेंछे. इतिप्रमेहरोग अर पीडिकारोग यांकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्. इतिश्रीमन्महाराजधिराज राजराजेंद्रश्रीसवाई प्रतापसिंहजीवरचिते अमृतसागर नामग्रंथे मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात अस्मरी शर्करा प्रमेह यांसर्वरोगांका भेदसंयुक्त उत्पत्ति लक्षण जतन निरूपणंनाम द्वादशःस्तरंगःसंपूर्णम् १२

अथ मेदरोगकीउत्पत्तिलक्षण जतन लिष्यते घणीऐसकाकरिवासूं वैठ्यारहवासूंदिनका सोवासूं कफकारी वस्तकापावासूं मधुर अन्नका पावासूं घृतनें आदिलेर चीकणीवस्तकापावासूं मेदवधैछे. जदिमेदवधै तदिपुरषहैसो क्यूंबीकामकरिवाकूंसमर्थ होय नहीं ओनिकमो हुवोथकोपड्यो रहैक्यूं ओर धातजोछे हाडमींजीवीर्यवेमेदनैंवध्याथकांपुष्टहोय नहीं ओआदमी निकमो होयजाय १ अथ मेदका ओरदोपलिषूंछूं जींकै मेद होय तींकै क्षुद्रस्वासहोय तिस होय मोहहोय कुणाहतो सोवै शरीरमें पीडा होय छींक आवै पसेव आवैसरीरमें दूरगंधि आवै मैथुन करिवामें समर्थ होय नहीं

न. टी. बारमीतरंगमैंजोउपचारलिष्याछैसोध्यानमैंराषणा. अर तालकेसुररसछै जीमैंवंगेस्वरलिष्योछै. अरसारलिष्योछै अरअभ्रकलिष्योछै. सोशुद्धकियाथकाअमृतसारगमैं जोक्रियाछै जींमुजबकरणा.

ये मेदवालाकै लक्षणछै. अथ मेदकोस्थानलिष्यते. प्राणिमात्रकै मेदहैसो उदरमैं रहैछै. ईकारण मेदहै सोउदरनैं वधावैछै पाछै उदर वध्योथको अग्निनैं दीप्यमान करैछै क्यूं मेदकरिकै ढक्योछै मार्ग जिनकोऐसो जो वायसो कोष्ठहीमैंविचरै तदि अग्निकूं देदीप्यमानकरि पावाहीकी वांछारापै तदि मनुष्य हैसो घणो पायोथको अनेक भयंकर आजारांनैं घणांदिनामैं पैदाकरै. पाछै उदरमैं रहतो जो अग्निअरपवनसूंस्थूलजो ओमेदवालो पुरप तीनैं वैदग्धकरैऐठै दृष्टांत दीजैछै. जैसै वनमैं रहतोजो अग्निसो पवननैं सहायता लेकर वननैं दग्ध करैछै जैसे पाछोमेद घणो वध्योथको पेटमैं रहतो जो वायपित्त अग्निवैघणां विकारांनैंपैदाकरै ईपुरषनैं मारिनापै १ अथ स्थूलको लक्षण लिष्यते. मेद मांस जदि घणावधै तदि पुरसकै ढूंगा उदरस्तन येवध्याथका घणाथलथलाट करता हालै अरवे पुरषका बल मांस उत्साह जातारहै ईनैं स्थूल कहिजे पाछै स्थूल पुरपकै येभयंकर रोगछै विसर्प भगंदर विषमज्वर अतिसार ववासीर पांवनैं आदिलेर औरभी रोगकरै अथ मेदवाला रोगीको जतन लिष्यते. पुराणांचावल मूंग कुलत्थ कोद्रू येषाय लेपन बस्तिकर्मषेदकरिवो चिंता कुस्तीमार्ग चालिवो सहतको पावो जवकोषावो जागिवो षारोरस अरंडका पानाकी तरकारी हींग चावलांको मांड इतनीवस्त ईरोगवालानैं सेवो जोग्यछै अथवा गिलवै त्रिफला यांका काढासूं मेदको रोगजाय १ अथवा गिलवै त्रिफला यांको काढोकरि तींमैं सार सहतनापि पीवैतो मेदको रोगजाय २ अथवा वास्या ठंडा पाणीमैं सहत नाषि पीवैतो मेदको रोगजाय ३ अथवा उन्हू अन्नषाय अथवा चावलांको मांड पीवैतो मेदको रोग

न. टी. मेदरोगकीसरवचिकित्सातेरमीतरंगमैछै. जींका जुदाजुदालक्षण. नाम. मेदसंयुक्त लिष्याछै. जीमैंविचारछै. कारणप्राणिमात्रकै उदरमैंमेदछै. सोसरीरको सहायकछै. परंतु विगड्योथकोमेदमृत्युरूपकालजाणज्यो.

जाय ४ अथवा सूंठि मिरचि पीपलि चित्रक त्रिफला नागरमोथो वायविडंग यांका काढामैं गूगल नाषि पीवैतौ मेदको रोगजाय ५ अथवा पीपलि सहतसूं रोजीना षायतौ मेदको रोगजाय ६ अथवा धत्तूराका पानांकोरस तींको मर्दन करिवो करैतौ मेदको रोग जाय ७ अथवा पारो तामेसुर सार बीजाबोल यांनैं बराबरिले यांनैं मिहीवांटि ईनैं कूकर भांगराका रसमैं दिन ३ षरल करै पाछै रती २ ईनैं रोजीना सहतसूं चाटैतौ मेदको दोस जाय ८ इति वडवानलरसः यो वैद्यरहस्यमैंछै. अथवा चव्य जीरो सूंठि कालीमिरचि पीपलि सेकीहींग संचरलूण येबराबरिले यांनैंमिही वांटि जवांका सातूकै साथि टंक २ रोजीनापीवैतौ मेदरोग जाय ९ यो चक्रदत्तमैं लिष्योछै. अथवा वायविडंग सूंठि जवषार पीपलि सार यांनै मिहीवांटि टंक १ तीनैं जव अर आंवलाको चूर्णमिलाय सहतसूं लेतौ मेदको रोगजाय १० अथवा बोरका पानाकी बकल तीमैं कांजीको पाणीनाषि अरइहीमैं अरण्यांको रस अर शिलाजित नाषि पीवैतौ मेदको रोगजाय ११ अथवा गिलवै इलायची कूडाकीछालि आंवला येसारा अनुक्रमसूं येकसूं येक वधताले अर गूगल यांसारांकी बराबरिले त्यांको येकजीवकरि पाछै ईनै टंक १। सहतकै साथि लेतौ मेदकोरोग भगंदर येजाय १२ इति अमृतागूगलः येचक्रदत्तमैंछै. अथवा त्रिफला अतीस मूर्वा निसोत चित्रक अरडूसो नींबकीबकल किरमालाकीगिरि पीपलामूल दोन्यूंहलद गिलवै इंद्रायण पीपलि कूठ सिरस्यूं सूंठि येबराबरिले त्यांको काढोकरि तीमैं तुलसीको रस नाषि ईंका अनुमान

---

* कूकर भांगरानामएकबूटीछै. जीनैंकागलांकोखेत कहैछै. चातुरमासांमैंघणीहोयछै. जींकापानपंजासिरीषाआवैछै. एकडालीमं पानपांचपांच होयछै. जमीसूंघणीऊंचीहात १. आसरै होयछै. जींकैमूंगकीफलीमाफिकफली आवैछै. बास मछलांदीआवैछै, देसप्रसिद्धछै. षातकीजायगांहोयछै.

माफिक पाछे ईमें तेलपकावे पाछे ईको तेलको मर्दन करे अथवा ईको बस्तिकर्म करेतो मेदका रोगांनें कफका रोगांनें योदूरि करेछे १३ इति त्रिफलाद्यं तैलम् योचक्रदत्तमेंछे इतिमेदरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्. अथ देहमें पसेवासूं दुर्गंधि आवती होय तींको जतनलिष्यते अरडूसाका पानांको रस तीमें संपको चूर्ण मिलाय तींको लेपकरे अथवा बीलपत्रका पानामें संपको चूर्णमिलाय लेपकरेतो सरीरकीदुरगंधिजाय १ अथ कांपामें वास आवती होय तींको जतनलिष्यते नींबूका पानाको रसको लेप करेतो कांषाका पसेवको दोषदूरिहोय २ अथवा हलदनें अधबलीकरि तीनें वांटि पाणीमें लेप करेतो कापांकी दुर्गंधि जाय ३ अथवा नागकेसरि सिरसकी बकल लोद षस हरडैकीछालि यांनें पाणीमें वांटि यांको उवटणो करेतो सरीरकी दुरगंधिको दोषदूरिहोय ४ अथवा बोंलीका पानानें जलमें वांटि वांको मर्दन सरीरके करेपाछे स्नान करी नापेतो सरीरकी दुरगंधिपणाको दोष दूरिहोय ५ येजतन भावप्रकासमें लिष्याछे. अथ सरीरकी दुरगंधि दूरि होवाको उवटणोलिष्यते. तांबूलका पान हरडैकीछालि कूठ यांनें पाणीमें वांटि सरीरके मर्दन करेतो सरीरकी दुरगंधि जाय ६ यो वृंदमेंछे. अथ स्त्रीका आछयारंग करिवाको लेपलि० हरडैकीछालि लोद नींब कापान दाड्यूंकीबकल आंबकी बकल यांनेंजलसूं मिहीवांटि ईको सरीरको लेप करेतो देहकी कांतिनें करे ७ यो काशिनाथपद्धतींमें छे. अथ कांषकी दुरगंधि हरिवाको जतनलि० कूठ दोन्यूंहलद यांनें गोमूतमें वांटि अथवा गोवरमेंवांटि जलसूं ईको लेपकरेतो कांषकीवास दूरिहोय अर ईसूं कोढभीजाय ८ यो चक्रदत्तमें लि

न. टी. चक्रदत्तनामग्रंथछै. जीमैंसद्यउपचारछै. सोजोजोप्रसिद्धयोग अरसद्यःफलदेवावालीऔषधांग्रंथमैंसंग्रहकरीछै. अरवर्तमानकालमैंजोसिद्धछै ज्यानैंग्रहणकरीछै. सोनिजरपोंछाणीजरूरछै. वैद्यगीगाफलपणाकीनहीछै.

ष्योछे. ओरसरीरकी दुरगंधि दूरिहोवोको जतनलिष्यते. कुलत्थ कूठ छड छडीलो चंदन सेक्यो जवको चून तज वच यांनें जलसूं मिहीवांटि सरीरकै मर्दन करैतौ सरीरकी दुरगंधिजाय ९ योशा ङ्गंधरमैंछे. अथ काइर्य रोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनलिष्यते. ईंका इर्यरोगनैं लौकीकमैं षीण कहेछे वायल वस्तका षावासूं लूषा अन्नका षावासूं लंघनका करिवासूं घणामैथुनका करिवासूं षेदका करिवासूं भयसूं धनपुत्रादिकका नाससूं घणा सोचका करिवासूं यां कारणांसूं पुरसकै काइर्य होयछे १० अथ क्षीणपणाका रोगको लक्षणलिष्यते. कूला ऊदर कांधी येसूकिजाय नसां निकलि आवै हाड चामडी सरीरकी अवसेस आयरहे सरीर दुबलो होजाय ये लक्षण होयतौ षीणपणाको रोग मनुष्यकै जाणिजे ११ अथवा मनुष्य अत्यंत षीण पडिगयो होय तींको इतना रोगहोय सो लिषूंछूं फीयो होय पासीहोय क्षयीरोगहोय गोलाको रोगहोय अर ववासीर होय उदरको रोगहोय संग्रहणी आफरानैं आदिलेर औररोग होय अर केईपुरुष दीषतकातो दुबलाक्यूं ज्यांकै मेदको भागतौ सरीरमैं थोडो अर वीर्यको हींसो सरीरमैं घणोरहे अर औ मैथुन घणोकरै अर वेंको वंधेज घणो रहै अरऔ स्त्रियांको गर्भरापिदे अर केईक दीषतकातो सरीरकापुष्ट अर बलहीन अर मैथुनादिकमैं समर्थ नहीं तीनें षीण कहिजे क्यूं वेका सरीरमैं मेदको भागतो घणो अर शुक्रको विभाग थोडो जीसूं ओपुरष षीणही जाणिजे १२ अथ कृसनाम षीणपणांका रोगको जतनलिष्यते जितनी बलकारी औषधीछै अर जितनीं बंधेजकी औषधिछै अर जितना पुष्टकारी घृत दूध मांसनें आदिलेर पुष्टाईकाछै त्यांसूं

न. टी. क्षीणपुरषाकाअहारव्यवहारदेषणैसो आश्चर्यछै. जोपुरषशरीरसौंपुष्टीदीषै अरसरीरमैंकलानहींहोयछै. अर जोमहाक्षीणदीषै ज्यांकासरीरमैं जोरहोयछै. परंतु ईसारोगीकी साक्षीतोनबजबोलदेवोकरैछै. देषवालोविचक्षणचाहिजै.

क्षीणपणो दूरिहोयछै. अर यांका जतन पुष्टाईका ग्रंथ समाप्तिमें लिषस्यां १३ अथ असाध्य क्षीणपणाका रोगको लक्षण लिप्यते जिहपुरसकै स्वतः स्वभाव सेती षीण होय अर अग्नि मंदहोय अर जिहपुरषकै स्वतः स्वभावसेतीहीसदाही वेंको सरीर निर्बल होय तींको जतन नहीछै. येसर्व जतन भावप्रकासमें·लिष्याछै. १४ अथ काश्यं नाम षीणपणाका रोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनसंपूर्णं

अथ उदर रोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिप्यते मंदाग्नि वाला पुरसकै निश्चै पैदाहोयछै पण उदरका सर्वही आठ प्रकारछै तीनै आदिलेर अर सर्व उदररोग मंदाग्निवाला पुरसकै निश्चैपैदा होयछै. १ अथ उदर रोगकी औरभी उत्पत्ति लिप्यते अजीर्णसौं उदर रोग होय अत्यंत दोपनैं उपजावैं इसीवास्त षाईतो उदररोग होय. दोषांको संचय होय अथवा मलको अथवा आंवको संचय कोष्ठमैं होय तदि पुरसकै उदर रोग पैदा होय १ अथ उदर रोगकी उत्पत्ति लिप्यते कुपथ्यसूं संचयकूं प्राप्ति हुवो जो वाय पित्त कफ सो जलनैं वहवावाली जोनसां त्यांनैं रोकै हियाका पवननैं अर अग्निनैं अर गुदाका पवननैं भलैप्रकारदूषित करै आठ प्रकारका उदर रोगनैं पैदाकरैछै १ अथ उदर रोगको सामान्य लक्षण लिप्यते पेटमैं आफरो होय चालिवाकी सामर्थ्य जातीरहै सरीर दुबलो होजाय मंदाग्नि होजाय सरीरमैं सोजो होय हाडांमैं फूटणीहोय मल मूत्रआच्छीतरै ऊतरैनहीं सरीरमैं दाहहोय येलक्षण होय तदि जाणिजे ईकै उदरको रोगछै. १ अथ उदर रोग आठ प्रकारकोछै सो लिषूंछूं· वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ फियाको ५ मलका बंधहोवाको ६ चोटका लागि

न. टी. मेदकोरोगीनैंपथ्यलि० हलको अन्न· महनत· पित्तकारकभोजन. शुद्धहवामैंश्रद्धा माफिक फिरणो· इ० कुपथ्य. मिष्टान्नभोजन. मेवो. दूध. पुष्टकारीजिन्नस· दिनमैंनिद्रा· एक जागांवैठणो. आलकषराषणो. येसबमनैंछै.

वाको ७ जलोदरको ८ अथ वायका वातोदरको लक्षण लिष्यते जींपुरषके पगांके हाथांके नाभिके सोजो होय कूषिमैं पसवाडामैं कटिमैं पीठिमैं यांमैं पीडाहोय अर संधिसधिमैं पीडाहोय सूकोषास होय सरीर भार्‍यौ होय मलऊतरै नहीं सरीरकीत्वचा नष नेत्र येकालापडिजाय पेटमैं पीडा चालै आफरो होय पेट बोलिवोकरै येलक्षण होय तदि वायका उदरको विकार जाणिजे १ अथ पित्तोदरको लक्षण लिष्यते जीमैं ज्वरहोय मूर्छाहोय दाह होय तिसहोय कडवो मूंढोरहै भौंलि अतिसार ये सारा रोग होय अर सरीरकी त्वचा पीली हरी होय सरीरमैं पसेव आवै अरदाहहोय धूवांनैलीयां डकार आवै त्वचाको स्पर्शको मल होय अरत्वचा पकीसीहोय येजीमैं लक्षण होय तींकै पित्तको पित्तोदररोग जाणिजे २ अथकफोदरको लक्षण लिष्यते जींकासरीरमैं पीडाहोय सोवै घणो सोजो होय सरीरभार्‍यौ होय हीयो दूषै भोजनमैं अरुचिहोय. मोडो पचै सरीरठंडो होय अरपेट बोलिवोकरै येजीमैं लक्षण होय तीनैं कफोदर कहिजे ३ येजीमैं सर्वलक्षण होयतीनैं सन्निपातको उदररोग कहिजे ४ अथ दुस्योदरको लक्षणलिष्यते जींपुरसकोवैरी कही तरैसूं कहीं पुरसनैं सिंहकानष अथवा मूंछका बालकही दुष्टजिनावरको मल मूत्र रुधिर होय अथवा जहर कहीसूं मिलिजो अन्नपानमैं पुवायदे तींकै योदुस्योदर पैदा होयछै. सोतींका सरीरको लोही अर वाय पित्त कफ येसाराही सरीरमैंकुपित होयछै अर ईसन्निपातका भयंकर उदर रोगनैं पैदाकरै पाछै ओउदर रोगहैसो मेहकादिनामैं कुपित हुवोथको वे पुरसकै घणोदूषित करै मूर्छितकरैछै मृत्युतुल्य ईनै दुस्योदर कहिजै ४ दुष्योदर त्रिदोषोदर एक

* आठ प्रकारकाउदररोगछै. जीमैं जलोदररोगकहैछै. पेटकोमोठापणोछै. नसादीलकैछै. महाअसाध्यरोगछै. ईरोगकाजतनतो घणाहीछै. परंतु रोगप्रकट होतांही उपावकरणोयोग्यछै. नसांमैंपाणी भरिजायछै. कोईयुक्तीसूं पाणींऔषधीद्वाराकाढैतौरोगीबचै.

हीछे ५ अथ ह्लीहोदरनेंफियो कहेछेतींकोलक्षणलिप्यते गरम व
स्तका पावासूं अरगरम वस्तका पीवासूं दुष्ट हुवोजो लोहीसो क
फसूं फियानें वधावैछे पाछेफियोवध्योथको उदरकारोगानें पैदाक
रैछे. वांवापसवाडामैं तदिवेसेती मनुष्यहैसो सिटाय जायछै. वेम
नुष्यकै मंदाग्निहोयजाय जीर्णजुरहोयजाय वल जातोरहै येलक्षण
होय तदिह्लीहोदर कहिजे ५ अथ मलका बद्धगुदोदरको लक्षण लि
प्यते जींपुरसकै अन्नहैसो विना सोध्योपायतीमैं बाल अथवा कां
कराेरेत यांसूं मिल्योथको षाय तींकै दोषानैं लियाथका मलको सं
चय होय तदि ओपुरषहैसो कष्टसेती थोडोथोडो गुदाद्वारा मलनें
उतारै अरवेंपुरषको हियो अरनाभि वध जाय तीनैं वैद्य बद्धगुदो
दरकहैछे ६ अथ क्षतोदरको लक्षण लिष्यते जो पुरष पाषाणनैं
आदिले रेतसूं मिल्यो अन्नषाय तींपुरसकी आंतानैं काटतोथको
ओ अन्नपाणी सिरीसो होय गुदाद्वारा नीकलै अरवेंकी गुदा राति
दिन वहवोईकरै अर वेंकोपेट्ट वधै अरपेट्टमैं पीड घणीचालै ईनैं
क्षतोदर कहिजे क्षतोदरअरपरिस्रावी बद्धगुदोदर एकहीछै. ७ अथ
जलोदरको लक्षणलिष्यते जींपुरष घृतादिक पायो होय अथवा
वस्तिकर्म कर्यो होय अथवा जुलाब लियो होय अथवा वमन
कर्यो होय ईसोपुरसयां कर्माऊपरि सीतलपाणीपीवै तींपुरसकै ज
लनैं वहवावाली नसांहैसो दूषितहोय अर स्नेहकरिकै लीपीजो वे
हीनसां त्यांकैविसै जलोदरनें पैदा करैछे. ओसीतलजल पाछे ओ
जलोदर पैदाहुवोथको नाभिकै चोगुडदाई गोल अरचीकणो अर
वडोवधे पाणीकीमसककीनांई जलसूं भर्योथको तदि ओमनुष्यहै
सो वैसतां बहुत दूषी होय अर वेमनुष्यको सरीरकांपै येलक्षण

म. टी. त्रिदोषोदररोगछै· सोसन्निपातसौंहोयछै.· जीमैंवातकालक्षण. पित्तकालक्षण. कफ
कालक्षणसर्वएकहीरोगमैं होयछै. जीनैंत्रिदोषोदरकहैछै. अरदुष्योदरछै सोस्थावरजंगमविष
काप्रसंगसौं होयछै. परंतुयांदोन्याकालक्षणएकसाछै.

जीमें होय तींनें जलोदरकहिजे ८ येसवेंही आठूं उदर रोग उप जतांही कष्टसाध्यछै. अरबलवान पुरसकैजित्ते जलोदर नहीं होय तित्ते अर तत्कालकाहुवा थका जाप्यछै १ अथ उदर रोगको अ साध्य लक्षण लिष्यते बद्ध गुदोदर होयतौ एक पक्षउपरांति अ साध्य जाणिजे अर जलोदर असाध्यहीछै २ अथ पुनः असाध्य लक्षणलिष्यते पसवाडामें सूल चालै जींका नेत्रापर सोई होय अर इंद्रीवांकीहोय जींका सरीरकी त्वचागलिजाय अर जींकासरीरको लोही मांस बल जातोरहै अग्नि मंदहोय जाय ओ पुरस असा ध्यजाणिजै ३ अथ पुनः असाध्य लक्षण लिष्यते पसवाडामें सूलचालै मानु पसवाडा टूटिगयाहोय अन्नमेंसूंरुचि जातीरहै स रीरमें सोजो होय आवै अतिसार होय जाय अर जींकोउदररी तोछै अर भाख्योदीपैतीं उदररोगनें असाध्य जाणिजे ४

अथ वातोदरको जतनलि० दसमूलका काढामें अरंडको तेल नाषि पीवैतो वातोदर दूरिहोय १ अथवा त्रिफलाका काढामें गोमू त्र नाषि पीवैतो वातोदर जाय २ अथवा कूठ दांत्युणी जवषार पाठ सींधोलूण. संचरलूण. सांभरोलूण. वच सूंठि येबराबरिले यां नेंमिहीवांटि टंक ५ गरम जलसूं लेतो वातोदर जाय ३ इतिकुष्ठा दिकर्णम्. अथवा इकपोत्योलसण टका १०० तीनेंवांटि पाणीसेर १६ में औटावे तींमें औटतांही ये औषदि नाषे सूंठि टका १ का लीमिरचि टका १ पीपलि टका १ साठीकीजड टका १ संचरलूण टका १ विडलूण टका १ त्रिफला टका ३ दांत्युणी टका १ सहज णाकी वकल टका १ अजवायण टका १ गजपीपलि टका १ नि सोत टका ६ यांनेंमिहीवांटि वेलसणका काढामें नाषे ईमें तेलसेर

न. टी. उदरकारोगसर्वआठप्रकारकाछै. सोशास्त्रकीरीतमुजबछै. अरलौकीकमैंघणांवैद्य नामधरावैछै. अरशास्त्रजाणैनहीं. सोयांरोगांनैं कंठोदर. कफोदर. कच्छोदरइस्याऔरभीमनो क्तनामधरैछै. सोसबझूठाछै. उपरलिष्यासाचाछै.

२ नापै पाछै ईनें मधुरीआंचसूं पकावै येसर्वरस अर औषदि व लिजाय तेलमात्र आयरहै तदि ईनें उतारी वासणमैं भरिरापै पाछै ईनै टंक ५ प्रातःकाल आपकी अग्निमाफिक पीवैतौ सगला उद रका रोगजाय अर मूत्रकृच्छ्रनें उदावर्तनें अंत्रवृद्धिनें पाश्र्वशूलनें आंवसूलनें अरुचिनें फियानें अष्ठीलानें हडफूटणीनें सर्ववायका रोगांनें यो महिनायेकमैं दूरिकरैछै. ४ अथ पित्तोदरको जतनलि ष्यते जुलाबका लेवासूं पित्तोदर जाय ५ अथ कफोदरको जतन लिष्यते निसोतको चूर्न टंक २ ऊटणीका दूधमैं नाषि अर अरं डको तेलनाषि टंक ५ अर इहीमैं पीपलि पीपलामूल चित्रक अ धेलाभरि नाषि वेदूधनें महीना तांई गरमकरि पीवैतौ कफोदर जाय ६ अथ सन्निपातका उदररोगको जतनलिष्यते सूंठि त्रिफला यांको काढोकरि तीमैं दहीं अरतेल अथवा घृत नाषि पकावै पाछै ओतेल अथवा घृत ईनें यो पायतौ सन्निपातको उदररोग जाय ७ अथवा गरम दूधमैं अरंडकोतेल अर गोमूत नाषि पीवैतौ वायको उदररोग जाय ८ अथवा छाछिमैं संचरलूण पीपलि नाषि पीवैतौ वातोदर जाय ९ अथवा मिश्री कालीमिरचि येजलसूं पीवैतौ पि त्तोदरजाय १० अथवा अजवायण झाउरूषकी जड जीरो सूंठि कालीमिरचि पीपलि यांनैवांटि टंक ५ गरम पाणीसूं लेतौ कफोदर जाय ११ अथवा सूंठि कालीमिरचि पीपलि जवषार सींधोलूण यांनैंवांटि टंक ५ गरमपाणीसूं पीवैतौ सन्निपातको उदररोग जाय १२ अथ नारायणचूर्ण लिष्यते अजवायण झाउरूषकीवकल धणौ त्रिफला पीपलि कालोजीरो अजमोद पीपलामूल वायविडंग येसर्व बराबरिले दांत्युणीयेक औषदिका हिस्सासूं तिगुणीले नि

न. टी. इकपोत्यो लसणलिष्योछै. सोबैलहसणकीएकपोतीनामएकहीविभागहोयछै अर औषधीमैंगुणकारीछै. जौंल्हसणमैंस्वच्छपणो घणोछै. समभावछै. अरजैठैलहसणकोयोग लिषैछै. जैठैविशेषतासौंइकपोत्योलेवछै.

सोत एक औषदिका भागसूं दूणीले इंद्रायणएक औषदिका भागसूं दूणीले थोहरीकोदूध सर्वसौं चौगुणौले यांसारांनैं मिहीवांटि थोहरीका दूधकी ईंकै पुट १ दे पाछै सुकाय टंक २ गरम पाणीसूं लेतौ उदरका रोगांनैं वायका रोगांनैं दूरिकरै अर ईंबोरकी बकलका काढासूं लेतौ गोलाको रोगजाय ईंनैंदारूसूं लेतौ आफराकोरोग जाय अर मठासूं लेतौ बंधकुष्ठजाय अर ईंनैं दाड्यूंका रस कैसाथि लेतौ ववासीर जाय गरम पाणीसूं लेतौ अजीर्णजाय अर यो भगंदरनैं पांडुरोगनैं षासीनैं सासनैं क्षयीरोगनैं संग्रहणीनैं कोढनैं मंदाग्निनैं विसमात्रनैं यो चूर्ण दूरिकरैछै जैसे भगवानकोसुदर्शन चक्रदैत्यांनैं मारै तैसेयो नारायण चूर्ण यां रोगांनैं दूरिकरैछै. १३ इति नारायण चूर्णम् अथवा थोहरीकोदूध दांत्युणी त्रिफला वायविडंग कव्याली चित्रक कूकर भांगरो येसारासेर २ ले यांसूं चौगुणो पाणीघाले अर ईंमैं सेर १ गऊको घृत नाषे पाछै मधुरी आंचसूं ईंनैपकावै येसाराबलिजाय घृतमात्र आयरहै तदिईनैं उतारि पात्रमैं घालि राषै पाछै ईंनैं टंक २ लेतौ जुलाबलागि उदरकारोगांनैं दूरिकरै १४

इति नारायणघृतम् अथवा साठीकी जड दारु हलद कुटकी पटोल हरडैकीछालि नींबकीछाली देवदार सूंठि गिलवै येसर्व बराबरिले यांनैं जौकूटकरि टंक ५ कोरोजीना काढोले तींकाढामैं गोमूत अरगूगल नाषि रोजीना पीवैतौ कफोदर पसवाडाकीसूल सास पांडुरोग ये सारा जाय १५ इति पुनर्नवादिकक्काथः येसारा भावप्रकासमैंछै. अथवा अजवायण टका १४ सेक्योसुहागो टका २

* इंद्रायण. कडुवृंदावन. तूंबो. गढतूंबो. तसतूंबो. इंद्रवारुणी. यहवात प्रसिद्धछै. ईंकीबेल धरतीऊपरपसरैछै. मतीरा. तथाकलिंगा सरीसोवेल. पान. फल. होयछै. परंतु मतीरासूंपान. फलछोटाहोयछै. कडवीघणीछै. ईंकोगुणरेचनादिकमैंविशेषछै. उदरविकारनैं उत्तम औषधीछै, ईंकाफलमैं अजवायण भरकर सुकायांपाछै. गरम जलसूं फांकीलीयां पेटपीडमिटै.

यांको चूर्ण करि टंक २ गरम पाणीसूं लेतौ उदरका रोग जाय १६
अथवा पीपलि टका ५ तीनेंथोहरीका दूधमें दिन ७ भेवे रोजीना
सुकाय छायामें पाछेयांनें मिहीवांटि मासा ४ जलसूं येकदीनका
आंतरासूंले ईंऊपरि छाछि चावल पायतौ उदरको रोगजाय १७
इति उदरमयंचूर्णम्. अथवा पीपलि १००० तींके थोहरीका दूधकी
पुट ७ दे अथवा हरडैका चूर्णके थोहरीका दूधकी पुट ७ देतीनें
टंक १ गोमूतसूं लेतौ सर्व उदरका रोगजाय १८ अथवा दांत्युणी
पीपलि सूंठि ये बराबरिले अर चोप यांसारांसूं दूणीले विडलूण
यांसूं चौथाईले पाछेयांनें मिहीवांटि टंक १ गरम पाणीसूं लेतौ फि
यानें गोलानें मंदाग्निनें पांडुरोगनें यां सारांनें यो दूरिकरैछै १९
अथवा आकका पानानें अर सींधोलूण मटकीमें घालि वेंका मूं
ढानें ढांकि फूंकिदे पाछे यांनें वांटि टंक ५ रोजीना छाछीसूंले अ
थवा गवारका पाटासूंले तौ उदरका रोगजाय २० अथवा सूंठि
गुड अथवा गुडहरडै अथवा गुडपीपलि यांनें टंक २ रोजीना पा
यतौ उदररोगनें सोजानें पीनसनें पासनें अरुचिनें जीर्णज्वरनें
ववासीरनें संग्रहणीनें कफका अर वायका रोगांनें ईनें सेयांथकां
यांरोगांनें दूरिकरैछै. २१ येसाराजतन वैद्यरहस्यमें लिष्याछै.
अथ जलोदरको जतनलिष्यते नीलोथूथो गंधक पीपलि हरडैकी
छालि ये बराबरिले यानेंमिही वांटि यानें थोहरीका दूधमें दिन ५
षरलकरै पाछे किरमालाकी गिरिका रससूंदिन ५ षरल करै पाछे
ईनें मासो १ रोजीना गरम पाणीसूं लेतौ जलोदर जाय ईंउपरि
चावल षाय ऊपरि आमिलीको सरबत पीवै २२ इति उदरारि
रसः यो जोगतरंगिणीमैंछै. अथवा सूंठि कालीमिरचि पीपलि पा

न. टी. नारायणचूर्ण. अथवानारायणघृतयेलिष्याछै. सोयांकीऔषधिसंग्रहकरै जदांविचार करसाचीअरताजीविधिपूर्वककरणीसोयेऔषदीलिष्यामुजवगुणकरैछै. अरआलकससौं०वा० असमजसौं चावैंकीसील्यावैकीसी ज्यानैंगुणकीआंसानहींमिलै.

चूल्हण सुहागो साजी येसर्व बराबरिले यांसर्वकी तुल्य सोध्या ज मालगोटा ले यांसारांकै दांत्युणीका रसकी पुट ३ दे पाछै विजोरा कारसकी पुट ३ दे षरलकरि छाया सुकायले पाछै ईनैं अर्धरती प्रमाण नित्य षायतौ सर्व उदरकारोगांनैं फियानैं गोलानैं आफ रानैं सूलनैं ववासीरनैं यांरोगांनैं यो दूरि करैछै. अर ईनैं नेत्रमैं आंज्यां सर्पको जहर दूरि होयछै. २३ इति उदयभास्कररसः ये रसरत्नप्रदीपमैछै. अथवा आकको दूध टका २ कुडाकी छालि टका २ चित्रक टका १ पीपलि टका १ संषाहुली टका १ नीलकी जड टका १ गऊको घृतसेर १ थोहरीकोदूध टका ६ निसोत टका १ हरडैकीछालि टका १ कपेलो टका १ यांसारीऔषद्यांमि हीवांटि येकठांकरि पाणीसेर ५ मैघालि घृत समेत अग्निऊपरि च ढावणी मधुरी आंचसूं पकावणी पाणी उगैरै सर्व बलिजाय घृत मात्र आयरहै तदि घृतउतारि वासणमैं घालि राषै पाछै ईघृतकी जितनी बूंदषाय तितनाई जुलाब लागैतौ इतना रोगजाय उदररो गांनैं सोजानैं भगंदरनैं गोलानैं यांरोगांनैं योघृत दूरिकरैछै. २४ इति बिंदूघृतम् यो वैद्यविनोदमैं लिष्योछै. इति उदररोगकी उत्प त्ति लक्षण जतन संपूर्णम् इतिश्रीमन्महाराजाधिराज महाराज राजराजेंद्रश्रीसवाई प्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागरनामग्रंथे मेदरोग कार्श्यनाम क्षीणपणाकोरोग उदररोग यांसर्वरोगांकाभेदसं युक्त उत्पत्ति लक्षण जतननिरूपणंनाम त्रयोदशस्तरंगः समाप्तः १३

१४ अथ सोथनाम सोजारोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते जांपुरुषांकै वमन विरेचन नहींलीयां होय तींकरि दुबला होय अर ज्वरादिक रोगसूं दुबला होय अथवा लंघनादिकसूं दुबला होय

न. टी. उदयभास्कररसछै जीमैसुहागोलिष्योछै. सोटंकणषारकहैछै. ईनैंशुद्धकरणैकीक्रिया छै. सोयाछै. सुहागानै अग्निऊपरफुलायलेणो. सोईंकोपाणीजलकरहलकोहोयजायपछयोग करणो. अरशुद्धजमालगोटालेणा. जीकीक्रियालिषीछैग्रंथमैं.

त्यां पुरसांके पारीवस्त पाटीवस्त तीपीवस्त उन्हीवस्त भारीदहीं काचीवस्तमाटी पाक विरुद्धवस्त गोंहूंकी मैदा जहरको मिल्यो अन्न यांका पावासूं अर ववासीर घणों वध्यों रहवासूं पेटमें आंव छे अर जुलाबलेनही अर चोटलागिवासूं काचा गर्भका पडिवासूं जुलाबलेर पांचकर्म करेछे. त्यांमें कुपथ्यका करिबासूं अतनी व स्तांसूं वादुबला आदम्यांके सोजाको रोग होयछे. सोओ सोजा को रोग नव ९ प्रकारकोछे वायको १ पित्तको २ कफको ३ वा तपित्तको ४ वातकफको ५ कफपित्तको ६ सन्निपातको ७ चोटला गिवाको ८ विसको ९ अथ सोजाको पूर्वरूपलिष्यते सरीरमें वा यहोय अर नसांनें पसारतां पीडघणीहोय अर सरीर भार्योरहे येजीमें लक्षणहोय तदि जाणिजे ईके सोजाको आजार होसी १ अथ सोजाको सामान्य लक्षणलि० आपका कारणांकरिकै दुष्ट हु वोजोवाय सो रक्तपित्त कफकरिकै वेंकीगति रुकिजाय तदि रक्तपि त्त हैसो सरीरकीजो वाहरली नसां त्यांप्रति कफनें प्राप्ति करि श रीरकी जोत्वचा मांस यांका समूहनें घणो फुलाय देछे. ईकारण ईनें सोजाकोरोग कहेछे. सो वहसोजो इतनी वातनें करेछे. सरीरनें भार्यो करिदे मनमें आवें जैसोई होजाय वेसोजामें गरम पणों होजाय नसां नीकलिआवें रोमांच होय आवें सरीरको वर्ण ओ रसो होजाय येलक्षण होय तदि सोजाको रोग कहिजे १ अथ वायका सोजाको लक्षणलिष्यते सरीरकी त्वचा हैसो कठोर हो जाय लाल होजाय अथवा कालीहोजाय अथवा सोईहोय जाय तदिवेंकै सेकादिक करै तदि आछीहोजाय अरदिनमें घणी सोई होजाय येजीमें लक्षण होयतीनें वायकी सोई कहिजे १ अथ पित्त

नं. टी. चवधमी तरंगमें प्रथमसोथरोगछै. जीनें सोजाको रोगकहैछै. सो नवप्रकारको. जीमें पथ्यापथ्य निदानपूर्वक आगैलिषसों. अर स्त्रियांके प्रथम मूंढापर आवैसो असाध्य जाणवो. अरपुरुषकै प्रथम पगांऊपर आवै सो असाध्यजाणवो.

की सोईको लक्षण लिष्यते सरीरकी त्वचा कोमल होयजीमैंक्यूं गंधनें लीयांहोय पीली होय ललाईनेंलीयां होय सरीर भ्रमैं ज्वुरहोय. पसेव घणांआवें तिसघणीलागे मदहोय आवें शरीरकोस्पर्श सुहावे नहीं नेत्र लालहोय शरीरकी त्वचामें दाह घणो होय येलक्षण होय तीनें पित्तकीसोई कहिजे २

अथ कफकीसोईको लक्षण लिष्यते जींके सोईमैं सरीर भाखो होय अर चामडी पीलीहोय भोजनसूं रुचि जातीरहे नींदघणीआवे. अग्निमंदहोय सोईऊंची नहींहोय रात्रिनें वधिजाय येलक्षण जीमें होय तीनें कफकी सोई कहिजे ३ अरदोयदोय दोसांका जीमें लक्षण होय तीमें दोयदोय दोसांकी सोईकहिजे वात पित्तकी ४ वातकफकी ५ कफ पित्तकी ६ अरजीसोईमैं सर्वदोसांका लक्षण मिलै तीनैं सन्निपातकी सोईकहिजे ७ अथ चोटलागिवासूं उपजीजो सोई तींको लक्षणलिष्यते सस्त्रादिकका लागिवासूं उपजीजो सोई अथवासीतपवनकालागिवासूं उपजी अथवा दहीकाषावासूं उपजीजो सोई अथवा भिलावाकालागिवासूं उपजीजोसोई अथवा कौंछिका लागिवासूं उपजीसोई. अथवा जमीकंदनें आदिलेरतींका लागिवासूं उपजीसोईसो वायेक जागांकीसोई सारा सरीरमैं फैलिजाय अर वेसोईमैं दाह घणोहोय लाल होय आवें औरपित्तका सर्व लक्षण मिलै येलक्षण जीमें होय तीनें शस्त्रादिकका लागिवाको सोई जाणिजे. ८ अथ विसेल जनावरादिकातें उपजीजो सोई तींको लक्षण लिष्यते विसेल जिनावरांका मूत्रका स्पर्श करिवासूं

* सोथरोगसरीरको नाशकारकछै. शरीरकीकांती. फुरती. चेष्टाविगाडैछै. शरीरस्थूल करैछै. महादुष्ट व्याधीछै. ईवास्तै वैद्यजीवनग्रंथमैं. लोलिंवराजमैं. रत्नकलानैं कहीछै. सूंठ. चिरायतौ. कुटकी. यांकोचूर्ण समभागको मासा १० गरमपाणीमैं फांकीदेणी. अथवा पाठ. हलद. रिंगणी. नागरमोथो. जीरो. पीपल. पीपलामूल. चवक. चित्रक. सूंठ समभाग चूर्ण गरमजलमैं फांकिलेतौ सोजोजाय.

सोई होय अथवा डाढका लागिवासूं सोईहोय दांतांका काठिवासूं सोईहोय नपका लागिवासूं सोई होय विसेल जिनावरांका मल मूत्र वीर्य येवस्तांका स्पर्शकर्‌यां सोई होय विसवृक्षका पवनका स्पर्शकर्‌यांसूं सोई होय जहरका पावासूं अथवा लागिवासूं सोई होय त्यांको यो लक्षण वेसोईमें पीडा घणीहोय सरीरमें घणीफेलि जाय दाह घणो होय. तदि जाणिजे याविसकीसोईछे. ९ अथ सोईका उपद्रवलिष्यते षासहोय तिसहोय छर्दिहोय सरीर दुर्बल होय जुरहोय भोजनमें रुचि जातीरहे ये सोईका उपद्रवछे. याउप द्रवांवालांको जतन कीजे नहीं १ अथ सोईवालाको कष्टसाध्य ल क्षण लिष्यते पेडूसूंलेर स्तनातांई सोई होय वा कष्टसाध्यछे. अर सर्व सरीरमें सोई होय वा सोई असाध्यछे. २ अथ पुनः असाध्य लक्षण लिष्यते पुरसकैतो प्रथम पगांसूं लेर मुषऊपर तांई सोई चाले स्त्रीके प्रथम मुषकी सोई होय अर पगांतांई आवे वा सोई असाध्यछे. ईंको जतनछे नहीं अर प्रथम पेडूमें होय अर सर्वत्र फैलै वासोई वादोन्यांके असाध्यजाणिजे. ३ अथ सोथरोगको ज तनलिष्यते. सूंठि साठीकीजड अरंडकीछालि पीपलि पीपलामूल चव्य चित्रक यांको काढो लेतो वायको सोजो जाय १ पटोल त्रि फला नींबकीछालि दारुहलद यांको काढो गूगल नाषि लेतो पित्त की सोईनें तिसनें जुरनें यांओषध्यांको काढोदूरिकरैछे. २ काली मको कारसमें साठीकी जड वांट लगावेतो सोजो जाय ३ अथ क फकी सोईको जतन लिष्यते पीपल्यांनें अथवा हरडेनें थोहरीका दूधमें भिजोय दिन ३ पाछेयांनें सुकाय मिहीवांटि टंक २ रोजीना दिन १० लेतो सन्निपातकी सोई जाय ४ अथ भिलावाकी सोई

न. टी. विसेलजिनावरनामजहरी ज्यानवरछै: जैसेसर्प. वीछू. गोहरो. पैणों. सर्प. हि डक्यो. कुत्तो. स्याल. सिंह. सरट, कानषजूरो. मकडी. मूसो. इत्यादिकजंतूछै. ज्यांकैकोई कैतोदांतमैंविषछै. कोईकाकेंसमैंछै. कोईकामलमूत्रमैंछै. ज्यांका जहरसौंसोथहोयछै.

को जतन लिष्यते तिल अर कालीमाटी भैसका दूधमैं तथा भैंसि
का माषनमैं वांटि यांको लेपकरैतौ भिलावाकी सोई दूरिहोय ५
अथवा महलौठी कालातिल भैसिको दूध अर भैसिको माषन तींमैं
यांनैं वांटि यांको लेपकरैतौ भिलावाकी सोई जाय ६ अथवा सा
लवृक्षका पानाको लेपकरैतौ भिलावाकी सोई जाय ७ अर विसकी
सोईका जतन विषका प्रकर्णमैं लिषस्यां अथ सोथरोगका सामा
न्य जतनलिष्यते हरडैकीछालि हलद भाडंगी गिलवै चित्रक दारु
हलद साठीकीजड सूंठि यांको काढोलेतौ उदरकी पगांकी मूंढाकी
सोई ततकालजाय ८ इति पथ्यादिक्काथः अथ पोताकी सोईको ज
तन लिष्यते त्रिफलाका काढामैं गोमूतनाषि पीवैतौ पोताकी सोई
जाय ९ अथवा विषपापरीकी जड देवदारुसूंठि यांका काढासूं
सोई जाय १० अथवा दांत्युणी निसोत सूंठि कालीमिरचि पीपलि
चित्रक यांको काढो लेतौ सोई जाय ११ अथवा सोनामुषी विष
षापरो नींबकी छालि गोमूत यांको काढो लेतौ सोई जाय १२ अ
थवा साठीकीजड दारुहलद सूंठिसहजणाकीजड सरस्यूं यांनैं कां
जीका पाणीसूं वांटि क्यौं गरम करि लेपकरैतौ सर्व सोइमात्र दूरि
होय १३ अथवा गुड आदो अथवा गुड सूंठि अथवा गुड हरडैकी
छालि अथवा गुड पीपलि यांनैं मिहीवांटि टंक २ सूंलेर टका १
भरतांई वधतीषाय महिनायेक १ तांईतौ सोजानैं पीनसनैं गला
कारोगनैं सासनैं षासनैं अरुचिनैं जीर्णज्वरनै ववासीरनैं संग्रहणी
नैं कफवायका विकारनैं यांसारां रोगांनैं यो दूरिकरैछै. १४ अथ
वा पीपलि सूंठि यांनै मिहीवांटि यांबराबरि गुडमिलाय षायतौ
सोजानैं आंवनैं अजीर्णनैं सूलनैं यांनैं दूरि करैछै. १५ अथवा

न. टी. जंगमविषछै. ज्यामैभीसोथकीअधिकताछै. अरस्थावरविषछै. ज्यामैंबीविषछै. जीं सूंसोथ होयछै. जैसैभिलावाकाप्रसंगसौंअरभिलावाकावृक्षकीछायामैंरहैतौसरीरमैंसोथ होय जावैछै. ईयानयांका. डंकसों. षानसों. पानसों. स्पर्शसों. विषकोसोथ होयछै.

गुड टका ३ भर सूंठि टका ३ भर पीपलि टका ३ भर मंडूर टका १ भर तिल टका १ भर यांसारांनैं मिहीवांटि यांको येकजीवकरि पाछै टंक २ रोजीना पायतौ सर्वप्रकारकी सोई जाय १६ अथवा सूकी मूली साटीकीजड दारुहलद रास्ना सूंठि यांको काढोकरि ईर समें तेलपकायले पाछै ईतेलको मर्दनकरैतौ सूल संयुक्त सोईजाय १७ येसर्वजतन भावप्रकासमैं लिप्याछै. अथ सोजाका दाहका दूरि होवाको लेपलिष्यते वहेडाकीमीजीनैं पाणीमैं वांटि वेको लेप करैतौ सोजाका दाहको दोस दूरि होय १८ अथवा साटीकीजड दारुहलद गिलवै पाठ सूंठि गोपरू येवरावरिले यांनैं मिहीवांटि टंक २ गोमूत्रसूं पीवैतौ सर्वप्रकारको सर्वसरीरमैं फैलतौ सोजो जाय अरईसूं आठ प्रकारको उदररोगजाय अर ईसूं व्रणमात्र जाय १९ इति पुनर्नवादिचूर्णम् अथवा साटीकीजड नींबकी छालि पटोल सूंठि कुटकी गिलवै दारुहलद हरडैकी छालि यांको काढो लेतौ सर्वांगसोथनैं षासनैं उदररोगनैं पांडुरोगनैं यांसारां नै योदूरि करैछै. २० इति पुनर्नवादिक्काथः इति सोथ नाम सोजा कारोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम् अथ वृद्धि रोगईनैं लौकी कमें अंडवृद्धि अर अंत्रवृद्धिरोग कहैछै तींकीउत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते अंडवृद्धि ६ प्रकारकीछै. वायको १ पित्तको २ कफको ३ लोहीको ४ मेदको ५ मूत्रको ६ अंत्रवृद्धि येकप्रकारको वायको १ अथ अंडवृद्धिका सामान्यलक्षण लिष्यते अधोगामी जोपवनहै सो आपका कारणांसूं कुपित हुवोथको आंडामैं अर जांघांकी सं ध्यामैं प्राप्तिहोय अरऊठेही विचरतोथको उटे सोजानैं अरसूलनैं करै पाछै वांदोन्यां अंडानैं अर आंडांकी षालका भंडास्यांनैं वह

न. टी. स्थावरजंगमविपछै. ज्यांकैवास्तै ग्रंथकर्ता औषधी आदिलेर मंत्रतंत्रादिकघणांक ह्याछै. जींमैंऐठेविषकासोथऊपरलेपादिक वाऔषधीपेटमैंलेवाकीलीषीछै. परंतु कोईकोई रक्त का जोरसूंजोसोथहोयजींपरतोरक्त कढाणो. योग्यवैद्यकाकहणासौं.

वावालीजो नसांतीमैं ओदुष्टपवन प्राप्तिहोय वानसांनै पीडितकरै अरवा दोन्यां अंडानैं अर दोन्यां आंडांका भंडाखांनैं वधाय देवै छे तीनेंवैद्य अंडवृद्धिकहैछे. १

अथ वायका अंडवृद्धिको लक्षणलि० वायकरिकै भरीऐसीजो लुहारकी धमनी तींकोसो स्पर्शहोय अरलूषीहोय अर विगरिकारणहीं वेमैंपीडाहोय तीनैं वायका अंडवृद्धिकहिजे १ अथ पित्तकी अंडवृद्धिको लक्षणलि० पक्यो जोगुलरिकोफल तींसरीसो सोजो होय अरवेमैंदाहहोय तीनैं पित्तको अंडवृद्धिकहिजे २ अथ कफकी अंडवृद्धिको लक्षणलि० जोअंडवृद्धिसीतलहोय अर भारी होय अरचीकणीहोय अरजीमैं षुजालिहोय अर करडीहोय अर वेमैंपीडथोडीहोय तदि जाणिजे या अंडवृद्धि कफकीछे. ३ अथ लोहीकादुष्टपणाकी अंडवृद्धिको लक्षणलिष्यते कालीहोय फोडा जीमैं घणाहोय अरपित्तकी वृद्धिका जीमैं लक्षणमिलै तीनै रक्तदुष्टकी अंडवृद्धि कहिजे. ४ अथ मेदकी अंडवृद्धिको लक्षण लिष्यते सर्व कफकासा जीमैं लक्षण होय अर कोमलजो ताडको फलतींसिरीसो होय तीनैं मेदको अंडवृद्धि कहिजे ५ अथ मूत्रकारोकिवाका अंडवृद्धिको लक्षणलि० जोपुरष मूत्रका वेगनैं रोकै अरमारगनैं चालैतींकै मसकसरीरसो कोमल आंड वधै अर वेमैंपीडहोय अर मूत्र कष्टसूं ऊतरैतीनैं मूतकारोकिवाका अंडवृद्धि कहिजे ६ अथ अंत्रवृद्धिकी उत्पत्ति लक्षणलि० ज्यांवस्तांसूंवातहैसो कोपकूं प्राप्तिहोय इसातो भोजनकरै अरसीतल जलमैंतिरै जुद्धमैंऊबोरहै तीसूं भारका उठावासूं मार्गचालिवासूं अंगांकूंअठीउठी करिवासूं

---

* कडवी गिलवै. गिलोय. नीमगिलोय. गलो. गडूची. गुलवेल. इतनातो नामप्रसिद्ध छै. वेलडी होयछै. पानमोटा. नागरवेलकापानसिरीसा होयछै. जीमैंक्यूंयेकफरकछै. लकडी जाडी होयछै. मोटावृक्षऊपरचवैछै. लंबीवहुतहोयछै. नींबका वृक्षऊपरकी मैंगुण अधिकछै. ईंकी लकडी माहीसूं सत्वनीकलैछै. सोगिलोयसत्वउत्तम औषधीछै.

अर कोई भयकरवस्तका कारंवासू या कारणासूं पवनहसो संकुचितहोय सरीरकीछोटी आंतांकाअवयवांनें आपका स्थानथकी नीचै प्राप्तिकरै पेडू अर जांघा तींकी संधिमें आफरोकरै अर उठे पीडाकरैपीछे मनुष्य हैसो हाथसूं अंडानें भींचै तदि ओ आंडचालि आपका स्थानस्थानमें वैठिजाय अर ओरूं कहींतरे आफरो होय तदिवारे नीकलि आवै अरजींपुरसकै वायको संचय घणो होय तींकै आंतां अवयवमिलि अंत्र वृद्धिनें करिलेवेंछे. ओ अंत्रवृद्धिवायकी वृद्धिकी तुल्यछै. यो अंत्रवृद्धिरोग असाध्यछै ७ अथ अंडवृद्धिको जतनलि० पाणीको वृद्धिको पाणी कढायांसूं जायछै. १ मेदको चर्बीकढायां जायछै. २ दूधमें अरंडकोतेलनापि महिना येकताईंपीवैतौ वायकी अंडवृद्धिजाय ३ अथवा गूगल अरंडकोतेल येदोन्यूं गोमूतसूं पीवैतौ पित्तकी अंडवृद्धिजाय ४ अथवा रक्तचंदन महुवो कमलगट्टा षस कमलकीजड यांनें बराबरिले पाछेयांनें दूधसूं मिहीवांटि उठेलेप करैतौ पित्तकी अंडवृद्धिनें दाहनें पीडानें यो लेप दूरिकरैछे ५ अथवा सूंठि कालीमिरचि पीपलि त्रिफला यांकोकाढोलेतीमें जवषार सींधोलूण नापिपीवैतौ कफकी अंडवृद्धि दूरीहोय ६ अथवा कडवीतूंबी लूपीयांवस्तांको सुहावतौ सुहावतौ सेककरै अरयांकापाणीको तरडो देतौ सर्व प्रकारकी अंडवृद्धिजाय ७ अथवा वारंवार उठे जोकलगायउठाको लोही कढावो करैतौ रक्तका कोपको अंडवृद्धिजाय ८ अथवा जुलाबसूं रक्तको अंडवृद्धिजाय ९ अथवा मिश्री सहत पाणीमें नापि पीवैतौ रक्तका कोपको अंडवृद्धिजाय १० अथवा सीतल द्रव्यका लेपसूं रक्त अर पित्तको अंडवृद्धिजाय ११ अथवा तुलसीका पानानें शिजायवेंकोसुहा

न. टी. सोथरोगतथावृद्धिरोगपरपथ्यलि० रेचक. रक्तमोक्ष. लालचावल. कुलथी. तुराई. सोभांजनकीफली. पानवीडा. लसण. वमन. गऊको घींरत. सहत. गरमजलइ० कुपथ्यलि० दहीं. छाछ. कदान्न उडद. मांस. श्रम. मैथुन. उपवास. पटाई. तीपांइसादि.

वतौ लेप करैतौ मेदको अंडवृद्धिजाय १२ अथवा गोसो उत्तरगयो होय तींको आछ्यो होवाकौ औषदि लिष्यते. भेडीको घृत कांसीकी थालीमैं मथे तींमैं रालमिलावे पाछै औरूंमथे पाछै वेमैंक्यूं शींगी मोहरोमिलावै पाछै ईंको गोसाकै मर्दन करैतौ गोसो आछ्यौ होय १३ औषदि अंडवृद्धिकी षैरीको गूंद टंक १५ वच टंक १० सूंठि टंक १५ गऊको दूध पैसा ८ तींमैं सालिम मिश्री पईसा ८ भरमिलाय टंक ४ रोजीनादिन २१ तांईं अंडाकी लेपकरैतौ अंडवृद्धिजाय १४ अथवा आंडाकी सीमणीका पसवाडाकै नीचै मिही वस्त्रकरिवेनैं बांधै तौ मूत्रकी अंडवृद्धिजाय ये सर्वजतन भावप्रकासमैंछै. अथवारास्ना महलौठी गिलवै अरंडकीजड षरैंटी किरमालाकीगिरि गोषरू पटोल अरडूसो यांकोकाढो करैतीमैं अरंडको तेलनाषि पीवैतौ अंत्रवृद्धिजाय १६ अथवा हरडैकीछालि चिरायतौ धणो येसारी पैसा पैसा भरिले लवंग पैसा पौण भरिले सोनामुषी टका १ भर मिश्रीयांसारांकी बराबरिले अर मिश्रीबराबरि सहत मिलाय रोजीना टंक २ पायतौ निश्चे अंडवृद्धि दूरिहोय १७ ये वैद्यरहस्यमैं लिष्याछै. इतिअंडवृद्धिअंत्रवृद्धिरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्.

अथ वध्मरोग ईनैं लौकीकमैं बद कहैछै. तींकी उत्पत्ति लक्षण जतनलिष्यते घणीभारी घणीकफकारी वस्तषाय अथवा भाख्या मांसका षावासूं अथवा पित्तकारी मिथ्याविहार स्त्रीसंगसूं कुपित हुवोजो पित्तसंयुक्त वायसो पेडू अर जांघ तींकी संधिमैं सोजानै लीयां गांठीनैकरैछै. वागांठी ज्वरनैं अर सूलनैं करै अरपगांमैं पीडाकरैछै तीनैं वैद्य हैसो वध्म रोग ईनैं लौकीकमै बद कहैछै १ अथ बदको जतनलिष्यते हरडैकीछालि पीपलि सींधोल्लूण येबरा

न. टी. अंडवृद्धिरोगमैं जोमूत्रकोरोगछै. जीनैंतोनस्तरसूं पाणीकाढैतौ तत्काल आराम होयछै. अरमेदको वृद्धिरोगछै. जीनैंनस्तरसौं कुशल वैद्यहैसो चीरकै चरबीकाढै जद आराम होयछै. अर अंत्रवृद्धिरोग असाध्यछै..जीनैं दाबैतो वडो येक विलक्षणशब्दकरैछै.

वरिले यांने मिहीवांटि यांनें अरंडका तेलमें भूनेपाछें टंक २ यांनें पायतौ बदको रोगजाय १ अथवा जीरो झाउरूपकी वकल कूठ गोंहूं बोरकापानयांनें कांजीका पाणीमेंवांटि वदके लेप करेंतो वद को रोगजाय २ ये भावप्रकासमें लिप्याछे. अथवा तत्कालको मा स्योजो कागलो तीकें माहिलो मलले तीनेंक्यूंयेक गरम करि बदकें बांधे अथवा लेप करेंतो तत्काल वद आछीहोय ३ यो वैद्यरहस्य में लिप्याछे. अथवा कुंदरू भेडीका दूधमें वांटि वेकें लेप करेंतो वद आछीहोय ४ इति वदरोगकीउत्पत्तिलक्षण जतन संपूर्णम्. अथ गलगंड १ गंडमाला २ अपची ३ ग्रंथि ४ अर्बुद ५ यां रोगांकी उत्पत्ति लक्षण जतनलि० जींपुरसका गलाकें आंडकीसीनांई गा ढो सोजो होय लटकें औ सोजो वडोहोय अथवा छोटो होय तीनें वैद्यहैसो गलगंडरोग कहैछे. अथ गलगंडको सामान्य लक्षणलि प्यते वाय अर कफ ये दोन्यूं गलामें दुष्टहोय अर गलाकें वीचि मेदनें पकडि सनें सनें मेदनें अंडकीसीनांई आपकाचिन्हांनें लेप चायदेछे तीनें गलगंड कहिजे सो गलगंड तीन प्रकारकोछे. वा यको १ कफको २ मेदको ३ अथ वायका गलगंडको लक्षण लि प्यते जीमें पीड घणीहोय अर गलाकीनसां काली होय अथवा लालहोय अर वामें कठोरपणो होय अर मोडीवधे अर पचै नहीं अर मूंढो विरस होय जाय अर वेंको तालवो अर गलो लीप्यो सो दीसे कफकरिकें येजीमें लक्षण होय तीनें वायको गलगंड क हिजे १ अथ कफका गलगंडको लक्षणलिप्यते गलाकें आंडकी सीनाई लटकती सोई स्थिररहै. अर भारीरहे अरवेमें षुजालि घ णीआवें अरवासीतल होय अरमोडीवधे अर मोडीपकें अर वेमें

न. टी. यो अंत्रवृद्धिछैसो वायका कारणांसूं पेटमाहली नसांआपआपका स्थानछोडकर वायूकीसाथ काछकी पोलमें गोलाकारनीकलेछै. सोविनाउपावकरीथकी वैनसांपोतवाला की कोथलीमें ऊतरवालागिजायछै. जीनें चापको कडोवनायकरदावी राषणी.

पीडकम होय अर वेंको मूंढो मीठो होय अर तालवो अरगलो
कफसूं लीप्योदीसै तीनैं कफको गलगंड कहिजे २ अथ मेदका ग
लगंडको लक्षणलि० ओचीकणोहोय कोमलहोय पीलो होय अर
वेमैंपुजालि होय अर वेमैं पीडहोय अर गलाकी संधिमैं घीयाकी
सीनाई लटकै अर वेंकी जड थोडीहोय अर वेंका देहका अनुमान
माफिक घटै वधे अर वेंको मूंढोचीकणो होय अरओगलाहीमैं
बोलै येलक्षण जीमैंहोय तीनैं मेदको गलगंड कहिजे ३ अथ ग
लगंडको असाध्यलक्षणलि० जींकै सास नीठी आवै अर वेंको
सर्वसरीर कोमल होजाय अरओवरस एक उलंघि जाय अर
भोजनमैं रुचि जातीरहे अर सरीरक्षीण पडिजाय अर स्वर आ
छ्योनीकलै नहीं ओगलगंडवालो असाध्यजाणिजै ४ अथ कंठ
मालाको लक्षणलि० जींकागलाकै अथवा कांपकै अथवा कांधीकै
अथवा पेडूकी अर जांघांकी संधिमैं बोरप्रमाण अथवा आंवला
प्रमाण मेद कफकी घणीगाढी गांठि पडिजाय तीनैं वैद्य गंडमा
लाको रोग कहेछे १ अथ अपचीको लक्षणलिष्यते अरवाहीगंड
माला घणांदिनकी होजाय अर वेमैं येलक्षण होय वा गांठि पकि
जाय अर वेमैं राधिघणिपडि करि वहनीकलै अर वैऊंठेही पैदा
होतीजाय अर मीटतीभीजाय अर दिन वेमैं घणांलागे तीनैं वैद्य
हैसो अपची कहेछे १ अथ अपचीको असाध्यलक्षणलिष्यते पस
वाडामैं सूलहोय षासहोय ज्वरहोय अर वमन होय येलक्षण हो
यतो असाध्य जाणिजे १ अथ ग्रंथि जीनैं गांठि कहेछे. तींको ल
क्षणलिष्यते वाय पित्त कफहैसो लोहीनैं मांसनैं मेदनैं नसांनैं दू

* बदरोगछै. जीनैं लौकीकमैं बदकी गांठकहैछै. योरोगबहुधागरमीका आजारसौं होय
छै. कोईकोई मनुष्यकै एकएकतरफ काछमैं घणी मोटी लंबी सारषी गांठहोयछै. कोई को
ईकै दोयतरफहोयछै. ईकै लेपादिकतथापटी बहुतप्रकारकीछै. परंतुकाची गांठकै तौ जोकलगा
वणी घणीश्रेष्ठछै.

पितकरै अर गोल ऊची सोईनें लीयां ऐसी जो गांठि तीनें पैदाक
रैछै. सो ईनें वैद्य ग्रंथिनाम गांठि कहैछै. सो यागांठि पांच ५ प्र
कारकीछै. वायकी १ पित्तकी २ कफकी ३ मेदकी ४ नसांकी ५
अथ वायकी गांठिको लक्षण लिप्यते प्रथम वा गांठि चामडीनें पें
चिकरि बडीहोय पाछै वेमें चटका चालै. पाछै वेमें व्यथा घणीहोय
अर वा फूटै जदि निर्मल लोहीनें वहै १ अथ पित्तकी गांठिको
लक्षण लिप्यते वेगांठिमें अग्नि घणीवलै दाह होय अर धूवोनी
सख्यां जिस्यो लागै सींगडी सूंपेंचै जीसी पीड होय लाल रंगकी
पाकै वा पीली होय फूटै जीमें रक्त घणोनीपलै २ अथ कफकी गां
ठको लक्षणलिप्यते वा गांठि सीतल होय जींको वर्ण ओरसो होय
जीमें अल्प पीडा होय पुजालिजोमें घणीहोय पथरसिरीसी गांठि
होय मोडी वधै वा फूटै जदि जाडी राधि नीसरै लोही नहीं नीसरै.
येलक्षण जीमें होय तीनें कफकी गांठि कहिजै ३ अथ मेदकी गां
ठिको लक्षणलि० जींसरीर माफिक वागांठि वधैघटै वागांठिचीक
णी होय अर वडी होय पुजालि होय वेमें पीडघणीहोय अर वा
फूटै तदि पलसिरीसो घृतसिरीसो वेमें नीकलै तीनें मेदकी गांठि
कहिजै. ४ अथ नसांकी गांठिको लक्षणलिप्यते वागांठि निर्बल
पुरसकै षेदसूं ऊपजै नसांनें संकोचकरै वायगांठिनें उपजावै वा
गांठि ऊंची अर गोल होय अर वेमें पीडा होय अर कोमल होय
अथवा करडीहोय पीडाभीनहीहोय अर वागांठि मर्मस्थानमें हो
यतौ निश्चैही असाध्यछै अर नहीतो यागांठि कष्टसाध्यछै ५ वे
मर्मस्थानभीलिषूंछूं. गाल गलो कांधो सरीरकी संधि हीयो गुदाकै
निकटि पीठि येमर्मस्थानछै. अथ अर्बुद रोगकी उत्पत्ति लक्षणलि

न. टी. कंठमालरोगप्रसिद्धछै. परंतु ईमैंघणाविस्मरणहोयछै. कारणयोरोगविशेषकर कं
ठमैंहीहोय. सोयावातनहीछै. मुष्यस्थानतो कंठहीछै..परंतुमालाकै आकारफुणस्यांहोय कर
गुसहोतीजाय पकतीजाय फूटतीजाय फेरहोतीजायछै.

ष्यते जो पुरस मांस घणो षातोहोय अर अन्नादिक थोडो षाय तींकै वायपित्त कफ हैसो दुष्ट होय वेंकालोहीनैं अर मांसनैं वे विगाडि वेंकासरीरमैं अथवा सरीरका येक देसमैं वडीगोल स्थिरजीमैं थोडीपीडा जीकी जड थोडी मोडीवधै पचैनहीं ईसी मांसकी गांठि होय तीमैं वैद्यहैसो अर्बुदरोग कहैछै सो ओ अर्बुदरोग दोय २ प्रकारको येकतो रक्तार्बुद १ येक मांसार्बुद २ अथ रक्तार्बुदको लक्षणलिष्यते आपका कारणांसू दुष्ट हुवोजो पित्त सोरुधिरनैं अर नसांनैं संकुचित करै अर वांनैं पीडाकरै वाका मांसका पिंडकर मांस काअंकुरां सेती वानैंढकै पाछै वेनैंक्यूं येकपकाय अर लोही संयुक्त वेनैं घणोवहावै निरंतर वेनैं रुधिरको अर्बुद कहिजे यो असाध्यछै ईरक्तका नासथकी सरीरमैं ओर उपद्रव पांडुरोगनैं आदिलेर करैछै १ अथ मांसार्बुदकी उत्पत्ति संयुक्त लक्षणलिष्यते जींपुरसकै कहींतरैसूं मूठीनैं आदिलेर क्यांहीकीवेका सरीरकै चोटलागै जींजगांको मांस दुष्टहोय तदि ओमांस दुष्ट हुवोथको ऊठे सोजानैं करै सो वे सोजामैं पीड नहीं अरवें सोजाको देहकावर्ण सिरीसो रंगहोय अर ओसोजो पकै नहीं अर ओसोजो पथरी सिरीसो गाढोहोय अर ओसोजो थिररहै ये जीमैं लक्षण होय तीनैं मांसार्बुद कहिजे येभीअसाध्यछै २ अथ अध्यर्बुदको लक्षणलि० जो अर्बुद मर्मस्थानमैं उपजै अथवा नसांमै उपजै ओछोटोभीछै तीनैं अध्यर्बुद कहिजे १.

अथ अर्बुदरोग पकै नहीं तींको कारण लिष्यते ईमैंकफका अधिकपणाथकी अरमेदका अधिकपणाथकी पकै नहीं ज्यूंयो असाध्यछै. १ अथ गलगंडनैं आदिलेर येरोग कह्या त्यांका अनुक्रमसूं जतन लिष्यते सरस्यूं सह जणाकाबीज सणकाबीज. अलसी जव मूलीकाबीज येबराबरिले यांनैं वांटि छाछिमैं मिहीवांटि यांको लेप

करैतौ गलगंडनें गंडमालानें गांठिनें यांरोगांनें तत्काल दूरिकरें १ अथवा सरस्यूं जलकूंभीकीराष यांदोन्यांनें तेलमें वांटि यांको लेप करैतौ गलगंडरोग जाय २ अथवा संषाहुलीनें जलसूंवांटि वेनें छाणि प्रातसमैं दिन १५ पीवै ऊपरिसूं गऊको घृत घणोंपायतौ गलगंडरोग जाय ३ अथवा कुटकीनें वांटि वेनें पक्कीबीयाका फल में रात्रिमें भिजोय राषे पाछे वेही जलमें वेनेवांटि छाणि दिन ७ पीवैतौ गलगंडरोग जाय. ४ अथवा गिलवै नींबकीछालि छड तुणकी छालि पीपलि ये दोन्यूं षरैटी देवदार येबराबरिले यांको काढोकरि ईकाढाकारसमैं तेलपकावै पाछे ईतेलनें टंक ५ रोजीना दिन १५ पीवैतौ गलगंडरोग जाय ५ इति अमृतादि तैलम् अथवा जव मूग पटोल कडवीवस्त रूषो अन्न. वमन. लोहीकौं छुडावौ पाछणाको देवो येसारागलगंड रोगनें आछया. ६ अथवा जलकुंभी सींधोलू ण. पीपलि यांनें वांटि प्रभातसमैं सूंठि नाषिपीवैतौ कंठमाल जाय ७ अथवा वरण्याकी जडको काढो तीमें सहत नाषि पीवैतौ कंठ माल जाय ८ अथवा कचनारकी वकल टंक ५ भर सूंठि टका १ भर पीपलि टका १ भर मिरचि टका १ भर हरडैकीछालि टंक ५ बहेडाकीछालि टंक ५ आंवला टंक ५ वरण्याकीछालि टंक २ तज टंक १ पत्रज टंक १ इलायचीटंक १ यांनै मिहीवांटि यांबराबरि ईमें सोध्योगूगल मिलाय ईको येकजीवकरि मासा ४ प्रभातही जलसूं रोजीना लेतौ गलगंडनें अर्बुदनें गांठिनें व्रणनें गोलानें कोढनें भगंदरनें जुदाजुदा अनुपानसूं यांरोगानें दूरि करैछे. १० इति कचनारीगूगलम् अथवा वायविडंगकी जड ईको काढो करि तीमें जल भांगराकोरस नाषि तीमें तेल अनुमान माफिक नाषि

न. टी. रक्तार्बुदरोगमैंरुधिरजादानीषलजायतौ ईरोगमाहसौं औरहीरोगकीसंप्राप्ति होय जायछै. जीसौं वैद्यनैंपूरोविचारराषणो. कारणरक्ततोमुष्य शरीरमैंराजाछै. सोआहारव्यव हारपथ्यापथ्यकीसावचेती राषणी.

मधुरी आंचसूं ईनें पकावै तदि रसमात्र बलिजाय तेलमात्र आयरहै तदि ईमैंसिंदूर नाषि उतारिलै पाछै ईंको लेप करैतो कं ठमाल जाय ११

इति चक्रमर्दन तैलम् अथवा चिरमीको पंचांगलै तीनैं जलसूं वांटि वेमैं अनुमानमाफिक तेलनाषि मधुरी आंचसूं पकावै तदि रसबलिजाय तेलमात्र आयरहै तदि ईंतेलको वेंकै मर्दनकरैतो कं ठमालजाय १२ इति गुंजातैलम् अथ अपचीको जतनलिष्यते सिरस्यूं नींबका पान भिलावा यांनैं घालि बकरीका मूतमैं यांनैं वां टिलेपकरैतो अपची जाय १२ अथवा रक्तचंदन हरडैकीछालि लाष वच कुटकी यांनैपाणीमैं वांटि ईपाणीमैं तेलपकावै पाछै ईंतेलको म र्दनकरैतो अपचीरोगजाय १४ इति चंदनादि तैलम् अथवा सूंठि कालीमिरचि पीपलि वायविडंग महुवो सींधोलूण देवदारु यांनैं पा णीसूं मिहीवांटि ईमैं तेलनाषि मधुरी आंचसूं पकावै जल बलिजा य तेलमात्र आय रहै तदि ईंतेलकी नास लेतो अपची जाय १५ इति व्योषादितैलम् अथ गांठको जतनलिष्यते साजीमुलीकोषार संषको चूर्ण यांनैं पाणीमैं वांटिलेपकरैतो गांठनैं अर्बुदनैं यां दो न्यांनैं यो दूरिकरैछै. १६ अथ जात्यादिघृत आगै व्रणरोगमैं कह स्यां तीसूं गांठि उगैरै व्रणमात्र सर्वजाय अथ अर्बुदको जतनलि ष्यते हलद लोद पतंग धमासो मैणसिल यांनैं मिहीवांटि सहतमैं पाछै ईंको लेप करैतो मेदको अर्बुदरोग दूरिहोय १ अथवा मूली कोषार हलद संषकोचूर्ण ये जलमैं मिहीवांटि लेपकरैतो अर्बुद जाय २ अथवा कूठ षारीलूण वडको दूध यांनैं मिहीवांटि लेपकरै तो अर ऊपर वडकोपान बांधै दिन ७ तो अर्बुदरोगजाय ३ अ

---

* कचनारको वृक्षमोटो होयछै. देसप्रसिद्धछै. ईकी छालनैं बकल कहैछै. सो अंतरछाल लेणी योग्यछै. ईछालमैं कंचनकी भस्म होयछै. ओर अनेक औषधीमैं योग्य होयछै. ईका पुष्पको साग होयछै. गुणकारीछै. विशेष गुण निघंटमैं लिष्याछै.

थवा सहजणाकीजड अर सहजणाकावीज सरस्यूं तुलसीकापान जव कनीरकी वकल इंद्रजव ये बराबरिले पाछे छाछीसूं मिहीवांटि ईंको लेप करैतो अर्बुदरोग जाय ४ येसर्वजतन भावप्रकासमैं लिष्याछे अथवा लाल अरंडकीजड छीलाकीजड यांदोन्यांनैं चावलांका पाणीमैं वांटि लेपकरैतो गलगंडजाय ५ अथवा किरमालाकी जड चांवलांका पाणीमैं वांटि लेप करैतो कंठमाला जाय ६ अथवा संभालूकीजड जलसूंवांटि लेपकरैतो कंठमालाजाय ७ अथवा सिरस्यूं सूकरकी विष्टा यांनैं बराबरिले यांनैं ठीकरामैं बालि पाछे कडवातेल ईमैं मिहीवांटि वेंको लेपकरैतो कंठमाल जाय ८ येसर्व जतन वैद्यरहस्यमैं लिष्याछे. इतिगलगंड कंठमाला अपची ग्रंथि अर्बुद यांरोगांकी उत्पत्ति लक्षणजतन संपूर्णम्

इतिश्रीमन्महाराजाधिराज महाराजराजराजेंद्र श्रीसवाईप्रताप सिंहजी विरचिते अमृतसागर नामग्रंथे सोथरोग अंडवृद्धि अंत्रवृद्धि वध्मनाम बद गलगंड कंठमाला अपची ग्रंथिनामगांठ अर्बुद अध्यर्बुद यांसारां रोगांका भेदसंयुक्त उत्पति लक्षणजतन निरूपणंनाम चतुर्दशस्तरंगः समाप्तः १४

१५ अथ श्लीपदरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते जोपुरुष पुराणो जलतलाव उगैरे कोछउरितुमैं पीवैतोसीतलहीजल तींपुरुषकै यो श्लीपदरोग निश्चै होयछे. अथ श्लीपदरोगको सामान्य लक्षण लिष्यते जींकै पेडू अर जांघांकी संधिमैं सोजो घणो करै पीछे पीड घणीकरै. वापीड जुरनैं करै पाछे वासोई ऊठासूं चालै सो क्रमसूं पगांतांई आवै ईनै वैद्यहैसो श्लीपदकहैछे. कोईक आचार्य हाथकै कानकै इंद्रीकै आंषकै होठकै नाककै भी सोई होय

न. टी. कंठमाल- अर्बुद. अपची. यांकैवास्तैपथ्यलि० हलकोअन्न. पुराणोघृत. मूंग. कुलत्थ. चंदलाई. तुराई. एकांत. विरेचन. इ० कुपथ्यलि० छाछ. दहीं. तेल. हिंग. वेंगण. गुड. मिरचलाल. श्रम. धूप. दिनमैंनिद्रा. विसम. असवारी. इत्यादि.

तीनैभी श्लीपद रोग कहैछै. वो श्लीपदरोग च्यारि ४ प्रकारकोछै. वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ अथवा वायका श्लीपदको लक्षण लिष्यते कालो होय लूषोहोय ओफाटिजाय जीमैं पीडघणीहोय जुरहोय १ अथ पित्तका श्लीपदको लक्षण लिष्यते चीकणो होय पीलोहोय स्थिरहोय विनाकफ भाख्यापणो अर करडापणो होय २

अथ सन्निपातका श्लीपदका लक्षण लिष्यते जीं श्लीपदकैछिद्र घणो होय चुयवा लागिजाय बंबाकीसी नाईहोय ओश्लीपद सन्निपातको जाणिजे ओ असाध्यछै अथ श्लीपदको जतन लिष्यते ईरोग वालानैं लंघन लेप स्वेद जुलाब लोहीको छुडायवो गरमवस्तको षावो येसारा आछ्या अथवा सरस्यूं सहजणाकीजड देवदारु सूंठि यांनैं गोमूतमैं वांटि यांको लेप करैतो श्लीपद जाय २ अथवा साठीकी जड सूंठि सिरस्यूं यांनैं कांजीमैं वांटि यांको लेपकरै तो श्लीपदजाय ३ अथवा धत्तूराकीजड अरंडकीजड संभालूकीजड सहजणाकीजड सिरस्यू यांनैं पांणीसूं मिहीवांटि ईको लेप करैतो श्लीपद जाय ४ अथवा सहदेई तालफलका रससूं वांटि ईको लेपकरैतो श्लीपदजाय ५ अथवा साषोटक वृक्षकी वकलको काढो तीमैं गोमूत नाषि पीवैतो श्लीपद जाय ६ अथवा हलद अरगुड येदोन्यूं बराबरिले यांनै मिहीवांटि येकजीवकरि जोपुरस गोमूतसूं ईनैं पीवैतो श्लीपद रोगनैं दाहनैं कोढनैं योदूरिकरैछै ७ अथवा साठीकीजड त्रिफला पीपलि येबराबरिले यांनैं मिही वांटि टंक २ सहतसूं लेतो घणादिनाको श्लीपद जाय ८ अथवा बडी हरडैका चूर्णमैं अरंडको तेल मिलाय वेमैं गोमूतनाषि दिन १५ पीवैतो श्ली

न. टी. श्लीपदरोगवालाकै पगजाडोहोयछै. सोवोरोगकेवलपगांमैं होय इसीवातन... ओरोग ओरस्थानमैंवी होयछै. सोईरोमनैं लोकप्रसिद्ध नाम रसको विकारकहैछै. सोविकार हातांमैं. पगांमैं. कानांमैं. ओरभी अंगमैं रसऊतरैछै.

पदरोग दूरिहोय ९ येसर्व जतन भावप्रकासमैं लिष्याछै. अथवा वधायरो पीपलि सूंठि कालीमिरचि वायविडंग यांनै मिही वांटि पाणीमैं पाछै अनुमान माफिक ईमैं तेलमिलाय पाछै ईमैं मधुरी आंचदे पकावैतदि ओपाणी बलिजाय तेल आयरहै तदि उतारिले पाछै ईको मर्दन करैतो श्लीपदरोग जाय १० अथवा धत्तूराका बीजानैं येकसूं वधैवीस तांई तींउपरिसीतल जलपीवैतो श्लीपदरोग जाय. ११ येसर्व जतन वैद्यरहस्यमैं लिष्याछै. अथवा मजीठ महुवो रास्ना जाल साठीकीजड यांनै मिहीवांटि कांजीमैं लेपकरैतो पित्तको श्लीपद जाय १२ अथवा अंगूठा ऊपरलीनसांको लोही कढावैतो पित्तको श्लीपदजाय १३ अथवा कैसोंधीकी जड तीनैं टंक २ गऊका घृतकैसाथि पीवैतौ श्लीपदजाय १४ अथवा पीपलि त्रिफला देवदारु ईमैं नाषै पाछै यांनैं मिहीवांटि टंक २ रोजीना कांजीकापाणीमैं लेतो श्लीपदनैं अजीर्णनैं वायका रोगांनैं फियानैं यांसारांरोगांनैं योदूरिकरैछै. अर भूष घणी वधावैछै १५ इतिपिपल्यादि चूर्णम् योवृंदमैंछै. इति श्लीपदरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम् अथ विद्रधीरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनलि० हाडांमैं रहता जोवाय पित्त कफ सो ईका सरीरकी त्वचा लोही मांस मेद यांनैं विगाडि अर सनै सनैं ईंपुरषकै भयंकर सोजानैं पैदा करैछै. सो सोजो गोल होय अर पीडनैं लीयांहोय अर ओंडो घणोहोय अर वडोघणोहोय येजीमैं लक्षण होय तीनैं वैद्य हैसोविद्रधीकहैछै. सोविद्रधीरोग ६ प्रकारकोछै. वायकी १ पित्तकी २ कफकी ३ सन्निपातकी ४ चोट लागिवासूं उपजी ५ रक्तविद्रधी ६ अथ वायकीविद्रधीको लक्षणलि० वासोई कालीहोय अथवा लालहोय क्षणे

न. टी. श्लीपदरोगनैंउपचारवहुधालिष्याछै. परंतु ईंरोगनैं वमन विरेचन फायदोघणो करैछै. कारणविरेचनसौं. मवाद घटैतौ वासोई हलकी पडै. पाछै. लेपादिक औषधी. वापेटमैं औषधी दीयांसूं आराम होय. अरअसाध्य हुवो थको जाय नहीं.

कमैं थोडीहोय जीमैं ऊठतांही नानाप्रकरका पकिवाका चिन्हहोय येजीमैं लक्षण होय तीनैं वायकीविद्रधी कहिजे १ अथ पित्तकी विद्रधीको लक्षणलि० वासोई पक्या गुलरिकाफल सिरीसी होय अर कालीहोय ज्ुरदाहनैलीयां होय अर वासोई तत्कालपकिजाय ये जीमैं लक्षण होय तीनैं पित्तकी कहिजे २ कफकी विद्रधीमैं कफका लक्षण होयसो कफकी कहिजे ३ अथ सन्निपातकी विद्रधीको लक्षणलि० जीसोईमैं नानाप्रकारको वर्णहोय अरजीमैं नानाप्रकारका स्राव होय अर वासोई गलाकी गांठ कनैहोय अर वासोई विसमहोय कदेतो घटै कदे वधै अर वा वडीहोय अर वेंको पकिवोभी विसमहीछै. कदेंकतो वेगीपकै कदेंकमोडीपकै येजीमैं लक्षण होयतीनै सन्निपातकी विद्रधीकहिजे. ४ अथ चोट लागिवाकी विद्रधीकोलक्षणलि० जीस्थानमैं चोटलागै उठैही पित्तनैं यावायहैसो पित्तसंयुक्त लोहीनैं विगाडै पाछै ऊठै सोईनैं करै अर ज्ुरतिसदाह वायउपजावै अर वेविद्रधीमैं पित्तकाभी लक्षणमिलै येजीमैं लक्षण होय तीनैं चोटलागिवाकी उपजीविद्रधी कहिजे. ५ अथ रक्तविद्रधीको लक्षणलि० वासोई कालिहोय अर वेमैं फोडाघणा होय अरवेमैं पीड दाह ज्ुरयेभीहोय अर पित्तकी विद्रधीकाजीमैं सर्व लक्षण होय तीनैं रक्तविद्रधी कहिजे. ६ अथ साध्य असाध्यजाणिवाके वास्ते अंतर विद्रधीको लक्षण लि० जुदाजुदा अथवामिल्याईसावायपित्त कफ हैसो कुपथ्यसूं कोपकूं प्राप्ति हुवाथका सरीरकैमांहियेक गांठि गोलाके आकार बांबीकीसीनाईऊंची ईसीपैदा करैछै. सरीरकै माहि तीनैं वैद्यहैसो अंतर विद्रधी कहैछै वा अंतर

---

* मजीठ. मंजीष्ठा रंग लाल नीकलैछै. कपडा रंगीजैछै. काष्ठ जातीछै. झाडकी जडहोयछै. देसप्रसिद्ध मजीठछै. रंगतमैछै. ४ महुवो प्रसिद्ध नामछै. मधुवृक्षका फूलहोयछै. मद्यउत्पन्न होयछै. महुवाकी मदिराजीनैं माध्वी मदिरा कहैछै. रास्नानामछै. जीनैं रायसेण कहैछै. देसमैं राठप्रसिद्धछै. वायूका रोगऊपर बलवानछै. रास्नाकै

विद्रधी दस प्रकारकीछै येकतो गुदाकै विसै होयछै १ पेडूका मुषमैं २ नाभिमै ३ कूषिमै ४ पेडूअर जांघकीसंधिमैं ५ हिया अर तिसका स्थानकै विचै ६ फियामै ७ हियामैं ८ अर नाभिकै जीवणी कानी ९ तिसका स्थानमैं १० अथ गुदाकीविद्रधीको लक्षणलि० गुदामैं विद्रधी होयतौ पवन आछी तरै चालै नहीं. वायपवन रुकि जाय १ पेडूका मुषमैं विद्रधी होयतौ वेंकै मूत्रकृच्छ्रको रोग होय २ नाभिमैं विद्रधी होयतौ वेंकै हिचकी घणी आवै अर पेडूमैं आफरोरहै ३ अर कूषिमैं विद्रधी होयतौ उठै वायको कोप होय ४ अर पेडूजांघकी संधिमैं विद्रधी होयतो कटिमैं पीठिमैं पीडघणीहोय ५ हियाकै अर तिसका स्थानकै विचैविद्रधी होयतौ पसवाडाको संकोच होय अर ऊठै पीड घणीहोय ६ फियामैं विद्रधी होयतौ सास आवै नहीं ७ हियामैं विद्रधी होयतौ सर्व अंगमैं पीड होय सर्व अंग रुकिजाय अर षास होय ८ अर नाभिकै जीवणीकानी नाभिकै विद्रधी होयतौ सासको रोगहोय ९ अर तिसका स्थानमैं विद्रधी होयतौ जल घणोपीवै धापै नहीं. १०

अथ विद्रधीको साध्यासाध्य लक्षण लिष्यते नाभिकै ऊपरि पकि विद्रधीछै. वा फूटिवेकी राधिऊपरि जायछै. अर नाभिकै वीचरली विद्रधीछै. सोवाफुटिवेकी राधि नीचै जायछै. जो विद्रध्यांकी राधिनीचै जाय सोतो प्राणी जीवै अर ज्यांविद्रध्यांकी फूटिकरि राधिऊपरि जाय वे प्राणी मरिजाय १ अथ पुनः असाध्य लक्षण लक्षण लिष्यते हियामैं नाभिमैं अर पेडूमैं विद्रधी होयतो अछी नहीं औरस्थानामैं आछी अर विद्रधी काची अर पकी अर दग्ध होय गई होय तीनैं सोजाकी सोनाईं देषिलीजै १ अथ माहीली

न. टी. जोविद्रधीकी गांठप्रसिद्धछै. परंतु अंतरविद्रधी शरीरकै माहिसौं जींकी जडऊंडीहोयछै वैद्यकालक्षणमैं मोडी आवै. सर्वरूपवैंको प्रसिद्धहुवा स्पष्ट मालम पडैछै. जीसौंचतुरवैद्य हैसोवैंको पूर्वरूप देषतांही निश्चयकरणी.

विद्रधीको असाध्य लक्षण लिष्यते आफरो होय छर्दि होय तिस घणीहोय हिचकीहोय जीमैं पीड घणी होय येजीमैं लक्षण होयतो ओ प्राणी मरै १ अथ विद्रधीको कष्टसाध्य लक्षण लिष्यते वा विद्रधी कच्चीहोय अर वायकी होय वडी होय छोटी होय वाममर्मस्थानमैं होय सोकष्टसाध्य जाणिजे. १ जोविद्रधीसन्निपातकीछै अर हियामैं नाभिमैं अरपेडूमैछै अर वारुकिजाय अर वा मूठी प्रमाण होय वाविद्रधी असाध्य जाणिजे अर मूठि प्रमाण मांस लोहीको गोलोभी होयछै. सोविद्रधीतो पकिजाय अर गोलोपकै नहीं योई मैं भेदछै. १ अथ विद्रधीको जतन लिष्यते सर्व विद्रधीमात्रकूं जो कलगाय वांकोलोही काढै तौ विद्रधी आछी होय १ अथवा जुलाबसूं पित्तकी विद्रधीजाय २ अथवा विद्रधीपकैनहीं जीतैव्रण का सोजाको सोजतन करै ३ अथवा अरंडकी जडको काढोकरि तीमैं तेल अथवा घृत पकावै पाछै वेकौ सुहावतौ सुहावतौ सेक करैतौ वायकी विद्रधी जाय ४ अथवा जव गोहूं मूग यांका चूननें घृतसूं पकाय वेकौ लेप करैतौ विद्रधी विनापकीभी आछी होय ५ अथवा आसगंध षस महुवो रक्त चंदन यांनें दूधसूं पीसि ईमैं घृत मिलाय निवाईकरि लेप करैतौ पित्तकी विद्रधी जाय ६ अथवा ईट वालु रेत लोहको मैल गोवर यांनें मिहीवांटि गोमूतमैं सिजाय सुहावतौ सेक करै अथवा लेप करैतौ कफकी विद्रधी जाय ७ अथवा दसमूलका काढामैं तेल अथवा घृत नाषि वेंको तरडोदेतौ विद्रधीका व्रणको सोजो अर वेंकी सूल जाय ८ अथवा रक्तचंदन मजीठ हलद महुवो गेरू यांनें दूधसूं सिजाय लेप करैतौ लोहीकी अर चोट लागिवाकी विद्रधी जाय ९ अथवा कालोजीरो इं

न. टी. वाविद्रधीसाध्यछै. वाअसाध्यछै. वाजाप्यछै. ईसीनिश्चयकरणी. परंतु जोपोलकी विद्रधीछैजीनैंप्राणाकीहरवावाली जाणकरआपकीस्वबुद्धिकरकैशास्त्रकीसहायतासौंउपचारकरणौयोग्यछै. योरोगकाचोषापाकोध्यानमैंराषणो.

द्रायणकी जड तोरूं यांको काढो टंक २ कोलेतौ कोठाकीउपजी वि द्रधी जाय १० अथवा सहजणाकी जडकोरस तीनैं सहत मिलाय पीवैतौ अंत्रविद्रधी जाय ११ अथवा सहजणाकी जडका काढामैं सेकीहींग सींधोलूण नापि प्रभातही पीवैतौ अंत्रकी विद्रधी जाय १२ येसर्व जतन भावप्रकासमैं लिप्याछै इति विद्रधीरोगकी उत्प त्ति लक्षण जतन संपूर्णम् अथ व्रणका सोथ रोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनलिष्यते व्रणसोथरोग हैसो छप्रकारकोछै. वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ लोहीका दुष्टपणाको ५ कहीं तरैकी लकडी उगैरै चोटलागिवाको ६ यां कारणांसूं प्रथम व्रण होय पाछै व्रणकै सोथ होय अथ व्रण सोथको लक्षण लिष्यते वायको व्रण विषम पकै पित्तको व्रण तत्कालपकै कफको व्रण मोडोपकै लो हीको भीव्रण तत्कालपकै चोट लागिवाको व्रण तत्कालही पकै १ अथ व्रणसोथ नहीं पक्यो पक्यौतींको लक्षण लिष्यते वेंव्रणसोथ मैं गरम थोडीहोय अर सोजो थोडोहोय अर ओ व्रणसोथ करडो होय अर वेंकी त्वचा व्रणसिरीसी होय वेमैंपीडाकमहोय अर सोजो थोडोहोय ये लक्षण होय तदि जाणिजै व्रणसोथ काचोछै १ अथ पक्या व्रणसोथको लक्षण लिष्यते वासोई अग्निकी सीनाई बलै अर वासोई षारकीसीनाई पकै वासोई कीडीकीसीनाई काढै वासो ई छुरीकीसीनाई काढै अर वासोई दंडकीसीनाईमारै अरवा सोई हाथसूं पीडी नहीं मानूं अर वोसोइसुई करिकै विंधि नहींमानूं अर वेंसोईनैं दाह घणोहोय अर वेंसोईकौरंग ओर सो होय अर वासोई अंगुलीकरि पीडीजै नहींमानू आसनकै विसै सोवाकै विसै

न. टी. विद्रधीरोगमैं निदानकरतांवैद्यभूलजायछै. कारणएकगोलो पेटमैं होयछै सोस्थि रगोलोवायूका संबंधसौं होयछै. सोवोगोलो अरविद्रधी एकसाहीमालम पडैछै. सोभरोसामैं रहैजायतो याविद्रधी असाध्यहोयजायजीसौं नीगैराषणी. विद्रधीतोपाकैछै अरगोलोपाकै नहींछै.

सांतिकूं प्राप्ति होय वींछूका काट्याकीसीनाई जीतै वासोई गाढी होय तीतनैं वेसोईका पकांवाकोजतन करै वेनैं फाडैनहीं अर वे सोईमैं जुरहोय तिसहोय अरुचिहोय येलक्षण जीमैं होय तदि जाणिजे वासोईपकिगई अथ व्रणसोथ पकिगयो होय तींको लक्षण लिष्यते वेंसोजामैं पीडनहीं होय ललाई थोडीहोय घणोऊंचो नहीं होय अर वेंसोजामैं सलघणा पडिजाय अर वेमैंपीडहोय अर पुजालि घणी आवै सर्व उपद्रव जातोरहै वासोई नजाय त्वचा फाटिवालागिजाय वेमैं आंगुलीसौंपीड्यांराधि नीसरै येलक्षणजीमैं होय तदि जाणिजे व्रणसोथ पकिगयोछै. वेमैभी वायविनापीडा नहीं पित्तविना पकिवो नहीं कफविना राधिनहीं ईकारणसूं पकिवाकै समये तीन्यूंहीहोय १ अथ परिपाकअवस्थामैं औरभी मतांतरका लक्षण लिष्यते वेंका जतन करि वामैं ढील करैतौ पित्त हैसौ कोप करिजाय कफको ग्रहण करि लोहीनैं पकायदे ओलोही पक्यो थको राधिनै करिदे अथवा राधिकाढै नहीं तींकादेसलिष्यते जैसे तृणांका समूहनैं पवनसूंप्रेर्यो थको अग्नि दग्ध करैछै तैसेही वेंकी राधि काढैनही तौ वेंका सरीरकामांसनैं रसांनैं याराधि षाय जायछै. १ अथ सोजाका काचापक्याका ग्यानकै अर्थवैद्यका गुणदोष कहिजैछै. जो कच्चाव्रणनैं जाणै अरपचताव्रणनैं जाणै. अर जो पक्या व्रणनैं जाणै सो तोवैद्य अर यांनैं जाणै नहीं सोवैद्य नहीछै. वेचोरकी वृत्तिकरिवावाला वैद्य चोरछै. १ जो वैद्य फोडा व्रणनैं कच्चानैं फोडै अर पक्कानैं फोडैनहीं सो वैद्य नहीछै. चावैद्यानैं कच्चापक्काकौंग्यान नहीं वे वैद्यनैं चांडाल भंगीकीसीनाई जाण

---

* व्रणरोगनाम घाव. गुमडो. फुणसी. गांठ इत्यादिकछै. सोकच्चो होयजीने तो गांठ कहैछै. जोदुषणो अदीठ. काषोलाई. औरभी घणाजातकी गांठछै. जींकैवास्तै पकावानैं पोटीस बांधणो घणो श्रेष्ठछै. दाक्तरलोक पोटीस बांधैछै. सूंलिषूंछूं. गवांको आटो. दूध. हलदी. षांड. घीरत यांकी लूपरीकर बांधै गरम गरम तो गांठ जलदी पकैछै. पाछै फाडिजै.

नो २ इति व्रणसोथकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम् अथ व्रणरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते प्रथम व्रण हैसो च्यारप्रकारकोछै. एकतो वायको १ पित्तको २ कफको ३ रक्तको ४ यादोसांका एकेकसस्त्रादिकका लागिवाको ७ वावें वायपित्त कफका त्रिदोपको हैसो ८ आठप्रकारकाछै. सो जुदा जुदालिष्यते वायको १ पित्तको २ कफको ३ लोहीको ४ वायपित्तको ५ वाय कफको ६ कफ पित्तको ७ सन्निपातको ८ अथ वायका व्रणको लक्षण लिष्यते ओ व्रण हैसो स्थिरहोय कठिण होय मंदश्रवै पीड घणी होय जीमैं व्यथा घणीहोय फुरकै घणो कालो घणौ होय येलक्षण जींव्रणमैं होय तीनैं वायको व्रण कहिजै १ अथपित्तका व्रणको लक्षण लिष्यते जीमैंतिसहोय मोह होय जुरहोय आलापणोहोय जीमैं दाह होय पीडहोय जीमैं फांटि होय जीमैं दुर्गंधिलीयां राधिनीकलै येलक्षणजीमैं होय तीनैं पित्तको व्रणकहिजै २ अथ कफका व्रणको लक्षण लिष्यते जीमैं घणो आलापणो होय भार्यौ होय चीकणा होय जीमैं पीडा कमहोय पीलोवर्ण होय मोडोपकै ये जीमैं लक्षण होय तीनैं कफको व्रण कहिजै ३ अथ लोहीका व्रणको लक्षण लिष्यते ओव्रण लाल होय अरजीं व्रणमैं लोही घणोनीकलै ४ अरजीं व्रणमैं वायपित्तको लक्षण होयतीनैं वायपित्तको कहिजै. ५ जींव्रणमैं वायकफको लक्षण होय तीनैं वायकफको कहिजैं. ६ जींव्रणमैं कफपित्तको लक्षण होय तीनैं कफपित्तको कहिजै. ७ जींव्रणमैं सर्व कारण वालक्षण होय तीनैं सन्निपातको कहिजै. ८

अथ शुद्ध व्रणको लक्षणलि० जीभका नीचरलापींदासिरीसी

न. टी. वाय. पित्त. कफ. येतीन्यूं दोषछै सोव्रणादिककापरिपाकमैं मूर्तिमाननिश्चैहोयछै सोकुशलवैद्यनैंनिगाराषणीयोग्यछै; सोलिषूंछूं. जैसैपरिपाकमैं वायूविनापीडानही होय. पित्तविनापकावनही होय. कफविनापीपरादनहीहोयछै.

जींकी कांति होय अति कोमल होय निर्मलहोय चीकणो होय जी मैंपीडा थोडी होय आछीजींकी विवस्थाहोय वेमैंराधिउगैरैक्यूं भीनीसरैनहीं तदिजाणिजेयो व्रणशुद्धहुवो १ अथ दुष्ट व्रणको लक्षणलि० जीमैं राधिलोहीदुर्गंधिये बहोत निकलिवोकरै अरजीमैं सोजो रहवो करै अरस्थीर पणोरहै वेनें दुष्टव्रण कहिजे १ जीमैं अंकुरशुद्धनीकलता होय तींको लक्षणलि० अरजीं व्रणमैंक्योंपीलोरंग अथवा दूसरो वर्ण होय अर राधि उगैरैजीमैंसुं जातिरहै अर अंकुर नीसरवा लागिजाय तीनें व्रण भरिवाके वास्ते अंकुरित व्रण जाणिजे १ अर भलेप्रकार व्रण भरतोहोय तींको लक्षणलि० व्रणमैं अंकुर शुद्धनीसरै तीमैं गांठि नहींहोय जीमैं सोजो नहींहोय तीनें भलेप्रकार व्रण भर्यो जाणिजे. १ अथ व्रणका सुषसाध्यादिकको लक्षणलि० ओव्रण मर्मस्थानमैं नहींहोय अर त्वचामै अर मांसमैंहोय अर तरुण पुरसकै होय अर पथ्य चालतो होय अर सीतकालहोय इसापुरस कैतो व्रण सुषसाध्यछे १ अर वायपित्त कफकोतो व्रण होय अर नसांनें मेदनें मींजीनें माथाकी भेजी सिरीसानें जो व्रण श्रवैतो ओव्रण आछ्यो होयनहीं अर शस्त्रादिकांकी चोटसूं उपज्यो जोव्रण तीमैंवसा मेदमींजी अर माथाकी भेजी सिरीसो वे व्रणमैं नीसरैतो ओ व्रण आछ्यो होय १ अर कोढिकै अरविषषातो होय तींकै राजरोगीकै अर मधुमेहीकै अरव्रणमैं व्रणहोयजींकै इतना पुरसांकै व्रण हैसो कष्टसूं आछ्यो होय १ अथ पुनः व्रणको असाध्य लक्षण लिष्यते. व्रणके माहि घणो दाह होय अर व्रण वारासूं सीतलहोय अर वे पुरसका सरीरको मांस लोही जातो रह्यो होय अर सास षास अरुचि येजींकै

न० टी० जीसौंपरिपाकमैं जोपीडाघणीहोय तोवायूबलवानजाणजो. अर पकाव जादाहोयतो तत्कालपाकैजैठैपित्तजादाजाणज्यो. अरराध घणीहोयतो वैठै कफजादाजाणज्यो. ईरीतसौं. दोषांकी अधिकतादेषकरउपावकरैतौ जरूररोगनैजीतै.

होयजाय अर ओवूढो होय अर वें व्रणमें लोही राधिनीसरिवो करै अर ओ मर्मस्थानमैं होय इसाव्रण आछ्यानहीं होय सोवें वैद्य वेंको जतन करैनहीं आपको जसचाहैतो ये वाय पित्त कफयां दोसांका व्रणका लक्षण कह्या १ अथ आगंतुक व्रण कहिजे. तर वारिनैं आदिलेर जो शस्त्रादिकांका लागिवासूं उपज्यो जो घाव तीनैं व्रणसंज्ञा कहिजैछे. त्यांकी उत्पत्ति लक्षण लिष्यते तरवारि सेल तीर छुरी गोली बाण फरसी उगैरे कहीकी ईंपुरसकै कैठैही सरीरमैं लागै तींका लागिवासूं पुरसकै वा व्रणका नाम तथा वाघां वाकी नानाप्रकारकी आकृति होयछे. सोवा आकृति मुष्य ६ प्र कारकीछे. सोहूं लिषूंछूं छिन्न १ भिन्न २ विरुद्ध ३ क्षत ४ पिच्चि त ५ दुष्ट ६ अथ छिन्न व्रणको लक्षण लिष्यते जो पुरस तरवार नैं आदिलेर शस्त्रकरिकै टैढो कढ्यौ होय अथवा सूध्यो कढ्यो होय जो ओ घाव बडोहोय अर मनुष्यका सरीरनैं पृथ्वी ऊपरि नाषि देतीनैं वैद्यहैसो छिन्नव्रणकहैकै. अथ भिन्नव्रणको लक्षण लि ष्यते बरछी सेलतीर छुरी तरवारीनैं आदिलेर यांकी जीकै लागै तींका लागिवा करिकै कोठो कहींतरै कटजाय तींकोठा कटिवाकरि वेंको लोही चलै तदि ओलोही कर उदर भरिजाय तदि ओलोही सूं भर्‍यो जोउदर ज्वरनैं दाहनैं पैदा करैछे. पाछे ओलोही इंद्रीद्वा रा गुदद्वारा मूंढा द्वारा नासिका द्वारा नीसरै अर वेंकै मूर्छासास तिस आफरो अरुचियांनैं पैदाकरैछे. अर मलमूत्र वेंकारुकिजाय पसेव आवै नेत्रलालहोजाय मूंढामैं लोहीकीवास आवै सरीरमैं दुरगंधी आवै हियामैं पसवाडामैं सूल चालै येजीमैं लक्षण होय तीनैं भिन्नव्रण कहिजै २ अथ विरुद्ध व्रणको लक्षण लि० जींपुरस

न. टी. कफसोंज्योराध अधिक होयछै. जींराधनैं सरीरका व्रणमैं रोकणीनहीं. कोईबीश स्त्रादिकांकी युक्तिसौंराधनैं वाहरनीकलतीकरदेणी. कदाचितवैराधनैं शरीरमैं रोकदेवैछै. सोवाराध मांसगतहुई थकीघणो नुकसानकरैछै.

कै सस्त्रकी माहिली अणीकी लागै वेंको अंगकटिजाय वे घावनैं विरुद्ध कहिजे ३ अथ क्षतव्रण जींघावमैं तीरउगैरै रहगयोहोय तीं कालक्षण लि० जोघाव कालोहोय सोजासंयुक्तहोय फुणस्यांनैं लीयां होय अर वेघावमैं वारंवार लोही नीसरै अर ओघाव कोम लहोय अरवेघावकोमांस बुदबुदासरीसो ऊंचोहोय अरवेघावमैंपी डाहोय तींघावनैं शस्त्रसमेतजाणिजे. ४

अथ कोष्ठमैं तीरइत्यादिक रहगयो होय तींको लक्षणलिष्यते सरीरकी सातूं त्वचामैं उल्लंघि करिकै अर सरीरकी नसांनैं उल्लंघि करिकै पाछे वाही नसांनैं विदीर्ण करै अर कोष्ठके विसै रहतो जो वेसस्त्रादिकसो वे आफरानैं करैछे. अर व्रणका मूंढामैं अन्नने अर मलमूत्रनैं ले वार आवैछे तदिजाणिजे ईका कोष्ठमैं सल्यछै. अथ असाध्य जो कोष्ठमैं रहतो रक्त अर मल तींको लक्षणलिष्यते को ष्ठमैं रहतोजो लोही सोपीलोहोय तदिवेंको सरीरभी पीलो होय अर हाथ पग मूंढो वेंको सीतलहोय अर वेंका नाकको स्वासभी सीतलहोय लालजींका नेत्रहोय येजीमैं लक्षण होय तीनैं असा ध्य कोष्ठमैं रहतो रक्त मल तींको लक्षण जाणिजे यो असाध्यछै. ५ अथक्षतव्रणपच्चितव्रणका लक्षणलि० जीमैंअतिछिन्नका लक्षण नहिमिलै अर जीमैं अतिभिन्नकाभी लक्षणनहिमिलै दोन्यांकामि ल्यांजीमैं लक्षण होय ओव्रण विसम होय सो वेंका हाडमैं व्रण होय वेनैं पच्चित व्रण कहिजे. ६ अथ घृतव्रणको लक्षणलि० जीं कैईंट पथर भींतउगैरै कहींतरहसूं शरीरकी चामडी घसिजाय वा चामडी शरीरसूं दूरिहोय जाय वे चामडीमैं चेपनीसरिवोकरै अर

* भिन्नव्रणछै. सो शस्त्रादिकांकाप्रहारसूं होयछै. जीनैं टांकातुरतलगायकर रक्त बंद करिजै. कारणरक्तजादानीसरैतौ निर्बलताहोयछै. मूर्छाआवैछै. अनेकउपद्रवहोयछै. वास्तै विद्वानवैद्य. समयदेषकर यथायोग्यउपचारकरै. अथवा गोलीतीर आदिलेरसरीरमैंरहजाय तो तत्कालचिरासूं दवावासूं काढैतौ तुरत आरामहोयछै. घाव धोजेनहीं.

वेमैं दाह होय वेनै घृतव्रणकहिजै ७ अथ व्रणका ओरभील० जीं कै मांसनसां संधि मर्मस्थान यांमैं चोटलागी होय तींको सामान्य लक्षणलि० जींकै भ्रमहोय प्रलापहोय ढहपडै मोहहोय चेत जातो रहै ग्लानि होय दाह होय शिथल अंगहोय पीडघणीहोय मांसका जलसिरीसो जींको लोही होय अर सर्व इंद्रियांका धर्म जाता रहै पाछै कह्याजो पांच मर्मस्थान त्यांमैं जो वांकी चोट लागि यांकोयो लक्षण कहिजै अथ मर्मस्थान नसां संधि हाड येव्रणसूं विंधिगयो होय तींका जुदा जुदा लक्षणलि० इंद्रका धनुषसिरीसो सावणकी डोकरीसो जींको लोहीनीसरै तींक क्षतजव्रण कहिजे ओ व्रणवा यका अनेक रोगांनैं करैछै. अर तीरनैं आदिलेर शस्त्रछै अर तर वारीनैं आदिलेर शस्त्रछै त्याकरिनसांविंधिजाय त्यांसूं उपज्यो जो व्रण त्यांकरि सरीरहैसो कुवडो होय अर सरीरका अंग अंगमैंपी डा होय चाल्यो जायनहीं बहोतमोडोवामैं अंकुर आवै तदि जा णिजै ईंकीनसां विंधिगईतींको ईंकैव्रणछै. वेव्रणकै सोजो घणोहोय वेंको बल जातोरहै अर संधिमैं घाव लाग्यो होयतो संधिको ह लिवो चलिवो जातोरहै. अर वेमैं पीड घणी होय रातिदिनमैं जक पडैनहीं तीकैहाडमैं सस्त्रादिकसूं उपज्यो व्रणजाणिजे अर मर्म स्थानमैं चोटलागिवासूं व्रणहोय तींको सरीरको वर्ण पीलो होय ओव्रण स्पर्शसहैनहीं ८ अथव्रणका १६ सोला उपद्रवछै त्यांनैं लिषजैछै. वेमैं विसर्परोग १ पक्षाघात २ सिरमुडैनहीं ३ अपतान ४ प्रमेह ५ उन्माद ६ व्रणमैपीडा ७ जुर ८ तिस ९ कांधीमूंडै नहीं १० षास ११ छर्दि १२ अतिसार १३ हिचकी १४ सास १५ कांपणी १६ ये व्रणरोगका उपद्रवछै. अथ अग्निदग्धकी उत्प

न. टी. व्रणरोगछप्रकारकोलिष्योछै. छिन्न १ भिन्न २ विरुद्धअथवाविरुद्ध ३ क्षत ४ पिचि त ५ दुष्ट ६ येछजातकाज्यामैंछिन्न. भिन्न. विरुद्धकालक्षणलिष्याछै. अरक्षतकाअरपचितका भेलाहीलिष्याछै. अर दुष्टव्रणकासर्वमिलितसाध्यअसाध्यछै.

त्ति लक्षणलि० प्रथम अग्निदग्ध दोय प्रकारकोछै. एकतो तेलादि कसूं दग्धहुवो १ दूसरोलोह अग्निनें आदिलेर दग्धहुवो २ पुनः अग्निदग्धच्यारि प्रकारकोछै प्लुष्ट १ दुर्दग्ध २ सम्यक्दग्ध ३ अतिदग्ध ४ अथप्लुष्ट दग्धको लक्षणलिष्यते अग्निसूं दग्ध हुवोछै अर वेंकोवर्ण और सोहोय जाय वेनं प्लुष्ट कहिजे १ अथ दुर्दग्धको लक्षणलिष्यते जीमैं दाह घणोहोय अर वेमैं पीड घणीहोय अर फोडाहोय आवै अर मोडोमिटै तीनैं दुर्दग्ध कहिजे २ अथ सम्यक् दग्धको लक्षणलि० जींका अंगको तांबासिरीसो वर्णहोय अर ओ बूढोनहीं होय अरजीमैं दाह अर पीडाहोय अर फैलै नहीं तीनैं सम्यक् दग्ध कहिजे ३ अथ अतिदग्धको लक्षणलिष्यते जींकीत्वचा अर मांस सर्व दग्ध होय जाय अर यांसूं शरीर जुदो होजाय अर नसां स्नायु हाडसंधिये सारादग्ध होजाय अर वेमैपीडहोय दाहहोय जुरहोय तिसहोय मूर्छाहोय जीमैं अंकुरमोडो आवै वर्ण औरसो होजाय येजींमैं लक्षण होय तीनैं अतिदग्ध कहिजे ४

अथ दोसांसैं उपज्या इसाजो सरीरव्रण तींका जतनलिष्यते वैजतनसर्वमैं मुष्य इग्यारा ११ प्रकारकाछै. सो क्रमसूं लिष्यांछां अरसुश्रूत चरकमैं तो व्रणका जतन साठि ६० प्रकारसूं लिष्याछै प्रथमतो लेप १ पाछै औषद्यांका जलसूं निवायो तरडो २ पाछैवांसकी लकडीसूं अंगुष्टो मसलि वेंकै पसेव ल्यावणा ३ पाछैकहींतरै लोहीछुडावणो ४ पाछै औषद्यांको पाटो बांधि वैकै पसेव ल्यावणां ५ पाछैवेनै पकावणो. ६ पाछै शस्त्रादिकांसूंचीरोदेणो ७ पाछै व्रणनैं अंगुष्ठासूं दाबि वेमाहिरलीराधिकाढणी ८ पाछै व्रणकोसो

न. टी. मर्मस्थानमैं शस्त्रादिककालागिवासौंजोव्रणहोयछै. जीमैंकुपथ्यकाकारणांसूं अथवा मिथ्याअहार व्यवहारसौं विपरीतहुवोथको वोव्रणअनेक आकृतिकादूजारोगपैदाकरैछै. सो मात्रवायूकासहायतासौं वायूकारोगकरैछै.

धिवो ९ पाछे वामैं अंकुर ल्यावणो १० पाछे वेनैं त्वचाका वर्ण सिरीसो करिदेणो ११ अथवा वायका सोजादूरि करिवाको लेप जैसे लायलागीहोय अर वें लायनैं जल बुझायदे जैसे यो लेपहैसो सोजाकीपीडनैं दूरिकरैछे विजोराकीजड छड देवदारु सूंठि रास्ना अरण्युं येबराबरिले यांनैं जलसूं मिहीवांटि निवायो लेपकरैतो वायको सोजो दूरिहोय १ अथ पित्तका सोजाका दूरि करिवाको लेप लिष्यते महुवो रक्तचंदन दोब आवला कमलकीजड षस नेत्रवालो पद्माप यांनैं बराबरिले यांनैं जलसूं मिहीवांटि सीतलही लेप करैतौ पित्तको सोजो दूरिहोय २ अथवा वडकीजड गूगलकीजड वेतकीजडकी वकल यांनैं जलसूं मिहीवांटि ईमें औषद्यां सूं दसवोहिसो घृत घालि वेंको लेप करैतौ पित्तको सोजो जाय. ३ अथ कफको सोजो दूरि होवाको लेप लिष्यते नंगदवावची मींढासींगी मजीठ राल आसगंध सतावरी यांनै जलसूं मिहीवांटि निवायो लेप करैतौ कफको सोजो जाय ४ अथवा पीपलि पली सहजणाकी जडकी वकल वाल्हरेत हरडैकी छालि यांनैं मूतसूं मिही वांटि निवायो लेप करैतौ कफको सोजो जाय ५ अर रातिनैं लेप कीजैनहीं अथ औषद्यांका जलसूं निवायो तरडोदे सो अनुक्रमसूं लिष्यते हरडैकीवकलनैं औटाय ईको सुहावतो वे सोजाका दाह कै तरडो देतौ वेकोदाह तत्काल दूरिहोय ६ अथवा वायनैं दूरि करिवावाली जो औषद्यां त्यांका काढाका जलसूं वेंकै तरडोदे अथवा तेलको वेंकै तरडोदे अथवा मांसका रसको वेंकै तरडोदे अथवा गरमगरम घृतको वेंकै तरडोदे अथवा गरम कांजीको वेंकै तरडोदेतौ वायको सोजो दूरिहोय १ अथ पित्तको सोजो दूरिक

न. टी. सुश्रुतका मतसौं व्रणांका जतन साठ प्रकारकाछै. सोतोविस्तारघणोछै जीसूं ऐठै नहींलिष्याछै. अरईग्रंथमैंग्याराप्रकारसौं जुदाजुदालिष्याछै. सोवानैं पूर्वविचारकरबुद्धिसौं ध्यानमैं लेकरव्रणरोगनैं शुद्धकरणो. धीरजसौं.

रिवाको तरडोलिष्यते. सीतल औषद्यांका काढाका तरडासूं दूधसूं घृतसूं षांडसूं सांटाकारससूं तरडोदेतो पित्तको सोजो जाय २ अथ कफका सोजाको दूरिहोवाको तरडो लिष्यते कफनैं दूरि करिवा वाली औषद्यां त्यांको गरम गरम तरडोदे अथवा तेल षारको जल गोमूत यांका तरडासूं कफको सोजो दूरिहोय ३

अथ रक्तका सोजाको अर पित्तका सोजाको जतन एकछै. ४ अथव्रणका सोजाको अंगूठा उगेरै मसलिकरि पसेव लिवावणा ५ जो करडो व्रणहोय तीनैं अंगूठासूं अथवा वांसकिस्वाफ लकडीसूं सनैसनै मसलि वेंकै पसेव लिवावैतो ओ ढीलो पडि आछ्यो हो जाय अर वेंकोवर्ण ओरसो होय अर कालोवर्ण होय अर वेमैं पी डघणीहोय ईसा व्रणका सोजाकै अथवा कहींविसेल जिनावरका छ्योहोय तीं सोजाकै जोक लगाय वेंको लोही काढीनाषणो अथवा पाछणादेर लोही काढि नाषणो एक कानीतो सारा जतनछै. अर येक कानी लोहीकाढिवो यो एकही साराजतनकी बराबरिछै. ६ अथ व्रणकाचा अर पकवाकै सन मुष होय रह्या त्यांकै औषद्यां को बांधिवो तीकरवेंकै पसेव आयवो सोलिष्यते जोकाचा अर प कवाकै सनमुष होयरह्या जो व्रण त्यांकै येऔषदि बांधि पकावैतो वेव्रण आछ्या होय सो औषदि लिषूंछूं दसमूल षरैटी रास्ना आ सगंध पीप अरंडकीजड अथवा ईंका फल निर्गुंडी साठी सहेजणो पीपलि सींधोलूण सूंठि सणकाबीज कपासका बीज अलसी कुल त्थ तिल जव सिरस्यूं मूलीकाबीज सौंफ नींबकापान नागरवेली कापान गुलेवासका पान यांनैं उगेरै जोषावैं त्यांनै गरम करिवा

---

* ऊपरजो कह्योछै सोजाकोरोगजींऊपरलेपछैजींमैंविजोराकीजडलिषीछै. सोविजोरो एकनींबूकी जातको फलछै. जीनैंमातुलिंगकहैछै. संस्कृतमैं मुंगलाईमैं तुरंजनामकहैछै. उत्त मफलछै. गुणकारीछै. जींको मुरंबोघणोश्रेष्ठहोयछै. योफलप्रसिद्धछै. परंतु ईंकागुणतो वैद्य लोक विशेषकर जाणैछै. हकीमलोगतो ईनैंआजारीमनुष्यकनैं सदाराषैछै.

कैवांटि बांधै अथवा यांको काढो करि तींको तरडो देस्प पूर्वक आछीतरह क्रियासूंतो वेवायका व्रणांको सोजो आछ्योहोय ७ अथ व्रणका सोथका दूरि करिवाको लेपलिप्यते साठीकी जड देव दार हलद सूंठि सहजणाकी वकल सिरस्यूं यांनें पटाईसूं वांटि निवाया करिवाको लेप करैतो सर्वप्रकारका व्रणको सोजो दूरि होय ८ अथ व्रणका पकिवाकी विधि लिप्यते व्रणहैसो लेपादिकां करि पकै नहीतो येऔषदि व्रणनैं पकायदे सो लिपूंछूं सणकीजड सहजणाका फल तिल सिरस्यूं अलसी दारूं काढिवाको जावो ज वगोहूं नींबका पान उगैरै यांनें सिजाय व्रणकै वांधैतो व्रण पकि जाय ९ अथ व्रण पकिगयोहोय तींकै चीरोदे तींकी विधिलिप्यते जींव्रणमैं राधि पडिगईहोय तींकै चतुरवैद्यकन सस्त्रसेती चीरोदि वाय वेंकी राधि काढिनापै पाछै मल्हिमादिक लगावैतो व्रण आ छ्योहोय १० अथ अतना आदमीकै चीरोनहीं लगावै सोलिप्य ते वालककै बूढाकै जीसूं चीरो सह्योजाय नहींतींकै क्षीण पुरसकै डरपस्यालकै स्त्रीकै मर्मस्थानमें जोव्रणहोय तींकै इतना आदस्यां कै चीरो दीजै नहीं वेंकै औषद्यांसेती भेदनकरि वेंकी राधि कढाय आछ्योकीजै सोवै भेदन औषदि लिपजैछै कणगचकीजड. चित्रक दांत्युणी भिलावा कनीर कबूतरकीवीष्ठा यामैंसूं कहींको लेपकरैतो ओव्रण आपही फुटै वेंकीराधि नीकलि जाय ११ अथवा पारी लूण जवषार साजी आंधीझाडाकोषार यामें कहींको लेपकरैतो व्रणकी राधि नीसरीजाय १२ अथवा ओव्रण घणोंगाढो होयतो हाथीका दांतनैं जलमैं घसिवेंकी व्रणकै बूंददेतो वेंकोसोजो दूरि होय वेंकी राधिनीसरिजाय १३ अथपीडनालिप्यते राधिजीमें पडि

न. टी. रक्तश्राव करणोलिष्योछै. सोजोयथायोग्यविचारकर लोहीकढावै जौंकसौं अथ वा पाछणासौं अथवा ओरभीप्रकारसौं लोहीकढाणौश्रेष्ठछै. कारणपकायकर आरामकरै जीनैंघणादिनलागै अरयोजपावसद्यछै.

गई होय अर मर्मस्थानमें होय इसा व्रणकै चीरोदीजे नहीं त्यांके ये औषदिलगाय वेकीराधि काढी नाषिजैतौ वैव्रण आछ्याहोय सोये औषदि लिषूंछूं जव. गौहूं. उडद. यांनें मिहीवांटि पाणीसूं बानें निवाया करि बांध अर व्रणका मूढामाहिसूं राधिकाढिनाषै पाछे वेंकै मल्हिमादिक लगावै तदि औव्रण आछ्योहोय १८

अथ व्रणसोधन लिष्यते जोव्रण काचो होय तींकै पटोलका पान १ अथवा नींबकापान त्यांनें सिजाय यांकापाणीसूं व्रण आछ्याहोय २ अर गूलरिकी बकलका काढासूं धोवैतौ व्रण आछ्यौ होय ३ अर किरमालाकी वकलका काढासूं धोवैतौ कफको व्रण आछ्यौ होय ४ अर पीपलिकी वकल गूलरिकी वकल वडकीवकल बीलकीबकल यांका काढासूं व्रणका सोजानें उपदंसनें धोवैतौ ये आछ्यौ होय ५ अथवा तिल सिंधोलूण महलौठी नींबकापान दोन्यूंहलद निसोत नागरमोथो यांनें बराबरिले अर जलसूं वांटि यांकोलेप करैतौ व्रण पकिवेकीराधिनीसरिसाय ६ अथवा नींबकापान तिल दांत्युणी निसोत सींधोलूण यांनें मिहीवांटि यांको लेप करैतौ दुष्टव्रण आछ्यौ होय ७ अथवा नींबकापान सिजाय बांधै तौ दुष्ट व्रण आछ्यौ होय ८ अथवा हरडै निसोत सींधोलूण दांत्युणीं कलहारीकी जड सहतमें यांनें वांटि यांकी व्रणकै वाती देतौ दुष्ट व्रणभी आछ्यौ होय ९ अथवा व्रणका मूंढासूक्ष्महोय त्यांनें नींबउगेरैका पानाको रस उगेरै यां औषधांकी वातीदेतौ वे व्रण आछ्या होय १० अथवा नींबका पान घृत सहत दारुहलद महुवो यांकी वातीकरि व्रणमें दे ११ अथवा तिलानें औटाय वेकी

म. टी. व्रणरोगमेंपथ्यलि० जव. गौहूं. लालचावल. मसूर. तूर मूंग. मिसरी. घृत. तेल. वैंगण. करेला. ककोडा. चंदलेई. इसा० कुपथ्यलि० षटाई. थंडाई. षार. श्रम. उताव लौवोलै. स्त्रीसंग दिननिद्रा. जागरण. फिरणो. शाकपान. बीडो. कोलो. वनजंतूविनामांस इत्यादि०

व्रणकों वातीदेतो व्रण आछ्यो होय १२ अथ व्रणाको रोपणनाम अंकुर ल्यावै सो लिष्यते ज्यां व्रणाकी राधि नीसरगई होय अर वेंव्रण भरेनहीं त्यांकै नींवका पानानें औटाय पाछेंवे पाणीसूं व्रण नें धोवैपाछे सहत मिलाय तेलको फोहोवेंकै देतोंव्रण भरिजाय १३ अथवा असगंध लोद कायफल महलोठी मजीठ धावड्यांका फल यांनें वांटि व्रणकै बांधैतो व्रणभरि आछ्योहोय १४ अथ व्रणमें दाहसूल उपजि आयो होय तींको दूरिकरिवाकोलेप जवांको आटो सहत तेल घृत येसर्व मिलाय क्यूं गरमकरि लेप करैतो व्रणको दाह सूल जाय १५ अथ व्रणमें कृमीपडिगई होय तींका दूरिहोवाको लेप कणगचकीजड नींबकीछालि निर्गुंडी यांनें वांटि योको लेप करैतो व्रणको कृमीमिटिजाय १६ अथवा लसणकोव्रणकै लेपकरैतो व्रणकी कृमीमिटिजाय १७ अथवा हींग नींबकीछालि यांको लेपकरैतो व्रणकीकृमिमरै १८ अथव्रणमें छोतिपडिवेमें पाजिपीड क्रमिपडिगई होयतींकोदूरिहोवाकीधूणी नींबकापान वच हींग घृत लूण सरस्यूं यांनें येकठा घृतमें वांटियांकी व्रणकै धूणीदेतो व्रणकी कृमि षाजि पीडजाय १९ ये सर्व जतन भावप्रकास में लिष्याछे अथ व्रणका भरिवाकीमल्हिम कडवोतेल पैसा २ भरपाणी पैसा २ भर यां दोन्यांनें कांसीकी थालीमें घालि दिन १ तांई हाथसूं मसलै पाछै ईंकैमाहि राल पईसा ५ भरमिहीवांटि ईंमेंमिलावै षैरसार टका १ भर मिहीवांटिईंमें मिलावै कूठ टंक ५ ईंमेंमिहीवांटि मिलावैं नीलोथूथो टंक २ ईंमें मिलावै वेरजो टंक १ मिरचि टंक १ मिहीवांटि ईंमें मिलावैं पाछै यांसारांनें निपट मिही वांटि हातसूं मथै पाछै व्रणकै ईंनै लगावैतो व्रण तत्कालभरि

न. टी. व्रणका उपचारतथानिदानघणाछै. ज्यांकाग्रंथमैंविस्तारछै. परंतुव्रणसोधनमैंतो नींबकोवृक्षबलवानछै. व्रणकै ऊपरलेपकरणोठीकछै. अर व्रणमैं यांऔषध्यांकीवत्तीकै जाडो लेपकरव्रणमैं मेलैतो व्रणभरै.

जाय २० अथ आगंतुक व्रण कहिजे. तरवारिनैं आदिलेर शस्त्रत्या कालागिवासूं उपज्योजो व्रण त्यांका जतनलिष्यते ज्यांपुरुषांकै तर वारनैं आदिलेर नानाप्रकारकी धारछे ज्यांकै त्यांकालागिवासूं वांकी त्वचाफाटिजाय अथवा त्वचाकी नानाप्रकारकी आकृति हो जाय त्यां आकृत्यांनैं आछ्या स्याणा सथियाकनैं पाटका सूतसूं सिमावै निर्वातस्थानमैं १ पाछैवाटांकाकों व्रणाका स्थाननैं गोंहां की मैदातीमैं पाणी घृत घालि पकावै वेंको पाणी बलिजाय घृतमा त्र आयरहे इसीतरै वेकीलोइ करि सुहावतो वेंऊपरि सेककरैतो ओव्रण तत्काल आछ्यौ होय २ अथवा कुटकी मोंम हलद मह लोठी कणगचकीजड अर कणगचका पान अर कणगचकाफल प टोल चंवेलीका पान नींबकापान यांमैं घृतघालि पकावै पाछैपाणी वलिजाय घृतमात्र आयरहैतदि ईंघृतको सुहावतो सुहावतो सेक करैतो वोव्रण तत्काल आछ्यो होय ३ ये जतन वैद्यरतनमैं लि ष्याछै. अथवा शस्त्रादिकांकरिजींकोलोही घणोनीसरि गयो होय तींकै वायकी पीडा होय आवै तींकादूरि करिवावास्तै वेनैं घृत पा नकराजे अरजींको षडगादिकांकरि गात्रछिन्न होयतींकै गंगेरणी की जडकोरस वेमैं भरिदेतो वे व्रण तत्काल भरिजाय अर आछ्या होयजाय ४ ईंव्रण वालानैं सीतल जतन सर्व आछ्याछै अरशस्त्र लागिवेंकोरुधिर आमासयमैं जायतो वेपुरसनैं वमन करायांओ आछ्योहोय अर पेडूमैं रुधिर जायतो ओ जुलाबसूं आछ्यो होय अथवा वांसकीछालि अरंडकी वकल गोषरू पाषाणभेद यांको काढोकरि तीमैं सेकीहींग सींधोलूण ईमैं नाषिपीवैतो कोठाको रु

---

* कणगचकीजडकहैछै. सोकणगचको मूललेणो. ओरकणगचनैं करंजकहैछै. गजका कोवृक्षछै. ईंकाफलनैं गजका कहैछै. ओर सागरगोटा कहैछै. ईंकाबीजनैं छोटाछोटा पान गोलहोयछै. लंबीडाली जींकैकांटाबहोतहोयछै. पानकडवा होयछै. तपवालामनुष्यनै पानक रंजका. कालीमिरचि. घोंटपावैतो तापउतरैछै. आमासद्ध औषधीछै.

धिर निकलवो आछ्यो होय ५ अर जव कुलित्थ मींथोल्हण येपावा में लूपा आछयाछे. अथवा चवेंलीकापान नींबकापान पटोल कुट की दारुहलद हलद गौरीसर मजीठ हरडेकीछालि मोम नीलोथूथो सहत कणगचका बीज येसवबरावरिलेयांकी बराबरि गऊकोघृतले अरयांसों अठगुणों पाणीले यांनें मधुरी आंचसूं पकावें तदि पाणी बलिजाय घृतमात्र आयरहे तदि ईंघृतमें वाति उगेरे करिव्रणके लगावैतो गंभीरनें आदिलेर सर्व व्रण आछ्या होय इति जात्या दिघृतम् ६ अथवा चवेलीकापान नींबकापान पटोलकापान किर मालाकापान मोम महुवो कूट दारुहलह हलद कूटकी मजीठ पद माष हरडेकीछालि लोद तज कमलगठा गौरीसर नीलोथूथो कि रमालाकी गिरि ये बराबरिले यांको काढोकरि तींकाढाका रसमें तिलांकोतेल पकावें मधुरी आंचसूं वेंकाढाको रसबलिजाय तेलमा त्र आयरहे तदिवें तेलनें उतारि आछ्या वासणमें घालिराखे पा छे ईंतेलनें वातीउगैरे कहींतरैसूं वांव्रणांको लगावें तो ओव्रण त त्कालभरिआछ्यो होजाय ७ इति जात्यादितैलम् अथवा चित्रक लसण हींग सरपंपा गौडदेशमें प्रसिद्धछे. कलहारीजडीकीजड सिंदूर अतीस कूट कडवोतेल अरयांओषधां माफिक पाणी नाखे पाछे मधुरी आंचसूं पकावें तदि वेमेंको पाणी बलिजाय तेलमात्र आयरहे तदि तेल और वासणमें घालि राखे पाछे ईंतेलको कप डाकी बत्तिसों कहींतरे व्रणके लगावैतो व्रणमात्रनें दुष्टव्रणनें ना डि व्रणनें यो तेलतत्काल दूरि करैछे. ८

इति विपरीत मल्ल तैलम् अथवा गिलवे पटोलकीजड त्रिफला वायविडंग येबराबरिले त्यांने मिहीवाटि यां बराबरि गूगलले पाछे

न. टी. शस्त्रादिकांका प्रहारसूं मनुष्यके लोहीघणोनीसरजायतोवोमनुष्य घणोनकातहो यजायछै. जीसौंवायूप्रवर्ततत्कालहोयकररोगांकीप्रवर्तिकरैछे. जींवास्तेवैद्यनें विचारचाहि जै. लोहीनें अटकावें. वायनें आवादेनहीं.

यांनै मिलाय येकजीवकरि टंक २ पाणीसूं रोजीना षायतौ व्रण मात्रनैं वातरक्तनैं गोळानैं उदररोगांनैं योगूगल दूरि करैछै ९ इति अमृतादिगूगलम् येसर्वजतन भावप्रकासमै लिष्याछै. अथ ६ प्रकारसूं कहींतरैसूं अग्निसूं दग्ध होगयो होय त्यांका साराही अनुक्रमसूं जतन लिष्यते. अग्निसूं. कहींतरै दाजिगयो होयजो पुरुष तीनैं अग्निसूं तपावै तौ ओपुरस वेगो आछयो होय १ अथवा वेपुरसकै अगरनैं आदिलेर गरम ओषद्यांको वेदाज्यांऊपरि लेप करैतौ ओ वेगो आछयो होय २ योप्लुष्टको जतनछै अथ दुर्दग्धको जतन लिष्यते ओषद्यांका घृतनैं अथवा इहीं घृतनैं गरमकरि पाछै ईनैं ठंडोकरि ईंको लेप करैतौ दुर्दग्धपणो आछयो होय ३ अथ सम्यक् दग्धको जतन लिष्यते तवाषीर वडकीजड रक्तचंदन सोनागेरू गिलवै यांनैं घृतसूं मिही वांटि यांको लेपकरै तौ सम्यक् दग्ध आछयौहोय ४ अथ अतिदग्ध कोजतन लिष्यते बुरामांसनैं काढि नाषै पाछै साठीचावल तिंदू यांनैं घृतसूं मिही वांटि वेंको लेपकरै ऊपरि गिलवैका पान बांधैतौ अविदग्धपणो आछयो होय ५ अथवामोम महुवो लोद राल मजीठ रक्तचंदन मूर्वा येसर्व बराबरिले यांनैं मिही वांटि गऊका घृतमैं पकावै पाछै ईघृतको लेपकरैतौ अतिदग्धपणाकी अग्नि दूरिहोय अर सरीरमैं मांस ओर होय आवै ६ इतिचित्रकादिघृतम् अथवा पटोलका पंचांगको काढोकरि तीमैं कडवोतेल पकावैवे काढोको रस बळिजाय तेलमात्र आयरहै तदि वेनैं लगावैतौ अग्निका दाज्याकादाह अर श्रववो अरवेंकी फांडा येसाराजाय ७ येसर्व जतन भावप्रकासमैं लिष्याछै. अथवापुराणो आलो चूनो षावाको तीनैं दहींका पाणीमैं

न. टी. मनुष्यकै चोटलागिवासूं वाहाडतथासंधिकाटूटवासौं मूर्छाहोयजावै. वाअचेती होयजावैतौ वैमनुष्यनैं ममाईसहतसूं देवैतौमनुष्यहोंस्यारहोयछै. सोवाममाईघणी चोषीतेज मनुष्यकामांसकीहोयछै. ईग्रंथमैंपृष्ठ २१० कैदेणीलिषीछै.

वांटि अग्निका दाज्याउपरि लगावैंतो ओ आछ्यो होय तेलको दाज्यो होयतो वेंकाफफोलाभी दूरिहोय ८ अथवा जवानैं वालि तीलांका तेलमैं वांटि पाछे वेको दाज्याऊपरि लेपकरैंतो ओ आछ्यो होय ९ अथवा सेक्यो जीरो तीनैं मिहीवांटि वें बराबरि मोम राल घृतमैं मिलाय ईंको लेपकरैंतो अग्निको दाज्यो तत्काल आछ्योहोय. १० अथ तेलउगेरै कहितरैसूं दाज्यो होय तींको जतन लिष्यते तिलांकोतेल पाव ऽ। अरपावाको चूनो आलो पुराणोपईसा ३ भर तीनैं हाथसूं मसलिपहर १ येक वैंनै रावसोकरिले पाछे वेनैं रुईका पहलासूं वेंके लगावै तोदाज्यातत्काल आछ्याहोय ११ अथ व्रणग्रंथिरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनलिष्यते विगरिपेदहीसरीरमांहिसूं नीकलतोजो दुष्ट लोही तीनैं पवन सोस करिकें वेंकीगांठि पैदाकरिलेछै. वेगांठिमैं दाह अर षुजालि घणो होय तीनैं व्रणग्रंथि कहिजै १२ अथ व्रणग्रंथिको जतन लिष्यते कपेलो वायविडंग तज दारुहलद यांनै मिहीवांटि जलसूं अर वेंमैं तिलांको तेल नाषि मधुरी आंचसूं पकावै ओपाणी बलिजाय तेल मात्र आय रहै तदि ईंतेलको लेप करैंतो व्रणग्रंथि जाय १३ इति व्रणग्रंथिकी व्रणरोगकी अग्निदग्धरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम् अथ भग्नरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते भग्नकहिजै हाडकोटूटिवो सोदोयप्रकारकोछै. एकतो कांडको १ येकसंधिको २ कांडकोतो नल १ कपाल २ पहूंच्यानैं आदिलेर ३ अर संधिको ६ प्रकारकोछै. उत्पिष्ट १ विश्लिष्ट २ विवर्तित ३ तिर्यगत ४ क्षिप्त ५ अध ६ अर सरीरकी संधि भांवै जैठांकी टूटि होय कहींतरै तींको सामान्य लक्षणलिष्यते संधिस्थानमैं पीडाघ

न. टी. विपरीतमल्लतैल लिष्योछै सो औषद्यांको विपरीत योगसौं नामछै. परंतु अठै देस कालदेषकरलिषोछै. कलहारीकीजड उपविषछै. चित्रकअग्निछै. लहसण हींग इत्यादिकयोगछै. परंतु ओतेलमल्लयुद्ध सरीसोछै.

णीहोय उठतां पसरतां येकठाकरितां अर ऊठै सपरस सुहावैनहीं तदि जाणिजे कहींतरै संधिटूटिछै. अथ उत्पिष्टसंधि टूटिवाको लक्षणलिष्यते दोय हाडांकीसंधि टूटीहोय ऊठै चहूंओर सोजो घणो होय अर ऊठै पीडा होय तदि जाणिजे उत्पिष्ट संधि टूटीछै १ अथ विश्लिष्ट संधि टूटिवाको लक्षणलिष्यते ऊठै सोजोहोय अर रात्रिमैं पीडा सोजो घणोहोय जीमैं येलक्षणहोय तीनैं विश्लिष्ट संधि टूटिजाणिजे २ अथ विवर्तितसंधि टूटिवाको लक्षणलिष्यते. पसवाडामैं पीड घणी होय अर उठेसोजो पीड रहवोई करै येजीमैं लक्षण होय तीनैं विवर्तित संधि टूटि कहिजै. ३ अथ तिर्यगति संधि टूटि होय तींको लक्षण लिष्यते ऊठै सोजो होय पीड घणी होय येजीमैं लक्षण होय तीनैं तिर्यगति संधि टूटि जाणिजै ४ अथ क्षिप्त संधि टूटिहोय तींको लक्षण लिष्यते जीमैं विषम सूलहोय साथलमैं कदेक थोडी कदेक घणीहोय येलक्षण होय तीनैं क्षिप्त संधि टूटी जाणिजे ५ अथ अधःसंधिटूटीहोय तींको लक्षणलिष्यते जो आसंधि नीचरली टूटीछै तीकै नीचै पीड होय तीनैं अधःसंधि टूटीजाणिजै ६ अथ संधिविना कांड कहिजे हाड टूटा होय नल कपाल वलयनैं आदिलेर त्यांको लक्षणलिष्यते नरसलकीसी नाई वेहाडछिद्र छिद्रलियांहोय सूधाहोय तीनै नल कहिजे. अथ हाड टूटिवो बारा १२ प्रकारकोछै सो लिष्यते कर्कट १ अश्वकरण २ विचूर्णित ३ कच्चित कहिजे यंत्रितकर्‍यो ४ अस्थिछल्लित ५ कांडकैविसै भग्न ६ अतिपातिन ७ मज्जागन ८ प्रास्फुटित ९ वक्र १० छिन्न ११ द्विधाकरवो १२ जिसा यांका नाम तिसाही

---

* अग्निसूं तथा गरमघृतसूं तथातेलसूं कोईबी प्रकारसूं हलवाईकी चासणीसूं हलवाई. रसोईदार. सुनार. लुहार. हरएक अग्निसंबंधी कामवालो मनुष्य बलिजाय तथा दाझ जायतौ इसीव्याधी वास्तै अनेकउपावछै. परंतु ऊपरकह्योछै: चूना. तेलको फुलमो घणो श्रेष्ठ उपावछै. लगायां ठंडकपडैछै. सरीरऊपर सुपेदडागरहै

लक्षण जाणि लीज्यो. अथ हाड टूट्यो होयतींको लक्षण लिप्यते. अंगसिथिल होजाय अर ऊठे सपरस सुहावैंनहीं अर उठे सरीर फुरकै अर सरीरमैं पीडाहोय अर सूलहोय अर राति दिनमें कदें हीचैन पडे नहीं. येजीमें लक्षण होय तदि जाणिजे ईंको कहींतरै सूं हाड टूटौंछे अथ भग्नरोगका कष्टसाध्य लक्षणलिप्यते अग्नि मंद होयजाय कुपथ्य करिवोकरै अर वायको सरीरहोय अरजीमें जुर अतिसारादिक होय ओ भग्नरोगी कष्टसूं वचे अथ भग्नरोगको अ साध्य लक्षणलि० जींको कपाल फाटिगयोहोय कटि टूटिजाय अर संधि संधिघुलिजाय अर जांघ फिसिजाय १५ अर ललाटको चूर्ण होजाय अर स्तनकी जागां टूटि जाय हीयो फाटिजाय गु दाफाटि जाय कनपट्टी फाटिजाय पीठ फाटिजाय अर माथो फा टिजाय ओ असाध्यजाणिजे. १ अथ पुनः असाध्य लक्षणलि० हाडांनें आछ्या प्रकार बांध्याछे पाछे गाढा बांधणी आवै अर वें षोटा पणामैं वंधिजाय अर ऊठे चोट लागणी आजाय अर मैथु नादिक करणी आजाय ओहाड टूटिवो असाध्य होजाय २ अर सरीरमैं स्थानाका हाडांके चोट लाग्योजो चिन्हहोयछे सो लि ष्यते कंठाकै तालवाकै कनफट्यांकै कांधाकै सिरकै गोडांकै कपा लकै कानकै आंषिकै यां जागां कहींतरैकी चोटलागैतौ ऊठाका हाड नय जाय पोंहचाका पींडी उगैरै सूधा हाडछे. सो वांका होय जाय कपालनें आदिलेर जोगोल हाडछे सो फाटिजाय दांतउगैरै छोटाहाडछे टूटिजाय १ अथ भग्नरोग कहिजे हाड संधिको टूटि वो तींका जतनलिप्यते प्रथम चोट उगैरै कहीं तरैसूं हाड अर सं धिटूटिजायतौ वेंही वषत ऊठै ठंडो पाणीनाषे पाछे बुद्धिवान आद

न. टी. व्रणग्रंथिरोगमैं अहारव्यवहारपथ्यापथ्ययथोक्तकरणायोग्यछै. अरघणीमहनतक रणीनहीं. तावडैफिरणोनहीं. कुपथ्यकोईबीनहींकरणो. जोआपकासरीरकै जीनैं आरामकर णकीइच्छाहोय सोधीरजसैं व्याधीनैं जीतणी.

मींहैसो वेंको औषद्यांको सेक करै अथवा पाटो बांधिवो करै अर ऊठेजो इलाजकीजैसो सीतल इलाज कीजे अर जोबुद्धिवान पुरष होय सो पाटी सीथल नहींबांधै. अर निपट गाढीभी नहींबांधै आ छीतरै साधारण बांधै शिथल बांध्यांआछीतरै स्थिरमिलैनहीं अर गाढी बांध्यां त्वचाकै सोजो अर पीड अर चामडीको पकीवो होय जाय ईंवास्तै पाटी साधारणही बांधिवो जोग्यछै. २ हाड संधिटू टाकी जायगां डाभ सेती बांधै औषद्यां आलीकरि अथवा चोटकी जायगां आलो कादो लगावैतौ हाड संधिटूटी आछीहोय ३ अ थवा मजीठ महुवो यांदोन्यांनैं ठंडापाणीसूं मिहीवांटि ओ हाडटू ट्यो होय वैठे वांकोलेप करैतौ ओ आछ्योहोय ४ अथवा सौं १०० वारको धोयो घृततीमैं साठ्याचावलवांटि वांको लेपकरैतौ ओ आछ्यो होय अर हाडकीसंधि टूटी होयतौ वोरपीपलकी ला षगोंहूं कहुवारूषकी वकल येघृतमैं वांटिटंक ५ दूधसूं पीवैतौ सं धिटूटी अरहाडटूट्यौ आछ्यौ होय ५ अथवा लाष कहवाकी वक ल आसगंध परैटी गूगल येबराबरिले त्यांको येकजीवकरि टंक २ दूधकैसाथि लेतौ हाडटूट्यो संधिटूटी आछीहोय ६ अथवा गोहां नैं आधावालिले फिटकडीमैं पाछैवांनैं मिहीवांटि टंक ५ सहत टंक १० कैसाथि चाटै रोजीना दिन ७ तौ हाडटूट्यौ आछ्योहोय ७ अथवा आंवला मैदालकडी तिल ये ठंडा पाणीसूं मिहीवांटि वे जागां लेप करैतौ हाड टूट्यो संधिटूटी आछीहोय ८ अर चोषी ममाई मनुष्यका मांसकी मिलैसौ अनुमान माफिक सहतसूं ऊनै देतौ वेंका हाड अर संधिटूटी आछी होय ९ अथवा चोटलागि वा वालाकै मांस सोरवोदूध घृत पुष्टाईकी औषदि येसारी आछी

न. टी. अस्थिभंग बाराप्रकारकोछै जीनैंहाडटूटवोकहैछै जींकानाम १२ छै. जोहाडकरकै जीनैं कर्कटकहै जोघोडाकाकानकी सीनाईं ऊंचो होय जाय जीनैं अश्वकर्णक० जोचूर होय जीनैं विचूर्णितकऐसेही नाममाफिकलक्षणविचार लेणा. योग्यछै.

अतनीवस्त ईनैं आछी नहीं लूण. कडवीवस्त पारपटाई मैथुन तावडोदेदेषै लूषो अन्न. वालककी अरमोट्यारकी चोटवेगी आछी होयबूढाकी अररोगीकी चोटवेगी आछीहोयनहीं १० अथवा लाष टंक २ दूधसूं दिन १५ पीवैतौटूट्योहाड आछ्यो होय. ११ अथवा पीलीकोड्यांकौचूर्णरती २ तथा ३ औटाया दूध सौंपीवैतौ टूटोहाड जुडै १२ येसर्वजतनवैद्यरहस्यमैं लिष्याछै. अथवा बौंलकीबकल त्रिफला सूंठि मिरचि पीपलि यासारांकी बराबरि गूगल नाषैपाछै यांको येकजीवकरि टंक २ रोजीनादिन १५ दूधसूं लेतौ सरीरवज्रकोसो होजाय १३ अथवा बौंलकीबकल टंक २ ईनैं मिहीवांटि सहतसूं महिनायेकतांई लेतौ सरीर वज्रकोसो होजाय १४ यो जोगतरंगिणीमैंछै. अथ मुदगर उगैरै कहींतरैकी चोट लागीहोय तींका आछ्या होवाकी विधिलिष्यते. मेथी. मैदालकडी सूंठि आंवला यांनैं गोमूतमैं मिहीवांटि चोटकै लेपकरैंतौ चोट आच्छीहोय १५ इतिभग्नरोगकी उत्पत्ति लक्षणजतन सं०

अथ नाडीव्रणरोगकी उत्पत्ति लक्षण० जतनलि० जो अग्यानवैद्य सथि योछैसो यागुमडांकाव्रणनैंकाचो जाणिवेको जतन करै नहीं वेंकी राधि काढैनहीं. वाराधिव्रणकैमांहि नसांमें धसिजाय पाछै वेका स्थानानैंविगाडिदेपाछैवा कहींतरै वारैनीसरै. वेराधिका घणाप्रभावसूं ईवास्तेवाराधिनाड्यांमैं नलकीसीनाईनलमैं जैसे जलवढै तैसे नाड्यांमैंराधिवढै. ईवास्तेईरोगकौं नाडीव्रणकहिजे. १ ओनाडीव्रणरोग पांच ५ प्रकारकोछै. वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ सस्त्रादिककाचोटलागिवाको ५ अथ वायकानाडिव्रणकोलक्षणलि० काठोमिही जींकोमूंढोहोय अरजीमैं

न. टी. मनुष्यकैहाडटूटजाय जींकैपाटोयथार्थबांधैछै जींमापाटाकाबांध्यापीछैवैनै हालचालकरिवादेनहीं. अरकुपथ्यकरिवादेनहींतो आराम तुरतहोयछै कदाचितहालचालकुपथ्य सौंसाध्यहोयतोभी ओमनुष्य असाध्यहोयजायछै.

सूलचाले जींकैमूंढैराधिरहै. रातिनैंघणीरहै. येजीमैलक्षण होय तीनैं वायको नाडिव्रण कहिजै १ अथ पित्तका नाडिव्रणको लक्षण लिष्यते. जीमैतिसहोय. जुरहोय. मिहीदाहहोय गरम अर पीली जीमें राधिनीसरै तीनैं पित्तकी नाडिव्रण कहिजे २ अथ कफकीनाडिव्रणको लक्षणलिष्यते. जींव्रणकै मूंढै लोही लीयां घणी जाडी सुपेद राधिनीसरै अर वेमैं षाजि आवे अर पीडभी होय रातिमैं घणीहोय ये जीमें लक्षण होयतीनैं कफकीनाडिव्रण कहिजै. ३ अथसन्निपातकी नाडीव्रणको लक्षण लिष्यते. जीमै दाहहोय जुरहोय सास होय मूर्छा होय मूंढोसूकै अरजीकी राधिकीगतिगंभीर होय जींकोछेवडो आवैनहीं ऐसी राधिनीसरै ओनाडि व्रणकालकीरातिहीछै. मानूं मारीहींनाषैलो. येजीमैं लक्षण होय तीनैंनाडिव्रण कहिजे. ४ अथशस्त्रादिकांकी चोटलागिवासूं उपज्योज्यो नाडिव्रण तींको लक्षणलिष्यते. जींकासरीरमैं तीर गोली इत्यादिक लाग्याछै. अरवेंका सरिरमैं वेशस्त्रकहीं तरैरहे जाय तीनैं वैद्यस थियोहैसोवेंका सरीरमैसूं सस्त्र काढै सो वेजागां कहीं तरै व्रणपडि जाय तीं व्रणमैं झागासमेतलोहीराधिनीसरिवोही करै अरवेमैं पीडरहवोकरै कहीं तरै सरीर हलावतां येजीमैं लक्षण होय तीनै शस्त्रादिककी चोट लागिवाको नाडिव्रण कहिजे. ५ अथ नाडिव्रणको असाध्य कष्टसाध्य लक्षण लिष्यते. त्रिदोषको नाडिव्रण आछ्यो नहींहोय ओर च्यारी प्रकारका नाडीव्रण आछ्या सोवे वैद्यका जतनसूं आछ्याहोय २

* शरीरमैं अनेकतरैकाहाडछै. छोटाछोटातोघणाछै. जींकीगिणती वैद्यकशारीरकशास्त्र [illegible]. परंतुमुष्यमुष्यजोहाडछै सोकहूंछूं. मस्तगमैं. हाथांमैं. पगांमैं पासलांमैं जुदाजुदा भाग छै. संधिसंधिमैं जुडरह्याछै. जांकै मनुष्य बंधाणचरबी. औरनसांकोछै. उपरमांस चर्मसूं ढक्याछै. सोकोईतरैकी चोटसूं तथामहारसूं टूटजाय. उतरजाय. जीनैं कुसलवैद्यविचारकरउपावकरैतौ आरामहोय.

अथनाडि व्रणका जतनलिप्यते. सूक्ष्म मूंढाका व्रणछै. त्यांमें राधिनीकलिवो करैतो वेंके थोहरिका दूध अथवा आकका दूधमें दारुहलद भिजोय तीनें घसि तीकी वातिकरि वेव्रणका मूंढामें दे तो ओ व्रण भरिजाय १ अथवा किरमालाकीजड हलद मजीठ यांनें सहतमै मिहीवांटि वेंकीवाति करै वे व्रणमें जुगतिसूं वैद्यदेतो व्रण आछ्यो होय २ अथवा चवेलीका पानाकोरस आककीजड किरमालाकीजड दांत्युणी सींधोलूण. संचरलूण जवपार यांनेमि हीवांटि यांकीवातिमिही व्रणका मूढामें जुगतिसूं देतो ओव्रणभरि कै आछ्योहोय ३ अथवा जात्यादिघृत अथवा जात्यादितैलयां सूंभि यो नाडि व्रणरोग जायछै. ४ अथवा त्रिफला सूंठि मिरचि पीपलि यांबराबरि सोध्योगूगल यांनें मिहीवांटि यांको येक जीव करि टंक २ रोजीनादिन ४९ सीतलजलसूं लेतो सर्व प्रकारको नाडीव्रणरोगजायपथ्यमैरहैतो ५ अथवा गूगल सिंदूर यांदोन्यांनें मिहीवांटि ईनें जतनसूं व्रणमै भरैतो नाडीव्रण रोग आछ्यो होय ६ ये सर्व भावप्रकासमैं लिष्याछै. अथवा आंधाझाडाकाबीज ति लयांनेंमिहीवांटि ईनें जतनसूं नाडीव्रणको लेपकरैतो वायको ना डीव्रण आछ्यो होय ७ अथवा तिल मजीठ हाथीकोदांत हलद यांनें मिहीवांटि पित्तका नाडीव्रणकों लेपकरैतो पितकानाडीव्रण जाय ८ अथवा तिल महलोठी दांत्युणी नींबकीछालि तथापान सीं धोलूण यांनेंमिहीवांटि यांकोलेपकरैतो नाडिवण रोगजाय ९ अथ वा तिल सहत घृत येकठांकरि लेपकरैतो वायको व्रण आछ्यो होय १० अथवा सहतकी बत्तीसें अथवा लूणकी बत्तीसें दुष्टव्रण आछ्यो होय ११ अथवा तेलकी बत्तीसूं दुष्टव्रण आछ्यो होय

न. टी. बंबूलकी छालको योगलिष्योछै जीमैंलीषीछै सरीरवज्रकोसो होय जाय सोया वातग्रंथकर्त्ताकी एकआनंदकी इच्छाछै. जैसै हरेक मनुष्यकहैछै. यो कपडो गढवारपाथरजि स्योछै. ईयानही जाणजो. परंतु शरीर मजबूत घट्ट होयजायछै.

१२ अथवा साजीजवषार कपेलो महदी सुहागो सुपेद षैरसार ये बराबरिले याने गऊका घृतमै मिहीवांटि दिन १ पाछै ईनै व्रणमै भरैतौ व्रणकी कृमिमरिजाय व्रणकी सोजीजातीरहै अर औ व्रण भरिजाय १३ इतिस्वर्जकादि घृतं योचक्रदत्तमैं लिष्योछै. अथवा स माल्लूकापानांकारसमैं तेलपकाय वेतेलकीवाति व्रणमैं देतौ व्रण आ छ्योहोय १४ इतिनिर्गुंडीतैलम् यो वृंदमैछै. अथ सुपेदमल्हिम कीविधि राल पईसा १ भर सुपेदो पईसा १ भर सुपेद मोम पईसा दोय २ भर मुरदासिंगी पईसा १ भर राल सुपेदो मुरदासिंगी. यांनैषूब मिहीवांटि पाछै गऊको घृत पईसा ६ भर गरम करि ई मै मोम पघलाय सुद्धकरै अरवे मिही वांटि औषधि भीवै मोमका घृतमैं वेहीवषत नाषे पाछै वेही समै कांसीकी थालीमै पाणीनाषि वेपाणीमै मोमसुद्धा ये औषदि नाषि हाथसूं षूबधोवै वार १०८ पाछै व्रणके ईनै लगावै तौ व्रण आछ्यौ होय १५ अथवा पारो सोधी आंवला सारगंधक ये बराबरिलै यांदोन्यांकी बराबरि मुरदा सिंगी ले अर यांतीन्यां बराबरि कपेलोले यांमैं थोडोसो नीलोथूथो नाषै यासारांसूं चौगूणो ईम गऊको घृत नाषै अर ईमैं नींबकापा नको रस अनुमान माफिक नाषे पाछै या सारांनै घृतमैं षुब वांटै दिन दोयतांई. पाछै व्रणकै लगावै तौ व्रणमात्र सर्व आछ्या होय १६ यो वैद्यरहस्यमैं लिष्योछै. अथवा सुपेदमोम मस्तगीगूंदमैं ढल नीलो थूथो सुहागो साजी सिंदूर कपेला मुरदासिंगी गूगल कालीमिरचि सोनगेरू इलायची. वेरजो सुपेदो हींगलू सोधीगंध क ये सर्व बराबरिलेमोमविना सारांनैं येकठां जुदां वांटै अर मोम नैं गउका घृतमैं अग्निऊपरि तपाय शुद्धकरिले पाछै सर्व औषदि

न. टी. नाडी व्रणरोगछैसोव्रणरोगमांहसौंविनाजतनकियांपैदाहोयछै. पछैईनाडीव्रणकी जुदीजुदीआकृतीहोयछै. वात. पित्त. कफया कारणासौं. जोव्रणरोगकाइलाजमैंसथियोनामज राहनस्तरकुशलवैद्यकहैछै. सोनाडीव्रणनाम नासूर होवादेवैनहीं.

इमोममैं मिलाय पुब मिहीपरलमैं दिन २ वांटि येकजीवकरिपाछै सस्त्र उगैरै अर सर्व दुष्ट व्रणभीईका लगायासूं आछ्याहोय १७ यो वैद्य कुतूहलमैं लिष्याछै. अथवा नीलो थूथो कपेलो मुरदा सिंगी सुपेद पैरसार सुपेदो सिंदूर हिंगूल मोम केसरि गऊको घृत येसर्व बराबरिले पाछैं गऊका घृतनैं तातोकरि पहिली ताताघृतनैं नीचैउतारि ईमैं प्रथम नीलोथूथो वांटिनापै पाछै वेही बपत ईमे मोमनाषै पाछै ईनैं पघलाय लेपाछै ईमैये औषदि वांटिनापै यांसा रांको येकजीवकरि पाछै ईनैं कांसीकीथालीमै घणो जलनापि ईमैं योसारीमोमसुधांये औषदिनाषै हथेलीसूंदिन १ पूबमर्दनकरै पाछै ईनै मल्हिमनै व्रणमात्रकै लगावैतो व्रणमात्र चांदीउगैरै सर्व आ छ्याहोय १८ यो वैद्यकुतूहलमैछे. अथवा हिंगलू पईसा ३ भर सुपेदमोम पईसा ३ भर साजी पईसा १ भर नींबकापानाकीटीक डीकरि गऊकाघृतमै पकावै अर मोम घृतमै पघलायले मुरदासिंगी पईसा १ भर पाछै ईनैवांटि यां सारांको येकजीवकरि पाछै व्रणकै लगावैतो व्रणमात्र आछ्याहोय १९ अथ सरीरमै हाथ पगांउगैरै फाटि फाटि व्याऊसी पडिजाय तींका आछ्या होवाको मल्हिम लि० राल पईसा १ भर काथो पईसा १ भर कालीमिरचि पईसा १ भर गऊको घृत पईसा ४ भर चवेलीको तेल पईसा ४ भर यां औषद्यांनै मिहीवांटि लोहका कडछलामैं मल्हिम करिलै पाछै ईनै लगावैतो हाथ पग उगैरे कठही फाटतो होयतो निश्चै आछ्यो होय २० अथ मल्हिम नींबकी नींबका पानांकोरस सेर एक १ काढै पाछै गऊको घृतपाव ऽ। कडच्छलामै चढाय वेनैं तातो करै

न. टी. नाडीव्रणजोनासूरछै. जींका छेद्रमैं सली घालै जदां वैको मूलस्थान होय. जठां तांईयासली जायछै. पाछै औषधकी बत्ती घालै तोवो भरजायछै. परंतु नासूरकी माषाघ णी फैलैछै. घणादिनाको होयजदां वेमैं सलीद्वारा ठेडतां ईचीरकर घावघाल देवैतां औषध सौं वेगो भरैछै.

सोघृत तातोहोय तदिवेंमैंराल पईसा ४ भर नाषै वेनैंपिघलावैं तदिऋो पानांकोरस वेंमैं सुसिजाय जाडो होजाय तदिवेंमें काथ पईसा १ नीलोथूथो पईसा १ मुरदासिंगीं पईसा १ भर येवांटि वेंमैंनाषि येक जीवकरि पाछै ईनैं कपडाकै लगाय फोडाकै व्रणकै ऊपरिलगावैंतौ व्रणनिश्चै ऋाछ्यो होय २१ ऋथ व्रणकरि ऊठा की त्वचाकोरंग ऋोर सो होय जायतो त्वचाका वर्णसिरीसो करि वाकी ऋोपदि लिष्यते. मैंणसिल मजीठ लाष दोन्यूंहलद येबरा बरिले यांनैं घृतसहतसूं मिहीवांटि वेंत्वचाकै लेप करैतौ सरीरकी त्वचा सरीसो वेंको वर्णहोय २२ इतिनाडीव्रणरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम् इति श्रीमन्महाराजाधिराज महाराजराजराजेंद्र श्रीसवाई प्रतापसिंहजीविरचिते ऋमृतसागरनामग्रंथे श्लीपद विद्रधीव्रणसोथ सारीरव्रण वाय पित्तकफादिकांका ऋागंतुक व्रण शस्त्रादिकांका ऋग्निदग्ध व्रणग्रंथिभग्ननाडीव्रणयासर्वरोगांकाभेद संयुक्तउत्पत्तिलक्षणजतननिरूपणंनामपंचदशस्तरंगःसमाप्तः १५

१६ ऋथ भगंदररोगकी उत्पत्तिलक्षण जतनलिष्यते. गुदाकै ऋासपासचौगडदाई दोय ऋंगुलमाहीफुणसीहोय ऋर फूटैऊठेफुणसी श्रववोकरै वेनैं ईवास्तै भगंदर कहीजैछै. भगकैवी चहूंऋोरयो होयछै. ऋर गुदाकै ऋर बस्तकै वीचैभी होयछै. भगकीसी तरैयो रोग होयछै. ईवास्तै ईनैवैद्य भगंदर कहैछै. सो भगंदर पांचप्रकारकोछै. वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ शस्त्रादिककी चोटलागिवाको ५ ऋथ वायका सतपोतक भगंदरको लक्षण लिष्यते. जोपुरस कसायलो ऋरलूषो बहुत भोजनकरै तींकै वाय

---

* व्रणरोगऊपर ऋनेक मलम कहीछै. परंतु एक ग्रहस्तथी पुण्यकेवास्ते मलम गरीब लोकांनै देवो करैछै. सोमलमलिषूंछू. कणगूगलीसेर १ सिंदूरतोला १० वछनाग तोला ५ कणगूगलीनैं लुहारका हतोडासूं घणऊपरकूट नरम करणी. घीरतकोहातकिंचित्लगायकर पछै वचनाग. सिंदूरमिलाय कूट नरम करणी. चूथीकौं लगाय चेपैतौ ऋाछ्यौ होय.

हैसो कोपकूं प्राप्तिहोय गुदाके कनैंफुणसीकरैं वेंको आलसकरि पुरस जतनकरैंनहीं तदि वाफुणसीपकै अर ऊठेपीडघणीकरैं अर वाफुणसी फुटैतदिवेमें राधिउगेरै मलमूत्र वीर्यभी निसरिवो करैं अर वेकै चालनीसरिसासोछेद्र होयजाय ईनें सतपोतक भगंदर कहिजै १

अथ पित्तका उष्ट्रग्रीव भगंदरको लक्षण लिष्यते गरम वस्तका षावासूं पित्तहैसो कुपितहोय गुदाकै चौगुडदा दोय आंगुलकी जायगांमें लाल फुणस्यांनें पैदाकरैछे. वा फुणसी तत्काल पकिजाय अर वेमें गरम गरमराधि नीसरैं अर वाफुणसी ऊंटकीसी गरदन सरीसी ऊंचीहोय आवै वेनेंवैद्य हैसो पित्तको उष्ट्रग्रीवभगंदर कहैछे. २ अथ कफका परिश्रावी भगंदरको लक्षणलिष्यते. ऊठेषुजालिघणी चालै अर वेमें पीड थोडीरहै अर वाफुणसी सुपेद होय अर वा श्रववोहीकरैं तीनें परिश्रावी कफको भगंदर कहिजै ३ अथ सन्निपातको संबुकवर्त भगंदरको लक्षण लिष्यते वा फुणस्यांमें बहोत प्रकारकीतो पीडा होय अर वेफुणस्यांका बहोत प्रकारका वर्ण होय अरवा श्रववोहीकरैं अर वा फुणसी मिनक्कादाष सिरीसीहोय अर वा फुणसी संषमाहिली नाभिसिरीसीहोय तीनें सन्निपातकी संबुकावर्त भगंदरकहिजै. ४ अथ शस्त्रादिककी चोट लागिवाका भगंदरको लक्षणलिष्यते. गुदाकैकनैं कांटानैं आदिलेर लाग्यो होय अथवा ऊठे षुजालिवासूं नसांदिक लागिजाय अथवा उठाकाबाललेता पाछणाकी ऊठेलागिजाय तदि ऊठेलागिजाय तदिऊठे फुणसीहोय अरवा फुणसी फूटै अर वेकीराधिका सूगसूं ओर ऊठे फुणस्यां होय जाय अर वेफुणस्यां जावै नहीं अर श्रव

न. टी. लोकउपकारकै अर्थ जो कोईबी भाग्यवान आमल्ल वणायकर ईकी चौथीगरीब मनुष्यकै वास्तै वांटवो करै तौवड़ो पुन्यअरयशवधैछै. सोयामल्लहमऊपरलिषीछै. जीमें नींव कापानांकोरससेर १ लिष्योछै. पानै ३१५ ओली २१ मैं. मल्लमछैसो.

वोहीकरै वेनै उन्मार्ग संज्ञक शस्त्रका चोट लागिवाको भगंदर कहिजे ५ अथ भगंदरको कष्टसाध्यलक्षणालि० भगंदरतो सर्वहीकठिनसूं आछ्योहोय परंतु सन्निपातको अरऊठे चोटलागिवाको भगंदर आछ्यो होयनहीं. अथ भगंदरको जतनलिष्यते. गुदाकी जायगां भगंदर उपज्यो जाणै. तदि वैद्यहैसो जोकादिक लगाय उठाको लोही तत्काल कडायनाषै इसीतरै कढावै तौ वेफुणसीपकैनही १ अथवा ऊठेफुणसीउपजी जाणै तदि ऊठे साठीकीजड गिलवेसूंठि महलौठी वडका कोमलपान यांनै मिहीवांटि क्यौं सुहावतोगरम लेपकरैतौ भगंदरकी वेफुणसी आछीहोय १ अथवा तिलनींबकी वकल महुवो यांनै मिहीवांटि सीतल जलसूं ऊठे लेपकरैतौ पित्तको भगंदर आछ्योहोय २ अथवा चवेलीका पान वडकापान गिलवै सूंठि सींधोलूण यासारानैं छाछिमैंवांटि भगंदरकै लेपकरैतौ भगंदर आछ्योहोय ३ अथवा हलद आककोदूध सींधोलूण गूगल कनीरका पान यांनै औटाय ईमै तोल अनुमान माकिफ ईमै तेल नाषि पकावै तदि जल उगैरै वलिजाय तेलमात्र आय रहै तदि ईतेलको ऊंठे मर्दन करैतौ भगंदर जाय ४ अथवा गूगल त्रिफला. पीपलि यांनैं बराबरिले त्यांनैंमिही वांटि टंक १ जलसूं लेतौ भगंदरजाय अर सोजानैं गोलानैं ववासीरनैं यांसारांनैं योदूरिकरैछै ५ इति नवकार्षिकोगूगलः अथवा चीरा उगैरैका देवामैं निपट कुसलछै. वैद्यसथियोवोचीरो देयतौ ऊंकनै चिरोदिराय. व्रणकाजतन माल्हिमादिकछैसोलगाजेतौ भगंदर आछ्योहोय ६ अर भगंदरवालो इतनीवस्तकरै नहीं षेद मैथुन युद्ध घोडाऊप

न. टी. भगंदररोगकी संष्यालिषीछै. सोपांचप्रकारकीछै जींका नामलि० शतपोतक. भगंदरतो वायकोछै. १ अर उष्ट्रग्रीव नाम भगंदरपित्तकोछै. २ परिश्रावीनाम भगं. कफकोछै. ३ संबूक नाम भगं. सन्निपातकोछै. ४ अरउन्मार्गसंज्ञिकभगं. शस्त्रादिककी चोटलागिवाकोछै.

रचढिवो उग्यानाजषायनहीं भगंदर आछ्यो होयगयोतोभी वरस एकताई करैनहीं येसर्व भावप्रकासमें लिप्योछै. अथवा रसोत दो न्यूंहलद मजीठ नींबका पान निसोत तेजबल दांत्युणी यांनें मिही वांटि भगंदरकों यांको लेपकरैतौ अर यांहीसूं वेंनें धोवेतौ भगंदर आछ्योहोय ७ अथवा कुत्ताका हाडका चूवा यांनें गधाका लोही सूं मिहिवांटि पथ्थरऊपर अर भगंदरकै लेप करैतौ भगंदर आछ्योहोय ८ अथवा बिलाईका हाडनें त्रिफलाकारससूं मिहीवांटि भगंदरकै लेपकरैतौ भगंदरजाय ९ अथवा बिलाईका हाडकी राष कूकराका हाडकीराष तीनें लोहका पात्रमें गऊका घृतमें घसि भगंदरकै लेप करैतौ भगंदरजाय १०

अथ रूपराजरसकी विधि. पारो भाग २ तांबाकामैंलका भाग ४ च्यारि यां दोन्यांनें येकठांकरि कागलहरीका रसमें दिन १९ षरलकरै पाछै यांनें तांबाका संपुटमें मेलै आसपास ऊपर वालू रेतसूं हांडी भरै पाछै वेंकै नीचै आंचदे लकड्यां षूब प्रहर ८ की पाछै स्वांग सीतल हुवां संपुटनें वे माहिसूं काढै पाछैसंपुट माहिसूं वेंनें काढि वेंमें घृत सहत सुहागो येदे पाछै वेंनें पक्की मूसिमें मेल्हेवेकी अघमसीकरि धवणीसूं वैंनेंषुबधुवावै तदि ओचक्र पायफिरै तदिवेंनें वैंमाहिसूं काढै तदि योरस सिद्धि होय पाछै ईरसनें रति ३ तीनसहतसूं लेतौ भगंदर निश्चै आछ्यो होय ऊपरसूंत्रिफलाको काढो पीवै अरपथ्यरहै ११ इतिरूपराजरसः अर रविसुंदररसलिष्यते पारो भाग १ आंवलासारगंधक भाग २ पाछै या दोन्यांकौ षरलमें घालि कजलीकरै पाछै यांनें कवारका पाठाकारसमें षरलकरै पाछै ईंको गोलोकरै. वेगोलानें तांबाका संपुटमें

न. टी. कांछामैं दाद अथवा षाज औरभी कारण होयछै. जठैषाज. षुजालवाकाकारणांसूं नषादिकको प्रहार अथवा ओर कारणांसूं फोडाफुणसी होजाय ज्यांनैं चतुर मनुष्य जतन सौंषुजालै अर आराम करै. नहीं करैतौ भगंदर होय जायछै.

मेलै वेसंपुटनै हांडीमै मेलै आसपास वेंकै चौगुडदाई राष देवैके वीचि संपुटमेलै पाछै वेकैनीचै अग्निवालै दिन १ तांई पाछै स्वांग सीतल हुवांवैमाहिसूं वैनैकाढै पाछै वेंकैजंभीरीका रसकीपुट ७ दे पाछै ईनै रती १ सहत घृतसूं चाटैतौ भगंदरजाय ईऊपर मूसली लसणपीवै ईषायाऊपरिमीठो अहार करैनहीं दिननै सोवैनहीं मै थुनकरैनहीं ईऊपर सीतल भोजन करैनहीं इति रविसुंदररसः १२ यो रससिंधुमै लिष्योछै इति भगंदररोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम् अथ उपदंशरोगकी उत्पत्तिलक्षण जतनलिष्यते हथ रस का करिवासूं अर इंद्रीकै कहींतरैसूं नष अर दांत लागिजाय तीसूं अथवा स्त्रियांकै गरमीका प्रभावसूं अथवा स्त्रियांका भगऊपरि ब डाकठोर बालहोय आवै त्यांका उपाडिवासूं अथवा योनिकोछिद्र मिहीहोय तीसूं स्त्रियांकी जोनिदूषित होयतौ कारणांसूं अथवा लिंगेंद्रीनैं धोवैनहीं ईकारणासूं अथवा स्त्रीपुरुषांसूं मैथुन घणोकरै ईकारणांसू पुरपकै लिंगेंद्रीकैविषै पांच प्रकारको उपदंसरोग हो यछै अर नानाप्रकारका जो कुपत्थ्यकरिवो त्यांकारणांसूं उपदंस होयछै. सो उपदंसरोग ५ प्रकारकोछै वायको १ पित्तको २ कफ को ३ सन्निपातको ४ अर किंहीतरै लिंगेंद्रीकै नषदंतादिककीचो टलागिवाको ५ अथ वायका उपदंसको लक्षणलिष्यते लिंगेंद्रीकै विषै गरमीकरि पीडाहोय व्याऊकीसीनाई फाटिजाय अर ओफुरकै अर ऊठेकाली फुणस्यां होय जायतौ जाणिजे वायको उपदंसछै १

अथ पित्तका उपदंसको लक्षणलि० ऊठेफुणस्यांपीलीहोय अर ऊठेघणोचेपनीसरै अरऊठे दाहहोय अथवा फुणस्यां लालहोय

---

* भगंदररोग महाअसाध्यव्याधीछै. मूलद्वार ऊपर आस पास पोलमैं होयछै. चक्रकार कै आसपास इच्छानाडीको समूछै. जींकै माहीं प्रवेश होय. इच्छानाडीका समूहनैं षाय जायछै. जदांमनुष्यांका मूल द्वारसैं मलरोक्यो नही जायछै. ओर ओरोग लौकीकमैंदीन हजार आयूको होयछै. परंतु ताजा रोगकै उपाव लागैतौ आराम होयछै.

येजीमैं लक्षण होय तदि पित्तको उपदंसजाणिजे २ अथ कफका उपदंसको लक्षण लिष्यते जीमें पाजि घणीहोय. सोजोघणोहोय. वेफुणस्यां सुपेदहोय अर जाडो जाडो वामेश्रवे येजीमैं लक्षण होय तीनैं कफको उपदंस कहिजे. ३ येसर्व लक्षण जीमें होयतीनैं सन्निपातको उपदंसकहिजे. ४ अथ उपदंशको असाध्यलक्षण लिष्यते. जीं लिंगेंद्रीकोमांस विषरिजाय अरवेमें कृमीपडिजाय अर गलजाय अर आंड अवसेस आयरहे ओउपदंस असाध्य जाणिजे. ५ अथवा उपदंसजींकै हुवोछे. अर वेंको जतन नहीं करै अर विषयकरतोजाय अर वेमैंक्रिमि पडिजाय अर वेंकी इंद्री गलजाय ओ पुरष मरे. ६ अथ लिंगारसको लक्षण लिष्यते. जीं पुरसकी लिंगेंद्रीकै विषै धानका अंकुर सरीसा ऊपर होयजाय कूकडाकी सोषासरीसा होयजाय अर लिंगेंद्रीकै माहि अर वेंकी संधिकीनसांमैं पीडाघणीहोय अर वा इंद्रीचुवालागिजाय वेनै लिंगार्स कहिजे. १ अथ उपदंसको जतनलिष्यते. जोक लगाय उठाको लोही कठाजे अर वानैं पकतानैं पकवादेनहीं ईसीतरे करैतो उपदंस जाय १ अथवा साठीकीजड गिलवे सूंठि महलौठी वडका कोमलपान यांनैं औटाय ईंपाणीसूं लिंगेंद्रीनैं धोवैतो उपदंसजाय २ अथवा लिंगेंद्रीकी नसांछुटावैतो उपदंसजाय ३ अथवा वडका कोमल पत्र कहुवाकीवकल जामुणीकीवकल लोद हरडैकीछालि हलद येबराबरिले यांनै जलसूं मिहीवांटि लिंगेंद्रीकै लेपकरैतो लिंगेंद्रीकी सारीव्यथा अर ऊठाको सोजो दूरिहोय. ४ अथवा लिंगेंद्री पकिजायतौ लिंगेंद्रीनैं याही औषधांसूं धोवैतो उपदंस जाय ५ अथवा त्रिफलाका काढासूं वेंनै धोवै अथवा भांगराका रससूं वेंनै धोवै

न. टी. भगंदर रोगवालानैं ग्रंथकर्ता उग्या अनाजमना करैछै. सो उग्यानजलिषूंछूं. को ईबी अन्न होय जीनैं भीजोवै. अरवा अन्न दूजैदिन अंकुरयुक्त होय जीमैं अंकुरउगे. जैसे मूग मोठ, चिणा उगैरे ये भिजोयांपीछे उगैछै. ज्यानैं उग्योअंनकहैछै. सोनाजनहीं षावणो.

अथवा कमलका पाणीसूं वेने धोवे अथवा याको ऊठे लेप करेतो उपदंस जाय ६ अथवा मिझन्यारूषकी बकलको चूर्ण अथवा दाड्योंकीबलकको चूर्ण यांनें मिहीवांटि लिंगेंद्रीके लेप करेतो उप दंस जाय ७ अथवा सुपारीनें पाणीमें घस लगावेतो उपदंस जाय ८ अथवा कडाहीमें त्रिफलानें वालिवेकीराषकरि सहतसूं उपदंसके लेप करेतो उपदंस आछ्योहोय. ९ अथवा पटोल नींबकीछालि त्रिफला चिरायतो षेरसार विजेषार गूगल यांनें बराब रिले पाछे यांनें ओटाय पीवेतो उपदंस जाय १० अथवा चिराय तो नींबकीछालि त्रिफला पटोल कणगचकीजड आंवला षेरसार विजेषार यांको काढोकरि तींकाढामें घृतपकावे पाछे पाणी बलि जाय घृतमात्र आयरहे तदि ईंघृतको लेप करेतो अथवा ईंघृतनें भोजनमें षायतो उपदंस जाय ११

इतिभूनींबादिघृतम् औरघृतकोढका जतनमें लिष्याछे. अर व्रणका जतनमें लिष्याछे सो घृत लगावे अथवा भोजनमेंषावेतो उपदंसजाय १२ अथवा जुलाबका लेवासूं उपदंस जाय. १३ अ थवा जांगीहरडेपईसा ८ भर सुपेदकाथोपईसा १ भर नीलोथूथो पईसा १ भर यांनेंमिहीवांटिपाछेपक्कानींबू १०० कारसमें षरल करे योरससुषायदे पाछेयांकीगोलीमासा १ भर कीकरे पाछेगोली १ रोजीनादिन १५ दहींकेसाथिले अरपथ्यरहेतो उपदंसनिश्चे आछ्योहोय १४ अथवानीलोथूथो भाग १ काथोभाग १ मुरदा सींगी भाग २ सुपारीकीराष भाग २ यांनें मिहीवांटि उपदंसकी चांदीकेयांको भुरको देतो उपदंसनिश्चे आछ्योहोय १५ अथवा पारो गंधक हरताल सींदूर, मेणसिल यांनें तांबाकापात्रमेंतांबाका

न. टी. भगंदरका रोगीनें पथ्यलि० भात. मूग. तुराई. सोभांजन. फली. कोमलमुली. घृत. कडवो पदार्थ इत्यादि. कुपथ्यलि० महनत. श्रम. स्त्रीसंग. पिस्यो अन्न. युद्ध. अश्वादि वाहन. धूममें फिरणो. गरिष्ट भोजन. क्रोध. चिंता. औषधीमें आलकसइ०

घोंटासूं घृतमैंवांटि दिन ३ पाछेंईनें लगावेंतो उपदंसजाय १६ अथवा मस्सादूरिहोवाका जतनपाछें लिप्याछें त्यांकरिकेंलिंगासंको जतन वैद्यकरिले. इतिउपदंस रोगकीउत्पत्ति लक्षण जतनसंपूर्णम् येसर्व भावप्रकासमैं लिप्याछें. अथ सूकरोगकीउत्पत्ति लक्षणाजतनलि० जोमुरषपुरस होय सोविगरिविचास्यां मूर्षांका कह्यासूंलिंग नैवधायो चाहे पट्टीकरिलेपादिकां करितांपुरसकै अठारा प्रकारको लिंगकैविसैसूकरोग पैदाहोयछें. सो सूकरोग अठाराप्रकारकोछें. सर्षपिका १ अष्टीलिका २ ग्रंथित ३ कुंभिका ४ अलजी ५ मृदित ६ संमूढपीडिका ७ अवमंथ ८ पुष्करिका ९ स्पर्शहानि १० उत्तमा ११ शतयोनक १२ त्वक्पाक १३ शोणितार्बुद १४ मांसार्बुद १५ मांसपाक १६ विद्रधी १७ तिलकालक १८ अथसर्षपिकाको लक्षणलिष्यते. जींकै कहींतरैसूं लिंगकै सिरस्यू सिरीसी गोरीफुणसीहोजाय वायकफकरिकैं तीनें सर्षपिका नाम सूकरोग कहिजै. १ अथ अष्टीलिका सूकरोगको लक्षणलिष्यते कहींतरें वेंका लिंगकै विसै करडी अर वांकी पीडालीयां फुणस्यां होय तीनें अष्टीलीका सूकरोग कहिजे २ अथ कुंभिकासूकरोगको लक्षणलि० कहीं कारणांसूं रक्तपित्तसूं जींका लिंगकै जामुणीकी गुठलीसिरीसी फुणसी होयजाय तीनें कुंभिका सूकरोग कहिजे ४ अथ अलजीसूकरोगकोलक्षणलि० जींकी इंद्रीकैविषै प्रमेहकी फुणसी होय जायतीनें अलजीसूकरोग कहिजे. ५ अथ मृदितसूकरोगको लक्षणलिष्यते जींकी इंद्रीकहींतरै मसली गईहोय अर वेमैं पीडहोय आवैं वाय करिकै तीनें मृदित सूकरोग कहिजे ६ अथ संमूढपीडिकासूकरो

न. टी. उपदंशकारोगीनैं पथ्यलि० मूग. भात. गेवांकीरोटी. घृत. तुराई. सोभांजनकी फली. छालीकोदूध. गरमपाणी. हलको भोजनइ० कुपथ्यलि० हींग तेल. लालमिरच. वैंगण. गुड. आचार. बाजरो. चीणा. मोठ. गरमचीज. दिनमैंनिद्रा. श्रम. स्त्रीसंग छाछ. षाटो. इ०

गको लक्षणलि० जींकै दोन्यूं हथांसूं कहींतरै इंद्रीपीडीगई होय तींकरिवेंकै ऊठे फुणस्यां होय तीनै संमूढपीडिकासूकरोग कहिजे ७ अथ अवमंथसूकरोगको लक्षणलि० जींका लिंगकैमध्य कहीं कारणसूं बडी अर घणी फुणस्यांहोय जाय. कफ लोहीका दुष्टपणासूं अर वामैं पीडाहोय रोमांच होय आवे तीनै अवमंथसूकरोग कहिजे. ८ अथ पुष्करिकासूकरोगको लक्षणलि० जींकी सुपारिकै ऊपरिपित्तलोहीका कोपसूं फुणस्यां घणीहोय वेनै पुष्करिक सूकरोग कहिजे ९ अथ स्पर्शहानिसूकरोगको लक्षणलि० जींकी इंद्री कहींकारणांसूं हाथ उगैरैको स्पर्शसहैनही तीनै स्पर्शहानि सूकरोग कहिजे १० अथ उत्तमासूकरोगको लक्षणलि० जींपुरसकै अजीर्णसूं मूग उडद सिरीसी रक्तपित्तका कोपसूं लिंगकैविषै लाल फुणसीहोजाय तीनै उत्तमा सूकरोग कहिजे. ११ अथ सतयोनक सूकरोगको लक्षणलिष्यते जींका लिंगकैविषै कहींकारणांसूं वात लोहीका कोपसूं छिद्रघणां पडिजाय वेंकैसतपोतक सूकरोग कहिजे १२ अथ त्वक्पाकसूकरोगको लक्षणलि० जींकी इंद्री वायपित्तक फकरिकै पकिजाय अर ऊठे दाहहोय आवे अर पीडासूं सरीरमैं जुरहोय आवै तीनै त्वक्पाकसूकरोग कहिजे १३ अथ सोणितार्बुदसूकरोगको लक्षणलिष्यते. जींकी इंद्रीविषै कालीलाल फुणसी होय आवे अर ऊठेपीडहोय आवे तीनै शोणितार्बुदसूकरोग कहिजे १४ अथ मांसार्बुदसूकरोगको लक्षणलिष्यते. जींकीइंद्रीपर कठण फुणसीहोय सो मांसार्बुद कहिजै. १५ अथ मांसपाक रो

---

* उपदंस महारोगछै जीनै लौकीकमैं गरमीको आजार कहैछै. गरमीकोरोग महाखराब छै. ऊपर उपदंसरोगको निदानमैं पत्र ३१८ ओली ८ मैं लिषीछै. ईरोगकी उत्पत्तिघणी षरीतो- स्त्रियांकाप्रसंगसूं होयछै. रोगलीस्त्री कुत्सितपुरुष. यांमैं यो रोगव्यभिचारका घणां प्रसंगसूं होयछै. अरु यारोगवालो सरमसूं पहली तो कहैन्नहीं. पछै ईरोगकी वृद्धि हुवासूं जाणो कठिणछै. वास्तै वैद्यनैं जलदी कहैतौ आराम होयं.

गको लक्षणलि० जींकीइंद्रीको मांस विपरिजाय अर ऊठेपीडय
णीहोय सो ओ सर्वदोपका कोपकोछै. वेनै मांसपाककहिजै १६
अथ विद्रधीसूकरोगको लक्षणलि० जींकालिंगकेंविषै सन्निपात
काकोपसूं फुणस्यां ऊठे वेनैविद्रधीसूकरोग कहिजै १७ अथ तिल
कालकसूकरोगको लक्षणलि० जींकी इंद्रीविषै काली अर नाना
प्रकारका रंगनैलीयां अर विसनैलीयां ऐसी फुणस्यां होय अर वे
फुणस्यां पकिवालागिजाय अर ज्यांमै राधिपडै इंद्रीगलिजाय या
सन्निपातका कोपसूं होयछै. ईनै तिलकालक सूकरोगकहिजै १८
अथ सूकरोगको असाध्यलक्षण लिप्यते. मांसार्बुद १ मांसपाक
२ विद्रधी ३ तिलकालक ४ येच्यारि आछ्या नहींहोय १ अथ
सूकरोगका जतनलि० अठाराहीसूकरोगांकाविषनैं दूरिकरिवावा
ला जतनकीजै १ अथवा लिंगेंद्रीको जोकांसूं दुष्टलोहीकढाय ना
षिजैतौ सूकरोग जाय २ अथवा इंद्रीनै आछ्याजुलाबदीयां सूक
रोगजाय ३ अथवा लघु भोजनासूं सूकरोगजाय ४ अथवा त्रि
फलाका काढासूं गूगल षायतौ सूकरोगजाय ५ आछीऔषधांका
लेपांसूं सेकवासूं सूकरोगजाय ६ सीतल जतनासूं सूकरोगजाय.
७ अथवा दारुहलद तुलसी महलोठी धूमसौं यामै तेलनाषि प
कावै ये औषदि सीजिजाय तदि ईतेलको मर्दन करैतौ सूकरोग
जाय ८ अथवा परैटीको तेलकरिकै मर्दन करैतौ सूकरोगजाय ९
येसर्व संग्रहमैंलिष्याछै. इति सूकरोगकीउत्पत्ति लक्षण जतनसं
पूर्ण. अथ कुष्ठकहिजै कोढकी उत्पत्ति लक्षण जतनलि० विरुद्ध अ
न्नपानका षावापीवासूं पतलीचीकणी भारी ये जोवस्त त्यांका षा
वासूं वमनका वेगकारोकिवासूं मलमूत्रका वेगका रोकिवासूं घणा

न. टी. सूकरोग अठाराजातको लिष्योछै. जीमैं जुदाजुदा लक्षणामुजब जाणज्यो. अरसूकरोगीनैं परेज. अथवा बदपरेजछै. सोउपदंसकारोगमैं लिष्यामुजब जाणज्यो. अरक र्तमरोगछै. कारण. सरीरमैं कमकुवतकैवास्तै कुवत आवानैं विपरीत उपावकरै जींकै होयछै.

अग्निकातपिवासूं घणा भोजनका करिवासूं सीतउष्णका नहीं गि
णवासूं तावडाका रहिवासूं श्रमका करिवासूं भयका लागिवासूं अ
रतावडोभय श्रमयांसूं दूषीहुवोजो पुरुष अर ततकाल याऊपरि
सीतल पाणीपीवे तींकारणांसूं अर अजीर्णमैं भोजनकरै जीसूं अर
वमन जुलाबनै आदिलेर ज्यांमै कुपथ्यकरै ज्यांसूं नवीन जलका
पीवासूं दहीं मछलीषावासूं घणालूणका षावासूं घणीषटाईका षा
वासूं अर उडदमुली पीस्योअन्न तिल हलद गुड यांका घणां षा
वासूं दिनका सोवासूं ब्राह्मणका सरापसूं और अनेक प्रकारका
घणा षावासूं घणा स्त्रीसंगसूं और अनेक प्रकारका पापकरिवासूं
मनुष्यांकै वायपित्त कफहैसो दुष्ट हुवाथका अर सातूधात दुष्ट हु
ईथकी वेकासरीरकालोहीनें मांसनें वेंका सरीरका बलनें दूषित
करै. अर अठारा १८ प्रकारका कोढानें ये कारण यानै प्रगट क
रैछे अथ अठारा प्रकारकाकोढत्यांकानाम लि० कापाल १ उदंबर
२ मंडल ३ रिक्षजिव्हं ४ पुंडरीक ५ सिध्माकहीजैविभूती ६ का
कारण ७ एककुष्ठ ८ गजचर्म ९ चर्मदल १० किटिभ ११ वैंप्या
दिक १२ अलस १३ दाद १४ पाव १५ विस्फोटक १६ सता
रू १७ विचर्चिका १८ याअठारांमध्ये ७ महाकुष्ठकापाल १ उ
दंबर २ मंडल ३ सिध्माविभूती ४ काकारण ५ पुंडरीक ६ रिक्ष
जिव्हं ७ अरइग्यारा ११ साधारण अथ कुष्ठरोगको पूर्वरूपलि०
पहलीव्रणहोय वै व्रण कौमलहोय अथवा षरधरोज्यांको स्पर्श
होय अथवा वे व्रणलूषा होय अथवा वाव्रणांमैं पसेव आवै अ
थवा तावडामैं पसेव आवै नही अथवा व्रणकोवर्ण औरसो होय
वांव्रणांमैं दाहहोय वांमैं षुजालि आवै वात्वचा सोय जाय वांव्र

न. टी. सतपोतकसूकरोगछै. सोइंद्रीउपरमालिस. मट्टी. मल्हिम. इत्यादिक घणा उग्रउपा
वकरै ज्यांसौं गुण आवणोतो घणो मुसकलछै. परंतु सरीरमैं इंद्रीविगडकरचांदी घणीपडै
पछै छेद्रहोयकरघणाछेद्रवधै. जीनै शतपोतक कहिजैछै.

णांमें पीडाहोय वे व्रण ऊंचो होय वांव्रणांमें सूल घणा होय अर तत्कालवांकी उत्पत्ति होय अरघणादिनातांई रहे अरकुपथ्यतो थोडो करे अरकुपथ्यको कोप घणो होय अर वाने हुवांरोमांच होवोकरै अर वामे लोहीनीसरै येजीमें लक्षणहोय तदिजाणिजे ईके कोढ होसी. १ अथकोढकोसामान्यलक्षणलि० पूर्व जन्मका पापसेती मनुष्याकी बुद्धि हैसो विकुर्वित हुईथकी कुपथ्य करै पाछे वाकुप थ्यांसूं कोपकूं प्राप्ति हुवोजोवाय पित्तकफसो सरीरकी नसांमें प्राप्तिहोय अर सरीरकीत्वचानें अर सरीरका लोहीनें अर मांसनें दूषित करै अर सरीरकी त्वचाकोरूप औरसोही करदेछे. तीनें वैद्यहैसो कोढकहेछे. १ अर वायसरीरमें घणो कोपकरै तदि कापाल कुष्ठनें पैदाकरैछे. सरीरमें घणो कफ करै तदि कापालकुष्ठनें पैदा करैछे. सरीरमें पित्तकोपकूं प्राप्ति होय तदि औदुंबर कोढनेंपैदाक रैछे. सरीरमें कफकोपकूं प्राप्ति होय तदिमंडल नाम कोढकूं करैछे अरवायपित्त सरीरमें कोपकूं प्राप्तिहुवाथका विवचीनामकोढनें अ ररिक्षजिव्हनाम कोढनें पैदाकरैछे. अर वायकफसरीरमें कोपकूं प्राप्तिहुवाथकाचर्म कुष्ठनें कीटिभकुष्ठनें सिध्मानें अलसकुष्ठनें वे ग्यादिकाकुष्ठनें पैदाकरैछे. पित्तकफसरीरमें कोपकूं प्राप्ति हुवाथका दाहनें सतारुषीनामकोढनें पुंडरीककोढनें विस्फोटककोढनें. पां चनें चर्मदलकोढनें पैदाकरैछे साराहीवायपित्तकफसरीरमें कोपकूं प्राप्त हुवाथकाकारणनामकोढनें पैदाकरैछे. १ अथ सातमहाकुष्ठके मध्यकापालिककोढको लक्षण लिख्यते जींकासरीरकीत्वचा काली अरलाल अर जागां जागां फाटीअरलूषी अरकठोर अरसूक्ष्महोय अरवेमें पीडघणीहोय वेकोढनें वैद्यकापालनामकहैछे याकोढविस

न. टी. जोमनुष्य अज्ञानतासौं तिलो. तथापट्टी वगैरै करैछै सोपाछैसौंजीनें घणो अंदे सोकरणोपडेछै. कारण औषधीकीतेजीसोनसांसावचेतीहोयतो अल्पकालगुणकरै. अरपेटमें यथोक्त औषधी लेवासौं पूर्ण गुणकरैछै. इतिध्यानमैलेणी.

मछै दोहोरोजाय १ अथसातमहाकुष्ठमध्ये औदुंबरछैतींको लक्षण लिष्यते जींकासरीरकीत्वचामैं दाहघणो होय अरललाईघणीहोय अर षुजालघणीचालै रोमरोममैं अररोमपीलाहोय अरसरीरकी त्वचा गुलरकापक्याफलसिरीसी होयतीनैं औदुंबरकोढकहिजे २ अथ महाकुष्ठामैं मंडलकोढको लक्षण लिष्यते जींकी त्वचासुपेद अरलालहोय अरवास्थिररहै अरचीकणी होय अर ऊंची होयअर आली रहवोकरैईनै वैद्यमंडलनामकोढकहैछै ३ अथ सिध्मानामवि भूतीकोढको लक्षण लिष्यते जीकीत्वचासुपेदतांबासिरीसीहोय अर त्वचासूक्ष्महोय अरवेत्वचामैषाजिआवैअरत्वचामिहीमिहीउतरती जाय अरवाविभूती मुष्यहियामैंघणीहोयधीयाकाफूलसिरीसीतीनै वैद्यसिध्मानाम विभूतिकोढकहैछै ४ अथमहाकुष्ठमध्येकाकारणना मकोढतींकोलक्षणलिष्यते जींकी त्वचाचर्मसिरीसीहोय विचमैकाली अंतमैंलालऐसीहोय अरवापकै नहीं जीमैपीडघणी होयईनैवैद्यका कारण नामकोढकहैछै योसन्निपातका कोपसूं उपजैछै यो आछ्यो होय नहीं. ५

अथमहाकुष्ठमध्येपुंडरीकनामकोढ तींकोल० लि० जींकी त्वचा सुपेदललाईनैलीयांकमलकीपाषंडीसिरीसीहोय योकफकाकोपसूंहो यछै. ईनैवैद्यपुंडरीकनामकहैछै. ६ अथ रिक्षजिव्ह नामकोढतींको लक्षण लिष्यते जींकी त्वचा रक्तपर्यंत अंतमैलालहोय जीमै काली भीहोयतीनै रिक्षजिव्हनामकोढकहैछै ७ अथग्याराछुद्रकोढछै ती मध्ये एक कुष्ठनामकोढतींको लक्षण लिष्यते जींकी त्वचामैंपसेव नहीं आवै अर वडो जींकोस्थानहोय मछली काटूकसिरीसोहोय

* संसारमैं कोढरोगमहादुषदाई औरनिंदकछै. घणामोठापापांसूं होयछै. परंतु साध्यतो ११. ग्याराछै. सोसाधारणछै. ज्यांकोषुलासोपानै ३२४ मैंलिष्योछै. औवाकीअठरामैं सात कोढछै. सोअसाध्यछै. बडाकष्टदाईछै. निंदकछै. ज्यांकै वास्तै यांग्रंथमैं मोठामोठारसलिष्या छै. औरदान. पुण्य. जप. होमादिक. गुरु ब्राह्मणसेवा इत्यादिउपावसत्यछै.

तीनैं एककुष्ठनामकोढकहेंछे. १ अथ गजचरमकोढको लक्षण लि० हाथीकी चर्मसिरीसी जींकी त्वचा जाडी होय तीनें गजचर्म कोढक हिजे २ अथ चर्मदलकोढको लक्षण लिप्यते जींकी त्वचा सूलनें लीयांलालहोय अरजीमें पाजिचालें अरजीमें फाट्यासाहोय अर जींका हाथकास्पर्शनें सहसकैनही तीनें चर्मदलकोढकहिजें ३ अथ विचर्चिकाकोढको लक्षण लिप्यते जींकी त्वचामें फुणस्यां पाजनें लीयां होय अर फुणस्यांकाली होय अरज्यां फुणस्यांमें चेपनी सरें याहाथ पगांमें होयछे तीनें विचर्चिका नाम कोढ कहिजें ४ अथ पामानामपांवकोढको लक्षण लिप्यते जींकासरीरकें छोटी छोटी अरघणी फुणस्यांहोय अरजामें चेपनीसरें अर जामेंपाज आवें अर लालफुणस्यां होय अरदाहहोयतीनें पामानाम पांवको कोढ कहिजें ५ अथ दादनाम कोढको लक्षण लिप्यते जीमेंपाजि आवें अर लालफुणस्यां होय अर त्वचासूं ऊंची होय येलक्षणजीमें होय तीनें दादनाम कोढकहिजें ६ अथ दादकोभेद कछदादकोढ तींकोलक्षण लिप्यते जींका हाथ पगांकें अथवा कांछमें ढूंगाकें जो फुणस्यां होय जीमें घणो दाहहोय तीनें कछदादकोढ कहिजें ७ अथविस्फोटकनाम कोढको लक्षण लिप्यते जींकी त्वचामें फोडा काला अर लाल अर छोटा होयतीनें विस्फोटक नाम कोढ कहिजें ८ अथ किटीभनाम कोढको लक्षण लिप्यते जींकी त्वचामें सूका ब्रणकास्थानकीसीनांई कालापरधरा कठोर ज्यांकों स्पर्श होय तीनें किटिभनाम कोढकहिजें ९ अथ अलसकनाम कोढको

न. टी. अष्टदशकुष्ठछै. सो शरीमैं सप्तधातुगतछै. जीमैं उत्तरोत्तर बलावान समझणो चाहियें. जैसै प्रथमचर्मसैं आदिलेकरउत्तरउत्तरनामसरीरमैं त्वचासैं रुधिरमैं रुधिरसैंमांसमैं. ऐसै उत्तरसैं उत्तर बलवान होतो जायछै. असैठेट मज्जाअरुशुक्र तांईपहोंछो. ज्यूं असाध्य होतो जायछै. प्रथम चर्ममैंछै. सोसाध्य चर्म. रुधिरमैंछै सोभीसाध्य. अरुमांसमैं मेदमैं. अस्थीमैं तांईकष्टसाध्यछै. अरु महाअस्थिमज्जा शुक्रयामैं पहुंचैतौ असाध्य होयछै.

लक्षण लिष्यते जींकी त्वचामैंवडी फुणस्या ललाईनैलीयांहोयजीमैं षाजिआवै तीनै अलसनामकोढकहिजे. १० अथसतारूनाम कोढको लक्षणलिष्यते. जींकीत्वचामैं फुणस्यां लाल काली दाहनैलीयां होय तीनै सतारुनाम कोढकहिजै. ११ येअठारानाम कोढतो कह्या अथसरीरकी सातुधातांमैं प्राप्तहुवो जो कोढ त्यांका जुदा जुदालक्षण लिष्यते. अथ रसधातमैं प्राप्तहुवो जोकोढतींकोलक्षण लिष्यते. त्वचामैंस्थितजोकोढ तींकीत्वचाकोस्वरूप औरसोहोय अर त्वचारूपीहोय अर त्वचा सोय जाय रोमांच रहवो करै पसेव घणोआवै. येजीमैलक्षण होयतदि रसधातमैं प्राप्ति हुवोकोढ जाणिजे १ अथ रुधिरमैं प्राप्तहुवो जोकोढ तींको लक्षण लिष्यते जीमैं षाजि आवै अरराधिनीसरै तदिजाणिजे लोहीमैं प्राप्त हुवोकोढछै २ अथ मांसमैं प्राप्त हुवो कोढतींकोलक्षणलिष्यते ओकोढपुष्टघणोहोय अर मूंढो घणोसूकै अरफुणस्यां कठोरहोय अर वामैंपीड होय येलक्षणहोयतो मांसमैं प्राप्तहुवोकोढ जाणिजै ३ अथ मेदमैं प्राप्तहुवोजोकोढ तींको लक्षणलिष्यते हाडांकोनासहोयजायकुहणी आयरहे चाल्यो जायनहीं सर्वअंग टूटिवा लागि जाय थोडीचोट सर्वत्र फैलिजाय मूंढोसूकै. फुणस्यां कठोर होय अर वामैं पीडहोय. येजीमै लक्षणहोय तींनैं मेदमैं प्राप्तहुवो कोढजाणिजै. ४ अथ हाड अर मींजीमैं प्राप्त हुवो जोकोढ तींको लक्षण लिष्यते. नाकगलिजाय. नेत्र लाल होय जाय. अर वा व्रणांमैं कृमीपडिजाय कंठकोस्वर घांघो होय जाय अर व्रणांमैं पीडहोय तदि जाणिजै हा

---

* शरीरमैं अनेक प्रकारकारोगछै. ज्यांकी जुदी जुदी प्रवर्तिकछै. परंतु घणारोगतो वंसपरंपरासूंचालैछै. घणारोगतो उडकर लागैछै घणांरोग वात पित्त, कफकी. प्रकृतिका विगडवासूं होयछै षाज पांव. नेत्रदूषणा. इत्यादिक उडकर लागैछै. गलतकोड, कोडमहाअसाध्य. क्षयी भगंदर वंसपरंपरासूं चाल्या आवैछै. जींवास्तै दान पुन्य जपादिक श्रेष्ठछै. गलतकुष्टी पिताका प्रेसकर्म करणेवाला पुत्रकौं कुष्ठहोयछै.

डमें अर मींजीमें प्राप्तहुवो कोढछे. ६ अथ वीर्यमें प्राप्त हुवोजो कोढ तींको लक्षण लिप्यते तींका मातापिताका वीर्यमें कोढको दोस घणोहोय वाका हुवाजो बेटा बेटीसोभी कोढीहीहोय. ७ अथ कोढ को साध्यासाध्य लक्षणलिप्यते. कोढवाय कफको होय अर त्वचा लोहीमांसमै रहतो होय सोतो साध्य जाणिजे. अर कोढमेदमे जाय प्राप्तहोय अर दोय दोसको होयसो जाप्य जाणिजे अर कोढ मीं जीमें जाय प्राप्तहोय अर कृमिपडि जाय अर दाह होय आवे अर मंदाग्निहोयजाय अर त्रिदोसको होयसो कोढ असाध्य जा णिजे. अर शुक्रमैप्राप्त हुवोजोकोढ सोभी असाध्य जाणिजे १ अथ कोढको असाध्य लक्षण और लिप्यते कोढ विपरि जाय अर चूबालागिजाय अर जींको कंठस्वर घांघो पडिजाय अर वेनै वम नविरेचन कटिकचादेनहीं इसा पुरुपनें कोढ मारिनापै. १ अथ कुष्ठको भेद एक श्वित्रीभीछे. तींकीउत्पत्ति लक्षण लिप्यते. जोको ढकी उत्पत्तिसोही स्वित्रीकी उत्पत्ति स्वित्रीलाल होय अर चुवे कोयेनहीं कोढचुवें ईमैयो भेदअरस्वित्रीकोभेद येककालासछे. यो लालहोयछे पुनः स्वित्रीदोय प्रकारको एक तोवायपित्तकफसूं उपज्यौ अरएक व्रणसूं उपज्यौ अथश्वित्रीकोढको साध्यासाध्य लक्षण लिप्यते मिहीहोय कालावालामै होय एकदोसकोहोय न वीन उपज्यौ होयनहीं अग्निसूं उपज्यौहोय ईसोश्वित्रीकोढ साध्य जाणिजे. इसे और लक्षण होयसो श्वित्रीरोग असाध्य जाणिजे.

न. टी. जीमै विपरीत हुवोथकोगलत् क्रिमी पडजाय. विषरिजाय. दुर्गंधिआवै. सोमहा असाध्यहोयछै. सोपूर्वजन्मादिकांका पातकांसूं प्राप्ति होयछै. ज्यांनैनिवृत्ति करण वास्तै प्रा यश्चित्त श्रीहरी भजनछै. जैसैसवाई जयपूरकाप्रांतदेस ढुंढाडछै. जीमैं डिग्गीनामा एकमोठो स्वस्थानछै. जीमैएकश्रीकल्याणरायजी महाराजका मंदिरछै. जैठैकोई कुष्ठीमनुष्यजायछै. अ रुऊठैनगरमैं भीष मांगकरषायछै. नित्यदर्शनकरै. अरुस्वाभिमानछोडकर अतिदीनहोयकरर हैछै. संपदायुक्त होयतो.

अथ कुष्ठका मिलापथकी कुष्ठजैसे और मनुष्यकै जायलागै तैसै ही औरभी येरोग और पुरुषांकैभी जाय लागैछै. यां रोगांवालाको प्रसंग करैतो अथवा गात्रसूं गात्र मिलावैतो अथवा एकठां भोजन करैतो अथवा एकठां सोवैतो अथवा आपसमैं वस्त्रपहरैतो अथवा आपसमैं कहींवस्तको लेपकरैतो इतनारोग उडि औरकै जाय लागै. सोरोग लिषूंछूं. सोस १ कोढ २ ज्वर ३ राजरोग ४ आंषि दूषणी ५ सीतलानै ६ आदिलेर येरोग उडिजाय लागैछै. पुनःकोढको असाध्य लक्षणलिष्यते गुह्यस्थानमै होय हाथमैहोय होठांमै होय सोकोढ जायनहीं. अथ कोढरोगका जतनलिष्यते हरडैकीछालि कणगचकीजड सिरस्यूं हलद वावची सींधोलूण वायविडंग येसर्व बराबरिले त्यांनै गोमूतमै मिहीवांटि कोढकै लेपकरैतो कोढदूरिहोय. १ इति पथ्यादिलेप अथवा वावचीनै मिहीवांटि आदाका रसकीवेकैपुटदे पाछै कोढकै उवटणोकरैतो कोढ जाय २ अथवा ब्रह्माजी मार्कंडेयजीनै वतायो जोप्रयोग सो कोढनै आदिलेर जो औरभीरोग त्यांका दूरिकरिवावास्तैसो हूं ऐठैलिषूंछूं. नींबका फूलांकै समैतो नींबका फूललै अर नींबका फलांकै समैत नींबका फलले अर नींबकी वकलले नींबकीजडले अर नींबका पानले योनींबको पंचांग नवोले अर दोन्यूं हलद त्रिफला सूंठि कालीमिरचि पीपलि ब्राह्मीं गोषरू सोध्यो भिलावा चित्रक वायविडंग सार वाराहीकंद गिलवै वावची किरमालो मिश्री कूठ इंद्रजव पाठ षैरसार येबराबरिले यांनै मिहीवांटि नागरमोथाका रसकी यांकै पुटदे अर नींबका पंचांगकी यांकै पुट ७ दे पाछै भांगराका रसकी यांकै पुट ७ दे पाछै यांनै छाया सुकाय मिहीचूर्ण करिले पाछै आछ्यौदिन देषिकोढ वालानै जुलाबदे सहतकैसाथि अथवा षैरसालका काढाकैसाथिपरभातकासमै गरम पाणीसूंले प्रमाण अ

धेलासूं पाछे. क्योंवधतोजाय टकाभरतांई ऊपरहलको भोजनकरै घृतसमेततो अतनारोगांनें दूरिकरै व्योचीनें उद्ंबरनें पुंडरीकनें कापालनें दाहनें किटीभनें अलसकनें सत्तारुनें विस्फोटकनें येसारी जातिका कोढछे त्यांनें विसर्परोगनें इतना रोगांनें यो निंबपंच अवलेह दूरिकरैछे. ३ इतिपंचनिंबअवलेह अथवा वावची टका ५ भर सोध्योगूगल टका ५ भर सोधी सोनासुपी टका ३ सार टका २ भर गोरषमुंडी टका ३ भर कणगचटका १ भर पैरसार टका ४ गिलवे टका २ निसोत टका २ नागरमोथो टका २ वायविडंग टका १ हलद टका १ तज टका १ नींबको पंचांगटका ५ त्रिफला टका ३ चित्रक टका २ भरयां सर्वनें मिहीवांटि टंक २ प्रमाणसहत घृतकैसाथि गोलीकरै पाछे प्रभातही गोली १ गोमूतसूं लेतो कोढमात्रनें वातरक्तनें पांडुरोगनें उदररोगनें प्रमेहनें गोलानें यांरोगांनें यो दूरिकरैछे. अर बूढापणानें योदूरिकरैछे जुवानपणानें करैछे. ४ इतिस्वायंभुवोगूगल अथवा चित्रक त्रिफला सूंठि मिरचि पीपलि जीरो कलौंजी वच सींधोलूण अतीस चव्य कूठ इलायची जवषार वायविडंग अजमोद नागरमोथो देवदार ये बराबरिले यांसर्वकी बराबरि सोध्योगूगल ले पाछे यांसर्वन मिही वांटि येकजीवकरि घृत सेतीपाछे मासाच्यारि भरकी गोलीकरै पाछेगोली १ भोजनकै समै षायतो कोढमात्रनें कृमिनें व्रणमात्रनें संग्रहणीनें ववासीरनें मूंढाकारोगनें ग्रध्रसीनें गोलानें यांसारांरोगांनें योदूरिकरैछे. इतिकैसोर गूगलः अथवा सोध्योभिलावासेर

* भिलावानामसंस्कृतमैं भल्लातकहैछै. मराठीमैं बिव्वाकहैछै. गुजरातीमैं भिलामाकहैछै. रुधिरकाविगाडानैं घणाश्रेष्ठछै. गलतकोढनैंमिटावैछै. एकहकीमकीकितावमैंलिपीछै. भिलावापाव १. तिलकालापाव १. पुराषाणी अजवायणपाव १. तीनचीजबारीकपीसगोली सुपारीप्रमाणकी बांधणी गोली १ प्रातः गोली १ संध्यादिन ४० तांई पथ्यचीणाकीरोटीदेवै पाछै षारो सर्व टालै शरीरशुद्धहोय. कोढकोरोग जाय. यालिषं

२ पाणीसेर १६ मैंऔटावै वा औटतांमे गिलवेसेर २ कूटिनाषै पाछै ईंपाणीको चतुर्थांश आयरहै तदिउतारि छाणिलै पाछै यांमैं गऊको घृतसेर १ नाषै गऊको दूधसेर ४ ईंमें नाषै मिश्रीसेर ऽ१ ईंमैनाषै सहतसेर ऽ॥ ईंमैनाषै पाछै ईनैं मधुरी आंचसूं पकावै ये सर्व जाडीहोय जाय तदिईनैं आंचसूं उतारि ईंमैं येऔषदि नाषै वावची टंक २ पवाडकाबीज टंक २ नींबकीछालि टंक २ हरडैकी छालि टंक २ आंवला टंक २ सींधोलूण टंक २ नागरमोथो टंक २ इलायची टंक २ नागकेसरि टंक २ पित्तपापडो टंक २ पत्रज टंक २ नेत्रवालो टंक २ षस टंक २ चंदन टंक २ गोषरू टंक २ कचूर टंक २ रक्तचंदन टंक २ येसारी औषदि मिहीवांटि मिला वा उगैरैका वे जाडारसमैं येनाषि येकजीवकरै ईनैटका येकभर प्र भातही जलकैसाथि रोजीनालेतौ सर्वकुष्ठमात्रनैं वातरक्तनैं ववासी रनैं योदूरिकरै ईअमृतभल्लातकको षावावालो इतनीवस्त करैनहीं षेदकरैनहीं तावडेरहैनही अग्निकनै जायनहीं षटाई षायनहीं मांस दहीं षायनहीं तेल लगावैनहीं मार्ग चालैनहीं. ६

इति अमृतभल्लातकावलेह अथवा नींबकीवकल गोरीसर मंजी ठ कुटकी त्रायमाण त्रिफला. नागरमोथो पित्तपापडो. वावची ज वासो वच षैरषार रक्तचंदन पाठ सूंठि भाडंगी अरडूसो चिरायतो कुडाकीछालि निसोत इंद्रायणकीजड मूर्वा वायविडंग इंद्रजव चि त्रक मानपात गिलवै बकायण पटोल दोन्यूंहलद पीपलि किरमा लाकीगिरि सतोन्यू वेतसोधी चिरमी कलहारीजडीकी जड रास्ना साठीकीजड दांत्युणी सोध्या जमालगोटा भांगरो कटसेलो. अं कोट साषोटक येसारी औषदि टका २ भर लेत्यांनैं जौकूटकरि से

न. टी. तोभी यारीत करैछै. च्यारमास तथा छ मास सेवन करैतौ कुष्ठ जायछै. वापरमे श्वरीशक्तिछै. अरु महाभल्लातका अवलेह लिष्याछै. जीमैं सोध्याभिलावासेर ४ सोलासेर पाणीमैं औटायच्यार ४ सेरपाणी राषणो.

रसोला १६ चक्कापाणीमें औटावै तींको चतुर्थांश आयरहै. तदि ईनै उतारि छाणिजे पाछै भिलावासोध्यासेर ४ सोलासेरपाणीमें औटाय ईको चतुर्थांस जुदोरापै पाछै यां दोन्यांनें एकटामिलाय ले पाछै यां दोन्यांकारसमें गुड टका १०० भरकी चासणीमें ये औषदिनापै सूंठि टका १ मिरचि टका १ पीपलि टका १ त्रिफला टका ३ नागरमोथो टका १ वायविडंग टका १ चित्रक टका १ सींधोलूण टका १ चंदन टका १ कूठ टका १ अजमोद्‌ज टका १ सींधोलूण टका १ पत्रज टका १ नागकेसरी टका १ इलायची टका १ येसारी औषदि मिहीवांटि अवलेहमै नापि ईकोयेकजीव करै पाछै आछ्यो दिनदेषि टका २ भर रोजीना ईनै पायतौ सर्व कोढमात्रनैं ववासीरनैं व्रणमात्रनैं कृमिरोगनैं रक्तपित्तनैं उदावर्तनैं कासनैं सासनैं भगंदरनैं यांसारां रोगांनैं योदूरिकरैछै. अर जुवान पणानैं करैछै सरीरकी परमकांतिनैं करैछै भूषनिपट घणी वधावैछै ईकाषावावालो षटाईउगैरै कुपथ्य करैनहीं गरमवस्त षा यनही इतिमहाभल्लातकअवलेह ७ अथवा मजीठ त्रिफला कुटकी वच दारुहलद नींबकीछालि गिलवै यांनैं वरावरिले यांनैं जौकूट करि टंक ५ को काढोरोजीना लेतौ कोढमात्रनैं वातरक्तनै विसर्पनैं विस्फोटकनैं यो दूरिकरैछै अभ्यासकरयोथको इतिलघुमंजीष्टादिकाथः ८ अथवा मजीठ वांवची पवाड नींबकीछालि हरडैकीछालि हलद आंवला अरडूसो सतावरि परैटी गंगेरणीकीछालि महलौठी महुवो. कट्याली पटोल षस गिलवै रक्तचंदन येसर्व वराबरिले यांनैं जौकूटकरि टंक ५ भरको काढो करिदेतौ सर्वकुष्ठमात्रनैं वातरक्तनैं. योदूरिकरैछै. इतिमध्यमंजिष्ठादिकाथः अथवा मजीठ

न. टी. भावप्रकासमैं सहस्र १ भिलावालिख्याछै. सो हजारभिलावाको उजनसेर ४ आसरे होयछै. सोयो औषधी कुसल वैद्यनैं करणी- योग्यछै. हरएककोईभी करसीजीनैं महादोष लागसी.

इंद्रजव गिलवै नागरमोथो वच सूंठि हलद दोन्यूं कठ्याली नींबकी छालि पटोल कूठ कुटकी भाडंगी वायविडंग चित्रक मूर्वा देवदारु जलभांगरो पीपलि त्रायमाण पाठ सतावरी षेरसार विजैषार त्रिफला चिरायतो वकायण किरमालाकीगिरि निसोत वावची रक्तचंदन वरण्यो दांत्युणी साषोट अरडूसो पित्तपापडो गौरीसर अतीस जवासो इंद्रायणकीजड येसर्व बराबरिलै यांनैं जौकूटकरि टंक ५ पांचको काढो रोजीना करिदेतो अठरा प्रकारका कोढमात्रनैं वातरक्तनैं लोहीकाविकारमात्रनैं विसर्परोगनैं त्वचाकासून्यपणानैं यां सारांरोगांनैं यो दूरिकरैछै. १०

इतिबृहन्मंजिष्ठादिक्काथ अथवा कालीमिरचि निसोत नागरमोथो हरताल देवदारु दोन्यूंहलद छड कूट रक्तचंदन इंद्रायणकीजड कलौंजी आककोदूध गोवरकोरस ये सारी औषदि अधेलाअधेला भरिलै सींगीमोहरोयईसा १ भरले कडवोतेलसेर १ लेपाणीसेर ४ गोमूतसेर ८ पाछै यांसारांनै मधुरी आंचसूं औटावै पाछै येसवैजलउगैरे बलिजाय तेलमात्र आयरहै तदिईनै उतारिलै पाछै ईंको मर्दनकरैतो सर्व कुष्ठमात्रनैं योदूरि करैछै. ११ इतिलघुमरीच्यादितैलम् अथवा कालीमिरचि निसोत दांत्युणी आककोदूध गोवर गोरस देवदार दोन्यूंहलद छड कूठ रक्तचंदन इंद्रायणकी जड कलौंजी हरताल मैणसिल कनीरकीजड चित्रक कलहारीकीजड नागरमोथो वायविडंग पवाड सिरसकीजड कुडाकीछालि नींबकी छालि सतोन्याकीछालि गिलवै थोहरीकोदूध किरमालाकीगिरि षैरसार वावची वच मालकांगणी येसर्व औषदि टकाटका भरिलै सींगीमोहरो टका २ भरले कडवो तेलसेर ४ ले गोमूत सेर १६

न. टी. कोढरोगका जतनमैं लघुमंजिष्ठादिकाथ. मध्यमंजिष्ठादिकाथ बृहन्मंजिष्ठादि काथछै. अरु लघुमरीच्यादिकाथ. महामरीच्यादिकाथछै. स्रो कुसलक्रियासूं करसी तो महा रोगादिकआराम होसी.

ले यांसारांनैं एकठाचढाय मधुरी आंचसूं पकावै पाछें सर्व गोमूत उगैरे बलिजाय तेलमात्र आय रहै तदि उतारि छाणिले पाछें ई तेलको मर्दन करैतो सर्व कोढमात्रनैं व्रणमात्रनैं पांवनैं व्योंचीनैं दादनैं फोडांनैं सुपकीछायानैं यां रोगांनैं ईतेलको मर्दनासिरैछै. अर ईको मर्दन कख्योथको जीवनपणांनैं करैछै अरयो वाय मात्र का रोगनै मनुष्यकाघोडाका हाथी उगैरे कानै दूरि करैछै. १२ इति महामरीच्यादितैलं अथवा हरतालकापत्रचोपाले त्यांनैंचित्र ककारससूं दिन १ षरल करै वाईयांही हरतालनैं साटीकारससूं दिन १ षरलकरैपाछै ईकीटीकडी करि आछीतरै सुकावैपाछै ईहर तालनैं साटीका पंचांगका षारकेवीचिमैली चूलैचढावै ईहरतालको धूवोनिकलिवादेनही इसीतरै वेहरतालकीटिकडीनैं वेसाटीकापार कैवीचि षूब दाबिदे पाछै वेंकैनीचैमधुरी आंचदे निरंतररात्रदिनतां ई पाछै वधावणीदिन ४ तांई पाछै स्वांगसीतल हुवा वेहरतालकी टिकडीनैं वैसाटीपार माहिसूं निपट जावतासूं चतुर मनुष्यकाढै वा हरताल तोलपुरी उतरै निर्धूमहोय अर सुपेदहोय पाछै ईहरताल नैं रती २ मनुष्यषाय ईऊपरि गुडूच्यादिकको क्वाथ लेतो अठारा प्रकारका कोढनैं वातरक्तनैं उपदंसनैं फिरंगवायनैं याहरताल दूरि करैछै. अर ईहरतालको पावावालो लूण षटाई कडवोरस तावडो ये सेवे नहीं अर लूणविनानहीरयो जाय तो सींधोलूणपाय अर मीठो घणो षाय १३ इति हरतालकी विधिः इहीनैं तालकेस्वररस कहैछै. *अथवा पारो सोधीगंधक तामेस्वर सार गूगल चित्रक सि लाजित कुचीला वच अभ्रक ये सर्व बराबरिले कणगचका बीज

* ताम्रभस्मनैं तामेस्वरकहैछै. परंतु ताम्रभस्मशुद्धहोयसो गुणकरैछै. कदाचित् अशुद्ध रहींथकीं महाअवगुणकरैछै. याग्रंथमैं ताम्रभस्मक्रियातरंग २३ कहीछै. सुयथायोग्यछै; परंतु क्रियासिद्धिछै. परिक्षाकरलेणी. परिक्षासाबूत ऊतरैतो भस्मशुद्धजाणिजे. परिक्षामैं कसर होयतो भस्म अशुद्धछै.

एक औषदिसूं चौगुणाले प्रथम पारागंधककी कजलीकरै पाछै ई कजलीमैं येसारी औषदि मिलाय येकजीवकरि पाछै ईनै टंक २ सहत घृत कैसाथि रोजीना षाय ऊपरसूं चावल दूधही षायतौ गलत कोढ जाय. अर सरीरवैंको महा सुंदर कामदेवसिरीसो हो जाय ये रस षाय जितै स्त्रीसंगकरै नही १४ इतिगलतकुष्टादि रसः अथ विभूतिको जतन लिष्यते कूठ मूलीकाबीज सिरस्यूं केसरि हलद यांनै सिरसका जल करि पकाय लेपकरैतौ घणादिनकी भी विभूति जातीरहै १५ अथवा केलीकोषार हलद दारुहलद मुलीकाबीज हरताल देवदारु संषकोचून ये बराबरिले यांनै नागरवेलका पानांकारसमै मिहीवांटि लेपकरैतौ विभूति दूरिहोय १६ अथ चर्मदलकोढको जतन लिष्यते आमचूर ईमै किंचित् सींधो लूणजीसूं जलसूं तांबाकापात्रमैं तांबाकाघोटासूं षूबपीसिवेंकैलेपकरैतौ चर्मदलकोढजाय १७ अथ पांवको जतन लिष्यते जीरो टका १ सिंदूरटंक ५ यांदोन्यांनैं कडवातेलमैं षूबवांटि पकाय ईको लेपकरैतौ पांव आछीहोय १८ अथवा मजीठ त्रिफला लाष कलहारीकीजड हलद आंवलासार गंधक यांनैं बराबरिलै यांनैमिहीवांटि तावडे षूब गरमकरि पाछै यांको लेपकरैतौ पांव जाय १९ अथवा पारो दोन्यूंजीरा दोन्यूंहलद कालीमिरचि सिंदूर आंवलासार गंधक मैणसिल यांनै बराबरिलै पाछै पारागंधककी कजलीकरि ई कजलीमैं येऔषदि मिहीवांटि गऊका घृतमैं दिन १ षरलकरै पाछै ईको मर्दन करैतौ पांवजाय २० अथवा पारो आंवलाषार गंधक नीलोथूथो काथ महदी षुरासाणी अजवायण मोम मालकांगणी येसारी औषदि बराबरिले पाछै पारागंधककी कजलीजुदी

न. टी. विभूतीका जतनमैं केलीकोषारलिष्योछै. सुकरणेकीविधि. केलाकापान छीलका उगैरै काठासूकायकरवानैं बालकरराषकरलेणी. पाछैवाराष्रपाणीमैं घोलकर नितारले. पाछै कडाहीमैं औटायषार जमालेवैसो.

करै अर मोमनैं घृतमैं जुदीपिघलावै ये औषदां जुदीवांटै पाछै पा
रागंधककी कजलीमैं सारी औषद्यां गऊकाघृतसूं एकठीवांटिदिन
१ तांई पाछै ईंको मर्दन करैतो पांवउगैरै लोहीका सर्व रोगजाय
२१ अथवा सोधीआंवलासार गंधक टंक २ नीलोथूथो मासा ३
यांदोन्यांनै पाणीसूं मिहीवांटि गोली १ बांधिले पाछै ईंगोलीनैं
मिहीकपडामैं बांधै पोटलीकरै यापोटली गोहांकीबाटि अलूणीमै
सेकैवाटी तीनच्यारिमैं पाछै वाटिघृतमैं चोपडिपुवावै अथवा यांको
बूरासूं चूरिमो करिषायदिन ५ तांई तौपांवउगैरै लोहीका सर्ववि
कार जाय २२ अथवा सिंधोलूण पंवाडका बीज सरस्यूं पीपलि
यांनै कांजीका पाणीमैं मिहीवांटि लेपकरैतो पुजालि दूरिहोय २३
अथ कछदादकी औषदिलि० आकका पानाको रस अर हलद
का काढाकोरस यांमै सिरस्यूंको तेल पकावै पाछै ईंतेलको मर्दन
करैतो कछदाद जाय २४ इति अर्कतैलम् अथवा मैणसिल हिरा
कसीस आंवलासार गंधक सींधोलूण सोनामुपी पथरफोडी सूंठि
पीपलि कलहारी कनीर पवाड वायविडंग चित्रक दांत्युणी नींबका
पान येसारी औषदि अधेला अधेला भरिले त्यांनै जलसूं मिही
वांटि ईका पाणीमैं कडवोतेल सेर २ दोय पकावै तींमध्ये आक
कोदूध अर थोहरीकोदूध अदपावनाषै अर ईंमै गोमूतसेर ४
नाषै पाछै यांनैं मधुरी आंचसूं पकावै येसारी [illegible] जाय तेलमात्र
आयरहै तदिईंको मर्दन करैतो असाध्यभी कछ [illegible] य पांव पु
जाल लोहीका सर्वरोग जाय २५ इति कछराक्षस [illegible] म् अथ
दादका जतनलि० कूठ वायविडंग पवाडकाबीज [illegible] सींधोलूण
सरस्यूं येबराबरिले यांनैं षटाईसूं मिहीवांटै पाछै ईं [illegible] लेपकरैतो

न. टी. अर्कतेलहैसो आकडाकापानाकोरससेर ४ हलद टका १. तेल [illegible] सूंको अधपा
वले पाछै हलदी पाणीमैं घोंटलुगदीकरै. वारसमैं मिलाय देपाछै तेल घाल [illegible] हीमैं उका
ले तेलमात्ररापणो. सो अर्कतेलहै.

दादकोढ दूरिजाय २६ अथवा दोब हरडैकीछालि सींधोल्लूण पवा डकावीज कंडीरकीछालि येबराबरिले पाछे यांनै कांजीमैं अथवा छाछीमैवांटि ईंको लेपकरैतौ दाद कछदाद जाय षाजीभीजाय २७

अथश्वित्रीनाम कोढतींको जतनलिष्यते वहेडाकीछालि हरडै कीछालि कठुंवर वावची यांको काढोलेतौ श्वित्रीनामकोढदूरिहोय २८ अथवा हरताल मैणसिल चिरमी चित्रक यांनै गोमूतमैं मिही वांटि लेपकरैतौ श्वित्रीनाम कोढदूरिहोय २९ अथवा विष्णुक्रांत सांषाहुली वावची आंवला षैरसार यांको सेवनकरै अरपथ्यमै रहै तौश्वित्री नामकोढदूरिहोय ३० येसाराजतन भावप्रकाशमैं लिष्या छे. अथवा हलद टका ८ भर गऊको घृत टका ६ भर गऊको दूध सेर ४ मिश्री टका ५० भर सूंठि टका १ भर कालीमिरचि टका १ पीपलि टका १ तज टका १ भर पत्रज टका १ भर नागकेसरी टका १ भर वायविडंग टका १ भर निसोत टका १ भर त्रिफला टका १ भर केसरी टका १ भर नागरमोथो टका १ भर पाछे यांनै मिही जुदांवांटि घृतमैं मकरोय हलदमै दूधमैं ईंकोषरोमावो करै पाछे ईंमावासमेत षांडकी चासणीकरि चासणीमैं मावो अरसारी औ षद्यां ईंमैं नाषे पाछे ईंकीगोली टका येकेक भरकी बांधे गोली १ रोजीना षायतौ कोढनैं षुजालिनैं फोडानैं दादनैं यां रोगांनैं दूरि करैछे. ३१ इतिहरिद्रषंडः अथ हरतालमारवाकी विधि. हरताल घोषी तबकियांलै तीमै दसवांहिसा सुवागाकाटूक मिलाय वेकीवा फताका कपडाकी च्यारी पुटकी पोटली करै पाछै वापोटली जंभी रीकारसकैबीचमेल्हि डोलकायंत्र करि पाछे वेकैनीचै आछीगाढी आंचदे पहरदोयकी २ औरूं औटावै पाछे इहींतरै कांजीका पाणी

न. टी. हरतालकी क्रियालिषीछै. सोतबकियालेणी. सुवर्णकापत्राजीसी जीनै विधिपूर्व कधीरजमैं बणावणी. कारण याचीजउडजायछै. ईनैघणाबुद्धिकाविचारसौं राषै सोवैद्य कुसलछै. बुद्धिवानछै.

में औटावे पाछे इहींतरे पेठाकापाणीमें औटावे पाछे इहीं तरे मू
लमें औटावे पाछे इहींतरे त्रिफलाकापाणीमें औटावे पाछे ईहर
तालनें कहींतरेकी पटाईमें धोयले पाछे ईहरतालनें छीलाकीवकल
रसमें परलकरेदिन २ रात्रिदिन पाछे ईनेतावडेसुकाय ईको गो
लोकरे पाछे ईगोलानें सरावासंपुटमें पूब जतनसूं मेलें पाछे वेस
रावाके षांमदे पाछेगजपूटदे आरणाछाणामें फुंकिदे पाछे स्वांगसी
तल होय जदि वेमाहिसूं वे हरतालका संपुटनें काढै पाछे ईसंपुट
माहिसूं वेहरतालनें काढै पाछे वेहरतालनें बकरीकादूधसेती दिन
१ षरलकरे पाछे ईको गोलोकरि औरु तावडे ईगोलानें सुकायलै
पाछे पलासकीराषसेर ४ पक्की हांडीमेंघालिवेराष केवीचिवे हरताल
गोलो मेलैषूबनिपटगाढीदाबे वाराष हांडीमें दाबि भरे मुंढातांई
पाछे वाहांडी चूल्हे चढावैनीचे आंचदेवैको धूवों नीसरवादेनही इ
सीतरे दाबि वाराष हांडीमें भरे पाछे आंचअनुक्रमसूं देमंदमंद्धे
अर निपटगाढी प्रहरबत्तीसकी ३२ पाछे ईने स्वांगसीतल हुवां
ईहरतालनें वेमाहिसूं काढै वाहरतालई माहिसूं सुपेदनीकलै निर्धूम
तोलकीपुरी पाछे ईने पुराणागुडकेसाथि रति १ पाय ईऊपरिचणा
कीरोटीसाटी चावलगऊको घृत दिन २१ येषाय ईऊपरि लूणषटा
ईषायनहींतो अठराप्रकारका कोढने वातरक्तनें फिरंगवायनें याह
रताल दूरि करैछे. ३२

इति हरताल मारणविधिः अथवा पारो टंक २ सोधीगंधक
टंक २ हरताल टंक २ मैणसिल टंक २ वावची टंक ५ धूमसो

---

* कंडूनामषाजकोछै. जीनैषरूजवी कहैछै. वडोखराबरोगछै. ईकैवास्तै अनेक औषधी छै परंतु दक्षिण हैदराबादमैं एक विद्वान् वैद्यचैनजीजत्तीछा. जीनैपूंछी. गुरासाबओपाजको रोगसाधारणछै. मनुष्यनैं हैराणघणो करैछै. सुगमउपावकहो. उत्तर. हेश्रीधर जंगलीविदामकोमगजदहींमैं पिसकरषाजकै मर्दनकरै तौ आराम होय. पछैयाऔषदी घणाकै लगाईसो विनाअडचल आराम हुवाछै.

टंक २ सिंदूर टंक २ दोन्यूं हलद टंक ५ यांसारांनैं गऊका घृत सूं पूबमिही वांटि लेपकरैतौ तावडेरहै प्रहर २ पाछै स्नान करैतौ कडूनैं दाहनैं कृमिनैं कोढनैं दिन ३ माहिदूरिकरै ३३ अथवा छी लाकीजडकी सूकी वकलटका २५ भरतींकी राषकरै तीकैवीचि चो षीहरताल तबकियां मासा २५ जतनसूं वेमैं मेलै नवीनगाटी आछी हांडीमैं दाबै पाछै वेहांडी ऊपरि सरावोदेवेनैं मूंद्या पाछैवे हांडीनैं चूल्हे चढावै पाछै वेकैंनीचै निपट गाढी अग्निबालै पहर १० तांई पाछै स्वांगसीतल हुवांवेनै वस्त्रसूं छाणिलै पाछै ईंराषनैं रती १ विनासेक्या जीराकै साथिलै जीरो मासा १ वाट्यो यां दोन्यां नैं येककरि पक्कानागरवेलीका पानांकै साथि सीतल जलसूं षाय ईंऊपरि चणाकी रोटीषाय अलूणी मंडल एक १ तांई ईंकोषावावा लो पवन तावडो षाय नहीं ईंविधिसूं रहैतौ अठारा प्रकारकाको ढनैं वातरक्तनैं व्रणमात्रनैं पिडिकानैं वातव्याधिनैं यांसारां रोगांनैं यो निश्चय दूरिकरैछै. ३४ अथ दादका जतन लिष्यते पवाडका बीज वावची सिरस्यूं तिल कूठ दोन्यूंहलद नागरमोथो येबराबरिलै यांनैं छाछिमै पूबमिही वांटि पाछै ईंको लेपकरैतौ दाद कंडू व्योंची ये सारादूरिहोय ३५ अथ कोढकादूरिहोवाको लेप नीलोथूथो सु हागो येदोन्यूं टंक २ वावची टंक ५ यांतीन्यांनैं मिहीवांटि जलभां गराका रसकीयांकै पुट ७ दे पाछै यांको लेपकरैतौ कोढजाय ३६ येसर्व जतन वैद्यरहस्यमैं लिष्याछै. अथ महा लेपलिष्यते पारो टंक १ संषकोषार टका १ आंधीझाडाकोषार टका १ तिलांकोषार टका १ साटीकोषार टका १ हरडैकोषार टका १ अरडूसाकोषार टका १ पटोलकोषार अरंडकोषार जवषार सुहागो साजी नौसा

न. टी. पाकीशुद्धहरताल असी ८० जातकी वायूनैं तथापित्तनैं, कुष्ठनै, प्रमेहनैं हरसनैं गुमावैछै. काचीरहीजोपीली रंगमैं धुवानीसरै जीमैसोवायुकरै, पित्तकरै, पंगुकरै, कुष्ठकरै इत्यादिजोकाची हरताल औगुणकरै तौ पाकी अनारको रस पावै तो दोषहरै.

दर आवलासार गंधक पांचूल्लूण कूठ सूंठि कालीमिरचि पीपलि डां सत्यांकीजड कणगचकी जड कल्हारीकीजड हल्द जमीकंद गोर षमूंडीकोपार कहुवाकोपार पीपलिकोपार राई सिरस्यूं सिंदूर सि लाजित पापडरवार कपेलो लोद थोहरीजड आककीजड नीलोथू थो चित्रक आकका पंचांगकोपार येसारीऔषदि जुदी जुदी टका टका भर लीजै पाछै यासारी औषध्यांनें मिहीवांटि एकठी गोमूत सूं ताम्रका वडापात्रमें राषै पाछै इहीमें इतनीवस्त औरनाषै भै सीकोमूत घोडाको मूत बकराकोमूत हाथीकोमूत ऊंटकोमूत नींबू कोरस जंभीरीकोरस विजोराकोरस नारंगीकोरस चणपार सहज णाकारस सातूधानाकी कांजी राईकासंजोगकीये सारीवांका अनु मानमाफिक घालै वैंको मूढोढाकिदिन २१ जावतासूं मेलिराषै. पाछै ईंकोलेपकरैतो सर्वकोढमात्र दूरिहोय अर येरोगभी ईंकालेप सूंजाय गंडमाला विसर्प ववासीर व्योंची वायका सर्वरोग महीना येक १ में येसर्वरोग जाय ३७ येरससंग्रहमें लिष्याछै. इति को ढरोगकी उत्पत्तिलक्षण जतनसंपूर्णम् इति श्रीमन्महाराजाधिराज महाराजराजराजेंद्र श्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागर नामग्रंथे भगंदर उपदंस लिंगार्सकरोग कोढयांसर्वरोगांका भेदसं युक्त उत्पत्तिलक्षणजतननिरूपणंनाम षोडशःस्तरंगः १६

१७ अथ सीतपित्त उदर्दकोढ उत्कोढ यांरोगांकी उत्पत्तिलक्षण जतनलि० सीतलपवनकास्पर्श कस्यांथकां कफ अर पवनहैसो दुष्ट होय पित्तकरिकै सहित आपका कारणकरिकै दुष्टहोय त्वचाके माहि अरवारैंवाय अर कफकरिकै सीतपित्तादिक रोगांनैं पैदाक रैछै. १ अथ सीतपित्तादिकको पूर्वरूपलिष्यते तिसलागै अरुचि

न. टी. कोढीनै पथ्यलि. गहूं लाल चावल मूग तूर मसूर. जंगली पशूको मांस तुराई कोमलवैंगण लहसण. जायफल. राई. केसर. चीणामोठ इत्यादि. अपथ्य. षाटो. षारो ती षो दहीं दूध गुड, तील उडद स्त्रीसेवन. मद्य. अम्ल इत्यादि.

होय वमनसीआवे देहमें पीडाहोय सरीर भार्योहोय नेत्रलालहो य येलक्षणहोय तदि जाणिजे सीतपित्तादिक रोगहोसी १ अथ सीतपित्त उदर्दको लक्षणलिष्यते जैसेंकीडीका काट्या दाफडहोय आवै तैसे त्वचाऊपरिदाफड घणा होय जाय अर वामें षाजिआवे अर पीडघणीहोय और छादणीहोय अर ज्वरहोय अर दाहलागिजाय तदि जाणिजे सीत पित्तछे. अर इहीनें उदर्द कहीजे वायको अधिक होयतो सीतपित्त जाणिजे कफको अधिक होयतो उदर्द जाणिजे योशशिरितुमें घणोहोयछे. १

अथ कोढउत्कोढको लक्षणलिष्यते. वमन आवतानें रोके तदि पित्तकफदुष्ट हुवाथका लाललाल घुजालिनें लियांदाफडशरीरमेंकरीदे तीनें कोढ कहिजे येथोडीवार रहे अर येही घणावार रहेतो उत्कोढ कहिजे १ अथ सीतपित्त उदर्द कोढ उत्कोढ यां रोगांका जतन लिष्यते औषद्यांसूं वमन कराय देतो सीतपित्त उदर्द दूरिहोय १ अथवा पटोल नींबकीछालि अरडूसो त्रिफला गूगल पीपलि यांको काढो देतो सीतपित्त उदर्दजाय २ अथवा जुलाबदेतो सीतपित्त उदर्द जाय ३ अथवा कडवा तेलको मर्दन करे अर सरीरनें गरमपाणीसूं धोवेतो सीतपित्त उदर्दजाय ४ अथवा त्रिफला सहतसूं पायतो सीतपित्त उदर्द जाय ५ अथवा कुटकीको जुलाबले मिश्रीका संजोगसूं तो सीतपित्त उदर्दजाय ६ अथवा गुडआंवला षाय अथवा सूंठि अजवायण कालीमिरचि पीपलि जवषार यांको चूर्ण टंक २ दिन ७ सातगरमपाणीसूं लेतो सीतपित्त उदर्द जाय ७ अथवा आदाकोरस पुराणोगुड षायतो सीतपित्त उदर्दजाय ८ अथवा अजमोद टंक ५ गुड टंक ५ यांदोन्यांनें येकठांकरि

न. टी. पित्तरोगको निदान. और औषधी तो लिषीछे. सोजाणलेसी. अरुपथ्यापथ्य लिषूंछूं. पथ्य. लाल चावल. मूंग. कुलथी गरमपाणी. पक्वनबंध इ. कुपथ्य. स्नानकरणो. पसेवलेणो. भारी जड अन्न भोजनकरणो इत्यादिनहीं करणा.

दिन ५ सांतरोजीनापायतौ सीतपित्त उदर्दजाय ९ अथवा सरस्यूं हलद पवाडकाबीज तिल यांसारांनैं कडवा तेलमैं मिहीवांटि लेप करैतौ सीतपित्त उदर्द जाय १० अथ वकायणका वकाकी वकल टंक ५ मिहीवांटि गऊकाघृतकै साथि पीवैतौ सीतपित्त उदर्दजाय ११ अथवा लोहीकढाजैतौ सीतपित्त उदर्द जाय १२ अथवा आंवलानैं अर नींबका कोमल पानानैं घृतमैं तलि टका १ प्रमाण मनुष्य दिन १५ षायतौ फोडांकारोगानैं पित्तनैं कृमिनैं सीतापित्तनैं षुजालिकारोगनैं गरमीकारोगनैं कफकारोगनैं यो दूरिकरैछे. अथवा छोल्या आदाका टूक छोटा छोटा सेर १ का करै अरगऊकोघृतसेर ऽ॥ लेतौ गऊको दूधसेर २ लेतींको मावोकरै तीमैं आदाका टूक घृतसूंचोपडिवेमैं नाषे पाछैवेही मावानीचै आंचदे वेको षैरो मावोकरै अर मिश्रीसेर १ येककीचासणीकरै पतलीअवलेहकीसीतीं चासणीमैं मावोनाषि अरये औषदि मिहीवांटि नाषै सोलिषूंछूं पीपलामूल मिरचि सूंठि चित्रक वायविडंग नागरमोथो नागकेसरि तज इलायची पत्रज कचूर येसारी औषदि जुदीजुदी टका १ येकेक भरिले त्यांनैं मिहीवांटि वांनैं मिश्रीकी चासणीमैं नाषे पाछे ईने रोजीना टका १ संध्यानै षायतौ सीतपित्तनैं उदर्दनैं कोढनैं उत्कोढनैं राजरोगनैं रक्तपित्तनैं षासनै सासनैं अरुचिनैं वायका गोलानैं उदावर्तनैं सोजानैं षुजालिनैं कृमिरोगनैं उदरकारोगनैं यांसर्वरोगांनैं यो अवलेह दूरिकरैछे अरयोवल वीर्यनैं वधावैछे. अर सरीरनैं पुष्टकरैछे १४

---

* पत्र ३४२ सीतपित्तादिकहै. सोप्रसिद्धहै. जामै पित्ती एक उपद्रवछै. सोयांको आवांतर्भेदछै. जीमैसाध्य, असाध्य, कष्टसाध्यछै. पित्ती होयकर तत्काल आछो होयछै. सोतो साध्यछै. औषधीसैंयाथकी जाय सो कष्टसाध्यछै. कदाचित्शरीरमैं रहजायतौ असाध्यछै. विगाडकरैछै. औरभी अनेक जातिकारोग पैदाकरैछै. जीनै हरएक साधनसौं आछी करणी चाहिजै.

इति आर्द्रकषंड अवलेहः ये सर्व जतन भावप्रकासमैं लिष्या छे. अथवा सींधोलूणनैं घृतमैं मिहीवांटि कैंसरीरकै मर्दनकरै पाछे लाल कामलो ओढैतो पित्तीकोरोग जाय १५ अथवा गऊको घृत गेरू सींधोलूण कसुंभाका फूल येबराबरिले त्यांनैंमिहीवांटि सरीरकै उबटणो करैतोपित्ती दूरिहोय १६ अथवा चिरायतो अरडूसो कुटकी पटोल त्रिफला रक्तचंदन नींबकी छालियांको काढो लेतो पित्तकारोगनैं फोडानैं दाहनैं ज्वरनैं मुषसोसनैं तिसकारोगनैं वमननैं यांसारां रोगांनैं यो काढो दूरिकरैछे १७ अथवा आरणा छाणाकीराष सरीरकै मर्दन करैतो पित्तीजाय १८ अथवा फिटकडी नागरवेलीका पानांकारसमैंवांटि वैंकासरीरकै मर्दन करैतो पित्तीजाय १९ अथवा लसण टका भरषाय अथवा त्रिफला टका ५ भरमिही वांटि सहत सौंचाटैतो पित्तीजाय २० ये सर्वजतन वैद्यरहस्यमैलिष्याछे. अथवा मेथीदाणा टका १ भरकालीमिरचि टका १ भर हलद टका १ यां सारांनैंमिहीवांटि पाछे यांकै आदाकारसकी पुट ३ दे पाछे गोली टंक २ प्रमाणकरै पाछैगोली १ रोजीना षायतो पित्तीकासर्व विकारांनैं दूरिकरैछे. २१ योवैद्य रहस्यमैं लिष्योछे. इतिसीतपित्तऊदर्द कोढ रोगयेपित्तीका भेदछे. त्यांकी उत्पत्तिलक्षण जतन संपूर्णम् अथ अम्लपित्तकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते लूणकाषावासूं षटाईकाषावासूं कडवीवस्तका षावासूं गरमवस्तांका षावासूं ओहीपित्तहैसो कोपकूं प्राप्तिहोय अम्लपित्तनैं पैदायरैछैसो अम्लपित्तरोगभी ३ प्रकारकोछे. वायको १ कफको २ कफवायको ३ अथआम्लपित्तको लक्षणलि० अन्नपचैनही विनाषेद कस्यौ श्रम होय वमनसो आवो करै कडवी षाटी डकार आवै

न॰ टी. शरीरमैं पिस्तीनीकलै सो वेगयुक्त होयछै. जीमै कोईकै तो पाणीमैं कोई लघु जंतू पीवामैं आवैछै. ओर नारू रोगका पूर्वरूपमैंभी पित्तीनी सरैछै. ओर पित्तीको रोगवी छै. सो विद्वान वैद्यपिछाणलेछै. आरईसाधारण पित्तीवालांनै मोतीचूरकालाडूवी षुवावैछै.

सरीर भाखो होय हियामें कंठमेंदाहहोय भोजनमें अरुचिहोय ये लक्षणहोय जीनें आम्लपित्तकहिजे १ योआम्लपित्तदोय प्रकार कोछे एकतो ऊर्ध्वगामीसोतो मुपमाहीं होयकरि जाय येक अधो गामी गुदाद्वाराभी होयछे अथ ऊर्ध्वगामी आम्लपित्तको लक्षण लि० जोवमन करेसो हयो पीलो नीलो कालो लाल अत्यंत नि र्मल भी मांसका जलसिरीसो अर आम्लपित्तकफसों मिल्यो होय तो घणो चीकणोछादे अर करडो सलूणोतीषोछादे १ अथ अधो गामी आम्लपित्तको लक्षण लि० जींकामलमें नानाप्रकारका वर्ण होय अर तिसहोय दाह होय मूर्छाहोय मोहहोय हीयोदूपे वमन सो आवे शरीरमें दाफड होय आवे डकारघणी होय अर कंठमें कूषिमें हियामें दाह होय सरीरमें पीडाहोय हाथ पगांमें दाहहोय भोजनमें अरुचिहोय ज्वरहोय येलक्षणजीमेंहोय तदि जाणिजे ईके आम्लपित्तको रोगछे. १ अथ आम्लपित्तकेविषे औरभीदोसांको मिलापछेसोलि० ईआम्लपित्तकेविसे वायकोभी मिलाप होयछे. अर कफकोभी मिलाप होयछे. अैठे वैद्यहेसो मोहकूं प्राप्तिहोयछे. अथ दोष भेदकरिके आम्लपित्तको भेद लिष्यते जीमें कांपणीहो य प्रलापहोय मूर्छाहोय शरीरमें चिमचिमाही होय अर शरीरमें पीडा अर सूल होय अर अंधेरी आवे अर भौलीआवे अर मो हहोय अर हर्षहोय आवे तदि जाणिजे आम्लपित्तमें वायको मिलापछे १ अथ कफथूके सरीर भाखो होय अरुचिहोय शरीर मे सीतलागे वमन होय अग्निजातीरहे बल जातोरहे सरीरमें पु जालि आवे अर नींद घणीआवे येजीमें लक्षण होय तदि जाणि जे ईआम्लपित्तमें कफमिल्योछे. अथ आम्लपित्तको साध्य अ

न. टी. अम्लपित्तकारोगकेअर्थ अठेनिदानऔषधलिपणी जरूरनहीछे. कारणग्रंथकर्ता लिषणेमेंकमतीनहींकरेछे. परंतुहमारिउक्तियाहीछे. आम्लपित्तमें वायुकफयांकोमिलापहोयछे जठेवैद्यवरनेंनिजरपोंचाणी योग्यछे.

साध्य लक्षणलि० आम्लपित्तको रोग नवीन उपज्यो होय सोतो साध्य जतनकर्यां जाय अरयोही घणादिनको होय सो जाप्यजाणिजे अरयोही घणादिनको होय अर पथ्यचालैनहीं सो असाध्यजाणिजे १ अथ आम्लपित्तरोगका जतनलि० आम्लपित्तरोगवालानें पटोल नींबकीछालि अरडूसो येबराबरिले त्यांको काढो करि ईसेती वमन कराजैतो आम्लपित्तजाय १ अथवा मेंढल सहत सींधोलूण यांकरिवमन कराजैतो आम्लपित्त जाय २ अथवा जुलाबसूं आम्लपित्तजाय ३ अथवा निसोत सहत आंवला यांको जुलाबदेतो आम्लपित्तजाय ४ अथवा ऊर्ध्वगामी आम्लपित्त होय तीनें वमन कराजे अर अधोगामी आम्लपित्त होय तीनें जुलाब दीजे ५ अथवा जवाकोसातू अथवा गोहांकोसातू अथवा चावलांको सातू मिश्रीका संजोगसूं षायतो आम्लपित्त जाय ६ अथवा जव अरडूसो आंवला तज पत्रज इलायची यांको काढो सहतनाषि कर पीवैतो तत्काल आम्लपित्तजाय ७ अथवा गिलवै नींबकीछालि पटोल यांकोकाढो करि सहतनाषि पीवैतो महा भयंकरभी आम्लपित्तजाय ८ अथवा अरडूसो गिलवै पित्तपापडो चिरायतो नींबकीछालि जलभांगरो त्रिफला कुलत्थ यांकोकाढो सहतनाषिदेतो आम्लपित्तजाय ९ इतिदशांगक्काथः अथवा भोजन करि आंवलाकोरस पीवैतो आम्लपित्तनें वमननें अरुचिनें दाहनें मोहनें तिमिरनें व्रणनें मूत्रकादोषनें योदूरिकरैछे. अरयोही बूढापणानें दूरिकरि तरुणकरैछे. १० अथ कूष्मांडावलेह पक्कापेठानें छोलितींकाबीज गिरिकाढि तीनैकूटि तींकोरस टका १०० भरले पाछे टकासौ १०० भरही गऊको दूधले अर टका ८ आठभर

न. टी. अम्लपित्तरोगअधोगामी अ. उर्ध्वगामीसोदस्तकीराहनीसरैसोअधोगामी. ओर उलटीकीराहनीसरैसोउर्ध्वगामी. जैसैअधोगामीतोजुलाबसैंजीतणोओउर्ध्वगामीनैंवमनउलटीसौं जीतलेणो. परंतुरोगीकोबलाबलदेषणो.

आंवलाले अर टका ८ भर मिश्रीले अर गऊको घृत टका ८ भ रले यांसारांनैं मधुरी आंचसूं पकावैं पाछै ईंकी अवलेहकीसी चा सणीकरै पाछै टका १ भर अथवा टंक ५ रोजीना षायतौ आ म्लपित्त जाय ११ अथवा नारेलकीगिरिनैं छोलि तीनैं पत्थरऊप रिवांटिले पाछै वेगिरिसूं चौगुणी बणारस षांडले तीकीचासणीकरै अर वेवांटि गिरिनैं गऊकादूधमैं पकाय वेंको मावोकरै औ मावो वे चासणीमैं नाषै पाछै ये औषदि मिहीवांटि चासणीमैं नाषै धणौ पीपलामूल तज पत्रज नागकेसर इलायची ये सारीऔषदि टंक येक येकले पाछै यां सारांनैं मिलाय यांको येकजीवकरि टका १ भरकी गोलीबांधै अथवा टंक ५ भरकी गोलीबांधै गोली १ रो जीना षायतौ आम्लपित्तनैं रक्तपित्तनैं सूलनैं दूरिकरैछै. १२ इति नालेरषंडः येसर्वजतन भावप्रकासमैंछै. अथवा मिनक्कादाषनैं धो यतींकी मींगीकाढि तींबराबरिबडी हरडैकी वकलका चूर्णनैं पाछै यांदोन्यांनैं बराबरिमिश्रीमिलाय यांकी गोलीटंक २ कीबांधै पाछै गोली १ रोजीना षायतौ आम्लपित्तनैं हियाका कंठका दाहनैं तिसनैं मूर्छानैं भौंलिनैं मंदाग्निनैं आमवातनैं दूरिकरैछै. १३ इति द्राक्षादिगुटिका अथवा सूंठि कालीमिरचि पीपलि त्रिफला इलाय ची नागरमोथो वायविडंग पत्रज येबराबरिले यांसारांकी बराबरि लौंगले यांसारांसौंदूणी निसोतले यांसारी औषद्यांकी बराबरि मि श्रीले यांको चूरणकरि टंक २ सीतल जलसूं लेतौ आम्लपित्त जाय ४ इति अविपित्तकचूरणम् इति आम्लपित्तकी उत्पत्ति लक्ष णजतन संपूर्णम्

अथ विसर्परोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते लूण षटाई

* आम्लपित्तरोगछैसोदुष्टव्याधीछै. विद्वानवैद्यईंरोगनैंपिछाणै. कारण ईंरोगमैं घणीबा रीकीछै. ईंकाउपावतो अनेकछै. परंतु आर्द्रकावलेह लिष्याछै. सो उत्तम औषधछै. तथापेठा को औषधभी घणो गुणकारीछै. येऔषधीप्रसिद्धछै.

गरमवस्तका षावासूं विसर्परोग पैदाहोयछे सोओ विसर्परोग फै ल्यो थको सात ७ प्रकारकोछे. वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ वातपित्तको ५ वातकफको ६ कफपित्तको ७ अ थविसर्परोगको सामान्यलक्षणलिष्यते लूण षटाई गरमनें आदि लेर ये पाछे लिष्याछे त्यांकाघणा षावासूं वाय पित्त कफये कोपकूं प्राप्तिहोय सरीरकालोहीनें मांसउगैरे सातधातनें विगाडि शरी रमें छोठी वडी फुणस्यांका मंडलनें शरीरमें फैलायदेछे. ईवास्ते वैद्यांईरोगको नामविसर्पकाह्योछे. १ अथ वायका विसर्पको ल क्षणलिष्यते शरीरमें आपका कुपथ्यका करिवासूं वाय कोपकूं प्रा प्तिहोय शरीरमें कठेही छोटीछोटी फुणस्यां पैदाकरे तदि फुणस्यां सरीरमै फैलिजाय तदिवायज्वरका सर्वलक्षण वेमैमिलै अरवामैं सोजो होयआवै अर पीडघणीहोय अर वेफुणस्यां फाटिवालागि जाय अरवामैं पांवसिरीसी पीडघणीहोय अरवामैं षुजालिघणी आवै १ अथ पित्तका विसर्पको लक्षणलिष्यते आपका कुपथ्यसूं पित्तकोपकूं प्राप्तिहोय शरीरमै छोटी बडी फुणस्यां हुईहोय सोवे फैलिजाय तदिवामैं पित्तज्वरका सर्वलक्षणमिलै अरवे फुणस्यां वे गदेर घणीफैलिजाय अर घणीलाल होय २ अथ कफकाविसर्प रोगकोलक्षणलि० आपका कुपथ्यका करिवासूं कफकोपकूं प्राप्ति होय शरीरमैं छोटीमोटी फुणस्यानें फैलाय दे पाछे वामैषाजिघणी आवै अर वेफुणस्यांचीकणी होय अर वेमैं कफज्वरका सर्वलक्ष णमिलै ३ अथ सन्निपातका विसर्परोगको लक्षणलिष्यते आपका कुपथ्यका करिवासूं सन्निपातकोपकूं प्राप्तिहोय शरीरमै छोटीबडी फुणस्यां पैदाकरि वाफुणस्यांनें सरीरमैं तत्काल फैलायदे अरवा

न. टी. मिथ्याआहारमिथ्याव्यवहारसैं त्रिदोषकोपकूंप्राप्तिहोयछै. सोजीमैंजोदोषकोपकूं प्राप्तिहोयछै. उहीदोषकालक्षणप्रगटहोयछै. जैसैवायुकी अधिकताहोयजीमैं वायुकालक्षणजाण णा. अरुपित्तमैं पित्तकालक्षणजाणणा. अरुकफमैं कफकालक्षणजाणणा.

फुणस्यांमैं पाछै कह्याछै सोलक्षणवामैं होयजाय अर सन्निपातज्व
रका सर्वलक्षण होजाय ४ अथवातपित्तविसर्परोगको लक्षणलि
ष्यते. जींकासरीरमैं वायपित्त आपका कुपथ्यका करिवासूं कोपकूं
प्राप्तिहोय शरीरमैं छोटीबडी फुणस्यांनैं पैदाकरै सो वै फुणस्या स
रीरमैं फैलिजाय तरिआग्न्यास्व्यानाम वाफुणस्यांनैं कहै अग्निसरी
सोंवाको रूपहोय अरजीमैं वायपित्तज्वरका लक्षणमिलै अर
छर्दि मूर्छा अतिसार तिस भ्रम येभीजीमैं होय अर सरीरका हाड
टूटै अंगांमैं पीडाहोय अंधेरीआवै अरुचिहोयसारोसरीर अंगारा
सिरीसो बलै जींजींस्थानमैं होय तींतींस्थाननैं कालोकरि नाषै
अर नीलो अथवा लालकरि नाषै जैसै लायकादाज्यांकौ मर्मस्था
नमैं फैलिजाय वेकोअंग घणोपीडाकूं प्राप्तिहोय वैंकी संज्ञा जा
तीरहै नींद आवैंनहीं सासहोय आवैहिचकी होयजाय सरीरमैं
चैन पडैनहीं मनदेह सर्वविगडिजाय सरीरकोग्यानजातो रहै यो
विसर्परोग निपट असाध्यजाणिजे ५

अथ वातकफ विसर्परोगको लक्षण लिष्यते वायकफ आपका
कुपथ्यका करिवासूं कोपकूं प्राप्ति होय शरीरमैं छोटीबडी फुणस्यां
नैं पैदाकरै वानैंफैलायदे वाफुणस्यांनै ग्रंथारव्यानामकहिजे बो
गांठिसिरीसो होयछै. योपवनहैसो कफकरिकै रुक्योथकोकफनैं घ
णोप्रकारभेदै पाछै त्वचामांसनसांमैं प्राप्त हुवो जो लोहीतीनैं औ
दूषितकरै वडाछोटागोल भाख्याषरधरा इसा गूमडाकी मालानैं पै
दाकरै तीमैं घणी पीड अर लाललाल ज्वरनैं लियां अरषासश्वा
स अतिसार मुषसोस हिचकी वमन भ्रम मोह सरीरकोरंग औ
रसो अरमूर्छा अंगफूटणी मंदाग्नि येभीजीमैं होय तदि जाणिजै

न. टी. अरुतीनहीप्रकारकादोषांकालक्षणएकहीरोगमैंमीलैतौत्रिदोषकोलक्षणजाणना. ता
नै सन्निपातत्रिदोषकोरोगकहैछै. तोबुद्धिमानपुरुषहोयसोयांदोषांकापूर्वरूपनैं अथवाप्रथमका
रणनैं ध्यानमैंलेकरबरोबरसमझणौयोग्यछै.

वायकफको विसर्परोगछे. ६ अथ कफपित्तका विसर्परोगको लक्ष
णलिष्यते कफपित्त आपका कुपथ्यका कारणांसूं कोपकूं प्राप्ति हु
वो थकोसरीरमैं छोटीबडी फुणस्यांनैं पैदाकरिवानैं फैलायदे वाफु
णस्यांनैं वैद्य कर्दम महाभयंकर विसर्परोग कहेछे. तीमें येलक्षण
होय जुरहोय सरीर जकडबंदहोयजाय नींदआवै नहीं तंद्रा
होय सरीरमै पीडा होय अंगांमै फुटणी होय प्रलापहोय
भ्रमहोय भूषजाती रहै हाडहाडटूटै तिसहोय सरीर भार्यो
होय आंवजाय इंद्रियांपकि जाय अंग अंगमें पीडाहोय फु
णस्यांसारासरीरमैं घणी फैलै घणी लाल चीकणि कालीमैंली सो
जानैलीयां भारी मोडी पकै गंभीरजींको पाक जीमैंवलत घणीरा
धिजीमैंघणी कांपै सरीरकी नसांनीसरी रहै अरजीमैं मुरदाकीसी
दुरगंधिआवै येजीमैं लक्षण होय तीनैं कर्दमनाम विसर्परोग कहि
जै ७ अथ शस्त्रादिकका घावसूं उपज्योजो विसर्प तींकोलक्षण लि
ष्यते शस्त्रादिककी चोटलागिवासूं कोपकूं प्राप्तिहुवो जोवाय सोलो
हीसमेत पित्तकूं दुष्टकरै कुलत्थसिरीसो सरीरमैं फुणस्यांनैं पैदा करै
जोविसर्पछे. पाछै वाफुणस्यांका फोडाहोजाय अर वामें सोजोहो
य अर जुर होय ये भी होयजाय लोहीकालो होयजाय ८ अथ
विसर्परोगको उपद्रव लिष्यते जुरहोय अतिसारहोय वमन होय
तिसहोय मांसको विषरिवो बुद्धि ठिकाणै नहीं रहै अरुचिअन्नप
चैनहीं येईका उपद्रवछे. अथ विसर्परोगको साध्यअसाध्य लक्षण
लिष्यते वायपित्त कफकी जुदीजो विसर्प अरअग्निसूं उपज्यो जो
विसर्प अर मर्मस्थानमैं उपज्यो जो विसर्परोगसो असाध्यजाणि

न. टी. कोईसमैषानपानविपरीतहोयछै. जैसैअपक्वभोजनपरभोजनकरणो अथवाअति
भोजनकरणोअथवाअतिभूषोरहणो. अथवाविपरीत भोजनकरणो ऐसेहीमिथ्याव्यवहारना
मजीमैसमतानहींहोय अतिसीतअतिऊष्ण अतिफिरणो. विपरीतव्यवहार होयजदरो
गपैदा होयछै.

जै. १ अथ विसर्परोगका जतन लिष्यते जुलाब वमन औषद्यां कालेप रुधिरकढावो येसाराही जतन विसर्परोगनें आछ्या १ अथ वायका विसर्परोगको जतन लिष्यते. रास्ना कमलगट्टा देव दारु रक्तचंदन महुवो षरैंटी यांनैंबराबरिले यांनें दूधसूं घृतसूंमिही वांटि लेपकरैतो वायको विसर्परोग जाय १ अथपित्तका विसर्परो गको जतनलिष्यते. किसोख्यासिंघाडा कमलगट्टा जलको सिंवाल रक्तचंदन यांनें वाटि धोयाघृत सीतल जलसूं लगावैतो विसर्परोग जाय २ अथ कफका विसर्परोगको जतन लिष्यते त्रिफला कमल गट्टा षस लजालू कनीरकीजड नरसलकीजड जवासो यांनें जलसूं मिहीवांटि लेपकरैतो कफको विसर्प जाय ३

अथ दशांगलेपः तगर सिरसकीजड महलौठी रक्तचंदन इला यची छड तीन्यूंहलद नेत्रवालो यांनें मिहीवांटि जलसूं यांमैगऊको घृत नाषि लेपकरैतो सर्व प्रकारको विसर्पजाय ४ अथवा चिरायतो अरडूसो कुटकी पटोल त्रिफला रक्तचंदन नींबकीछालियांनें बराबरि लैयांनें जौकूटकरि. टंक २ कोकाढोदेतो विसर्परोगनें दाहनें जुरनें सोजानें षुजालिनें फोडांनें वमननें इतनांरोगांनें योकाढोदूरिकरैछे. ५ अथवा कणगच सतोन्याकीबकल कलहारीकीजड थोहरको दूध आककोदूध चित्रक जलभांगरो हलद सींगीमोहरो येबराबरि टका टकाभरि अर गोमूतसेर २ लेपाणीसेर २ लेतेलतिलांकोसेर १ पाछेयांनैंएकठांकरै पाछैयांकैनीचैमधुरी आंचदे सर्वरसबलिजाय ते लमात्र. आयरहैंतदिईको मर्दन करैतो विसर्पनैं फोडांनें व्योंचीनें योतेलदूरिकरैछे. ६ येसर्व जतन भावप्रकासमैछे. अथवा वडकी जटा नागरमोथोकेलीकोबीचलोगर्भ यांनैं धोयाघृतसूं लेपकरैतो

* विसर्परोगप्रसिद्धछै. घणोदुष्टछै. त्रिदोषयुक्त असाध्यछै. जींवास्तै त्रिफलादिलेपलि ष्योछैसो श्रेष्ठछै. त्रिफलाको प्रमाणतो हरडै बेहेडा आंवलासमभाग लेणा. अरकोईक वैद्य संप्रदायमैं एकहरडै दोयबेहेडा च्यार आंवला योभीप्रमाणछै.

विसर्परोगांनें गाठिनें यो लेपदूरिकरैछे. ७ अथवा सिरसकी वकलनें १०० सोवार धोयाघृतकैसाथि मिहीवांटि लेप करैतो विसर्परोगसर्व प्रकारकोरोगजाय ८ अर कोढ फोडा सीतलायोसर्वरोग जोककाला गिवासूं निश्चैजाय ९ ये सर्वजतन वैद्यरहस्य मैंछे. इतिविसर्परोग की उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम् अथ स्नायुरोग स्नायुकहे जेवा लोतींरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते षोटा जलका पीवासूंदु ष्टअन्नका षावासूं कोपकूं प्राप्तिहुवो जोवायसो हाथ पगांकेविषै फ फोलानें अथवा सोजानें करैछे. पाछे वाफफोलानें ओवायहैसो फोडिकरिफफोलांकीजागांऊठे पित्तहैसो नसांनेसुकायतांतिसिरीसा डोरानें ओकुपितहुवोथको जोवायतीनें करैछे. सोतांतिसिरीसो डोरोहैसो छाछिसातू कापिंडबांधिवासूं सनैसनै वारैनीकलिपडै अरओटूटि जायतो कोपकूं प्राप्तिहोय अरओ वारैनीकलिआवै तौओजातोरहैअर ओओरसरीरमैं जातो रहै. अथवा हाथमैं अ थवा पगांमैं कहींकारणसूं टूटिजाय तौटूटोमनुष्यनें षोडोकरिदे ये जीमैं लक्षणहोय तीनें वालाकोरोग कहिजे १ अथवालाका जतन लिष्यते हींग टंक ५ तीनें सीतल जलसूं दिन ३ षायतो वालाको रोग कदेहोयनहीं १ गऊकोघृतऽ। रोजीनादिन ३ पीवैतो वाला को रोगजाय २ अथ निरगुंडी कोरस दिन ३ पईसा ४ भररोजी नादिन ३ पीवैतो वालाकोरोग जाय ३ अथवा कलोंजीकी जडसी तल जलसूंदिन ७ पीवैतो वालाको रोगजाय ४ अथवा अरंडकी जडकोरस गऊका घृतसूंदिन ७ पीवैतो वालाको रोगजाय ५ अ थवा अतीस नागरमोथो भाडंगी सूंठि पीपलि वहेडाकीछालि ये ब राबरिले यांने मिहीवांटि टंक २ रोजीनादिन ७ गरम पाणीसूं ले

न. टी. विसर्पादिरोगमैंतथारक्तविसर्पादिफोडाफुणसीषाजपांव. मसूरिकाइत्यादिकमैंप थ्यलि० पुराणाचावल. चीणामूंग. मसूर. करेला. केलासोभांजनफली. चचींडा. दाष. अनार. घृत. गहूं. पुष्टअन्न. इ० कुपथ्यलि० वायुलेणी. श्रम. क्रोध. तेल. तीषोषाटोइत्यादि.

तौवालो जाय ६ अथवा सहजणाकी जड अर पांन यांनें कांजी का पाणीसूंवांटि सींधोलूण मिलाय पाछे वेनें वालाऊपरि बांधेतो वालोजाय ७ अथवा कांटावालिजालि तींकीजड तीनें जलसूं वां टिवाला ऊपरि दिन ७ बांधेतो निश्चैवालो जाय ८ ये सर्व जतन भावप्रकाशमें लिष्याछे. अथवा कूठ सूंठि सहजणाकीजड यानें पा णीसूं मिहीवांटि वालाऊपरि लेपकरे अथवा यां औषधांनें पीवेतो वालोजाय ९ अथवा धत्तुराकापानांको तेललगाय वालाऊपरि बां धेतो वालोजाय १० अथवा बंबूलकाबीज त्यांनें कांजीसूं सिजाय वालाऊपरि बांधेतो वालोजाय ११ अथवा वालाका मंत्रसूं वालो जाय सोमंत्रलिषूंछूं ॐविरूपनाथवामनके पूतसूतकाटिकिये बहुत पाके फूटे पीडाकरेतो विरूपनाथकीआज्ञाफुरे ईमंत्रसूं वालाऊपरि गुडनेंवार ७ मंत्रि वालावालानें षुवाजेतो वालोजाय १२ येजतन वै द्यरहस्यमे लिष्याछे अथवा कबूतरकीवींटकी सहतसूं गोलीबांधि दिन ७ निगलाय देतोवालो कदेंभीनीसरेनहीं १३ योवैद्यरहस्यमे लिष्योछे. अथवा सहतमें साजीवांटि ईको लेपकरेतो वालोजाय १४ इति वालारोगकी उत्पत्तिलक्षण जतनसंपूर्णम्

अथविस्फोटकरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनलिष्यते कडवीवस्त काषावासूं षटाईका षावासूं तीषीवस्तका षावासूं गरमवस्तका षा वासूं लूणीवस्तकाषावासूं षारीवस्तकाषावासूं अजीर्णकारहवासूं भोजनऊपरि भोजनकरिवासूं तावडामेंरहवासूं सीत उष्ण वर्षाऋ तु येजोतीनो घणा अथवा नहीं अथवा यांका विपरीतपणातें को पकूं प्राप्तिहुवो जोवायपित्त कफ येदोषसों शरीरकी त्वचामें प्राप्त होय सरीरका लोहीनें अर मांसनें अर हाडनें दूषित करेछे. सरी

न. टी. स्नायूरोगईनैनारूवालोनहरवाकहैछै. ईंकोनिदानसर्वप्रकारसौंग्रंथकर्तामाधवादिकां कीरीतसौंकह्योछै. अरुउपचारवी.बहुधाकहींछै. परंतुलौकीकमैं तंत्रमंत्रादिकबीबहोत मनुष्य करैछै. इसीबीप्रसिद्धवातछै. एकनारू. सोदारू. प्ररंतुजोविधिपूर्वक औषधीकरणा.

रमैं भयंकर फोडांनैं पैदा करैछै. पहलीज्वरनै उपजायकरि सोईनैं विस्फोटक रोगकहिजे. १ अथविस्फोटक रोगको लक्षणलि० ज्वर तोयांफोडामैं मानूं आगिसिरीसीदीनीछै. इसा फोडाहोय वेफोडा रक्तपित्तसूं उपज्याछै. सरीरमैं सर्वत्रहोय अथवा कहींहोय तीनैं विस्फोटक कहिजे १ अथ वायका विस्फोटकको लक्षणलिष्यते. मथवाय होय फोडांमैं पीडहोय ज्वरहोय तीसहोय हाड फुटणीहोय फोडांको व्रणहोय येलक्षण होयजीनैं वायको विस्फोटक जाणिजे. १ अथपित्तका विस्फोटकको लक्षणलिष्यते ज्वरहोय दाहहोय फोडांमैं पीडाहोय फूटै वेगोपकै वेगोश्रवै वेगोतिसहोय फोडाको पीलो लालवर्णहोय येलक्षण होयतो पित्तको विस्फोटक कहिजे २ अथ कफका विस्फोटकको लक्षणलिष्यते छर्दिहोय अरुचिहोय मोडोपकै तीनैं कफको विस्फोटक जाणिजे ३ अथ वातपित्तका विस्फोटकको लक्षणलि० घणीपीडहोय अर वायपित्तका लक्षणमिलताहोय तीनै वायपित्तको विस्फोटक जाणिजै ४ अथ वायकफका विस्फोटकको लक्षणलि० सरीर भास्योहोय षुजालिचालैतो कफको जानिये ५ अथ पित्तकफका विस्फोटकको लक्षणलिष्यते षाजिआवै वेमैं दाहहोय ज्वरहोय छादणीहोयतो कफपित्तको जाणिजै ६ अथ सन्निपातका विस्फोटकको लक्षणलिष्यते फोडाकैवीचि षाडोहोय अर ऊंचोभीहोय अर फोडो गाढोहोय थोडो पकै फोडामैं दाहहोय ललाई घणीहोय तिसहोय मोहहोय छर्दिहोय मूर्छाहोय फोडामैं पीडहोय ज्वरहोय प्रलापहोय सरीरकांपै येलक्षणहोय तीनैं सन्निपातको विस्फोटक कहिजै. योअसाध्यछै ७ अथ लोहीका

न. टी. नारूकीऔषधी बहुधाछै परंतुएकऔषधीप्रसिद्धछै. सोलि० अरीठा सुपेदकाथोस भभागलेकरपाणीसूंपिसणो. पछैनागरवेलकापान च्यारलेणा. पानपानप्रतिऔषधीकोलेपकरणो पछैवेबालाकैऊपर पानऊपरपानजमायकरपाटोबांधणो. दिन २ पछै. षोलैतो भस्म हायजाय.

विस्फोटकको लक्षणलि० जीमै पित्तका फोडांका सर्वलक्षण होय फोडाको चिरमीसिरीसो वर्णहोय जीमैं लोहीनीसरै जीमैं दाहहोय योजतनसूंभी आछ्योनहीहोय ८ अथ विस्फोटकका उपद्रवलि० तिसहोय स्वासहोय मांसको संकोचहोय वेमैं दाहहोय हिचकी चलै जुरहोय फोडाफैलिजाय मर्मस्थानमें ईकाउपद्रवछै ९ अथ विस्फोटकको साध्यअसाध्यलक्षणलि० एक दोषकोसाध्य दोयदोषको कष्टसाध्य त्रिदोषको अर घणोजीमै उपद्रवसो असाध्यछै. १

अथ विस्फोटकरोगको जतनलिख्यते. विस्फोटक वालानैं लंघन अर वमन अर जुलाब अरपथ्य भोजन अर पुराणी साली चावल जव गोहूं मूग मसूर अरहडये आछाछै. १ अथवा दसमूलको काढोरास्ना दारुहलद षस कव्याली गिलवै धणौ नागरमोथौ यांको काढोदेतौ वायको विस्फोटकजाय २ अथवा दाष कुंभेर छवारा पटोल नींबकीछालि अरडूसो कुटकी चावलांकीषील जवासो यांको काढोदेतौ पित्तको विस्फोटकजाय २ अथवा चिरायतो वच अरडूसो त्रिफला इंद्रजव कुडाकीछालि पटोल यांको काढो सहतमिलाय देतौकफको विस्फोटकजाय ३ अथवा चिरायतो कुटकी नींब कीछालि महलौठी नागरमोथो पटोल पित्तपापडो षस त्रिफला कुडाकीछालि यांको काढोदेतौ सर्वप्रकारको विस्फोटक जाय ४ अथवा चावल कुडाकीछालि यांनैं जलसूं मिहीवांटि फोडाऊपरि लेप करैतौ विस्फोटकजाय ५ अथवा गिलवै पटोल चिरायतो अरडूसो नींबकीछालि पित्तपापडो षैरसार यांको काढोदेतौ विस्फोटक रोगकी जुरजाय ६ अथवा चंदन नागकेसरि गौरीसर चौलाईकी

---

* धत्तूराकोरस नागरवेलकोरस, चमेलीकोरस, सुपेददोबकोरस, मैणसिल, पारो गंधक कजलीमैं मैणसिलपीसकरजीमै सिरसेलतेल घालकर षरलकरै. पाछै च्याररसजीमैघालष रलपहर २ दोयकरै काचका ठाममैं तथाचीणीका ठाममैं घालैपाछै लेपकरैतौ असाध्यविसर्पजाय. विस्फोटकजाय. सस औषधीछै. हमारीपतवाणीछै.

जड सिरसकी वकल चवेलीकापान यांनेंजलसूं मिहीवांटि लेपकरै तो विस्फोटक जाय ७ अथवा कमलगट्टा रक्तचंदन लोद षस गौरीसर यांनें जलसूंवांटि लेपकरैतो विस्फोटक जाय ८ अथवा जीयापोताकी मींजी जलसूंवांटि लेपकरैतो विस्फोटकनें षांकोलाईनें गलाकीगांठिनें कानकीगांठिनें और फोडाफुणसीमात्रनें यो लेपदूरिकरैछै. ९ येसर्वजतन भावप्रकासमैं लिष्याछै दशांगलेप कीशोर गूगल येभीईनें आछयाछै. इति विस्फोटक रोगकी उत्पत्तिलक्षण जतन संपूर्णम् अथ फिरंगरोगकीउत्पत्ति लक्षणजतनलि० योफिरंगरोग उपदंश वायको भेदछै. सोघणीगरमवाली स्त्रियांका संग करिवासूं अथवा वेंकोसंगकहीं और कर्योहोय सोओ ऊठेमूतें उठेयोभीमूतें अथवा वेंको कहींतरें भोजनादिकको संगकरैतो वायका कोपका कारणांसूं कोपकूं प्राप्तिहोय ईरोगनें प्रगटकरै अथवा योषीण पुरुषहोय अर मैथुन वारंवारकरै तदियो निपट क्षीणपडै तदि ईकै बंधेज रहैनहीं. अर ईकै वायकी नानाप्रकारकी सरीरमैं पीडाहोय तदि ईका वायपित्तकफ येसाराही कोपकूं प्राप्तिहोय ई आगंतुकनाम फिरंगवायनें येदोष प्राप्तिकरै सो फिरंगवाय तीन प्रकारकोछै सरीरकै मांहिं नसांमैं धसिजाय १ सरीरकी त्वचाकै ऊपरिरहै २ अर माहिवारै भीरहै ३ अथ सरीरकी त्वचाकै वारै होय तींको लक्षणलि० लिंगेंद्रीके ऊपरि फुणसी अर फाटिवाउगैरै चिन्हहोय अर ऊठेथोडी पीडाहोय सोतो सुषसाध्यहीछै. योजतन कर्यांमिटिजाय १ अथ सरीरकी संध्यांमैं अर नसांमैं धसिगयो होय तींको लक्षणलि० शरीरमैं कीडीकाव्याहोय इसाचाठापडिजा

न. टी. विस्फोटकरोगको पूर्वरूपध्यानमैं लेणोचाहिये. प्रथम अजीर्णादिभोजनमैंविपरीतहोयछै. अहारव्यवहारमिथ्याहोयजींकै दोषकुपितहुवाथका तीक्ष्णज्वरप्रगटकरैछै. कोईकारणसौंवायुकुपितहोयकरपित्तकफकौं साथलेकरसरीरकी त्वचामैं प्रगटकरै रोमादिकांमैं रंगविरंगी फोडाफुणसीकरैछै.

य मोरांमें जांघांमें पीड्यांमें यांमे घणीपीडाहोय अर ऊठे सोजो होय योकष्टसाध्यछे २ अथ सरीरकै मांहिवारै होय तींको लक्षण लि० येसर्व लक्षणकह्याछे सोहोय अर घणांदिनांतांई रहै सोघणो कष्टसाध्यछे ३ अथ फिरंगवायका उपद्रवलिष्यते सरीरक्षीण पडिजाय बलजातो रहै नाकगलिजाय अग्निमंदहोय मांसरुधिर जातोरहै अर हाडमात्र आयरहै येईकाउपद्रवछे येआछ्यानहीं १

अथ फिरंगवायका जतनलिष्यते रसकपूरकासाध्यासेती फिरंगवाय निश्चैजाय सोरसकपूरकासाधिवाकी अरषावाकीविधीलिष्यते रसकपूररती ४ लेतीनैं गोहुंकाचूननै पाणीसूं ओसण तींकै वीचिरसकपूरमेलि वेंकीगोली करैपाछे लवंगांनै मिहीवांटि अर गहुंका चूनकी गोली रसकपूर समेत वेनैं लवंगांका चूर्णमै लपेटै पाछे वेगोलीनैं निगलिजाय दांत लगावैनहीं सीतलजलसूं निगलै ईऊपरि नागरवेलीको पानचावै काथाचूनावीना ईऊपरि लूण षायनहीं षटाईषायनहीं. षेदकरैनहीं तावडैरहैनहीं इसीतरै दिन २ करैतो फिरंगवायजाय ३ अथ संप्रसारणगुटिकालि० पारो टंक १ षैरसार टंक १ अकलकरो टंक २ सहत टंक ३ यांसारांनैं षरलमैं मिहीवांटि यांको येकजीवकरै पाछेयांकी ७ सातगोलीकरै गोली १ रोजीना प्रभात सीतलजलसूं लेतो फिरंगवायजाय ईउपरि लूणषटाइ षायनहीं २ अथवा पारो टंक २ आंवलासार गंधक टंक २ चावल टंक २ यांतीन्यांनैं षरलमै मिहीवांटि कजलीकरै पाछेयांकी पुडी सातकरै पाछे पुडी १ येकेककीरोजीना इंद्रीकै धूणीदेतो फिरंगवायजाय ३ अथवा पीलाफूलकी षरैटीकापानाकोरस टंक १

न. टी. जीमैविलक्षणपीडाहोय अरुसहनकरणी नहीआवै इसाकारणासूं रोगसमझणो योग्यछै. अरुपथ्यलि० हलकोअन्न, लंघन जुलाब उलटी पुराणासालकाचावल. जवांकीय वागूनामनरमपथ्य. गौहूंमूगमसूरअरहडइ० अपथ्यलि० कडवी. षटाई तीषी गरम बहुतलूण कसायली अतिभोजनइ०

ले अरपारो टंक १ ले यांदोन्यांनैं दोन्यूंहाथामैमसलिपारानें अर वेरसनैं हाथांमैचूरायदे पारोदीसैजठातांई पाछे याहाथांनैंक्यो त पायलेपसेव आवे जठातांई ईसीतरे दिन ७ करैतो फिरंगवायजा य अर लूण षटाई षायनहीं ४ अथवा नींबकापान टंक ८ हरडे कीछालि टंक ७ आंवला टंक ७ हलद टंक १ पारो यांसारांनैं मिहीवांटि मासा ४ ईनैं सीतल जलसूं रोजीना दिन ७ लेतो फि रंगवाय माहिलो अर बारलो जाय ५ अथवा चोबचीनीकोचूरण मासा ४ सहतसूं दिन १५ चाटैतो फिरंगवाय जाय ईउपरि लूण षटाईषायनहीं अर षायतो सींधोलूण षाय ६ अथवा पारो टंक १ तीनैंकटसेलाकाररससेती षरलकरे पाछे ईमैं गूगल टंक ५ नाषे अ कलकरो टंक ५ गऊको घृत टंक ५ ये मिहीवांटि ईमैनाषे पाछे सहत टंक ५ त्रिफला टंक ५ ईकै साथि ईचूरणनैं टंक १ रोजीना दिन २१ षायतो अथवा ईको मर्दनकरैतो फिरंगवाय जाय ईउप रि लूण षटाई षायनहीं ७ ये सर्व जतन भावप्रकाशमैं लिष्याछे. अथवा जुलाबसूं अथवा लोहीका कढावासूं फिरंगवायजाय ८ अ थवा पारो हिंगूल. नीलोथुथो हिराकसीस सोध्यो आवलासार गंधक येसर्व बराबरिले त्यांनैं षरलमैं मिहीवांटि एकजीवकरि ईको भुरकोदे अथवा ईको लेपकरैतो फिरंगवाय जाय ९ इतिसूतकाद्यो लेपः अथवा सौवारको धोयोघृत तींकोलेप करैतो फिरंगवायजा य १० अथवा कडवो तेल टका १ मोम टंक ५ कपेलो वेरजो ये दोन्यू अधेला भरिले सिंदूर टंक २ लेसोरो टंक २ ले मुरदासिं गी टंक २ यांसारांनैं मिहीवांटि पीतलकापात्रमैं मधुरी आंचसूं

न. टी. फिरंगवायजीनैफिरंगबीकहैछै. अरु बावमेवाडोबीकहैछै. सुयोरोगउपदंशकोभेद छै. अरुषोटीगरमीकोछै. सोवायुकोपकूंप्राप्तिहोयकरपित्तकफनैं साथलेकरत्वचानसांमैं मांसमैं अस्थिमैं मज्जामैं प्रवेश करैछै. विनाउपचारवालामनुष्यकैसोथसहित ऊठाकोमांसरक्तगलवा लागजाय॥

यांनै पकाय पाछै आपका हाथांसूं मथि डाबीमैं घाल राषै पाछै ईंकी कागली देतौ फिरंगका गूमडानैं उपदंसनैं घावनैं यामल्हिम आछ्याकरैछै. ११

इति मलहरमल्हिम अथवा सिंदूर अधपाव ऽ॥ गऊको घृतसेर १ यादोन्यांनै मथि सरीरकै लेपकरैतौ पाछैकोढूंका परालनैं सरीरकै लपेटै इसीतरै दिन ३ करै ईंऊपरि षीरषायतौ व्रणमात्र विस्फोटक फिरंगकागुमडा येसर्व सूकिजाय १३ अथवा पारोअरसीसो येबराबरिले पाछैयांदोन्यांकीषरलमैंकजलीकरै अरगोहांकातुस आमलीकांचीयां नींबकापान घरकोधूमसो येसाराबराबरिले अरयांनैं नींबुकारस सूंषरलकरै पाछै टंक २ भरकीगोलीबांधै पाछै सरीरनैं वस्त्रसूं ढांकि करि इसीतरैदिन ७ गोली १ कीधूणीलेतौ सर्वप्रकारको विस्फोटक जाय ईंऊपरिषीरषाय दिन २१ तथा १४ अथवा त्रिफला षैरसार जायपत्री येबराबरिले यांनै पाणीमैं औटाय मूंढानैधोवै पाछैधूणीलेतौ फिरंगवायजाय १५ अथवा कालोजीरो कूठ येदोन्यूंतीन तीनटांकले अरपुराणो गुड यांसूं तिगुणोले यांनैं कूटीयाकीगोली १५ करै पाछै गोली १ प्रभातगोली १ संध्याषाय तौ फिरंगवाय जाय ईंऊपर गौहांकीरोटी घृतसूं चोपडिषाय १६ इतिफिरंगगजकेसरीरसः अथवा हींगलू मासा ६ सुहागो मासा १० आकलकरो मासा १० मोममासा १० पाछैयांनै मिहीवांटि ईंकीगोलीरती १ प्रमाणकी करै पाछैबोईका कोइलामैं गोली १ येककीदिन ७ धूणीदेतौ फिरंगजाय १७ अथवा सहजणाकीवकल वडकी वकल झांउरूषकी वकल नींबकी वकल जलभांगरो

---

* फिरंगवायरोगछै. जींकै अनेकउपावकह्याछैः परंतुभिलावाकी औषधीविद्वानवैद्यकनै लै अथवावैद्य आपकी षातरीमुजब सोध्याभिलावाको उपचारकरैतौ योरोगजाय. परंतु हमारालिष्यासूं कोईबी भिलावाषासीनहीं. कारणजहरीजीनसछै. वास्तैवैद्यका हाथसै लेसी तो सुषीहोसी.

कत्थाली कचनारकी वकल यांको काढोलेतौ फिरंगवाय जाय दिन ७ में १८ अथवाहींगलूमासा ४ मैणसिल मासा ४ यांनैमिहीवां टि बोरकी लकडीकी अगनीमें मासा २ कीधूणी देनिवर्तिस्थानमें कपडोउढायतौ फिरंगवायजाय १९ इति हींगुलादिधूमगुदाकैदे अथरसकपूर मूंढे आयौहोयतींको जतन लिष्यते. पीपलीकी वकल गुलरीकी वकलले प्लक्षजो छोटो वडतीकी वकलले वडकी वकल वे तकी वकल यांको काढोकरितींका कुरलाकरैतौ मूंढाको सोजो दूरि होय २० अथवा जीरो टंक ५ षैरसार टंक २ यांनैं जलसूंवांटि छालाकै लगावैतौ मुषपाक दूरिहोय २१ इति फिरंगरोगकी उत्पत्ति लक्षणजतल संपूर्णम् अथ मसूरिकानामसीतला तींकी उत्पत्ति लक्ष ण जतनलि० कडवी वस्तकाषावासूं लूणकाषारी वस्तका षावासूं विरुद्ध वस्तका षावासूं भोजनउपरिभोजन करिवासूं घणासाकादिक काषावासूं दुष्टपवनकासेवासूं दुष्टग्रहका आवासूं देशमें सीतला का उपद्रवांसूं यांकारणांसूं ईसरीरमें लोहीनें यो दोष दुष्टकरै म सूरकै आकृति फुणस्यांनैं पैदाकरैछै. सोमसूरिका नामरोग १४ प्रकारकोछै. वायको १ पित्तको २ लोहीको ३ कफको ४ सन्नि पातको ५ चर्मज ६ रोमांतिका ७ अरसातूं धातगतरसगत ८ र क्तगत ९ मांसगत १० मेदगत ११ अस्थिगत १२ मज्जागत १३ शुक्रगत १४ अथवायकी मसूरिकाको लक्षणलि० वैंकै फुणस्यांका लीहोय लालहोय लूषीहोय ज्यांमें पीडाघणीहोय करडी होय मो डीपकै ये लक्षणहोय तदिजाणिजे वायकीमसूरिकाहै १ अथ पि त्तकी मसूरिकाकोलक्षण लिष्यते जींकैफुणस्यांलालहोय पीलीहोय

न. टी. फिरंगरोग धूम्रपानकी औषधीसूंजायछै. शरीरकै धूम्रदेकर प्रस्वेदकाढणैसूं जायछै. ईंकोपथ्यलि० अलूणौ भोजन. हलकोअन्न, आछीपवन, निर्मलसदजल कूपकोसुधस्थान. आछीवातांइ० कुपथ्यलि० षटाई लूणतीषो. गुडदूध. वैंगण. हिंगगरमवस्त षोटीहवा श्रम चिंताइ०

कालीहोय दाहनैंलीयां होय जीमैंघणीपीडाहोय अर वेगीपकै ये लक्षणहोय तदि पित्तकी मसूरिकाजाणिजै २ अथ लोहीकी मसूरिकाको लक्षण लिष्यते जीमैं अतिसारहोय अर जीमैं घणोजुरहोय अर पित्तका लक्षण होय येजीमैं लक्षण होय तीनैं लोहीकी मसूरिका कहिजै ३ अथ कफकी मसूरिकाको लक्षण लिष्यते जीमैं फुणस्यां सुपेदहोय अर चीकणीहोय अरवडीहोय अरजीमैं पाजिआवै अर मंदपीडाहोय अर मोडीपकै येलक्षण जीमैं होयतीनैं कफकी मसूरिकाकहिजै ४ अथ सन्निपातकी मसूरिकाको लक्षणलि० जीमैं फुणस्यांनीलीहोय अर मोडीपकै अर घणीहोय अर चिपटि होय अर फैलिजाय अर विचमैं षाडानैं लीयांहोय अर जीमैं पीड घणीहोय अर जीमैंराधि पडतीहोय येजीमैं लक्षण होय तीनैं सन्निपातकी मसूरिका कहिजै ५ अथ रसमैं प्राप्तिहुई जोमसूरिका तींको लक्षण लिष्यते त्वचामैं प्राप्ति हुईजो मसूरिका जकी पाणीका बुदबुदा सिरीसीहोय अर यांमै स्वल्प दोषहोय अर वेफूटै जदिवामैं पाणीनीसरै ६ अथ लोहीमैं प्राप्तिहुई जो मसूरिका तींकोलक्षण लिष्यते फुणस्यांको लालआकारहोय अर येततूकाल पकै अर त्वचामाहीं होजाय अर येही अतिदुष्ट हुई साध्यनहीछै. अर येही फूटीथकी लोहीनैं वहावैछै. ७ अथ मांसमैं प्राप्तिहुईजो मसूरिका तींकोलक्षणलि० वेफुणस्यां कठोरहोय अर चीकणीहोय अर मोडीपकै अर त्वचामांहि होय अर गात्रमैं सूलचालै अर पुजालिहोय अरमूर्छा अर दाहतिसहोय ८ अथ मेदमैं प्राप्तहुईजो मसूरिका तींकोलक्षणलि० वेफुणस्यां मंडलकै आकार होय अर

न. टी. मसूरिकारोगछै सोमसूरकी आकार औरमसूरकै रंगहोय. ललाईनैं लीयांछोटी फुणसी होयछै सोरीतमुजबछै. ईमैंदोषांका विपर्ययपणासूं रंगविरंगहोय अरु कारण सर्व विपरीतहोय सोअसाध्यतामैं प्राप्तिहोणैकीरीतछै जींनैं निगैपौंचायकर ईकोयतन करै अरु औषधी विचारकरकरै तौसुषसाध्यहोय

कोमल होय क्यूंकऊंचीहोय अर वेमें भयंकर जुरहोय अर वेफुण स्यांवडी अरचीकणीहोय अर सूलनैलीयां होय अर जीमेंसोस अर अप्रीतिहोय अरजीमें तापहोय ईमें कोईकसोजीवे ९ अथ हाडमें मींजीमें प्राप्तहुईजो मसूरिका तींकोलक्षणलि० वेफुणस्या छोटीहोय अर गात्रकी समान होय अर लूषीहोय अर चीपटी होय क्यूंक ऊंचीहोय अर वेमें मोहघणोहोय अरपीडअप्रीतिये घणीहोय १० अथ शुक्रमें प्राप्तिहुईजो मसूरिका तींको लक्षण लिष्यते वेफुणस्यां पकीसीठेठहीसूं दीसे अरचीकणी अर जीमेंघ णीघणीपीडा अरजीमें अप्रीतिहोय अरदाह अर उन्मादयेभीजी मैहोय ऐसालक्षण होयसो जीवेनही ११ अथ चर्ममें उपजीजो मसूरिका तींको लक्षणलि० वेफुणस्यां चर्ममें उपजीथकी कंठनें रो किदेछे अर अरुचिनें करेछे अरतंद्रानें करेछे. अर प्रलापनें करेछे. अप्रीतिनें करेछे या घणाजतनकीयांसूं आछीहोयछे. १२ अथ रो मांतिकीनाम रोमरोममें प्राप्तिहुईजो मसूरिका तींको लक्षणलि ष्यते. प्रथम जुरहोय रोमरोममें फुणस्यांहोय आवे क्यूंकऊची या कफपित्तसूं होयछे. इमें षास अरुचिहोय ईनेंरोमांतिका कहिजे १४ अथ मसूरिकाको असाध्यलक्षणलिष्यते त्वचामें रक्तमें मसू रिकाहोय अरपित्तसूं उपजीहोय अथवा कफसूं उपजीहोय अथवा कफपित्तसूं उपजीहोय सोतो साध्यजाणिजे यातो विनाजतनही आछीहोय १ अथ मसूरिकाको असाध्य लक्षणलिष्यते या सन्नि पातसूं उपजीहोय अर मूंगांसिरीसोजींको वर्णहोय अथवा जामु णीसिरीसोजींको वर्णहोय अथवा लोहीसिरीसो जींको वर्णहोय

न. टी. मसूरिका रोगनैं माताकहैछै. कोईदेवीकहैछै. अरु यारोगकाचौदाभेदकह्याछे सो और ग्रंथांसूं जाणजो. ईरोगमै पथ्यलि० पुराणा चावल. चीणा. मूंग. मसूर. करेला. केला. सोईजणाकीफली. तो रुद्राक्षदाडंबी गहू. घृत पौष्टिक अन्न इ० कुपथ्यलि० हवालेणी नहीं. श्रम. तेल. तीषां क्रोध षाटो गरम वस्तु लावण इ०

अथवा अलसीकाफूलसिरीसो जींकोवर्णहोय ईंका अनेक वर्णछै यामसूरिका असाध्यछै. अर ईमैं येलक्षण होयसोभी असाध्यजाणिजे १ अथ मसूरिकाको जतनलिष्यते मसूरिकाका प्रारंभकैविषै सुपेदचंदननैंभिजोय ईंकोघासोलेदिन ७ तौमसूरिका थोडीनीकलै अथवा मव्हाकोरस पीवैतौ मसूरिका थोडीनीसरै १ अथ वायकी मसूरिकाको लक्षणलिष्यते दसमूल रास्ना आंवला षस धमासो गिलवै धणौं नागरमोथो यांको काढोदेतौ वायकी मसूरिका आच्छीहोय २ अथवा मजीठ वडकाअंकूर सिरसकीवकल गुलरिकी वकल यांको घृत घालिलेपकरैतौ वायकी मसूरिका आछीहोय ३ अथवा गिलवै महुवो दाष मूर्वा दाडमकीवकल यांकोकाढो गुडनाषिदेतौ वायकी मसूरिका आछीहोय ४ अथवा मसूरिकामैं सालीकाचावल मूंग मसूर मिश्रीये षाय लूण षायनहीं थोडोसींधोलूण षाय ५ अथ पित्तकीमसूरिकाको जतनलिष्यते. पटोलकी जडको काढोलै अथवा मव्हाको रसपीवैतौ पित्तकीमसूरिका आछीहोय ६ अथवा नींबकीछालि पित्तपापडो पाठ पटोल दोन्यूंचंदन षस कुटकी आंवला अरडूसो जवासो यांको काढो मिश्री नाषि लेतौ पित्तकीमसूरिका आच्छीहोय ७ अथ लोहीकी मसूरिकाको जतनलिष्यते ईमैंलोहीकढाजेतौ लोहीकीमसूरिका आछीहोय ८ अथ कफकीमसूरिकाको जतन लिष्यते अरडूसौ चिरायतौ त्रिफला जवासो पटोल नींबकीछालि यांकोकाढो सहतनाषि देतौ कफकी मसूरिका आच्छीहोय ९ अथ सर्वमसूरिका मात्रको जतनलिष्यते पाठ पटोल कुटकी दोन्यूंचंदन षस आंवला अरडूसो जवासो यांको

---

* मसूरिका नामछै सो सीतलको आवांतर्भेदछै. सीतलाको रोग माताका उदरको कारणछै. यहरोगकी कठिणछै. घणा बालक मरिजायछै. घणा काणा. तथा आंधा होजायछै. ईंरोगकी अधिष्ठाता देवी सीतलाछै; परंतु घणा अंग्रेजी विद्वान् लोगतो ईंको यत्न घणो श्रेष्ठ करैछै. जीसूं बालक दूष पावै नहीं, षिणकर काढैछै:—

काढोमिश्रीनाषि देतो सर्वमसूरिकामात्र आछीहोय १० अथ म
सूरिकामैं कंठमैं व्रणहोय गयाहोय तींकोजतनलिष्यते आंवला म
हुवो यांको काढोकरि तीमैं सहतनाषि तींका कुरलाकरैतो कंठका
व्रण आछ्याहोय ११ अथ मसूरिकामैं आंष्यां चिपीगईहोय तीं
कोजतनलिष्यते महुवाकापाणीमैं अरंडको सेककरैतो आंषि पूलै
१२ अथ मसूरिकामैं नेत्रांमैं व्रणहुवाहोय तींको जतनलिष्यते महु
वो त्रिफला मुर्वा दारुहलद कमलगट्टा षस लोद मजीठ यांको लेप
करैतो नेत्रांकाव्रण आछ्याहोय फेरउठे व्रणहोयनहीं. १३ अथवा
वडकीवकल गुलरिकीवकल पीपलिकीवकल यांको नेत्रांकै ऊपरि
लेपकरैतो नेत्रआछ्याहोय १४ अथवा आरणाछाणाकीराषलगा
यवोजीसूं मसूरिका आछी होय १५ येसर्व जतनभावप्रकासमै लि
ष्याछै. अथ मसूरिकाको भेद सीतला तींको स्वरूप लिष्यते प्रथम
ज्ुरहोय विषम विषम कांई कदें थोडी होय कदें घणीहोय कदें सी
तलागे कदें गरम होय तींकोभीनेमनहीं पाछै मसूरिका आकारफु
णस्यांनीसरै वेबडीहोजाय ज्ुरकै तीनदिन ३ पाछै नीसरिवोकरै
दिन ७ साततांईतो ईपाछैढलैतीनैं सीतलाकहिजै. वासीतलासात
७ प्रकारकीछ. अथ सीतलाकाजतन लि० आरणाछाणाकीराष
नीचैविछाइजै सीतलापकिहोयतो १ अथवा नींबकीडालीसेंतीमा
षीउडाइजे २ ईकाज्ुरकै विषै सीतलजलपाइजै ३ सीतलानैं मनो
हरसीतलजलमैंस्थापिजे पवित्रहोय. सीतलाकोपूजनकीजै ईसीत
लामैं घणी औषदीकोजतन कीजैनहीं ४ अथवा सीतल जलसूं
हलदनैं पीवैछै तींकोसीतलाकोफोडो निपटकमहोय ५ अथवा के
लीकाजलसूं सुपेद चंदननैं अथवा अरडूसाका रससेंती महुवानैं

न. टी. मातावोदरी. भोरी जीनैं अच पडावी कहैछैं. सोये मसूरिकामैं भेदछै. अर मसू
रिका प्रसिद्धछै. यांरोगांमैं उपचारशास्त्रोक्त लिष्योछै. सो यथार्थ करणो चाहियै. अर
पथ्य अपथ्यपरनिगा जरूर चाहिजै. आराम होय.

अथवा अथवा सहतसैंती महुवानैं जो पुरष बालकनैं सीतला प्र
थमपावैतो वेंकै सीतलाको विचार कोई होयनहीं ६ अथ सीत
लावालाकीरष्याछि० जींघरमैं सीतलावालोरहै तींघरकै वारणै
नींबकापान बांधिजै. अथवाचंदन अरडूसो नागरमोथो गिलवै
दाष यांको काढोदीजै तौ सीतलाकी ज्वरजाय ७ अथवा जप होम
दान ब्राह्मणभोजन शिवपार्वतीजीको पूजन श्रद्धासूं कराजै ८
अथ सीतलाकै आगै सीतलास्तोत्र पढाजै सो स्तोत्र लिष्यते
स्कंदउवाच भगवन्देवदेवेशसीतलायास्तवंशुभम् वक्तुमर्हःस्यशेषे
णविस्फोटकभयापहम् १ ईश्वरउवाच वंदेहंसीतलांदेवीं सर्वरोगभया
पहाम् यामासाद्यनिवर्तेतविस्फोटकभयंमहत् २ सीतले सीतलेचेति
योब्रूयाद्दाहपीडितः विस्फोटकभयंघोरं क्षिप्रंतस्यविनश्यति ३ य
स्त्वामुदकमध्येतु धृत्वासंपूज्यतेनरः विस्फोटकभयंघोरंकुलेतस्यन
जायते ४ सीतलेतनुजान्रोगान् नृणांहरसुदुस्तरान् विस्फोटकविशी
र्णानांत्वमेकांमृतवर्षिणी ५ गलगंडग्रहारोगायेचान्येदारुणानृणाम्
त्वदनुध्यानमात्रेणसीतलेयांतिसंक्षयम् ६ नमंत्रंनौषधंकिंचित् पाप
रोगस्यविद्यते त्वमेकासीतलेत्रासिनान्यांपश्यामिदेवताम् ७ मृ
णालतंतुसदृशीनाभिरुन्मध्यसंस्थिताम् यस्त्वांविचिंजयेद्देवितस्यमृ
त्युर्नजायते ८ श्रोतव्यंपठितव्यंवैनरैर्भक्तिसमन्वितैः उपसर्गविना
शायपरंस्वस्त्ययनंमहत् ९ सीतलाष्टकमेतच्चनदेयंयस्यकस्यचित् कि
न्तुतस्मैप्रदातव्यंभक्तिश्रद्धान्वितायच १० इतिश्रीस्कंदपुराणेसीत
लाष्टकंसंपूर्णम् अथ सीतलाकाओरभेदलिष्यते वायकफसूं उपजीइ
सीकोद्रवाकहिजै कोदूकीसीआकृतिहोय वाकफभीहोय वेमैं अंग
अंगकैविषै गरमी होयछै सरीरसारोदरदरायो जाय यासातदिनमैं

न. टी. कारण ईमसूरिकामैं जो माताका रोगको भेदलिष्योछै. सो माताको निदान लिष्योछै. जीं मुजबध्यानमैं राषणो चाहिजै. अर ईरोगवालाकै लौकीक प्रसिद्ध उपचारछै. सो करणा. अर ऊपरका साधन करणा.

अथवा बारादिनमें औषदि विनाहीआछीहोय ईनैलोकोकमें बोद रीकहैछे. ईमें गरमीघणीहोय सरीरमें भोरीकहैछे. अरसरीरमें सर स्यूं आकारपीली फुणस्यां होय येसर्व बालकांके होयछे ये सर्व सी तलाका भेदछे इति मसूरिकानामसीतला बोदरीभोरियांकीउत्पत्ति लक्षणजतन संपूर्णम्. इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजरा जेंद्र श्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागरनामग्रंथे सीतपि त्त उदर्द कोढउत्कोढ आम्लपित्त विसर्प स्नायुकनामवालो विस्फो टक फिरंगवाय मसूरिकानामसीतला बोदरी भोरियां सर्वरोगांका भेदसंयुक्तउत्पति लक्षणजतननिरूपणंनामसप्तदशस्तरंगः समाप्तः

१८ अरक्षुद्ररोगांकीउत्पत्ति लक्षणजतनलिष्यते अथ अजग ल्लिकानाम फुणसी तींको लक्षण लिष्यते वाफुणसी चीकणीहोय सरीरकावर्ण सिरीसीहोय जींमें पीडनहीहोय अर मूंगप्रमाण होय याकफवायसूं उपजैछे. १ अथयवप्रक्षाफुणसीको लक्षण लि ष्यते यवके आकारहोय करडीहोय गठीलीहोय मांसमें रहतीहोय याकफवायसों उपजैछे. २ अथ अंत्रालजी फुणसीको लक्षणलि० वाफुणसी भारीहोय सूधीहोय ऊंचीहोय मंडलनैं लीयां होय राधि जीमें थोडीहोय याकफवायसों उपजैछे ३ अथविवृतानाम फुणसी को लक्षणलि० फाटामूंढाकी जींमें घणो दाहहोय पक्यागूलरिका फल सिरीसीहोय मंडलनैं लीयां होय ४ अथकच्छपित्तका फुणसी कालक्षणलि० पांच तथा छहगांठिहोय वेभयंकरहोय काछीवासिरी सी ऊंचीहोय याकफवायसूं उपजैछे. अथवल्मीक फुणसीको लक्ष णलि० कांधीमें होय कांषमें होय हाथमे होय पगांमें होय गलामें होय यास्थानांमें वंबीके आकारजोगांठिहोय. कुपथ्यका करिवावा

न. टी. जो साधन लिष्याछै मातामैं सोभी करणा. अर ओरभी जो लोक प्रसिद्धछै वांस्त्रियांमैं जो वृद्धस्त्री होयछै चतुर जीनैभी पूंछकर उपचार करणो जरूरछै. कारणयेभी नालक बातछै. जोसी. शास्त्रसौंडोशी शास्त्र बलवानछै.

लाकै पाछै वागांठिवधै तींकाअनेकमुषहोय वामुपमैंराधिनीसरै अरवामैं पीडाहोय अर वाऊंची होय अरवाविसर्परोगकीसी नाई फैलीजाय ईको जतनछै नहीं. ६

अथ इंद्रवृद्धनाम फुणसीको लक्षणलि० कमलकै विचैवेकर्णिकामैं कमलगट्टारहैछै. तींकैआकार फुणस्यांहोय चोफेरवोवायपित्तसूं ऊठिछै. तींनै इंद्रवृद्धानाम फुणसीकहिजे ७ अथगर्दभिकाफुणसीको लक्षणलि० मंडलकै आकार गोलहोय अरऊंचीहोय अर लालहोय अरवेमैं पीडहोय यावायपित्तसूं उपजीछै ईनैगर्दभिका फुणसी कहिजे ८ अथपाषाणगर्दभफुणसी तींको लक्षणलि० या दाढीकीसंधिमैं होयसोजानैलीयांवास्थिरहोय ईमैपीडमंदहोय अर याचीकणीहोय ईनैपाषाणगर्दभफुणसी कहिजे ९ अथ पुनसीका फुणसी तींको लक्षणलि० कानकै विचैहोय वामैंपीड घणीहोय अरवास्थिरहोय यावायकफसूं उपजीछै ईनै पुनसिकाकहिजै १० अथ जालगर्दभफुसणी तींको लक्षणलिष्यते जोसोजो पहलीथोडो होय अरओविसर्पकीसीनाईफैलिजाय अरओ पकैनहीं. अर ओ दाहजुरनैं करैछै. योपित्तसूंउपजैछै. तीनै जालगर्दभ फुणसीकहिजै ११ अथइरवेल्लिकाफुणसी तींको लक्षण लिष्यते जोमस्तगमैं गोलफुणसीहोय अरजीमैं पीडघणीहोय जुरनैंलीयां यासन्निपातसूं होयछै. ईनैइरवेल्लिकाकहिजै १२ अथकांषोलाईको जतनलक्षणलि० भुजाका एकदेशमैं अथवा पसवाडाका एकदेसमैं अथवा कांधाका एकदेसमैं कालोफोडोहोय पीडानैलीयां वायपित्तका कोपसूं होयछै

* स्नायुकनामवालो जीनैं नारू कहैछै. जीनैं डाक्टर लोक जलकी उत्पत्ति कहैछै आगै एक अंग्रेज गोडासूंधा पाणीमैं धसकर कोई तलावमैं सिकारकरवानैं धस्यो. जींकै गौडाहेटै पचास नारू दोन्यूं पगांमैं नीसऱ्या. वास्ते कोईक अकट जलगंदो झाडाकी छायामैं होयछै. जिसमैं स्नान करैतौ नारू होय. रोमका मार्गमैं बारीक जंतुका प्रवेश

ईनै कांषोलाई कहैछे. अर केई पाछणाका दोषसूं कांषमें फोडाहो
य तीनें कांषोलाईकहिजे १३ अथ अग्निरोहिणीफुणसी तींको ल
क्षणलिष्यते कांषका एकदेशमें मांसनैविदीर्ण करिवावालाफोडा
भयंकर होय अर वाफोडांमें दाह ज्वुर भीहोय अर मानुंवाफोडांमें
अंगार भरिदीयाछे ईनै अग्निरोहिणीकहिजे यासन्निपातसूं उपजी
छे. १४ अथ चिप्पनामफुणसीतींको लक्षणलि० वायपित्तहैसो न
षकामांसमें रहकरिकै दाहनै अर पाकनैं करैछे. तदि ईचिप्पनाम
फुणसीनैं पैदाकरैछे १५ अथ कुनषरोगनषजींका जातारह्याहोय
तींकोलक्षणलिष्यते वायपित्तकफये थोडाकोपकों प्राप्तहोयतदि पुर
षकै कुनषरोगनें करैछे १६ अथ अनुशयीफुणसीकोलक्षणलि
ष्यते वाफुणसी गंभीरहोय जींको आरंभ अल्पहोय सरीरकावर्ण
सिरीसीहोय पगमें ऊपरिहोय मिहीजींको कोपहोय येजीमें लक्षण
होय तीनें अनुशयीफुणसी कहिजे १७ अथ विदारिकाफुणसी
कोलक्षणलि० वाफुणसी विदारिका कंदसिरीसी गोलहोय कांषकी
संधिमें अथवा जांघकीसंधिमेंहोय अर सन्निपातसूं उपजीहोय
तीनें विदारिकाफुणसी कहिजे १८ अथ शर्करानाम फुणसीतींको
लक्षणलिष्यते कफ मेद वाययेहैसो मांसमें नसांमें प्राप्तहोय गांठिनें
सहतसिरीसी अथवा घृतसिरीसी अथवा वसासिरीसीनें पैदाक
रैछे. सोवागांठि वधीथकी मैलालोहीनें चलावैछे. अर सरीरका
मांसनें सुकायदेछे तीनै शर्कराफुणसी कहिजे १९ अथ शर्करार्बु
दफुणसीतींको लक्षणलिष्यते वादुष्टगांठि होय तीमें चेपघणोनी
सरै नानावर्णको अर बाकीनसां लोहीनें घणोस्त्रववोहीकरै तीनै
शर्करार्बुदकहिजे २० अथव्याउके लक्षणलिष्यते जींकापगघणा

न. टी. मूंढाकै नीचलो भाग होयछै जीनै अग्रभागनैं दाढी कहैछै. सो या दाढीकानी
चलाभागमैं वासमीपमैंजो कफयुक्त मंदपीडाचीकणी ग्रंथिहोयछै. जीमै शास्त्रमें पाषाणगर्द
भकी गांठकहैछै. सोवागांठस्थिरहोयछै. जतनतत्कालकरणो.

ऌषाहोय अर फिरवोकरै तीकी पगथलीमैं वायहैसो व्याउनैं करैछे २१ अथ कदर कुणसीको लक्षणलि० पगमैं अथवा हाथमैं कांकरीचूभीहोय अथवा कांटोचूभ्योहोय तींकरिकै बोरकीसीं गाठी होयजाय ऊंचीतीनै कदर कहिजे २२ अथ पारवाकोलक्षणलि० दुष्टकादाका स्पर्शकरियांथकां पगकी आंगुलीकै नीचे पाजिआवै अर ऊठे दाहहोय आवै अर पीडाहोय तीनैं पारवोकहिजे २३ अथ इंद्रलुप्तनाम लौकीकमैं उंदरीलागीकहै तींकोलक्षणलि० रोम रोममे रहतोजो पित्तसोवायकरिकै सहित वध्योथको वालानैं दूरिकरैछे. पाछै लोहीसहित कफ हैसो केंसांनैं उपजावासूं रोकिदे ईनें इंद्रलुप्त अथवा चांयलोकहिजे २४ अथ अरुंपिका योभी इहींको भेदछै तींकोलक्षणलिष्यते केंसांकी भूमिमैं पाजि घणीचालै अरवा भूमिऌषी पडिजाय कफ वायका कोपकरिकै ईनैं दारणक कहिजै. कफ अर लोही मस्तगमैं कोपकूं प्राप्तिहोय तदि मनुष्यांकै अरुषिकानैं प्रगटकरै २५ अथ जोवनअवस्थामैं सुपेदवाल होय तींकोलक्षणलि० क्रोधसेंती अथवा सोचसेंती सरीरकी गरमीहैसो सिरमैं जाय तदि पित्तहैसो केंशानैं सुपेद करिदे २६ अथ ल्हसणकोलक्षणलि० कालो अर चीकणोहोय अर वेमैं पीडनहींहोय ओकफ लोहीसूं उपजैछे. अर या सरीरकीसाथिही उपजैछे. ईनैं ल्हसणकहिजै २७ अथ मस्साकोलक्षणलि० वेंकैपीडनहीहोय कालोहोय सरीरसूं उडदसिरीसो ऊंचोहोय योवायुसूं होयछे. ईनैं मस्साकहिजे २८ अथ तिलको लक्षणलिष्यते. कालोहोय तिलकै उनमानहोय पीडजामैं नहींहोय देह बराबरिहोय ये वायपित्तकफ का आधिक्यसूं होयछे. अर घणां होयछे. यांनै तिल कहिजै २९

न. टी. कुनषनाम रोग लिष्योछै सो वोरोग हातांका अर पगांकानषांमांहि होयछै. सो वैनषजातावीरहैछै. अर जो क[illegible]वतू रहै तो ऊपर सौं ऊंचापलांडू जीसा होय जाय. वान षनीचै वैठ जाय. षाडा सापडै जाय. पीडायुक्तवीरहै.

अथन्यच्छको लक्षण लिष्यते वडोहोयछे अथवा छोटोहोय कालो होय अथवा सुपेदहोय गोलहोय पीडनहीहोय जीनैन्यच्छकहिजे ३० अथ लिंगवर्तिकाको लक्षणलिष्यते लिंगेंद्रीका मसलिवाथकी अथवा वेनें पीड्याथकी अथवा ऊठेचोटलागिवाथकी लिंगेंद्रीकेवि षे वायहैसो विचरतोथको लिंगेंद्रीकी चामडीनै उथल अर सुपारी केनीचे एकगांठिनें करिदे लंबीषाडानें लीयांवा वायसूं उपजैछे ईनै लिंगवर्तिका नामरोग कहिजे ३१ अथ अवपाटिका रोगको लक्षणलिष्यते स्त्रीकीजोनिको मूंढोनिपट सांकडोहोय तीस्त्रीकनें पु रुषहैसो हर्षथको संगकरिवानैंजाय अथवा आपका सरीरका ब लसूं तदि वेपुरुषकी लिंगेंद्रीकी चामडीउतरि जाय तीनैं अवपाटि कानामरोगकहिजे ३२ अथ निरुद्धप्रकाशरोगको लक्षणलिष्यते लिंगेंद्रीमें वाय आयधसै तदिसुपारीकी चामडीमें रहकरि सुपारी नें चामडीसूं ढकि अर मूतका मारगनें रोकदे अरऊठेही वायसूंमि लि पीडनैंकरे तदि ईनैनिरुद्ध प्रकास नामरोग कहिजे ३३ अथ मणीनामरोगको लक्षणलिष्यते निरुद्धप्रकाशरोगनें हुवांपाछे मूत कीधार विनापीड मिहीचाले अर वेकाश्रोतको मूंढो चौडो होय जाय तीनैं मणीनामरोग कहिजे ३४ अथ सन्निरुद्ध गुदरोगको लक्षणलिष्यते. मलकीवाधाका वेगनैरोकै जोपुरुष तींकै वायहैसो गुदाका बडामार्गनें छोटामार्गकरिदे तदि छोटामार्गका प्रभावसूं वेकै मैलरूपी विष्टाहैसो वडाकष्टसूं उतरे ईनै सन्निरुद्धगुदरोग क हिजे. यो भयंकरछे. ३५

अथ वृषणकच्छुरोगकोलक्षणलि० जोपुरष स्नाननही करतो होय तींकापोताकै षुजाल आवै जीमें पसेव आवै षुजालघणी

न. टी. ईग्रंथमैं जीं रोगनैं षारवाको रोग कह्योछै. जीनैं लौकीकमैं पीयांको रोग कहैछै. सोवो रोग वर्षाऋतुमैं घणो होयछै. मेहकापाणी सौं कादोकीच होय अरवैमैं उबाणा पगांसूं फिरै जींकी आंगल्यांका अग्र भागमैं षाज आवै.

चालै तदिऊठे खुजालिवासूं फोडाहोय आवे पाछे वाफोडांमें राध वहै तदिऊठे कफ अरलोहीका कोपसूं उपज्योवृषणकच्छुरोगक हिजे ३६ अथ गुदभ्रंशरोगकोलक्षणलि० मोडानीवाही अर अ तिसारयादोन्यांहीषुं पुरष षीणपडिजाय अर वेंको सरीर लूपोप डिजाय अर ओदुर्बल होजाय तदिवे पुरषकी गुदावारे नीसरि आवें तदिईनें कांचिकहिजे ३७ अथ सूकरदंष्ट्रकरोगको लक्षणलि० जींकीत्वचापकिजाय अर उठेपीड घणीहोय अर ऊठेदाह लागि जाय अर लाल जागांहोय अर ऊठेपुजालि घणीचालै अर जुर हाये आवे ईनें शूकरदंष्ट्रकरोगकहिजे ३८ अथ क्षुद्ररोगकाजतन लि० अजगल्लिकानें आदिलेर जोफुणस्यांछे त्यांको जोकांकरि लो हीकाढि नाषणो १ अथवा पक्याजोव्रण त्यांकाजोजतन पाछे लि ष्याछे सोकरिजे त्यांकरियेरोग आछ्याहोय २ अथवा फटकडी सोफकोषार यानें सीतलजलसूं मिहीवांटि यांको लेपकरेतो अज गल्लिकानें आदिलेर जो सारीफुणस्यां आछीहोय ३ अथवा मैण सिल देवदारु कूठ यांने पाणीसूं मिहीवांटि यांकोईके लेपकरे पाछे येपकिजाय तदियांके सस्त्रसूंचीरोदे यांकीराधिकाढि पाछे वेंमल्हिम कहीछे त्यांकरि येनिश्चै आछीहोय ४ अथवा सहिजणो देवदारु यांने जलसूंवांटि पाछे लेपकरेतो विदारिका फुणसीआछीहोय ५ अथ ईरवेल्लिकाफुणसीको जतनलिष्यते पित्तका विसर्पको जतनछे सो ईको जतनछे. ६ अथ पिनसीका फुणसीको जतनलिष्यते प्र थम नींबकापान बांधे ईने पकावें पाछे मैणसिल कूठ हलद तिल यांने मिहीवांठि यांको लेपकरे यांने पकावे पाछे चीरोदेईकी राधि

---

* लहसणनामरोगछै. शरीरऊपर कालो चाटो होयछै. अर गूगलारंगकोबी होयछै. लोकप्रसिद्धछै. जीनें लौकीकमैं शुभस्थान अंगपर होय जो शुभ कहैछै. अशुभमैं अशुभ कहैछै. अरु ऐसेही तिलनैं अरुमूंसानैं शुभाशुभकहैछै. परंतु चर्म ऊपरकारोगमात्रछै. वात. पित्त. कफादिकसूं होयछै. ओर तो भ्रममात्रछै.

काढे पाछे मल्हिम लगावैतौ पिनसीका आछीहोय ७ अथ पाषा णगर्दभफुणसीको जतनलिष्यते प्रथम जोकांसूं लोही कढावणो अथवा ऊन्हालेपकरे ईनें पकावे पाछे व्रणका जतनसूं ईकाजतन करे ८ अथ वल्मीकफुणसीको जतनलिष्यते ईनें पकाय ईंके ची रोदीजे पाछे लूण चित्रक यांको लेपकरे पाछे ईंकी राधिकाढिनाषे पाछे अर्बुदरोगका जतन करिईनें भरिजे ९ अथवा जोकनें आ दिलेर ईंको लोहीकढाजे १० अथवा कुलत्थकीजड गिलवे लूण किरमालाकीजड दांत्युणी निसोत यांनें पाणीसूं मिहीवांटि पाछे ग रमकरि ईमैक्यूं घृतमिलाय ईंको लेप करैतौ यापकिजाय पाछे ची रोदे ईंको मुरदार मांस काढिनाषे पाछे व्रणका आछयाहोवाकी म ल्हिमसूं या आछीहोय ११ अथवा मैणसिल इलायची अगर रक्तचंदन कूठ चवेलीकापान भिलावा छोछानींबकापान यामें तेल पकावै पाछे ईंतेलनें ईंके लगावैतौ वल्मीक फुणसी सोजासंयुक्त आछी होय १२ इतिमनशिलातैलम् अथ कांषोलाई अर अग्निरो हिणी या दोन्यांका जतनलिष्यते प्रथम जलौकासूं यांकोरुधिर क ढाजे अथवा पित्तका विसर्पको जतन सो ईंकोजतन १३ अथवा देवदारु मैणसिल कूठ यांनें बराबरिले यांनें जलसूं मिहीवांटि क्यूं गरमकरि ईंको लेपकरे अथवा ईंका क्यूंयेक सुहावता गरम कां षोलाईके पिंडीबांधेतौ कांषोलाई आछीहोय १४ अथ अवपाटि काकोजतनलिष्यते चीकणीवस्तसूं सनैसनै सुहावतो सेककरैतौ अवपाटिका आछीहोय १५

अथ निरुद्धप्रकासककोजतनलि० चूकाकारसमैं तेलनें पकाय वें तेलको सेककरे अथवा शूरकाघृतको सेककरैतौ निरुद्धप्रकास

न. टी. संनिरुद्धगुदरोगछै सो असाध्यछै. अर भय महाभय दुष्टको देवावालोछै ईंको पूर्वरूप देषकर उपचार करैतौ सुषसाध्य होय जावैछै. अर वृषण कछुरोग मध्य भयकारी छै. अरगुदभ्रंश रोगछै सो कष्टसाध्यछै. अर शूकर दंष्ट्ररोग इ०

क आछयोहोय १६ अथ सन्निरुद्धगुदको जतन लिष्यते सुहावतो गरम तेलको सेककरै अथवा वायनैं दूरिकरिवावाला तेल त्यांको सेककरैतो सन्निरुद्ध गुदरोगजाय १७ अथ वृषणकछुरोगकोजतन लि० राल कूठ सींधोल्लूण सिरस्यूं यांनै जलसूं मिहीवांटि ईंको उवटणो करैतो वृषणकछुरोगआछयोहोय १८ अथ गुदभ्रंशकांचरोगको जतन लिष्यते. गऊका घृतनै आदिलेर चीकणा द्रव्यछै त्यांसूं सुहावतो सेक करैतो गुदभ्रंश जाय १९ अथवा कमलनीका कोमलपान त्यांनै सुकायतींमैं मिश्री मिलाय टंक २ रोजीना षायतो कांचनीकलतीरहै २० अथवा उंदरांका मांसको घृततींको कांचकै लेपकरैतो कांचनीकलती रहै. २१ अथवा डांसर्‍यां चित्रक लूणर्‍यो बीलकीगिरी पाठ जवषार येबराबरिले तींकोमिहीचूर्ण करिटंक २ गऊकीछाछिसूं रोजीना लेतो गुदभ्रंशनाम कांचकोरोग जाय २२ अथवा मूसाको मांस अरदसमूलयांमैं पाणी घालि यांको क्वाथकरैपाछै ईंक्वाथमैं तेलपकायले पाछै ईंतेलकोमर्दन करैतो गुदभ्रंश कांचकोरोगजाय. गुदसूलजाय अर भगंदर येरोग जाय २३ इति मूषक तैलम् अथवा छकछूंदरीकोतेल मूषक तेलकीसीनांई करिले तींकालेपसूं गुदभ्रंसकोरोग जाय २४ अथवासमाल्लूणीकोरस बोरकी जडको रस दहीं छाछि ईंमैं सूंठि अर जवषार घृतनाषि ईंमैं पकावै पाछै ईंघृतनै टंक ५ रोजीना षायतो गुदभ्रंसको रोगजाय २५ इतिचांगेरीघृतम् अथ शूकरदंष्ट्ररोगका जतन लि० जलभांगराकीजड हलद यांनैं मिहीवांटि जलसूं जठै जठै सूरकाढ्योहोय तठै ईंको लेप करैतो शूरकी दाढको विष आछ्यो होय २६ अथ अलषनामषारवो तींको जतन लिष्यते पटोल मैणसिल नींबु गो

न. टी. रोगमूलका आवांतभेदछै. ज्यांमै विचार पूर्वक बुद्धि बलसौं उपचार करणो. अर जो ग्रंथमैं कह्याछै. जो औषध सो सरीरका बलाबल देषकर करणा योग्यछै. कारण मूलका रोगमात्र मर्मस्थान गिण्या जायछै.

रोचन कालीमिरचि तिल कव्यालीकोरस कांजी यांमे कडवो तेल पकावे पाछेपारवाकों ईंको मर्दन करैतो षारवा आछ्याहोय २७ अथवा कणगचकाबीज हलद हीराकसीस महुवो गोरोचन हरताल ये बराबरिले यांनें सहतसूं मिहीवांटि ईंको लेपकरैतो षारवा आछ्याहोय २८ अथव्याउको जतन लिष्यते गरमगरम तेल सुहावतो ईंकोसेककरैतो व्याउआछीहोय २९ अथवा मोम जवषार घृतमें मिलाय गरम गरमव्याउमें भरैतो व्याउ आछीहोय ३० अथवा राल सींधोलूण सहत घृत यासारांनें कडवातेलमें मथैपाछे यांनें व्याउमे भरैतो व्याउ आच्छीहोय ३१ अथवा सहत मोम गेरू घृत गुड गूगल राल यांनें मिहीवांटि मिलाय यांको येकजीव करि व्याउमें भरैतो व्याउआछीहोय ३२ अथवा धत्तुराकाबीज जवषार यांनें कडवातेलमै पकाय ईंतेलको मर्दनकरैतो व्याऊ आछीहोय ३३ अथकदरको जतन लिष्यते जींकापगमें कांटोकांकरी चूभीहोय तदिवेंके आंटण पडिजाय तदिवे आंटणनें तातातेलसूं सेकै अथवा आकको दूध गुडमिलाय बांधैतो कदरको रोगजाय ३४ अथ तिलका जतन लिष्यते सरस्यूं साजीहलद केसरि यांने मिहवांटिजलसूं उवटणोकरै पहली छूरीउगैरै सूवानेंरगड उवटणो करैतो सरीरकातिलजाय.३५

अथ मस्साका जतन लिष्यते साजीचूनो साबण जलमैवांटि मस्साकै लगावैतो मस्सादूरिहोय ३६ अथ जनूमणीनाम लसण तींको जतन लिष्यते ल्हसणनें पाछणासूं रगडै ईंऊपरि सरस्यूं हलद कूठ साजी जवषार केंसरि यांनें पाणीसूं मिही पीसि यांको उवटणो करैतो ल्हसण जाय ३७ अथ चेप्यानाम रोगको जतनलि०

न. टी. ज्यांको भलै प्रकार लेपादिक वा धूम्रादिकवा औषद्यांका आसेचनवा जुलावादिक. वमनादिक सौं रोगको जोर कमतीकर पछै उपचार धीरज सौं जो वैद्यकरसी ज्यांनै यशमान वडाई मिलसी. परंतु देसकाल वयविचार करसी ज्यांनैं.

ईरोगविषै जलौकानैं आदिलेर त्यांसूं रुधिर कढावणो अथवा सुपारीकीराष काथो कपेलो मुरदासींगी नीलोथूथो यांको भूरको करि लगावै. तौचेप्योजाय ३८ अथवा लोहकापात्रमैं हरडैनैं हलदका रससूं रगडै पाछै ईनेगरमकरि लगावैतौ चेप्योजाय ३९ अथ कुनषरोगको जतन लिष्यते सारमासो १ सहतसूं रोजीना षायतो अथवा कुटकीको साधनकरैतौ कुनषरोगजाय ४० अथ मस्सा तिल लसण यांको दूसरो जतनलि० हिंगलु सेक्यो नीलोथूथो ये दोन्यूं पईसा १ भरिले सिंदूर टंक १ रालटंक ७ यांसारांनैंछ ६ टका भरयागऊकाघृतमैं कांसीकी थालीमैं लोहकादंडसूं अथवा तांबाका घोटासूंदिन ३ रगडै तदिओ काजलसिरीसो होजाय तदिईको लेपकरैतौ मस्सा ल्हसण सारवा फोडा पुजालि येसर्व जाय ४१ अथवा कालीजीरी टंक २ नोसादर टंक ५ सींपकोचूर्ण टंक ७ नीलोथूथो टंक २ यांसारांनैं मिही पीसि यांकै अरणीका रसकी पुट ३ देपाछै जलभांगराकारसकी पुट ३ देपाछै तावडै सुकावै पाछैवाछडीका मूतसूं ईंकी गोलीबांधै पाछै वाछडाका मूतसूं इहीगोलीनैं घसि अर मस्साकै ल्हसणकै लगावैतौ तिल मस्सालसण येसाराजाय ४२ अथ पुजालिको जतन लिष्यते लोहका पात्रमें लोहका घोंटासूं आंवलाषार गंधक पारो नीलोथूथो येतीन्यूं येक येक भाग वधताले त्यांनै गऊकाघृतमैं रगडै पाछै यांको लेप करैतौ पुजालि दूरिहोय ४३ अथ जोवनअवस्थामैं सुपेदबाल होय तींको जतन लिष्यते लोहचूर टंक २ आंवकीगुठली टंक २ आंवला २ वडीदोयहरडैकोचूर बहेडो १ यांसारांनैं मिहीवांटि लो

---

* व्याउरोग प्रसिद्धछै पगांकी एडीमैं होयछै. सीतकालमैं पगकाटै जींकै वास्तै राल तोलो १ तेलतीलीको तोलो १ तेल कुडछीमैं काठो गरम करै तेलमैं रालमिलाय गरमागरम कै मांहिजलमिलाय हलावो करै जद एकजीव होय मलहम होयछै. व्याऊमैं भरैतौ आराम होय.

हकापात्रमैं भांगराकारससूं दिन २ भिजोय राषै पाछै सुपेद केसां कै लेपकरैतौ स्यामहोय ४४ अथवा केतकीकीजड अथवा केवडाकी जड सहजणाकाफूल कुंभेरकीजड लोहचूर जलभांगरो त्रिफला यांसारानें तेलमै पकाय पाछै लोहकापात्रमैं घालि पाछै पृथ्वीमैं महिनो १ गाडीराषै पाछै ईतेलनै सुपेद वालांकै लगावैतौ बाल काला होय ४५ अथवा त्रिफला नींबकापान लोह चूर जलभांग राको रस गाडरीकोमूत यांनैमिहीवांटि सुपेद वालांकै लगावैतौ बालश्याम होय ४६ अथवा पापडोषार मासो १ सिंदूरमासो १ मुरदा सिंगीमासो १ षावाकोचूनो मासो ८ त्यांनैंसिलाऊपरि पाणीसूं घडी ३ निपटरगडै ईंको रंगकालो नषऊपरि आवै तदिसुपेदकेंसांकैलगावैतौ केस कालाहोय ४७ अथवा माजूफलले नवा मोटात्यांनैं भोभलीमैं सेकीलेवैफाटे जठातांईवांनैं बलवादे नही इसीचतुराईसूं सेके पाछै माजूफलतौ १ लेसींघरासीमासो १ लेनी लोथूथोरती ४ लेनौसादररती ३ लेलवंगारती २ फिटकडीरती २ लोहचूरमासो १ यांसारांनैं आंवलाकारसकापाणीमैं लोहकाकडछलामैंलोहकाघोटासूंपहर १ रगडै पाछै वेंकोरंगनषऊपरआवै तदि सुपेदकेंसनैं आंवलाकापाणीसूं धोवैकेंसांऊपरि यांकोजाडो लेपकरैलेपऊपरि अरंडकापानबांधै पहर १ राषै पाछै आंवलाकापाणीसूं धोयनाषैतौ केंस काला होय ४८ अथवा षावाको चूनो अथवा अहरणकीराष अथवा कोंड्याकीराष तीनैं सीसासूंरगडै ईमै क्यूं गोपीचंदननाषै मुरदा सिंगिमासो १ नाषै पाछै रगडै अर नषकै कालोरंग आवै तदि ईंकोकेंसांकै लेपकरै ऊपर अरंडकापानबांधै तौकेंस कालाहोय ४९ अथ उंदरीलागीहोय तींको जतन लिष्यते

न. टी. सर्वसुषप्राप्तिहोसी और जो रोगनिदानयुक्त कह्याछै ज्यांकासाधन युक्त उपावछै अरचेप्याको रोगछै. सो चेपलागकर वृद्धि पावैछै जीमैं दाहघणो रहैछै. अर वेगो घणो वधैछै जींको उपचार दाह सांतिको करणो बालकांकै घणो होयछै.

पटोलका पानाकारसमैं कुटकीनैं वांटि ईंको लेपकरैतौ बालगया होय जठैबालउगिआवै ५० अथवा हाथीदांतकीराष बकरीकादूध मैं मिलाय लगावै तौ बालउगिआवै ५१ अथवा कमलकीजड दाष तेल घृत दूध यांसारांनैं वांटि लेपकरैतौ बालउगिआवै. ५२ अथवा चवेलीकापान कणगचकीजड कनीरकीजड चित्रक यांमैं तेल पकावै पाछै ईंतेलको मर्दन करैतौ बालउगिआवै ५३ अथ चांयकोजतन लि० चिरंजीनैं कडछलामैं बालिसजीवतीसी पाछै वेनैं वांटिलेपकरैतौ चांयकोरोगजाय ५४ येसर्व जतन भावप्रकासमैंछै. इतिक्षुद्ररोगांकीउत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्

अथ सिरनाममस्तगरोगकीउत्पति लक्षण जतनलिष्यते मस्तककारोगइग्यारा ११ वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ लोहिको ५ क्षीणपणाको ६ कृमिको ७ सूर्यावर्तको ८ अनंतवात ९ संकनामकनपटी दूषवाको १० अर्द्धावभेदक ११ येइग्यारा प्रकारका मस्तगकारोगछै. सोमुण्यतौ दुष्ट भोजनसूं होयछै. १ अथ वायका सिरोरोगको लक्षणलिष्यते जींकामस्तगमैं विनाकारणही घणीपीडहोय अर रात्रिमैं निपटघणीहोय अर ओषदीका लेपकर्यां सेककर्यां आरामहोय तदि जाणिजे वायकी पीडाछै. १ अथ पित्तकासिरोरोगको लक्षणलिष्यते जींकोमाथो अग्निसिरीसोबलै अर सिरकाटूकहुवाजाय अरजींका नेत्रमैं पीडाहोय घणीफुटवासिरीसी अरसीतपणाकरि रात्रिमैं विशेष होय तदि जाणिजे पित्तकीपीडाछै. २ अथ कफकासिरोरोगको लक्षणलिष्यते जींको मस्तगकफसूं लीप्यौ थको होय अर भार्यौहोय अर ठंडोहोय अर आंष्यांकै नासिकाकै मूंढाकै जींकै सोई होय अरजींको शिरबलै

न. टी. जींकै ऊपरै तथा ऊसुरणीकै ऊपरि तथा आगियाकै ऊपरै अथवा इसाहीकोई अग्निजिस्याजल्यांकीसीनाईंपीडा होयछै. जींकै सुगरलेट नामकी औषधी सुपेद. सुपेदाजी सी होयछै. इंग्रजी औषधीछै.

ये लक्षण होय तदि जाणिजे कफकी पीडाछे ३ अथ सन्निपातका सिरोरोगको लक्षण लिष्यते ये पाछे कह्यासोसारालक्षण जींकै होय तदि जाणिजे सन्निपातकी पीडाछे ४ अथ लोहीका सिरोरोगको लक्षणलि० जीमे पित्तका लक्षणसारामिले अर हाथको स्पर्श मस्तगकै सहैनही तदि जाणिजे रक्तकी पीडाछे ५ अथ षीणपणासूं उपज्योजो सिरोरोग तींकोलक्षण लि० सरीरकोबल जातो रहै तदि मस्तगरीतो पड जाय तदि सिरबलै अरमस्तगमैं घणीपीडा होय तदि जाणिजे षीणपणाकीपीडाछे. ६ अथ क्रमिपणासूं उपज्यो जो सिरोरोग तींको लक्षणलिष्यते जींकोशिरघणी पीडाकूं प्राप्तिहोय अरघणो फुरकै अर जींकानाकमैंकरिलोही अर राधिघणोनीसरै अर वेंको सिरनिपटघणोबलै ये लक्षण जीमै होय तदि क्रमिकीपीडाजाणिजे ७ अथ सूर्यावर्तरोगको लक्षण लि० सूर्यकाउदय होवताही सिरकैविषै मंदमंदपीडाहोय अर ज्यूंज्यूंदिन चढै त्यूंत्यूं पीडा वधै दोयपहरांतांई अर आंष्यांमैं भवारामे पीडा घणीहोय अर दोय पहरांपीछे पीडाकम होतीजाय ईनै सूर्यावर्त कहिजे ८ अथ अनंतवात सिरोरोगको लक्षणलिष्यते वाय पित्त कफ येतीन्यूं दोष दुष्ट हुवाथकाकांधीकैविषै घणीपीडाकरै अर नेत्राकै विषै भवारांकैविषै कनपट्यांकैविषै निपट घणीपीडाकरै दाढीनैं हलावादेनहीं अर कपोलकैविषै कांपणीकरै अर नेत्रविकार करै अर सिरकैविषै पीड घणीकरै ईनै अनंतवात कहिजे ९

अथ संषनाम कनपट्टीदूषै तींकोलक्षणलि० पित्त अर लोही अरवायये दुष्ट हुवाथका कनपट्टीमैं पीडघणीकरै अर कनपट्टीनैं लालकरिदे अर सरीरमैं दाहकरै सिरका टूककरै गलानै रोकदै

न. टी. जीनै पाणीमैं भिजोयजीमैं कपडो डुबायकर ऊपर आलोको आलो राषै तौ आराम होयछै. दाहकमती होय. वालकनै चैन होय. रोगसुषजावै. याऔषधी जसदकी वणैछै. अर अंग्रेजीमैं प्रसिद्धछै.

ईनै संषनाम सिरोरोग कहिजे ईरोगवालो तीनदिनजीवे १० अथ अर्द्धावभेदकसिरोरोगको लक्षणलिष्यते लूषीवस्तका षावासूं भोजनऊपरि भोजनकरिवासूं पूर्वकापुन्यसूं घणा मैथुनकरिवासूं मलमूत्रकारोकिवासूं षेदका करिवासूं यांसूं वायपित्त हुवो कफनें ग्रहण करे ओवाय कांधीनें भवारांनें अर कनपट्यांनें काननें नेत्रांनें ललाटनें यांसारांहीनें आधाआधाहीनें ऐसी पीडाकरे मानूसस्त्रकी वज्रकी लागीछे ईनै अर्द्धावभेदक कहिजे. अर यापीडानेत्रांमें कानांमें घणी वधीथकी मनुष्यांनें मारिनाषे ११ अथ वायका सिरोरोगको जतनलिष्यते वायकातेल अथवा सादोयेहीतेल त्यांका मर्दनकरे अर वायनें दूरिकरिवावाली वस्तांने षायतो वायकोसिरोरोगजाय १ अथवा खारकुठार रसकी नासलेतो नानाप्रकारकी सिरकी पीडाजाय २ अथवा उडदांकाचूननें जलमें ओसणि वेकी रोटीकरे वेरोटीने पहर १ सिरकै बांधेतो सिरकीपीडा दूरिहोय ३ अथ सिरोबस्तिलि० सिरकै ऊपरि उडदांका चूनकी पाणीमें ओसणि बाडकरे अंगुल १६ की अथवा अंगुल ८ कीतीनें गरमतेलसूं पूर्णकरि ओतेल पहर १ अथवा घडी ४ माथाऊपरि निश्चलबैठि राषेतो वायका सिरका रोगांनें डाढांका कांधीका कानका माथाका यांसारांरोगांनें योशिरोबस्तिदूरिकरैछे ईनें दिनपांच सातसेवनकरैतो ५ इतिशिरोबस्तिसंपूर्णम् अथ पित्तका शिरोरोगको लक्षणलिष्यते चंदन कमलगट्टा यांनें सीतलजलसूं वांटि येलेपकरैतो पित्तकी मथवायजाय ६ अथवा १०० सौवारको धोयो घृत तींको लेपकरैतो पित्तकी मथवाय जाय ७ अथवा खारकुठार

* क्रिमिरोगमस्तगमैं होयछै. सोमहादुष्टछै. अरजींका अनेक उपावछै. परंतु मुंडापाती नाम औषधी होयछै. लोगप्रसिद्धछै. जींकै फलनहींछै. परंतु जींकीडालीमैं. पेडमैं गांठा होयछै पीली गांठजीमै फुलसुपेद कुंदासिरीसी गांठ होयछै. जींऔषधीनैं वाफकर मस्तगमैं बांधै तौ आराम होयछै.

रसकपूर केसरि मिश्री चंदन यांनैं बकरीका दूधसूं वांटियांको लेप करैतौ पित्तकी मथवायजाय ८ अथवा सूंठि अर गुड यांदोन्यांनैं पाणीमैं वांटियांकी नासलेतौ सर्वप्रकारकी मथवायजाय ९ अथ लोहीकी मथवायको जतनलि० पित्तकी मथवायका अर ईंका जतन एकछै ईमैं लोहीछुडावो विशेषछै. १० अथ कफकी मथवायको जतनलि० ईमथवायमैं लंघनकरावो जोग्यछै. अथवा कफहारी औषद्यांत्यांनै वांटि त्यांका गरमलेपकरैतौ यामथवाय जाय ११ अथ सन्निपातकी मथवाय सन्निपातनैं दूरिकरै त्यां औषद्यांको लेपकरै अथवा वां औषद्यांनैं षायतौ यामथवायजाय १२ अथ षट्बिंदुतैललि० अरंडकीजड तगर सौंफ जीवंती सींधोलूण रास्ना जलभांगरो वायविडंग महलौठी सूंठि तिलांकोतेल यां औषद्यांसूं अठगुणोले तेलसूं चौगुणो जल भांगराको रसलै तेलसूं चौगुणोही बकरीकोदूधले पाछैयां सारांनैं एकठांकरि मधुरीआंचसूं कडाहीमैं पकावै येसर्व बलिजाय तेलमात्र आयरहै तदि ईंतेलकी नाकमैं बूंदछै ६ कीनासलेतौ सिरकाविकार साराजाय अर दांतांकारोग नेत्रांकारोग साराजाय १३ इतिषट्बिंदुतैलम् अथ षीणपणासूं हुवोजो मथवाय तींको जतनलिष्यते तीनैं षीणपणानैं दूरिकरै इसा जतनकरयां यामथवायजाय १४ अथक्रिमिसूं उपजीजो मथवाय तींकोजतनलि० सूंठि मिरचि पीपलि किरमालाकी जड सहजणाकाबीज येबराबरिले यांनैं बकरीका मूतमैंमिहीवांटियांकी नासलेतौ माथाकीक्रिमिजाय १५

अथ सूर्यावर्त नाम आधासीसी तींको जतन लिष्यते दूध अर घृत यांनैंमिलाय यांकी नासलेतौ आधासीसीजाय १६ अथवा

न. टी. मस्तक रोगमैं ग्यारारोगछै. ज्यांकानाम अर निदान अरचिकित्साविधिपूर्वक ग्रंथमै लिषीछै जीमै कोई कोई तो साध्यछै. कोई कष्टसाध्यछै. कोई असाध्यछै. सो मनुष्य कौं उपचारविनामारी नाषैछै. जींको यत्नयथार्थ करणो.

गुडका घृतका मालपुवा षायतौ अथवा षीरषाय अथवा तिलांको सेककरावैतौ आधासीसी जाय १७ अथवा जल भांगराको रस बकरीको दूध येबराबरिले त्यांनैं तावडासूं गरम करै पाछै ईंकी नासलेतौ आधासीसी जाय १८ अथवा सींगीमोहरो आफू आकर्कीजड धत्तूराकी जड सूंठि कूठ ल्हसण हिंगयांनैं गोमूतमैंमिही वांटि गरमकरि माथाकै लेपकरैतौ आधासीसी जाय १९ अथवा ईनैं जुलाबदीजैतौ आधोमाथो दूषतो रहै २० अथवा गरम भोजनसूं यो आछ्यो होय. २१ अथवा वायविडंग कालातील ये दोन्यूं वांटियांको लेपकरैतौ आछ्यो होय २२ अथवा मिश्री दूध काचानारेलको पाणी येसर्व मिलाय यांनैं पीवैं अथवा ईंकीनासलेतौ आधासीसी अर आधोमाथो दूषवोयेदोन्यूं आछ्या होय २३ अथ अनंतवातसिरोरोगको जतन लिष्यते आधासीसीको अरईंको जतन एकछै. अथवा माथाकीनसकीशीर छुडावै तौ यो आछ्यो होय अथवा सहतका मालपुवाषायतौ अनंतवातसिरको रोगजाय २४ अथ पथ्यादिक्काथ लिष्यते हरडैकी छालि वहेडा आंवला हलद गिलवै चिरायतौ नींबकीछालि गुड ये सर्व बराबरिले यांनैं जौकूटकरि ईंको काढो लेतौ भंवारादूषवो कनपट्टीदूषती नेत्रांकारोग आधोमाथो दूषतो ये रोग जाय अथवा ईंकी नासलेतौ २५ इतिपथ्यादिकक्काथः अथकनपट्टी दूषती होय तींको जतन लिष्यते दारुहलद हलद मजीठ गौरीसर षस कमलगट्ठा यांनैंसीतल जलसूं मिहीवांटिकनपट्यांकै लेपकरैतौ कनपट्टी आछी होय २६ अथवा सीतल जलसूं सीतल औषदिको लेपकरै तौ कनपट्टी आछी होय २७ अथवा महलौठी उडद ये दोन्यूं बरा

न. टी. मस्तककी व्याधी परषट् बिंदुतैल लिष्याछै. सोयोतेल यथोक्तरीतसौं करै अर ईंकासिद्धहुया तेलका टोंपा ६ छ एक एक नाककी नसोंडीमैं जुदाजुदा घालै जीनैं षट्बिंदु तैलकहैछै. सो प्रसिद्धछै. अर जीवंतीनैं जीवापोता कहैछै.

बरिले यांको चोथोहींसो सींगीमोहरोले पाछे यांनैमिहीवांटि ईनै सरस्यूंप्रमाण सूंघेतो सर्वप्रकारकी सिरकी व्यथा दूरिहोय २८ अथवा आंवलो सींपाको चूनो अर नौसादर यांनै हथेलीमें मथै ईकी नासलेतो सर्वप्रकारकी सिरकीव्यथाजाय २९ अथ आधा सीसीको और जतनलि० मिश्री केसरि यांनें घृतमेसेकि पाछे ईकी नासलेतो आधासीसी कनपट्टीदूषवो कानको भंवाराको नेत्रको दूषवो येसारारोगजाय ३० येसर्व जतन भावप्रकासमैं लिष्याछे अथवा सूंठि मिरचि पीपलि पोहकरमूल हलद रास्ना देवदारु आसगंध यांको काढोलेतो सर्वप्रकारका माथाका रोगजाय ३१ अथवा मिश्री अर ईसूं आधीदाडमकीकली यांनें मिहीवांटि ईकी नासलेतो माथाकी पीडाजाय ३२ अथवा मुचकुंदका फूलांको लेप करैतो मथवाय जाय ३३ अथवा कूठ अरंडकीजड यांनै कांजीसूं वांटियांको लेपकरैतो मथवायजाय ३४ अथवा देवदारु तगर कूठ षस सूंठि तिल यांनें कांजीमैंवांटि यांको लेपकरैतो मथवाय जाय ३५ अथ आधासीसीको औरजतनलिष्यते मिश्री अर मेंढल* यांनें गोमूतसूं मिहीवांटि ईकी नासलेतो आधासीसीनें आदिलेर सर्व जाय ३६ अथवा सुसाका सोरवामें मिरचिनाषि भोजन पहली दिन ७ षायतो आधासीसीनै आदिलेर सर्वरोग जाय ३७ येसर्वजतन वैद्यरहस्यमैछे. अथवा चंदन लवण सूंठि यांनें पाणीमे मि

न. टी. सूर्यावर्त नाम मस्तक रोगछै सो अर्ध सीरसी आधासीसीकहै. जींका जतनमैं औषधी नसको डामणो. लेप. नस्य. तंत्र. मंत्र. घणाहीछै. परंतु प्रभात अर्ध सूर्योदयसमय शुद्धवानी सौं मस्तक चांकैछै. जो मंत्र पृष्ठ ३८२ कै लिष्याछै.

* मेंढलनाम फलछै. जीनैं लौकीकमैं प्रसिद्धनाममेंडफल कहैछै. सोमेंडफल मिश्री की साथ घसकर गोमूत्रमैं अथवा कांजीका पाणीमैं गरम करै अथवा अदरककारसमैं अथवा नागर वेलकारसमैं अथवा चित्रककारसमैं यांरसामैंसूं कोईबी मिलै जीमैंघसकरलगावैतो आराम होय.

हीवांटि लेपकरैतौ मथवायजाय ३८ अथवा आबकीछालिको लेपकरैतौ घणीभी मथवायजाय ३९ अथवा जलभांगराकोरस कूठ गऊकोमाषन यांतीन्यांनै वांटियांको लेपकरैतौ घणीभी मथवाय जाय ४० अथवा पीपलि मिरचि लोद येबराबरिले यांनै मिहीवाटि यांकीदिन ३ नासलेतौ आधासीसी उगैरै मथवायजाय ४१ अथ कपालकाकीडाको जतन लिष्यते कडवाककोडाकापानाको रस तींकी नासलेतौ कपालकाकीडाजाय ४२ अथवा पीपलि आंधोझाडो सरस्यूं आककीडोडीकाबीज यांको सीतल जलसूं लेपकरैतौ मथवाय जाय ४३ ये जतन वैद्यवल्लभमैंछै. अथ माथाका केसवधिवाको जतन लिष्यते छडछडीलो कूट कालातिल गोरीसर कमलगट्टायांनैं सहत अर दूधसूं मिहीवांटियांको लेपकरैतो माथाकाकेसवधै ४४ अथवा चिरम्यानैं मिहीवांटि तीनैंजल भांगराकार समैं योचूर्ण अरतिलको तेल पकावै ईतेलमैं इलायची छड कूठ मिलाय ईतेलको मर्दनकरैतौ केंसवधै. ४५ अथवा छड षरैंटी बोलसिरीकीछालि आंवला कूठ यांनैं जलमैं मिहीवांटि यांको लेपकरैतौ केंसवधै ४६ अथ मथवायको ओर जतन लिष्यते लवंग मिरचि हिंग यांतीन्यांकूं जलसूंवांटि चणाप्रमाण नासलेतौ मथवाय निश्चै जाय ४७ अथ अर्धासीसीका दूरिहोवाको सिद्धमंत्र लिष्यते ॐन* मोकालीदेवीकिलिकिलेवासीमृधोभ्यासे हणवंतवीरहाकमारै आधासीसी अधकपालीनाशै जाजारे पापणी जाजारेहित्यारी न जायतो तारागुरुनीआज्ञा हनुमंतवीरनीआज्ञा गरुडपंषनीआज्ञा मेरीभक्ति गुरुकी शक्तिफूरोमंत्रईश्वरोवाचा ईमंत्रसूं माथाकै वार २१ सनैसनै फूंकदेतौ ईसूं आधासीसीनिश्चैजाय अर ईमंत्रनैं कृष्णपक्षकीचौदस

न. टी. उनमो अंजनानंद दुष्टनिकंदहनुमंत वीरकी हाकजागै तो आधासीसी भागै नहीं भागै तो गुरु गोरषनाथकी आग्याफिरै गुरुकी शक्ति हमारी भक्ति चलो मंत्र ईश्वरोवाचा ईमंत्र सौवार २१ शुद्ध होकर सूर्योदय समयवानी सौंचाकै.

१४ केदिनशक्तिमाफिक जपिवो करैतो इहमंत्र सिद्धरहै. ४८ अथ दूसरोमंत्र ॐ नमो आधासीसी हुंहूंकारी पहरपचारी मुषसुंदिपाट लेमारी असुकारे सीसरहै मुषमहेश्वरकी आज्ञाफुरे ॐठंठंस्वाहा वार २१ मंत्र जपै अंगुली मस्तगऊपरि फेरैतो आधासीसीजाय ४९ इति मस्तकरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम् अथ नेत्रांका रोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते प्रथम नेत्रको मंडल छ सो दोयअढाई अंगुलप्रमाणछै. अथवा आपका अंगुठाकाउदर प्रमाणछै सोनेत्रमंडलमैं चोराणवें ९४ रोगछै. सारंगधरका मत सूं अर केईक आचार्यांकामतसूं अंठतर ७८ रोगसुष्यछै. दृष्टिमैं तो १२ रोगछै. नेत्रमै २ दोयरोगछै. और नेत्रकी काली जागांमैं ४ रोगछै. नेत्रकासुपेदभागमैं ११ रोगछै. नेत्रकामार्गमैं १९ रोग छै नेत्रकीवाफण्यांमैं २ रोगछै. नेत्रकी संधिमैं ९ रोगछै. सर्वनेत्र मै १७ रोगछै. ऐसै नेत्रकैविषै ७८ रोगछै. येचरकमै लिष्याछै. सुश्रूतमैं ७६ लिष्याछै. वायका १० पित्तका १० कफका १३ लोहीका १६ सन्निपातका २५ नेत्रांकैवारै २ ऐसा ७६ लिष्याछै. अथ नेत्रांका रोगांकी उत्पत्तिलि० तावडानैआदिलेरसरीरमैं गरम हुई होय पाछै नदी तलाव बावडी उगैरै जो जलतीमैं पुरुष प्रवेश करैतीसूं अथवा दूरीकादेषिवासूं दिनकासोवासूं पसेवमैं नेत्रामैं रजपडैतीसूं नेत्रांमैं धूवांजावासूं छर्दिकारोकिवासूं घणावमनका करिवासूं गरमवस्तकाषासूं कांजीकुलत्थउडद यांकाषावासूं अधोवाय मलमूतयांकारोकिवाकरि रितुका विपरीत पणांकरि क्लेशकाकरिवासूं घणांमैथुनकाकरिवासूं आंसूकारोकिवाकरि सूक्ष्मवस्तुकादेषिवाकरिईनै आदिले रजोवस्ततींका करिवाकरियांवस्तासूं नेत्रांका

म. टी. सोवोमनुष्य ईसीमनमैं विचारैछै इस्याजीबासौंतो मरवोचोषोछै. परंतुधीरजराषकर यारोगको उपचारकरै. अर शुद्धताईसौं. आपका इष्टदेवकोवा सूर्यनारायणको आराधन करै तौ आराम होय. सरीर सुखपावे.

७६ रोगपैदाहोयछै. अथ प्रथमदृष्टिकारोगलिष्यते दृष्टिकहजे क हांतींको लक्षण नेत्रमंडलकैविषै कालीजागांमैं मसूरिकाकीडालि प्रमाणयेक माणस्योछै. सो ओमाणस्यो पांचमहाभूतांसूं उपज्यो छै. अर ओ आग्यासरीसो चमकै छै. अर ओ अविनासी जोतेज ततूसरूप ओसिद्धछै. अर ओईनेत्रगोलामैं चारिपटल करिदेछै. पटलकहिजे कांदाकाछौंत सिरीसीझिल्ली तींकरिकै यांसारी आंषि आच्छादित होयरहीछै. अरवादृष्टि निपटसीतलरूपछै. ईनेबुद्धिवा न् दृष्टिकहैछै. सोयादृष्टिजलकै अरलोहीकै आधारछै. ईदृष्टिकै च्यार पटलछै प्रथमपटलतो तेज अर जल त्यांको आश्रयछै दूस रोपटल मांसकै आश्रयछै. तीसरोपटल मेदकै आश्रयछै. तीमैते ज जल मांस मेद अस्थि यांपांचकै आश्रयछै. अथ प्रथम पटलमैं हुवोजोरोग तींकोलक्षणलि० प्रथमनेत्रका पटलकीदृष्टिमैं जोरोग रहैछै तींपुरषनैं कदेकजथार्थसांगोपांग दीसैनहीं पहलापटलमैं दो षथोडोरहैछै. अथ दूसरापटलमैं हुवोजोरोग तींकोलक्षणलिष्यते जींका नेत्रका दूसरा पटलमैं आयो जोदोष तीनैं माषी माछर कें सयांका समूहदीसै दूरिका निकट दीषै निकटका दूरिदीषै दृष्टि भ्र मतीरहै अर घणा जत्नसूंभी सुईको छेद्रदीसैनहीं क्यूंदृष्टिहै सोघ णीविव्हल होजाय २ अथ तीसरापटलमैं हुवोजो दोष तींकोलक्ष ण लिष्यते तीनै ऊंचोदीसै अर नीचाको दीसैनहीं रूपका समूह भी दीसैनहीं जाणिजे वस्त्र आडो आयगयोछै कान नाक नेत्र ये ओरसादीसै दृष्टिमै दोषघणो आयरह्यो होय तोनीचरलीवस्त ऊ परदीसै ऊपरली वस्तनीचैदीसै अर जींका नेत्रका पसवाडामैं दो षहोय तीनैं पसवाडाकी वस्त दीषैनहीं अर नेत्रकै च्यारूं ओर

न. टी. अनंतरनेत्रांकारोगांकानिदानलक्षणनामग्रंथकर्ताशास्त्रकीरीतसौं वर्णनकियाछै. सोसुज्ञलोगांनैविचारकरणायोग्यछै. कारणयाशरीरकीसर्वसुखदाईनेत्रांकरिकैछै. अरयांनेत्रां मैं जोअविनासीजोतछै. सोमनुष्यज्ञानको मूलछै.

रहतो जो दोष तीनैं आकुल व्याकुल चकचौंधोदीसै अर दृष्टिम
ध्य रहतो जो दोष तीनं वडाको छोटोदीसै अर दृष्टिमें स्थित जो
दोस तीनै पसवाडाका एकका दोयदीसै दोयका तीनदीसै अर घ
णाहोय त्यांकीगिणती आवैनही ईसादीषै येलक्षण तीसरापटलका
दोषका जाणिजे ३ अथ चतुर्थ पटलमें हुवोजो दोष तींकालक्षण
लिष्यते चौथा पटलमें उपज्यो दोसतीनैं लौकीकमें तिमर कहेछे.
अर ईने केईक आचार्य ईवैद्यक शास्त्रका जाणिवावाला ईचौथाप
टलकारोगनैं लिंगनास कहिजे. कहा यां नेत्रांकी तेजोमयी जो पु
तली सो नीलीकांच सिरीसी होजाय अर ईमें लक्षणहोय क्यूंई
पटलमें दोष घणो होयछे सूर्य चंद्रमा नक्षत्र आकाश बीजली ये
निर्मल तेजछे सोभी आछ्यादीसैनहीं येसाराही भ्रमताहीदीषै सो
ईदोषनैं तिमिर कहेछे अथवा ईनैं लिंगनास कहेछे अर लौकीक
में ईनैं निर्जलो कहेछे केईक मोतियाबिंद कहेछे ४ अथ ओर शा
स्त्रकामतसूं ईलिंगनास अर मोतियाविंदको लक्षणलिष्यते योलिं
गनास मोतियाविंदरोग ६ प्रकारकोछे वायको १ पित्तको २ क
फको ३ सन्निपातको ४ लोहीको ५ परिम्लानको ६ परिम्लाय
ननाम लोहीसूं मूर्छित हुवोजोपित्त तींकोछे अथ वायका लिंगना
सको लक्षण लिष्यते जींके बायको लिंगनासहोय तीनैं संपूर्णव
स्त भ्रमतीदीषै अर सर्व वस्तमलीनसीदीषै अर सर्ववस्तक्यूं येक
लालदीसै अर सर्ववस्त कुटिलनाम बांकीदीषै तदि जाणिजे ईकै
वायको लिंगनासछे १ अथ पित्तका लिंगनासको लक्षणलिष्यते
पित्तको लिंगनासजींकै होय तीनै सूर्यचंद्रमानक्षत्र आग्या इंद्र
को धनुष्य वीजली येसारा भ्रमतादीसै यासर्व वस्तनीलीसीदीसै

---

* मोतियाबिंदकोरोगछै सोनेत्रकामध्यबिंदुमैछै. ओरनेत्रका हेठलाभागसूंऊंचीबिंदुआवैछै. मध्यबिंदुमैसूंमध्याबिंदुकामाणस्यांकै आडीआवैजदांदीषैनहींछै जदांबिंदुमोतियोपरिपक होयछै पाछै चतुरवैद्य मोतियोनस्तर द्वाराकाढैछै. तौ. मनुष्यनैं आरामहोयछै.

तदि जाणिजै ईंकै पित्तको लिंगनासछै २ अथ कफका लिंगनास कोलक्षणलिष्यते जींकै कफको लिंगनासछै तीनै जोदीषै सोचीक णो अर सुपेद दीषै अर वैनेत्र मनुष्यके जलसूं भस्याहीरहै ३ अथ सन्निपातका लिंगनाशको लक्षणलिष्यते जींकै सन्निपातको लिंग नाश होय तीनै नानाप्रकारका आकारदीषै अरहीन अधिक अं गदीषै अर सारीवस्त तेजरूपीदीषै अर पाछै कह्यासोभी लक्षण होय. ४ अथ लोहीसूं उपज्योजो लिंगनास तींको लक्षणलिष्यते जींकै लोहीको लिंगनाश होय तीनैं लालदीषै अर सुपेददीषै ह स्या काला पीला साराहीवस्तदीषै ५ अथ परिम्लायिनसूं उपज्यो जो लिंगनाश तींकोलक्षणलिष्यते रक्तसूं मूर्छित हुवोजो पित्त तीनै परिम्लायिन कहिजे तींकरि उपज्यो जो लिंगनाश तीनै दशूदि शापीलीदीषै जाणिजे सर्वत्र सूर्यही उग्याछै वृक्षांउगेरै सर्ववस्तु दग्धहुवा अग्निसिरीषाहीदीषै ६

अथ लिंगनाशको और स्वरूपलि० वायको लिंगनाश अरु णहोय पीलानीलियां अर नीलो होय १ अर ऐसोही पित्तको होय २ अर कफको सुपेद होय ३ अर सन्निपातको विचित्र होय ४ अर लोहीकोलालहोय ५ अथवायनै आदिलेर ६ प्रकारको लिं गनाश कह्योतींको नेत्रका मंडलजुदाजुदा स्वरूपलि० वायको ने त्रमंडल अरुण होय १ पित्तको नेत्रमंडलनीलो होय कांसीकावर्ण सिरीसो होय अर पीलो होय २ अर कफको नेत्रमंडल घणो ची कणो होय अर संषसिरीसो कुंदकाफूल सिरीसो पीलोहोय चंचल होय ईनेत्रमंडलमैं सुपेद बूंद होय ३ अथ सन्निपातका नेत्रमंडल को लक्षण लिष्यते ईनेत्रमंडलमैं मूगांसिरीसो अथवा पद्मका पत्र

न. टी. नेत्रकारोग कह्याछै ज्यां रोगवालानै पथ्यअपथ्यकरणो योग्यछै जींवास्तै पथ्य नामग्राह्यकरणो अपथ्यनाम छोडणो. जीनैं लौकीमैं परेज अरवदपरेज कहैछै. जीनैं ग्राह्यक ह्यो सो लेणो. अग्राह्य नही लेणो इसी निश्चय राषणी.

सिरीसो नेत्रमंडलहोय अरपाछे लक्षण कह्याछैसो भीहोय ४ अथ लोहीका नेत्रमंडलको लक्षणलि० यो नेत्रमंडल लालहोय ५ परिम्लायिननेत्रमंडलको लक्षणलि० जींकासरीरमैं पित्तदुष्टहुवो होय तींपुरुषकीदृष्टि पीलीहोय अर वेनै सारीवस्त पीलीही पीलीदीषै १ अथवा दुष्टपित्त तीसरापटलमैजाय प्राप्ति होय तींका स्वरूप लिष्यते. वेपुरुषनै दिनमै दीषैनहीं अर रात्रिनैदीषै. चंद्रमाकासी तलपणातैंक्यूं पित्तको अल्पपणोरात्रिमैं होय जीसूं १ अथ कफकरिजींकी दृष्टि विदग्धहुईहोय तींको लक्षण लि० जींकीदृष्टिकफकरि विदग्ध होय तीनैं सर्व सुपेदहीदीषै. योरोग प्रथम द्वितीय पटलमै होयछै. २ अथ रक्तांधनामरातींधाको लक्षणलिष्यते तीसरापटलमैं कफ आवै तदि रक्तांधहोय दिननैदीषै रात्रिनैं दीषैनहीं ईनै लोकीकमैं रातिंधोकहैछै. अथ धूमदर्शिसिरोरोगको लक्षणलिष्यते. शोकसेती ज्वरसेती षेदसेती सिरमैं तापजाय प्राप्तिहोय तदिमनुष्यकी दृष्टि हैसो धुवांसेंती व्याप्तहोय तदि ईमनुष्यनैं सारीवस्तु धूवांसिरीषीदीसै २ अथ ऱ्हस्वजातिरोगको लक्षणलिष्यते जो पुरुष वडाकष्टसेंतीभीवडीवस्तनैं देषै सोवावस्त दिनमें छोटीहीदीषै अर रात्रिमैं जथार्थ दीषै तीनैं ऱ्हस्वजाति रोगकहिजे ३ अथ नकुलांध रोगको लक्षणलिष्यते जींपुरुषकी दृष्टितो आछीतरैसूं दीषै अरवेदृष्टिमें दोष आय प्राप्तिहोय तदिवेनै दिनमें चित्रविचित्रदीषै ईनै नकुलांध कहिजे १

अथ गंभीरकारोगको लक्षण लिष्यते जींपुरषकै सासनैं लेतां वेंकीदृष्टिमांहि वडिनाय अर नेत्रमैं पीडाचालिजाय ईनै गंभीरनाम रोग कहिजै. १ अथ विनाकारणही लिंगनाश होय तींको लक्ष

न. टी. नेत्रकारोगीनैं पथ्यलि० गोहांकी रोटी. भात. मूगांकी डाल. वा रांध्यामूग. गावांघृत. गावोदूध. चंदलेई. पानमेथी. वानिर्विकार गुणकारी पदार्थ. वा देशकालवय अवस्थाका अनुकूल उपचार वा देशाचार वृद्धाचारका उपाव करै.

ए लिष्यते जींकी दृष्टिनिर्मलछीसो विनाकारणही काली होयजाय तीनैं विनाकारण लिंगनाश कहिजै. १ इति दृष्टिरोगाः अथ कालानेत्रमंडलमैं हुवो जो रोग त्यांका नाम अर वांकी संष्या लिष्य० ये चारिरोग ईंकृष्णमंडलमैं होयछे. सव्रणशुक्र १ अव्रण शुक्र २ अक्षिपाकात्यय ३ अजकाजात ४ अथ सव्रण शुक्रको लक्षण लि० नेत्रकी काली जागांमैं पूतलीऊपरि पोष आयो होय अर वेदोषकरि माणस्यो ढकिजाय अर वाबूंदनेत्रमेंगडि जाय अर वेमैं सुईकासाचभकाचालिजाय अर वेमैं गरमगरम पाणी पडिवो करै तीनै सव्रणशुक्र कहिजै. १ अथ सव्रण शुक्रको साध्यासाध्य लक्षण लिष्यते वाबूंद दृष्टिकै समीप होय नही अर गाढीनही होय अर ईसूं विपरीत लक्षण होय सो असाध्य जाणिजै. १ अथ अव्रण शुक्रको लक्षण लिष्यते. जींकी काली पूतलीका माणस्यां ऊपरि शुक्रकी बूंद आई होय अरवाबूंद हालैचालै अर वाबूंद संषसिरीसी चंद्रमा सरीसी कुंदका फूलसरीसीहोय अथवा आकास सरीसी होय अथवा बादलसरीसी होय ओ अव्रणशुक्रजाणिजै. योनिपट साध्यछे १ अथ अव्रणशुक्र साध्यछे पणि ईंकी अवस्था भेदकरि ईंको कष्टसाध्य लक्षण लिष्यते. जींका नेत्रको मांस विषरिजाय अर वाबूंद ओंडीहोय अर वा नसांमै हुई होय अर वा गाढी होय अर वा दूसरा पटलमैं होय अर च्यारुं ओर लाल होय अर वाघणा दिनांकी होयतो अव्रण शुक्र असाध्यजाणिजे ईंका जतनकीजै नहीं १ अथ ईंको ओर असाध्य लक्षण लिष्यते जींकानेत्रमैं आंसु गर्मपडै अर नेत्रमैं फुणस्यां होय अर माणस्यांऊपरि शुक्रकी बूंद मूगसमान होय अर तीतरकी पांष सरीसी

न. टी. नेत्ररोगीनैं अपथ्यनासु कुपथ्यलि० केला. मूंगफलीनामभुई मूंग. लालकाशीफलवा. लालपेठो कूष्मांड. पानांको शाक. उडद. स्त्रीसंग. जागरण. आम्र. गुवारफली. षारोषाटो. गरम. वातल. शीतल लेपादि. इत्यादिवर्ज्य.

होय ओभी अव्रण शुक्र असाध्य जाणिजै १ अथ अक्षिपाकात्य यनेत्ररोगको लक्षण लिष्यते. जींकानेत्रकी सुपेद जगां सारी सूजिजाय अर आंसूं घणापडै अर ऊठे पीडघणी होय अर ओनेत्रदोषांसूं पकिजाय ईनें अक्षिपाकात्ययरोगकहिजे योभी असाध्य छै. १ अथ अजकाजात नेत्ररोगको लक्षण लि० जींकी आंषि बकरीकी मींगणी सिरीसी होजाय अर वेमें पीड चालै अर आंषि लालरहै अर लालही जीमें आंसूं आवे. जाडाजाडा ईनें अजकाजात नेत्ररोग कहिजै. १ ये चारूं कृष्णमंडल रोगछै. अथ नेत्रका शुक्लभागमें उपज्यो जो रोग त्यांकानाम अर वांकी संख्या लिष्यते ईनेत्रका शुक्लभागमें ग्याररोगछै ११ प्रस्तार्यम १ शुक्लार्यम २ रक्तार्यम ३ अधिमांसार्यम ४ स्तायवर्म ५ शुक्ति ६ अर्जुन ७ पिष्टक ८ शिराजाल ९ शिरापीडिका १० बलस ग्रथित ११ ये इग्याराही कफकरिकै हुंध्यानेत्रका शुक्लभागमें होयछै. अथ प्रस्तार्यम नेत्ररोगको लक्षण लिष्यते ईनेत्रकाशुक्ल भागमें गरमनैलियां अरवडो अरकालो अर लालचिन्ह होय तीनें प्रस्तार्यम नेत्ररोग कहिजे १ अथशुक्लार्यम नेत्ररोगको लक्षण लिष्यते नेत्रका सुपेद भागमें सुपेदही अर कोमलसो बधै तीनें शुक्लार्यम नेत्ररोगकहिजे १ अथ रक्तार्यम नेत्ररोगको लक्षण लिष्यते नेत्रका सुपेद भागमें पद्मसिरीसो कोमलजो मांसवधै तीनै रक्तार्यम रोग कहिजे ३ अथ अधिमांसार्यम नेत्ररोगको लक्षण लिष्यते नेत्रकासुपेद भागमेंवडो अर कोमलअरपुष्ट कालजासिरीसो चिन्ह होय तीनें अधिमांसार्यम नेत्ररोग कहिजै ४ अथ स्नायुवर्म नेत्ररोगको लक्षण लि

---

* शुक्लार्यम नेत्ररोगछै. दुर्घटछै. नेत्रका गोलकनाम डोलोजीमें सुपेद भागछै. जीमै होय छै. सुपेद रंगको वधवो करैछै. नेत्रका गोलकनैं बिगाडदेछै. जीनैं चतुर वैद्यविद्वान होयछै. सूमोरथूथाकासंजोगसूं काटै तो कटैछै. परंतु मूर्खनैं हातलगावादेणो नहीं कारण आंखफोडकर गछत होय जाय. वास्तै मूर्खनैं दूरराखणो.

ष्यते नेत्रका सुपेद भागमैं करडो अर स्थिर चिन्ह होय तीनै स्ना यवर्म नेत्ररोगकहिजे ५ अथ शुक्तिनाम नेत्ररोगतींको लक्षण लि० जींकानेत्रका शुक्लभागमैं काली अर मांससरीसी बूंद घणीहोय तीनच्यारि तीनैं शुक्तिनामनेत्ररोग कहिजे. ६

अथ अर्जुनरोगको लक्षणलि० जींका नेत्रकाशुक्लभागमैं सुसाका रुधिरसिरीसीयेकबुंदहोय तीनैं अर्जुननाम नेत्ररोग कहिजै ७ अथ पिष्टकनाम नेत्ररोगतींको लक्षणलि० जींका नेत्रकाशुक्ल भागमैं वायकफकाकोपकरि मांस ऊंचोहोय आवै पीस्यांचूनसिरीसो तीनैं पिष्टकनाम नेत्ररोग कहिजे ८ अथ सिराजालनेत्ररोग को लक्षणलि० जींका नेत्रकासुपेदभागमैं नसांकासमूहकठण अर पीली होयआवै जीनै शिराजाल नेत्ररोग कहिजे. ९ अथ शिरा पीडिकानाम नेत्ररोग तींको लक्षणलि० जीका नेत्रका सुपेदभाग मैं सुपेदफुणस्यां नसांकरि आव्रत होय तीनैं सिरापिडिकानाम रोग कहिजे. १० अथ बलास ग्रंथित नेत्ररोगको लक्षण लि० जीं कानेत्रका सुपेदभागमैं कांसी सरीरसो सुपेद अथवा कमल सरी सोवर्ण अर कठोरऐसोचिन्ह होय तीनें बलासग्रंथित नेत्ररोग कहिजै. ११ ये नेत्रका शुक्ल भागका इग्यारारोगछै ११ अथ नेत्रका मर्मस्थानमैं २१ रोगछे सोदोन्यूनेत्रांनैं ढकै नीचरली अर ऊपरली पाषडी त्यामैं येरहैछे. उत्संग पीडिका १ कुंभिका २ पोथकी ३ वर्त्मशर्करा ४ अर्शवर्त्मा ५ शुक्लार्श ६ अंजननामिका ७ बहुलवर्त्मा ८ वर्त्मबंधक ९ क्लिष्टवर्त्मा १० वर्त्मकर्दम ११ श्यामवर्त्मा १२ प्रक्लिन्नवर्त्मा १३ अक्लिन्नवर्त्मा १४ वातहर्ष वर्त्मा १५ वर्त्मार्बुद १६ आश्रमस्तनिमेष १७ शोणितार्श १८

न. टी. नेत्रकाकोयामैं जो सुपेद कोयोछै जीमैं रोगादिक प्राप्त होय ज्यांका जुदाजुदा विभाग अर नाम अर निदान लिष्याछै. जीमैं बुद्धिप्रवेशकरकर यथार्थ ज्ञानसौं नेत्रचिकित्साकरणी अरस्याणा वैद्यकनैं औषधी कराणी.

लगए १९ विसवर्त्मा २० कुंचन २१ अथ उत्संगपीडिकाको ल क्षणलि० नेत्रकी ढकवावाली वाफण्यानामको यातींकेमाहि फुण सीहोय अर तींको माहिही मूंढोहोय वाफुणसी लालहोय घणीऊं चीहोय अर वा लोहीसूं उपजीहोय अर बडीहोय अर जीमें षा जिचालै येजीमें लक्षणहोय तीनें उत्संग पीडिका कहिजै १ अथ कुंभिका पीडिकाको लक्षणलिष्यते जींका नेत्रका अंतकामार्गमें कुं भिकाबीज सरीसी फुणसीहोय अर वा फुणसी फूटवोकरै अर श्र ववोकरै अर वासोईनै लीयांहोय तीनै कुंभिकानाम नेत्ररोग कहि जै. २ अथवा पोथकी नामनेत्ररोगको लक्षणलि० जींका कोयामा हिलाल सिरस्यूंकेमानि फुणसीहोय अर वा बहुतझरै अर वेमेषा जिघणीआवे अर वेमै पीडाहोय ईनें पोथकीपीडिकानाम नेत्ररो ग कहिजै ३ अथ वर्त्मशर्करापीडिका नाम नेत्ररोगको लक्षणलि ष्यते. जींका कोयामें सूक्ष्म फुणसीघणीहोय अर षरधरीहोय अर भारीहोय तीनै वर्त्मशर्करारोगकहिजै ४ अथ अर्शवर्त्मा पीडिका नाम नेत्ररोगको लक्षणलिष्यते जींका कोयांमांहि तेवरसीकाकडी काबीजसरीसी फुणसीहोय अर जीमें पीडकमहोय अथवा फुणसी चीकणीहोय अर कठोरहोय वेनै अर्शवर्त्मा फुणसिको नेत्ररोग क हिजे. ५ अथ शुक्कार्शनेत्ररोगको लक्षणलि० जींका नेत्रकाको यांमें वडावडा अंकुर षरधरा भयंकर होयतीनें शुक्लार्शनाम नेत्र रोगकहिजै. ६ अथ अंजननामिका नेत्ररोगको लक्षण लिष्यते जींका नेत्रकाकोयांमांहिफुणस्यां होय अरदाहनै लीयांहोय अर लाल होय अरवे फुणस्यां कोमल होय अरवे फुणस्यां छोटीहोय ज्यामैपीडमंद होय तीनैं अंजननामिका नेत्ररोग कहिजै ७ अथ

न. टी. नेत्रांकामंडलछै सो बहोतनाजुक जागाछै. अरल्डी जोषमछै. जीमैं जायगां थो डीछै. अर रोगसमूह घणोछै. जींवास्तै वारंवार वैद्य पुरुषांसूं अर जतनकरवावालासूं विन तीछै. नेत्रांको उपचार जतनसौं करो. करावो.

बहुलवर्त्मा फुणसी नेत्ररोगको लक्षणलिष्यते जींका कोयांमांहि चहुं ओर फुणस्यांहोय एकवर्णकीघणी वानें बहुलवर्त्मा फुणसी नेत्ररोग कहिजे ८ अथ वर्त्मबंधकनाम नेत्ररोगको लक्षणलिष्यते जींका नेत्रका कोयांमें सोजोहोय अर वेमें थोडीपुजालि आवे अर वेमें थोडी पीडहोय अर सोईसूं क्यूंनेत्र ढकिजाय तीनें वर्त्मबंधक नाम नेत्ररोग कहिजे ९ अथ क्लिष्टवर्त्मानामनेत्ररोगको लक्षण लिष्यते जींका नेत्रांका कोयांको मार्ग अकस्मात् लालहोजाय अर जीमें मंदपीडाहोय तीनें क्लिष्टवर्त्मा नेत्ररोग कहिजे १० अथ वर्त्मकर्दम नेत्ररोगको लक्षणलिष्यते जींकानेत्रमांहि पित्तसंयुक्त लोही दग्धहोय कुपथ्यसूं तींकीआंषि गीडसूं आलीघणीरहे तीनें वर्त्मकर्दमनामरोगकहिजे ११ अथ श्यामवर्त्मानाम नेत्ररोगको लक्षणलिष्यते जींका नेत्रका कोयांका मार्गमाहिं अर बारे काली सोईहोय अर वे सोईमें पीडाहोय अर वेमेंषाजि आवे अर गीड भी आवे तीनें श्यामवर्त्मा नेत्ररोग कहिजे १२ अथ प्रक्लिन्नव र्त्मानेत्ररोगको लक्षणलिष्यते जींका नेत्रका कोयांके बारे सोईहोय अर ऊठेपीड नहींहोय अर गीड घणांआवे तीनें प्रक्लिन्नवर्त्मा नेत्ररोग कहिजे १३ अथ अक्लिन्नवर्त्मा नेत्ररोगको लक्षणलि ष्यते जींकी आंषिधोवे वा नहीधोवे तोषूले नही मीचिहीरहे तीनें अक्लिन्नवर्त्मानेत्ररोग कहिजे १४ अथ वातहतवर्त्मा नेत्ररोगको लक्षणलिष्यते जींकीपलक आछीतरे मिचैनही अर घुलीहीरहे त दिपीडरहे अथवा नहींरहे अथवा आंषिमीची रहे ईनें वातहतवर्त्मा नेत्ररोग कहिजे १५ अथ वर्त्मार्बुद नेत्ररोगको लक्षणलि० जींका नेत्रका कोयांका मार्गमांहि गांठि लांबीहोय जीमें पीडनहीहोय

न. टी. जोवर्त्मरोग नेत्रांमेंछै। सोसर्वनिदानयुक्तकह्याछै. परंतु यामैभी आपकीबुद्धिको विचारविलक्षणछै. कारणजैसै कर्दमसंयुक्त वर्त्मकर्दमरोगछै. जींकर्दमसौंनेत्रगलिचरहै. अर अनेकरंगका कादासिरीसा आवोकरै. महाझूझल आवैसो.

अर गांठि लालहोय तीनैं वर्त्मार्बुद नेत्रकोरोग कहिजे. १६ अथ अश्रस्तनिमेषनेत्ररोगको लक्षणलिष्यते जींकानेत्रका कोयांनेत्रमां हिपैठिजाय वायकरिकै बाफणीनै चलावे ईनें अश्रस्तनिमेष नेत्र रोगकहिजे १७ अथ शोणितार्शनेत्रकारोगको लक्षणलि० जींका कोयांकीबाफणींका मार्गमें फुणसीका कोमल अंकुर होय त्यांनेदू रिकरिवावास्तेबांधे सोवे अंकुर वधवोकरे तीनें शोणितार्श नेत्ररो ग कहिजे १८ अथ लगणनाम नेत्ररोगको लक्षणलिष्यते जींका नेत्रका कोयांका मार्गमेंगांठि बोर प्रमाणहोय अर वागांठिपकेनही अर करडीहोय अर वेमें षाजिआवे अर नेत्रमें गिडआवे तीनें लगननेत्रकोरोग कहिजे १९ अथ विषवर्त्मा नेत्रका रोगकोलक्षण लिष्यते जींका नेत्रका कोयांके घणाछिद्र पडिजाय अर कोयांऊप रि सोजो चढिजाय नेत्रमांहि आंशूं घणां आवे रहैनही तीनें विष वर्त्मा नेत्रको रोगकहिजे २० अथ कुंचननाम नेत्रकारोगको लक्षणलिष्यते वायपित्त कफ हैसो जीकानेत्रका कोयांका मार्गनें संकोच करे कोयांनें नेत्रांसूं उघडवादे नही क्यूंभीवस्त देषवादे नहीं ईनें कुंचन नामनेत्रको रोग कहिजे २१ इति नेत्रांका कोयांको रोग संपूर्णम् अथ नेत्रकी वांफणीकादोय २ रोगछे. पक्ष्मकोप १ पक्ष्मशांत २ अथ पक्ष्मकोपवाफणीकारोगको लक्षणलि० जींका कोयांकी वाफणीजातीरहै अथवा कोयांमें धसिजाय अथवा वाफ णियांमें षाजघणीआवे योरोग वायकाकोपकरि जाणिजे. योरोग बहुतभयंकरछे. ईमें सोजोभी होयछे. योअसाध्यछे ३ अथ पक्ष्म शांत बाफणीबाफणीकारोगको लक्षणलि० नेत्रकाकोयांकी बाफणी जातीरहै. अर ऊठेषाज आवें अर ऊठेबलतरहै योपित्तका कोपसूं

---

*. पक्ष्मरोगछैसू आंखकीबाफणीमैं होयछै. जीनैंकोप्ररीकोरोग कहैछै. सोपलककामां हिला पसवाडामैं लालीहोयछै. माणस्यांमैं अटकै जदषडकवो करैछै पलकजाडी होतीजाय तावडो देष्यांपाणीआवै सोरोग पोतलेवैं गरदन ऊपरजदजाय.

होयछै. ईनै पक्ष्मशातनामबाफणीकोरोग कहिजे २ अथ नेत्रांकी संधिमैंनवरोगछे ९ त्यांकानामलि० पुयालस १ उपनाह २ पैत्तिक श्राव ३ कफश्राव ४ सन्निपातश्राव ५ रक्तश्राव ६ पर्वणिका ७ अलजी ८ जंतुग्रंथि ९ अथ पूयालसनेत्रकीसंधिकारोगको लक्षणलिष्यते नेत्रकीमाहिली पूतलीकनैं कोयांका अंतमैं जोवासंधिछ सोवादूषणीआय अर पकिकरिवा सूजिजाय अर वैगीड राधिसरीसी जाडीजाडी घणीआवै ईनैं पूयालसनाम नेत्रकी संधिकोरोग कहिजै १ अथ उपनाहनाम नेत्रकीसंधिका रोगको लक्षणलिष्यते नेत्रकीसंधिमैं बडीगांठिहोय अर वां पकैनहीं अर वेमैं षाजिआवै अर वेमैं पीडनहीहोय तीनें उपनाहनाम नेत्रकी संधिको रोगकहिजे २ अथ पैत्तिकश्राव नेत्रकी संधिकारोगको लक्षण लिष्यते. जींका नेत्रकी संधिमैं जलकां आसूं हलदसिरीसा पीलाघणां आवैं वेनैं पैत्तिक श्राव नेत्रकी संधिको रोगकहिजे. ३ अथ कफश्राव नेत्रकी संधिका रोगको लक्षण लिष्यते. जींका नेत्रकी संधिमैं जलका आसूं सुपेद जाडा अर चीकणा आवै तीनैं कफश्राव नेत्रकी संधिको रोग कहिजे. ४ अथ सन्निपातश्राव नेत्रकी संधिका रोगको लक्षणलिष्यते. जींका नेत्रकी संधिमैं नासूर पडिजाय अर वेमैं दुरगंधिलीयां राधि आवोकरै तीनैं सन्निपातश्राव नेत्रकी संधिको रोगकहिजे. ५ अथ रक्तश्राव नेत्रकी संधिका रोगको लक्षण लिष्यते. जींका नेत्रकी संधिमैं गरम लोही घणो नीसरै तीनैं रक्तश्राव नेत्रकी संधिको रोगकहिजे. ६ अथ पर्वणिका नेत्रकी संधिकारोगको लक्षणलि० जींका नेत्रकी संधि तांबाका वर्णसिरीसी लालहोय अर मिही होय अर पकिजाय ईनैं पर्वणिका नेत्रकी संधिकारोग

न. टी. नेत्रांकारोग औषध्यांसूं आरामहोयजायछै. परंतु साध्यरोगतत्काल आरामहोयछै. अरकष्टसाध्य घणादिनांमैं अनुक्रमसौं उपावकरतां आरामहोयछै. अरजोरोग असाध्यछै सोतोरोगबहोत महनतकरावै अरआरामहोणो कठिणछै.

कहिजे. ७ अथ अलजीनाम नेत्रकी संधिका रोगको लक्षणलिष्य
ते. जींका नेत्रकी संधि तांबासिरीसीलालहोय अर मिही अर बल
तनेंलीयां अर पकी सोनासिरीसीहोय तीनें अलजी नाम नेत्रकी
संधिको रोग कहिजे ८ अथ जंतुग्रंथि नाम नेत्रकी संधिका रोगको
लक्षणलि० जींका नेत्रकी संधिकी गांठिमें कृमि पडिजाय अर वेसूं
बाफणी जातीरहे अरऊठे पुजालिआवै नहीं अर वेंका नेत्रकी सं
धिमें अनेक मिही मार्ग होजाय अर नेत्रमें पीडाघणी होय तीनें
जंतुग्रंथिनाम नेत्रकी संधिकोरोग कहिजे ९ अथ नेत्रका और स
मस्तरोग त्यांकी संष्यां अर नामलि० वायको अभिष्पंद १ पित्त
को अभिष्पंद २ कफको अभिष्पंद ३ रक्तको अभिष्पंद ४ वायको
अभिमंथ ५ पित्तको अभिमंथ ६ कफको अभिमंथ ७ रक्तको अ
भिमंथ ८ संशोथपाक ९ अशोथपाक १० हताधिमंथ ११ वातप
र्याय १२ शुक्काक्षिपात १३ अन्यतोवात १४ अम्लाध्युषित १५
शिरोत्पात १६ शिरोहर्ष १७ अथ नेत्रकी समता १ अर नेत्रकी
विसमता २ अथ वायका नेत्रका अभिष्पंद ईनें लोकीकमें आंष
दूषणी कहेछे. तींको लक्षणलि० जींकी आंषिमें पीड घणीहोय
जांका रोमांच होय आवै. अर आंषिमें पुजालि आवै नेत्रकरडा हो
जाय अर माथोबलै अर जींका नेत्रका आंसूं सीतल पडै तदि ई
नेंवाताभिष्पंद नेत्रकोरोग कहिजे. १

अथ पित्तका अभिष्पंद गरमीसूंआंषिदूषणी आई तींको लक्ष
णलिष्यते. जींका नेत्रांमें दाहघणो होय अर आंषीपकिजाय अर
नेत्रांमें सीतलताई सुहावै अरजींका नेत्रांमें धुवोनीसरै अर जीं
कानेत्रांमें गरम आंसूंनीसरै अर नेत्रपीलाहोय तीनै पित्तको अ

न. टी. जींवास्तैवैद्यलोक बडीयुक्तिसौं उपचारकरैछै शोदैवयोगसूं ईश्वरीकृपासूं आराम भीहोयजायतौ नेत्रांकीसंधिमैं कोईकारणांसूं नासूर होयजाय. जींकैवास्तैलालफिडकडीकी बत्तीनासूरका छेद्रमैं युक्तिसौं देवैतौ नासूरबंदहोय.

भिष्पंद नेत्ररोग कहिजै. २ अथ कफका अभिष्पंदको लक्षणलि० जींका आंषिनैं गरम सुहावै अर नेत्रसीतलघणांरहै अर जाडो जाडो बहुत झरै ईनै कफका अभिष्पंद नेत्रकोरोग कहिजै ३ अथ रक्ताभिष्पंद नेत्ररोगको लक्षण लिष्यते. जींका नेत्रलालहोय अर आंसूं तांबाका वर्ण सिरीसापडै अर नेत्रांमैं दाहहोय अर नेत्रांनैं सीतलताई सुहावै अर गरम आंसू पडै तदि जाणिजै लोहिकाअभिष्पंद नेत्रकोरोगछै. ४ अथवायका अधिमंथ ईनैं लौकीकमैं घणी आंषि दूषणी आईकहैछै. तींको लक्षणलि० आंषि दूषणीआवै तीमैं कुपथ्यकरै तदि आंषिमैं घवकाघणांचालै जाणिजै आंषिफूटि जासी. अर आंषिमै इसारूला चालै जाणिजै आंषिमैं झेरणोघालि आंषिनैं मथैछै. अधोशिर अधरहोजाय माथो बलिऊठै जीमैं आंसूं सीतलआवै तदि जाणिजे ईकै वायको अधिमंथ नेत्रको रोगछै ५ अथ पित्तका अधिमंथको लक्षण लिष्यते. जीकी आंषिदूषणी आई होय अर ओगरमवस्त षटाई उगैरैषाय कुपथ्यकरै तदि वेंकी आंषिमैं रूला घणांचालै जाणिजै आंषिघवकांसूं फूटिजासी. अर आंषिमैदाहहोय अर पकिजाय अर नेत्रांनैं सीतलतांई सुहावै आंसूं पीलानीसरै नेत्रपीला होय तदि जाणिजै पित्तका अधिमंथको ईकै नेत्रकोरोगछै. ६ अथ कफकाअधिमंथको लक्षणलिष्यते जींकी आंषिमैं रूलाघणा चालै जाणिजै आंषि वैठि जासी अर वेनैं गरमसुहावैं आंष्यांकैसोजो होय अर षाज आवै अर जाडो जाडो बहुतझरै ईनैं कफकोअधिमंथ नेत्रकोरोग कहिजै ७ रक्तका अधिमंथको लक्षण लिष्यते जींकी आंषि दूषणीआई होय अरजीमैं लोही विगडै ईसाकुपथ्य करैजींकी आंषि

न. टी. आंषदूषणीआवैछै. जीनैलौकीकमैंआषआईकहैछै. अरशास्त्रमैं अभिष्पंदकहैछै. सोवोअभिष्पंदछै सोवातपित्तकफादिकसौंबहुधाहोयछै. जींपरअनेकउपावछै. आरामहोयछै. परंतु बालकांकैबहुधाहोयछै.

में रूलाघणाचाले जाणिजे आंषिबेठीजासी अरवेंकी आंषिमें तांबा कावर्ण सिरीसागरमआंसूं पडे अरलाल आंषिहोय अर दाहहोय पकिजाय तदि जाणिजे रक्तको अधिमंथका नेत्रकोरोगछे ८ कफको अधिमंथ सात ७ दिनमेंनेत्रको फोडे लोहिको अधिमंथ ५ दिनमें नेत्रनें फोडे वायको अधिमंथ ६ दिनमें नेत्रनें फोडे पित्तको अधि मंथ तत्काल नेत्रनेंफोडे अथ संसोथपाक नेत्ररोगको लक्षण लि० जींका नेत्रांमें आंसू आवे अरषाज आवे वेंका नेत्रपक्यागूलरि का फूलसरीसा पकिजाय अर नेत्रांऊपरि सोजो होयजाय अर जींका नेत्र लालहोय तींनें संसोथ पाक नेत्रकोरोगकहिजे अथ असोथपाक नेत्ररोगको लक्षणलिष्यते जींका नेत्रांऊपरि सोजो होय नहीं अर षाजआवे अर पक्यागूलरका फलसरीसा पकिजा य अर नेत्रलालहोय तींनें असोथपाक नेत्ररोगकहिजे. १० अथ हतादिमंथ नेत्ररोगको लक्षणलिष्यते जीका नेत्र सूझिवासूं बैठिरहे अर वामें पीडघणीहोय जैसे कमलसूकिजाय इसानेत्रहोय जाय तीनें हतादिमंथ नेत्रकोरोग कहिजे ११ अथवातपर्यायनेत्रकोलक्ष ण लिष्यते. जींकाभंवारामें अर नेत्रांमें वारंवार पीडघणीचाले ती नें वातपर्याय नेत्ररोग कहिजे. १२

अथ शुक्लाक्षिपाक नेत्रकारोगको लक्षणलि० जींका नेत्रमूंदि जाय अरबले अर लालहोय जाय अर आछीतरेंसूझे नहीं अर लूषाहोय जाय बसारा तीनें शुक्लाक्षिपाक नेत्रकोरोग कहिजे १३ अथ अन्यतोवात नेत्ररोगको लक्षणलिष्यते जींकीपांधिशिर दाढी कान भंवारा आंषियांमें वायकीपीड घणीचाले तीने अन्यतोवात ने

---

* आंसूंनाम नेत्रमेसूंपाणीबहुतआवे. लालीहोय नेत्रकोडोलोसंपूर्ण जोरमैंसोजायुक्तपीडा युक्तहोयछै. जींकैवास्तैपोटलीकहैछै. परंतुपोटलीसौं आरामनहींहोयतौकनपटी ऊपरपलस्तर मारैतौ आरामहोयछै. अरगरदनऊपरपोतलेवैतौ नेत्रकासाराविकारजाय. चतुरवैद्यकनैं पो तलेणीयोग्यछै.

त्ररोगकहिजे १४ अथ अम्लाध्युपितनेत्ररोगको लक्षणलि० जीं कानेत्रसाराकाला अर लालहोजाय अरपकिजाय अर वेमैंसोजा नैलीयां दाहहोय अर नेत्रांमैं पाणी आवे तींनैं अम्लाध्युपित ने त्ररोग कहिजे १५ अथ शिरोत्पात ईनैं लौकीकमैं सबलवाय कहै छै तींको लक्षणलि० जींकी आंष्यांमैं पीडहोय अथवा नहीहोय अर वेंकी आंष्यांकीनसां तांबासिरीसी लालहोय चहुंओर ईनेंशि रोत्पात सबलवाय नेत्रको रोग कहिजे १६ अथ शिरोहर्ष नेत्रका रोगको लक्षणलि० जोपुरष अज्ञानथकी ईसबलवायको जतनन हीकरे तीकी आंषिमैं आंसूं वारंवार बहोत पडिवोहीकरे अर वा नेत्रांसूंक्यूं भीदीसैनहीं ईनैं शिरोहर्ष नेत्ररोग कहिजे. १७ अथ नेत्रांकोरोगगयो नहीं तींको लक्षणलि० नेत्रमैं पीडरहे अरवेमैं ललाईरहे अर वेमै षाजिरहे अर वेमैं सूलभीरहे तदिजाणिजे ईं का नेत्रमैंरोगछे रोगगयो नहीं १८ अथ नेत्रकोरोगजातो रह्यो तींको लक्षणलि० नेत्रमैंक्यूंभीपीडनहीरहे अरषाजक्यूंभी आवे नहीं. अर वेंकेसोजोहोयनहीं अर आंसूं उगैरे वेमैंक्यूंभी आवेन हीं अरवानेत्रांको निपट आछ्यो वर्णहोय अरमिहीभी सर्व वस्त जथार्थ दीसैतींका नेत्रकोरोगगयो जाणिजे. २ यापरीक्षा अर नेत्र रोग वालाके अतनीवस्तकरिजे नहीं सुरमाउगैरेका जलघालिजे नहीं घणोघृतषुवाजेनहीं अर कषायली षटाई उगैरे कुपथ्य करा जैनहीं. गरिष्ठभोजनकराजें नहीं स्नानकराजेनहीं पानउगैरे गरम वस्तु षुवाजेनहीं जितेनेत्रांके आरामहोय जितै इति नेत्रांका सम स्तरोगांकी उत्पतिलक्षण निदानसंपूर्णम् अथ समस्त नेत्ररोगकाज तन लि ०नेत्रांकारोगवालानैं लंघन अरलेप अर स्वेदकर्म अर सि

न. टी. उपचारसौं जांकानेत्रांका रोगचाल्या जायछै. ज्यांकालक्षण वडाविलक्षणतासौं जाण्याजायछै. जैसैकोई भारवाहीहोयछै अरभारसौंघणांश्रमजुक्तहोयछै ज्यांकाभारउतरजा यरह्याछै नीरांतसूंवैठेजीनैं सुषहोय जियानसुखीहोयछै.

रकी नसकी सिरछुडावो अर आश्च्योतनकर्म करिवो अर ईनैं आदि लेर औरजतन त्यांकरि नेत्रांकाविकारसर्व जायछै. अथ आंषीदूषणी आई होय तींको जतनलि० जींकीआंषिदूषणी आई होय तींकै दिन ३ तांईतो अंजनादिक कीजैनहीं ओनेत्रका दूषणाकूकाचो जाणिपाछै नेत्रको दूषणापणौचौथे दिनपकिजाय तदि नेत्रमैं अंजन औषदि करैतो ओनेत्र वेगो आछ्योहोय १ हेमंतऋतु अर शिशिरऋतुमैंतो अंजनमध्यान्हिमै करिजे अर ग्रीष्मऋतु अर शरदरितु मैं मध्यान्हपहली अंजनकीजे अर वर्षारितुमैं वादल नहीं होय तदि अंजनकीजे. अर वसंतरितुमैं चाहैतदिही अंजनकीजै. जो सुरमाउगैरै अंजन करैतो ईकै नेत्ररोग कदेही होयनहीं. प्रथमतो वांईआंषि आंजिजे पाछै जीवणी आंषि आंजिजे. यासंप्रदायछै अथ आंषिदूषणीको लेपलि० हरडैकीछालि सींधोलूण सोनागेरु रसोत ये बराबरिले त्यांनैं जलसूं मिहीवांटि नेत्राऊपरि लेपकरैतो सर्व नेत्रांका रोगजाय १ अथदूसरो लेपलि० लोहकापात्रमैं नींबूंको रसनाषि पाछै येरसनैं क्यूंयेक जाडोकरै पाछै नेत्रऊपरि लगावैतो नेत्र दूषताआछ्याहोय १ अथ नेत्रकादूषिवानें तत्काल दूरिकरै सोलेपलिष्यते अफीममासो १ फुलाईफिटकडीमासो १ लोद मासो १ यांनैं नींबूकां रसमैंवांटि यांनैं क्यूंलोहकी कडाछीमैं गरमकरि पाछैवेंको नेत्रांऊपरि लेप करैतो नेत्रतत्काल दूषतारहै ३ अथ नेत्रका आछ्या होवाको औरलेप लिष्यते महालौठी गेरू सींधोलूण दारुहलद रसोत ये बराबरिले त्यांनै जलसूं मिहीवांटि नेत्रऊपरि लेप करैतो नेत्रका दूषिवाका सर्वरोगजाय ४ अथ आषदूषै तींका आछ्या होवाकी पोटलीलि० पठाणीलोद मासो

न. टी. ज्यांकानेत्रहलका. मस्तकहलको. मनप्रसन्न. ज्यांकाचित्तमैउत्सवादिक यादआवै अरनेत्रांसूं घणीबारीकवस्तुदीषै. अररंगआदिलेर मात्रपदार्थस्पष्टदीषै. अरदेषतांश्रमहोय नहीं. ज्यांका नेत्ररोगजायछै. ज्यांमैंयेलक्षणहोय.

१ फुलाई फिटकडी मासो १ रसोत मासो १ महलौठी मासो १ यांनें मिही वांटि गवारका पाठाका रसमें अथवा पोस्तका पाणीमें अथवा जलमें मासो १ भरकीपोटलीकरिदूषता नेत्रके ऊपरि बार वार फेरैतो नेत्र आछ्या होय ५ अथ नेत्रमें वायकरि सूल चाल तीहोय तीके आछयोहोवाको सेकलि० पठाणी लोदनें मिहीवांटि वेनें कपडासूं छाणिवेनें घृतमें भूनेपाछे वेनें गरम पाणीसूं सेकैतो नेत्र अछयाहोय ६ अथ नेत्ररोगनें आछ्याकरिवाकेवास्ते इंतरें अतनाजतनकरैतो वैद्यठगावैनही. ईसंप्रदायसूं सो जतन सारंग धर वागभट्टादिकांकामतसूंलि० सेक १ आच्योतनकर्म २ पींडी बांधणी ३ बिडालकर्मनाम आंष्यांऊपरि लेपकरायो ४ तर्पणना म नेत्रमांहि घृतरसादिक घालणो ५ पुटपाक ६ अंजन ७ शस्त्र कर्म ८ ईप्रकार नेत्ररोगांका जतन कराजे. अरंडकापान बकल जड यांनें औटाय यांको जलकरि ईजलनें बकरीका दूधमें औटा वें योजलबलिजाय दूध आयरहे तदि वेदूधनें क्योंगरमकरि आं षिऊपरितरडोदेवैसो १०० वार वोलजितेतो वायका दूषिवाकी आंषि आछीहोय ७ अथवा दूधमेंक्यूं सींधोलूण नाषि गरमकरि सुहावतो इहींतरे आंषिऊपरि तरडोदेतो वायकीआंषि आछीहोय ८ अथवा हलद दारुहलद सींधोलूण यांमें दूधपकाय ईदूधको आंषिऊपरि तरडोदेतो आंषि आछीहोय ९ अथ गरमीसूं आंषि दूषणो आई होय तींको सेकलिष्यते पठाणीलोद महलौठी यांनें मिहीवांटि घृतमें सेकिपाछे बकरीकादूधमें यांनें पकावें पाछे ईदूध को आंषिकें तरडोदेतो गरमीका दूषवाकी आंषि आछीहोय १० अर लोहीका दुष्टपणासूं आंषिदूषे तींकोभी योही जतनछे. ११

न. टी. आरामहुवापाछै. मनुष्य नेत्रांकेवास्तै तावडो. सीत. शरदी. हवा. षटाई. घणी महनत घणोनेत्रांसूं देषणों. घणीदूरकी दृष्टिपसारणी. अर नेत्रांमें घणीठंडी औषधी. अथ वाकोईबी चीजघालणी नहीं. नेत्रांकै कोईमहार लगावादेनहीं.

अथवा त्रिफला लोद महलौठी मिश्री नागरमोथो. यांनैं सीतल ज
लसूं मिहीवांटि ईंको नेत्रकै तरडोदेतौ लोहीसूं दूषती आंषि आ
छीहोय १२ अथ आच्योतनकी विधिलिष्यते आच्योतन कर्मरा
तिनैं नहीकीजे. आंषि उघाडिराषै तीमैं आठबूंद ८ औषद्यांका
रसकी नाषिजै. सीतकालमैं गरम नाषिजै उष्णकालमैं सीतल ना
षिजै १३ वायकी आंष दूषैतौ तीषी औषदिनाषिजे कफकी आं
षिदूषैतौ तीषी लूषी अर ऊनीऔषधिको रसनाषिजे १४ अथ
वायसूं आंषिदूषै तींको लेपलिष्यते नींबका पानांकोरस पाणीघा
लि काढै तीमैं लोदनैंवांटि गरमकरै पाछै वेंकोलेपकरै आंषि ऊप
रितौ वायकी रक्तपित्तसौं दूषती आंषि आछीहोय १४ अथ रक्त
पित्त अर वायसूं आंषिदूषैतींको जतनलि० नेत्रनै उघाडिस्त्रीका
दूधकाटोपा ८ नाषैतौ गरमीकी लोहीकी दूषती आंषि आछीहोय
१५ अथ वायसूं आंषिमैं रूलाचालै अर जतनकर्‍यां आराम होय
नहीं तींकाललाटकी नसकीसीरको क्यूं लोही कढाजै. अथवा भं
वारा ऊपर डाहदेतौ नेत्रकारूला आछ्याहोय १६ अथवा सह
जणाका पानांकीपिंडी अथवा नींबका पानांकीपिंडी नेत्रऊपरि बां
धैतौ कफका नेत्रका रूलाजाय १७ अथ नेत्रमैं गरमीकारूलाचा
लै तींकाजतनलिष्यते आंवलानै पाणीसूंवांटि वेंकीपिंडीबांधै अ
थवा बकायणका पानाकीपिंडीबांधैतौ नेत्रका गरमीकारूलाजाय
१७ अथवा त्रिफला लोद यांनैं कांजीका पाणीमैंवांटि पाछै यांनैं
घृतमैंतलै यांकीपिंडी बांधैतौ गरमीका अरकफका रूलाजाय १८
अथ नेत्रमैं रूला अर सोई षाज होय तींकाजतनलि० सूंठि नींब

* नेत्रकाकारणांमूं मस्तकमैं वेगचालैछै. ज्यांनैरूलाकहैछै. जोरूलाघणां असाध्यहो यछै. जींकैवास्तै लोहीमस्तकको कढायकरपछै मूंठनैं नारेलकागटामैं पचायकरजेमैघृत. सकर. बिदाम. पिस्ता. घालकर पुवावैतौ मगजतरहोय. रूलांकोरोग आरामहोयछै. श्रीधरकीत पासीछै. सत्यछै.

कापान ईमें क्यूं सींधोलूण नाषि यांनें मिहीवांटि ईकीपिंडी नेत्रकै बांधैतौ नेत्रकारूळा सोई षाज ये सर्वजाय १९ अथ नेत्रकी गुहां जणीको जतनलि० नेत्रकी गुहांजणीनें घृतसूं सेकै पाछै वेगुहांज णीनें शस्त्रसूं फोडै वेऊपरि मैणसिल हरताल तगर सींधोलूण ये बराबरिले यांनें सहतसूं मिहीवांटि ईको लेपकरैतौ गुहांजणीजाय २० अथ नेत्ररोगवास्तै तर्पणकिविधिलिष्यते जीजायगां पवन चा लैनहीं तहांसूधौ सुवाणिजे. पाछै वे नेत्रऊपरि चोगडदाई उडदां कोचून मिहीपीसि वेनें पाणीसूं ओसणिवेकी नेत्रांकैवाडीकीजै अं गुल २ कीपाछै वेमैं घृतक्यूं गरमकरि सुहावतौ अथवा सौ १०० वारकोधोयो अथवा दूधईमैं राषैजितै १०० वारकीगिणतीगिणै तितनें राषैतौ नेत्रकारोग बांकापणो बांफणीजातीरही होयसौ आं षि आछीतरै झगडैनही सोतिमिर फूलां मथवाय रूळा येसारा रोग ईतरपणसूं जायछै. योतर्पण बादलामैं उष्णकालमैं चिंतामैं भ्रममैं नहीकराजे २१ इतितर्पणविधिः

अथ नेत्रांजन लिष्यते शंषकीनाभि वहेडाकीमींजीं हरडैकीमीं जी. मैणसिल पीपलि मिरचि कूठ वच येबराबरिले त्यांनें बकरीका दूधसूं मिहीवांटि अंजन करैतौ फूलो तिमिर नेत्रांमैं मांसकीवृद्धि नेत्रमैं काच आयो होय जीनें पटलनें रातींधानें ओर नेत्रांका रो गनें यो अंजन दूरि करैछै. २२ इतिचंद्रोदयगुटिका अथ लेपनी गुटिका लिष्यते कणगचका बीजनें मिहीवांटि यांकै केंसूलाका रस की घणी पुटदे पाछैयांकीगोलीकरि पाछै ईगोलीनें पाणीसूं घसि अंजन करैतौ फूलाने आदिलेर नेत्रका सर्वरोग जाय २३ अथ दंतवर्ति लिष्यते. सूरकोदांत गऊकोदांत गधाकोदांत संषकीनाभि

न. टी. नेत्रांकारोगांमैंअंजनकैवास्तै जोचंद्रोदयगुटिकालिषीछै. जीमैंशंखकीनाभिलिषीछै तो. वानाभीनामछै. जोशंखकोमध्यभागछै. जीमैंआंटासाघणाहोयछै. अरवेंकीकठणताघणीछै जीसूं अंजनमैंलीनीछै.

अविंधमोतीं समुद्रकाझाग येसारा बराबरिले यांनैं मिहीवांटि यांको अंजन करैतो सर्वप्रकारका फूलाजाय २४ अथवा कमलगट्टा सहजणाकाबीज नागकेंसरि यांनैं मिहीवांटि अंजन करैतो नींद आवैनहीं. २५ इतिनींददूरिहोवाको अंजनस० अथ रोपणी गुटिकालि० तीलांकाफूल ८० पीपलिकाबीज ६० चवेलीकाफूल ५० मिरचि १६ यांनैंमिहीवांटि गोली कररिराषै पाछैगोलीनैं पाणीमें घसि ईंको अंजनकरैतो तिमिर अर जुनरोगफूलोमांसवृद्धीनैंआदिलेर सर्वरोगजाय २६ अथ स्नेहनीगुटिका रसोत दोन्यूंहलद चवेलीकाफूल अथवापान नींबकापान यांनैं मिहीवांटि गोवरकारससूं अंजन करैतो रातींधोजाय. २७ अथ द्वितीयस्नेहनी गुटिका लि० आवलांकाबीज बहेडांकाबीज हरडैकाबीज यांनै मिहीवांटि यांको अंजन करैतो नेत्रकापाणीनैं अर वातरक्तरोगनैं यो अंजन दूरिकरैछै २८ अथवा नीलोथूथो सोनामुषी सींधोलूण मिश्री संषकीनाभि मैणसिल. गेरू समुद्रकाझाग कालीमिरचि येबराबरिले यांनैं मिहीवांटि सहतसूं अंजन करैतो तिमिरनैं नेत्रमैं कांचआयोहोय तीनै फूलानैयो अंजन दूरिकरैछै. २९ अथ फूलांकादूरिहोवाको अंजन लिष्यते चीणियां कपूरनैं वडकादूधसेंती अंजन करैतो दोयमहिनाको फूलोजाय ३० अथ नींदकादूरिहोवाको अंजन लिष्यते दोयकालीमिरचि मिहीवांटि घोडाकी लालसूं अथवा सहतसूं अंजन करैतो नींदजातीरहै. ३१

अथ तंद्राका दूरिहोवाको अंजन लिष्यते. मूंगो कालीमिरचि कुटकी वच सींधोलूण यांनैं बराबरिले यांनै वाछडीका मूतसूं घसि ईंको अंजन करैतो तंद्राजाय ३२ अथ रसांजन कुटिका रसोत रा

न. टी. निद्रानाशअथवाअतिनिद्रावासमनिद्रायेकारणछै. सोयाकारणाकीतपासकरणी निद्रानहीआवै. अथवाघणीआवैतौशरीरमैंविकारसौंजाणणी. अरसमसदारीतसौं वगतबराबर आवैसो आरोग्यताजाणज्यो.

ल चवेलीकाफूल मैणसिल समुद्रकाझाग सींधोल्लूण गेरू काली मिरचि येबराबरिले यांनैं मिहीवांटि सहतमै अंजन करैतौ नेत्रकी षाजिनैं वाफणीजाति रहीहोय त्यांनैं योआच्छीकरै ३३ अथ मोतियाविंदका दूरिहोवाको अंजनलि० गिलवैकोरस टंक २ सहत मासो १ सींधोल्लूण मासो १ यांसारांनै येकठां करि मिहीवांटि अंजन करैतौ मोतियाविंदतिमिर धूंधि कांचनें आदिलेर सर्व रोग जाय ३४ अथवा साठीकाजडनैं स्त्रीकादूधसूं घसि अंजन करैतौ नेत्रांकी षाजि जाय साठीकी जडनैं सहतसूं घसि अंजन करैतौ नेत्रांको पाणीपडतोरहै. साठीकीजडनैं घृतसूं रगडि अंजन करैतौ फूलोजाय. साटीकीजडनैं तेलसूं घसि अंजन करैतौ तिमिरजाय साटीकीजडनैं कांजीसूं घसि अंजन करैतौ रातींधोजाय ३५ अथ नेत्रांमैं पाणीपडै तींका दूरिहोवाको अंजन लिष्यते बोलका पाना को काढोकरितींको रसकाढै पाछै तींरसनैं छाणि ओरूं गाढो करै पाछै इमैंसहतमिलाय ईको अंजन करैतौ नेत्रांको पाणी पडतो रहै ३६ अथ निरमलीका फलनैं पाणीमैं घसि ईको अंजन करैतौ नेत्रांका पाणी पडतो रहै. ३७

अथ नेत्रांका निर्मल करिवाको अंजन लिष्यते निर्मलीका फलनैं सहतमैं घसि ईमैंक्यूं कपूर मिलाय अंजन करैतौ नेत्र निर्मल होय ३८ अथ जींका नेत्रमैं मोतियाविंदकाच उगैरै यासूझै नहीं तींका आछ्या होवाको अंजन लि० कालासापका मांस को घृत अर संषकीनाभि अर निरमली यांनै मिहीवांटि नेत्रांमैं अंजन करैतौ मोतियाविंदउगैरै रोगजाय अर ईनै सूझै ३९ अथवा मुरगाका अंडाकाछ्योंत मैणसिल कांच संषकीनाभि चंदन सीं

न. टी. निर्मलीनाम औषधीलिषीछै सोकतकनाम वृक्षकाबीजछै. यांमैं नेत्रसाफकरणै कीशक्तिछै. जैसैचोमासाकोगुदल्यो जलषाडाषोचराकोजींको पात्रभरकर निर्मलीनैंजलमैं घसकर वाजलमैं घालदेवैतौ पावघडीमैं जलनिर्मलह्वोयछै.

घोलूण येसर्व बराबरिले यांनै मिहीवांटि अंजन करैतौ मोतियाविंद फूलानै आदिलेर नेत्रकारोगजाय ४० अथ नेत्रकासर्वरोग दूरि होवाको अंजनलि० कालीमिरचि मासा २ पीपलि मासा २ समुद्र झाग मासा २ सींधोलूण मासा २ सूरमो मासा २ यांनैं निपट मिहीवांटि चित्रांनक्षत्रकैदिन ईंकी अंजन करैतौ फूलो षाजि काच नेत्रमैं आयो होय तींउगैरै नेत्रका सर्व रोगजाय ४१ अथ नेत्रका सर्व रोग जावावालो अंजन लिष्यते षपरयानै मिहीवांटि पाछै वेनै जलमैं डबोयदे पाछै वेंकै ऊपरिलो पाणीलेतौ जाय तीनैं जुदोराषै वारवारको पाणी अर नीचैरह्यो जोषपरयाको चूर्ण तेनैं लेनहीं अर ओषपरयाको पाणीछै सोजुदापात्रमैं सुकायदे तींकी पापडी करिले पाछै वेपापडीकै त्रिफलाका रसकी पुट ३ दे पाछै ईंपापडी को दशऊहींसो ईंमैं कपूर मिलावै पाछै इनै ओरूं मिहीवांटि पाछै ईनै अंजन करैतौ नेत्रांका सर्वरोगजाय ४२ अथ नेत्रांका सर्व रोग हरवाको ओर अंजन लि० सुरमानैं अग्निसूं गरम करि त्रिफलाकारसमैं वारसात ७ डबोवैपाछै स्त्रीकादूधमैं ऐसीतरै वार ७ डबोवैपाछै गायका मूतमै इसीतरै वारंवारतातो तातोकरि ईसुरमानैं डबोवैपाछै ओरू स्त्रीकादूधमैं वार ५ डबोवैपाछैईनैं वांटिईको अंजन करैतौ नेत्रांका सर्वरोगजाय ४३ अथनेत्रकी दृष्टिकरिवावालीसलाका लि० सीसानैं अग्निमैं गालि गालि त्रिफलाकारसमैंवारसौ १०० डबोवैं पाछै ईसीही तरै जलभांगराका रसमैवार. ५० डबोवै पाछै ईसीही तरै सूंठिका रसमैं वार २५ डबोवै पाछै ईसीही तरै घृतमैं वार ५० डबोवै पाछै ऐसेहीगोमूतमैं वार २५ डबो

---

* श्लोक सीतांबुपूरितमुखः प्रतिवासरं यः कालत्रयेणनयनंद्वितयंजलेन। आसिंचति ध्रुवमसौन कदाचिदक्षिरोगव्यथा विधुतरांभजतेमनुष्यः ॥ १ ॥ अर्थ–दिनदिनप्रतिएकदिवसमैं तीनवषतथंडापाणीसौं मूंढोभरअरदूसराथंडाजलसूं नेत्रांऊपरतीनवषतजलचलूभरछिडकैतौनेत्रपीडाअतिदुःखदेवावाळी नेत्रसंबंधीपीड़ाआरामहोय शारंगधरमैंलिषीछै.

वे पाछे सहतमें वार २५ डबोवें पाछे बकरीका दूधमें वार २५ ड बोवें पाछे ईसीसाकी सलाकाकरे पाछे ईसलाकानें नेत्रमें फेरेतो सर्वप्रकारका नेत्रका रोगजाय ४४ अथनयनांमृत अंजनलि० सो ध्यासीसानें गालिवेबराबरि वेमें पाणी घालिदीजे पाछे पाराकी ब राबरि वेमें सुरमोघालि अर सारांको दसवोहिंसो ईमें भीमसेनी कपूर नाषे पाछे यांसारांनें मिहीवांटि ईंको अंजन करेतो नेत्रका सर्वरोग जाय ४५ अथ सर्प उगेरेका जहरका दूरिकरिवाको अं जनलि० जमालगोटाकीमाहिलि मींजीलीजे तीनें नींबूका रसकी पुट ३१ दीजेपाछे ईंकीगोलीकीजे पाछे ईंगोलीमें मनुष्यकी लाल सोंघसि नेत्रमें अंजन करेतो सर्प उगेरेका जहरदूरिहोय. ओआ दमी मूवोभीजीवें ४६ येसारा अंजन सारंगधरमें लिष्याछे. अथ आंषि दूषती होयतीका आछ्यौहोवाको श्रीहजूरको वतायो नुकसो लि० अत्तारकीदवा अरुजांगी हरडे येदोन्यूं ओषदि पाणीमें घसि आंष्यांके चोगडदा लेप करेतो वायपित्त कफयां तीन्यूं आजारां में कोईविकारसूं आंषि दूषणी आई होयतो वेआंषि केशीघ्र आ रामहोय योनुकसो अजमायो हुवोछे. अथवा वाग्भट्टका मतसूं मोतियाविंदको लक्षणलि० कच्चामोतियाविंदको जालो सलाकाकरि उतारिजेनहीं. पक्कामोतियाबिंदको जालो उतारिजे. अथपक्का मोतियाविंदको लक्षणलि० माणस्यांऊपरि दहींसरीसो मट्ठासरी सो बूंद आयजाय अरवे नैक्यूंभीदीसैनही अरवे नेत्रमें पीडा दिक क्यूंभी होयनहीं तींनेत्रको सलाकाकरि जालोउतारिजे अर इतना आदमीको नेत्रको जालो उतारिजे नहीं पीनसका रोगवा लाको षासिवालाको अजीर्णवालाको डरपस्यालको वमन कर्‌यो

न. टी. अत्तारकीदवालिषीछै.जीनैंअंजरूतकहैछे. अरया औषधी मुगलाईछे परंतु अज रूतकीजायगां नीमकोगूंदलेणोचाहिजे. अरयावातप्रसिद्धछै. नेत्रकारोगमैं. नीमकाफल. फूल. पान. रस. सर्वकामआवैछै.

होय जींको माथाका रोगवालाको अर कानमैं पीडाचालै नेत्रमैं सूलचालै तींको इतना आदम्यांका नेत्रको जालो उतारिजै नहीं अर श्रावण कार्तिक चैत्र यां महिनामांहि जालो उतारिजै नहीं. अर साधारण कालहोय तदि जुलाबदे शरीरनै शुद्धकरि भोजनकरि आछ्यानिर्मल स्थानमैं बैठाय पवनादिक जेठै नहींहोय तेवैद्य मध्यान्ह पहली आंष्यांका रोगमैं प्रवीण ऐसोवैद्य आंष्यांका रोगनैं दूरिकरिवावालो ऐसाकनैं जालोलिवावै ओवैद्यहैसो वेनेत्रका रोगीनैं पालथीकरि बैठावै वेरोगीके पीछे शाणा आदमी चतुरनैं बैठावै ओ आदमी दोन्यूं हाथांसूं रोगीनै पकडै वेनै हालवादे नहीं ईसीतरै वेनैबैठावै पाछै वेंकी आंषिमैं ओवैद्यसलाका घालै निपट चतुराईसूं वेंकीआंषिमैं सलाकाफेरै नेत्रका प्रांतभागमैं जालानैं फोडिसारा नेत्रकोजालो दूरिकरै. पाछैवे जालामाहिसूं वेमाणस्या ऊपर लीबाविकारकी बूंदढहपडै तदि ईमनुष्यनै सर्ववस्त जथार्थ दीषै अर सलाकाफेर्‍यां पहलीनेत्रनें मूढाकी बाफसूं फूंकदे पसेवयुक्तकरिले अर वैद्य आपका अंगुठासूं वेरोगीका नेत्रमसलि नेत्रकोमैल येकठोकरिले पाछै शलाकासूं जालौले अर वैद्यभी आपकोहाथ ओर तरै हलावैनहीं. ईविधिसूं नेत्रकोजालो लेपाछै रोगीकी घणीषातरजमाकरि वेनै सुझायदे पाछै वेरोगीकी आंषिऊपरि घृतका फोहाबांधे अर वेरोगीनैं सूंधोसुवावै पवन चिलकाउगैरै आवादेनहीं ईसी जायगासुवाणै अर वे रोगीको सिरउगैरै सारो सरीर हलायवादेनहीं अरवे रोगीनैं छींक षास डकार थूकवो घणांपाणीपीवो दांतण स्नान षेदउगैरै कर्म करिवादेनहीं अर वेनैं औंधोसौंवादेनही निपट हलको भोजनकरावै घृतादिक गरिष्ठसो

न. टी. जोचतुरवैद्य नेत्रको जालो उतारै जीनैंयथोक्तरीतसौं नेत्रकैजालाको वामोतियांको घणांजतनसौं उतारणोयोग्यछै. कारणघणालोक मूर्षतासौं जालोउतारवामैं नेत्रांको नुकसान करैछै. जानैकालरूपजाणज्यो.

पायवा देनहीं ईविधि दिन ७ करैपाछै क्यूंघृत घालि पतलो हल
को अन्नको पलेवो षुवावै प्यावै पाछै वायनैं दूरिकरिवावाला मि
श्रीनें आदिलेर द्रव्य षुवावै ईसीतरैं मंडल १ तांई राषै क्यूं कुप
थ्य करिवादेनहीं पवनतेजअरमिहीवस्तनैं देषवादेनहीं अर नेत्र
नें सीतलताई होय इसीवस्त दोब उगेरै देषवादे इसीतरैं करैतो
मोतियाविंदनै आदिलेर नेत्रकासर्वरोग जाय पाछै यांके मोतिया
विंदको सीतलचसमोलगावैतो यो रोगईकै कदे होयनहीं. यो मो
तियाविंदको जतन वाग्भट्टमैं लिष्योछै. ४८ अथपांडुरोगका दू
रिकरिवाको अंजन लि० हिंगनैं दडघलकारसमैंघसि नेत्रांमैं अंज
न करैतो पांडुरोगपील्योजाय ४९ अथ नेत्रांकादूषवाको नाराय
णांजनलि० तुलसीकापानांकोरस अरबीलकापानांकोरस येवराब
रिले पाछै यांदोन्यांनैं कांसीकापात्रमैंघालै अरयांदोन्यांकी बराब
रि स्त्रीको दूधघाले पाछै यांतीन्यांनैं कांसीकापात्रमैंघालि गजवे
लिका घोंटासूंपहरदोयरगडै पाछै वेही पात्रमैं तांबाका घोंटासूंपह
रदोय रगडै पाछै ईको अंजन करैतो नेत्रकोसूलअर नेत्रको पकिवो
तत्काल जाय ५० अथ नयनामृतगुटिका सूंठि हरडैकी छालि कु
लत्थ षपस्यो फिटकडी पैरसार माजूफल येसारीऔषदि बराबरि
ले अर भीमसेनी कपूर कस्तुरी अवींधमोतीं येएकएक औषधिका
तोलसूं आधाआधाले पाछै यांसारांनैं षरलमैं मिहीवांटि पाछै नीं
बूकारसमैं दिन ५ षरलकीजे पाछै यागोली जलमैं घसि अंजन
करैतो नेत्रांकोतिमिरजाय अर ईगोलीनैं स्त्रीकादूधसूं घसि अंजन
करैतो फूलो पटल जाय अर ईगोलीनैं सहतसूं अंजन करैतो ने
त्रांको जल पडतो रहै अर ईनैं गोमूतसूं आंजैतो रातींधोजाय

न. टी. नयनामृतनामगुटिकामैं,जोषपर्चोलिष्योछै सोशुद्धषपरचोगोमूतकैडोलकायंत्रसूं
प्रहर २९ आंचदेणी. अरभीमसेनीकपूरछै सोईनै शुद्धकपूरकहैछै. अरआविंधकह्याछै. सोतो
बूंकाकैवास्तैछै. कोईमोटानहींघालदेणांनुकसानकीवातछै.

अर केलिका रससूं आंजैतौ नेत्रकी मास वृद्धिजाय ५१ इति नय नामृत गुटिका अथ नेत्रांकी वाफणी जातीरही होयतींको अंजन लि० आंधीझाडाका पानांनैं गोमूतमैं वांटि पाछे ईसूं आधो षप रयोले पाछे यांदोन्यांनैं षरलमैं वांटि यांदोन्यांकैवीचि जसतका मिहिपत्रकरिमेलै पाछे ईकीकपडमीटीदे सुकाय आरणा छाणामैं गज पूटमैं फूंकीदे पाछे स्वांग सीतल हुवांकाढै पाछे ईनैं मिहीवांटि ईको अंजन करैतौ नेत्रांकी बाफणी आवै. ५२ अथ सीतलाका फूला दूरि होवाको अंजनलि० गधाकी दाढनैं मिहीवांटि वेंको अंजन करैतौ सीतलाको फूलोजाय ५३ अथ सबल वायका दूरि होवाको अंजनलि०आंवला अर गंधक सेती मारयोतांबो तीनें मिही वांटि वेंको अंजन करैतौ सबलवाय पटलनैं आदिलेर नेत्रांका सर्व रोगजाय ५४ येसर्व जतन वैद्यरहस्यमैंछै. अथ फूलाधूंधिकादूरि होवाको जतनलि० चोषो नीलोथूथो. टंक ५ फिटकडीफुलाई टंक ५ पीपलि भीजोयबीज काढिले टंक ५ मिश्री मासा ५ यांनैंमिही वांटि काजलकरि योकाजल नेत्रांमैं घालैतौ फूलो ढलको धूंधिये साराजयं* ५५ अथ चंद्रोदयगुटिका० शंषकीनाभि वेहेडाकीमींगी हरडैकीछालि मैणसिल पीपलि कालीमिरचि कूठ वचये औषदिस र्व बराबरिले त्यांनैं बकरीका दूधसूं मिहीपीसि गोलीकरि राषे पाछेगोलीनैं जलसूं घसि अंजन करैतौ तिमिरनैं नेत्रका मांसकी वृद्धिनैं पटलनैं कांचनैं रातींधानैं अर फूलानैं योदूरि करैछे. ५६

अथ चंद्रप्रभागुटिका हलद नींबकापान पीपलि मिरचि वाय विडंग नागरमोथो हरडैकीछालि येसर्व बराबरिलै यांनै मिहीवांटि

---

* श्लोकः भुक्तापाणितलंघृष्ट्वाचक्षुषोर्यद्दिदीयते। जातरोगाविनश्यंतितिमिराणितथैवच ॥१॥ अर्थ–भोजनकियांपाछै आलाहाथांकी हथेली घसकरनेत्रांऊपरिफैरैतौ नेत्रविकारतिमिरादिकरोगदूरहोयछै. नेत्रथंडारहै. सारंगधरऋषीकामतप्रमाणैं. अरुयाग्रंथऊपरटीपणसंक्षेप यथार्थकरीछै. जीनैं वांचकरविद्वानजन प्रसन्नहोसी श्रीधरनै पातरीछै.

बकरीका मूतसूं दिन ३ षरलकरै पाछे यांकी गोलीकरि छाया सुकावै पाछे ईगोलीनैं गोमूतसूं घसि अंजनकरै तो नेत्रकाकांचनै दूरिकरै अर जलसूं घसिअंजन करैतो तिमिरनैं दूरिकरैछे सहतसूं घसिअंजन करैतो पटलनैं दूरिकरै अर ईनैं स्त्रीका दूधसूं घसि अंजन करैतो फूलानैं दूरिकरै. ५७ इतिचंद्रप्रभावर्ति० अथ द्वादशामृत हरीतकीलि० हरडैकीछालिको भाग १ वहेडाकीछालिका भाग २ आंवलाका भाग ४ सतावरी टका २ सार टका १ महलौठी टंक २ तज टंक ५ सींधोल्लूण टंक ५ पीपलि टंक ५ अर मिश्रीयांसारांकी बराबरिले पाछे यांसारांनैं मिहीवांटि टंक २ सहत अर घृतकैसाथि रोजीनादिन ४९ षायतो तिमिरनैं पटलनैं नेत्रांका कांचनैं रातींधानैं फूलानैं नेत्रमैं जलआवै तीनैं सबलवाय उगैरै सर्वनेत्रांकारोगांनैं याद्वादशामृतहरीतकी दूरिकरैछे. ५८ अथ त्रिफलादिगुटिका त्रिफलाकोरस सेर १ गिलवैकोरस सेर १ आंवलांकोरस सेर १ जलभांगराकोरस सेर १ अरडूसाकोरस सेर १ सतावरीकोरस सेर १ बकरीकोदूध सेर १ कमलगट्टा त्रिफला महलौठी पीपलि दाष मिश्री कठ्याली यांसारांकोरस सेर ऽ।।· ले यांसारामैं गऊको दूधसेर २ पक्कोनाषे पाछे मधुरीआंचसूं पकावै येसर्व बलिजाय घृतमात्र आयरहै तदि ईघृतनैं टका २ भररोजीना षायतो नेत्रको तिमिरकाच फूलोसर्व० वाय उगैरैरोगजाय ५९ इति महात्रैफल्यंघृतं अथ गरमकाविकार दूरिहोयवाको अंजन लेपकीविधिलि० आंषीदूषै वासोई होय आवै अंगकैतो आंषिमैं अंजनकर्‍यां वालेपकी या आरामहोय सोध्योसुपेदो मासा १० तींका सोधिवाकीविधि सुपेदानैं मिहीवांटि चीणीका वासणमैं

न. टी. चंद्रप्रभानामगुटिकालिषीछै सोऔषधीकौआदिमैं तौगुटिकालिषीछै. अंतमैं ईनैं चंद्रप्रभावर्तिलिषीछै. जींमैं योहीभेदछै. जींकीगोलीकरले सौतोगुटिकाले अरईंकीहीबातीजिसीकरले जींनैं वर्तिकहैछै.

घणापाणीसूं धोयले सुपेदो नीचोबैठि जाय तदिवेंको पाणीकाढि नाषे ईंतरे तीनवार करिलीजे पाछे अंजरूत औषदि अत्तारकीमा सा ३ लीजे तींकासोधिवाकीविधि अंजरूतनैं मिहीपीसै पाछे बेटी वालीस्त्रीको दूधले अर ईमैं इतोमिलावै जोपहर आठमैं सुसिजा य इतरै पुट ५ दे पाछे कतीरो मासा १ भीमसेनीकपूर रती ४ नि संसतो औषदि अत्तारकीमासा २ धौलोगूंद मासा १ तोळमाफि कसर्व औषदि भेलीकरै गुलाबका जलमैं षरलकरै पाछे येकजीव हुवा बोरप्रमाण गोलीबांधै पाछे लगावणी होय अथवा आंजणी होयतदि गुलाबका जलमैं अथवा सादा जलमैही अंजनतथा लेप करैतो गरमका सर्वविकार दूरिहोय ६९ इतिगरमका अंजन लेप कीवि० इतिनेत्रांका सर्वरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनसं० अथ कानांकारोगांकी उत्पत्ति लक्षण जतन नामलि० कानांकारोग सुश्रूतमैं अठावीस लिष्याछे. सोलिषूंछूं कर्णशूल १ कर्णनाद २ बधिर्नामबहरा पणो ३ क्ष्वेड ४ कर्णश्राव ५ कर्णकंडू ६ कर्णगूथ ७ कर्णप्रतिनाद ८ कृमिकर्ण ९ चोटलागिवासूं कर्णमैं व्रणहोय १० अर दोषासूं कर्णमे व्रणहोय ११ कर्णपाक १२ पूतिकाकर्ण १३ वायको कर्णसोथ १४ पित्तको कर्णसोथ १५ कफको कर्णसोथ १६ लोहीको कर्णसोथ १७ वायको कर्णार्श १८ पित्तको कर्णार्श १९ कफको कर्णार्श २० लोहीको कर्णार्श २१ वायको कर्णकै अ र्बुद २२ पित्तको कर्णकै अर्बुद २३ कफको कर्णकै अर्बुद २४ रक्त कर्णकै अर्बुद २५ मांसको कर्णकै अर्बुद २६ मेदको कर्णकै अर्बुद २७ नसांको कर्णकै अर्बुद २८ चरकमैं कर्णपालिकै विषैचारिरोग वधता कह्याछे. उत्पात १ उन्मथक २ दुःखवर्धन ३ परलेहिन ४

न. टी. सोवैवर्तिको. वा गुटिकाकोजैठैजिस्यो मयोजन होय उठैवैद्यहैसो उस्यो ही का रण. करलेछै. नेत्रांकाकारणमैं. वर्तिका अंजन करणैमैं सुलभ होयछै. अरगुटिकाषावामैं सुलभ होयछै.

अथ कर्णशूलको लक्षणलि० जींका कानमें वाय धसिजाय अर ओ कोपकूं प्राप्तिहोय जदि कानमें घणो सूलचलावें ईनें कर्णसूल कहिजे. १ अथ कर्णनादको लक्षण लि० जींकाकानकाछिद्रमें वाय धसिरहैतदि वेपुरषकै कानमें भेरीको मृंदगको संषनें आदिलेर अनेक शब्द बोलै तीनें कर्णनाद कहिजे २ अथ बाधिर्यको लक्षणलिष्यते बालक अर बूढो घणा दिनको बहरो जो होय सो आछ्यो होय नहीं ३ अथ क्ष्वेडकर्णरोगको लक्षणलिष्यते जींका कानमें वायपित्त कफ येधसिजाय अरवेंका कानमें बांस फाडिवा कासा शब्द होय तीनें कर्णक्ष्वेडरोग कहिजे ४ अथ कर्णश्रावको लक्षण लिष्यते जींकाशिरमैचोट लागिहोय अथवा जींका कानमें जलपड्योंहोय वेंका कानमांहिसूं राधिवहवो करै तीनें कर्णश्राव कोरोग कहिजे. ५ अथ कर्णकंडूको लक्षणलिष्यते. जीकाकानमें कफसंयुक्त वायबैठे ओकानमें षाजिकरे तीनें कर्णकंडू कहिजे ६ अथ कर्णगूंथको लक्षण लिष्यते जींका कानमें पित्तकी गरमी धसिजाय अर कफनें सोसिलै तींका कानमें मली घणी आवे तीनें कर्णगूथं कहिजे. ७

अथ कर्णप्रतिनादको लक्षणलि० ओकर्णगूंथ पतलो होजाय अर पाछें ओकानमें आय प्राप्ति होयतीनेंकर्णप्रतिनाद कहिजे ८ अथ कृमि कर्णको लक्षणलि० जींकाकानमें बुग पतंग जिनावर कान खजूरानें आदिलेर कोई जिनावर धसिजाय तींका कानमें फडफडावे. अरवे पुरुषनें पीडकरि घणो व्याकुल करिदे अरवेंकी भूष उगेरै सर्वजातीरहै तीनें कृमि कर्णरोग कहिजे. ९ अथ कर्णविद्रधीको लक्षणलि० यादोयप्रकारकीछै. एकतो कानमें चोटलागित्र

न. टी. नेत्रांका रोग्यांकै तांईपथ्यापथ्य तो लिष्याहीछै. जींमुजबजाणिलेशी. अरअमै कर्णरोगलिष्याछै सोकर्णनामकानकारोगछै. जींमें विशेष करकै बालकांकै बहोतहोयछै. बहरा तो मोठामनुष्य घणा होयछै.

ए पडिजाय अरयेक दोषांसूं कानमैं व्रण पडिजाय पाछै वेकानमा
हिसूं लोहीराधि उगैरे सर्वनीसरै. अर कानमैं दाहउगैरे सर्वरहै
तीनैं कर्णविद्रधी कहिजे १० ११ अथ कर्णपाकको लक्षण लिष्य
ते जींका कान पित्तकरि पकिजाय अर वेंका कानमैं राधिनीकलै
सोकादासिरीसी नीसरै तीनें कर्णपाक कहिजे १२ अथ पूतिकर्ण
को लक्षण लिष्यते जींका कानमैं व्रणपडे पाछै वेंका कानमैं जल
पडिवो करै अरवेमैं राधि भी पडे तीनें पूतिकर्ण कहिजे १३ अथ
वाय पित्तकफ लोहीका प्रभावसूं जोहोय जाय सोयांका लक्षणसूं
जाणिलीजे १४ अर वायपित्त कफ लोही यांका प्रभावसूं कानमैं
अर्श पैदा होयछै मस्सारूप सोवाका लक्षणासूं वेभी जाणि लीज्यो
अर कानमैं वायपित्त कफ लोही मांस मेद नसांये सातू ही येक अ
र्बुदनाम रोगगांठि रूप होयछै. तीनैंभीकरैछै. तींका लक्षण पाछैं
कह्याछै. अर्बुदरोगमैं सौंजाणी लीज्यौ ७ अथये कानमैं सर्व २८
रोगछै चरककामतसूं कानकैनीचे ४ रोगछै सोलिषूंछूं वायको १
पित्तको २ कफको ३ लोहीको ४ अथ कर्णपालिकैविषै ५ त्यां
कानाम लक्षणलि० अथपरिपोटकको लक्षणलि० कानाकी लौलि
कोमलघणीहोयछै ईनें स्त्री वधावाकी करै तदि कानकी लौलिसूजि
जाय अर वेमैं पीडहोय आवै ईनैं परिपोटक कहिजे १ अथउत्पा
तको लक्षण लिष्यते. कानकी लौलिमैं भास्यो गहणौ पहरै तींका
संजोगसूं अथवा कहींतरै लौलिनैं षैचिवासूं लौलिऊपरि सोजो
होयहीआवै अरदाहहोय अर पकिजाय अरपीडहोय तीनै उत्पा
तरोगकहिजे २ अथ उन्मथको लक्षणलिष्यते. जींकानकी लौलि

* कर्णरोगछै. मोटामोटाग्रंथमैं अनेक प्रकारकालिष्याछै. ऋषीमत बहुधाछै. सूक्ष्मरोग कोनिदानकठिणछै. वास्तैस्थूलरोगकोनिदानयाग्रंथमैं लिष्यछै. अरु औषधीभी यथायोग्य लिषीछै. परंतु औरभीलोक प्रसिद्ध औषधी घणीछै. वास्तै विद्वानवैद्यहैसोदेसकाल अवस्था देषकर औषधी करैतौ आरामहोय. असाध्यकर्णरोगतो मुसकलसूं आराम होयछै.

हठसूं बधायोचाहे तदिवैठे वायकोपकरि कफसंयुक्त सोजानैंकरै अरऊठेही षाजिनैंकरै ईनै उन्मथ कहिजे ३ अथ दुःखवर्धनको लक्षणलि० जींका कानकीलौल दुःखसूं विंधिगईहोय अरऊठेपीड होय अर पकिजाय तीनै दुःखवर्धन कहिजे ४

अथ परिले हिनको लक्षण लिष्यते जींका कांनकी लौलिऊपरि कफ लोहीका कोपकरि सरस्यूं सरीसी फुणस्यां होय जाय अर ऊठे षाजि आवै अरदाहहोय अर पकिजाय तीनैं परिलेहिन कहिजे. ५ अथ कर्णरोगका जतनलिष्यते. आदाको रस सहत सीं धोल्लूण तेल ये सर्वयेकठांकरियांनैक्यूं गरमकरि कांनमैं घालैतौ कानकी पीडकर्णनाद अर बहरा पणो अरकर्णक्ष्वेड येसारांरोग दूरिहोय १ अथवा ल्हसण कोरस आदाकोरस अर वण्याकी जड कोरस केलिकोरस यांसारांनैंयेकठांकरि क्यूंयेकगरमकरि कानमैं नाषैतौ कानकीपीड उगैरै कानको रोगजाय २ अथ कानकी सूल दूरिहोवाकोजतनलि० आककाकोमल पानांनैं षटाईसूं पीसिईको रसकाढे ईमैं तेल अर लूणनाषै पाछे ईनैं थोहरीकी लकडीमैं घाले पाछे वेलकडीकै कपडमिट्टीकरिवेंको पुटपाक करिवेंको रसकाढे पाछे ईरसनैं क्यूंगरमकरि कानमैं घालैतौ कानकी सूलजाय ३ अथवा आककापानांकै घृतलगाय अग्निसूंवानैं तपाय वांकोरस काढै पाछे ईरसनैं क्यूंगरमकरि कानमैं नाषैतौ कानकी सूलजाय ४ अथवा बकराका मूतमैंसींधोल्लूण नाषिवेंनैं क्यूंगरमकरि कानमैं नाषैतौ कानकी सूलजाय ५ अथवा अरलूकी जडकारसमैं मधुरीआंचसूं तेलपकाय औरस बलिजाय तेल आयरहे तदि ईतेलनैं कानमैं नाषैतौ त्रिदोषसूं उपजीभी कर्णसूलजाय ६ अथ बहरापणानै आदि

न. टी. नेत्रकोरोगअरकर्णरोगयेदोयरोगछै. सोतीनजातकारोगछै. जामैंप्रथमतो दैवीक मैं रोगी. दूजोदोषरोगी. तीजोप्रकृतिकसहजरोगी. ज्यामैंदैवीकाअरदोषजन्यकातोउपावछै. अरजोप्रकृतिकाशुभावसौंछै ज्यांकाउपावनहींछै.

लेर कानका रोगांनैं दूरिकरै सोतेललिष्यते. कडवातेलमैं सूंठि मिरचि पीपलि कूठ पीपलामूल आंधीझाडाकोषार जवषार बीलकी जडकोरस गोमूत येनाषि मधुरी आंचसूं पकावै पाछै येसारा बलि जाय तेलमात्र आयरहै तदि ईंतेलनैं कानमैं राषैतौ बहरापणानैं कानमैं शब्दहोय जीनैं कानवहतो होय जीनैं यांसारां रोगांनैं यो तेलदूरिकरैछै. ७ इति बिल्वतेलम् अथवा बीलका काचाफल यांकोरसकाढि तीमैंसाजीको चूर्णनाषै पाछै वेनैं पीवैतौ कानकीपीडनैं कानकाबहरापणानैं कानमांहिदाहनैं यांसारांनैं दूरिकरैछै ८ अथ कानमैं राधि वहतीहोय तींका आछ्या होवाको तेल लिष्यते आंवलाका पानांकोरस जामुणीका पानांकोरस महुवाका पानाकोरस वडकीवकलकोरस चवेलीकापानांकोरस यामैं तेलनाषि मधुरी आंचसूं पकावै येसर्व बलिजाय तेलआयरहै तदि ईंतेलनैं कानमैं घालैतौ कानकी राधिवहतीरहै ९ अथवा स्त्रीकादूधमै रसोत घसिजीमैं सहतमिलाय कानमैं घालैतौ कानवहतो रहै. १० अथवा कूठ हींग वच दारुहलद सौंफ सूंठि सींधोलूण यांनै मिहीवांटि बकराका मूतमैं घालि अर यामैं तेलनाषि मधुरी आंचसूं पकावै येसर्व बलि जायतेल मात्र आयरहै तदि ईंतेलनैं कानमैं घालैतौ कानकीराधी वहतीरहै ११ अथ कानमैं व्रणपडिगयो होय तींको दूरि होवाको तेल लिष्यते. मोटीसींपाका चूर्णनैं कडवातेलमैं पकावै पाछै ओतेल कानमैं घालैतौ कानकाव्रण आछ्याहोय १२ अथवा आंवलासार गंधक टका १ मैणसिल टका १ हलद टका १ कडवो तेल टका ८ भरधत्तूराका पानांकोरस यांसारांकी बराबरिले यांनैं मिहीवांटि म

न. टी. जोप्रकृतीसहजरोगछै. सोनिरउपावछै. सोवैकिस्वारोगछै. ज्यानैंध्यानमैंलेणाचाहिजे कारणजोमनुष्यजन्मांधछै. अथवाजन्मसूंगूंगोवहरोछै. अरऐसीहीऔरभीजन्मसौंकमतीछै. ज्यांकैआरामनहींहोयछै.

धुरी आंचसूं पकावै येसर्व बलिजाय तेलमात्र आयरहै तदि ईंतेलनैं कानमें नाषैतो कानको व्रण आछ्यो होय १३

अथ कानमैं कृमिपडिगईहोय तींका दूरि होवाको जतन लि०. कृमिरोगकादूरिहोवाका जतन पाछै लिष्याछै सोदेषिलीजो १४ अथवा बैंगणकी जडकोरस सिरस्यूंकातेलकै साथिं ईंकोधूवो कान मे देतौ कानकी कृमिजायपडै १५ अर कानका सोजाको अर कानका अरसका अर कानका अर्बुदरोगका जतन यां पाछिलांरोगां मैं लिष्याछै. सोदेषिलीज्यो १६ ये सर्वजतन भावप्रकासमैं लिष्याछै. अथ बहरापणानैं दूरिकरै तींकोतेल लिष्यते मूलीकी जड कोरस कडवोतेल सहत येबराबरिले त्यांनैं क्यूं गरमकरि कानमैं घालैतौ बहरापणो जाय १६ अथवा मिश्री अर इलायची यांनै मिहीवांटि कानमैं राषैतो बहरापणोजाय १७ अथ कानकीपीडा दूरिहोवाको तेललि० सूंठि पीपलि सींधोलूण. कूठ हींग वच लसण तिलांकोतेल पाका आकका पानांकोरस त्यांनै मधुरी आंच सूं पकावै येरसउगैरै साराबलिजाय तेल आयरहै तदि ईंतेलनैं कानमैं नाषैतो कानकीपीडा दूरिहोय १८ अथ कानका सर्वरोगांका हरवाको तेललि० जाडी अर मोठी सीपाकोचून पद्माष. हींग तूंबरू सींधोलूण कूठ कपासकीमींगी यांनैंवांटि पाछै यांको काढोकरि यां काढामैं कडवातेल टका ७ भरनाषै अर हुल हुल कोरस यांसर्वकी बराबरिनाषै पाछै ईनैं मधुरीआंचसू पकावै ये रसउगैरै सर्वबलिजाय तेलमात्र आयरहै तदि ईंतेलनैं कानमैं नाषैतो कानका व्रणनै राधिनीसरै जीनैं बहरापणानैं कानका शब्दनैं आदिलेर सर्वरोगांनैं योदूरिकरै १९ अथवा कूकर भांगराको

न. टी. कर्णरोगमैंपथ्यलि० वमन. विरेचन. गहूं. शाल. मूंग. घृत. वृंताक. तुराई इ० अपथ्यलि० दांतणकाष्ठको. मस्तक सूंधास्नान. मेहनत. जडअन्न. मोटोशब्दघणो बकवाद. लडाई. क्रोध. नाच. कूदइ०

रसपाव ऽ। हरफारेवडीकोरस लसणकोरस पईसा ४ भर सौंफ टंक २ वच टंक २ कूठ टंक २ सूंठि टंक २ मिरचि टंक २ पीपलि टंक २ लवंग टंक २ बकरीकोदूध अधसेर ऽ॥ कडवोतेल टका ५ येसारा येकठाकरि मधुरीआंचसूं पकावै येसाराबलिजाय तेलमात्र आयरहै तदि ईंतेलनैं कानमैं घालैतौ बहरापणौ अर राधिपडै सोओर कानका रोगसाराजाय २० अथ कानकी राधिवहै तींकी औषदि लिष्यते समुद्रफेन सुपारीकीराष काथ यांनै मिहीवांटि कानमैं नाषैतौ कानवहतोरहै २१ येसाराजतन वैद्यरहस्यमैं लिष्याछै अथ कानकीलौल पकिगईहोय तींका आछयाहोवाकोतेललि० सतावरी आसगंध दूध एरंडकी अरंडोली तीलांकोतेल यांनै मधुरी आंचसूं पकावै येसाराबलिजाय तेलमात्र आयरहै तदि ईंतेलनैं कानकी लौलिकै लगावैतौ कानकी लौलकी पीडउगेरै सारीमिटै अर लौलिवधै. २२ अथ परिपोटिकाको आछयाहोवाकोतेललि० जीवनीयगणमैं तेलपचायै ईंतेलको मर्दन करैतौ परिपोटिका आछीहोय २३ अथवा अर जोकांका लगावासूंउतपातरोग जाय २४ सुरमो कलहारी वावची कंक जीनावरकोमास यांमैं तिलांको तेलपकावै मधुरी आंचसूं पाछै रसबलिजायतेलमात्र आयरहै तदि ईंतेलनैं कानकी लौलकौं लगावैतौ उन्मथजाय २५ अथवा जासुणीकापान आंबाकापान वडकापान यांकोकाढोकरि ईंकाढामैं तेलपकावै पाछै ईंतेलको मर्दनकरैतौ दुःखवर्धनरोगजाय २६ अथवा गोवरका छाणासूं सेकै अथवा कपूरकौ

न. टी. बालकांका कानविंधावैछै जठै घणी सावचेती राषणी. कारण मूर्ष सुनारहोयछै. जीनैं कानकी लोलमैं नसको यथार्थ ज्ञाननहीं होवासूं वेवाजवी कर्णवेध अथवा नाशावेधकरै जदां पकिजाय सूजजायछै. वास्तै मूसाकी मींगणी मासा २ लेकर घृत हलदीतीन्यूं पचायकर बांधैतौ आरामहोय. परंतु नशऊपरि विंध्योकान आभूषनका ऊजनसूं अडवलहींदेवोकरैछै.

दूधसूं अथवा गोमूतसूं ईंको लेपकरैतो कानकीलौल आछीहोय २७ येसाराजतन भावप्रकासमैछे. इतिकर्णरोगसं० अथ नासिकाका रोगकीउत्पत्ति लक्षण जतनलिष्यते नासिकामैं ३४ चोतीस रोगछे. अपिनस १ पूतिनाश २ नासापाक ३ पूयशोणित ४ घणीछींक आवैं ५ छींकआवैनहीं ६ नाकबलिवोकरै ७ प्रतिनाह ८ प्रतिश्राव ९ नाससोथ १० प्रतिश्यायपांच प्रकारको १५ नासार्बुद सातप्रकारको २२ नाशार्शच्यारिप्रकारको २६ नाससोथ चारिप्रकारको ३० नासिकामैं रक्तपित्त च्यारिप्रकारको ३४

अथ पीनसको लक्षणलि० जींका नाकमैं कफकरिकै सासआछीतरै आवैनहीं अरनाक रुधिजाय अर नाक सूक्यौरहै अरजीमैं धूवोनीसरै अर जींकानाकसूं सुगंध दुरगंधिकीवास आवैनहीं ईनेपीनस कहिजे १ अथ पूतनाश्यकोलक्षणलि० जींकागलाका तालवाका मूलको वायहैसो पित्तनैं कफनैं लोहीनैं दूषितकरै अर वे मूंढामैं अर नासिकामैं ओवाय दुरगंधि काढै स्वासकै मार्गतीनैं पूतनस्यरोग कहिजे २ अथ नासपाकको लक्षण लिष्यते जींका नाकमैं पित्तदूषित होय अर नाकमैं फुणसी करै अर वेनें पकावै अरवे माहिसूं राधिकाढै तीनैं नासापाककहिजे ३ अथ पूयरक्तको लक्षण लिष्यते जींका ललाटमैं कहीं तरैसूं चोट लागै तदिवेंकै दोष कोपकूं प्राप्तिहोय अर नासिकाद्वारा राधिनैं लीयां लोहीनीसरै तीनैं पूयरक्त रोगकहिजे ४ अथ वक्ष्यरुथू नाम छींकघणी आवै तींको लक्षण लिष्यते जींका नाकमैं दुष्टपवन होय ओपवन नाकका मर्मस्थाननैं दूषितकरै पाछे ओकफसूं मिलै तदि ओ घणीं वारंवारछींकनैं प्रगटकरै तीनैं वक्षरुथूनामरोग कहिजे ५

न. टी. नासारोगकी संष्या ३४ करीछै. जीनैं पीनसनामछै. जीनै अपीनसवी कहैछै. अर प्रतिस्यायसूधांग्यारासंष्याछै. जीमैं प्रतिश्याय ५ प्रकारको जुमलै १५ नासार्बुद ७ नासार्श ४ नासासोथ ४ नासारक्तपित्त ४ जुमलै ३४ ईग्रंथकीरीतछै.

अथ वक्षस्थूको ओर लक्षण लिष्यते जोपुरषनाकमैं मिरचीनैं आदिलेर औषदिघालै अथवा सूर्यकानीदेषै अथवा नाकमैं त्रन उगेरै घालै तदि वेंका नाकमैं छींक घणी आवै. ईनैभी वक्षस्थूनाम रोग कहिजे ६ अथ वक्षस्थू भ्रंसको लक्षण लिष्यते जींका नाकमैं कफ दग्ध होय जाय पित्तकरिकै तींपुरषनैं छींक आवै नहीं. ईनैं वक्षस्थू भ्रंशको रोग कहिजे ७ अथ दीप्तिरोगको लक्षण लिष्यते. जींका नाकमैं पित्त कुपितहोय अर नाकमैं दाहघणो करै अर नाकमैं धूवोनीसरै वीवाय पवनसूं नाक बलै ईनै दीप्तिरोग कहिजे ८ अथ प्रतिनाहको लक्षण लिष्यते वायकरिकै संयुक्त कफहैसो नाकका सुरनैं रोकिदे सास आवादे नहीं तीनें प्रति नाहकहिजे ९ अथ प्रतिश्रावको लक्षण लिष्यते जींका नाकका सुर मांहि जाडो अर पीलो सुपेदा ईनें लीयां नांक मांहिसूंनीसरै तीनैं प्रतिश्राव कहिजे. १० अथ नासासं सोषको लक्षण लिष्यते जींका नाकमैं वायपित्त कफयेतीन्यूं दुष्ट होयतौ ओ महाकष्टसूं सासले तीनें नासासंसोष कहिजे. ११ अथ प्रतिश्यायको लक्षण लिष्यते जींकै पीनस रोग होय अर ओ आलसकरिकेवेंको जतन करै नहीं तदि ओपीनसवधि अर कोप करै ओर ओर स्थानमैं जाय पाछे. प्रगटै तदिवेंको ओर अनेक निजला उगेरै नामपडै अर ओ अनेक रोगांनें करै १२ अथ पीनसको पूर्वरूप लिष्यते जीनें छींक आवै अर माथो भार्‍यो रहै अर अंगजकडबंद होजाय अर रोमांच होय ईनें आदिलेर ओर उपद्रव होय तदि जाणिजे ईकै पीनस रोग होसी १३ अथ वायका पीनसको लक्षण लिष्यते जींका नाक मांहिहोय पीलासनै लीयां गरमगरमपाणीपडै अर ओमनु

न. टी. प्रतिश्यायनाम प्रस्वेदका जो रोगछै. ज्यामैं वातप्रतिश्याय पित्त. कफ. रक्त. सन्निपात. ये पांचप्रकारकाछै. ओर पीनसमैं विशेषतालिषीछै. सोज्याणज्यो. अर दुनाग्रंथांमैं नामभेदछै. परंतु कारण एकहीछै.

ष्य कृस होय जाय अर वेको सरीर गरम रहै अरजींकानाकमा हि अग्निरूप धूवोनीसरै अर वो वमनभीकरै तीनें वायपित्तको पीनसकहिजे १४ अथ कफका पीनसको लक्षणलि० जींका नाकमा हिसूं जाडो जाडो सुपेद कफ घणोनीसरै अर वेकोसरीर सुपेद होजाय अर आंष्यांऊपरि सोई होय अर माथो भाखो होय अ रगलामैं तालवामैं होठांमैं सिरमैं षाजिघणी होय तदिजाणिजे ईंकै कफकोपीनसछै. १५ अथ सन्निपातका पीनसको लक्षण लिष्यते. जींकानाकमैं ये पाछै कह्यासो सर्व लक्षण होय अर ओपीनस वारंवार होय अर जतन कखां जाय नही अर पकैभी नहीं ईनें सन्निपातको उपपीनस जाणिजे. योअसाध्यछै. १६

अथ दुष्टपीनसको लक्षणलिष्यते जींको नाकवारंवार झरिवो करै अरसूकि जाय अर सास नाकसूं आछीतरै आवैनही ना करुकिजाय अर कदेंकषुलिजाय अर सुगंधिदुरगंधिकोग्यान रहै नहीं ईनें दुष्टपीनसकहिजे १७ अथ लोहीका उपज्या पीनसको लक्षण लि० जींकी छातिमैं चोट लागिहोय तींकै लोहीको पीनस होय तींकानाकमैं लोहीपडै अरवेंकै पित्तका पीनसका लक्षणहोय अर वेंकीआंषि लालहोय येलक्षण जींकै होय तीनें लोहीको पीन स कहिजे १८ अथ पीनसको असाध्यलक्षण लि० आलसकरिकै पीनसको जतनकरैनहीतो सर्वही पीनसअसाध्य होयजाय १९ अथ पीनसवालाकै नाकमैं कृमिपडिजाय तींको लक्षण लि० जीं कानाकमैं पीनस करिकै सुपेद अरचीकणी अर छोटी कृमिपडि जाय अर दीसैनही तींकै सिरको रोगहोयजाय अर ओरभीरोगां नें प्रगट करै बहरापणानें नेत्रकारोगानें सोजानें अग्निमांद्यनें षा

न. टी. शारंगधरमैंनासारोग १८ कह्याछै. जीमैंफेररोगांकाआवांतर नामभीकह्याछै जु मलै ३६ संष्याछै. परंतु बुद्धिमानतो शास्त्रको सारांश अर गुरुको उपदेश ध्यानमैं राषकर उपचारकरै.

सीनैं यांरोगांनैं यो कृमिपीनस प्रगटकरै. अरनाकमैं अर्बुदनाम गांठि ७ प्रकारकीहोयछै. अरसोजो ४ प्रकारको नाकमैं अरस ४ प्रकारको. रक्तपित्तनाकमैं ४ प्रकारको होयछै. सोयांका लक्षण पाछानैं लिष्याछै सोबुधिमान जाणिलीज्यो. ३४ अथ पीनसका काचापणाकों लक्षणलि० जींको शिरभास्यौरहै भोजनमैं अरुचि रहै नाकझरबोकरै होलेबोलै सरीरक्षीण पडिजाय थूकैघणो. येल क्षणहोय तदि काचोपीनसजाणिजे अथ पकापीसनको लक्षण लि ष्यते जींका नाकको कफजाडोनीसरै अर नाकका छिद्रकै चीप्यो भीरहै अरजीको वर्णभी आछ्यौ होयजाय अरजींकोसुरभी आ छौहोयजाय अर भूष उगैरै सर्व लागै तीनै पक्योपीनस कहिजै २१ अथ नाकका रोगांका जतनलिष्यते कालीमिरचि गुड दहीं ये तीन्यू मिलाय उनमान माफिकषायतौ पीनसको रोगजाय १ अ थवा कायफल पौहकर मूल काकडासींगी सूंठि कालीमिरचि पीप ली कलौंजी येसारी मिहीवांटि यांकोचूर्ण टंक २ आदाकारसमैंले अथवा ईंको काढो लेतौ पीनसनै सुरभंगनैं सन्निपातनैं कफनैं पा सनैं यांसारांनै योदूरिकरै २ अथवा कायफल हिंग मिरचि लाष इंद्रजव कूठ वच सहजणाकीजड वायविडंग यांको काढो लेतौ पीन सजाय ३ अथ व्योषादिगुटिका सूंठि कालीमिरचि पीपलि चित्रक तालीसपत्र डांसस्यां अमलवेद चव्य जीरो इलायची तज पत्रज. ये बराबरिले यांनैं मिहीवांटि यांबराबरिले पुराणोगुडले त्यांकी टंक २ भरगोलीकरै गोली १ रोजीनादिन १० षायतौ पीनसनैं षास नैं अरुचिनैं दूरिकरै ४ अथ पीनसदूरि होवाको तेल लिष्यते. क

---

* छींककारोगऊपरअनेक औषधीछै. परंतु साधारण छींक आवैजींनै रोकवाकैवास्तैनाश कको आवतो स्वास दम पैचकर रोकणो. रुकसकै जठा तांई पछै आसतै आसतै छोडणो. परंतु छींक. हिचकी डकार तत्काल बंद होयछै. लौकीकमैं शुभकार्यमै छींक निषेध गिणी छै. छीक आवती होयतौ इसीतरै बंद कियां परंतु वंध होसी. चमत्कारीक वातछै.

ट्याली दांत्युणी. वच सहजणाकीछालि तुलसीकापान सूंठि मिरचि पीपलि सींधोल्लूण यांसारांनें मिहीवांटि यांमें तेलपकावे पाछे ईते लकी नासलेतो पीनसजाय ५ इतिव्याघ्रीतैलछे अथवा सहजणा कीछालि कट्याली निसोत सूंठि मिरचि पीपलि सींधोल्लूण बीलका पानांकोरस यांसारानें तेलमें पकावे पाछे ईतेलकीनासलेतो पीन सजाय ६ इतिशिग्रूतेलम्

अथ जीनें छींकघणीआवे तींको जतनलि० घृत गुगुल मोम यां सारांकी नाकमे धूणीदेतो छीक आवतीरहे ७ अथवा सूंठी कूठ पी पलि बीलकीगिरि दाष यांको काढोकरि ईमें तेलपकावे पाछे ईते लकी नासलेतो घणीछीक आवे सो दूरिहोय ८ अथ पीनसका दूरिहोवाको चूर्ण० वायविडंग सींधोल्लूण हिंगगूगल मैणसिल वच यांनें मिहीपीसि ईनें सूंघेतो पीनसजाय ९ अथ पीनसका दूरिहो वाको तेललि० भांगका पानांकोरस सींधोल्लूण ईमें तेलपकावे पाछे ईतेलनें सूंघेतो पीनसजाय १० अथ नाकमें अर्शनाम मस्साहोय तींकोतेलि० धूमसो पीपलि दारुहलद आंधी झाडाकाबीज जव षार किरमालाकीगिरि अथवा वकल सींधोल्लूण यांमें तेलपकावे पाछे योतेल नाकका मस्साकें लगावेतो मस्सो दूरिहोय ११ औ रनाककारोग कह्याछे त्यांका जतन वारोगमें बुद्धिवान् देषि ली ज्यो १२ येसर्व जतन भावप्रकासमें लिष्याछे. अथवा जोपुरष सोबांकैसमे आधोऔटायो पाणीपीवे तींका पीनसको रोगजाय १३ अथवा जीरो घृत षांड येमिलाय षायतो पीनस जाय १४ इति नासिकाका रोगांका जतन संपूर्णम् अथ मुषका रोगांकी उत्पत्ति लक्षण जतनलिष्यते अथ मुषरोगको लक्षणलिष्यते मुषका सात

न. टी. मुषरोगकी संष्या जोलिषीछै सो समजमें आवसी. अर उत्पत्तिमें जो अनूपदेश कों मांसलिष्योछै सो जलको किनारो जींकै आसरै जो रहैछै प्राणी ज्यामें पांचप्रकारका लिष्याछै. निघंटमें सो जाणज्यो.

७ अंगछे होठ १ मसूडा २ दांत ३ जीभ ४ तालवो ५ गलो ६ गलाने आदिलेर मुषको सर्वांग ७ अथ मूंढाका सर्वरोगांकी संष्यालि० सर्व मूंढाकामिलकै ६७ रोगछे होटका ८ मसूढांका १६ दांतांका ८ जीभका ५ तालवाका ९ कंठका १८ सर्वमुषमैं फैलता ३ अथ मुषरोगांकी उत्पत्तिलिष्यते अनूपदेशका मांसका षावासूं घणादूधका पीवासूं घणादहींका षावासूं अर उडदनैं आदिले घणा षावासूं कोपकूं प्राप्तिहुवो जो वायपित्त कफ सो मुषकारोगांनैं प्रगटकरैछे. १ अथ होटका रोगांकीउत्पत्तिलि० होठकारोग ८ छे. वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ लोहीको ५ मांसको ६ मेदको ७ चोटलागिवाको ८ अथ वायका होठरोगको लक्षणलि० जींका होठ कठिण होय अर परधारा गाढाहोय कालाहोय जीमैं पीडघणीहोय अर फाट्याघणां होयतौ वायका कोपको होठकोरोग जाणिजे. १ अथ पित्तका कोपका होठरोगको लक्षणलि० जींका होठांकै फुणस्यां होय अर वेफुणस्यां चूवालागीजाय अर वामैं चोगडदाई पीडभी होय अर वामैं दाहहोय ओर पकिजाय अर वाकीकांति पीलीहोय तदि जाणिजै पित्तका कोपको होठरोगछे २ अथ कफका कोपका होठकारोगांको लक्षणलि० जींका होठ देहकावर्ण सिरीसाहोय अर चूवै अर ऊठै फुणस्यांहोय अर जामैं पीडनहींहोय अर जामैं षाजिआवै अर जामैं कफ जाडो अर ठंडोनीसरै तदि जाणिजे कफका कोपका होटका रोगछे. ३ अथ सन्निपातका कोपका होटका रोगकोलक्षणलिष्यते घडीकमैंतौ काला होयजाय अर घडीकमैं पीला होयजाय घडीकमैं सुपेद अर जीमै घणीफुणस्यां होय अर सर्वकालक्षण जी

न. टी. कानकारोग नाकका रोग. मुषका रोग ज्यामैं पथ्य अपथ्य लि० रेचन. वमन. कुरला. पुराणो घृत. धूम्रपान. मूंग. कुलथी. भात. गहूं. तीषो. बीडीतुराई. चंदलाई. आंवला. एतापथ्यनाम लेणायोग्यछै.

मैमिलै तीने सन्निपातका कोपको होठको रोगकहिजे ६ अथ लो
हीका कोपका होठकारोगको लक्षणलि० जींका होठकै फुणस्यां
घणीहोय अर जामें पीड घणीहोय अर जांकोरंग छवारासरीसो
होय अर जामें लोही घणोपडै येलक्षण होय तदि लोहीका कोप
को होठको रोगजाणिजे ७ अथ चोटका लागिवांका होठकारोग
को लक्षणलिष्यते. जींका होंठांकै कहींतरैसूं चोटलागीहोय तदि
वेका होठ फाटिजाय अर ऊठे षाजिआवै अर होठ मथ्यासाहोय
अर वामें पीडभी होय तदि जाणिजे चोटका लागिवाको होठको
रोगछै ८.

अथ होठांकारोगांका जतनलिष्यते. जींके होठांको रोगहोय
त्यांको जलौकासूं लोहीकढाजैतो होठांको रोगजाय २ अथवा घृत
में शुद्ध मोम नाषि वेसेती होठांनें सिकाजेतो होठांको रोगजाय ३
अथवा चारीप्रकारकास्नेहछै तेल घृत मांसको घृत ३ अथवा मांस
मांहिलीमींजी ४ याचारूं स्नेहामें मोम मिलाय वेंकोसेककरावैतो
होठका रोगजाय ५ अथवा होठांकीसीर छुडाय देतो होठांको रो
गजाय ४ अथवा सीतल औषद्यांका लेपकरैतो होठांको रोगजाय
५ अथवा फूल प्रियंगु त्रिफला लोद यांनें मिहीवांटि स्नेहमें यांको
सेकसुहावतो करैतो अथवा सहतसूं षायतो होठांको रोगजाय ६
अथ प्रतिसारणविधिलि० होठांकैचूर्ण अवलेह अंगुलीसूं सने
सने लगावै तीनें प्रतिसारण कहिजे ७ अर होठांमें घणाव्रण प
डिगयाहोय त्यांकाजतन पाछै व्रणका प्रकर्णमें लिष्याछै सोकरि
लीज्यो ८ इति होठांका रोगांको जतनसंपूर्णम् अथ मसूढांका रो
गांका नामसंष्यालि० सीतादि १ दंतप्युपुट २ दंतवेष्टि ३ सौ

न. टी. कुपथ्यलि० दंतकाष्ठ. स्नानकरणो. षाटोपदार्थषाणो. दहीं. गूल. उडद. जडअ
न्न. पौष्टिक अन्न. दिनमैंनिद्रा. आलस. छींकलेणीनहीं. मलमूत्र रोकणोनहीं. अंजन.
हांस्य. क्रोध. चिंताइत्यादिनहींकरणा.

षिर ४ महासौषिर ५ परिदर ६ उपशुक ७ वैदर्भ ८ खलिवर्द्धन ९ अधिमांसपंचनाडी १० वायसूं मसूढांकीनसनीसरै ११ पित्तसूं मसूढांकी नसनीसरै १२ कफसूं मसूढांकी नसनीसरै १३ सन्निपातसूं मसूढांकी नसनीसरै १४ चोटलागिवासूं मसूढांकी नसनी सरै १५ दंतविद्रधी १६ अथ सीतादिमसूढांकारोगको लक्षणलिष्यते कारणविनाही अकस्मात मसूढांमैं लोहीनीसर आवै अरवे लोहीमैं दुरगंधि आवै लोहीकालो होय अर मसूढांकै मलहोय अर मसूढाविषारि जाय आपसमैं पकिवालागिजाय योकफलोहीका दुष्टपणासूं उपजैछै. ईनैं सीतादि मसूढांकोरोग कहिजै १ अथ दंतप्युपुट मसूढांकारोगको लक्षणलिष्यते. दांताका तीन मसूढांमैं सोजो घणोहोय जाय योकफ लोहीका कोपसूं होयछै. ईनैं दंतवेष्टप्युपुट रोगकहिजै. २ अथ दंतवेष्टरोगको लक्षणलिष्यते जींका मसूढांमैं राधिलीयां लोहीनीसरै अर दांत हालवा लागिजाय ईनैं दंतवेष्टि मसूढाकहिजै ३ अथ सौषिर मसूढांका रोगको लक्षणलिष्यते मसूढांमैं सोजोहोय आवै अर ऊठे पीडहोय अर लाल पडै अर षाजिआवै ईनै सौषिरनाम मसूढांको रोगकहिजै ३ योकफ वायसूं उपजैछै. ४ अथ महासौषिररोगको लक्षणलिष्यते मसूढांतैं दांत हालवालागिजाय अर तालवो वैठिजाय तालवाकै छेद्रपडिजाय योसन्निपातका कोपसूं उपजैछै ईनै महासौषिर कहिजै ५ अथ परिदर मसूढांकारोगको लक्षणलिष्यते जींका दांतांका मसूढाविषरिजाय अर वामैं लोही वहैनहीं ओपित्तलोही कफयांका कोपसूं उपजैछै· ईनै परिदरकहिजै ६ अथ उपकुशमसूढांका रोग

---

* मसूढांकारोग महादुष्टछै. मुखकीकांतीजातीरहै. दांतसमूलसूं काढि नाषैछै. वास्तै मसूढांको यत्नजलदीकरणो योग्यछै. औषधी लिषूंछूं. हरडै. वहेडा. आंवला. लोद. सूंठ. हिराकसीस. फिडकडी. विदामछाल. नीलोथूथो. यांनैं जुदा जुदावालै. सेकवावाली औषदिसेकै. फुलावै. पाछै. सर्वनैषरलकरै निसचूर्णसूं दांतमाजै मसलैतौ मसूढां. दांतपीडाजाय.

कोलक्षणलिष्यते जांका मसूढांमैं दाहहोय अर पकिजाय दांत हा लवालागे अर जामसूढांनें दाब्या अथवा औषद्यांसूं घस्यालोही नीसरै अर वामैं पीडनही होय अर मूंढामैं दुरगंधि आवे योपित्त लोहीसूं उपजैछे. ईने उपकुशरोग कहिजे ७ अथ वैदर्भ मसूढांरो गकोलक्षणलिष्यते जींकामसूढांकै कहींतरैसूं चोटलागै अथवा वै घस्याजाय तदिवांके सोजोहोय अर दांतहालवालागैअरवैमै दाह पीडाभी होय ईने वैदर्भरोग कहिजे ८ अथ खलिवर्धनरोगको लक्ष णलि० जींका मसूढांमैं दांत अधिकवधे अर ऊठे पीड घणीहोय वैनै खलिवर्द्धनरोग कहिजे ९ अथ अधिमांस रोगकोलक्षणलि० जीकी नीचरली दाढका अंतमैं सोजो घणोहोय अर पीडघणीहोय मूंढामैं लालपडै योकफसूं उपज्योछे ईनें अधिमांसरोग कहिजै १० अथ मसूढांकी नसांमैं रोगको लक्षणलि० वायपित्त कफ सन्निपा त अर चोटलागीवोयांसूं पांच नसांकारोग होयछे १५ अथ दंत विद्रधीरोगको लक्षणलि० दांतांका मसूढामैं लोहीनीसरै अर घ णोसोजो होय अर दाहहोय अर पीडहोय अरराध लोही लीयां घणो श्रवै ईनै दंतविद्रधी मसूढांको रोग कहिजे १६ अथ मसूढांका रोगांका जतनलि० अथ सीतादिमसूढांको जतनलि० ईरोगमैं म सूढांको लोही कढाजे पाछै सूंठि सरस्यूं त्रिफला यांको काढोकरि कुरला करैतो सीत मसूढांको रोगजाय १ अथवा हिराकसीस प ठाणी लोद पीपलि मैणसिल फूलप्रियंगु तेज बलये बराबरिले त्यां नें मिहीवांटि सहतसूं मसूढांकै लगावैतो सीतादि मसूढांको रोग जाय २ अथवा तेलका घृतका कुरला करैतो सीतादि मसूढांको रोगजाय ३ अथ दंतप्युपुटको जतनलि० ईरोगमै मसूढांको लोही

न. टी. दंतरोगमैं पथ्यकरणोसारहै. कारणपथ्यकाकरणैसूं व्याधी कमतीहोयछै. पथ्य लि० जुलाबलेणो बलाबलदेषकर. उलटीलेणी बलाबल देषकर. औषधीकाकुरला तथा सा दाकुरलाकरणा.

हीकढाय तींऊपरि पांचूलूण जवषार सहतनाषि यांकोकाढोकरि तींका कुरलाकरैतौ दंतप्युपुटरोग जाय ४ अथ दंतवेष्टिकोजतन लिष्यते वेनैचीकणा भोजनकराजे. अर तेलका कुरला कराजेतौ योरोगजाय. ५ अथ चलदंतकोजतनलि० लोद पतंग महुवो. लाष. बौलसिरीकीबकल यांनै मिहीवांटि ईंका चूर्णनैं मसूढांकै म सलै तौ चलदंतको रोग जाय ६ अथवा नागरमोथो. हरडैकीछा लि. सूंठि. मिरचि पीपलि. वायविडंग नींबकापान. यांनै मिहीवां टि गोमूतसूं वेकी गोली करै पाछै छायासुकाय अर सोवतां गोली १ मूंढामै राषै तौ चलदंतको रोग जाय. दांतगाढा होय ७ इति भद्रमुस्तादिगुटिका संपूर्णम् अथवा नीलाफूलको कढसेलो धमा सो षैरसार जामुणीकी वकल आंबकीवकल महलौठी कमलगट्टा ये साराबराबरिले टका टका भरपाछै यांनै सेर १६ पाणीमैं औ टाय चतुर्थांश जलराषै पाछै ईमैं तेल तथाबकरीको दूध मधुरी आंचसूं पकावै वोरसबलिजाय तेल आयरहै तदि ईंतेलवा घृतनैं घडी २ मूंढामैराषै तौ दांतगाढाहोय ८ इति सहचराद्यं तैलम् अथ सौषिर रोगको जतन लि० ईंरोगमैं मसूढांको लोहीकाढैपाछै लोद नागर मोथो रसोत सहत यांसारांनैं मिहीवांटि सहतसेती मसूढांकै लेपकरै अर पाछै दूधकाकुरलाकरै तौ सौषिरमसूढांको रोग जाय ९ अथ परिदरको जतन लि० प्रथम मसूढांको लोही काढै पाछै सूंठि सिरस्यूं त्रिफलायांको काढोकरि ईंका कुरलाकरैतौ परदल उपकुशये रोग जाय १० अथ मसूढांकाव्रणको जतनलि० गुलरकापान लवणसहत सूंठि मिरचि पीपलि यांनैं औटाय काढो करै अरमसूढांको शस्त्रसूं रुधिरकाढैपाछै ईंका कोराकुरलाकरैपाछै

न. दी. धूम्रपानकरणो. मूंग. कुलथी. तुराई. पानबीडा. भात. रोटीनरम. गहू. घृत. तीक्ष्णपदार्थ. इत्यादि. कुपथ्यलि०. दंतकाष्ठनामदांतण. स्नान. षाटाफल. तथाषटाईमात्र. कठिणचीज.

मसूढांकै लवण उगैरै क्यूंषारलगावै तौ मसूढांका व्रण आछ्या होय अर वांकी कृमिमरिजाय अर यो रोग जातो रहै ११ अथ षनिवर्द्धनको जतन लि० ईरोगका मसूढांको मांसकाटिनाषजैपाछै सहतकाकुरलाकराजै पाछै वचतजबलपाठसाजी जवषार पीपलि यांनैं मिहीवांटि मसूढाकै लगाजै तौषनिवर्द्धन रोग जाय १२ अथ मसूढांकीन सांमैं पांचप्रकारकाव्रण त्यांका जतनलि०. पांमसूढांको मांस शास्त्रसों दूरिकरै पाछै पटोल नींबकापान त्रिफला यांको काढो करै पाछै क्यूं गरमसुहावताईका कुरलाकरै तौ मसूढांकी न सांका व्रण जाय १३ अथवा चवेलीकापान धत्तूराका पान कट्या ली गोषरूको पचांग मजीठलोदषैरसार महलौटी यांको काढो करि ईकाढामैं मधुरीआचसूं तेलपकावै पाछै ईतेलका कुरलाकरै तौ मसूढांकाव्रण उगैरै सर्वरोग जाय १४ इति मसूढांका रोगांका जतन संपूर्णम्

अथ दांतांका रोगांकीनाम संष्या लिष्यते दालिन १ कृमिदंतक २ भंजनक ३ दंतहर्ष ४ दंतशर्करा ५ कपालिक ६ श्यावदंत ७ कराल ८ अथ दालिन नाम दांतकारोगको लक्षणलिष्यते जींका दंतमैं टूटादांतकी पीडहोय वापीडवायसूं होयछै. ईनैं दालिननाम दांतको रोगकहिजै १ अथ कृमिदंतककोलक्षण लिष्यते. जींका दांतमैं कालाछिद्र पडिजाय अर हालै अरवामै क्यूंरुधिर नीसरै अर वाको सोजो होय अरवामैं पीडभीहोय विनाकारणही वायकीतीनैं कृमिदंतरोग कहिजै. २ अथ भंजनरोगकोलक्षणलि० जींकादांत वांकावांकाहोय टूटिजाय यो कफवायसूं उपजैछै ईनैं भंजनक रोग कहिजै. ३ अथ दंतहर्ष रोगको लक्षण लि० जींकै

न. टी. दांतजोरसूंभींचणा. दहीं. गुड. उडद. जडअन्न. पौष्टिकपदार्थ. दिवसनिद्रा. अतिभोजन. दंतचाल. कोईसैं जुद्धचेष्टानहींकरणी. कारणजडामाहसूं दांत ढीलाहोयछै. ज सहजमैं पडजाय.

सीतल जलादिकसूं लूणीवस्तसूं सीतलपवनसूं षटाईसूं दांत आं ब्याजाय षाटो होजाय योवाय पित्तसूं होयछै. तीनें दंतहर्ष कहिजे. ४ अथ दंतशर्कराको लक्षणलिष्यते ज्यांका दांतांमें मेलरहै वे मेलमें कफवायसोमिले पाछै वेकादांत षरधरालागे अर रेतकी सीनाईंषिरता जाय तीनें दंतशर्करा कहिजे ५ अथ कापालिकी नाम रोगका लक्षण लि० जींका दांतामाटिका घड का कापालसरी साहोय अर वामें छिद्रहोय अरषिरै अरवामें मेलहोयतीनें कापा लिकरोग कहिजे ६

अथ श्यावदंतक रोगको लक्षणलि० जींकादांत दुष्ट लो हीसूं मिल्यो जोपित्त तींकरि सारा दग्धहो जाय अर वेकादांत काला अर सीला पडिजाय तीनें श्यावदंतक रोग कहिजे ७ अथ कराल रोगको लक्षण लिष्यते. जींका दांतांमें वायहैसो सनैसनैं बुरा घाटकाकरिदे भयंकर ईनें करालदांतको रोग कहिजे यो रोग जतनसूंभी आछ्यो होयनहीं. ८ अथग्रंथांतरसूं हनुमोक्ष १ दां तांकारोगको लक्षणलि० जींका दाढिमें वायकुपितहोय दातांनें पक डे दांतांमे अथवा दाढिमें पीडकरे तीनें हनुमोक्ष रोग कहिजे वेमें अर्दितरोगका लक्षणमिलै ९ अथ दांतांका रोगांका जतनलि० अथ लाक्षादितेललिष्यते. लाषकोरससेर १ तिलांकोतेलसेर ऽ। गऊको दूध। लोद टका १ कायफल टका १ मजीठ टका १ क मलगट्टा टका १ कमलकीकेंसरि टका १ रक्तचंदन टका १ मह लोठी टका १ यासारांको काढो करै पाछै ईकाढामें मधुरी . आंच सूं तेलपकावै येसर्व रसउगैरै बलिजाय तेलआयरहै तदिईतेलनें

* दांतकारोगमैं कृमिदंतरोगछै.. सोसंपूर्णप्रकारसूं लोकप्रसिद्धछै. कोईसंदेहकरैछै दांत मै कृमिकिसीतरैरहैछै सोलिषूंछूं. एकदिन रामजीगणोजी दाक्तरकैपास हमबैठाछा कोईएक दंतरोगीआयो. जींकीमोटी दाढदोयउषाडी. विलायती आवजार जीसूं दांतांकीसंधिमें कृ मिनीषलि. जैठैऔषदी पूगसकी नहीछै. ओर यंत्रमंत्रसूं कृमिकाढेछै. सोझूठाछै.

मूंढामेंघडी १ राषैतौ दांतांकासाराहीआठूं ८ रोगजाय अरदांत गाढाहोय इतिलाक्षादितैलम् अथवा वायनैं दूरिकरिवावालाजो तेलत्यांकाकुरला करैतौ दांतांकासारारोगजाय २ अथ कृमिदंतको जतन लि० हिंगनैक्यूं येक गरमकरि दांतांकै विचै देतौ दांतांकी कृमिजाय ३ अथवा कागलहरी नीलकी जड कडवी तुंबीकी जड यांनै मिहीवांटि यांको दांतांकै मर्दन करैतौ दांतांकी कृमिजाय ५ अथदांत आंब्यारहै तीकीऔषदिलि० सांभरोलूण. नरकचूर. सूंठि अकलकरो यांनै मिहीवांटि दांतांकै मर्दनकरैतौ दांत आंब्याआ छयाहोय ६ अथ दांतांका सर्वरोग जावाकी औषदि लिष्यते पांचूं लूण. नीलोथूथो. सूंठि मिरचि पीपलि पीपलामूल. हिराकसीस मांजूफल वायविडंग यांनै मिहीवांटि यांको दांतांकै मर्दन करैतौ दांतांकासर्व रोगजाय ७ अथ दांतगाढा होवाकीमिस्सी लिष्यते हिराकसीस माजूफल लोहचूर सोनामुषी मजीठ फुलाई फिटकडी त्रिफला येसाराबराबरीले यांनै षरलमैं मिहीवांटि काजलसिरीसा करै पाछै मासो १ दांतांकै मसलै ईविधि दिनसात करैतौ दांत श्यामहोय ८

अथ दांतांका सर्वविकार हरवाकी औषदिलि० फटकडी फुलाई नीलोथूथो तेजबल पापड्योकाथ पीपलिकी कच्चीलाष सूंठि मिरचि पीपलि आंवला हिराकसीस माजूफल मजीठ रुमीमस्तकी बोलसिरीकी बकल सींधोलूण दीषणी सुपारी येसारा बराबरिले पाछै यांनैं कूटि कपडछाण करि निर्गुंडी कारसकी पुट २१ दे पाछै बोलसिरीका बकल कीपुट २१ देतावडै सुकावै पाछै ईनै मिहीवांटि क्यूं सींधोलूण मिलावै पाछै ईको दांतांकै मर्दन करैतौ दांतांका

न. टी. दांतहालणै लागजायछै जीसूं केईकमनुष्य कंटालजाय अरु दांत पडायनाषैछै. ज्यांनै फेरदांतांकी गरजपडै जदां बहोतइच्छाकरैछै. परंतु फेरमिलैनहीं जीसूं विचारकर णोचाहिजै.

सर्वरोगजाय ९ अथ दांतांकादूषवाकी औरऔषदिलि० कूठ टंक ५ सूंठि टंक ५ मिरचि टंक ५ पीपलि टंक ५ षुराषाणीअजवायणी टंक ५ हरडैकीछालि टंक ५ काथ टंक ५ यांनै मिहीवांटि दांतांकै मर्दन करैतौ दांतदूषतारहै १० अथवा गंगापारकीतमाषु अकल करो. कायफलवायविडंग. सूंठि मिरचि पीपलि ल्हण यांनै मिहीवांटि यांको मर्दन करैतौ दांतदूषितारहै ११ अथ दांतहालताहोय अर वामें पीडचालै तींकी औषदि लि० पीपलि सींधोल्हण. जीरो हरडैकीछालि. मोचरस यांनै मिहीवांटि यादातांकै रगडैतौ दांतहालतारहै अरवांकी पीडजाय १२ अथवा नागरमोथो हरडैकीछालि सूंठि मिरचि पीपलि वायविडंग. नींबकापान. यांनै मिहीवांटियांकै गोमूतका पुट ३ देछायासुकाय गोलीकरै पाछै वागोली रातिनै सोवतांमूंढामै राषै अर प्रभातिवे गोलीनैनाषै पाछै कुरला करैतौ दांतांका सर्व रोगजाय १३ अथवा फिटकडी नीलोथूथो षैरसार पापड्यौ काथ तेजबल कच्ची लाष वंसलोचन मिरचि आंवला मजीठ रुमीमस्तगी बौलसिरीकी वकल सींधोल्हण माजूफल दीषणी सुपारी यांनै मिहीवांटि कपडछाणकरि यांकै निंगुंडीकारसकी घणी पुटदैपाछै यांकै चवेलीका रसकी पुटदै तावडै सुकावैतौ जाय पाछै बौलसिरीकी घणीपुटदे पाछैसुकाय यांनै मिहीवांटि दांतांकै रगडैतौ दांत गाढाहोय अर दांतांका सर्व रोगजाय १४ अथ दांतांमै लोहीनीसरै तींकी औषदि लिप्यते. सींधोल्हण षैरसार कूठ धणो सूंठि सेक्योजीरो यांनै मिहीवांटि दांतांमै मर्दन करैतौ दांतांको लोहीनीसरतो रहै १५ इतिदांतांका रोगांकाजतन संपूर्णम् अथ जीभकारोगांकी उत्पत्तिनाम संख्यालिप्यते जीभकारोग ५ वायको

न. टी. विनादंतका मनुष्यको स्वरूपभी विरूपहोयजाय अरु मसोडाऊपर नीचैकामै अंतरघणोहोय. अंगुलदोयकै आसरै जीसूं दाढी हालवोहीकरै रात और दिन जीसौं यथ महीजतनकरणो.

१ पित्तको २ कफको ३ अलास ४ उपजिव्हा ५ अथ वायका जिव्हांरोगांको लक्षणलिष्यते जीकी जीभफाटिजाय अर सोईहोय अर हरीहोजाय अर जीमैं कांटापडिजाय अर स्वादको ज्ञानजातो रहै ये लक्षण होय तदिवायको जीभकै रोग जाणिजै १ अथ पित्तका जीभरोग कोलक्षण लि० जींकी जीभमैंदाहरहै अर जीभ कोवर्ण लालहोय अर कांटा पडिजाय तदि जाणिजै जीभकै पित्त को रोगछै २ अथ कफकाजीभको लक्षणलि० जींकीजीभ भारी लषावै. अर जाडीहोय जाय अर जीभमैं सुपेद कांटापडैतौ कफको जीभरोग जाणिजै ३ अथ अलासजीभकारोगको लक्षणलिष्यते. जीभकै नीचै घणोसोजो होय अरयोजीभनैं लठकरिदे अर डाढीनैं लठकरिदै हालवादैनहीं अर जीभनीचै पकिजाय योरोग कफलोहीसूं पैदा होयछै. ईनें अलासकहिजै ४ अथ उपजिव्हाको लक्षण लिष्यते जीभकी अणीउपरै सोजोहोय दुसरी जीभसिरीसो जाणिजै दूसरीजीभछै. अर लालघणीपडै अर वेमैं षाजि आवै अर वेमैं दाहहोय ईनें उपजिव्हाजीभकोरोग कहिजै ५ अथ जीभकारोगांका जतन लिष्यते जीभका सारांरोगांका दूरिकरिवाकै वास्तै लोहीकढावो जोग्यछै. १ अथवा गिलवै पीपलि नींबकोछालि कुटकी यांको काढोकरि कुरला करैतौ जीभकारोगजाय २ अथवा होठका जतनपाछै कह्याछै त्यांसूं भी जीभकारोग जायछै. ३ अथवा सूंठि मिरचि पीपलि जवषार हरडै यांनैं मिहीवांटि जीभकै लगावैतौ जीभकारोगजाय ४ अथवा सूंठि मिरचि पीपलि जवषार हरडैकी छालि यांमैं तेलपकाय ईतेलका कुरलाकरैतौ उपजिव्हा दूरिहोय ५ अथ पुनःजीभकी औषधि लिष्यते कचनारकी वकलका काढा

न. टी. जिव्हारोग तथा जीभकारोगछै. जो पांचप्रकारका कह्याछै. जीमैं जो जो दोष की अधिकता होय सो सो दोषांका लक्षण देषकर वैद्यनैं उपचारकरणो योग्यछै. अरु पथ्यापथ्यछै सो दंतरोग मुजबछै.

का कुरलाकरैतौ जीभका सर्वरोगजाय ६ इति जीभकारोगांका जतन संपूर्णम् अथ तालवाकारोगांकी नाम संष्या लिष्यते ताल वाकारोग ९ गलसुंडी १ तुंडकेंसरी २ ध्रुव ३ कच्छप ४ ताल्वर्बुद ५ मांससंघात ६ ताल्वप्युपुट ७ तालुसोस ८ तालपाल ९ अथ गलसुंडीको लक्षण लिष्यते तालवाकीजडसूं सोजोबडो वधै अर सोजो कूटिषाल सिरीसो होय जाणिजै ईषालमैं वायुभर्दिनीछे. अर वेने तिसलागै अरषाससासभीहोय ईनें गलसुंडीरोग कहिजे यो कफलोहीसूं उपज्योछे १ अथ तुंडकेंसरीको लक्षण लिष्यते ता लवाकीजडसूं उपज्यो जोसोजो सोदाह अरपीड अर पकिवाने लीयां उपजैसोयो कफलोहीका दुष्टपणासूं उपज्यो ईनें तुंडकेंसरी रोग कहिजे २ अथ ध्रुवरोगको लक्षणलिष्यते. जींकातालवामैं सोजोलालहोय ज्वरनेलीयां तीनै ध्रुवनामरोग कहिजे ३ अथकच्छ परोगको लक्षणलिष्यते. जींकातालवामैं सोजोकाछवाकै आकार ऊंचोहोय योकफसूं उपज्योछे ईनें कच्छपरोग कहिजे ४ अथ ता ल्वर्बुदको लक्षण लिष्यते जींकातालवामै सोजो कमलकै आकार होय अरजीमैं वडा अंकूर होय तीनैं ताल्वर्बुदरोगकहिजे ५ अथ मांससंघात रोगको लक्षण लिष्यते जींका तालवामैं दुष्टमांस वधै जीमैं पीडनहींहोय तीनें मांससंघात रोग कहिजे. ६ अथ ताल्व प्युपुटरोगको लक्षण लिष्यते जींका तालवामैं बोर सरीसो सोजो होय जीमैं पीडनहीहोय तीनें ताल्वप्युपुटरोगकहिजै ७ अथ ता लुसोसको लक्षण लिष्यते जींको तालवो सूकिजाय अरफाटि जाय अर स्वास होय आवै तीनें तालुसोस कहिजै ८ अथ ता

* तालवाकारोग बहुधाछै परंतु तालुपाकरोगछै सो अतिकठिणछै. बहुधा गरमीका आजारसूं होयछै. कोईविद्वान वैद्यकनै मूंढै आवाकी औषधीलियांसूं तोयोरोगजायछै को ईमूर्खवैद्यकी मूंढा आवाकी औषधी लियांघणो होयछै. वास्तैमूंढा आवाकी औषधी मूर्ख वैद्यकनै लेवीनहीं. यहवाचक रसावचेत होणैकीबातछै.

लूपाकको लक्षणलिष्यते जींको तालवो गरमीसूं घणोपकिजाय तीनें तालुपाक रोगकहिजे ९ अथ तालुवाकारोगांकाजतनलि० गल सुंडीरोग होय जीनेंचतुरवैद्यहैंसो शस्त्रविसकरिकेकाटिनाषैतो गल सुंडीरोगजाय १० अथवा कुठ मिरचि सींधोलूण पाठमोथो. यांनै मिहीवांटि गलसुंडीके मसलैतो गलसुंडीरोगजाय २ अथवा पीपलि अतीस कूठ वच सूंठ कालीमिरचि सींधोलूण यांनै मिहीवांटि सहत सेतीगलसुंडीके लगावैतो गलसुंडीआछीहोय ३ अथवा पीपलि अतीस कूठ वच रास्ना कुटकी नींबकीछालि यांनैं जौकूटकरि यांको काढोलेतो तालवाकागलसुंडी तुंडकेंसरीनें आदिलेर सर्वरोगजाय ४ इति तालवाका रोगांका जतन संपूर्णम् अथ गलाकारोगांका नामसंष्या लिष्यते. गलाकाअठारारोगछै पांचप्रकारकीतो रोहिणी वायकी १ पित्तकी २ कफकी ३ सन्निपातकी ४ लोहीकी ५ कंठ साळूक ६ अधिजिव्हा ७ वलया ८ अलास ९ एकवृंद १० वृंद ११ शतघ्नी १२ गिलायु १३ गलविद्रधी १४ गलौघ १५ स्वर घ्न १६ मांसतान १७ विदारी १८

अथ वायकी रोहिणीको लक्षणलिष्यते सारीजीभमैं घणीपीड होय अर जीभमैं सारैमांसका अंकुरनीसरि आवै अर वासूं कंठ रुकिजाय अर वायका सर्वउपद्रव होजाय ईनैं वायकीरोहिणी क हिजे १ अथ पित्तकीरोहिणीकोलक्षणलि० जींकोगलो पकिजाय अर गलामैं दाहहोय अर जुरघणीहोय ईनेपित्तकी रोहिणीकहिजे २ अथ कफकी रोहिणीको लक्षणलि० जींका गलाका श्रोतकफसूं रुकिजाय अर गलो मोडोपकै अर गलो भाय्योहोय ईनें कफकी रोहिणीकहिजे ३ अथ सन्निपातकीरोहिणीको लक्षणलिष्यते. श्रों

न. टी. गलारोग तथा कंठरोग अष्टादशजातका कह्याछै. जीमैं अमृतसागरमैं नामलि ष्याछै. सोहीनाम सारंगधरमैंछै. परंतु कोई कोईनाम भेदभिन्नछै. निदानमैं भिन्नभिन्नछै प रंतु वैद्यविद्वानतौ सर्व देशीग्रंथ संपन्नछै.

डोजीको पाकहोय अर वेंकोवीर्य दूरिहोयनहीं जतनासूंभी अर जीमें सर्वलक्षणमिलै वात्रिदोषकी रोहिणीजाणिजै ४ अथ लोहीकी रोहिणीको लक्षणलिष्यते जींका गलामें फोडाहोय आवै अर जामै पित्तकालक्षणमिलै तीनें लोहीकी रोहिणी कहिजै ५ अथ कंठ सालुकको लक्षणलिष्यते जींका गलामैं बोरकीमींगीप्रमाण गांठिहोय अर गलामै षरधरा २ कांटा पडिजाय अर ऊठेपीडभी होय तीनें कंठसालुक कहिजे ६ अथ अधिजिव्हारोगको लक्षण लिष्यते जींकी जीभकी अणीकै ऊपरि सोजोहोय अर लोहीनेली यां कफनें थूकै अर जीभ कफ लोहीसूं लीपिरहे ईनें अधिजिव्हा रोग कहिजे. ७ अथ वलयरोगको लक्षणलिष्यते. जींका गलामै कफवधे पाछे ओगलामैं सोजानेंकरे अन्न उगैरे गलामें जावादे नहीं वेंको मार्गरोकिदे ईनें वलय गलाकोरोग कहिजे. ८ यो असाध्यछे. अथ अलासरोगको लक्षण लिष्यते जींका गलामै कफ वायबधिकरि गलामै सोजोकरे अर स्वासनें अर पीडनें प्रगटकरे मर्मस्थानमें छेदताथका हियामै पीडकरै ईनें अलासरोग कहिजे. ९ अथ एकवृंदको लक्षणलिष्यते जींका गलामें कफ अर लोही दुष्ट हुवाथका गलाकैमाहि गोल अर ऊंची सोईनेकरे दाहनेली यां अर उठेषाजिभीचाले गलोपकिजाय अर गलो भार्यो कोमल लषावै ईनें एकवृंदरोग कहिजे १० अथ वृंदनाम गलाकारोगको लक्षणलिष्यते. जींकागलामें पित्त अर लोहीकोपकूं प्राप्तिहोय वा संयुक्तगलामें विनापीडा सोजानें प्रगटकरे अर गलामें दाहकरे अर तीव्रज्वरनें पैदाकरे ईनें वृंदनाम गलाकोरोग कहिजे ११ अथ शतघ्नीकोलक्षणलिष्यते जींका गलामें मांसका अंकुर जाडा

न. टी. पंचरोहिणीनाम अंकुरात्मकरोगछै जीमैंवात. पित्त. कफ. त्रिदोषनाम सन्निपात रक्त तथा मेदये सरवपंचरोहिणीछै सोमहा असाध्यछै. अरुयाकी मुद्दतछै. जीमैं मनुष्यका प्राणबचैनहीं. ओर वलयादिकमैंभी कंठबंधहोयछै.

जाडा करडा कंठने रोकिवावाला घणां ऊगै अर वामैं पीड घणी चालै प्राणांनैं हरवावालो योरोग त्रिदोषका कोपसूं होयछे. सो असाध्यछे. ईने शतघ्नीगलाको रोगकहिजे. १२ अथ गिलायुरोगको लक्षणलिष्यते जींका गलामैं आंवलाकी मींगोप्रमाण गांठी होय अर ऊठेपीड कमहोय वागांठि कफलोहीसूं होयछे. अर भोजनकरतां वावुरीलागे ईने गिलायुरोग कहिजे. १३ अथ गलविद्रधीको लक्षणलिष्यते. जींका सारागलामैं सोजोहोय अर ऊठेपीड घणीहोय योभी त्रिदोषका कोपसूं होयछे. ईनैं गलविद्रधीरोग कहिजे १४ अथ गलौघको लक्षणलिष्यते जींका गलाकामार्गमैं सोजोघणोहोय अर जींका गलामैं पवनभीजाय सकैनहीं अर तीव्रजुरहोय जाय योकफ लोहीका दुष्टपणासूं होयछे ईनैगलौघरोगकहिजे. १५ अथ स्वरघ्नरोगको लक्षणलिष्यते जींकागलामैं कफ दुष्ट होय गलाकास्वरनैं दूरिकरै अर स्वास दोहरो लियोजाय अर घांघो बोलै. भोजन कर्‍यौ जायनहीं योकफ कंठका पवननैं विगाडै ईनें स्वरघ्नरोग कहिजे १६ अथ मांसतानको लक्षणलि० जींका गलामैं सोजोक्रमसूंवधै अर सारागलामैं फैलिजाय गलामै पीडहोय योभी त्रिदोषसूं होयछे ईनें मांसतानरोग कहिजे १७ अथ विदारीरोगको लक्षणलिष्यते जींकागलामैं तांबाकावर्ण सिरीसो दाहनैलियां सोजोहोय अर गलो लटकिजाय पकिजाय जीमैं राधिपडै योपित्तका कोपसूं होयछे. अर गलाका पसवाडामैं जठी सोवै तठीविदारी कंदसो होय. तीनैं विदारीगलाको रोग कहिजे. १८ अथ गलाका रोगांका जतनलिष्यते जींकै रोहिणीहोय तींका गलाकौ जलौकासूं लोही कढाजैतौ रोहिणीरोग आछ्योहोय १

न. टी. जोसन्निपातकी रोहिणी कंठरोगछै. सोतो प्रगटहोतीही प्राणहरैछै. अरु कफकी रोहिणीछै सोप्रगट हुवांपाछै तीनदिनमैं प्राणहरैछै. पित्तकी रोहिणीतो मनुष्यनैं सात दिवसमैंमारै रक्तरोहिणी मेदोरोहिणीतो कंठहीरोकै.

अथवा गलाका सारांरोगांका जतनलि० वमनकरावो औपद्यांसूं हुक्कोपावो. औषद्यांका कुरला करावो नस्तरदेवो लोहीछुडावो लूण को सेकयेसारागलाका रोगांनै आछ्या २ अथवा स्नेहकाकुरला येवायका गलाका रोगांनैं आछ्या ३ अथ पित्तका रोगका जतन लि० मिश्री सहत फूल प्रियंगू यांकाकाढासूं पित्तकागलाका रोगजा य ४ अथ कफका रोगांका जतनलि० घरकोधूमसो कुटकी यांका काढासूं कफकोरोगजाय ५ अथवा कुटकी सूंठि पीपलि मिरचि वा यविडंग दांत्यूणी सींधोलूण यांको काढोकरि तीमैं तेलपकावै पाछै ईतेलकी नासलेतो कफका गलाका सर्वरोगजाय ६ अथवा विष्णु क्रांतको काढोपीवैतो रोहिणीनाम गलाको रोगजाय ७ अथवा विष्णुक्रांता अर सांषाहुली यां दोन्यांनैं घोंटीपीवैतो कंठसालूक तुंडकेसरी उपजिव्हक अधिजिव्हक येकवृंद वृंदगिलयु येसर्वरोग जाय ८ अथ शस्त्रक्रियाकरि० गलाको रुधिर काढावैतो गलविद्रधी नैं आदिलेर गलाका सर्व रोग जाय ९ अथ कंठका रोगांका जतन लि० कंठरोगांकेविषै लोही कढावणो. नासदेणी. यांसूंकंठ आ छ्याहोय १० अथवा दारुहलद नींबकीछालि इंद्रजव हरडैकीछा लि. तज यांको काढोकरि सहतनाषि पीवैतो कंठका सर्वरोग जाय ११ अथवा कुटकी अतीस दारुहलद. नागरमोथो इंद्रजव यांको काढोकरि काढामैं गोमूत नाषि पीवैतो कंठका सर्व रोग जाय १२ अथवा हरडैकी छालिको काढो सहतनाषि पीवैतो कंठका सर्वरोग जाय १३ अथवा मिनक्कादाष कुटकी सूंठि मिरचि पीपलि दा

---

* मुखछालाको रोगषराबछै. भोजनकरतां घणीपीडा होयछै. जीभऊपर होयछै. गल फाडमैं. होंठामैं. मसूढांमै तालवामै होयछै. वास्तै अनेक उपावकरैछै. परंतु केवडाका सि टामैं मैदासिरीसो आटोहोयछै. जीनैं झडकायकर लेवै. पछैवो आटो जीभऊपर तथा मुष काछालांऊपर भुरकावै. पांचवार तथा दशवार दिनतीनमैं आरामहोय. परंतु छालावालानैं जुलाबलेणो योग्यछै. जडरोगकी पेडमैछै.

रुहलद तज त्रिफला नागरमोथो. पाठ रसोत मूर्वा तेजबल हल
द यांको काढो सहत नाषि पीवैतो अथवा ईंका कुरला करै अथवा
यांकी सहतसूं गोलीकरै गोलीमूंढामैं राषैतौ गलाका कंठका सारा
रोगजाय १४ अथ गलाका सर्व रोगांकीगोली लि० तेजबल. पाठर
सोत दारुहलद पीपलि यांनैमिहीवांटि सहतसूं गोली बांधै पाछै
ईंगोलीनैं मूंढामैं राषैतो सर्व गलाका रोग जाय १५ इतिगलाका
रोगांका जतन संपूर्ण. अथ समस्त मुष रोगांकी उत्पत्ति संष्या
लि० वायको मुषरोग १ पित्तको २ कफको ३ अथ वायका मुष
रोगको लक्षणलि० जींकामूंढामैं सर्वत्र छाला होयजाय अर वामैं
पीड घणीहोय तौवायको मुषरोग जाणिजै १ अथ पित्तका मुष
रोगको लक्षणलि० जींका मूंढामैं छाला लालहोय दाहनैलीयां अर
वेपीला होय तीमैं पित्तको मुषरोग कहिजै. २ अथ कफका मुषरो
गकोलक्षण लि० जींका मूढामैं छाला सुपेद विनापीडा होय अर
वामैं षाजि आवै तीनैं कफको मुषरोग कहिजै ३ अथ मुषरोगको
असाध्य लक्षणलि० जींका होठामैं छाला होय अर मसूढामैं होय
मांस लोहीका कोपसूं अर त्रिदोषका कोपसूंभी होयसो असाध्य
जाणिजै ४ अथ समस्त मुषरोगांका जतनलि० वायका मुषमैं
छाला होयतौ लूणफिटकडीका कुरला कराजै १ अथ वायनैं दूरि
करिवावाला तेलका कुरलासूंये छालाजाय २ अथ पित्तका छाला
को जतनलि० महलौठी षैरसार यांनै औटाय ईंमैं सहत नाषि ईंका
कुरला करैतो पित्तका मुषरोगका छालाजाय ३ अथवा दूधनैं गर
मकरि क्यूंघृत सहत नाषि वेंको कुरला करैतौ पित्तरोगका छालाजा
य ४ अथ कफका छालाको जतन लिष्यते नीलोथूथो फिटकडी

न. टी. मुषरोगादिकजीभ. तालु. कंठ. छाला. मुषकायांका पथ्यापथ्यको विचारकरणो पथ्यलि० जुलाबदेणो. उलटी. वांतीदेणी. कुरला. धूम्रपान. मूग. कुलथी. तुराई. पानवीडा चावल दाल. रोटी. षीरतइत्यादि. कुपथ्यलिष्यते. दांतण. स्नान. दही. गूल. षटाई.

यांनैं वांटि छालाकै लगावैतौ अरमूंढाकी लाल नांषतौ जायतौ कफका छाला जाय ५ अथ सन्निपातका छालाको जतनलि० यांरोगांमैं मूंढांकी नसकीसीर छुडावैतौ येछाला जाय ६ अथवा चवेलीकापान गिलवे त्रिफला जवासो दारु हलद दाष यांको काढोकरि तीमै सहत नाषि ईंका कुरला करैतौ त्रिदोषका मुषका छाला जाय ७ अथवा कालोजीरो कूठ इंद्रजव यांने मिहीवांटि दांतांनींचैदे अर मुषमैं रस जायतीनैं थूकतो जायतौ त्रिदोषका छाला आछ्या होय ८ अथवा पटोलकापान आंवलाका पान चवेलीकापान यांको काढो करि पाछैयांका कुरला करैतौ त्रिदोषको मुषपाक छाला जाय ९ अथवा पटोलका पान त्रिफला दारुहलद यांको काढो करितीमैं सहतनाषि ईंका कुरला करैतौ त्रिदोषकौ मुषपाक जाय. १० अथवा षस पटोल नागरमोथो हरडैकीछालि कूटकी महलौठी किरमालाकीछालि रक्तचंदन यांको काढोले अथवा ईंका कुरला करैतौ त्रिदोषका मुषपाक छालाजाय ११ अथवा तिलांकाडांक कमलकीजड घृत मिश्री दूध सहत यांसारांनैं येकठाकरियांका कुरला करैतौ त्रिदोषका मुषपाकका छालाजाय १२ अथवा हलद नींबकापान महलौठी कमलकीजड यांनें तेलमैं पकावै पाछै ईंतेलका कुरला करैतौ त्रिदोषका मुषपाकका छालाजाय १३ येसाराजतन भावप्रकासमैं लिष्याछै.

अथ मुषपाकका दूरि करिवाका ओर जतनलि० चवेलीकापानांनैं चावैतौ छालाजाय १४ अथ षैरसारकीगोली लि० षैरसार जायफल भीमसेनीकपूर दिषणीसुपारी तज पत्रज नागकेसरी इलायची कस्तूरी ये सर्वबराबरिले यांनैं मिहीवांटि षैरसारकाकाढामैं याकी

न. टी. मनुष्यकावास्त्रियांका मुषऊपरै कपोलापर तथा नासापर तथा दाढीहोठ यांपर छायापडैछै. जीसैं पूर्णचंद्रमाकै माहीछात्रका दीषैवैमैहीं मुषऊपर छात्रकादीषैछै श्यामरंगका न्यांसूं रूपवेरूपदीषै जीनैंछायाकहैछै.

गोली बांधे चणाप्रमाण पाछे गोली मूंढामें रापैतौ जीभका होठां कादांतांका मूंढाका गलाका तालवाका सर्वरोगजाय १५ अथ दूसरीगोली० जायफल कस्तुरी भीमसेनी कपूर सुपारी यांकी बराबरि पैरसार यांनें मिहीवांटि गोलीकरि मुपमें रापैतौ मुपका रोग जाय १६ अथवा दारुहलद गिलवै चवेलीकापान दाष अजवायण त्रिफला यांको काढोकरि कुरलाकरैतौ मुपपाक जाय १७ येजतन वैद्यरहस्यमैंछे॰ अथ मूंढाऊपरकी छाया दूरिहोवाका जतन लि० लोद धणो वच गोरोचन मिरचि यांनेंवांटि मुपकै लेपकरैतौ छायाजाय १ अथवा सरस्यूं वच लोद सींधोलूण यांनें पाणीमें वांटि मुपकै लेपकरैतौ छायाजाय. २ अथवा रक्तचंदन मजीठ कूठ लोद प्रियंगू वडका अंकुर मसूर यांनें जलसूं वांटि लगावैतौ छायाजाय ३ अथवा जायफलनें घसि लगावैतौ छायाजाय ४ अथवा आकका दूधमें हलदनें भेय लगावैतौ छायाजाय ५ अथवा मसूरनें दूधसूं पीसि घृतमिलाय लेपकरैतौ छायाजाय कांतिवधै ६ अथवा केसर कमलकीजड अथवा केसर रक्तचंदन लोद षस मजीठ महलौठी पत्रज कूंठ गोरोचन दोन्यूंहलद लाष नागकेंसरिके सूला फूल प्रियंगू वडका अंकुर चवेलीकापान मोम सरस्यूं वच यांको काढोकरि ईकाढामें तेलपकावै मधुरी आंचसूं पाछे ईतेलको मर्दन करैतौ मूंढाकी छाया कील तिल मस्साउगैरे मूंढाका सर्वविकार जाय ७ इति कुंकुमाद्यंतेलम् येसर्व भावप्रकासमैंछे. इति श्रीमन्महाराजाधिराज महाराजराजराजेंद्र श्रीसवाई प्रतापसिंह जीविरचिते अमृतसागरनामग्रंथे क्षुद्ररोग मस्तगरोग नेत्रांकारोग कानका सर्वरोग नाकका सर्वरोग मुपका सर्वरोग होठांका मसू

न .टी. ऐसैहीदर्शनीकमुषऊपरैछायाहोयकीलहोय जीनैंतारुण्यपीठिकाकहैछै. तिलसिरीसाकालाकालाछोटाहोय जीनैंतिलकहैछै. अरमूढांऊपरमस्साभीहोयछै. सोयाकारणसूंमुखविशोभितहोयछै. जींकाजतनऊपरलिष्याछै.

ढाका दांतांका जीभका तालवाका गलाका यांका भेदसंयुक्त उत्पत्ति लक्षण जतननिरूपणंनाम अष्टादशस्तरंगः संपूर्णम् १८

१९ अथ सर्व स्थावरजंगमविषमात्रकी अर यासूं उपज्याजो रोग त्यांकी उत्पत्ति लक्षण जतनलिष्यते प्रथम विष दोय प्रकारकोछे स्थावर १ जंगम २ स्थावरविषहैसो दश १० जायगांरहै वृच्छकी जडमै १ पत्रमै २ पुष्पमै ३ फलमै ४ छालमै ५ वृक्षकादूधमै ६ वृक्षकासारमै ७ वृक्षका रसनाम गुंदमैं ८ धातूमात्र हरतालादिकमै ९ कंदनाम सींगीमोहरादिकमैं १० या दशजायगां स्थावर विषरहै अथ जंगमविष १६ जायगांमे रहै सोलिष्यते मनुष्यादिकांकीदृष्टिमै १ सर्पादिकांका स्वासमै २ स्वानसृगालादिकांकी डाढमैं ३ सिंहव्याघ्रादिकांका नखांमैं ४ विसमरादिकांकामलमै ५ मूत्रमैं ६ वंदरादिकांका शुक्रमैं ७ हिडक्या जिनावर स्वान सृगालनैं ८ आदिलेर त्यांकी लालमैविष ९ गरम वस्त षाईहोय इसीजोस्त्री त्यांका भगमैंविष १० अर गरमवस्त जो षाईहोय त्यांकी गुदामैविष ११ सर्पादिकांका हाडामैं विष १२ न्यौल्या माछलानैं आदिलेर त्यांका पित्तमैविष १३ भौंरादिकांका कांटामै विष १४ मूषकांका दांतांमैविष १५ सिंहादिकांका रोममै विष १६ अथ स्थावरविषषाया जोरोगछै सोलिष्यते स्थावर विषषायां जुरहोय हिचकीहोय दांत आंब्याहोय गलोपकड्योजाय मूंढेझागआवै. छादणीहोय अरुचिहोय स्वासहोय मूर्छाहोय जीमै येलक्षण होय तदि जाणिजे इस्थावर विषषायोछै १ अथ वृक्षादिकांकी जडका विष षावाका लक्षणलिष्यते वृक्षादिकांकी जडका विषषायां वमन होय मोहहोय बकवो होय १ अथ वृक्षादिकांका

* मुखछायारोगछै. सुमुखस्वरुपकोकुमुखस्वरूपकरिदेछै. चंद्रमुखीस्त्रीहोयछै. जींकामुखनैं चंद्रमासिरीखो कलंक सहित करिदेछै. वास्तै कमलाकाछीलका अथवा नारंगीकाछीलकाम सलैतौ छायाजाय.

पत्रका विषषावाका लक्षणलिष्यते जंभाई घणीआवै शरीरकांपै स्वासहोय २ अथ वृक्षादिकांका फलकाविष षावाका लक्षणलि० ष्यते मुषमैं सोजोहोय शरीरमै दाहहोय भोजनमात्रमैं द्वेषहोय ३ अथ वृक्षादिकांका पुष्पका षावासूंघिवाका लक्षणलिष्यते छर्दि होय आफरोहोय मूर्छाहोय ४ अथ वृक्षादिकांकी वकलका रसका षावालगावाका लक्षणलिष्यते वेंका मूंढामैं दुर्गंधि आवै शरीर करडो होयजाय मथवाय होजाय मूंढामैं कफ घणोनीसरै ५ अथ वृक्षादिकांका दूधका विष षावाका लक्षणलिष्यते. मूंढामैं झागआवै. गुदाको बंदछूटिजाय जीभभारी होयजाय ६ अथ धातुविष हरतालादिकांका षावाका लक्षणलिष्यते. हीयोदूषै मूर्छाहोय शरीरमैं दाहलागिजाय अर तालवामैं दाहलागै ईविषसूं वेगोभीमरै. अथवा कालांतरसूं मरै ७ अथ कंदविष सींगीमोहरानैं आदिलेर तींका षावाका उगरैका लक्षणलिष्यते सिंगीमोहरादिकांका षावासूं मनुष्यादिक तत्काल मरिजाय हियोदूषै मूर्छाहोय. शरीरमैं दाहहोय तालवोबलै. ८ अथ स्थावर विषमात्रका शुद्धहुवाका षावाका गुणलिष्यते. स्थावर विषमात्र लूषोछै अर ऊन्होछै तीषोछै अर ईको सूक्ष्मगुणछै. अर योस्त्रीसंग घणो करावैछै. अर योसर्व शरीरमैं तत्काल फैलिजाय अर ऊगिआवै अर तत्काल ईको परिपाक होय जायछै. अर येईस्थावर विषमैं दशगुणछै ९ अथ स्थावरविषका षावासूं जोरोग उपजैछैसोलि० विषका लूषापणाका गुणसूं मतिकूंविगाडै अर सर्वस्थानका बंधानैं काढै अर विषका सूक्ष्मपणाका गुणतैं शरीरकाअंग अंगमैं ओविष वढिजाय अरु विषका पराक्रमसूं स्त्रीसंग घणोकरावै ईगुण थकीशरीरका दो

न. टी. विषादिकसौंरोगप्रगटहोयछै. जींकाप्रकार २ कह्याछैजींमैंएकतो स्थावरदूजाजंगम ज्यांकानामतथारोगउत्पत्ति सर्वप्रकारसूं कहीछै. सोचतुरपुरुषलक्षणसूं जाणलेसी.

षांनैं अर शरीरकी धातानैं अर शरीरका मलनैं विगाडै अर वि
अर विषका शीघ्रपणाका गुणाथकी शरीरकूं क्लेशदेवै ईंवास्तै विष
का जतन अति कठिनछै. १० अथ ज्यांका शस्त्रांकै विषकीपाण
लागीहोय त्यांका लक्षणलि० ज्यांका शस्त्रांकै विषकी पाणलागी
होय त्यां शस्त्रांकी ज्यांकै लागै त्यांका घावतत्काल पकिजाय अर
वाघावां मांहिसूं लोही घणोनीसरै अर वेंकी लोही कालोहोय अर
जीमैं दुर्गंधि घणीआवै अर जींको मांसविषरि जाय अर जीनैं
तिसलागै अर जींकै ताप होय अर जींकै दाहहोय अर मूर्छाहोय
येजीमैं लक्षण होय तदि जाणिजै कहींवैरी शस्त्रकी धारकै विषदि
योछै. तींकालक्षण जाणिजै ११

अथ जोकोईकहीनैं विषदियो होय तींका जाणिवाकै वास्तैतीं
का लक्षणलि० विषदेवावालामनुष्यकीबाणीकी चेष्टाकी मूंढाकी आ
कृति औरसीहोयजाय अर कोईऊने बूझै तदि ओविषका देवावा
लो वेनैं बूझ्यांको उत्तरदेनहीं. अर कहवाकीकरै अर ओविषको
देवावालो मोहकूंप्राप्तिहोय बोल्यो जायनहींअर बोलैतो मूर्षकीसी
तरै बोलै. अर आंगुली करिकै पृथ्वीनैं षनैं अर हंसवा लागिजा
य अरघरमांहिसूं वारैनीसरै वाकी करै अर अठी ऊठीवारंवार दे
षतो जाय अर विषका देवावालाको चित्त विपरीत होयजाय येसर्व
लक्षणविषका देवावाला मनुष्यमैं होयछै सो बुद्धिवान वेनै जाणि
जै. १२ अथ जंगमविषजो सर्पादिक सोजीनैं काटै त्यांसूंउपज्यो
जो रोग त्यांका सामान्य लक्षण लिष्यते जीकै कहीं जिनावरका
ट्यो होय तीनैं निद्राआवै अर वेंकै तंद्राहोय अर सर्व ज्ञानेंद्रिय
जातीरहै अर दाहहोय आंध्यारी आवै अररोमांचहोय अर ऊठे

न. टी. विषकीउपाधीमैंपथ्यलि० विषावालानै दूधभात. दहीं. भात. बैगण. चूकको साग. आंवलाकीकढी तथा साग ल्हसण. तथा पलांडु कांदा. दाडम. पाकीमीठी. ह लकी वस्तु.

सोजोहोय अर अतिसारहोय येसर्व लक्षण कहींविषेल जिनावर का काट्याका जाणिजे १ अथ सर्पनाम भोगीमंडल राजिलजो स र्प त्यांकाकाटिवाका जुदाजुदा लक्षण लि० वायकी प्रकृतिवालो भोगी पित्तकी प्रकृतिवालो मंडलनामककफी प्रकृतिवालो राजि लनाम २ येजोसर्पजीनैं काठै त्यांकालक्षणलि० भोगीसर्प जीकौं काटै तींका दंसकी जायगां काली पडिजाय. अर वेंकै सर्ववायका रोग उपजि आवै अर मंडलनाम सर्पजीनैं काटै तींका काटवाकी जायगां पीलीहोयजाय अर कोमल सोजो होजाय अर वेंकै पित्त का सर्वरोग होजाय. औरराजिलसर्प जीनैं काटै तींका काटवाकी जायगां स्थिर सोजोहोय अर उठै पीलो अर चीकणो अर झाग नै लीयां अर जाडो वेकाटवाकी जायगां लोहीनीसरै अर वेंकै क फका सर्व रोगजाय २ अथ देशविशेषमैं अर कालविशेषमैं जोस र्पादिककाट्याछै त्यांका लक्षण लिष्यते. पिंपलकास्थानमैं देहरामैं समसानमैं वंबीकनैं चोहटाकै मांहिसंध्याकैसमै भरणी अरमघान क्षत्रकैमांहि अर मर्मस्थानकेमांहिंजोसर्पादिकयास्थानांमैमनुष्या दिकनकूं काटै सोमनुष्य मरिजाय ३ अथ दर्वीकरनामसर्प जींको फण कडछीसरीसो होय तींका काट्याको लक्षण लि० जींकोफण पहिया सिरीसो अथवा छत्रसिरीसो कमलसिरीसो अंकुशसिरीसो होय अर ओसर्प उतावलोचालै वेनेदर्वीकरसर्प कहिजे ४ अथ अ तनामनुष्यांदिकांनें सर्पादिककाट्या होय त्यांको जतनकीजे नहीं सोलिष्यते अजीर्ण वालानैं गरमीकाविकारवालानैं बालकनैं बूढा नै भूषाआदमीनैं घाववालानैं प्रमेहवालानैं गर्भवती स्त्रीनैं जींका सरीरमैं रुधिरनहींहोय जीनैं यां आदम्यांनैं सर्पादिक काटैतौ अ

न. टी. कुपथ्यनामपरेज राषणो सोलिषूंछुं. विरोधीअन्न. क्रोधकरणो नहीं भयराषणो नहीं. स्त्रीसंगकरणोनहीं. दिनमैंनिद्रालेणीनहीं. कोद्रवषाणीनहीं. मूग. वटाणा. तेल. घृत. येषाणानहीं.

साध्यजाणिजे. ५ अथवा जींका मूंढामें रुधिरधारपडै अर जींका गुदामें इंद्रीमें रुधिरकी धारपडै सोभी असाध्यछै. ६ अथ दूसी विषको लक्षण लिष्यते स्थावर अथवा जंगम जोविषछै सो घणा दिनांकाप्रभावसूं वे औषदादिक दूषी विषहोय जाय वाको गुणजातो रहै रस जातो रहै. अर पुराणी औषदादिक विषकी षायतो वेकों मूर्छा भ्रम वमनादिक होयजाय ७ अथ मूषाका विषको लक्षण लिजठैमूसाकाट्योहोयतीजायगां लोहीपीलो नीसरै अर ऊठे मंडल पडिजाय अर ज्वरहोय अरुचिहोय रोमांचहोय दाहहोय येलक्षण जीकांशरीरमैंहोय तदि जाणिजे ईनें मूसोकाट्योछै. ८

अथ प्राण हर मूसाका विषका लक्षण लिष्यते. जींका मूसाका काट्याथकी मूर्छाहोय अंगमें सोजो होय शरीरकोवर्ण औरसो व्हैजाय शरीरमें षेद घणी होयजाय दंशकी जायगांलोही घणोपडै अर ज्वरहोय आवै सिर भार्‍यो होय जाय लालघणी पडै लोही छांदै ईमूसाका काट्यानें असाध्य जाणिजे ९ अथ किरकांट्याका विषको लक्षण लिष्यते किरकांट्याका कांट्याकी जायगां सोजोहोय होय अर उठै जायगां काली पडि अर शरीरका नानावर्ण होय जाय अर मोहहोय आवै अर अतिसार होयजाय तदि जाणिजे किरकांट्याकाकाट्याको जहरछै १० अथ वीछूं*का काट्याका विषको लक्षणलि जीजायगां शरीरमै वीछूकाटै तीजायगां अग्नि लागिजाय अर ऊंचो चढै अर ऊठै काटवाकी जायगां शरीर फाटिवासो लागिजाय ११ अरवीछूका काट्याको असाध्य लक्षण लिष्यते ज्यो वीछू निपट जहरी होय अर नाकमैं काटैतो ऊठे अग्नि घणी लागै

* वीछूनामवृश्चिकछै. देशभूमिकाकोकारणघणोछै. पाहाडकोवीछूकालोहोयछै. मोटोघणो होयछै. जहरकटिणहोयछै. मंत्रसूंझाडावीघणादेवैछै. परंतुझाडोदेणैवालोतोएकही पुरुषहोयछै. झाडादिवाणौवालातोघणा. जामैकोईककै आरामबतावै. घणांतो नहींबतावै. वास्तै औषधी सत्यछै. मंत्रझाडाकोतोढुंगढांगहीनजरआवैछै.

वेंकीजीभ थकीजाय पीडसूं अर ऊठाको मांस पडिवा लागिजाय ईसो मनुष्य मरिजाय १२ अथ विशेल मींडको काट्यौ होय तीं काविसको लक्षण लिष्यते. विसेल मींडको जीनैं काटै तीकैंवी जा यगां सोजो होय अर वठै पीडहोय अर वेनैं तिसलागै अर नींद घणी आवें अर छादणी होय १३ अथ विसेलमँच्छ जीनें काटें तींका लक्षणलिष्यते विसेल माछलो जीनें काटै तींका सरीरमें दाह लागै अर ऊठे सोजो होय अर पीडहोय १४ अथ विसेल जोककाकाट्याको लक्षण लिक्षण लिष्यते. ऊठै षाजि आवै सोजो होय जुर होय मूर्छाहोय तदि जाणिजे विषजोकका काट्याकोछै १५ अथ विसेल विषमरै काट्यौ होय तींको लक्षण लिष्यते. ऊठै दाहहोय अर सोजोहोय अर पीडहोय पसेव आवै १६ अथ क नसलाका काट्यको लक्षण लिष्यते जीजायगां कनसलो काटै तठै पीडहोय अर पसेव आवै अर ऊठे दाहहोय १७ अथ माछरका विषको लक्षणलि ऊठे षुजालि आवै क्योंसोजो होय अरमंद पीड होय १८ अथ बनका माछरका काट्याको असाध्य लक्षण लिष्य ते. जीनैं विसेल माछर काटै जींके पिस्ती सिरीसा लाल दाफड घाव सिरीसो औंडा पडिजाय अर ऊठे पीडघणी होय ओ असा ध्य जाणिजे १९ अथ विषेल माषीका काट्याको लक्षण लिष्यते जठै विषेलमाषी अथवा भंवर माषीजीनें काढेतींका विसेलको ल क्षणलि० जीजायगांकाठे तठै काली जायगां पडिजाय दाहहोय मू र्छाहोय जुरहोय अर ऊठे दाफडहोय ईको काट्यो मरिजाय २० अथ सिंहवघेरोची तोजीनें काटैतींको लक्षणलि० जीनें सिंहादिक काटै तींको घावपकै अरवेमै राधिपडै अर जुर होय आवै २१

न. टी. मोहालकीमाषी. तथाभंवरी. तथाटांट्या. तथाबनमाछर.इ०लघु जंतु काढैछै जीं जायगां सोजोहोय. दाहहोयछै. जींकैऊपरलोहानैंघसैजलकैसाथलेपैकर अरलोहासौं झाडोदेवै सातवार लोहचढै. विषउतरैयोकहै.

अथ हिडक्या स्वानको लक्षणलि० जींका मूंढामें लालपडै अर ओ स्वान आंधो होयजाय अर बहरो होयजाय अर औचोंगड दाई दौडै अरवेकी सूंधी पूछ होजाय अर वेंकी दाढी अर कांधो अर माथो घणो दूषै तींकरिवेको मूंढो नीचोहीरहै इसा स्वाननें अथवा सिंहस्याल व्याघ्रादिकानेंभी हिडक्याही जाणिजे २२ अथ हिड क्या स्वानादिक जीनेंकाटै तींको लक्षणलि० जीनें हिडक्यास्वाना दिक काटै तींकौ लोही कालोनीसरै अर वेंकोहीयो शिरघणोदूषै अर जुरहोय शरीरवेंको जकडबंदहोय तिसलागै अर ऊठेषाजि आवै पीडहोय शरीरकोवर्ण औरसोहोजाय अर शरीरमें क्लेश घणोहोय भोंवल आवै दाहहोय काठवाकी जायगांपकै सोजोहो य ऊठेगांठि पडिजाय काट्यौ जठै फाटिवालागिजाय ऊठे फोडा होय आवै येईंका लक्षण जाणिजे २३ अथ ईंको असाध्यलक्षण लि० जोपुरुष जलमें कांचमें तैलादिकमें श्वानस्यालकें देखै अर पुकारऊठै अर वांकीसी चेष्टाकरिवा लागिजाय अर जलसैंडरै ओमरिजाय २४ अथ स्थावर विषमात्रका जतनलि० स्थावर वि षजीनें षायोहोय तीनें औषद्यांसूं वमन कराजैतौ स्थावर विषजा य १ विषमात्र गरमछै ईंवास्तै सीतल सर्व जतन आछ्या २ अथवा सहत घृतसंयुक्त विषनें दूरिकरिवावाली औषदीदीजैतौ स्थावरविषजाय ३ अथवा स्थावरविषवालानें षटाई मिरचि दीजे नही अर वेनें भोजनमें साठ्या चावल कोद्रू सींधोलूण दीजे ५ अथवा विषका दूरिकरिवाको लेपलि० फूलप्रियंगू कागणीकीजड पान वकल फूलबीज अर सिरसको पंचांग त्यांनें गोमूतमें वांटि लेपकरैतौ स्थावरविषको रोगजाय ६ अथ दूसीविषका दूरिकरि

न. टी. जंगमविषमैं सर्पादिकविषप्रबलछै. परंतुमहाविषीसर्पछै. जांकी जातपीछाणी. चाहिजै. गारुडीलोक जातपिछाणैछै. सो. महाविषधरसोतो घणा बचतारहैछै. अरवहमभी नहींराषैछै.

वाको लेपलि० पीपलि छड लोद इलायची कालीमिरचि नेत्रवालो सोनगेरू यांनै जलसूं मिहीवांटि लेपकरैतौ दूसीविषजाय ७ येस वैजतन भावप्रकासमैछे. अथवा चौलाईकीजडनैं चावलांकापाणी सूं पीसिपीवैतौ स्थावरविषको दोष दूरिहोय ८ अथ जंगमविषका जतनलि० अथ मृत्युपास छेदिघृतलि० हरडैकीछालि गोरोचन कूठ आककाफूल कमलकीजड नरसलकीजड वेतकीजड तुलसी इंद्रजव मजीठ जवासो सतावरी सिंगाडा यांको काढोकरि तीमै गऊकोघृत पकावै पाछैये सर्वबलिजाय घृतमात्र आयरहै तदि ईंघृतमैं बराबरिको सहतनाषि ईंको शरीरकै लेपकरैतौ विषमात्रको दोष सर्पकाकाट्याउगैरै सर्वजिनावरको वीस दूरिहोय ईंघृतनैं षावामैं लेपमैं नासमैदीजे ९ योभावप्रकासमैछे. अथ सर्पकाविषका दूरिहोवाको जतनलिष्यते घृत सहत माषन पीपलि आदो मिरचि सींधोल्लूण यांसारांनैं मिहीवांटि पीवैतौ काला सांपकोभी काट्यो आछ्योहोय १० अथवा सिरसका फूलकारसकी सहजणांका बीजांकै पुट ७ दे पाछै वेंको अंजन करैतौ सांपको काट्यो आछ्योहोय ११ अथवा सुपेद साटीकीजडनैं पुष्यार्ककैदिन लावै पाछै वेनै चावलांका पाणीमैंवांटि पीवैतौ सांपको काट्यो आछ्यो होय १२ अथ वीछूका विसकोजतनलिष्यते. जमालगोटानैं घसि विछूका डंककै लगावैतौ वीछूको विषदूरिहोय १३ अथवा नौसादर हरताल यांनै पाणीसूं वांटि वीछूका डंककै लेपकरैतौ वीछूको विष दूरिहोय १४ अथवा पलासपापडानैं आक कादूधमैं घसि वीछूकाडंककैलगावैतौ वीछूकोविष दूरि होय जाय. १५ अथवा सिरसका बीजानैं बकरीका दूधमैं वांटिवीछूका डंककै लगावैतौ वीछू

न. टी. कोईकोईतो सर्प तथा गोहरो तथा गंढासल्यो लघुसर्प उछलकर डसैछै. अर योभी कहैछै. भैतूनैं काढ्योतोछै. परंतु ह्माराऊपरि हीमती पडिजे. इसी लोकप्रसिद्ध वातछै.

को विषजाय १६ अथ वीछूका विषका दूरिहोवाको मंत्रलिष्यते. ॐ. आदित्यरथवेगेन विष्णोर्बाहुबलेनच सुपर्णपक्षपातेन भूम्यांगच्छमहाविष १ झोपक्षजोगपदज्ञश्री शिवोत्तमप्रभुपदाज्ञा भूम्यांगच्छमहाविष ईमंत्रसूं वार २१ डंकऊपर झाडो दीजैतौ वीछूको जहर ऊतरै १ अथ कनीरका विषका दूरिकरिवाका जतनलिष्यते. हलदनैं दूधमैंवांटि वेमैं मिश्रीमिलाय पीवैतौ कनीरको विषउतरै. १७ अथ धतूराकाविषको दूरिहोवाको जतनलि० चौलाईकी जड अथवा गिलवै त्यांनें पीवै अथवा कपासका पंचांगनै पीवैतौ धतूराको विषजाय १८

अथ आककाविष दूरिहोवाको जतनलिष्यते. तिल दोब यांनैं बकरीका दूधमैंवांटि लेपकरैतौ आकका विषजाय १९ अथ कौंछिका विषका दूरिहोवाको लेपलिष्यते. घृतको मर्दन करैतौ कौंछिको विषजाय २० अथ भिलावाका विषको दूरिहोवाको जतनलिष्यते १०० सौवारका धोयाघृतको मर्दन करैतौ भिलावाको जहरजाय २१ अथ माषीकाविषका दूरिहोवाको लेपलिष्यते केंसरि तगर सूंठि यांनें जलसूंवांटि लेप करैतौ माषीको विषजाय २२ अथ भौरामाषिका विसका दूरिहोवाको लेपलि० सूंठि कबूतरकी वीठ विजोराकोरस हरताल सींधोलूण यांनै मिहीवांटि ऊठे लेपकरैतौ भौरामाषीको विषजाय २३ अथ ऊनराका विषका दूरिहोवाको जतनलि० धूमसो मजीठ हलद सींधोलूण यांनैंवांटि पाणीसूं लेपकरैतौ उनराकाविषजाय २४ अथ मींडकाको विषदूरिहो

---

* हिडक्योकुत्तो तथा स्यालस्वान जंबुदिवाना होयजायछै. जीनैं हिडक्यो कहैछै. यांका जहरसूं मनुष्य मरिजायछै. पण वेतरैसूं मरैछै. जींकोमृत्यु विगडिजायछै. यह लोकप्रसिद्धछै. परंतु हिंदुधर्ममैं घणामूर्षलोक इसा जहरीजीवनैं मारणैको पापगिणैछै. जहरीजीवसूं मनुष्य शरीरसिरीसो अमोल देवलपडिजाय. जीमैं आयुष परालबद कर्म मानैंछै इस्याविनापूंछका विनासिंगका मनुष्य थोडाहोसीनहीं.

वाको जतनलि० शिरसका बीजांनें थोहरीका दूधमेंवांटि लेपकरै तौ मींडकाको विषजाय २५ अथ कनसलाका विषदूरि होवाको लेपलि० दीपगका तेलको लेप करैतौ कनसलाको विषजाय २६ अथ सर्पका विषका दूरि होवाको अंजनलि० जमालगोटा कीमींगीकै नींबूका रसकी पुट ७ दे तावडै सुकावै पाछैं ईसीही तरै लाषका रसकी पुट १ दे पाछै ईंको अंजन करैतौ सांपको काट्यौ आछ्यौहोय २७ अथ हिडक्यो कुत्तौ श्यालउगैरै काठै तींको जतन लि० योजिनावर जठैकाठै तीजागांको लोही कढाय नाषिजे अथवा ऊठे लोहकी सलाका सूडाहदीजेतौ कुत्ता स्याल उगैरैको विष दूरि होय २८ अथवा धतूराको रसटका १ आकको दूधटका १ घृत टका १ यांनै मिहीवांटि यांको लेपकरैतौ हिडक्या गंडकको विषजाय २९ अथवा धतूराका फलनै बीजांसमेतले पाछै चौलाईकी जडकारससूं वांटै अथवा गोभीसहतसूंवाटै पाछै लेपकरैतौ हिडक्या कुत्ताकोविषजाय ३० अथवा माषन आककोदूध तेल गुड यां चाऱ्यांनै बराबरिले पाछै टंक १ रोजीनादिन ७ षायतौ ईंको विषजाय ३१ अथवा ईंमंत्रसूं १०८ एकसौं आठआहुतीदे जीनै हिडक्यो काट्यौहोय तीनैं चोहटे अथवा नदीकीतीर चौकोदिवायवेनें स्नान कराय आपपवित्रहोय ऊठे ईंमंत्रसूं होम करै एकसौं आठ आहुतीदे पाछै डाभसूं ईंकै झाडोदेतौ ईंकोविषउतरै अथमंत्रलि० अलर्काधिपतेयक्ष सारमेयगणाधिप ॥ अलर्क जुष्टमेतंमेनिर्विषंकुरुमाचिरात् स्वाहा ॥ इतिमंत्रः अथवा गुड तेल आककोदूध यांको लेपकरैतौ स्वानका काट्याकोविषदूरिहोय ३२ अथवा कूकडाकीवीठको लेपकरै अथवा कुवारका पाठाकीगिरि सींधोल्हण ये

न. टी. स्वानका विषऊपर औषधघणीछै. अरु लेपादिकभीछै. परंतु जुलाबदेणो. उलटी कराणी. अर ऊठाको रक्तकाढणो. अर डंखऊपर तुरत तपाया लोहासूं तथा अग्निसूं जलायदेवैतौ गुणकरै.

बराबरिदिन ५ बांधैतौ स्वानको विषजाय ३३ अथवा चौलाईकी जड तुलसीकीजड वच यांनैं चावलांका पाणीमैं वांटिदिन ७ पीवै तौ स्वानकोविषजाय ३४ अथवा चौलाईकी जडकोरस अर घृत चोषयेमिलाय दिन ७ षायतौ स्वानको विषजाय ३५ अथवा कडवीतुंबीकीजड टंक ४ सूंठि टंक ४ मिरचि टंक ४ नींबकी नींबोली टंक ४ जमालगोटा सोध्या टंक ९ निसोत टंक ७ यांनै मिहीवांटि गुडमैं गोलीबांधि टंक २ भरकीगोली १ करैं गरम पाणीसूंदिन ७ तथा १४ लेतौ हिडक्यास्वानको विषजाय ३६ अथवा कडवी तुंबीकीजड हिंगलू सोध्याजमालगोटा मिरचि फूलायो सुहागो येबराबरिले यांकीरती २ भरकीगोली चौलाईकारसमैं बांधैगोली १ ताजापाणीसूं दिनसात लेतौ स्वानकाविषजाय अर जठैकाट्यौ होय तठै ईंगोलीनैं मूतसूं घसिलगावैतौ मूतहोय लट गिरिपडै. ३७ इति स्वानकाविषका जतनसंपूर्णम् इति स्थावरजंगमविषमात्रकीउत्पत्तिलक्षण जतनसंपूर्णम् इति श्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्र श्रीसवाई प्रतापसिंहजी विरचिते अमृतसागरनामग्रंथे स्थावरजंगमविषमात्रको भेदसंयुक्तउत्पत्तिलक्षण जतननिरूपणंनाम एकोनविंशतिमस्तरंगःसंपूर्णम् १९

२० अथ स्त्रियांका प्रदरनैं आदिलेर सर्व रोगांकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिख्यते अथ प्रदररोगकी उत्पत्ति लिष्यते विरुद्ध भोजनसूं घणां मद्यकापीवासूं भोजन ऊपरि भोजन कर्‌यांसूं अजीर्णसूं गर्भका पडिवासूं अतिमैथुनसूं असवारीका चढवासूं मार्गका चालिवासूं सोचसूं अतितीक्ष्णपणासूं भारका वहवासूं चोटका लागिवासूं दिनका सोवासूं स्त्रियांके वायपित्तकफ सन्निपात ये कोपकूं प्राप्ति

न. टी. स्त्रियांकारोग कोईकोई विशेषछै. ज्यांरोगांनै ग्रंथकर्ता स्पष्टलिष्याछै. अर ज्यांकानिदान सर्वलिष्याछै. परंतु विशेषता लिषूंछूं. जोकारण गर्भकोछै सो मनुष्य स्त्रीपुरुषका रजवीर्यकोछै जींकीशुद्धताचाहिजै.

होय प्रदरकारोगनैं ये पैदाकरैछै. सोप्रदरकोरोग स्त्रियांकै चारि प्रकारकोछै. वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ अथ प्रदरको सामान्य लक्षणलिष्यते स्त्रीकी जोनिमांहिसूं नानाप्रकार को लोही विनाही ऋतुनीसरै अर रुधिरनीसरता हाडफूटणी होय सर्वशरीरमैं अर पीडचालै तीनैं प्रदरकोरोग कहिजै. १ अथ वा यका पैरको लक्षणलिष्यते वैंकी जोनिको लोही लूषो होय अर झागनै लीयांहोय अर थोडो थोडोजाय अर पीडनै लीयांहोय अर मांसका पाणीसिरीसोजाय १ अथ पित्तका पैरको लक्षणलिष्यते वैंकीजोनीको लोही पीलोजाय नीलो सुपेदाईनें लीयां लाल अर ऊन्हू घणोजाय अर सरीरमैं दाहहोय येपित्तका लक्षणछै. २ अथ कफका पैरको लक्षण लिष्यते जींकै रुधिर गूंद सिरीसो चीकणो अर काचो अरपीलो अरगुलाबकाजल सरीसो जाय तीनैं कफको कहिजै ३ अथ सन्निपातका पैरको लक्षण लिष्यते सहत सिरीसो अथवा घृतसिरीसो माथाकी भेजी सिरीसो मुर्दाकै दुरगंधनैलीयां जींको लोही जायसो त्रिदोषका जाणिजै ४ अथ रुधिरका घणां जावाको उपद्रव लिष्यते रुधिर घणांजाय तदि स्त्रीदुर्बल होयजाय श्रमहोय मूर्छाहोय मदहोय तिस घणीलागै दाहहोय प्रलापहोय शरीरपीलो होय तंद्राहोय अर वायका औरभीरोग होय ५ अथ प्रदरका असाध्य लक्षण लिष्यते जोनिमांहिसूं निरंतर रुधिर चालवोहीकरै रैहैनही अर तिसहोय दाह होय अर शरीरमैं. जुरहोय शरीर दुवलो होय वेनें असाध्य जाणिजै. ६ अथ शुद्ध आर्तव नाम स्त्रीधर्मको लक्षण लिष्यते जीस्त्रीकी जोनिको रुधिर महिनाकी महिनैं सुसाका रुधिर सिरीसो नीसरै जींरुधिरमैं दाहनहीं

न. टी. रजकोटांकडो मांस १ कोछै सूंबरोबररीतसौं दिनोदिनआवै अरु शुद्ध रक्तवर्णको आवै जींमै वेरंगमिल्योनहीं आवै सुषसौं आवैदिन ४ तथा पांच पाछै शरीर हलको होयजाय इसीस्त्रीनैं आरोग्य जाणिजै.

अर रुधिर नीसरतां पीडनहीं अरपांच ५ रात्रितांई नीसरै अर घ णोनीसरै नहीं थोडोभीनीसरैनहीं तीनै शुद्धस्त्रीधर्म पणो जाणिजे ७ अथ स्त्रीधर्मपणो १६ दिनतांई रहैछे. अथ प्रदररोगको जतन लिष्यते संचरलूण जीरो महलौठी कमलगट्टा यांको काढो सहतना षि लेतो. वायका पैरको रोगदूरिहोय १ अथवा महलौठी टंक २ मिश्री टंक २ यांने मिहीवांटि चावलां कापाणीसूं लेतो पित्तका पै रको रोगजाय. २ अथवा रसोत टंक २ चौलाईकी जडकोरस टंक २ तीमैं सहतमिलाय दिन सात पीवैतो सर्व प्रकारका पैरका रो गजाय ३ अथवा आसा पालाकी वकलको काढोकरि तीमैं दूध नाषि पीवैतो घणोभी पैरको रोगजाय ४ अथवा डाभकी जडनैं चावलांकापाणीसूं वांटि वेनैदिन ३ पीवैतो पैरको रोगजाय ५ अ थवा कटूंबरकी वकलको रसतीमैं सहतनाषि अथवा मिश्रीनाषे तीमैं चावलांको पाणीनाषिपीवैतो पैरकोरोगजाय ६ अथवा दारु हलद रसोत चिरायतो अरडूसो नागरमोथो रक्तचंदन आककाफू ल यांको काढोकरै तीमैं सहत नाषि पीवैतो लाल अर सुपेद अर पीला सर्व प्रकारका स्त्रीका पैरका रोगजाय ६ इति दार्व्यादिक्काथः अथवा गूलरिका फलांनें सुकाय करि पाछे वेनें मिहीवांटि वामैं मिश्री सहत मिलाय वांकीगोलीबांधै टका १ भरकी पाछे ईंगोली दिन ७ सात षायतो पैर*कोरोगजाय ७

अथ स्त्रियांके पैरको भेद सोमरोग होयछे तींको लक्षण लिष्य ते स्त्रियांका घणां प्रसंग करिकै सोचतै षेदका करिवा करिकै जहर कासंजोगतैं अतिसारकीसी नांई स्त्रियांकै अथवा पुरुषांकै भीसो मरोग होयछे वारंवारमूत घणोऊतरै ईंकोनाम सोमरोगकहिजे ८

---

* पैरकारोगको नाम प्रदररोगछै. प्रदररोग साधारणतो सहजहीमैं जायछै. परंतु असा ध्यरोग कठिणहोयछै. वास्तैवैद्य देशकाल अवस्थादेषकर औषधीकरणी हरएक पुरुषको वताई करणीनहीं. कारणगर्भको स्थानछै. सो मर्मस्थानछै.

अथ सोमरोगको सामान्य लक्षण लिष्यते सुंदरहै स्वरूप ज्याको इसी जो स्त्रियां त्यांकै योनिमार्गमें होय मूतवारंवार बहोत चालै वेस्त्रीदूबली होय वाकै सुषघडी येककोभी होयनहीं. घणामूतकै आगै वांस्त्रियांको सिरसिथिल होजाय मूंढो अरतालवो वाको सूकिवोकरै अर वांकै मूर्छाहोय जंभाई घणी आवै अर वांकै प्रलाप होय वांकी त्वचाल्हषी पडिजाय अर भोजनादिकांमै वे त्रिप्तिहोय नहीं ये लक्षण जीमै होय तीनें सोमरोग कहिजे १ अथ सोमरोग को जतन लिष्यते. पक्काकेलाकै मिश्रीलगाय षायतौ सोम रोग जाय १ अथवा आंवलाकारसमैं सहत नाषि षायतौ सोमरोगजाय २ अथवा उडदांको चून महलौठी अथवा विदारीकंदयांनै मिहीवांटि तीमैं बराबरकी मिश्री मिलाय टका १ भर दूधसूं रोजीना दिन १० लेतौ सोमरोगजाय ३ अथ सुपेद पैरजावाको जतनलिष्यते आंवलाकाबीज टंक ५ त्यांनैं जलमै भेयवांटि तीमैं सहत मिश्री नांषि रोजीना दिन १५ पीवैतौ सुपेद पैरकोरोगजाय ५ अथ मूत्रातिसारको लक्षणलिष्यते. सोमरोगघणादिनरहै तदि मूत्रअतिसारहोय ईमूत्रअतिसारमैंबलजातोरहै अर मूतघणोऊतरै ६ अथ मूत्रातिसारको जतनलि० ताडवृक्षकीजड छवारा महलौठी विदारीकंदयांनैं मिहीवांटि ईमैसहत मिश्रीमिलाय टका १ भर रोजीना षायतौ मूत्रातिसारजाय ७ अथवा पवाडकीजडनैं चावलांकापाणीसूं पीवैतौ मूत्रातिसारजाय ८ अथवासुपेदमुसली तालवृक्षकीजड छवारा पक्काकेलायांनैं दूधसूं पीवैतौ मूत्रातिसारजाय ९ अथ प्रदरकाओरजतन लि० उंदराको मींगणी टंक २ ईमैं बराबरिकीमिश्री मिलाय दूधसूं दिन ३ पीवैतौ स्त्रीकालाल सुपेद सारी

न. टी. वीसप्रकारका योनिरोगछै. जीमैं कोईकोईका दोयदोय नामछै जैसै लोहितक्षराने प्रसंसिनी कहैछै. वंध्यानैं शुष्काकहैछै अंडिनीनैं अंतर्मुषी कहैछै. संवृतानैं सूचीमुषी कहैछै निवृत्तानैं महायोनि कहैछै.

तरैका पैर आछ्याहोय १० अथवा धावड्याकाफूल बीजाबोल मू
सांकी मींगणी ये बराबरिले यांनैं मिहीवांटि ईमैं मिश्रीमिलाय टंक
२ जलसूं लेतौ प्रदरको रोगजाय ११ इतिप्रदररोगकी उत्पति
लक्षण जतन संपूर्णम् अथ स्त्रियांकीयोनिरोगकी उत्पतिलक्षण
जतनसंष्यालि० स्त्रियांकै मिथ्याअहार मिथ्याविहार करिकै वाय
पित्तकफहैसो दुष्ट हुवाथकास्त्रियांकी योनिकै विषैरोगनैकरैछै. सो
स्त्रियांकै योनिकैविषै २ प्रकारकारोगछै. यांकानामलि० उदावर्ता
१ वंध्या २ विप्लुता ३ परिप्लुता ४ वातला ५ लोहितक्षरा ६ दुः
प्रजाविनी ७ वामिनि ८ पुत्रघ्नि ९ पित्तला १० अत्यानंदा ११
कर्णिनी १२ कर्णिका १३ अतिचरणा १४ अनाचर्णा १५ अ
स्तनी १६ षंडी १७ अंडनी १८ विवृता १९ सूचिवक्रा २० अथ
स्त्रियांकीजोनिकालक्षण लि० जोस्त्री स्त्रीधर्महोतां रुधिरवडा कष्टसूं
छोडै झागनैलीयां तीनैं उदावर्ताजोनी कहिजे १ अर जोस्त्री स्त्री
धर्म होयनही तीनै वंध्यायोनि कहिजे २ अर जींकीयोनिमैं नित्य
ही पीडारहै तीनै विप्लुताजोनि कहिजे ३ अर जींस्त्रीकै स्त्रीधर्महो
तां घणीपीडहोय तीनैं परिप्लुता जोनि कहिजे ४ अर जींकी जो
निकठोरहोय अर जोनिमैं सूलचालै जीनैं बातलाजोनि कहिजे
५ अर जींकी जोनिमैं दाहरहै अर लोहीनीसरवोकरै तीनै लोहित
क्षराजोनि कहिजे. ६ अर जींकीजोनि श्रववोकरै अर कुपितरहैं
तीनैं दुःप्रजाविनी जोनिकहिजे दुःप्रजाविनीनाम वेजोनिमैं सं
तान दोहरी कहिजे ७ अरजी स्त्रीकी योनिमैं पवनसंयुक्त वीर्य
नीसरै रुधिरनैलीयां तीनैं वामिनी जोनिकहिजे ८ अर जींस्त्रीकै
गर्भरही रहिजाय अर पाछै जातो रहै तीनै पुत्रघ्नी जोनि कहिजे ९

न. टी. जोग्रंथांतरमैं त्रिदोषणीनाम सन्निपातकी जीमैं तीनही दोषका लक्षणमिलै शूल दाह. भ्रम. इत्यादिकहोय अर षंडा अंडिनी. विवृत्ता. शूचिवक्रा. त्रिदोषणी येपांच योनी रोग असाध्यछै. आछ्यौहोयनहीं.

९ अर जींकी जोनिमैं दाहघणोरहै अर पकिजाय सरीरमैं जुररहै तीनै पित्तलायोनि कहिजै १० अरजींकीजो योनि मैथुन मै संतोषकूं नहीं प्राप्तहोय तीनैं अत्यानंदाजोनि कहिजै ११ अर जींकीजोनि कर्णफूलकै आकार होय अर वेमैं कफलोहीनी सरवोकरै तीनैं कर्णिनीजोनि कहिजै १२ जींकी जोनिमैं कफरक्त करिकै कमलकर्णिका जीसीमांसग्रंथि होय तो तीनैं कर्णिकाक० १३ कफका योगसूं जोयोनिकंडूसौंघणो मैथुनचावै जींमैं गर्भ धारणहोयनहीं. जीनैं अतिचरणा कहिजै १४ अर जीजोनिमैं वीर्यरहै नही तीनै अनाचरणाजोनि क० १५ अर जींस्त्रीकानिपट छोटा स्तनहोय तीनैं अस्तनीयोनिक० १६ अर जींकीयोनि षंडीतहोय अर मैथुनकरतां क्यूंनीचै लटकि आवै तीनै षंडीजोनिक. १७ अर जींकीजोनिको छिद्र सूक्ष्महोय तीनै अंडनीजोनिक १८ अर जींकोमूढोवडोहोय तीनेमहाजोनिविवृत्ता कहि० १९ अर जींको मूंढासुईसिरीसो होय तीनैं सूचीवक्राजोनिक० २० अथ जोनिकंद रोगकी उत्पत्तिलि० दिनका सोवासूं अतिक्रोधका करिवासूं षेदसूं अतिमैथुनसूं जोनिऊपरि कहींतरैकी चोटलागिवासूं अथवा जोनिकै नषदांतका लागिवासूं येकुपित हुवो जो वाय पित्त कफ सो जोनिकैविषै जोनिकंदनाम येकरोगछै तीनैं उपजावैछै १ अथ जोनिकंदरोगको स्वरूपलि० जोनिकैमांहियेक गांठि राधि लोहीनैं लीयां गुड हलकाफल सिरीसी उपजैछै कारण कह्या त्यांसूंवेनै वैद्यकहैछै अर जोनिकंदनाम रोगभी कहैछै. १ औजोनिकंदनामरोग च्यारिप्रकारकोछै. वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ अथ वायका जोनिकंदको लक्षणलि० वाजोनिमाहिली

न. टी. जीयोनिरोगमैयोनिस्थान भ्रष्टहोयछै. जीनैं स्याणी. सुजाणी. नामचतुर्दाईवैयो नीनैंठिकाणैवैठायदेवै. अरकमलका मुषऊपरमांसवृद्धिहोयतथामस्साहोय जैठैऔषधीसूंतथा मल्हमसूं लेपसूं आछीकरैछै.

गांठि ल्हपीहोय वेंकोबर्ण आछ्योनही होय अर जोनिकावर्णसि रोसोवे गांठिको मूंढो फाट्योहोय वेनें वायको योनिकंद कहिजे १ अथ पित्तका जोनिकंदको लक्षणलि० वाजोनिमांहिलीगांठि दाहनें लीयांहोय अर लालहोय अर वेसेंती ज्वरहोय आवे ईनें पित्तको जोनिकंद कहिजे २ अर जीस्त्रीके योनिकंदरोग होयछे वास्त्री वांझ होयछे ३ वास्त्रीके स्त्रीधर्म होयनहीं ४ अथ वंध्यास्त्रीका जतनलिष्यते जोस्त्री स्त्रीधर्म होयनहीं वास्त्री नित्यमाछलाका मांसनें षाय तो स्त्रीधर्म होय १ अथवा कांजी नित्यषाय अथवा तिल नित्यषाय अथवा उडद नित्यषाय अथवा दही नित्यषायतो वास्त्री स्त्रीधर्म होय तदिवेंको वंध्यापणाको दोष दूरिहोय २ अथवा साठाकाबीज कडवी तुंबी दांत्युणी पीपलि गुड मेंढल दारुकोजावो जवषार थोहरको दूध यांसारांनें येकठा मिहीवांटि जोनिमें ईकीवातीदेतो वास्त्री स्त्रीधर्म तत्काल होय अर वेंको वंध्यापणाको दोष तत्काल दूरिहोय ३ अथवा मालकांगणी राई विजयसार वच यांने मिही वांटि सीतल जलसूंदिन ५ पीवेतो वास्त्री स्त्रीधर्म होय अर वेंको वंध्यापणो जाय ४ अथ वांझस्त्रीके पुत्रहोवाको जतनलि० परेंटी गंगेरणीकी छालि महुवो वडको अंकूर नागकेसरि येबराबरिले त्यांने मिहीवांटि गऊका दूधमें सहतनाषि टंक ५ ईचूर्णनें रोजिनादिन १५ पीवेतो वंध्यास्त्रीके निश्चेपुत्रहोय ५ अथ स्त्रीस्त्रीधर्म नहीहोय तींकोजतनलि० कालातिल सूंठि मिरचि पीपलि भाडंगी गुड यांसारांनें टंक १ भर औटाय ईको काढोकरिदिन १५ पीवेतो वास्त्री स्त्रीधर्म निश्चेहोय अर वेंका रुधिरको गुल्मदूरिहोय. अर वेंके पुत्रहोय ६ अथवा आसगंधका काढामें गऊको दूध अर

---

१. एकआसगंधनामऔषधीछे. जीनैंअश्वगंधाकहैछे. नागोरीआसगंधभीकहैछे. आसगंधभीकहैछे.

गऊको घृत मिलाय रितुकै समैस्त्रीपरभात दिन ५ पीवैतो स्त्रीगर्भ नैधारै ७ अथवा सुपेद कव्यालीकीजड पुष्यनक्षत्रकैदिन उपाडी होय तीनैं टंक २ मिहीवांटि दूधकैसाथि रितुकै समैदिन ३ स्त्रीपी वैतो निश्चैगर्भनैधारै ८ अथवा कटसेलाकीजड धावड्याकाफूल वडका अंकूर कमलगट्टा यांनैं मिहीवांटि टंक २॥ रितुकै समैस्त्रीपी वैतो निश्चैस्त्रीगर्भनैं धारै ९ अथवा पार्श्व पीपलकीजड अथवा ईं कावीज अर सुपेदजीरो अर सरपंषो येवरावरिले यांनैं मिहीवांटि टंक २ रितुकै समैस्त्री दूधकैसाथि लेतो वेस्त्रीकै गर्भ निश्चैरहै अर वेकै पुत्रहोय १० अथवा जोस्त्री गर्भवतीहोय वास्त्री छीलांका ये कयेक पानांनैं १ गऊका दूधकीसाथि पीवैतो निश्चैही वैको परा क्रमी पुत्र होय ११ अथवा वाराहीकंद अरकावीठ अर शिवालिंगी यांनै मिहीवांटि रितुकैसमैं टंक २ दूधकैसाथि जोस्त्रीलेतो वेंकै नि श्चैही पुत्रहोय १२ येसर्वजतन भावप्रकाशमैंछै. अथवा विजोरां का बीजांनैं गऊका दूधमैं सिजावैं पाछै वामैगऊको घृत मिलाय अरवेंबरावरि नागकेसरी मिलाय रितुकैसमैं टंक ५ मिश्रीकैसाथि दिन ७ स्त्रीषायतो स्त्रीगर्भनैधारै १३ अथवा एरंडकी एरंडोली अर विजोराकाबीज यांदोन्यांनै घृतसूं पीसि दूधकैसाथि रितुकै समै स्त्रीदिन ३ पीवैतो स्त्रीगर्भनैधारै १४ अथवा पीपलि सूंठि मि रचि नागकेसरि यांनै मिहीवांटि रितुकै समैस्त्री घृतकैसाथिदिन ३ पीवैतो स्त्रीगर्भनैधारै १५ ये सर्वसंग्रहमै लिष्याछै अथ गर्भनही रहवाकी औषदिलि० पीपलि वायविडंग सुहागो येबरावरिले यां

---

१. सुपेदकव्यालीछै. जीनैं लक्ष्मणा कहैछै. भूरिरिंगणीभी कहैछै. २. कठसेलोप्र सिद्धछै धोकाफूलवीप्रसिद्धछै. वडकीजटाकाअंकुरवीप्रसिद्धछै. ३ पार्श्वपीपलतथापारसपीप लतथाबिलायती भींडीकहैछै ४ सरपंषानामधोलो धमासो लोकप्रसिद्धछै. ५ छीलाकापान कहैछै सोपलासकापानषांषरकापानछै. ६ वाराहीकंदनै शूकरकंदनथाङ्करकंदकहैछै. ७ वि जोराकाबीजांनैंमातुलिंगकाबीजतथातुरंजकाबीजकहैछै. मोटानींबूकीजातमैछै.

नेंमिहीवांटि रितुकेंसमें स्त्रीदिन ५ जलसूं लेतो स्त्रीगर्भनें केदभी धारैनहीं. १६ अथवा पुराणो गुड टका १ भर तीनें औटाय रितुकेंसमें स्त्रीरोजीनादिन १७ पीवैतो स्त्रीकदेंभी गर्भनेंधारैनही १८ अथवा नींबोलीका तेलका फोहानें स्त्रीरितुकेंसमें योनिमांहि धरणैदिन ५ देतो स्त्रीगर्भभी कदेंधारैनहीं १९ ये भावप्रकासमैंलिष्या छे. अर स्त्रीकीजोनिकारोगांका जतन क्रमसूंलिष्यते तगर कट्याली कूठ सींधोलूण देवदारु यांको काढोकरि ईकाढामें तेल पकावे पाछे ईतेलनें स्त्रीजोनिमें फोहासू राषैतो स्त्रीकी विप्लुताजो निकोरोग जाय २० अर वायका जोनिकारोगांका दूरिकरिवाकेवास्ते घाडलका पानांनें अथवा वेंकीवकलनें सिजाय वेंकी जोनिमें पसेव जुक्तकरै अर धोवैकरैतो वायका जोनिकारोगजाय २१

अथ पित्तका जोनिका रोगांकादूरि करिवाके वास्ते तिलांका तेलमें निबोल्यांने पकाय ईतेलसूं योनिमे सेकैतो पित्तका जोनिका रोगजाय २२ अथवा पित्तनें हरवावाली औषदिकोघृत त्यांसूयोनिनें सेकैतो पित्तकायोनिका रोगजाय. २३ अथवा आंवलाकारसमें मिश्रीनाषिस्त्रीदिन १० पीवैतो स्त्रीकी योनिदाहजाय २४ कूकर भांगरांकीजडकारसनें चांवलांका पाणीके साथि स्त्री पीवैतो स्त्रीकी जोनिमें राधिपडतीहोय सोदूरिहोय २५ अथवा नींबकापान किरमालाकापान वच अरडूसाकापान पटोलकापान यांने औटाय ईसेती जोनिने धोवैतो जोनिकी दुर्गंधि जाय २६ अथवा पीपलि

न. टी. योनीका रोगसौं स्त्रीकीजातबहोतदुषपावै. अर गर्भधारणहोयनहीं. रोगका कारणासूं कदाचित् गर्भ धारणहोयतौ वास्त्रिदुषपावै अरपूरोजणैवीनहीं. कदाचितजणैतो विकृतीरूपीजणै. षोडोपांगेलो.

न. टी. रोगिष्टस्त्रीके प्रसूतजीवैनहीं. कदाचितजीवैतो विकृतीनामअंगभंग हुवो थको अल्पायूजीवै. जीमें स्त्रीकोमरणांत कष्टहोयछै. कोईकोईमरबीजायछै. ईवास्तैगर्भनहींरहणै.*की औषधीकीकल्पनाकरैछै.

मिरचि उडद सौंफ कूठ सींधोलूण यांनें औटाय ईसूं जोनिनें धोवै तौ जोनिका कफकारोग साराजाय २७ अथ जोनिसंकोचनकी औषदि लिष्यते मूंगकाफूल षैरसार हरडै जायफल माजुफल सुपारी यांनें मिहीवांटि मिही वस्त्रसूं छाणि स्त्री जोनिमै राषैतौ स्त्रीकी जोनि संकीर्ण होय २८ अथवा कौंछिकी जडका काढासूं जोनिनें धोवैतौ स्त्रीकी जोनि गाढीहोय २९ अथवा भांगिनें मिहीवांटि ईकीपोटलीकरि स्त्रीजोनिमें राषैतौ स्त्रीको भगमहा संकोच न होय ३० अथवा मोचरसनें मिहीवांटि ईकी पोटलीकरि स्त्रीजोनिमें राषैतौ स्त्रीकी जोनि संकोचकूं प्राप्तिहोय ३१ अथवा आंवलांकीजड कसेलो वौंलकीजड अर बोरकीजड अरडूसाकीजड माजुफल या सारांनें औटाय पाणीसूं जोनिनें धोवैतौ जोनि संकोचनहोय ३२ अथवा दहींसूं जोनिनें धोवैतौ जोनि संकोच होय ३३ अथवा सुपेद फिटकडीनें फुलाय धावड्याकाफूल माजुफल यांनें मिहीवांटि पौटलीकरिभगमें मेलैतौ स्त्रीको भगसंकोचहोय ३४ इतिभग संकोचनस० अथ जोनिका सर्व रोगांका दूरिकरिवाकोफलघृतलि० मजीठ महलौठी कूठ त्रिफला मिश्री षरैटी मेद असगंध अजमोद दोन्यू हलद फूल प्रियंगु कुटकी कमलकीजड दाष रक्तचंदन चंदन येसारा अधेलाअधेला भरिले अर गऊकोघृत सेर १ लेसतावरीकोरससेर ४ ले पाछे ईनें मधुरी आंचसूं पकावैतौ येसर्व बलिजाय घृतमात्र आयरहै तदि ईघृतनें मनुष्य अथवा स्त्री रोजीना टका.१ भर पीवैतौ औपुरुषनपुंसकभी होयतौ महाकामीवडो पराक्रमी पुत्रांनें उपजावावालो ईफलघृतका प्रभावसूं होय अर स्त्री ईघृतनें षायतौ स्त्रीका जोनिका सर्व रोगजाय अरवैंके ईघृतकाप्र

न. टी. योनिरोगमैंआहारव्यवहारपथ्यापथ्यलिषूंछूं. रेच. वमन. लंघन. लालचावल. सामक. मूंग. मसूर. तूर. चीणा. गायकोतथाछालिकोघृत. केला. तुराई. इ० अपथ्यलि० महनत. गरमी. मल. मूत्ररोधनइत्यादि.

भावसूं पुत्र होय दीर्घायुर्बलवालो बुद्धिवान ३५ अथ जोनिकंदरो गको जतन लि० गेरू वायविडंग हलद कायफल यांनैं मिहीवांटि त्रिफलाकाकाढासूं तीमैं सहत मिलाय ईंचूर्णनैं स्त्रीयोनिमैं राषैतौ स्त्रीको जोनिकंद जाय ३६ अथ गर्भिणीस्त्रीकारोगांका जतनलि० जीस्त्रीको गर्भनीसरतो होय तीस्त्रीनैं झाउरूषकीजड अतीस नाग रमोथो मोचरस इंद्रजव यांको काढोकरि देतौ वेस्त्रीको गर्भ पडतो रहै. ३७ अथ गर्भिणीस्त्रीकी जुरको जतनलि० महलौठी रक्तचंदन षस गौरीसर कमलकीजड यांको काढो मिश्री सहतनाषि पीवैतौ गर्भिणीस्त्रीकीजुरजाय ३८ अथ गर्भिणीस्त्रीकी संग्रहणीको जतन लिष्यते चावलांका सातूनैं आमकी अर जामुणकी वकलका का ढासूं लेतौ गर्भिणीस्त्रीकी संग्रहणीजाय ३९ अथवा झाउरूषकी वकल अरलूकीवकल रक्तचंदन षरैंटी धणौं कुडाकीछालि नागर मोथो जवासो पित्तपापडो अतीस यांको काढो गर्भिणीस्त्रीलेतौ वें का अतिसारनैं संग्रहणीनैं जुरनैं दूरिकरै ४० अथ स्त्रीका गर्भका पडवाको अर गर्भकाश्रावकी उत्पत्ति लक्षण लि० घणामैथुनका करिवासूं. मार्गकाचालिवासूं असवारीकाचढवासूं पेटकी पीडका चालवासूं जुरका आवासूं उपवासका करिवासूं चोटलागिवासूं अ जीर्णमै भोजनकरिवासूं दौडिवासूं वमनकाकरिवासूं जुलाबकालेवा सूं तीषी कडवी. गरम लूषी वस्तका षावासूं विषम आसनका वै ठिवासूं भयका आवासूं इतनी वस्तांसूं स्त्रीकै गर्भको पडवो अर ग र्भको श्रावहोयछै पेटमैसूल चालिकै ४१ अथ गर्भका पडवाको अर गर्भका श्रावको पूर्वरूपलि० स्त्रीकै गर्भरह्यां पाछै चारि महि ना मांहि गर्भपडै तीनैं गर्भपात कहिजै. अथै दृष्टांत दीजैछै वृक्षके

---

* रास्नानामऔषधीछै. सोगर्भनैपुष्टकारकछै. जीनैलौकीकमैं रायसेणकहैछै. मिश्रीकैसाथि रास्नानैं उकालकरपीवैतौ गर्भनैपोषणकरैछै औरवधारो तथा वधायरो. वृद्धदारू तीनूनाम की औषधी एकहीछै. औमिश्रीकैसाथिसेवैतौ गर्भनैंपुष्टकरैछै.

लग्यो फल कहीकी चोटलाग्यांगिरि पडे तैसें कच्चोही गर्भकहीं त रैकी चोटलाग्यां गिरपडे ४२ अथगर्भ स्त्रवतो होयतींका थंबिवा को जतनलि० कमलकी जड कमलकी नाल कमलका फूल महलौठी यांनें दूधकी साथि औटाय पीवैतो गर्भकोस्त्राव पडतोथंबे अर योही गार्भिणी स्त्रीका दाहनैं तिसनैं मूर्छानैं छर्दिनैं अरुचिनैं दूरि करे. ४३ अथगर्भ पातका उपद्रव लिष्यते. स्त्रीकै गर्भपडे तदि दाहहोय सूल चालै पसवाडामैं अर पीठिमैं पीडहोय अरपैर छूटिजाय अरमूत्र ऊतरैनहीं अरगर्भ औरस्थानमैं जाय तींकै भीयेउपद्रव होय ४४

अथ गर्भ पडतौ होय तींका थांबवाका जतन लिष्यते. डाभकी जड कांसकी जड. अरंडकीजड गोषरूकीजड यांमैं गऊको दूध औटाय गर्भिणी पीवैतो वेकोहिया उगरैकी सूलजाय ४६ अथवा गोषरू महलौठी कट्याली मदनबाणका फूल यांनै गऊका दूधमैं औटाय ईंदूधनैं स्त्रीपीवैतौ गर्भपडतौ रहै अर स्त्रीका शरीरकी सर्व प्रकारकी वेदना जाय ४७ अथवा कुंभारका चाककी माटीगेरू चमेली मजीठ धावड्याका फूल रसोत राल यांको चूर्णकरि टंक ५ स्त्रीसहतसूलेतौ स्त्रीका पेरउगेरे सर्व रोगजाय ४८ अथवा भृंगजीनावरकाघरकी माटी मजीठ लजालु किसोल्या. कमलकीजड यांनैं गउकादूधमै औटाय ईंदूधनैं स्त्रीपीवैतौ स्त्रीकोगर्भ पडतो रहै ४९ अथगर्भिणी स्त्रीकै आफरो होय तींको जतनलि० डाभकी जड दोबकी जड वच रसोत हींग संचरलूण यांमैं दूध औटाय पाछे ईनै पीवैतौ स्त्रीको आफरो जाय ५० अथ गर्भिणी स्त्रीकै मूत्रऊतरै नहीं तींको जतनलि० डाभकी जड दोबकी जड कांसकी

न. टी. जास्त्रियांका आरोग्यंशरीरछै. जाकैरजवीर्यका शुद्धतासौंगर्भ धारणहोयछै. सो वैं गर्भसुषदायकअरुतेजस्वी. पराक्रमी. दीर्घायुहोयछै. परंतुअनुक्रमसूं चढतामहिनाकाजतन लिष्याछै. जींमुजबकरणा.

जड यांनैं दूधमें औटाय ईंदूधनै स्त्रीपीवैतौ स्त्रीकै मूत्रऊतरै ५१ अथ महिनाकी महिनैये औषदि देतौ स्त्रीकै गर्भपडैनहींसोलि० महलौठी. सालवृक्षका बीज. षीरकाकोली देवदारु लूणक्यो काला तिल रामपीपलि सतावरी कमलकी जड. जवासो गौरीसर रास्ना दोन्यूंकट्याली सिंघाडा किसोख्या दाष मिश्री यांनैं औटाय पीवैतौ महिनाकी महिनैदिन ७ तौस्त्रीकौ गर्भपडैनहीं. अर और उपद्रव होयनहीं. येसाराजतन ७ महिना तांईकीजे. ५२ अथ आठवा महिनाका जतनलिष्यते कैथकीजड कट्यालीकीजड वीलकीजड पटोलकीजड साठीकीजड यांनैं दूधमें पकाय ईंदूधनैं पीवैतौ गर्भपुष्टरहै ५३ अथ नवमामहिनाको जतनलिष्यते महलौठी जवासो षीरकाकोली गौरीसर यांनैं अधेला अधेलाभरिले पाछै यांनैं दूधमें औटाय दूधनै पीवैतौ गर्भ पुष्टरहै ५४ अथ दशमामहिनाका जतनलिष्यते सूंठि षीरकांकोली यांनै दूधमें औटाय पीवैतौ अथवा सूंठि महलौठी देवदारु षीरकांकोली कमलगट्टा मजीठ यांनैं जलमें औटाय जलनें दूधमें औटाय पाछे योपाणी बलिजाय दूध आयरहै तदि ईंदूधनैं पीवैतौ स्त्रीकगर्भ पुष्टरहै निरोगरहै अर ईं स्त्रीकैकहींतरैकी उपद्रवऊठैनहीं ५६ अथ वायकरिगर्भ सूकिजाय तींकाजतनलि० जींस्त्रीको वायकरि गर्भसूकिजाय तींस्त्रीको उदर परिपूर्ण होयनहीं षालीरहै तदि शाणीस्त्रीछै सोपुष्टाईनै लीयां दूध मांस रस और पुष्ट औषदिषाय अर दूध पीवै तदिवाय दूरिहोय गर्भपरिपूर्णहोय ५६ अथ गर्भका बालकका होवाका महिनालि० स्त्रीहैसो नवमै महिनै अथवा दशवै महिनै संतानने उपजावैछै. अर कोयेक स्त्रीहैसो ग्यारवे अथवा बारावे महिने संताननैं उप

न. टी. जोसुषसूं प्रसवहोयजींवास्तै षान. अहार. पान व्यवहार. प्राचीनरीतसौं स्याणी स्त्रियांकाविचार करिकै कुशलवैद्यकी सहायतासैं उपचार अर जतनकरणा. वायु हारकपदार्थ छै सोगरम उपचार.

जावैछे. अर यामहिनाऊपरांत जोगर्भरहै ओगर्भ विकारको जाणि जै. तदि ईगर्भका उदरका रोगांमे गिणी अर वेंको जतनकीजै ५७ अथ स्त्रीके सुषसूं प्रसव होवाको जतन लि० सापकीकांचली मर वो यांदोन्याकी भगमैं धूणीदेतो स्त्रीसुषसूं संताननै जणै ५८ अथवा कलहारीकीजडनैं स्त्री हाथपगांके बांधैतो स्त्रीकै तत्काल प्रसूति होय ५९ अथवा कूकर भांगराकी जड अर पाटकी जडनैं स्त्री हाथ पगांके बांधैतो स्त्रीकै तत्काल प्रसूति होय ६० अथवा याईकी जडका काढामैं तिलांकोतेल नाषि स्त्रीहैसोगर्भके लेपकरैतो स्त्रीकै सुषसूंतत्कालप्रसव होय ६१ अथवा पीपलि वच यांनैं जलसूं वांटिभगके लेपकरैतो स्त्रीकै सुषसूंतकालप्रसूतिहोय ६२ अथवा अरंडका तेलनैं स्त्रीनाभिकै लेपकरैतो तत्कालप्रसूतिहोय ६३ अथवा विजोराकी जड महुवो यांदोन्यांनैं स्त्रीपीवैतो स्त्रीकै तत्काल प्रसूतिहोय ६४ अथवा साठाकीजडनैं स्त्रीकटिकै बांधैतो स्त्रीकै तत्काल प्रसूतिहोय ६५ येजतन भावप्रकासमैछे. अथवा औंधाहोलीकीजडनैं काकलहरीकीजडनैं कटिकै बांधैतो तत्कालप्रसूतिहोय ६६ योगचिंतामणिमैछे. अथ सुषसूंतत्कालप्रसवकरावाको मंत्रलिष्यते. मुक्तायासाविमुक्ताश्चमुक्तासूर्येणरश्मयः मुक्तः सर्वभयाद्गर्भः देहिमाचिरमाचिरस्वाहाईमंत्रसूं जलनैवार ७ मंत्रैपाछे ईजलनैं स्त्रीपीवैतो स्त्रीकी तत्कालप्रसूतिहोय ६७ अथवा ईजंत्रनैं स्त्रीदेषैतो तत्काल प्रसूतहोय ६८

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

अथ मूढगर्भकी उत्पति लक्षण जतन लिष्यते जीस्त्रीका सरीरमैं वायुकुपितहोय वेस्त्रीकीजोनिमांहि

न. टी. प्रसूतीमैं जोविपरीत कर्म होयछै. सोवडो अनर्थ करैछै. ज्वरलागै. जीनै प्रसूती रोगकहैछै. अर तात्कालवींको जतन होयसोतोवचै जतननही होयतो मरजाय. ओरभी मूढ गर्भादिक अनेक उपद्रवहोय.

अर उदरकूषिमांहि सूलनैं अर मूतऊतरवादेनहीं अर औ दुष्टप
वन गर्भनैं वांको करिदे जोनिमैं चारि ४ प्रकारकरिकै सोप्रकार
लिषूंछूं अथ गर्भमैं बालकदुष्टपवनचारी प्रकारकी अथवा आठप्र
कार करिरहैछे सो प्रकार लिष्यते कीलक १ प्रतिपूर २ परिघ
३ बीज ४ ऊर्ध्वबाहु, चरणक, शिर, पसवाडाका भेदकरि आठप्र
कारसूं बालकभगकागर्भमैरहैछे. ८ अथ कीलककोलक्षणलिष्यते
स्त्रीकै जोनिकै मूंढै कीलोसो लागिजाय तीनै कीलक कहिजे १ अर
स्त्रीकी जोनिकै मूंढै हाथपगआडा आयजाय तीनैं प्रतिपूर कहिजै
२ स्त्रीकी जोनिकै मूंढै आगलसी लागजाय तीनैं परिघ कहिजै.
३ स्त्रीकी जोनिकै मूंढै सिर आयअटकै तीनैं बीजमूंढगर्भ कहिजै.
४ स्त्रीकी जोनिकै मूंढै पेटआयअटकै ५ स्त्रीकी जोनिकै मूंढै पस
वाडो आयअटकै ६ अर स्त्रीकी जोनिकै मूंढै मुषनीचो होय ७
स्त्रीकी जोनिकै मूंढै मंगरअटकै.८ऐसै मूंढ गर्भआठप्रकारकोछे अथ
मूंढगर्भको असाध्य लक्षण लिष्यते जीस्त्रीकोमाथो उभो सूधोरहै
नहीं लटक्योजाय अर जीस्त्रीकीलाजजातीरहै अर जीगर्भवतीस्त्री
का सर्वअंग सीतलहोजाय अरजीगर्भवती स्त्रीकी सरीरकीनसांनी
लीहोयजाय वे स्त्रीको बालक मुवो जाणिजे. अरवास्त्रीभी मरिजा
य १ अर जीस्त्रीका गर्भमैं जोबालकमुवोहोय तीस्त्रीको गर्भ फुरकै
नहीं अर वेंको मूंढोकालो पीलासनैंलीयां होयजाय अर वेंकाना
कका अर वेंका मूंढाकासासमैं मूवाकीसी दुर्गंधि आवै अर पेटमैं
सूलचालै ये लक्षण जीमैंहोय तीनैं जाणिजे ईंका उदरमैं बालक मू
मूवाछै२अथ जींका पेटमैं बालक मुवोहोय तींको कारणलिष्यते. जी

* गर्भको कारण अनेकतरैसूंछै. औरगर्भसूं बालक १ तथा २ तथा ३ पर्यंत होयछै. प
रंतु दोयतो घणी जायगांछै. तीनतो कोईसी जायगां होयछै. पणगर्भस्थानमैं जायगां कम
तीहोवासूं तीनतांई होयछै. विद्वानलोकका विचारप्रमाणै तोपुरुषका वीर्यमैंतौ चवधाबाल
कपर्यंत होय. परंतु गर्भस्थानमैं जायगांनहीछै.

स्त्री कोईभाई मातापिता पुत्र भर्ता उगेरै कोईप्यारो मर्योहोय अ थवा वेंका द्रव्यादिक कहींतरैसूं जातारहे अथवा वेंका उदरके क हींतरैकी चोट लागिजाय तदि वेंस्त्रीके दुपउपजे तदिवे दुपका प्र भावसूं वेंकोगर्भ घणो दूषीहोय अर वेंकी कूषमें अनेकरोग पैदा होय तदि वेंका पेटका बालक वेंका पेटमें मरिजाय ३ अथ गर्भि णीस्त्रीको असाध्यलक्षणलि० जीस्त्रीकी जोनिको मूंढोमूवाबालक करि ढकिजाय अर कूषिमें सूलचाले वेगर्भनें कमल्लक संज्ञाकहिजे अर पाछे कह्याउपद्रव सोभीहोय ४ अथ मूंढगर्भका जतनलिष्य ते जीस्त्रीका गर्भासयमें भगकेकनें बालक बूरीतरह आयगयो होय तींकैवास्तै निपट चतुर घणांबालक आछीतरै जणाया होय ऐसी दाईनें बुलाईजे अर वादाई बालक जणावामें कुशल होय सो हा थके घृतलगाय ओहाथ चतुराईसूं भगमेंघालि बालकनें सूधोकरि जीवतोही तत्काल भगमांहीसूं वारैकाढेछे ५ अथ गर्भमें बालक म रिगयो होय तींकोजतनलिष्यते वानिपट चतुर दाईहोयसो चतुरा ईसूं भगमें पाछणो छोटो अर तीषोघालिवेमूवा बालकका अंग अंग काटि चतुराईसूं भगकेवारे सर्व अंग काढे सो मूवाबालकनें ईसीतरै भगमांहिसूं काढे नहीतो वागर्भवतीस्त्री वेकीसाथिमरै ईवा स्तै तत्काल मूवागर्भनें ईतरैकाढै अर मूवाबालकनें गर्भमांहिसूं काढ्या पाछे भगनें चतुराईसूं गरम पाणीसूं धोवै अर वेहीसमय भगनें सुहावता गरम घृतसूं अथवा तेलसूं भगनें चोपडैतौ ओभ ग कोमलरहे अर वेभगनें सूलादिकको कोई उपद्रव होयनहीं पा छै कडवी तुंबीकापान अर पठाणीलोद यांनें बराबरिले अर यांनें मिहीवांटि ईंको भगके लेपकरैतो भगज्यूंको ज्यूं आपकैठिकाणै

न. टी. स्त्रियांकाशरीरांका अवयवनाम अंगअंग नाम जामैं विलक्षणताछै. ईश्वरी सत्ता व्यापकछै. जीनै शास्त्रका अनुकूलतासौं वास्तवबुद्धिका सूक्ष्म विचारसौं जापाका आदिमैं तथा पाछै वायूकी प्रवृति होवाकी न्यूनादिक निगहराषणी.

वेंठै अथवा पलासपापडो पक्कागूलरिका फल यांनै बराबरिलै पाछै यांनैं तिलांकातेलमैं मिहीवांटि वेंभगकै लेपकरैतो ओभगगाढो हो जाय अर इसीहीतरैदिन २१ करैतो भगकै कोईरोग होयनहीं ६ अथ ईंकी और औषदि लिष्यते सांपकी कांचलि कुटकी सिरस्यु यांतीन्यांनै मिहीवांटि कडवातेलसूं भगकै यांकी धूणोदेतो भगका रोगजाय ७ अथवा कलहारीकी जडनैं औटाय वेपाणीसूं हाथप गांनै धोवैतो भगमाहिलो मूवाबालकको दोष दूरिहोय ८ अथ मकल्लकरोगकी उत्पत्तिलक्षणलिष्यते जीस्त्रीकै संतान हुईहोय अर वास्त्रीलूषी अर वायलवस्त षातीस्त्रीकै तीषाद्रव्य पीपलामूल उ गैरै मिल्यानहीं अर वेषायनहीं तींकै वायहैसो नाभिकै नीचै अ थवा दोन्यूं पसवाडांमैं अथवा पेडूमैं वाबाय लोहीनैरोकि वायकी गांठिकरैछै अथवा वायहैसो नाभिमैं उदरमैं पक्कासयमैं सूलनैं प्रगटकरैछै. अथवा ओवाय पेडूमैं आफरानैं करैछै. अर मूतनैं उतरवादे नहीं ईनै वैद्यहैसो मकल्लकरोग कहैछै. १ अथ मकल्लक रोगकाजतनलिष्यते जवषारनैं गरम पाणीसूं ईनैवांटि जोस्त्रीलेतो वेस्त्रीको मकल्लकरोगजाय २ अथवा पीपलि पीपलामूल मिरचि गजपीपलि सूंठ चित्रक चव्य संभालु इलायची अजमोद सिरस्यूं सेकीहींग भाडंगी पाठ इंद्रजव जीरो बकायण मूर्वा अतीस कुटकी वायविडंग योपिप्पलादिगणछै त्यांनैं बराबरिले अर यांनै मिही वांटि टंक २ गरम पाणीसूं लेतो अथवा यांको काढोकरिले ईमैं क्यों सींधोलूण नाषैतो स्त्रीका कफका अर वायका सारारोग जाय अर स्त्रीकागोलानैं सूलनैं जुरनैदूरिकरै अर भूषलगावै अर आं वनैं दूरिकरै अर ईमकल्लकरोगनैं निश्चैहीदूरिकरै ३ अथवा सूंठि

न.टी. कारणभूतसर्वोपरवायुछै. विगडी हुईवायु मकल्लादिकरोगपैदा करैछै. सोमकल्ला रोगगर्भाशय आदिलेर अवयव रोकैछै. जीसौंपुनः गर्भधारणमैं स्त्रियां अशक्त होय. जीसूं तीक्ष्ण औषधीकी युक्तिकरणी.

मिरचि पीपलि तज पत्रज नागकेसरि इलायची धणों यानै मिश्री वांटि टंक २ पुराणागुडसूं लेतौ मकल्लकरोग जाय ४ अथ जीस्त्री कै प्रसूतिहुई होय तीस्त्रीनैं जुक्तिसूं अहारविहार करावै० अरवा स्त्री इतनीवस्त करैनहीं षेद मैथुन क्रोधथंडीमैं रहवौ येवस्तकरै नहीं. मिथ्या अहार करैतौ वेंकैसूतिकारोग पैदाहोय १ अथ सूतिकारोगकी उत्पत्तिलि० मिथ्याआहारतें घणाक्लेशका करिवाकैं विषमआसनकरिकै अजीर्णमैं भोजनकरिकै अर जापामैं जोरोग होयछै सोसाराही भयंकरछै. १ अथ सूतिकारोगको लक्षणलि० अंगामैं पीडाहोय जुरहोय षासीहोय तिसघणीलागै सरीर भार्‍यो होय अर सरीरमैं सोजोहोय अर पेटमैं सूलहोय अतिसारहोय येजीमैं लक्षणहोय तीनैं सूतिकारोग कहिजे १ अथ सूतिकारोग मैं और जुरादिक रोगहोय तींकीविशेष उत्पत्तिलि० जापामैं जुर होय अतिसारहोय सोजो होय पेटमैंसूलहोय आफरो होय शरीरकोबल जातोरहै तंद्राहोय अरुचिहोय अर ईनैं आदिलेर ओर भी कोई रोगहोय वाय कफको अर बलमांस अग्नि जींकी जातीरहीहोय यांसारांही रोगांनैं सूतिकारोग कहिजे १ अथ सूतिकारोगका जतनलि० जोवस्तवायनैदूरिकरै सोसारीही औषधी सूतिकारोगनैं दूरिकरै २ अथवा दशमूलकौ काढौ सूतिकारोगनैं दूरि करै ३ अथवा गिलवै सूंठि सहजणो पीपलि पीपलामूल चव्य चित्रक नेत्रवालो यांको काढो सहतनाषि देतौ सूतिकारोग दूरिहोय ४ अथवा देवदारु वच कूठ पीपलि सूंठि चिरायतौ कायफल नागरमोथो हरडैकीछालि गजपीपलि धमासो गोषरू जवासो कट्याली गिलवै कालोजीरो येबराबरिले. यांको काढोकरि अर हींग सीं

न. टी. जैसै सूंठि पीपलामूल. अजवायण इत्यादिक पदार्थांसूं अर आहारव्यवहार पथ्यापथ्यसौंयतनकरणौ. कारणस्त्रियांका जापामैं शरीरकाबंधन तथा रुधिरादिक सर्वढीला निबला होयजायछै. सोवै जापाकीकसर जापाहीमैं नीसरै.

धोल्लणकी प्रतिवास यांको देतो सूतिकारोगनैं सूलनैं षासनैं सास नैं जुरनैं मूर्छानैं मथवायनैं प्रलापनैं तिसनैं तंद्रानैं अतिसारनैं व मननैं यांसारांरोगांनै योदूरिकरैछे ५ इति देवदार्व्यादिक्काथः

अथ पंचजीरक पाक लिष्यते स्याहजीरो. सुपेदजीरो सोंफ अ जवायण अजमोद धणों मेथी सूंठि पीपलि पीपलामूल चित्रक झा उरूषकी जडकी वकल वोरकी मींगी कूठ कपेलो येसारी औषदि टका टका भरिले त्यांनैं मिहीवांटि कपडछाण करै पाछै गऊका घृ तसेर १ में मकरावै पाछै ईचूर्णमें सेर ४ गऊका दूधका मावामें ईघृतसूं मकराय चूर्णनैं पकाय ईको षरोमावोकरै पाछै ईनै टका १०० भर पांडकी चासणीमें नाषै पाछै ईकी टका १ भरकी गोली करै पाछै ईनैं रोजीना जापावालीस्त्री षायतो सुवाका रोगनैं जुरनैं क्षयीनैं षासनैं सासानैं पांडुरोगनै क्षीणतानैं वायका रोगांनैं योपं चजीरकपाकदूरि करैछे. ६ अथ सौभाग्यसुंठिपाक लिष्यते सतवा सूंठि सेरऽ॥ ईनैमिहीवांटि कपडा सूंछाणिकरिसेरऽ॥ गऊका घृतमें मकरावै पाछै गऊका दूधसेर ५ कामावामें ईनैपकाय ईको मधु री आंचसूंषरो मावोकरै पाछैसेर ५ षांडकी चासणीकरि ईचास णीमें येऔषदि मिहीवांटि कपडासूं छाणिकरि ईमै नाषैसो औष दिलिषूंछूं धणों टंक १ सोफ टंक १ वायविडंग टका १ सूंठि टका १ कालीमिरचि टका १ पीपलि टका १ नागकेसरि टका १ ना गरमोथो टका १ येऔषदि मिहीवांटि ईचासणीमें नाषि सारटंक ५ अभ्रक टंक ५ येईमें नाषै औरमेवो जथारुचि ईमै नाषै पाछै

---

* श्रीधरकीप्रतिज्ञाछै. यह ग्रंथमैं गर्भपातकी औषधीकों लागीछै. जीमैं घणांदुष्टलोक निंदाकरैछै. श्रीधर अमृतसागरमैं ग्रंथकमतीलिष्योछै. परंतु सत्यप्रतिज्ञाछै. एकअक्षर कम तीनहीं कियोछै. कोईबीदुष्ट तथा निंदक तथा कृतघ्नीका कह्यासै विनातपासकियां तथा नि श्चयकियां विना हमारानामका छाप्याग्रंथनैं कमतीनहीकहसी. हमारी षातरीछै. कदाचित् दुष्टांका कह्यासूं सुणकरनिश्चैविनाकहसी. जीनैं ब्रह्महत्यालागसी.

टका १ भरकी गोलीबांधै पाछै ईगोलीनैं स्त्रीपायतो स्त्रियांकी निस कारोगनैं छर्दिनैं जुरनै दाहनैं धासनैं सासनैं पांडुरोगनैं मंदाग्निनैं योदूरिकरै ७ इति सौभाग्यसूंठिपाकः अथ स्तनरोगका लक्षण लिष्यते ईसारासरीरमैं फैलताजाय वायपित्तकफ दोषसो येदुष्ट हु वाथका स्त्रीकास्तनमैंजाय प्राप्तहोयछै वेंस्त्रीकास्तन दूधसंयुक्त होय अथवा दूधविनाका होय त्यांस्तनांकैविषै वेदुष्ट दोष हुवाहै सो स्तनांकैविषै रोगांनैं पैदाकरैछै. गांठि उगेरै लोहीकाविकारनैं ८ अथ स्तनरोगका जतनलिष्यते. स्त्रीकास्तनऊपरि वैद्यसोजो देषै तींसो जानैंविद्रधीकाजतन पाछै लिष्याछै. सो जतनकरैतौ स्तन रोगजाय अर स्त्रीकास्तनऊपरि गांठि कच्चीहीछै तींगांठिनैं पित्तनैं दूरिकरिवावाली सीतल औषदि लगावैतौ स्तनको रोगजाय १ अथवा जोक लगाय स्तनकी गांठिको लोही कढावैतौ स्तनका सर्वरोगजाय २ अथ स्तनकीपीडाको जतनलिष्यते गडूंवाकीजड नैं पाणीमैंवांटि वेंको लेपकरैतौ स्तनकी पीडाजाय ३ अथवा हल द धतूराकीजड यांनैं जलसूं मिहीवांटि लेपकरैतौ स्तनकीपीडा दूरिहोय ४ अथवा वांझ कंकोलकीजडनैं मिहीवांटि जलसूं ईंको लेपकरैतौ स्तनको रोगजाय ५ अथवा लोहनैं गरमकरि आगर मपाणी स्त्रीपीवैतौ स्त्रीका स्तनरोग जाय ६ येसर्व जतन भावप्र कासमैं लिष्याछै.

अथ रंडास्त्रीगर्भनिवारण तथा गर्भपातन कीजे वास्तै श्री धरकी अरज लिष्यते और विशेष करकै ग्रंथकी मर्याद मुंजब रं डास्त्रियांका गर्भनिवारण तथा गर्भपातनका उपाव याग्रंथामैं श्री दरवारतो संक्षेपकरकै फरमायाछापणअबारकी समय देषतां मनु

न. टी. प्रसूतिका रोगांपर जो सौभाग्यसुंठिको उपचारलिष्योछै. सुग्रंथांतरसूं भिन्नभि न्न होयछै. परंतु याग्रंथमैं इहीरीतसौं करणी चाहिजै. अर. सार. अभ्रक. येदोषलिष्याछै. सो असलपरिक्षाकियाथका तथा सुवैद्यककाहातकाकियाथका युक्त करणा.

ध्याकामनपातकी कर्मादिकांमें घणाप्रवर्तहोता दीपैछे. ग्रंथमें यो उपावजदपातकी मनुष्यानें मिलैतो मनुष्यजरूर उद्योगकरै जीमें अकाजहोय अथवा सुकाजहोय पणमैतो ये च्यार अथवा पांच औषदिको प्रकर्ण छोडिदीनूंछे. कारणहमारीबुद्धिप्रमाणे यो उद्योग दुरस्तध्यानमैं आयो नहीं जीसूं सर्व विद्वान पुरुषासूं अरजछे. घणो प्रमाणीक ग्रंथ औरबहुधापुरुषांके हाथमैं प्रवर्त होयजैसा ग्रंथमैं ओउद्योग होयतो जीनें वाजवीकोईबीकहसीनहीं. कारण एक तो साधारणसमय दुसरो कोई कोई मनुष्यांको मनपातकी तीसरो ग्रंथमैं औषदिको उद्योग जद इसाकर्मको विस्तारघणो वधै ईवास्तैमैं च्यार पांच औषदीछोडीछे. जींवास्ते विद्वानह्मारउपरक्षमाकरसी १३ इति स्त्रियांकासर्वरोगांकी उत्पतिलक्षण जतन संपूर्णम्. इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्रश्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागरनामग्रंथे स्त्रियांकाप्रदरनें आदिलेर स्त्रियांका सर्वरोगांकाभेदसंयुक्तउत्पतिलक्षण जतन निरूपणंनामविंशतिमस्तरंगः समाप्तः २०

२१ अथ बालकांका रोगांकी उत्पति लक्षणजतनलि० प्रथम बालकांका नवग्रहजुदाहीछे यानऊग्रहांसुंभिन्नकै सोअपवित्रबालकनें वेनवग्रह पीडाकरैछे. सोई कारणसूं वानवग्रहांते बालककी रक्षाकरणी १ अथ बालकांका नवग्रहांका नामलि० स्कंदग्रह २ स्कंदापस्मार २ शकुनी ३ रेवती ४ पूतना ५ गंधपूतना ६ सीतपूतना ७ मुषमंडिका ८ नैगमेयनव ९ अथ नवग्रहांकीउत्पत्ति लि० ये नवग्रहस्वामकार्तिककीरक्षाकै अर्थ श्रीमहादेवजी उपजावता हुवा सोया नवग्रहांको स्वरूप मदासुंदर जोस्त्री तींको सोस

न. टी. बालकांका अहारव्यवहार अरपथ्य अपथ्य. जांसौं बालकांकी सुषसांती रहैछे सो. विधिपूर्वक ग्रंथकर्ता लिषीछे. अरबालग्रहांकाभेद अर लक्षणलिष्याछै. ज्यालक्षणासौंवाक बहोयकर जतनकरैछै. ज्यांनै श्रीपरमेश्वर आशीर्वाद देवैछै.

रूप होतोहुवो. अर कहींकको स्वरूपसुंदर पुरुषको सो होतोहुवो अथवा स्वामिकार्तिकको सषाविसाष जींको नाम अग्निसिरीसी जींका सरीरकीकांति इसानै श्रीमहादेवजी और पैदाकरता हुवा. पाछै येसाराहीमिलि स्वामिकार्तकजींकैसाथि रहताहुवा. पाछै स्वामिकार्तिकजीसूं यांसारांमिलि अरज करिह्मैं भूषाछां ह्माकै षावाकै वास्तै ह्मानैं कोई आजीवका द्यो तदी स्वामकार्तिकजी महादेवजीसूं अरजकरीतदि श्रीमहादेवजी याफुरमाई जगतकैविषै पशु पंछीनैं आदिलेर तिर्यग जोनिभीरहैछै अर मनुष्यभी रहैछै अर देवताभी रहैछै. ईजगतमैं सोदेवता मनुष्यांनैं पीडाकरैछै. अर देवता पशुपंष्यांनैंभी पीडाकरैछै. जथाकाल प्रभृति हुवाथका ऊष्ण कालमैं गरमीकरिकै अर वर्षाकालमैं सीत पवनकरिकै अर सीत कालमैं सीतकरिकै अर मनुष्यहैसो नमस्कार जप होमादिक करिकै भलैप्रकार देवतांनैं प्रसन्नकरैछै. अर वादेवतांनैं भोजनको भोगदेछै. अर ईसीतरै जो मनुष्य नहींकरैछै त्यांका बालकांनैंथे पीडाकरो अर वानैंथे षावो १ अथ बालग्रह ९ छै सोबालकांका लेवाको कारणलिष्यते जो मनुष्यांका कुलमैं देवताकी पित्रेश्वरांकी ब्राह्मणांकी अतीतांकी गुरांकी अतिथिकी पूजादिक नहींकरैछै अर वानैं भोजनादिक क्यूंनहींदेछै अर कांसीका फूटापात्रमैं जो षाय छै वांका बालकांनैंथे षावो या महादेवजीभी वाग्रहांनैं कही तद वांकी आजीवका हुई १ अथ बालग्रह ज्यां बालकांनैं लागै त्यां बालकांका लक्षणलि० जींबालकनैं येबालग्रहलागै सो बालकक्षिणेकमैं तो उद्वेगकूं प्राप्तहोय अर क्षिणेकमैं डरपिवालागिजाय अर षिणेकमैंरोवै अर षिणेकमैं आपकी धायनैं नषांसूं अर दांतां

न. टी. कारणबालक अबोलछै. ज्यांकासुषदुषनैं समझकरपालण पोषणअरजतन. दया युक्त अरमोह युक्तहोकर जोकरैछै. अरवा जतनासूं बालक आरोग्यरहकर जोबाल अवस्थाकी चेष्टाकरै. जदांवां बालकांमैं ईश्वरीशक्तिको आनंद जाण्योजायछै.

सूं काटिवा लागिजाय अर ऊंचो आकासकानी देषवोकरै अर आपका दांतांनैं चाविवोकरै कुणारिवोकरै जंभाई लेवोकरै अर भंवरा चढावोकरै अर होठ काटवोकरै अर मूंढैझाग आवोकरै अर वमन करवोकरै अर अतीसारयुक्तभी होय अर वेंको शरीर पीण पडजाय अर रातिनैं जागै अर सरीरकै सोई आयजाय अर कंठकोसुर घोंघो होय अर वेंका शरीरमैं माछलाकीसी दुरगंधि आवै जींको शरीर दुर्बल अर मैलो होजाय अर सारीसंज्ञा जातीरहै येलक्षण जींवालकमै होय तींनैं जाणिजै वालग्रह लाग्योछै. येबालग्रहका सामान्यलक्षणछै १ अथ बालग्रह जीनै लाग्योहोय तींकोविशेष लक्षणलिष्यते जींका अंगशिथल होय अर जींका शरीरमैं लोहीकी दुरगंधि आवै अर स्तनको दूध पीवैनहीं अर मूंढो वांको होयजाय अर आधो अंग रहजाय अर नेत्रांमैं आंसूरहै रोवैथोडो हाथकी मूठीबंधीरहै येजीमैं लक्षणहोय तदि जाणिजै ईनैं स्कंदग्रह लाग्योछै १ अथ विशाष ग्रहजीनैं लाग्यो होय तींको लक्षणलि० जींकी संज्ञाजातीरहै अर फेरिसंज्ञा आय जाय अर कदेक हाथपगांनै नवावण लागिजाय अर मलमूत्र विनासंग्याही करिदे अर जंभाई घणीआवै मूंढै झाग आवै तदि जाणिजै ईनै विशाष ग्रहलाग्योछै २ अथ शकुनी ग्रहजीनैं लाग्योहोय तींको लक्षणलिष्यते अंग शिथिलरहै भयंकरि चकित रहवोकरै अर वेंकाशरीरमैं मछीकीसी दुरगंधि आवै अर शरीरमैं व्रणघणां पडिजाय अर शरीरमैं दाह होय येलक्षण जीमैंहोय तदि जाणिजै ईनै शकुनीग्रह लाग्योछै. ३ अथ रेवतीग्रहजीनै लाग्यो होय तींकोल

---

* बालकांकारोग अनेकतरैकाछै. परंतुसीतलासासणी जींनैं डबाषासी कहैछै रसाबजीन बादलाकोरोग कहैछै. सीतलाजींनैं सीतलामाता कहैछै. ओरभी उदरमैं जंतुविकार. चूरण्या. सूकणैपडैछै सो परंतु बालकांको पालनपोषण घणोकठिणछै. बालकांका ग्रहदोष कर उपावकरणो चाहिजै.

क्षणलिष्यते जींको मूंढो लाल अर हस्योहोय अर पीली जींकीदे हीहोय अर जींकाहाथपग कालाहोय अर पीडानैं लीयां ऐसो बालक होय तदि जाणिजे ईकै रेवतीग्रहको दोषछे ४ अथ पूतनाग्रह जीनैं लाग्योहोय तींको लक्षणलिष्यते जींको शरीर शिथल होय रातिदिन सोवैनहीं अर वेंको मल पतलो पडिजाय अर वेंका शरीरमैं कागलाकीसी दुरगंधि आवै अर छर्दिहोय तिस घणीहोय जींकै येलक्षण होय तदि जाणिजे ईकै पूतनाग्रह लाग्योछै. ५ अथ जींकै गंधपूतना लाग्यो होय तींको लक्षणलिष्यते. ओ बालक स्तनको दूध पीवैनहीं अर अतिसार होय षास हिचकी छर्दि येभीहोय जुरहोय अर शरीरको वर्ण जातोरहै अर शरीरमैं लोहीकीसीदुर्गंधि आवै तदि जाणिजे ईकैगंधपूतनाका दोषछै. ६ अथ सीतपूतनाका दोषको लक्षणलि० बालकरोवोकरै अर कांपिवोकरै अर जींकी आंत बोलै अर शरीर शिथल होजाय अर अतिसार घणोहोय जींकै येलक्षणहोय तदि जाणिजे ईकै सीतपूतनाको दोषछै. ७ अथ नैगमेय ग्रहका दोषको लक्षणलिष्यते. जींकै मूंढै झागघणा आवै अर कांपैघणो अर ऊंचोहीदेषै अर पुकारैघणो अर शरीरमैं दुरगंधि आवै संग्याजातीरहै तदि जाणिजे ईकै नैगमेय ग्रहको दोषछै. ८ अर येहीलक्षण डाकिणीका दोषका जाणिलीजो. १० अथ सामान्य ग्रहांका दोषांका जतनलिष्यते गोरषमुंडी षस यांको काढोकरि ईकाढासूं बालकनैं स्नानकरावै. अथवा हलद चंदन कूठ यांनैंवांटि शरीरकै लेपकरैतो बालकका सामान्य ग्रहको दोष दूरिहोय १ अथवा सांपकी कांचली लसण सिरस्यूं नींबकापान विलाईकीवीट बकराकाबाल मींढाकोसींग वच सहत

न. टी. बालग्रहांकी शांति प्राचीनग्रंथांमै लिषीछै सो अठैग्रंथकर्ता यथाक्रमसौं लीषीछै. अर परंपरागतरीतछै सोऋषीकृतछै. जोआयुर्वेदका आचार्य मुख्यमुख्यग्रंथांमैं निदानलिष्याछै. सोवर्तमानकालका विद्वानवाकबछै.

येसारावांटि यांकी बालकको धूणीदेतौ बालकका ग्रहांका सारादो
ष जाय और उतारावगैरै साराजतन करैतौ बालकांका ग्रहांका
दोष जाय ३

अथ स्कंदग्रहनैं आदिलेर बालकका ग्रहांका विशेष जतनलि०
बालनै दूरिकरिवावाला जोवृक्ष त्यांका पानाको काढोकरि तीसूं
बालकनै स्नानकरा देवैतौ बालकांका ग्रहांका दोष दूरि होय ४ अ
थवा सिरस्यूं सांपकी कांचली वच कागलहरी. यांनै कूटि अर ईमैं
ऊंटका अर बकराका बाल मिलावै अर वच अर घृतमिलाय ईंकी
बालककै धूणीदेतौ बालकांकायांग्रहाको दोष दूरिहोय ५ अथ
स्कंदापस्मार तींका दोषको जतन लिष्यते. वीलकी जड सिरसकी
जड सुपेददोब सुपेदसिरस्यूं पाठ मरवो राई सुपेदवावची कायफ
ल कसुंभी वायविडंग संभाल्ह्र गूलर षरैटी चिरपोटणी वकायण का
लीतुलसी भाडंगी यांको काढोकरि ईंकाढाका पाणीसूं बालकनैं
स्नान करावैतौ स्कंदापस्मार बालकका ग्रहको दोष जाय ६ अथवा
गोमूत्र बकरीको मूत भेडीको मूत भैसीको मूत गधाको मूत घोडा
को मूत ऊंडको मूत यांसारां मूतांमैं तेलपकावै मधुरी आंचसूं येमू
त बलिजाय तेलमात्र आयरहै तदि तेलको बालककै मर्दन करैतौ
स्कंदापस्मार बालकांका ग्रहांकादोष जाय ७ अथवा माथाका केस
हाथीकोनष बलधकारोम यांमैं घृतमिलाय ईंकी धूणीदेतौ बालक
को स्कंदापस्मार ग्रहको दोषजाय ८ अथवा जवासो मैणसिल
किस्तुरी कौंछकीजड यांकी बालककै धूणीदेतौ बालककै बांधैतौ
स्कंदापस्मार बालकका ग्रहको दोषजाय ९ अथवा बालकनैं चौह
टैस्नानकरावै तौ स्कंदापस्मार अर विशाषाको दोषजाय १० अथ

न. टी. जीसौं यारीतचली आवैछै. अरु गुणप्रत्यक्ष होयछै. ईनैं औषध्यांका षावासौं अर औषध्यांका लगावासौं अर औषध्यांका स्नानकरावासौं अर औषध्यांका धूम्रसौं वा धूपसौं. वास्पर्शकरणैसौं आराम होयछै.

शकुनीग्रहका दोषका दूरिहोवाको जतनलि० वेतकी लकडी आंबकी जड कैथकी जड यांको काढोकरि ईंपाणीसूं बालकनैं स्नानकरवै तौ शकनीग्रहको दोषजाय १ अथवा झाउरूषकी जड महुवो षस गौरीसर कमलकी जड पदमाष लोद फूल प्रियंगु मजीठ गेरू यांनै जलसूं मिहीवांटि ईंको बालककै उवटणो देतौ बालककै शकुनीग्रहको दोषजाय २ अथवा स्कंदापस्मारका जतन कह्याछै सो भी शकुनी ग्रहको दोषनैं दूरि करैछै ३ अथवा शतावरी अथवा इंद्रायणीकी जड अथवा नागदवणी अथवा कव्याली अथवा सहदेईयांको पूजनकरि बालककागलाकै बांधैतौ शकुनी ग्रहका दोष दूरि होय ४ अथवा तिल चावल फुलांकी माला हरताल मैणसील यांकी शकुनी ग्रहनैं बलिदेविधिपूर्वक और बालकनैं औषद्यांका जलसूं स्नानकरावै तौ शकुनी ग्रहको दोष दूरिहोय ५ अथ रेवती ग्रहका जतनलि० अस्वगंध मीढासींगी गौरीसर साठीकीजड सेवतीकाफूल विदारीकंद यांको काढोकरि ईंकाढाका पाणीसूं बालकनैं स्नानकरावै तौ बालककै रेवती ग्रहको दोषजाय ६ अथवा बालककै तेलको मर्दन करैतौ अथवा कूठ राल गूगल षस हलद यांकी बालककै धूणीदेतौ रेवती ग्रहको दोष दूरिहोय ७ अथवा सुगंधिनैं लीयां सुपेद फूल चांवलांकीषील दूध रांधीसाल दहीं यांनै बालककै ऊपरि नाषि बालकनै स्नान करावै अर याहीकी गऊसालमैं बलिदेतौ बालककै रेवतीग्रहको दोष दूरिहोय ८ अथ पूतनाग्रहका जतन लिष्यते नींबकीछालि विष्णुक्रांता वणिकीछालि यांको काढो करि ईंजलसूं बालकनैं स्नानकरावैतौ पूतनाग्रहको दोष दूरिहोय ९ अथवा नवीनविदारीकंद सुपेद दाष हरताल मैणसिल

न. टी. वागभट्टऋषी आदिलेर लिषीछै. वागभट्टमैं. सुश्रूतमैं. चरकमैं. अश्विनीकुमार संहितामैं रुद्रसंहितामैं शारंगधर संहितामैं. अर और घणांग्रंथांमैं वर्तमानकालमैं. भावप्रकासमैंतंत्र. मंत्र. उतारा. औषधीसर्वछै.

कूट राल यांको काढो करि ईंकाढाका रसमैं तेल अथवा घृत पकावै पाछे ईंतेल अथवा घृतको बालककै मर्दन करैतौ पूतनाग्रहको दोष दूरि होय १०

अथ गंधपूतनाग्रहको जतन लिष्यते नींबकापान पटोलकापान कठ्यालीकापान गिलोयकापान अरडूसाकापान यांको काढो करि ईपाणीसूं बालकनैं स्नानकरावैतौ गंधपूतनाका दोष दूरिहोय ११ अथवा पीपलि पीपलामूल दोन्यूंकठ्याली यांको काढो करि ईंकाढामैं गऊको घृतपकावै पाछे ईंघृतको मर्दनकरैतौ बालकको गंधपूतनाको दोषदूरिहोय १२ अथवा केसर अगर कपूर कस्तुरी चंदन यांनै मिहीपीसी बालककै आंष्यांकै लेपकरैतौ गंधपूतनाको दोष दूरिहोय १३ अथवा कूकडाकीवीट बालककाकेंस लसनकी छालि घृत यांनैं बालकऊपरि वारि चोवटामैं मेलैतौ गंधपूतनाको दोष दूरिहोय १४ अथ सीतपूतनाका जतन लिष्यते गोमूत बकरीकोमूत नागरमोथो देवदार चंदननैं आदिलेर सर्व सुगंधि यामैं तेलपकावै ईंतेलको बालककै मर्दन करैतौ सीतपूतनाग्रहको दोष दूरिहोय १५ अथवा कुटकी नींबकीछालि षैरसार छीलाकी छाली कहवाकीछालि यांको काढो करि ईंमैं घृतपकावै पाछे ईंघृतनैं बालकनैं षुवावै अथवा बालककै लेपकरैतौ सीतपूतनाको दोष दूरिहोय १६ अथवा नींबाका पानाकी बालककैधुणीदे अथवा बालकनै चिरमीकी माला पहरावैतौ सीतपूतनाको दोष दूरिहोय १७ अथवा नदी ऊपरि मूग चावल सीतपूतनानैं समर्पण करैतौ सीतपूतनाको दोष दूरिहोय १८ अथ मुषमंडिका ग्रहका जतन लिष्यते कैथ वील अरण्यो अरडूसो सुपेद अरंड कूठ यांको काढो करि

---

* बालकका जन्मादि षोडशवर्षपर्यंत साधनकह्याछै. सोशास्त्रादिकांसूं समझकर उपाव साधनराषैछै. ज्यांकाबालक आरोग्यकांतिवान् तेजयुक्त आलसरहित होयछै. भाग्यवान होयछै. ज्यांकी संततीश्रेष्ठ होयछै. वास्तै कुलवृद्धिकारक उत्तमसंस्कार औषधी प्रकारसर्वछै.

ईंकाढाको बालकनैं स्नान करावैतौ मुषमंडिकाको दोष जाय १९ अथवा भांगराकोरस वच ईंमें तेलपकावै पाछै ईंतेलको बालककै मर्दन करैतौ मुषमंडिकाको दोष दूरिहोय २० अथवा राल कूठ यांको काढो करि ईंका रसमें घृतपकावै पाछै ईंघृतको बालककै मर्दन करैतौ मुषमंडिकाको दोष दूरिहोय २१ अथवा गऊका स्थान में बलिकरै अर ऊठे ईंनें मंत्रसूं स्नान करावैतौ मुषमंडिकाको दोष दूरिहोय २२ अथ स्नानका जलको मंत्र लिष्यते अलंकृताकामवतीसुभगाकामरूपिणी गोष्ठमध्यालयरतापातुत्वां मुषमंडिका २३ अथ नैगमेय ग्रहको जतन लिष्यते वीलकी जडकीवकल अरण्याकीजड कणगचकी जड यांको कांढो करि ईंपाणीसूं बालकनैं स्नान करावैतौ नैगमेय ग्रहको दोष जाय २५ अथवा फूलप्रियंगु जवासो सौंफ चित्रक वृक्षकीवकल ईंनें लौकीकमैं गुडहलको वृक्ष कहैछै यांको काढो करि ईंकाढाकारसमै तेलपकावै पाछै ईंतेलनैं पकतां ही ईंमें गोमूत दहीं अर कांजी नाषै पाछै और ईंतेलनैं पकावै ये साराबलिजाय तेलमात्र आयरहैतदि ईंको बालकांकै मर्दन करैतौ नैगमेय ग्रहको दोष जाय २६ अथवा तिल चावल फूलांकीमाला लाडूनें आदिलेर मिठाई यांनें बालकऊपरि ७ सातवार वारिवारि वृक्षका पेडमै मेलैतौ नैगमेय ग्रहको दोष दूरिहोय २७ अथ वारिवाको मंत्रलिष्यते अजाननश्चलाक्षीभ्रू कामरूपीमहायशाः बालंपालयतेदेवो नैगमैयोसिरक्षतु २८ येसर्वजतन भावप्रकासमैछै. अथ रावणको बनायो बालतंत्र नामग्रंथछै तींका मंत्रासूं बालकांको डाकिणीनें आदिलेर त्यांका आछ्या होवाका लक्षणउत्पत्ति लिष्यते बालकको जन्महुवां पाछै पहलौदिन प्रथम मास प्रथम

न. टी. वर्तमानकालमैं जोवैद्यवरछै सोतोऋषी कृतउपचार ससतासौं करैछै. शास्त्रकै अनुकूलछै. ज्यांका शुभाशुभ फल तत्कालसिद्धिछै. अर जोवैद्यशास्त्रसौं प्रतिकूलछै सो ईसा उपचारामैं अरुचिराषैछै.

वरसमैं मंदानाम मातृकानै आदिलेर रावणकी बारा १२ बहण छे सोबालकनै दोषकरैछे तींका येलक्षणछे बालकके जुरहोय रोवै घणो ओवोलेनहीं तींका आछ्या होवामैं वेकेवास्ते बलिकहिजेछे. नदीकादोन्यूं तटांकीमाटीले वेको पूतलोकरै कोरीसैनकमैं अर वे केकनैं चावल सुपेद फूल ७ ध्वजा सात ७ दिवा ७ सात गुलगु ला सात ७ पान गंध धूप मांस दारु येसाराबालक ऊपरिवारि पू र्वदिशाकानी चोहटै मध्यान्हकैसमै बलिदे अर पीपलकोपान मा थामैंनाषि बालकनै स्नानकरावैतो नंदानाम मातृकाको दोष दूरि होय १ ईंतरैदिनच्यारिकरै अर बालकके सिरस्यूं मीढाकोसींग नींबकापान शिवनिर्माल्ययांकी धूणीदेतो बालक आछ्योहोय अथ उताराकोमंत्रलि० ॐ नमोभगवते रावणाय हन्हन् मुंचमुंच स्वा हा ३० अथ वालकका जन्मसूं दूसरेदिन दूसरेमहिनै दूसरेवरस शुभदानामक मातृकारावणकीबहण बालकनैं दोष करैछे तींकाल क्षणलि० प्रथमज्वर होय नेत्र मीचैनहीं शरीर कांपिवोकरै नींद आवै नहीं पुकारवोकरै बोलैनहीं वेंके आछ्या होवाकेवास्ते बलि नामउतारो लिषूछूं जींकरिबालकनैं सुषहोय सवासेर चावल दहीं माछलांको मांस दारू तिलांको चूर्ण येसारासरावामैं मेलिपश्चिम दिशानैं चौहटै तीन ३ दिन संध्यासमैं बालकऊपर उतारोकरैतो पाछे शांतिकाजलसूं बालकनै स्नानकरावै पाछे शिवनिर्माल्य षस विलाईकारोम घृत दूब ईंकी वालकके धूणीदे अथ उताराको मंत्र लि० ऊंरावणायहन् २ मुंच २ हुंफट्स्वहा चौथैदिन ब्राह्मण भो जन जथाशक्ति करावैतो शुभदाको दोषजाय ३१ अथ तीसरैदिन तीसरै मासतीसरै वर्ष पूतनानाम रावणकी बहण बालकके दोष

न. टी. जो अरुचिया उपायामैं राषैछै. ज्यांकीहमारी समझमैं बडीभूलछै कारणये उप चार बालग्रहांका सत्यछै. अर बालक सुषीहोयछै. अर वेबालक पुष्टहोयछै. अर याउपचा रांसूं बालकांकी वृद्धिहोयवासूं संततीवधैछै.

करैछे तींकोल० प्रथम बालककै ज्वर शरीरकांपै ओबोलैनहीं मूं ठिषोलैनहीं पुकारिवो करै आकाशमांहि देषवोकरै वे बालकका सुषकै वास्तै वेंको उतारोलि० नदीका दोन्यूंतटांकी माटी गाढी ले तींको पूतलो करि पूतलानैं सरावामैं मेलै वेंकै माप तांबूल रक्तपुष्प रक्तचंदन रक्त ७ सात ध्वजासात दिवामांस सुराभातभेली दक्षिण दिसामै तीसरै प्रहर चौहटे बलिदे पाछै शिवनिर्माल्य गूगल शिरस्यूं नींबकापान मींढाकोसींग यांकीधूणी दिनतिन तांईदे अथ उताराको मंत्रलि० ॐनमोरावणायनमः हन् २ मुंच २ त्रास यत्रासयस्वाहा. चौथैदिन ब्राह्मणभोजन करैतो बालककै आराम होय ३२ अथ चौथैदिन चौथैमास चौथैवरस मुषमंडिका नामरावणकी बहण तींको देशकाल लक्षणलि० प्रथम जुरहोय कांधी नवैनहीं नेत्रफाट्यौ रहै वे बोलैनही रोवोकरै सोवैघणो हाथकीमूठि बांधीरहै वेंका सुषकै वास्तै उतारोलि० नदीका दोन्यांतटांकी माटी लेतींको पूतलोकरै वेंकै आगै कमलका फूल मेलैगंध तांबूल सुपेदफूल चारि दिवातेरापूवा माछलाकोमांस सुरा छाछिये सारासरावामैं मेलजे पाछै उत्तरदिशामैं तीसरै प्रहरचौहटै बलिदेतो बालककै सुषहोय अथ उताराको मंत्रलि० ॐनमोरावणाय हन् २ मथ २ स्वाहा. चौथैदिन ब्राह्मण भोजन करैतो बालक आछ्यो होय ३३ अथ पांचमैदिन पांचमैं महिनैं पांचवै वरष पूतनानाम मातृकारावणकी बहण तींका दोषांका लक्षण लिष्यते. प्रथम जुर होय. शरीरकांपै ओबोलैनहीं हाथकी मूठी षोलैनहीं अथ वेंका आछ्या होवाको उतारो लिष्यते कुह्मारका चाककी माटीले तींको पूतलो करैतींके आगेगंधतांबूल चावल सुपेद फूल पांचध्वजा पांच

न. टी. अनुभवीक वर्तमानलि० कोई कोई वाडीमैं पेठा. षरबुजा. काकडी इत्यादिककी वेलां होयछै सो कोई समयमैं फूलषीरवा लागै अर फलगलवालागि जायछै जदांमाली लोगवे वाडीमैं धूपध्यान तंत्रमंत्रादिकरैछै. जदांफलसाबूत उतरैछै.

दिवा पांचवडा ईशान दिशामें उतारोमेले पाछे शांतिका जलसूं स्नानकरावै पीछे शिवनिर्माल्य सांपकी कांचली घृत नींबका पान यांकीधूणीदेतौ बालक आछ्यौ होय उताराको मंत्रलिष्यते ऊंनमो रावणायनमः चूर्णय चूर्णय स्वाहा चौथेदिन ब्राह्मणभोजन करावैतौ बालक आछ्योहोय ३४ अथ छठेदिन छठेमास छठेवरस शकुनीनाम मातृका रावणकी बहण तीकादोसको लक्षणलि० प्रथम जुरहोय शरीरकांपै रात्रिदिनमें सुष होयनहीं ऊंचोदेषै वेंकासुषकैवास्तै अथ उतारोलि० गोहाका चूनको पुतलोकरै सुपेद फूल लालफूल पीलाफूल मद्य मांस दिवा १० ध्वजा १० वडा १० दूध जामुणीमांस दारु यांकोउतारो अग्निकोणमें मध्यान्हसमै मेलैपाछे सीतलजलसूं स्नानकरावै पाछे शिवनिर्माल्य ल्हसण गूगल सिरस्यूं सांपकी कांचली नींबकापान घृतयांकी धूणी अथवा उताराको मंत्रलि० ऊंनमोरावणाय चूर्णय २ हन् २ स्वाहा ३५

अथ सातवें दिन सातवें माससातवें वरस शुष्क रेवतीनाम मातृका रावणकीबहण तींका दोषकालक्षण लिष्यते प्रथम जुरहोय गात्रकांपै मूठी बंधीरहे रोवै बहुत तींका सुषकै वास्तै उतारो लिष्यते नदीका तटको माटीको पूतलो करै तींके आगे लाल फूल मद्य तांबूल लाल चावलकी षीचडी दशदिवा मांस दारु ध्वजा १३ पश्चिम दिशामें गांवके वारे तीसरे पहर उतारोमेलै पाछे स्नान करावै पाछे शिवनिर्माल्य मींढाको सींग सिरस्यूं षस घृत यांकी धूणीदे अथ उताराको मंत्रलिष्यते ऊंनमो रावणायतत्तेजसेहन्

---

* उतारो नामरोगी अथवाबालकरोगी होयछै. जीं ऊपर मंत्रादिक योग अर ऊपर कहीं जो सामग्री सहीत तयार कर उतारो करैछै. जीनैं उतारो कहैछै. सो उतारो अनेक जातको अनेक तरासूं करैछै. रीत हिंदुस्थानमैं उताराकी प्राचीनछै. कारण जुनाग्रंथमैंसूं मिलैछै. परंतु वर्तमानकालमैं तो घणालोक दाक्तरादिक अश्रद्धा करैछै. वास्तै लौकीक परंपरा करणी योग्यछै. नहीं करैं जींकै ऊपर बदनामीछै.

२ मुंच २ स्वाहा. चौथै दिनब्राह्मणभोजनकरैतौ बालक आछ्यौ होय ३६ अथ आठवे दिन आठवैमास आठवैवरष नानानाम मातृका रावणकी बहण तींको दोष लक्षण लिष्यते जुरहोय शरीरमैं दुरगंधिआवे आहारले नहीं शरीरकांपे वेंकासुषकै वास्ते उतारो लिष्यते. लालफूल पीलीध्वजा रक्तचंदन षीरमांस सुरायांको बलि प्रभातसमैं ईमंत्रसूं दे ऊंनमो रावणाय त्रिलोक्यविद्रावणाय चतुर्दशमोक्षणाय ज्वरहन् हन् ऊं फटस्वाहा ३७ अथ नवे दिन नवैमास नवैवरष सूतिकानाम मातृका रावणकीबहण तींका दोष लक्षण लिष्यते जुरहोय शरीरमैं पीडाहोय छादणी होय वेंकासुषकै वास्तै उतारो लिष्यते नदीका दोन्यूंतटांकी माटीको पूतलोकरे सुपेद वस्त्रपहरावे सुपेद फूलगंध तांबूलदीवा १३ ध्वजा १३ उत्तर दिशामैं गांवकै बारै उतारो करैपीछे शांतिका जलसूं स्नान करावे गूगल नींबकापान गायको सींग सिरस्यूं घृत यांकी धूणीदे अथ उताराको मंत्र लिष्यते ऊंनमो रावणाय हन्हन् स्वाहा चौथैदिन ब्राह्मणभोजन करैतौ बालक आछ्यौ होय ३८ अथ दशवैदिन दशवैमास दशवैवरष क्रियानाम मातृका रावणकीबहण तींका दोषको लक्षणलिष्यते ज्वरहोय शरीरकांपै रोवै मलमूत्रकरिदे अथ वेको उतारोलि० नदीका दोन्यूंतटांकी माटीको पूतलो करै पाछै गंध तांबूल रक्तफूल रक्तचंदन ध्वजा ५ दीवा ५ पूवामांससुरा वायव्य कोणमैं बलिदे पाछै काकविष्ठा गऊको सींग विलाईका रोम. नींबकापान घृत यांकी धूणीदे उताराको मंत्र ऊंनमो रावणाय चूर्णितहस्ताय मुंचमुंचस्वाहा चौथै दिन ब्राह्मण भोजन करैतौ आछ्यौ होय ३९

न. टी. बालकांका सुषकै तांई जो कह्याछै सर्व जतन ऊपर ध्यान कर्णो. अर यामैं जो कमती तथा जादा करणौ होयछै सुविद्वान वैद्यलोकछै. शास्त्रानुकूल तथा ज्यांकी निर्मल बुद्धिकृपालु दयावान यशधारी ज्यानै.

अथ इग्यारवेदिन इग्यारवे मास इग्यारवैवरषपिपीलिकानाम मातृकारावणकी बहणतीका दोषको लक्षणलिष्यते. ज्वरहोय आहार लेनही अर वेंकासुषके वास्ते वेंकीबलि लिष्यते गोहांका आटाको पूतलो करै वेपूतलाकामूंढाकै दूधकीधारदे पाछै रक्तचंदन पीलाफूलगंध तांबूल दिवा ७ वडा ७ मालपुवा मांससुरा पूर्वदिशामैं उतारो मेलै पाछै शांतिका जलसूं स्नानकरावै पाछै शिवनिर्माल्य गूगल गऊको सींग सांपकीकांचली घृत यांकी धूणीदे अथ मंत्र लिष्यते ऊंनमो रावणाय मुंचमुंचस्वाहा चौथेदिन ब्राह्मण भोजनकरावै तो बालक आछ्यो होय ४० अथ बारवेदिन बारवैमास बारवैवरष कामुकानाम मातृका रावणकीबहण तींका दोषको लक्षण लिष्यते. ज्वरहोय हसै हाथसूं दूरिकरै पुकारैघणो सासघणो ले अथ वेंकीबलि लिष्यते. गोहांको पुतलो करै पाछै गंध तांबूल सुपेदपुष्प ध्वजा ७ मालपुवा ७ यांकी बलिदै पाछै शांतिका जलसूं स्नान करावै पाछै शिवनिर्माल्यगूगल सिरस्यूं घृत यांकीधूणीदे अथ उताराको मंत्रलिष्यते ऊंनमो रावणायमुंच मुंच हन् २ स्वाहा चौथे दिन ब्राह्मणभोजन करावैतो बालक आछ्यो होय ४१ यो रावणको वणायो कुमारतंत्र चक्रदत्तमैं लिष्योछै. अथ बालकांकारोगांकी ओर उत्पत्ति लक्षण लिष्यते धायकाभाख्यागरिष्ट भोजनकरयांसूं अर विषम वायपित्तका आजारांसूं बालकका शरीरमैं दोषहैसो कोपकूं प्राप्ति होयछै. अर ऐसैही कुपथ्यका भोजनसूं धायकास्तनमैं प्राप्तिहोय दूधद्वाराबालककै रोगनैं करैछै. धायका वायका दुष्ट भोजनसूं वायदुष्ट होय अर ओवायदूधमैं प्राप्ति होय तदि ओ दूध पीवै जदिबालककौ वायका रोग होयछै. तदि ओबा

न. टी. कमवेश उपचार करणैकी छूटछै कारण ज्यांका निर्मल हियामैं आयुर्वेदका सर्व क्रमजचरह्याछै. अर वेईश्वरी शक्तिनैं समझैछै. जैसै सतरंजकारवेलकी चाल तथा किस्त तथा मात ये सर्वजचैछै जैसै.

लकषीण होजाय मूंढोसुपेद होजाय शरीर कृस होजाय अर वेंको मलमूत्रनीठऊतरे इंनै आदिलेर वायका और रोगछे ऐसेही बालक पित्तका दुष्टको दूधपीवैतौ बालककै पित्तकारोग पैदा होयछे. वे बालककै पसेव आवै मलपतलो होजाय. शरीर पीलो हो जाय तिसघणीलागै शरीरगरमरहै इंनै आदिलेर पित्तकारोग होय छे. वेकै लालघणी पडै नींदघणी आवै जडघणोरहै शरीरसूनोरहै ने त्रमूंढोसारोशरीर भार्योरहै अर जुरनै आदिलेर और सर्वरोगछे सोवडा आदमीकै जो होयछे सोही बालककै जाणिजे. अर बालककै जोरोग होयछे सो वडा आदमीकै कोई होयनहीं तालुकंठकनै आदिलेर अथ तालुक कंठकको लक्षणलि० तालुवाका मांसमैं बालककै कफ कोपकरै जदिवेकै तालवामैं कांटा पडिजाय अर वेंको तालवो वेठिजाय अर तालवाका वैठिवासूं बोवांको दूध पीवैनहीं मलपतलो व्हैजाय तिस घणीलागै आंषि दूषै कंठमैं मूंढामैं पीडा होय माथो ऊठैनहीं वमनकरै १ अथ महापद्मरोगको लक्षणलिष्यते बालककामस्तकमैं अर गुदामैं रोगपैदा होय अर रतबावपैदाहोय अर पद्मकावर्णसिरीसो जींकोवर्णहोय सोवातीन्यूं दोषांकाकोपसूं होयछे. प्रथम ओरोग कनपट्यांमैं होयछे पाछे कनपट्यांसूं हियामै आवै पाछे हियासूं गुदामै आवै ऐसेही पेडूसूं गुदामैजाय अर गुदासूं फेरिहियामै जाय अर हियासूं सिरमैजाय २ अथ कुकूणकरोगको लक्षणलिष्यते. कुंकूणकरोग दुष्ट दूधकापीवासूं बालककैही होयछे. वेंका नेत्रदूषै. नेत्रांमै षाजिआवै आंसूं वारंवार घणापडै अर ओवालक ललाटनेत्र नांक यांनै घसिवोही करै अर तावडाकानी देषैनही अर वेकी आंषिषूलै नही इनै कुकू

न. टी. वैवैद्यवरकी आग्यांकैअनुकूलरहणौ चाहिजै. जोबालकांका रोगछैसो सर्वलिष्या छै. अर जतनबी लिष्याछै. परंतु निरपेक्षतानहीछै. निरपेक्षतातोकेवलवैद्य विद्वानौंकी सहायतासौं होय. जैसैं पुराणोपसारी औषधीको भेद.

णकरोग कहिजै ३० अथ तुंडी गुदापाक रोगको लक्षण लिष्यते. बालककी गुदा पकिजाय अर वेंकीनाभिमैं पीडाहोय तीनैं तुंडि गुदापाक रोगकहिजै ४

अथ अहिपूतनारोगको लक्षण लि० बालककीगुदामलमूत्रसूं लीपी रहवोहीकरै अर गुदानैं धोवै अथवा कपडासूं पूंछे वातपावै जदिषाजिआवै. अर गुदालालरहै अर वो बालकगुदानैं षुजालैं तदि वेंको फोडाहोय वेकी गुदापाणीसूं झरवोकरै अर वेंकी गुदा मैं व्रणहोजाय भयंकर वेनैं अहीपूतनारोग कहिजै ५ अथ अजगल्लिरोगको लक्षण लिष्यते जींका शरीरमैं चीकणालाल येक वर्णका मूंगप्रमाण घणीफुणस्या होजाय अर वेमैं पीडनहीं होय औकफवायसूं ऊपजैछै. ईनै अजगल्लिकाकहिजै ६ अथ पारिगर्भिकरोगको लक्षण लि० बालक हैसो गर्भिणी लुगाईको दूध पीवै जींकै षासीहोय अग्निमंद होय शरीरमै दाहहोय अर तंद्रा होय षीण पडिजाय अरुचिहोय भौलिआवै अरवेंको पेट वधिजाय वेनैं पारिगर्भकरोग कहिजै ७ अथ बालकका दांतांको रोगलि० बालककै दांतांनैं आवतां ज्वरहोय पेट छूटजाय छाछीहोय छादै माथो दूषै. आंष दूषै रतवावहोय येलक्षण दांतरोगांका जाणिजै. ८ अथ बालकांका रोगांका जतनलि० जो वडा आदम्यांकै रोग होयछै अरवोही रोग बालकांकै होयतौ वेहीजतन वडा आदम्यांकैकरै सोही बालकांका कीजै अर बालकनै औषध दीजे सोरती येकेक वधती दीजे वरस येकतांई अर दूसरावरषसूं मासो १ दीजै यामर्यादाछै अर बालककै हाथ लगायां रोवैतठे रोगजाणिजे अर वेकोजतन कीजै अथ बालककी ज्वरको विशेष जतनलि० नागरमोथो हरडैकीछालि नींबकीछालि पटोल यांको काढोकरि तीमै सहतनाषि पाछै बालकनै प्यावैतौ बालककी सर्वप्रकारकी ज्वरजा

य २ इति भद्रमुस्तादिक्काथः ९ अथ बालककों ज्वरअतिसार होय तींकोजतनलि० नागरमोथो, पीपलि, अतीस, काकडासींगी, यां कोचूर्ण करिसहतसूं बालकनें चटावैतो बालककों ज्वरातिसार जाय अर षासनें वमननें दूरिकरै १० इति चातुर्भद्रादि० अथ बालकका अतिसारको जतनलि० बीलकीगिरि धावड्याका फूल नेत्रवालो लोद गजपीपलि यांकोकाढो सहत नाषिदेतो बालकांको अतिसार जाय ११ अथ बालकांका भयंकर अतिसारको जतनलिष्यते मजीठ धावड्याका फूल लोद गौरीसर यांकोकाढोकरि तींमें सहत नाषिदेतो बालककों भयंकरभी अतिसार जाय १२ इति समंगादिक्काथः अथ बालकका आमातिसारको जतनलि० वायविडंग अजमोद पीपलि यांनें मिहीवांटि चावलांका पाणीमें देतो आमातिसारजाय १३ इति विडंगादिक्काथ. अथ बालकका रक्तातिसारको जतनलि० मोचरस मजीठ धावड्याका फूल कमलकीकेसरि यांनें मिहीवांटि साठ्याचावलांका मांडिकैसाथिदेतो बालककों रक्तअतीसार जाय १४ अथ बालकांका सर्वप्रकारका अतीसारको जतनलि० सूंठि अतीस नागरमोथो नेत्रवालो इंद्रजव यांको क्काथदेतो वालकांको सर्व प्रकारको अतीसारजाय १५ अथ वालकांकी मोडानीवाहीको जतनलि० चावलांकी षील महलौठी महुवो यांनें मिहीवांटि मिश्रीअर सहतमें चटावैतो बालककी मोडानिवाहीजाय १६ अथ वालककी संग्रहणीको जतनलि० हलद चव्य देवदारु कट्याली गजपीपलि पृष्ठपर्णी सौंफ यांनें मिहीवांटि सहत घृतकैसाथि चाटैतो संग्रहणीनें पांडुरोगनें ज्वरातिसारनें दूरिकरै

* बालकको रक्त अतिसार दुर्घट होयछै. जीनैं आरामकरवाकै वास्तै अनेक औषधीछै परंतु अतिसारमैं बालककै षास होय जदाभय युक्तव्याधि जाणिजै. वास्तै अतिविष. जीनैं अतीस कहैछै. अर मोचारसजीनैं सुपारीका फूल कहैछै. धावड्याका फूल. नागरमोथो इत्यादि श्रेष्ठछै.

अर भूषलगावैछै. १७ इति रजन्यादिचूर्णम् अथ बालकका षास को जतनलिष्यते नागरमोथो अतीस अरडूसो पीपलि काकडा सींगी यांनैं मिहीवांटि सहतकेसाथि चाटैतौ बालककौ पांच प्रकारको षासजाय १८ इति मुस्तादि० अथ षासको और जतनलिष्यते कट्यालीका फूलांकी केसरि तीनैं सहतसूं चाटैतौ बालककी षासिजाय १९

अथ षास सासकोजतन लि० मिनक्कादाष अरडूसो हरडैकी छालि पीपलि यांनै मिहीवांटि सहत अर घृतकै साथि चाटैतौ सास अर षासजाय २० इति द्राक्षादि० अथबालककी हिचकीको जतन लि० कुटकनै मिहीवांटि सहतसूं चटावैतौ बालककी हिचकी अर छादणीजाय २१ अथबालककी छर्दिको जतन लि० आमलीकीगुठली अर चावलांकीषील सींधोलूण यांनै मिहीवांटि सहतसूं चाटैतौ बालककी छर्दिजाय २२ अथ बालकदूधछादे तींको जतनलि० कट्यालीकाडोडा कोरस पीपलि पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठि यांनैं मिहीवांटि सहत घृतसौं चाटैतौ बालक दूधछादेनहीं २३ अथ बालकका पेटमैं आफरोहोय अर सूलचाले तींको जतन लि० सींधोलूण सूंठि इलायची सेकीहींग भाडंगी यांनै मिहीवांटि गरम पाणीसूं लेतौ बालककौ आफरो अर सूलजाय २४ अथ बालकको मूत्रथंबिगयो होय तींको जतन लि० पीपलि मिरचि छोटी इलायची सींधोलूण यांनै मिहीवांटि मिश्री अर सहतसूं चाटैतौ मूतरूकिगयो होय सो आछीतरै ऊतरै २५ अथ. बालककै लालघणी पडै तींको जतन लि० गौरीसर तिल लोद यांको काढोकरि सहत नाषि बालकको प्यावैतौ बालकका मूंढाकी लाल प

न. टी. बालकांका सर्व अंग अंग तपासवामैं आलस नहीं करै अर दूधको आधारछै. जींकी निगाराषै. कारणमाका दूधसौं. वाधायका दूधसौं विकृती होयछै. सुंज्यो दूधकी चूषा वाली होय जीनै शुद्ध अहार शुद्धव्यवहार राषणौ.

डती रहै २६ अथ बालककामूंढामें छाला होय तींको जतन लि० पीपलकीवकल अर वेंका पान यांनें वांटि सहतमें मिलाय चटावै तौ बालक काछाला आछ्याहोय २७ अथ बालककी नाभिकै सो जोहोय तींको जतन लिष्यते पीलीमाटीनें अग्निसूं लालकरि दूध सूं नाभिकै सेकैतौ बालककी नाभिको सोजोजाय २८ अथ बालक की नाभि पकिगईहोय तींको जतनलि० हलद लोद फूल प्रियंगू यांनें सहतसूं वांटि नाभिकै लेपकरैतौ नाभिको पकिवो दूरिहोय २९ अथ बालकंकी गुदापकिजाय तींको जतन लि० रसोतनें पा णीमें पीसि गुदाकै लेपकरैतौ गुदापकतीरहै ३० अथवा संष मह लौठी रसोत येतीन्यूंवांटि लगावैतौ बालककी गुदापकतीरहै ३१ अथ बालककै दांतदोहरा आवै तींको जतन लि० धावड्याकाफू ल पीपलि यांनें आंवलाकारसमें बालककामसूढांकै लगावैतौ दांत आछीतरैआवै ३२ अर लाक्षादितैलसूं बालकका ज्वरादिक सर्वरोगजाय ३३ इति श्रीबालकांका सर्वरोगांकी उत्पत्तिलक्षण जतनसं० येसर्व भावप्रकासमैलिष्याछै इति श्रीमन्महाराजाधिरा जमहाराजराजराजेंद्र श्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसाग रनामग्रंथे बालकाका सर्वरोगांका भेदसंयुक्त उत्पत्तिलक्षण जतन निरूपणंनामएकविंशतिमस्तरंगः २१

२२ अथवाजी करणाधिकारलि० वाजीकरणकहजै कोई जो पुरुष दीषतकोतो पुष्टदीषै अरओनपुंसकहोय स्त्रीका कामको नही होय तींको जतनलि० ओनपुंसक पुरुष सात प्रकारका होयछै तींकी उत्पत्ति लक्षणलि० स्त्रीसूंरमवाकी इच्छाकरै अर संग होयनहीं यांकारणासूं लिंगऊठै नही तीनै नपुंसक कहिजे सोकारणलिषूंछूं

न. टी. अनेकरोग बालकांकाछै. ज्यांकै आराम होणेको श्रीदरबार परोपकारकै अर्थ कृपायुक्त होयकर फरमायाछै. सोस्याणामनुष्यांनें कबूलकरणा योग्यछै. अर केईक अमा न्य करैछै स्वाभिमानसौं. ज्यानैं मनुष्यकैसै कह्याजाय.

कडवीवस्त पटाई गरमलूण यांका घणाषावासूं वीर्यको नासहोय अथवा भयसूं अथवा सोकसूं क्रोधनें आदिलेर तींका करिवासूं वीर्यको नासहोय तीसूं नपुंसक होय अथवा पुत्र स्त्रीधननें आदिलेर तींकानाससूं नपुंसकहोय अथवा रोगांका आवासूं नपुंसक होय अथवा अतिमैथुनकाकरिवासूं वीर्यको नासहोय तीसूं नपुंसक होय अथवा हाथकी कहींतरे चोटलागिवासूं लिंगकी नस मरिजाय तीसूं नपुंसक होय घणा ब्रह्मचर्य रहवासूं नपुंसक होय ईने आदिलेर औरभी कारणछे यांकारणांसूं कहींतरे लिंगकीनस टूटे सो असाध्य जाणिजे अथ नपुंसकपणाका दूरिहोवाका जतन लि० मधुरवस्तुनें आदिलेर नानाप्रकारका मनोहर अतिस्वाद इसा जो भोजन त्यांकरि नपुंसकपणो जाय २ अथवा महासुंदर जोस्त्री तींकीवाणी कानानैं सुंदरलागै तींकरि नपुंसकपणो जाय ३ अथवा तांबूल सुंदर आसवको पीवो उपवन पुष्टाईकी औषधि दूध मिश्रीका संजोगकी मृगांक चंद्रोदयनैं आदिलेर सातो धात दधि सिषरणि उडद येसर्ववस्त नपुंसकपणांनैं दूरिकरैछे अथवा अमरसनैं आदिलेर भोजन भीमसेनी कपूर कस्तुरीका संजोगकी पानकीवीडी ईनैं आदिलेर औरभीवस्त तींसूं नपुंसकपणो जाय ४ अथ गोक्षुरादिचूर्णलिष्यते गोषरू तालमषाणा आसगंध सतावरी सुपेदमूसली कौंचिकाबीज महलौठी षरैटीकाबीज गंगेरणी कीछालि येसर्व बराबरिले त्यांनें मिहीवांटि ईमैंमिश्री अनुमानमाफिक मिलाय औटाया दूधकैसाथि टंक ५ रातिनें रोजीनाले अर पथ्यरहैतो नपुंसकपणो जाय ५ अथ सुपारीपाकलि० दीषणी सुपारीसेर ऽ॥. तीनें दिन २ जलमैंभिजोवें पाछे वेनेंमिहीकतरि सु

न. टी. वाजीकरण अधिकार लिष्योछै. जीमैंयोभेदछै. ज्यानैश्रीपरमेश्वरकी इनातकरी थकीशक्तिछै. ज्यानै तो कोईबीरीतसौंयां उपचारांकी गरजनहीछै. अर पूर्वजन्मका पालकांसूं जोशीणांहोय गयाछै ज्यानै तो कलापकरणाही पडशी.

कायलै पाछै वेंको चूर्णकरै अर वस्त्रसूं छाणिले पाछै वेबराबरि घृ
तसूं मकरोय अर अठगुणां दूधमें वेंको परोमावोकरै पाछै अठगु
णी मिश्रीकी चासणीकरै तीमें यो सुपारीको मावोनाषे अर येऔ
षदि ईमें नाषे सोलिषूंछूं इलायची परेटी गंगेरणीकीछालि पीपलि
जायफल लवंग जायपत्री पत्रज सूंठि सतावरी मूसली कौंछिका
बीज विदारीकंद गोषरू दाष सालिममिश्री सिंघाडा जीरो छड वं
सलोचन आसगंध केंसरि कस्तूरी कपूर चंदन भीमसेनीकपूर अ
गर येसारी औषदि टकाटका भरिले पाछै वैद्य आपकी बुद्धिमा
फिकलै और मृगांक चंद्रोदय वंगसार अभ्रक सुगंधद्रव्य मेवो
आपकी बुद्धिमाफिक ईमें नाषे पाछै टका १ प्रमाण ईंकोमोदक
करै मोदक १ रोजीनाषाय अर पथ्यरहैतौ निश्चयही नपूंसकप
णोजाय इति रतिवल्लभ पूग पाकः अथ आम्रपाकलिष्यते पक्वामी
ठा आमकोरस सेर १६ सोलाले तीमें मिश्रीसेर ४ नाषे अर ईमें
घृतसेर १ एकनाषे अर ईनें माटीका वासणमें पकाय गाढोकरि
ईने चासणीसिरीसो करै चांदीकोवासण मिलैतौ ईमै करै अर ईमें
येऔषधि नाषे सूंठि टका ८भर मिरचि टका ८ भर पीपलि टका
२ भर धणौ टका २ भर जीरोटका १ भर चित्रक टका १ भर
पत्रज टका १ भर दालचिनी टका १ भर नागकेंसरि टका १ भर
केंसरि टका १ भर इलायची टका १ भर लवंग टका १ भर जा
यफल टका १ भर कस्तुरी मासा ४ भीमसेनी कपूर टंक १ भर
सहत सेर १ पाछै यासर्वको एकजीवकरि अमृतवानमें भरिराषे
पाछै ईनै टका १ भररोजीना षायतौ नपुंसकपणौ दूरिहोय अर

* आम्रपाक आममिठार सुदारझची सापका जीमैगुठली छोटी होयछै. अर जीमैं रेसो होयनहीं. कलमीआम तथा पायरी आम तथा हापुस आम. इसीजातमै होयछै. चिकटास जीदा. लज्जितवान. ताजा. जामैं ऊपरलिखी औषधी तथा क्रियायुक्त करैतौ गुणघणो होयछै. परंतु क्रियासिद्ध औषधीछै.

स्त्रीसूं संगघणो करावै अर संग्रहणीनैं क्षयीनै सासकारोगनैं अरुचिनैं आम्लपित्तनैं रक्तपित्तनैं पांडुरोगनैं यो आम्रपाक इतनारोगांनै दूरिकरैछै. इति आम्रपाकः अथ हथरसउगैरै कहींतरै नपुंसक होयगयो होय तींको जतनलिष्यते. देसी गोषरूको चूर्णटंक ५ सहत टंक ५ मिलाय बकरीका दूधकैसाथि महिना २ लेतौ नपुंसकपणौ दूरिहोय अथ चंदनादितैललिष्यते रक्तचंदन पतंग अगर देवदारु चीढपदमाष कपूर कस्तुरी केंसरि जायफल जायपत्री लवंग इलायची वडी इलायची कंकोल तज दालचिनी पत्रज नागकेंसरि नेत्रवालो षस छड दारुहलद मूर्वा कचूर सिलाजित नागरमोथो संभालु फूल प्रियंगु लोहवान गूगल षस नषल्याराल धावड्याकाफूल पीपलामूल मजीठ तगर मोम येसारी औषधि चारि चारि मासाले अर यांको मधुरी आंचसूं काढोकरै पाछै ईको चौथो हिसो राषै पाछै ईमैं मीठोतेल सेर १ नाषै फेरिमधुरी आंचसूं पकावै पाछै काढाको रस बलिजाय तेलमात्र आयरहै तदि छाणि पात्रमैं घालि राषै पाछै ईको शरीरकै मर्दन करैतौ बूढो आदमी मोट्यार होय और सरीरका सर्वरोग जाय इति चंदनादितैलम्

अथ वानरीगुटिकालि० कौंछिकाबीज सेर १ यानैं सेर १ गऊका दूधमैं सनेसने पकावै पाछै यांकाछौतरा दूरिकरै पाछैयांको मिहीचूर्णकरै पाछै दूधमैं ओसणि छोटा छोटा ईकावडाकरै गऊका घृतमैं तलै पाछै यांसूं दूणी मिश्रीकी चासणीकरि यांवडाकै गलेफदे पाछै यांवडानैं सहतमैं नाषै पाछै यांनैं रोजीना टंक १० महिनादोय षायतौ नपुंसकपणौ जाय स्त्रीकने पुरुष मोडो खलितहोय वीर्यमोडो पडै इति वानरी गुटिका अथ नपुंसकपणानैं दूरि

न. टी. सोवैक्षीण पुरुषछै. ज्यांकै क्षीणताकारोग अनेकतरैसूं प्रकट होयछै. जीमैं साध्यकष्टसाध्य. असाध्य होय जायछै. विनाउपचारसौं साध्यकोकष्टसाध्य होय. फेरवीविना उपचारसौं कष्टसाध्यको असाध्यहोय.

करिवाको जतन लिष्यते. आकलकरो सूंठि लवंग केंसरी पीपलि जायफल जायपत्री सुपेद चंदन येसारी औषदि अधेला अधेला भरिले अर अफीम टका १ भरले पाछे यांसारांनैं सहतसूं मिही वांटि उडद प्रमाण गोलीकरै गोली १ रात्रिनैं रोजीनाषाय ऊपर सूं दूधपीवैतो वीर्य मोडो पडै अर नपुंसक पणो जाय येसर्व जतन भावप्रकासमैं लिष्याछे. अथवा तिलांनैं कूकडाका अंडाका पाणीसूं भिजोवै वार ११ पाछै वांतिलांनैं टंक ५ रोजीनाषाय ऊपर दूध पीवै तो नंपुंसक पणोजाय. अर घणी स्त्रियासूं संभोग करै अथवा विदारी कंदको चूर्णकरै अरवे चूर्णकै आला विदारी कंदका रसका पुट २१ दे रसुंकावतो जाय पाछैवे विदारीकंदमैं मिश्री सहत अर घृत मिलाय रोजीना टंक २षाय ऊपर दूध पीवै तो बूढोभी मनुष्य जवान होयजाय योवृंदमैं लिष्योछे अथवा आवलांको चूर्णकरै पाछे ईचूर्णकै आला आवलाकारसकी पुट २१ देर सुकायले पाछै ईचूर्णनै मिश्री सहत घृत रोजीना टंक २ षाय तो बुढोभी मोट्यार होय यो चक्र दत्तमैंछे. अथ मदन मंजरी गुटिकालि० सूंठि मिरचि पीपलि यांतीन्यांका चारी भागकरै पाराको एकभाग अर वंगका दोय भागकरै यांसारांकी बराबरि सतावरी तज पत्रज नागकेंसरि इलायची जायफल मिरची पीपलि सूंठि लवंग जायपत्री यासारांका दोय भागपाछे यां सारांनैं मिहीवांटि मिश्री सहत घृतमैं गोली टंक ५ कै अनुमानकरै पाछे गोली १ रोजीनाषाय उपरसूं दूध पीवैतो बूढाभी जवान होय इतिमदनमंजरी गुटिका० येजोगतरंगिणीमैंछे. अथवा अफीम पारो येबराबरिले पाछे यांदोन्यांनैं धत्तुराका बीजांका तेलमैं मर्दन करैतो दिन

न. टी. असाध्यमैंभी प्रबलउपचारनही होयतौ मरणांत प्राप्तिहोय जीसौं उपचारकरणो योग्यछै. अर जोरोगतो अल्पछै. ओर जींकै मोटामोटा उपचार होयतोभी आरामनहीहोय तौ वेरोगनै पूर्वजन्मकृतजाणनौ.

३ पाछे ईमें मिश्री अर भांगि बराबरि मिलाय रतिएकषाय ऊप
रि दूध पीवेंतो वीर्य पडैनहीं अर नपुंसकपणो ईसू जाय येसार
संग्रहणीमेंछे. अथवा जायफल अकलकरो लवंग सूंठि केंसरी पी
पलि कस्तुरी भीमसेनी कपूर अभ्रक यांसारांकी बराबरि अफीम
पाछे यांसारांने मिहीवांटि मूगप्रमाण गोलिकरे पाछे गोलि १
तथा २ लेतो वीर्य पडैनहीं अथ नागार्जुनी गुटिका लिंगलेपकी
लि० चीणीयोंकपूर सुहागो पारोयेबराबरिले यांमें पाछे अगस्थ्या
कोरस सहत यामे दिन १ षरलकरे पाछे लिंगलेपकरे पहरएक
राषे पाछे लिंगने धोयनाषे पाछे स्त्रीसूं संगकरेतो वीर्य मोडो पडे
अथ पट्टी लिंगलेपकी लि० सुपेद कंडीरकी जडकीवकल अकल
करो अजमोद कालाधत्तुराकाबीज जायफल यांसारांनें जलसूं
मिहीवांटि मिरचि प्रमाण गोलीबांधे पाछेगोली १ मनुष्यकामूतसूं
घसि लिंगलेपकरेतो नपुंसकपणो जाय वीर्य मोडोपडे अथवा सू
रकोघृत सहत यांदोन्यांनें षरलमें घसि लिंगलेपकरे महिना १
तांईतो लिंगकी सारी कसर मिटै अथवा सुपेद कंडीरकी जडकी
छालि तीनें दूधमेंजमाय घृत काढे पाछे ईघृतमें मोहरो जायफल
अफीम जमालगोटो अनुमान माफिक मिलाय लिंगलेप दिन ७
करे ऊपरपान बांधे ब्रह्मचर्यरहेतो नपुंसक पणोजाय इतिश्री
वाजीकरणाधिकार नपूंसकपणाका दूरिकरिवाका संपूर्ण इतिश्री
मन्महाराजाधिराजमहाराजराज राजेंद्रश्रीसवाई प्रतापसिंहजी
विरचिते अमृतसागरनामग्रंथे नपूंसकपणाकादूरिकरिवाका लक्षण
भेद संयुक्त जतन निरूपणंनामद्वाविंशतिमस्तरंगः संपूर्णः २२

२३ अथ शरीरकीपुष्टाईका जतन बूढापानें दूरिकरिवाका सातूधा

न. टी. जो पूर्वजन्मकृतपापसौं रोगकी संप्राप्तिछै ज्यानैं कर्मविपाकादिकग्रंथांमैं प्रायश्चित लिष्याछै. ज्यांसूं निवृत्तकरणोयोग्यछै. अर दान तप तीर्थ हरिस्मरण करणो योग्यछै कारण रोगीकी संतती रोगली होयछै.

तसात उपधात अर चंद्रोदयनैं आदिलेर रस त्यांकीक्रिया अर वाका
षावाकीविधिलि० सोनो १ रूपो २ तांबो ३ पीतल ४ सीसो ५ रांग
६ लोह ७ अथ मृगांककी विधिलि० सोनाका पतलाउरक करायता
ता करै तेलमैं कांजीमैं छाछिमै त्रिफलामैं गोमूतमैं कुलत्थका का
ढामैं वारतीनतीन बुझावै पाछै सोनासूं दूणो पारोले अर सोना
का उरकानैं षटाईकै साथि षरलकरै पाछै वेंको गोलोकरै पाछै
वांदोन्यांकी बराबरि सोधी गंधक आंवला सारवे गोलाकै नीचै ऊ
परि देर सरावा संपुटमैं मेलिवेंकै कपडमिट्टीदे गजपूटमैं फूंकिदे
ईसीतरै ईंकै पुट ३ देतदियो मृगांकचोषोहोय १ अथवा सोनाका
चोषा उरकले तींको सोलवो हिसो ईमैं सीसोनाषै या दोन्यांनै ष
टाईसूं षरलकरै पाछै ईंकै नीचै ऊपरि सोधीगंधक यांकी बराबरि
ले अर सरावामैं मेलि वेंकै कपडामिट्टीदेर गजपूटमैं फूंकिदे इसित
रै पुट ७ देतो मृगांक चोषो वणै. २ अथवा सोनाका उरक मंगा
य वांकी बराबरि वामैं पारो चरावै षरलमैं षटाईसूं पाछै वांकै कच
नारका रसकी पुट १ दे पाछै वेंकै अग्निझालकारसकी पुट ३ दे
पाछै वेंकै कलहारी जडीका रसकी पुट १ दे पाछै वांनैं सोनाका उ
रकसूं चौथोहिसो वामैं मोतीनाषै अर षरलकरै पाछै वामैं वासकै
की बराबरि सोधीगंधक नाषै पाछैदिन २ षरलकरै पाछै वाको गो
लोकरि सरावासंपुटमैं मेलिवेकै कपडमिट्टी करै गजपुटमै फूंकिदे
पाछै वेनैं स्वांगसीतल हुवांकाढैतो मृगांकचोषोवणै. ३ अथ मृगां
क षावाकीविधिलि० रति १ मृगांकले तीमैं सहत टंक २ मिलाय
तीमैं पीपलि १ मिलाय षायतो सासनैं षासनैं क्षयिनैं अरुचिनैं

---

* मृगांकनामश्रेष्ठ औषधीछै परंतु घणांठकलोककाचोमृगांकवणावैछै. सोलिषूंछूं. गंध
क आंवलासार नौसादर पारो. कथीर समभागषरलकरपहर ४ कांचकीसीसीकै कपड मा
टीकर जीमै भरै आंच ऊपरधरै सीतहुवाकाढैतो सुवर्णका रंगसिरीषी होयछै. जीनै मृगांक
कानामसूं वेंचकरठीगैछै. वास्तै सावचेती राषणी.

आदिलेर सर्वरोगानें दूरि करै महिना दोयषायतौ शरीरन पुष्ट करै पथ्यरहै षटाई उगेरै षायनहीं ४

इतिमृगांकवि० अथ रूपरसकी विधी लिष्यते चांदीका उरक भाग ३ ले अर हरतालका पत्र येक १ भागलै पाछै यां दोन्यांनें षटाईसूं षरल करै पाछै यांको गोलोकरि सरावा संपुटमें मेलि गजपुटमें फुंकिदेइसीतरै पुट १४ देतौ रूपरस निपट चोषोवणै पाछै ईनै रती १ षायतौ घणो गुणकरै अथवा चांदीका पत्राकैनीचै उपरिरूपमष्षी बराबरिकीदे अरसरावासंपुटमें मेलि गजपुटमैं फूंकि देतौ रूपरस चोषो होय. पाछै ईनैं रोजीना रती १ महिनो येक षायतौ घणोगुणकरै १ इति रूपरसविधिः अथ तामेसुरकी विधि लिष्यते. चोषातांबाकापत्र जाडाकराय तेलमैं छाछिमें त्रिफलाकारसमें वारसात सातसोधिलै पाछै वापत्राबराबरि रूपमष्षीवांटि वाकैनीचै ऊपरि देसरावा संपुटमैं मेलि गजपुटमें फूंकिदेतौ तामेश्वर चोषोवणै पाछै ईनै रति १ रोजीना महिनो १ षायतौ सासषासनें आदिलेर सारारोगजाय अर घणोगुणकरै इति तामेसुरकी विधि अथ नागे सुरकी विधि लिष्यते. सीसानैं गालि गालि तेलमैं छाछिमें गोमूतमें कांजीमें त्रिफलाका पाणीमें आकका दूधमें बुझावैवार सातसात पाछै कडछलामें घालि चूल्है चढाय नीचे अग्निवालै पाछै सीसा उपरि पीपलकाछोडाको चूर्ण अर आमलीकाछयौडांकोचूर्ण सीसांसूं चौथाईलैवे सीसा ऊपरि थोडोथोडो नाषतो जाय अर लोहकी कडछीका पींदासूं वेनें रगडतो जाय दिन १ ताई निरंतर पाछै ईनै जंभीरीसूं ऑसणि गज पुटमैं फूंकिदे पाछै ईसीतरै जंभीरीका पुट गजपुट १० दै पाछै नागरवे

न. टी. धातप्रकर्णछै जीमैं. स्वर्ण. रूपा. ताम्र. इत्यादिकछै. क्रिया विधिपूर्वक लिषीछै. परंतु स्वाभाविक भूलसौं वाद्रष्टि दोषसौं वाविपरीत कारणांसूं काचीवा अशुद्ध रहजाय तो विकृती शरीरमैं करैछै.

लका पानका रसकी पुट १० दे पाछै सीसा बराबरिमैंएसीलले तीनैं कांजीसूं षरल करै पाछै टिकडी बांधिसरावामैं मेलिगजपुटमैं फूंकिदे पाछै स्वांग सीतल हुवां काढै इसीतरै पुट ६० देतौ नागेश्वर चोषो होय गुण घणो करै सर्व रोगांनैं दूरिकरै षावाकी मात्रारति १ तथा १॥ अथ दूसरी विधि लि० सीसानै सोधिकडछलामैं चढावै नीचै अग्निवालै केवडाका घोंटासूं रगडतो जाय निरंतर दिन १ वोभस्म होय लाल मात्रारती १ रोजीना दिन २१ षायतौ गुणघणोकरैं इति नागेश्वर विधि. अथ वंगेसुरकी विधि लिष्यते. रांगनै गालि गालि तेलमैं छाछिमैं गोमूतमैं कांजिमैं त्रिफलाका पाणीमैं वार ७ सात बुझावै अर आकका दूधमैं वारसात बुझावै पाछै कडछलामैं घालिचूल्हे चढावै रांगसूं चोथाई पीपलका छोडा चौथाई आमलीका छोडा त्यांनै मिहीवांटि रांगऊपरि नाषतो जाय अर कडछलीका पींदासूं रगडतो जाय पहर दोताईं तदिओरांग भस्महोय पाछै रांग बराबरि हरतालले षटाईसूं षरलकरै गजपुटमैं फुंकिदे ईसीतरै पुट १० देतादि वंगेसुर शुद्धहोय गुणघणोकरै मात्रारति १ अथ रांग ऽ। ले तांबराबरि पारोले त्यांको एकजीवकरि पत्रकरै पछै छाणो १ वडोतीमैं कसेलाकोचूर सेर १ विछायतां उपरि रांगका टूकडामेलै फेरिऊपरी कसेलाको चूरमेलि आसपास छाणादेविना पवनकी जायगांमे फूकिदे वेरांगका फूल्यांहोय जाय योघणो गुणकरै इति वंगेसुरविधिः अथ.सारकीविधिलि० गजवेलिकोचूर कराय तीनै तेलमैं छाछिमैं गोमूतमैं कांजीमैं वार सात ७ बुझावै पाछै आकका दूधकी पुट सातदे अर थोहरिका दूधकी पुट ७ देत्रिफलाका रसकी पुट ७

न. टी. ज्यांनैं अनुपानसौं सुधारणा चाहिजे जैसे स्वर्णसौं विषविकार हुयोहोय तो हरडैमिश्री समभागदिन ३ तीनसेवन करैतौ आराम होय. रूपाका विषविकारपर सहतचीणी सकर समभाग दिनतीन ३ सेवनकरैतौ आरामहोय.

दे दाडूंका पानांका रसकीपुट ७ देइसीतरे पुट देदे भस्मकरे सि लाऊपरि वांटे सोजलऊपरि तीरे जठातांई भस्मकरेतो गुणघणो करे १ अथवा गजवेलिको चूरणकरे तींके नींबूकारसकी अर नौ सादरकी पुट २१ दे गजपुटमें फूंकतोजाय अर वांटतो जायतो सार चोषो होय. अर गुणघणोकरे मात्रारती १ रोजीना षायतो सर्वरोगनें दूरिकरे इतिसारकीविधि अथ सातउपधातूका मारवा कीविधि लिष्यते सोनमष्षी अर रूपमष्षी १ अभ्रक २ मैणसिल ३ हरताल ४ पारो ५ षपर्‍यो ६ सुरमो ७ अथ सोनमष्षीको सोधनलिष्यते सोनमष्षीका भाग ३ सींधालूणको भाग १ यांदो न्यांनें लोहका कडछलामेंघालि बिजोराकारसमें अर जंभीरीकार समें पकावे जठातांई लोहको पात्र लालहोजाय तदि सोनमष्षी शुद्धहोय १ अथ सोनमष्षीको मारणलि० सोनमष्षीनें कुलत्थ का काढामें पीसि सरावा संपुटमें मेलिगजपुटमें फूंकिदे अथवा ते लमेंवांटि गजपूटदे अथवा छाछिमेंवांटि गजपूटदे अथवा बकरी का दूधमेंवांटि गजपूटदेतो सोनमष्षीमरे ईकीमात्रारति १ षायतो गुणकरे १ अथ अभ्रकशोधन मारणवि० काला भोडलनें ले अ ग्निमें तपाय दूधमें बुझावे अथवा चोलाईका रसमें बुझावे अथवा षटाईमें बुझावे तदि अभ्रक शुद्धहोय पाछे अभ्रकका जुदापत्रक रिवानें कूटि अर मिहीकरि सुकायदे पाछे वानें कामलामेंघालि अर वामें सालिघालि अर अभ्रकनें सालिसुद्धां मसलि मसलि कामलामाहिसूं पाणीकरिवारे काढे जुदावासणमें तदि ओधान्या अभ्रक होय पाछे ईअभ्रकनें आकका दूधमें षरलकरे ईकीटिकडी बांधे पाछे सुकाय आकका पानांमें लपेटे ईके कपडमिट्टीदे विनास

न. टी. ताम्रविषविकारसौं विकृतीहुई होयतौ वनतांदूल नामसामक अर मिश्रीसमान भाग जलमैंपीसकर छाण ठंडाईकी तरैपीवैदिन ३ तीनतौ तांमेश्वर कचोरयोहोय जींका विषनैं सांतिकरैछै अनुपानमैंछै.

रावे गजपूटमैं फूंकिदे ईसीतरै सातपुटदे ईसीतरै थोहरीका दूधकी पुट ७ दे ईसीतरै कवारका पाठाकी पुट ७ दे ईसीतरै चौलाईका रसकी अथवा नागरमोथाका काढाकी अथवा कांजीकी अथवा चित्रकका काढाकी अथवा जंभीरीकी अथवा त्रिफलांकी अथवा गोमूतकी यांकी पुट सात ७ ईसीतरैदे पाछै वडकी जटाका काढाकी अर मजीठका काढाकी पुटसात सात देतौ अभ्रकानिपट चोषोवणै अर यो अभ्रक रोजीना रति १ षाय महिना २ दोयतांईतौ प्रमेहनै आदिलेर सर्व रोगजाय अर शरीरनै घणो पुष्टकरै अर नपुंसक पणौ दूरिहोय इति अभ्रकविधिः

अथ अभ्रककी दूसरीविधि लिष्यते सुपेद भोडलले तींबराबरि गुडले तींगुडनैं पाणीमैं घोलै जाडो पाछै भोडलका पत्रांकै जाडोजाडो लेपकरै अर वापत्रांऊपरि सोरो भुरकावतो जाय सोरो भोडलसूं आधोलै अर भोडलकी तह करतोजाय पाछै ईभोडलकी तहनैं छाणामैं फूंकिदे ओ भोडलषिली जाय निश्चंद्र होय योभी गुण करैछै. मात्रा रतीयेक १ की इति अभ्रकविधिः अथ हरतालको सोधन मारणलि० पीली हरतालका पत्रकरि अर वैंकी पोटलीकरि हांडीमैं कांजीघालि डोला जंत्रसूं पहर १ तांई पकायजे पाछै पेठाको पाणी हांडीमैं घालितीमैं डोला जंत्रसूं पहर १ पकायजे पाछै चूनाकी कलिकापाणीमैं पोटलीकरि डोलाजंत्रसूं पहर४ च्यार पकाजे इसीतरै हरतालनैं पचायां हरताल शुद्धहोय अथ हरतालको मारणलिष्यते ईसोधी हरतालनैं षरलमैं मिहीवांटि दूधीकारसमैंदिन २ दोय षरलकरै पाछै षरैटीकारसमैंदिन २ दोय

---

* हरताल अर ओरबी सर्वप्रकारकी धातू तथा रसायण तथा भस्म मोटामोटा रसादिकछै. क्रियासिद्धछै. कोईविद्वांन् वैद्यकनैं सीषकरकरणुं योग्यछै. अर ग्रंथमैं क्रियालिषीछै. सूंससछै. परंतु हस्तक्रियामैं कुशल होयछै. वैद्यपरंपरावालोवास्तै कोई तपासकर रसक्रियाकरसी.

परलकरै पाछै ईंको गोलोकरि छायामैं सुकाय पाछै छीलाकी राष
मैं हांडीमैं दाबिदाबि भरै तींकेवीचि ईंहरतालका गोलानैं मेलै
पाछै ईहांडीनैं चूल्हैचढाय नीचै अग्निबालै क्रमसूं मंदमध्य अर
गाढी अग्निदेदिन ३ तांई निरंतर दैवेंको धूवोनीसरि वादेनहीं अर
धूवो नीसरैतो धूवानैं छीलांकी राषसूं दाबतोजाय पाछै स्वांगसी
तल होय जदि ईंहरतालनै हांडीमाहिसूं काढै तदि हरताल सिद्धि
होय सुपेद होय षावामैं मात्रारती १ षायतो सर्व रोगमात्रनैं या
दूरिकरैछै अर भूष घणीकरैछै. इति हरताल मारणविधिः अथवा
प्रथम हरतालनैं इहीविधिसूं सोधिलै पाछै ईंहरतालनैं कवारका
पाठाकारसमैंदिन ३ परलकरै पाछै ईंकी टिकडीकरै छायामैं सुका
वैं पाछै छिलाकी राषिनैं हांडीमैं दाबि दाबि भरि तींकेवीचि ईंह
रतालकी टिकडीनैं मेलै पाछै चूल्हे चढावै पाछै वेकैनीचै अग्निवा
लै पहर ४ कीपाछै ईंनैं स्वांगसीतल हुवां काढै अर वातोलउतरै
निर्धूम होय ईंनै पानमै रति १ लेतौ याकोढनैं दूरिकरै षावामैं
मोठांचणाकी रोटी अनलुणी षायतो कोढजाय इति हरताल मार
णविधिः अथ चंद्रोदय रसकीविधि लिष्यते सोनाका चोषा उरक
लै टका १ भर अर सोध्यो पारो टका ८ भरलै अथवा हिंगलू
को काढ्यो पारोलेटका ८ भर अर सोधीगंधक आंवलासार टका
१६ भरले पाछै तीन्यांनैं परलमैं घालि नांदणवणिका फूलांकार
ससूं दिन ३ परलकरै पाछै कवारका पाठाका रससूं दिन ३ पर
लकरै पाछै ईंनैं सुकाय काचकी आंतसीसीसीकै कपडमट्टी ७ दे
पाछै ईंनैं सुकाय ईंसीसीमैं येसारी औषदि सोनाकाउरकसमेत
भरै पाछै सीसीको मूंढो मूंदिदे अर वालुकाजंत्रमैं चढाय चूल्हे मे

न. टी. चंद्रोदयरसलिष्याछै शास्त्रविदितरसछै. क्रियाशुद्ध हुवोथको प्रभावीकपदार्थ हो यछै जीमै सर्वगुणयुक्त प्रसिद्धछै. परंतु अंचमैंसीसी साबूतरहणी कठिणछै. जींवास्तै जपा दिक अरु ब्राह्मणभोजन दानपुण्यसैं ऐसारस प्रगट होयछै रसक्रियाछै.

ल्है पाछै नीचै अग्निवाले प्रथम मंद मध्य अर गाढी ईसीतरै बा
लैप्रहर ३२ बत्तीसकी आंचदे पाछै स्वांगसीतल हुवां ईवालुका
जंत्रसूं ईसीसीनैं काढै पाछै ईसीसीमांहीसूं चंद्रोदयनैं काढै डाबामैं
भरिराषे ईंको रंग हींगलू सिरीसो लालहोय पाछै षावामैं मात्रार
ति १ अर ईमैं जायफल भीमसेनीकपूर समदसोस लवंग कस्तुरी
ये सारा मासा ४ मिलाय रोजीना षायतौ गुण घणोकरै ऊपरसूं
औटायो दूध मिश्रीकासंजोगको रुचि माफिक रातिनैं पीवै अर
मांस उगैरै पुष्टाईकी वस्तषाय अर षटाई षायनहीं तौ घणी स्त्रि
यांसूं संभोगकरै अर नपुंसकपणानैं इहचंद्रोदय दूरिकरैछै. वीर्य
कौ बंधेजकरैछै. इति चंद्रोदय करिवाकी अर षावाकी विधि संपूर्ण
अथ रससिंदूरकी विधि लिष्यते. ईनै हरगौरी रसकहैछै. प्रथम
पारानैं सोधैं सोलि० पारामैं षरलमैं घालि हलद अर ईंट अर
धूमसो अर नींबूकोरस ईसूं दिन ३ षरलकरै तदि ईकी सातुकां
चली दूरिहोय. पाछै त्रिफलाकांजी. चित्रक कवारको पाठो सूंठि
मिरचि पीपलि यांमै दिन ३ षरलकरै पाछै लसणकारसमैं षरल
करै दिन ३ पाछै जंभीरीका रसमैं दिन ३ षरलकरै पाछै ईनै हां
डीमैं मेलि दूसरी हांडीको मूंडो जोडै पाछै मूंढाकै षामदै चूल्है च
ढायै अर ऊपरली हांडीकै पींदै आलोकपडो राषै नीचै अग्निवा
लै तदि ओपारो ऊपरली हांडीकै पींदै जाय लागै तदि पारानैं
काढिलै अथवा हिंगलूकोपारो इही विधिसूं काढिले पाछै ईपारानैं
वांझकंकोडकारसमैं षरलकरै पाछै हांडीमैं वांझकंकोडकोरस घा
लि अर ईहांडि माहिला रसमैं येवस्त और घालै सरपाक्षीजडी
अर जमीकंदकोरस अर भांगराकोरस सांभरोलूण सींधोलूण

न. टी. हरगौरी रस नामछै जीनै रससिंदूर कहैछै. परंतु बजारू रससींदूर तो जूदोछै. ईसीक्रियासौं सिद्धकरैतौ रस यथार्थ होयछै. गुणयुक्त होय अर बजारूछै सोभी लालरंग पापडीसी बांधिहोयछै. यथाअजाण ईनैं चंद्रोदयमैं लेवैछै.

अर कांजी ये सारीबराबर हांडीमैं घालै पाछै ईमैं डोलका जंत्रक रि कपडामैं पारो बांधि पहर ४ पकायले तदि इहपारो शुद्ध होय इति पाराशुद्ध० अथवा हजार १००० नींबूकारसमैं सूंठि मिरचि पी पलि राई सांभरोलूण चित्रक हींग येसारी नींबूकारसमैं नाषि दिन २१ ईरसमैं पारानै षरलकरै तदियो पारो शुद्धहोय. इति पाराशुद्ध. पाछै यो सोध्यो पारो टंक ५ भरिले अर सोधी आंवलासार गंध क टका ५ भरले अर दोय टंक नौसादरले टंक २ फिटकडीले पाछै यांसारांनै दिन ३ षरल करै पाछै आतसींसीसीकै कपड मिट्टी ७ दे अरसीसीमैं ये औषदिभरै पाछै सीसीकै मूंढै षामदेर वा लूकाजंत्रमैं सीसीमेलै पाछै ईनै भट्टी ऊपरी चढावै नीचै अग्निवा लै क्रमसूं मंदमध्य अर घणी ईसीतरै अग्निप्रहर ३२ कीदे पाछै स्वांगसीतलहुवां वालुका जंत्रमैसूं सीसीनैं काढै पाछै सीसीमाहिसूं ईरस सिंदूरनै काढिवांटि रति १ रोजीना पानकै साथिषाय अर पथ्यरहैतो सर्व रोगनै जुदा जुदा अनुपानसूं यो दूरिकरैछै अर भूषलगावैछै. अर शरीरनैं पुष्टकरैछै.

इतिहरगौरी रस सिंदूरकी क्रिया० अथवा हिंगूलको काढ्यो पारो अथवा योही सोध्यो पारो अर सोध्यो आंवलाषार गंधक यादोन्यांनैं बराबरिले अर यांनैं बडकी जटाकारसमैं दिन १ षरल करै पाछै आतसीसीसीकै कपड मिट्टी देवेमैं येभरै पाछै ईसीसीकै ई टकी षामदे अर वालुका जंत्रमैं सीसीमेलै पाछै वालुकाजंत्रमैं भ ट्टीपर चढाय क्रमसूं मंदमध्य अर तीक्ष्ण आचदेपहर २१ की पाछै ईनैं स्वांगसीतल हुवा काढै पाछै ईनै सीसीमांहिसूं काढै ईको रंग हिंगलू सिरी षोहोय योरति १ पानमैं षायतो गुण घणो करै सर्व

न. टी. चंद्रोदयकी सीसीमैं तीनजातको प्रगट चंद्रोदय होयछै. जीमैं पीदाकोतो जाडो पापडो होयछै. अर सीसीकै कक्षमैं पतलो जमैछै. जींकीरीत ओरछै. अर सीसीकी नलीमैं ऊंचो चढैछै. जींकीरीत ओरछै. यातीन जातमैं गुणउत्तरोत्तर कमजास्तछै.

रोगांनै दूरिकरै इतिरससिंदूरकी क्रिया० २ अथ पारा मारवा की विधिलि० पारानै षरलमें घालि गूलरीका दूधमें पहर १ षर ल करै पाछै ईंकीगोली बांधै पाछै गूलरिका दूधमें चोपीहिंग घसि ईं हिंगकीमूस २ वणावै पाछैईं पाराकी गोलीनैं मूसिमें मेलि दूस री मूसिको मूहडो जोडि मूषकै षामकरै पाछै ईनै सुकाय सेर १ छाणाकी भोभरिमें पकावै तदि ओपारो सुपेद षिलिजाय ईंकी भ स्महोय याभस्मसर्व रोगमात्रनैं दूरि करैछै. इति पारा मारवाकी क्रिया० अथवा आंधी झाडाकां बीजानैं मिहीवांटि यांकी मूसदो यकरै यामूसिमें गूलरका दूधमें पारानै षरलकरै पाछै पाराकी गो लीबांधि यागोलीमूसिमें मेलि अर पाराकी गोलीकै नीचै ऊपरि द डघलका फूल वायविडंग षेर यांको चूरणकरि मेलै यांमूसिको गोलोकरै पाछै यागोलानैं धवणिसूं कोईलामें धवावै पाछै ईंकै कप डमिट्टी देगजपूटमें फूंकिदे तदि ईंकी भस्म होयतोलऊतरै याभ स्मसर्व रोगांनैं दूरिकरै इति पाराभस्मकी क्रिया० अथ वसंत मा लती रसकी क्रिया लिष्यते. सोनाका उरक मासा १ मोतीमासा २ हिंगलूमासा ३ मिरचि मासा ४ सूरती षपर्‍यो मासा ८ रूपो मासा ८ षपर्‍यानैं गोमूतमें प्रहर १६ डोलकाजंत्रसूं पकावै पाछै यां सारानैं षरलमें घालि माषनसूं षरलकरै योमाषन यांमें सुसै इतनो घालि पाछै नींबूकारससूं षरलकरै ओमाषन सुषिजाय इत नै षरलकरै अर ईंकीचीकणास दूरकरै ईंप्रमाण चाहै जितोकरै पाछै.ईंकी गोली करै पाछै ईनै रती १ पीपलि २ सहतका संजोगसूं षायतो रोजीना विषमज्वरनैं आदिलेर सर्व रोगांनैं दूरिकरै अर

---

* वसंतमालतीरसछै. सूतीनप्रकार तथा च्यार प्रकारकोछै. जीमैं राजवसंतछै. वसंत मालतीछै. क्षुद्रवसंतछै. वसंतछै. किस्तुरी. अंबरसहित राजवसंत होयछै. किस्तुरी अंबरवि ना. वसंतमालती होयछै. जीमैंकि० अं० सुवर्णनहीसो क्षुद्रवसंत होयछै. जीमैंकि० अं० [illegible]

ईनैं पुष्टाईका संजोगसूं षायतौ शरीरनैं पुष्टकरै इति वसंत मालतीरसः अथ हिंगलू मारवाकी विधि लिष्यते हिंगलू चोषो पईसा च्यारभरकी डलीले तीनैं कडछलामैं मेलै ईडली ऊपरि नींबूकोरससेर २ सुसावै पाछै ईहिंगलू ऊपरि कांदाको रससेर ५ सुसावै पाछै ईडलीनैं काढै औरुं कडछलामैं मेलै ईडली कैनींचै ऊपरि सेर १ कांदाकी लुगदी देर पकायलै पाछै इंडलीनैं जुदी काढै पाछै सेर १ कूचीलासेर १ राईसेर १ मालकांगणीसेर १ कांदासेर १ घृतसेर १ सहतयांसारांनैं मिहीवांटि यांको येक लुगदोकरै कडाहीमैं मेलै अर लुगदाकै वीचिया हिंगलूकी डलीमेलै अर ईकै नीचै अग्निवालै पहर ८ की तदियो हिंगलूसिद्धि होय तोलपूरो ऊतरै रंगलालहोय ईकी षावाकी मात्रारति ऽ॥ आधकी अथवा रती १ पानमैं षायपथ्य रहैतौ सर्व रोगांनैं योदूरिकरै भूषघणी लगावै अर नपुंसकपणानैं दूरिकरैछै. इति हिंगलू करिवाकीविधि संपूर्णम् इति पुष्टाईकी सातधात सातउपधातका मारवाकी विधि चंद्रोदयनैं आदिलेर रसांकी विधि संपूर्णम् इति श्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्र श्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागरलामग्रंथे पुष्टाईका सर्व जतन निरूपणंनाम त्रयोविंशस्तरंगः संपूर्णम्. २३

२४ अथ आसवांकाकरिवाकी विधि लिष्यते अथ दसमूलासव लिष्यते सालपर्णी पृष्ठपर्णी दोन्यूंकट्याली गोषरू वील अरण्यु अरलू कुंभेर पाडल यांसारांकी जडलीजे टका ५ पांच भर चित्रक टका २५ पोहकरमूल टका २५ लोद टका २० गिलवै टका २० आंवला टका १६ धमासो टका १२ षैरसार टका १२

न. टी. अनंतरआसवलिष्याछै सोऔषध्यांकायोगसौं गुण भतिभिन्नछै. अरुसर्वगुणासंयुक्त होयछै. ईकी क्रियापरिपूर्ण वाकबहोणीचाहिजे. अरुयंत्रभी आछ्याकलाहीकालाग्यमथका शुद्ध अर अग्निसमतूलराषै. जीसौं सुगंधीवानहोयछै.

विजैसार टका १२ हरडैकी छालि टका १२ कूठ टका १६ मजीठ टका २ देवदारु टका २ वायविडंग टका २ भाडंगी टका २ केथ टका २ वहेडाकीछालि टका २ साठीकीजड टका २ पदमाष टका २ नागकेंसरी टका २ नागरमोथो टका २ चव्य टका २ छड टका २ फूलप्रियंगु टका २ गौरीसर टका २ कालोजीरो टका २ निसोत टका २ संभाल्ल टका २ रासना टका २ पीपलि टका २ सुपारी टका २ कचूर टका २ हलद टका २ सौंफ टका २ इंद्रजव टका २ काकडासिंगी टका २ रिषभ टका २ मेद टका २ महामेद टका २ कांकोली टका २ षीरकांकोली टका २ रिद्धि टका २ वृद्धि टका २ मिनक्कादाष टका ६० सहत टका ३२ धावड्याकाफूल सेर ५ बोरझडीसेर ५ बौलीकीछालि सेर ५ यांसारांनैं आठगुणां पाणीमैं औटाय जींको चौथो हिसोराषिजे अथवा यांसारांनैं जब कूटकरै वडामटकामैं घालिजे ईंकै अनुमान पाणीघालै अर इही पाणीमैं चोषो गुडमण पक्को घालै अर षातकी जमीमैं योमटको गाडिदे मटकाको मुहुंडो ढांकि दिन २१ तांई पाछै ईको जावोऊठै तदिईं जावानैं और मटकामैं घालै दारुकढावाका जंत्रसूं ईनें कलालकना ओर वासणमैं ईं आसवनैं कढालीजै अर वेजंत्रके मूंडे येसुगंधिकी औषदि नाषिजे पोटली करि षस चंदनको चूर जायफल लवंग दालचिनी इलायची पत्रज केंसरि पीपलि येसारी औषदि दोयदोय टका भरिलीजे अर कस्तुरी मासा ४ यांनैंवांटि अर वेकाढिवाका वासणमैं वेजंत्रके मूंढे पोटलीकरि मेलिजै इसी तरै योकरिलीजे पाछै ईनें पुराणोकरि टका २ भर अनुमानमाफिक मदात्ययका प्रकर्णमैं ईंका पीवाकी विधिलिषीछै तिहमाफिक

न. टी. जैसैग्रंथांतरमैं चंद्रहास आसवलिष्योछै. जीमैंसर्व क्रियायुक्तछै. परंतु आंसवांकी विधिवारुणी आसव मुजबछै. परंतु वारुणीमैं आसवमैं भेदछै. आंसवांको यंतर तत्काल सिद्धकरैछै. अर वारुणीको तो जावोजमैं जीमैं घणोअंतरछै. अर ग्राह्य अग्राह्यमै भेदछै.

पीजेतौ क्षयीरोगनैं छर्दिनैं पांडुरोगनैं संग्रहणीनैं अरुचिनैं सूलनैं षासनैं स्वासनैं भगंदरनैं वायका सारांरोगांनैं कोढनैं ववासीरनैं प्रमेहनैं मंदाग्निनैं उदरकासारांरोगांनैं पथरीनैं मूत्रकृच्छ्रनैं यांसा रांरोगांनैं योदूरिकरैछे. अर भूषनैं वधावैछे. अर नपुंसकपणानैं दूरिकरैछे. शरीरनैं पुष्टकरैछे. अर शरीरनैं वीर्यनैं निपट घणोव धावैछे. इति दशमूलासवकीविधिः अर इहींतरैसारा आसव दाष अंगूरनैं आदिलेर करिलीजे अथवा वांका करिवाकी विधिलिष्यते.

अथ मूसलीपाक करिवाकीविधि लिष्यते. सुपेदमूसलीपाव १ ले कौंछिकाबीज टंक २ विदारीकंद टंक २ गोषरू टंक २ सतावरी टंक २ षरैटीकाबीज टंक १ गंगेरणीकीछालि टका १ भर तज टका १ भर सूंठि टका १ भर यांनै मिहीवांटि यांबराबरि घृतमैं यांनै मकरोवै अर यांनैं दूधसेर १० में पकावै अर दूधको षरो मावोकरै पाछै षांडसेर ७ की चासणीकरै लाडुवाकीसी पाछै चासणीमैं योमावोनाषै अर ये औषदिभी चासणीमैं और नाषै मिरचि टका २ पीपलि टका २ सूंठि टका २ दालचिनी टका २ पत्रज टका २ इलायची टका १ नागकेंसरि टका २ कस्तुरी मासा ४ लवंग टका १ जायफल टका २ जायपत्री टका २ वंसलोचन टका १ यांऔषद्यांनैं जुदीजुदीवांटि ईचासणीमैं नाषै अर सारवंग अभ्रक मृगांक अर हरगौरीरसयोभी अनुमानमाफिक चासणीमैं नाषै चारोली पिस्ता येभी अनुमानमाफिक ईचासणीमैं नाषै पाछै यांको येकजीवकरि यांकीगोली टका १ भरबांधै यागोली रोजीना षाय एकप्रभात एकसंध्यासमै षायतौ शरीरनैं पुष्टकरै अर प्रमेहादिक सर्वरोगांनैं योदूरिकरैछे. इति मूसलीपाककीविधिः अर इ

न. टी. पाकाधिकार ईग्रंथमैं संक्षेपलिष्योछै सो अन्यग्रंथांसौं समजलीज्यो अर रीततो सारी विधियुक्तवताईछै. अर वैद्यआपकीस्वबुद्धिसौं युक्तायुक्तपदार्थ विचारकरयोगकरसी. इसीनिगहचाहिजे. अर योगचिंतामणिमैं पाकाधिकारलिष्योछै.

हींतरै सारापाक करिलीजे १ अथ सिलाजित सोधिवाकीविधिलि ष्यते शिलाजित परवतकोमद तीनैं लीजे अथवा वेंचुयापरवतका कांकराने लीजे पाछे वेसिलाजितनै गऊका दूधमें भिजोवे अथवा त्रिफलाका काढामें भिजोवे अथवा भांगराकारसमें भिजोवेदिन १ पाछे वेवासणमें वेनें षूबमसले पाछे वेनें कपडामें छाणिवेनै तावडे मेले सुकायले तदि ओशुद्धहोय १ अथवा शिलाजितकाकांकरा लेरवानें वांटे ऊनापाणीमें पहर २ राषे पाछे वानें मसल ओर माटीका पात्रमें वस्त्रसूं छाणिले पाछे वेपात्रनें तावडेमेले ऊपरलो पाणी ओर पात्रमें नितारले ईसीतरै वारंवार महिना दोय तांई करतोजाय तदि ओसिलाजित शुद्धहोय अग्निमें निर्धूमहोय अर अग्निमें मेल्यो उभोहोय जाय लिंगोपमायो सोध्यो सिला जित प्रमेहनें आदिलेर घणा रोगांनें दूरिकरै अर शरीरनें यो पु ष्टकरै इति सिलाजित सोधनविधि संपूर्णम् अथ जवषारनें आ दिलेर साराषार करिवाकी विधि लिष्यते पोटे आयाजवांनें काटि वानें सुकायलीजे पाछे वानें बालिवांकी राषकरि वेंराषनें वासणमें भिजोयदीजे दिन दोय २ तांई पाछे तिषटीके कपडो वांधि वे कप डामें ओ राषसमेत पाणी घालि दीजे पाछे वेमें पाणी ओर घाल ताजाजे सारो पाणी नीसरै जठातांई पाछे वे पाणीनें कडाहीमें च ढाय ओपाणी बालि दीजे तदि कडाहीमें वहे पाणीको लूण सिरी सो षार जमिजाय इहीं तरै साराषार करिजै इति जवषारनें आ दिलेर साराषार करिवाकी विधि अथ चणाषार करिवाकी विधि लि० माहकामहिनामें चणाको षेत होय जठे चणाऊपरि मिही क पडो घडी तीन चारिकै तडकैस्याणो आदमी फेरिल्यावे ओही क

* ग्रीष्मरितुमैं जींपर्वतमैं कोंईबी ठिकाणै पाषाणकोमदचुवैछैसो चुवतापाषाणको टूकले णो. जींका फोडकरटूकडाबारीककरणाचीणाप्रमाणकासो कांकराऊपरकह्याछै ग्रंथमैं वाही क्रियाकरिशिलाजित प्रगटकरणी. असलसिलाजितनहीं मिलैतौ करणायोग्यछै.

पडो रोजिनादिन १५ तांई फेरे अर नित्य वे कपडानें सुकावतो जाय ओ कपडो टाटसिरीसो जाडो होयजाय जठातांई पाछे वे कपडानें पाणीमें भिजोय कडाहीमें ओर कपडासूं वेह पाणीनें छाणिले कडाहीमें ओ निताखो पाणी घाले वे पाणीनें चासणी सिरीसो गाढोकरि ओर वासणमें घालि रापेतो वहचोषो चणषार होय अर ओषाटो घणोहोय इति चणषार करिवाकी विधि.

अथ स्नेहविधि लिष्यते स्नेहचारि ४ प्रकारको घृत १ तेल २ वसानाम शुद्धमांस घृत ३ मज्जानाममीजी सो हाडांमांहिसूं नीसरे ४ येचारीही स्नेहपुष्टकर्ताछे. १ अथ स्वेदविधिलिष्यते स्वेद च्यारि ४ प्रकारको ताप १ उष्ण २ उपनाह ३ द्रवस्वेद ४ ताप अर ऊष्मस्वेदहेसो कफका आजारनें दूरिकरेछे वालुरेत लूण वस्त्रतातो हाथढकणी अंगीठी यांसूं सेककरे पसेव आवे तीनें ताप स्वेद कहिजे १ लोहपींडो इटनें आदिलेरवानें तपाय अर पसेव आवे तीनें उष्मस्वेद कहिजे २ ताप अर उष्म येदोन्यूं मिलिकरि पसेव आवे तीनें उपनाह स्वेद कहिजे ३ अर सरीरनें वस्त्रसूं ढांकि अर सरीरऊपरि ताता षटाईका पाणीसूं सींचे अथवा वायनें दूरिकरिवावाली ओषद्यांका पाणीसूं तातोतातो शरीरऊपर नाषे पसेव अणावे तीनें द्रवस्वेद कहिजे ४ येचारूही पसेव वायका रोगांनें दूरिकरेछे. अथ महासाल्वण स्वेद लिष्यते कुलत्थ उडद गोहूं अलसी तिल सिरस्यूं सोंफ देवदारु संभालु जीरो अरंडोली अरंडीकीजड रास्ना सहजणाकीजड यां सारांनें लूणसंयुक्त कांजीसूं अथवा कहींषटाईसूं मिहीपीसि वेनें गरमकरि शरीरमें जठेवाय आइहोय तठे सेकेतो वायका सारारोगजाय इति महासाल्वणास्वे

न. टी. स्वेदविधिनाम प्रस्वेदकराणा कारण पसेवांसों मनुष्यांका अनेक रोग शांति होयछे. यथार्थ पसेवकी युक्ति अर रोगीको बलाबल देषणो. पसेवमें जैसोरोग होयजैसी औषधी सौंपसेवकराणा. अर पसेवकरायांपाछे जतन.

द० इति स्वेदविधिः अथ वमनविधि लिख्यते शरदरितुमैं वसंतरि तुमैं वर्षारितुमैं मनुष्यमात्रकूं वमन अर जुलाब लेवो जोग्यछै जींका शरीरमैं कफकारोग होय हियामैं आदिलेर दुषता होय अर विषको दोषहोय मंदाग्निको रोग होय श्लीपदको रोग होय कोढको रोगहोय विसर्प प्रमेह अजीर्ण भ्रम षांस सास पीनस मृगी उन्माद रक्तातिसार नाक तालवो होठ येपकिगयो होय कान पकिगयो होय दोयजीभ होय गईहोय अतिसारहोय पित्तका कफ का रोग होय मेदवधि गईहोय शिरको रोग होय पसवाडो दूषै त त्काल ज्वरहोय अरुचि होय यांसारां रोगांनैं वमन करिवो जोग्य छै. वमनसू. येरोग जाय १ अर इतना रोगांनैं वमन कराजे नहीं तिमिरका रोगीनैं गोलाका रोगीनैं उदरका रोगीनैं दुर्बलनैं बुढानैं गार्भिणी स्त्रीनैं स्थूलनैं चोटलागि होय जीनैं भेदवालानैं भूषानैं उ दावर्तनैं वायका रोगीनैं यानै वमन कराजे नहीं अथ वमन विधि भेदडी पतली धापिपुवाजै अर भेदडीमैं दूध छाछि दहीं ये नाषिजै अर निपट घणी पुवाजै कंठपर्यंत पाछै सींधोल्हण सहत वच ये पु वाय ऊपरि तातो पाणी पाय गलामैं अंगुली घालि वमन कराजे १ अथवा कुटकी औरतीषीवस्त अथवा मेंढलको चूर्ण गरम गरम पाणी सूंले अथवा फिटकडी तमाषु उगेरै गरम पाणी सूंलेतौ वम न होय अथवा नींबनैं आदिलेर कडवा द्रव्यसूं वमन होयतौ ये पाछै कह्यासो सर्वरोग जाय अर वमन कर्‍यां पाछै जीभकै जीरा उगेरै आछी वस्त लगाय अथवा विजोरा उगरै आछी वस्त षाजे अंतर उगेरै आछी वस्तसूंघिजै आछया आछया भोजन कराजे इति वमन विधिः अथ विरेचन नाव जुलावतींकी विधिलि० प्रथम

न. टी. जो करणेका होय सो ध्यानमैं राषणा. कारण प्रस्वेद पाछै सरीरमैं जो वायू प्रवर्त होय तो शांतिकी जायगां अशांतीकर देवछै. जीसौं यारीतवैद्यकी सहायतासौं अथ वा चतुरमनुष्यकी सहायतासौं विचारसोकरै.

पुरुषनैं विधिपूर्वक वमन कराजे पाछे वे पुरुषनैं पाचन द्रव्यदीजे वेंकाशरीरका कफका रोग पचिजाय जठातांई अर सरदरितु व संतरितुमैं निश्चै जुलाबदीजे अर जरूर जुलाब दियांही यांको रो गजाय तदि चाहैजे रितुमैं जुलाबदीजे अर इतना रोगवाला म नुष्यनैं निश्चैही जुलाबदीजे तदि येरोग जुलाब दीयांजाय जीर्ण ज्वरवालो जींका शरीरमैं मलको संग्रह होय वातरक्तवालो भगं दरवालो ववासीरवालो पांडुरोगी उदररोगी गोलाको रोगी हद्रो गी अरुचिकारोगवालो जोनिकारोगवाली गरमीको रोगीप्रमेहको रोगीव्रणकोरोगी फोडांकोरोगी विसूचिकाकोरोगी नेत्रकोरोगी कृ मिकोरोगी सूलको रोगी कोढी कानकोरोगी नासिकाकोरोगी सिर कोरोगी मूंढाकोरोगी सोथकोरोगी मूत्राघातकोरोगी यांरोगांवालो रोगी जुलाबलेतो येरोग तत्कालजाय १ अर इतनारोगवालो म नुष्य जुलाबलेवैनहीं बालक बूढो शरीर जींको घणोचीकणो होय शस्त्रलाग्यांसूं क्षीणहोय डरपस्याल षेद जुक्तिसायो स्थूलपुरुष गर्भिणीस्त्री तत्काल ज्वरचढीहोय सो तत्काल जींकै संतान हुईहो य इसीस्त्री मंदाग्निवालो मेदकारोगवालो लूषो जींको शरीरहोय इतना रोगवालो पुरुष जुलाबले नहीं अर पित्तकी तासीरवालानैं कोमल जुलाबदीजे अर कफकी तासीरवालानैं मध्यम जुलाबदीजे अर वायकी तासीरवालानैं करडो जुलाब दीजे तदियांको कारज होय. अथ मृदुजुलाबलि० दाष दूध हरडैनैं आदिलेर अथ मध्य मजुलाबलि० निसोत कुटकी किरमालानैं आदिलेर अथतीक्ष्णना म करडो जुलाबलि० थोहरीको दूध चोष दांत्युणी. जमालगोटो और इच्छा भेदीनैं आदिलेर अथ पुनः जुलाबलेवाकी विधि लि०

न. टी. वमननाम उलटी करावै जीसौं कफकी विकृती शांतिहोयछै. अर औरभी हि याकारोग वात. पित्त. कफ. यानैं सुधारैछै. परंतु जोरोग वमन करायांसूं जाय जींरोग की निश्चयकरणी. अर बलदेषकर देणीयोग्य. विकृतीकी निगारापणी.

प्रथम दिन पांचसाततो पुरस मुंजसले सोनामुषी टंक २ जीरो टंक १ सौंफ टंक २ मिनक्कादाष टंक २ गुलाबकाफूल टंक २ पांड टका १० यांसारांनैं तीनपाव ऽ॥। पाणीमैं औटाय तींको पाणी पाव ऽ। राषे पाछे ईपाणीनैं छाणि रोजीना दिन ४ पीवैतौ पेटको मलपचै अर नीसरवो करै अर रोजीना चांवलांकी षिचडी घृत समेत षाय अर पांचवेदिन सोनामुषी टंक १० निसोत टंक १० गुलाबकंद टंक १० जीरो टंक २ सौंफ टंक ५ षांड टंक १० यांनैं औटाय दिन दोय चारि रोजीनाले अर घृत समेत षिचडी षायतौ जुलाब आछ्यौ लागै अर ईसूं सारा रोगजाय षाटो षारो षाय नहीं जुलाबका दस्त ३० लागैतौ उत्तम जुलाबजाणिजै अर दस्त २० लागैतौ मध्यजुलाब जाणिजै अर दस्त १० लागैतौ हीनजुलाब जाणिजै १ अथ छऊरितुका जुदाजुदा जुलाब लि० वसंतरितुमैंतौ सोनामुषी निसोत गुलाबकाफूल सौंफ जीरो षांडचीणी यांको जुलाब दीजै ग्रीष्मरितुमैं निसोत मिश्री ये दोन्यूंबराबरीले तींको जुलाबलीजैतौ रोगजाय शरीर शुद्ध होय जाय २ अथ वर्षाकालको जुलाबलिष्यते निसोत पीपलि दाष सूंठि सहत यांका जुलाबसूं रोगजाय ३ अथ सरदरितुको जुलाबलिष्यते निसोत धमासो नागरमोथो दाष नेत्रवालो महलौठी चंदन सोनामुषी मिश्री यांको जुलाबलेतौ रोगजाय ४ अथ हिमंतरितुको जुलाबलिष्यते निसोत चित्रक पाठ चोष सोनामुषी वच यांकाजुलाब गरम पाणी सूं लेतौ रोगजाय ५ अथ ससिररितुको जुलाबलि० निसोत पीपलि सूंठि सींधोलूण सहत सोनामुषी यांको जुलाब लेतौ रोगजाय

---

* अभयामोदकनाम औषधीछैसो श्रेष्ठछै. ईकैवास्तै औषधी ताजीलेणी. गली. सुकीच णादिनकीलेणीनहीं. अर अभयानामहरडैकोछै. मोटीहरडैकीछालिलेणी. अठै छालकहीछै सू. हरडैकीगुठली निकालदेणी. जाडीछालरहैसोलेणी. अरु घणीसावचेतीसूं औषधीवणावणी. याऔषधीतपासकरदेणेकीछै.

६ अथ अभयादिमोदकलि० हरडैकीछालि मिरचि सूंठि वायवि डंग आंवला पीपलि पीपलामूल तज पत्रज नागरमोथो येबराब रिले अर यांसारांसैं तिगुणी दांत्युणीले अरयां सारांसूं आठगुणी निसोतले अर यांसारांसूं छगुणी मिश्रीले अर यांसारांनै मिहीवांटि सहतमैं टंक २ प्रमाण गोलीबांधे पाछे गोली १ प्रभातही सीतलजलसूं लेतो जुलाब चोषो लागे गरमपाणी पीवैनहीं जठातांई जुलाब लागिवोहीकरै अर ईमैं घणो जुलाब लागिवोहीकरैतो मनुष्यका सारारोग जाय विषमज्वर मंदाग्नि पांडुरोग षास भगंदर प्रमेह राजयक्ष्मा नेत्रकारोग ववासीर कोढ गंडमाला उदरकारोग वायकारोग आफरो मूत्रकृच्छ्र पथरी जांघकटीकीपीडा यांसारांरो गांनैं यो अभयादि मोदक दूरिकरैछे अर जुवानकरैछे इति अभयादि मोदकविधिः

अथ जुलाबलेवावालो इतनीवस्त करै सोलिष्यते जुलाबलाग्यापीछे सीतल जलसूं आंषिधोवै अंतरसूंघे पानषाय पवनका घरमैं रहैनही सीतल जलसूं न्हावैनहीं गरम जलवारंवार पीवै जठातांई सारो जुलाब लागे अर वीचहीये नहीं करैतो नाभिमैं कूषिमैं सूलचाले पाछे जंगलउतरैनहीं अर पवनसरैनहीं पित्ती उगेरै रोगहोय अर शरीर भार्यो रहै दाहहोय अरुचिहोय आफरोहोय भौंलि आवै छादणीहोय तो पाछे वेनैं पाचनादिक देर और शुद्ध करैतो येसारारोग जाय अर भूषलागे शरीरहलको रहै १ अर जुलाब घणोलागैतो मूर्छा होय गुदावारै नीसरि आवै सूलचाले अर अतिसारनैं आदिलेर औरभी रोग होय तदवेनैं सीतल जलसूं स्नान कराजै अर चावल मिश्री सहत सिषरण दहीं येषुवाजै

न. टी. विरेचननामजुलावकोछै सोजुलाबलेणमे देणोछै. जोउक्तरितुमैछै. घणा वैद्यवर चैत्रमैं तथाआसोजमैं जुलाबदेवैछै. अरछैरितुकैवी चलीषीछै सोबीध्यानमैं लेणीचाहिजै. परंतु वैद्यनैं रोगकी प्रबलतादीषै अरजुलाबकी गरज होयतदही जुलाबदेवैछै.

अर बकरीको दूध मिश्रीनाषि पाजै अर साठ्याचावल मसूर ये षुवाजै तदि घणो जुलाबथंभै अर आछ्यो जुलाव लागै जींका लक्षणलि० मनप्रसन्नरहै वायसरै सर्वइंद्रीयांमैं बलहोय जाय बुद्धिनिर्मल होय जाय भूषचोषी लागै सर्वशरीरमैं बलहोय १ इति विरेचन नामजुलाबकी विधि० अथ छऊरितुमैं हरडैषावाकी विधि लि० ग्रीष्मरितुमैं एक हरडैकीछालिको चूर्णतीमैं बराबरिको गुड मिलाय रोजीनादिन ६० तांई षायतौरोग होयनहीं अथ वर्षारितुमैं दोय हरडैकोचूर्ण सींधालूणकीसाथि षायतौ रोगहोय नहीं अर सरदरितुमैं मिश्रीकैसाथि तीन हरडैको चूर्णषायतौ रोगनही होय अथ हिमरितुमैं च्यारि हरडैकोचूर्ण सूंठिकैसाथि षायतौ रोग नहींहोय अर सिसिररितुमैं ५ हरडैको चूर्ण पीपलीकैसाथि षाय तौ रोगनहींहोय अर वसंतरितुमैं ६ हरडैकोचूर्ण सहतकैसाथि षायतौ रोगनहीहोय इति छउरितुमैं हरडैषावाकीविधि० अथ बस्तिकर्मकीविधिलिष्यते. बस्तिनामपिचरकीसो जीरोगीकै मलमूत्र रुकिगयोहोय वायका आजारांकरिकै सोवापिचरकी इंद्रीमैं गुदामैं देवै अर वापीचरकी जसतकी नाली घलाय बकराका आंडाकी वणैछै अथवा सुवर्णनैं आदिलेर धातांकी नालिवणैछै गऊका पूंछकै आकार सोईमैं औषद्यांको जलघालि इंद्रीमैं अर गुदामैं या बस्तिकर्म करिजैतौ वायका सर्वरोग जाय सोयाबस्तिदोय प्रकारकीछै. अनुवासन जींकोनाम १ निरूहजींकोनाम २ अर तेल घृतनैं आदिलेर जींकीपीचरकी दीजै तीनैं अनुवासन बस्तिकहिजै २ अर निरूहबस्तिको भेदयेक उत्तरबस्तिछै १ अरु अनुवासन बस्तिको भेद मात्राबस्तिछै २ यांको तोल टका २ भर जलकोछै

न. टी. बस्तिकर्मलिष्याछै सोवस्तिनाम मलमूत्राशयको स्थानछै जींमैं पिचकारी तथा नलीद्वारा औषधी जैसोरोग होय वैसीलिष्यामुजब क्रियाकरै ईंवस्तिक्रियाका भेदसूं वाकब होयतौ याक्रियाकरणी. वाकबनहीं होयतौ याक्रियानुकसानकरै.

इतनारोगवालानैं अनुवासनबस्तिदीजे नहीं भस्मकरोगवालानैं भयजुक्तनैं षाससासवालानैं क्षयीरोगवालानैं यांरोगांवालानैं अनुवासनबस्तिदीजैनहीं अर यांरोगांवालानैं अनुवासनबस्तिकराजे अर येकवरसनैंलेर छ वरसतांईकानैंतौ छअंगुलकी पिचरकीकी बस्तिदीजे अर बारावरषकांके आठ अंगुलकी पिचरकीदीजे बारावरष उपरांत बाराअंगुलकी पिचरकीदीजे पाछे बुद्धिका अनुमानसूं दीजे अर पीचरकीकै घृतलगाय लीजे अर बस्तिकर्मसूं शरीरमैं बलवधे रोगजाय अर सीतकालमैं अर वसंतरितुमैं दिनमैं स्नेहवस्तिदीजे अर ग्रीषमरितुमैं वर्षारितुमैं अर शरदरितुमैं रात्रिमैं अनुवासन बस्तिकर्मकीजे अर घणोचीकणो भोजनकराजैनही. हलको भोजनकराजे अर स्नेहमैं सौंफको जलसींधोलूण नाषि गुदामैं बस्तिदीजे गरमपाणीपाय भोजनकराय अर फिराय अर मलमूत्रादि कराय अर बांवापसवाडाकानी सुवाय अर बावीजांघनैं पसारि अर दूसरीजांघनैं ऊंचीकरि गुदामैं स्नेहकीपिचरकीदे अर बांवाहाथसूं पकडि जिमणाहाथसूं भींचे तदि गुदामैं पिचरकीकोजल अर स्नेहजायपडे अर पिचरकीदेतां ओदेवावालो पुरुष अर लेवावालो अतनीवस्त करैनही जंभाई षासीछीक येलेनहीं तीस तालीवजावे जठातांई बस्तिकर्मकरे अथवा मूंढासूं सौं १०० वार कोगिणतीकरे पाछे सारासरीरनैं पसारिसूंधो सोवे पाछे दोन्यांपगांकी अंगुलीअंगुठानैं चतुर आदमीकनैं षेंचावे पाछे सेजऊपरि ऊंधोसोवे ढूंगामसलावे नींदलेई ईसीतरे करैतो यावस्तिवायका सारारोगांनैं दूरिकरे अर वागुदामैं लीनीजो बस्तिसो मलसमेत गुदामाहिसूं सारामलनैं अर सारावायका रोगांनैं दूरिकरैछे. अर

न. टी. ग्रंथमैंबस्तिक्रियाका नामलिष्याछै सो अनुक्रमसौं जाणलेसी. अरु शास्त्रकी सहायतासौं तेल. घृत. औषधीकोकाथ. जो बस्तिक्रियामैं कामआवै जींकीपूरी निगाकरकै क्रियायुक्त होणो योग्यछै. केवलग्रंथका वांचणैसौं नहींकरणी.

अनुवासन बस्तिकर्म इहीविधि० छह सात आठ नववार येकेक दिनको अंतर करिकरिकै करीथकी सर्ववायकारोगांनैं दूरिकरैछे. अर अनुवासन बस्तिकर्म कस्यां पाछे निरूह बस्तिकरिजे. अर जीं कामलासयमैं अथवा पक्कासयमैं अनुवासन बस्ति चलाईथकी ऊठे हीवेको स्नेहजुक्त जलउगैरै रहजाय गुदामाहिसूं नीसरैनहीं. पेडूने मसल्याथकांभीतौ निरूहबस्ति औरुकीजे तींकी औषदिकी बस्ति करि गुदामैं चलाजैतौ वायुसरै अर माहिलो मलनीसरिजाय अर शरीर शुद्धहोय अथवा जुलाबदे काढिजे अथ अनुवासन बस्ति कादेवाको तेललि० गिलवै एरंडकीजड कणगचकीजड भाडंगी अ रडूसो रोहिस सतावरी सहजणो कागलहरी यांनैं टकाटका भरिले जव उडद अलसी बोरकीजड कुलत्थ येसेरसेरली जे यांसारी औ षद्यांनै ६४ चौसष्टसेर पाणीमैं औटाय यांको चोथोहिसो राषि तीमैं मीठोतेल सेर ४ पकायलीजे रसबलिजाय तेलआयरहै तदि ईंतेलनैं छाणि टका १ भरकी पीचरकी गुदामैं दीजैतौ सर्ववायका रोगदूरिहोय इति अनुवासनतेल० इति अनुवासनबस्तिकीविधि.

अथ निरूहबस्ति करिवाकी विधि लिष्यते. निरूहबस्तितो घणांप्रकारकीछे अर ईंकाघणाही कारणछे. अर निरूहबस्तिंको अस्थापनभी नामछे. अर निरूहबस्तिको सवापईसाभरदेवा को प्रमाणछे. अतनारोगवालानैं निरूहबस्तिदीजे जींको शरीर चीकणोघणोरहै अर हियाकै चोटलागिहोय शरीर क्षीणहोय आफ राको रोग होय छर्दिको रोगहोय हिचकीवालानैं ववासीरवाला नैं सास षासवालानैं उदरका सोजावालानैं अतिसार वालानैं विसूंचिका वालानैं उदावर्तवालानैं वातरक्तवालानैं विषमज्वरवा

* आफरोनाम पेटको फूलणोछै. सो अनेकप्रकारसौ होयछै. परंतु बस्तिकर्मकैवास्तै साधारण आफराको रोगनहींछै. साधारण आफरोतो हिंगाष्टक आदिलेकर औषधीसूं आराम होयछै. मोठाकारणासूं पेटका आफराका रोगऊपर बस्तिकर्मकरिजै तपासकर.

लानैं मूर्छा तिसउदर आफरो मूत्रकृच्छ पथरी पैरकोरोग मंदाग्नि सूलको रोग आम्लपित्त हृदयका रोग यांसारांही रोगांमैं जींकै कोई रोग होय जीनें निरूहबस्ति दईथकी यांसारांरोगांनैं दूरिकरैछै. अथ निरूहबस्तिकादेवाकी विधि० अनुवासनबस्तिकी विधिमैं लिष दीनीछै यां निरूहबस्तिभी दोचारिवार येकेक दिनको अंतर करि पाछै लिषीछै तिहीविधिसूं दीजे अर केवलवायको विकार होय तो स्नेहसंयुक्त दीजे अर पित्तको विकार होयतो दूध संयुक्त दोय बस्ति दीजे अर कफको विकार होयतो कषायलो कडवो अर मूतनैं आदिलेर निरूहबस्ति दीजै अर सुकुमारकूंबालककूं बूढाकूं मृदुबस्ति दीजै अथ उत्क्लेदनबस्ति विधि. अरंडकी अरंडोली महुवो पीपलि सींधोलूण वच झाउरूषकीवकल यांनैं औटाय यांकी बस्ति दीजे इति उत्क्लेदनबस्ति० अथ दोषहरवस्ति लि० सौंफ महलौठी वील इंद्रजव यांनैं कांजी अर गोमूतमैं पीसि देतौ सर्व रोगजाय इति दोषहरबस्ति० अथ लेखन बस्ति लि० त्रिफलाको काढो गोमूत सहत जवषार यांकी पीचरकी देतीनेलेखनबस्ति० अथ सोधनबस्ति लि० हरडै किरमालानैं आदिलेर यांको जुलाब लागै यांकी पीचरकी देतीनैं सोधनबस्ति कहिजे अथ समनबस्ति० फूलप्रियंगु महलौठी नागरमोथो रसोत यांनैं दूधमैं वांटि यांकी पीचरकीदीजे तीनैं समनबस्तिकहिजे अथ बृंहणबस्ति लि० पुष्टाईकी औषद्यांको काढो करि तीमैं मीठा द्रव्य मिलाय अर घृत मांस रसउगैरै त्यांकी पीचरकीदे तीनैं बृंहणबस्ति कहिजे. अथ पिच्छलबस्ति लि० बोरकापान सतावरी ल्हेसवामोचारस यांनै दूधमैं पकाय तीमैं सहतनाषि बस्तिदीजै तीनैं पीछलवस्ति

न. टी. बस्तिकीविधिमैं जोस्थापनबस्ति लिषीछै जीमैं मधु. तेल. घृत. दूध. पईसा पईसाभर उजन लिष्योछै जठै पैसो जपरचलणको जूनो झाडसांई मासा १८ अठारा आसरैछै. अर दोय पईसाको टको १ एक होयछै. अर झाउरूषलिष्योछै सो.

कहिजे. अथ निरूहबस्तिका तोलको प्रमाण लि० प्रथमतो किंचित् सींधोल्हण नाषै पाछै वैमेही सेर ऽ॥ सहत नाषे अर सेर ऽ॥ आध धृत नाषे पाछैयातीन्यांनैं षूबमथि यांकी पीचरकी पांचसातवार येकेक दिनका आंतरासूं चतुराईसूंदीजे इति निरूह बस्तिका तो लको प्रमाणलिष्यो० इति निरूह मात्राविधिः अथ मधु तेलकी बस्तिविधि लिष्यते. अरंडकी जडको काढोकरै तीमैं सहत अर मीठोतेल टका भरनाषै अर सौंफ पईसा १ भर सींधोल्हण अधे लाभर यांनें वांटि पाछै यांनै मथै अर यांकी पीचरकी देतो मेदनें गोलानें क्रिमिनें फियानें मलका रोगनें उदावर्तनें यांरोगांनैं याब स्तिदूरिकरैछै अर शरीरमैं बलवधावैछै. इति मधुतेलकी बस्ति० अथ स्थापनबस्तिलि० सहत घृत दूध. तेल. ये पईसा पईसा भर ले त्यांमैं झाऊरूषकी वकलको रस अर सींधोल्हण अधेला भरना षै यांसारांको येकजीवकरि पीचरकी देतीनें स्थापन बस्ति कहिजे. अथ सिद्धबस्ति लिष्यते. पीपलि पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठि यांको काढोकरि तीमैं तेल सहत सींधोल्हण महलौठी यांनैं औटा ययेभी मिलाय याकी पीचरकीदे तीने सिद्ध बस्ति कहिजे अथवा फ लवर्ति लिष्यते. गुदाकै माहि बारै घृत लगाय आपका अंगुठाप्र माण जाडी लुंठी अंगुल १२ बाराकी आधी गुदामैंचलावै अर ईंकी चतुराईसूं पीचरकीदे तीनैं फलवर्ति कहिजे अर निरूहबस्ति कोही भेद उत्तर बस्तिछै. अर बस्तिकर्म करिवावालो गरम पाणि सूं स्नान करै अर दिननैंसोवै अर अजीर्ण करैनहीं औरभी कु पथ्य करै नहीं इति अनुवासन बस्ति अर निरूहबस्तिनें आदि लेर सर्व बस्ति संपूर्णम् अथ हुकानैं आदिलेर धूमपानकी विधि

न. टी. विशेषकरजलकै आसरामैं होयछै. अर नदीमैं घणाहोयछै. जींको झाड छोटो छोटोछै. अर पिरासकासापान सूधीसाषा होयछै. जीमैं कांटानहींछै. अर वालकपढैछै सोवांका वडतणा पाटीपर मांडवानै करैछै. ऊंचोहात दोय आसरै होयछै.

लि० धूमपान ६ छ प्रकारकोछे समन १ बृंहण २ रेचक ३ षासहर्ता ४ वमन कर्ता ५ व्रणधूम ६ तीषी औषद्यांकोतौ धूमपान वेनै सोधन कहिजे ७ इतना रोगांनैं धूमपान कराजै नही षेदसयुक्तनैं डरपस्यालनैं दुषीनैं दांतांकारोगीनैं रातिनैं जाग्यौ होय जीनैं तिसवालानैं दाहवालानैं तालवाकारोगिनैं उदरका रोगीनैं मथवायकारोगीनैं छर्दिका रोगीनैं आफराकारोगीनैं घावकारोगीनैं प्रमेहकारोगीनैं पांडुरोगीनैं गर्भिणी लुगाईनैं क्षीणपुरुषनैं वालकनैं बुढानैं इतना पुरुषांनैं धुमपान कराजैनहीं. अर धूमपान हैसो वायका सर्वरोगांनैं अर कफकासर्व रोगांनैं दूरिकरैछे. अर सर्व इंद्रियांनैं अर मननैं प्रसन्नकरैछे केंसांनैं गाढाकरैछे दांतांनैं गाढाकरैछे. अर इलायचीनैं आदिलेर यांको धूवोलीजे तीनै समनधूम कहिजे १ अर रालनैं आदिलेर यांको धूमो लीजे तीनै बृंहणधूम कहिजे २ अर तीषी औषदीको धूवो रेचन कहिजे ३ मिरच्यादिकको धूमोकासघ्न कहिजे ४ षालको धूवो वमनकर्ता कहिजे ५ नींबनै वचनै आदिलेर जींको धूवो दीजे व्रणादिककूं तीनैं बृंहण धूमकहिजे ६ अथ अपराजित धूपलिष्यते मोरकीपांष नींबकापान कव्यालीका डोडा मिरचि हींग छड कपास बकराकाबाल सांपकीकांचली विलाईकीवीट हाथीको दांत यांनैंवांटि घृतमिलाय धूणीदेतौ पिशाच राक्षस भूतप्रेत डाकिणीने आदिलेर सर्व दोषदूरिकरै जुरनैं दूरिकरै इति अपराजितधूप० अथ माहेश्वरधूपलि० हिंगदेवदार वीलपत्र घृत गऊकाहाडकुटकी सिरस्यूं नींबकापान माथाकाकेंस सापकी कांचली विलाईकी विष्ठा गऊका सींग. मेंढल. दोन्यूंकव्याली कपास तुस बकराकारोम चंदन मोर

न. टी. धूमपानकी विधिलिषीछै. सोधूमपानसौं घणाआजार जायछै. अर उपदंशरोग तो धूमपाननिश्चैही मानैछै. परंतु ज्यांज्यांरोग्यानैं धूमपानउक्तछै सांसारोग्यांनैं धूमपानकरणो अर उक्तनहीछै ज्यांनैं कदैंभीकरणोनहीं.

पाष बकराको मूत यांनैंवांटि आदमीकै धूणीदेतौ पिशाच राक्षस डाकिणी भूत प्रेतसांपचूडावली यांनैं आदिलेर सर्व दोष दूरिहोय अर सर्व प्रकारकी जुर ईधूपसूं दूरि होय इतिमाहेश्वरधूप इति हुकानै आदिलेर सर्व धूमकी विधि०

अथ लोहीछुडावाकी विधिलि० आदमीकाशरीरमैं वैद्यहैसो लोहीकाविकारांनैं भलैप्रकारदेषिवेको लोही सेर १ तथा सेर ऽ॥ आध तथापाव ऽ। तथाआधपाव ऽ≈ कढायजे अर सरदरितुमैंतौ विनाविकारहीथोडो लोही कढाजैतौ मनुष्यकै लोहीको विकारहोय नही अथ शुद्धलोहीको स्वरूपलि० लोहीको मीठोरसछै लालव र्णछै. सीतल अर गरमये दोन्यूंनहीछै. अर भाखोछै. चीकणोछै. अर दुर्गंधिनै लीयांछै अर योलोही दुष्ट हुवोथको गर्मीका सर्व विकारांनैं करैछै १ अर लोही शरीरमैं दुष्टहोय जदि पीडहोय श रीर पकिजाय दाहहोय शरीरमैं चाठा पडिजाय षाज होय. फुण स्यां होय सोजानैं आदिलेर औरविकार होय अर लोही शरीरमैं वधिजायतौ नेत्रलालरहै अर भारीनसांरहै अर शरीर भाखोरहै नींदघणी आवै मेदवधै शरीरमैं दाहहोय अर शरीरमैं लोही क्षीण पडिजायतौ षटाईकी मिठाईकी वांछारहै. मूर्छाआवै शरीर लूषोर है शरीरकीनसांशिथल होजाय २ अर वायकरि दुष्टजो लोही तींको लक्षण लिष्यते अरुण रंगहोय झागआवै. कठोर होय अर जींकी सीरकी उतावली चालती सूक्ष्म धारहोय अर सुईसि रीसा. शरीरमैं चभका चालै अर लालहोय येसारा लोहीमैं लक्षण होय तदि जाणिजै लोही वायसूं दुष्ट हुवोछै ३ अथ पित्तसूं दुष्टहु

---

* शिंगडीनाम शृंगछै जींशृंगसूं रक्तकढावणो फूककाजोरसूं अथवा बारूबासूं रक्त क ढावै. अथवा जलौकासूं रक्त कढावैतौ ठीकछै. अरु फस्त छुडावै तथा पाछणासूं कढावै. परंतु शरीरको यथार्थज्ञान देषकर रक्तश्राव करावणो. रक्तकढातां मूर्छा आवैतौ मूंढाऊ पर जलका छाबका दीजैतौ हौंस्यारी आवै. परंतु नसदेषकर उपावकरणो योग्यछै.

वो जोलोही तींको लक्षण लिष्यते लोही पीलो होय हर्‍यौहोय नीलो होय कालोहोय जीमैं दुरगंधि घणी आवै चालैनहीं गरम होय माष्यां अरकीडी षायनहीं जींलोहीमैं ये लक्षण होय तीनैं पित्तसूं दुष्ट हुवो जाणिजे ४ अथ कफसूं दुष्ट हुवोजोलोही तींको लक्षण लि० लोही सीतल होय घणोहोय चीकणोहोय भार्‍यो होय गेरू कारंगसिरीसो होय मांसकी गुठल्यांसिरीसो होय हौलै चालै ये लक्षण लोहीमैं होय तीनैं कफसूं दुष्ट हुवो जाणिजे ५ अथ सन्निपातसूं दुष्ट हुवोजोलोही तीको लक्षण लि० जीमैं येसारा लक्षण मिलै अर कांजी सिरीसो जींको रंग होय तीनैं सन्निपातसूं दुष्टहुवो जाणिजे ६ अथ विषकरिकै दुष्टहुवो जोलोही तींको लक्षण लि० जींको लोही कालोहोय अर नाकमैं घणो चालै दुरगंधि घणीआवै कांजीको सो रंगहोय ईसूं कोढहोय आवै सांवणकी डोकरी सो जींको रंगहोय अर शरीरमै सोजो होय आवै अर शरीरमैं दाह लागिजाय शरीरपकिजाय येलक्षण जीमैहोय तीनैं विषकरिदुष्ट हुवो जाणिजे ७ अर अतनारोगांनै योलोही कढावो जोग्यछै सो रोगलि० सोजाकोरोग होय शरीरमैं दाहहोय अर अंगफोडा फुणस्यांसूं पकिजाय शरीरको वर्णलाल होजाय वातरक्तको रोगहोय व्याऊउगैरै रोगहोय स्तनकोरोग होय शरीर भार्‍योरहै लाल आंषरहै तंद्राआवै नासिकाका मूंढाकारोग होय फियोगोलो विसर्पको रोगहोय विद्रधीहोय छालाउगैरैको रोगहोय मथवायको रोगहोय उपदंशनाम गरमीकोरोग होय रक्तपित्त होय यांसारांरोगांनैं लोहीकढावो जोग्यछै सोयारोगांमैं लोहीसींगडी अथवा जो

न. टी. रक्तविकार होय जींकै प्रथमतो औषधांसौं रक्तसरीरमैं फिरतो करावणो. पत लोपछै सीरछु डावैतौ उत्तम सीरछै. अर घणारक्तको जोर देषकर रक्तकढावै. उक्तरीतसौंसो मध्यसीरछै अरघणाधुताराफिरतामनुष्यलो भसौंदेषैजदाहीनसफोडैछै. सोनेष्टसीरछै.

कांलगावै अथवा तुंबडीलगावै अथवा सीरछुडावै अतना कारण होय तदि मनुष्यनैं लोहीकढावो जोग्यछै ८

अथ अतनारोगवाला मनुष्यनैं सीरकरि लोही कढावो जोग्य नहीं सोलि० क्षीणपुरुषनै स्त्रीसंगघणो कस्यो होय जीनै नपुंसकनैं डरपस्यालनैं गर्भिणीस्त्रीनैं सूवावालीस्त्रीनैं पांडुरोगनैं जुलाबनै आदिलेर पंचकर्मजीनहीं कस्या त्यानैं ववासीरवालानैं सर्वांगसोथवालानैं उदररोगीनैं षाससासवालानैं छर्दिकारोगीनैं अतिसारनैं पसेवयुक्त जींको शरीरहोय जीनैं सोलावरष पहलीमनुष्यनैं अर सितर ७० वरषउपरांति इतनारोगवाला पुरुषांनैं सीरछुडावोजोग्य नहीं ९ अर यांरोगांमें लोही कढायां रोगजायतो जोकांकरिकै लोहीकढाजे अर विषकरि दुष्टहुवो जो लोही तीनैं सीर छुडावो जोग्यछै अथवा पाछणादेर लोहीकढावो जोग्यछै अर वायपित्त कफकरि दुष्टहुवो जो लोहीतीनै सींगडी करि जोककरि तूंबडीकरि लोहीकढावो जोग्यछै जोकतो येक हातको लोहीसोंसे सींगडी तूंबडी बारा आंगुलकोसोसे पाछणो येक अंगुठाप्रमाणसोसे सीर शरीरका सर्वांगकोसोसे अर सीतरितुमैं इतनारोग्यांने लोहीकढाजे नहीं सो लि० भूषानैं मूर्छावालानैं नींदभ्रांतिमद मलमूत्रको जांको वेगहोय त्यांपुरुषांनैं लोही नहीं कढाजे १० अर जलोकादिकांकरि जांकोलोही नही नीसस्यो होय त्यांका व्रणका मूंढानैं कूठ सूंठि मिरचि पीपलि सींधोलूण त्यांकरिवांका व्रणको मूंढोमसलै तो लोही आछीतरै नीसरै अथ लोही आछी वषतमैं कढाजे घणो सीत घणो तावडो नहीं होय भोजन हलको करायलोही कढाजें अथ लोही नीसरैथंभै नही तींको यांवस्तांकरि जतन करैतो

न. टी. वेरीतसैं रक्त शरीरमाहसौं जाय अथवा घणो जायतो मनुष्यका सरीरकी हानी करैछै. तथा शरीरमैं अनेकरोगकरैछै. जीसौं रक्तमोक्षकरणो. सोबडी सावचेती होणी. कारण प्राणि मात्रको जीवन्न जीव रक्तछै. जीसौवै रक्तरक्षा यथार्थ करणी.

लोहीथंभै सोलिष्यते लोद राल रसोत जव गोहूंकोचून धौकीबकल गेरू सापकीकाचली रेशमीवस्त्रकीराष सांभराकीषाल यांनै व्रण के मूंढै लगावैतो लोहीथंभै अर औरभी व्रणको सीतल जतन करै अर सीरछोडिवाकीनसनाडकैऊपरि डाहदेअथवावैनसकैषारलगा वैअथवा नसनैकसायलीवस्तसूंलीपैअरवांवाआंडकैसोजो होयतौ जीवणा हाथका अंगुठा तरली नसनैदग्धकरैअर जीवणाआंडको सोजो होयतौ वांवा हाथका अंगुठातरलीनसनै दग्धकरै अथवा वांवा आंडकै सोजो होयतौ जीवणा हाथकीसीर छोडिजै अर जी वणा आंडकै सोजो होयतौ वांवाहाथकीसीर छोडिजै तौ औसोजो जाय १० अरविसूचिका होय जायतौ पसवाडाकी डाह दीजै तौ वि सूचिका जाय अथ सीरछुडावाकरि लोही घणोनीसरैतौअतनारोग होय सोलि० आंधो होय जाय आधो अंगरह जाय तिसकोरोग होय आंधेरीआवै मथवाय होय षास सास होय हिचकी होय दाहहोय पांडुरोगहोय अर लोही घणोही छूटैतौ मनुष्यमरिजाय अर ईशरीरमैं लोहीकरिकै जीवोछै शरीरको लोही जातौ रहैतौ मरणछै जींसौं शरीरका लोहीको घणो जावतो कीजै अर लोही छोड्यां सोजो होय तौ क्यूंगरम घृत करिवैनै सेकैतौ वैकीपीड अर सोजो दूरहोय अर लोही घणोनीसरै तौ वैपुरुषनैं हिरणका मांसको अथवा बकराकामांसको सौरवो जोग्यछै अथवा वैने दूध पीवो जोग्यछै.

अथवा साठी चावलकी षीरषावो जोग्यछै. पीडासांत होय श रीर हलको होजाय अर मन प्रसन्न होजाय जठाताईं अर लोही छुडावाका कुपथ्यलि० मैथुन क्रोध सीतजलसूंस्नान वाहरकीघणी

न. टी. अनंतरपचीसमी तरंगछै जीमैं श्रीदरवार लोकहितार्थ जो फुरमाईछै जीमैं रितु चर्या आदिलेर शारीरक नाम शरीरमैं जो कुदरती पदार्थछै ज्यांनैं अर ज्ञानकै अर्थ ईश्वरी तत्वछै. ज्यांनैं अर सृष्टिकी उत्पत्तिका कारण फुरमासी सोविचारणा.

पवन एकासणबेठिबो दिनमें नींद लूणउगेरै षाटीवस्त कडवीवस्त सोचवात अजीर्णमें भोजन येसारी वस्तलोही छुडावावालो करै नही. अर जैठातांई शरीरमें बलवापरै जैठातांई कुपथ्यकरैनहीं इति श्रीसीरउगेरै लोही छुडावाकी विधिसंपूर्णम् इति श्रीमन्महा राजाधिराजमहाराजराजराजेंद्र श्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागरनामग्रंथे सर्व आसवांकीविधि १ पाकांकीविधि २ सिलाजितसोधन ३ जवषारनें आदिलेर षारांकीविधि ४ चणषार सोधवाकीविधि ५ स्नेहविधि ६ स्वेदविधि ७ वमनविधि ८ जुलाबकीविधि ९ हरडैषावाकीविधि १० बस्तिकर्म ११ हुकानें आदिलेर धूमपानविधि १२ लोही छुडावाकीविधि १३ निरूपणनामं चतुर्विंशतिमस्तरंगः २४

२५ अथ ६ छऊरितुकोवर्णन लि० हिमरितु १ शशिररितु २ वसंतरितु ३ ग्रीष्मरितु ४ वर्षारितु ५ शरदरितु ६ येछऊरितु दोयदोय महिनाकी मार्गशीर पोषतो हिमरितु १ माघ फाल्गुन शशिररितु २ चैत्रवैशाख वसंतरितु ३ ज्येष्ठ आषाढ ग्रीष्मरितु ४ श्रावण भाद्रवोवर्षारितु ५ आसोज कार्तिक शरदरितु ६ अथवा अन्यमत लि० मेष अर वृषभकी संक्रांति येदोन्यूं ग्रीष्मरितु कहिजे १ अर मिथुनकर्ककी संक्रांति वर्षारितु कहिजे २ यारितु बादलासूं छायो अंबर होय गरमीनें लीयांक्यूं वरषेभी या रितु वर्षारितुको भेदछै ३ अर सिंहकी अर कन्याकी संक्रांति यां दोन्यांनें वर्षारितु कहिजे ४ अर तुलाकी अर वृश्चिककी संक्रांति यांदोन्यांनें सरदरितु कहिजे ५ अर धनकी अर मकरकी संक्रां

---

* आछी वस्तनाम कहीछै सो अनेक प्रकारकीछै. लोकसुहावती. परलोक सुहावती. प्रकृति सुहावती. कुल सुहावती. ईसी घणीछै. परंतु अठै आछी वस्तुकाशब्दमैं ऋतु सुहावती लेणी. जैसे हिमरितुमैं सद्यपाणी रुईको वस्त्रगर्म इत्यादिकछै. परंतु यह ग्रंथ राजमान्यछै. सोयो उपचार राजा. साहुकार. श्रीमंत. यांकै वास्तैछै.

ति यांदोन्यांनै हिमरितु कहिजे ५ अर कुंभकी अर मीनकी संक्रा
ति यांदोन्यांनैं वसंतरितु कहिजे ६ अथ यारितुकैविषै वायपित्तक
फ यांको संचय प्रकोप अर शांतिलि० ग्रीष्मरितुमैं वायको संचय
वर्षारितुमैं वायकोकोप शरदरितुमैं वायकी शांति १ वर्षारितुमैं पि
त्तको संचय शरदरितुमैं पित्तकोकोप हिमरितुमैं पित्तकी शांति २
शशिरितुमैं कफको संचय वसंतरितुमैं कफकोकोप. ग्रीष्मरितुमैं क
फकीशांति ३ यो संचय प्रकोप शांतिपणो वाय पित्त कफको अ
हार विहारसूं होयछै. अर येही विगरिसमै आपहीसूं शांति होय
जायछै. अथवा वायका कोपकरिवाका अहारविहार लिष्यते हल
कीवस्त. लूषीवस्त थोडीवस्त अतिसीतलवस्त अतिषेदतैं संध्या
समैका मैथुनसूं सोचकरि भयकरि चिंताकरि रातिका जागिबाकरि
चोटका लागिवासूं जलका तीरवासूं अन्नका अजीर्ण होवासूं धात
का षीणपणासूं अर यांनै आदिलेर औरभीकारण तींसूं वायकोप
होय तदि वायका कोपका दूरिकरिवाका जतनकरै तदि शांतिहोय
१ अथ पित्तका कोपकरिवाका आहारविहार लिष्यते कडवी षटा
ई लूण गरमतीषी येजोवस्त घणीषायतींकरि क्रोधकरिवासूं ताव
डानैं आदिलेर गरमवस्तसूं मध्यान्हकैसमै भूषका अर तिसकारो
किवासूं अन्नका अजीर्ण हुवाथका यांकारणांकरि आधीरातकासमै
पित्तहैसो कोपकूं प्राप्तिहोयछै अर पित्तका दूरिकरिवाका जतनांसूं
पित्तकी शांतिहोयछै २ अथ कफका कोपकरिवाका अहार विहार
लिष्यते मीठाद्रव्यसूं चीकणाद्रव्यसूं सीतल भोजनसूं दिनकासोवा
सूं अग्निकामंदहोवासूं प्रभातसमै भोजनकर्‌यां पाछै षेदतैंईनै आ
दिलेर औरभीत्यांसूं कफकोपकूं प्राप्तहोयछै. अर कफका कोपका

न. टी. प्रथम रितुचर्या नाम रितुमैं यथोक्त करै कार्य सो अर रितुनाम दोयमासको स
मुदाय होयछै जैसै वर्षका बारामास छ मासको अयन १ दूजा छ मासको अयन १ ज्यां
कानाम कर्क अयन मकर अयन २.

दूरिकरिवाका जतनसूं कफकीशांति होयछै ३ अथ हिमरितुकासे वाका आहारविहारलि० भेंसको गऊको नवीन घृत मीठोगुड मीठोदहीं लूणतेलको मर्दन तिलगोंहूं उडद मिश्रीनें आदिलेर मीठो द्रव्य सूंठिसंयुक्त हरडै रुई निर्वातस्थान नवीनवस्त्र ईनें आदिलेर आछीवस्त ४ इति हिमरितुका आहारविहारादिक संपूर्ण.

अथ शसिरितुका आहार विहार लिष्यते पीपलि संयुक्तहरडै मिरचि आदो नवीन घृत सींधोलूण वडागुड. दहि अर हिमरितुमैं कह्यासोभी २ इति शिशिरतुकी विधि० अथ वसंत रितुका अहार विहारलि० वसंत रितुमैं कोपकूं प्राप्ति हुवो जोकफसोरोगांनें पैदा करै तदि जठरकी अग्निकोनाश करै तीं वास्तै सहत संयुक्त हरडैषाणी तो कफ दूरिहोय अर शरीरमैं बलहोय अर वसंत रितुमैं भ्रमणपथ्यछै. अर चित्रककोषावो पथ्यछै. अर कफहारी द्रव्य आछयाछै ३ इति वसंतरितुकी विधि० अथ ग्रीष्मरितुका आहार वीहार लि० ग्रीष्मरितुमैं सूर्य प्राणिमात्रको बलहरिलेछै ईवास्तै वृक्षादिकांकी सघन छायासेवो जोग्यछै. गुडसंयुक्त हरडै सीतल जलनैं आदिलेर द्रव्य मधुर भोजन दाषचीकणाद्रव्य. सिषरण. सातू सरबतमिश्रीको सीतलजलमैं तिरबो षसषानो फवारा चादरांको छुडावो कपूर चंदनादिकको लेपदिनकोसोवो षसको बीजणो. षीरकोभोजन ईनें आदिलेर औरभी आछीवस्त येरितुमैं पथ्यछै अर ईरितुमैं इतनी कुपथ्यछै कडवीवस्ततीषी वस्तलूण षटाई दाहकर्ता वस्त षेददारुतावडो येताकुपथ्यछै ४ इति ग्रीष्मविधिः अथ वर्षारितुका आहार विहार लि० सींधोलूणसंयुक्त हरडै चीकणो द्रव्य लूण षटाई सालि जव सूंठि मिरचि पीपलि पीपलामू

न. टी. एक अयनमैं रितु ३ तीन होयछै. मासदोयकी १ एक ऋतु. ऐसै छ रितुको वर्ष १. जी रितुकानामहिम. शशि वसंत. ग्रीष्म. वर्षा. शरद. यांमैं कह्याछै जो अहार अर व्यवहार शरीरांका सुषकै वास्तै करणा. रितुजन्य कारण मुष्यवर्तैछै.

ल चित्रक सींधोलूण येसंयुक्त दहींकोमट्टो गरमपाणी कुवाको जल सुपेदवस्त्र भ्रमण हलको भोजन जुलाबईरितुमैं पथ्यछै अथ ईरितु मैं कुपथ्य दिनकोसोवोषेद तावडो तलावकोजल दहीं वनको ध्यान मैथुन ये कुपथ्यछै ५ इति वर्षारितुकीविधि० अथ सरद रितुका आहारविहार लि० वर्षारितुमैं उपज्यो जो पित्तसो सरदरितुमैं कोपकूं प्राप्तिहोय तींका दूकरिवाकै वास्तै मिश्री संयुक्त हरडै सेवणी मिश्री नै आदिलेर मीठीवस्त सालीचावल मूग सरोवरको जल औटायो दूध सरदरितुमैं इतना पथ्यछै अर येकुपथ्य तीषीवस्त लूण षटाई आसव तावडो दिनकोसोवो पूर्वकी पवन सरदरितुमैं इतनीवस्तु कुपथ्य उतरितांऋतुकासातदिनताई रितुकी विधि करणी अर आठवादिनसूं आगला रितुकी विधिकरणी इतिछउरितुमैं आहार विहारकी विधि संपूर्णम् अथ दिनचर्या दिनमैं जो आहार विहार तीकी विधि लि० मनुष्यहैसो घडी ४ कैतडकैऊठि आपकाइष्ट देवत्यांको ध्यानकरै पाछै वे समयमैं विचारै ईदिनमैं यो कार्य करणो अर यो कार्य नहीं करणो पाछै सज्यासूं ऊठि मलमूत्रको त्यागकरै यांको वेगरोकै नहीं अर दिननै उत्तरदिशाकानीमुषराषिमलमूत्रदिननैंकरै अर रात्रिनैं दक्षिणदिशाकानीमूंढो राषिमलमूत्र करै अर मलमूत्रकर्‍यां पाछै सूधावृक्षकोबौलसिरीनै आदिलेर आपका हाथकीकनिष्ठिका आंगुली सिरीषोपतलो अर सूधो १२ आंगुलको दांतणकरै पाछै बीकी फाडकरै जीभनै सोधै पाछै सीतलजलसूं १२ बाराकुरलाकरै पाछै सीतल जलसूं मुषधोवै तदि मुषका सर्व रोगजाय अर दांतांको सींधोलूण तीमैं क्यूं सुंठि सेक्यो जीरोमिलाय मिहीवांटि ईकोरोजीना मर्दन करैतौ दांतांमैं रोग

न. टी. जीमै दिनचर्या. रात्रिचर्या नामदिनका आहारविहार. रात्रिका आहारविहार ज्यांनै दिनरात्रिचर्या कहैछै. सोयांमैंजो अहारविहार लिष्याछै सोयथोक्तरीसौंकरै. जीसौं विद्यावृद्धि बलवृद्धि. सुषवृद्धि. संतानवृद्धि होयछै. सोपूर्व जन्मका पुण्यसौंछै.

नही होय पाछे सरीरकै नारायणादि तेलको मर्दन करै पोछे स्नेह का दूर करिवावास्तै चणाको चूर्ण अर कटोल उगैरै तींको उवट णोकरै पाछे शरीरमैं बलराषि क्यूं शरीरका बलमाफिक कुस्तीकरै पाछे श्रम दूरिकरि स्नान करै कमरि नीचै तो गरम पाणीसूं स्नान करै अर कमरि ऊपरि क्यूं येक निवायां सुहावंता जलसूं स्नान करैतो रोग होय नहीं

अथ स्नानका गुण लिष्यते स्नानसोचनैं दूरि करैछे. अर शरीरका मलनै दूरिकरैछे. गरमीका रोगनैं दूरिकरैछे हियाकी तापनैं अर रुधिरकाकोपनैं दूरिकरैछे. शरीरकी दुरगंधिनैं दूरिकरैछे. कांतिनैं अर तेजनेदेछे. पापनैं मनकीग्लानिने दूरिकरैछे अर भूषकी रुचि करैछे. बुद्धिनैं धर्मनैं सुषनैं द्रव्यनैं यांसारांनैं व धावैछे शरीरकावीर्यनैं आनंददेछे शरीरकी क्रमिनैं मार्गका षेदनैं दूरिकरैछे येस्नानमैं गुणछे अर अतना रोगवालो पुरुष स्नानकरै नहीं सो लिष्यते नींदसूं ऊठिकरि स्नानकरै नहीं अर नींद आवती होय सोभी स्नानकरै नही षेदवालो हिचकीकारोगवालो भोजनकर्‍यां पाछे षीण पुरुष कफका अर वायका रोगवालो वमनकारोगवालो यांरोगांवालो स्नान करै नहीं अर स्नानकर्‍यां पाछै संध्यावंदन देवता गऊ ब्राह्मण आचार्य गुरु बडाअतिथिनैं आदिलेर यांको पूजनकरै पाछे शक्तिमाफिक दानदे पाछे मध्यान्हकै समै बलिवैश्वदेवादिक करि कोई अतिथिनैं आपकी शक्तिमाफिक भोजन कराय आप कुटुंबसहित भोजनकरै प्रथम मधुर अर चीकणो आपने हितकारी चावल मूग गोहूंकी रोटी घृतसंयुक्त षाय

* रात्रिको अंतलिष्योछै. सो अठप्रभातसमैं लेणीनहीं. कारण घणा मनुष्य प्रभातजल पीवैछै सो वाजवीनहीछै. जीमैं वात रोगीनैं तो प्रभातजल पीवणो फायदो नहीं करैछै. अर रात्रिको अंतछै सो महररात्रि पाछै जो समयछै. च्यार घडीका तडका पहिली जींसमैं मैज लपीयोथको गुणकरैछै.

चोषी तरकारीकै साथि अर सने सने भोजनकरै उतावलि करैनही अर भोजनकै अंत मिश्रीका संजोगको दूध पीवै भोजनकै अंत दहीं षायनहीं अर भोजन निपट थोडो अर निपट घणो षा यनही आपकी रुचि माफिक षाय भोजनकरतां अतनानैं कनैंराषै मातापिता मित्रवैद्य पाकको कर्त्ता मोर चकोर कूकडोस्वान वान्नर यांकीदृष्टि आछीछै अर भोजन कीयां पीछै अगस्त्य १ कुंभकर्ण २ शनैश्वर ३ वडवानल ४ भीमसेन ५ या पांचकौं स्मरण करै तौ भोजन आछीतरै पकिजाय पाछै सुगंधित पुष्पमाला अत्तर आछ्या वस्त्र यांको धारणकीजे षसकापंषाने आदिलेर पवन लीजे सीतल छायामैं रहजे भोजनकर्‍यांउपरांती दोयघडिपीछै सीतल अर मीठो जल थोडो थोडो पीजे घणोपीयां रोग होय अर भोज नक आदिजल पीवैतौ अग्निकी मंदताहोय भोजनकै अंतिमैं पीवै तौ विषको सोगुणकरै अजीर्णमैं जलपीवैतौ अजीर्ण पचिजाय अ न्नपच्यापाछै जलपीवैतौ शरीरमैं बलहोय अररात्रिके अंतजल पीवै तौ सर्वरोगजाय अर भोजनकरिबैठि जायतो शरीरमैं भार्‍यांपणो होयजाय अर भोजनकरिसूंधोसोवैतौबलहोयभोजन करिवावैपस वाडैसोवैतौ आयुबलवधै भोजनकरिवोदोडैतौ वैंकीलार मृत्युदोडै भोजन कर्‍यां पाछै घडीदोय वांवै पसवाडे सोवै नींदलेनहीं अथ वा भोजन कर्‍यां पाछै पांवडासौं १०० चालै अर भोजनकै अंत गऊकीछाछि पीवैतौ गुणकारीछै रुचि माफिक पीवै अर भोजनकै अंतसिषरण मठा उगैरै रुचिकारीभी वस्तषाय अथ सिषरणकी विधि लिष्यते चोषो रातिको जमायो भैसको तथा गऊको जमायो दहीले तीनें मथिछाणिले पाछै वेदहीमैं मिश्रीको चूरो अर मिरचि

न. टी. मनुष्य मात्रकै पुण्यसहायछै. ज्यांकै पुण्यधर्मकी सहायताछै ज्यांकैही सुषप्राप्ति होयछै. अर ज्यांकै पाप अधर्म पल्लैवंध्यो रहैछै ज्योवै अनेकतरैका रोगादिक दुषभोगैछै. ज्यांका सुमार्गविना आवागवन वृथाहोय जायछै. जीसौं स्वधर्म मार्गचाल.

इलायची भीमसेनीकपूरनें आदिलेर अनुमानमाफिक ईमें मिला वें अर इसो सिषरण षायतौ शुक्रनें अर बलनेंदे अर योरुचिकरै अर वाय पित्तका रोगनें दूरिकरै इति सिषरण करिवाकी विधिसं पूर्णम् भैसका दहीनें छाणि तीमें सूंठि मिरचि पीपलि राई लूण यांनें मिहीवांटि मिलाय अनुमान माफिक षायतौ कफ वायने दूरिकरै अर याबलनें करैछे. अर सीतकालकैविषै दहीषाणो इति मठाकरिवाकीविधि संपूर्णम् संध्यासमै इतनी वस्तकरीजे नहीं भोजन १ मैथुन २ निद्रा ३ पढिवो ४ संध्यामें भोजन कर्‍यां रोग होय १ संध्यामें मैथुनकर्‍यां भयंकर संतान होय २ संध्यामें निद्रा लियां दरिद्रीहोय ३ संध्यामें पढ्यां आयुर्बलको क्षय होय ४

अथ रात्रिचर्या रात्रिका अहार विहार लिष्यते रात्रिमें चांदकी चांदणीमे सूतांकामदेवकी वृद्धिहोय अर वाचांदणी सरीरका दाहनें दूरि करैछे. अर अंध्यारी राति आंनंदादिकनें दूरिकरैछे रात्रिका प्रथम प्रहरमें भोजनादिककरै पाछे सयनकरै सुंदर स्थान में पाछे सुंदर स्त्रीसूं शक्तिमाफिक संभोगकरै जोवनवतीसूं अर शक्तिउपरांतिकरनें सुंदर स्त्रीयांसूंभी संभोगकरै नहीं अर संभोगके आदिमैंसिको तथा गऊको दूध औटायो मिश्रीका संजोगको पीवै अर संभोगका अंतमैंभी योहीदूध रुचिमाफिक पीवैतौ ईपुरसकै जरापणांको रोगकदेभी आवैनहीं वृद्धस्त्रीसूं संभोगकरैनहीं ये छहवस्तु प्राणांने तत्कालहरैछे सोलि० सूको मांस १ वृद्धस्त्री २ सूर्यका. तावडाको सेवो ३ तत्कालको जमायो दहीं ४ प्रभातसमै मैथुन ५ प्रभातसमै निद्रा ६ येछह तत्काल प्राणांनें हरैछे. अर छहवस्त तत्काल प्राणांनें सुखकरैछे सोलि० तत्कालको मांस १ न

न. टी. जोयथोक्तरीतसौंचालैछे ज्यांकी आयुर्बृद्धिहोयछै. जैसे शुद्धआहारविहारवाला घणा दीर्घायुभोगैछै. अर जोधनवान. राजा. संपदावान. जो आपकी शक्तिशिवायत्रा उपचारांसौंवावैद्यलोगांकी सहायतासौंवा वेसमझकी मूर्खतासौंचालैसो अल्पायुहोयछै.

वीन अन्न २ बालास्त्री ३ क्षीरभोजन ४ नवीन घृत ५ उष्णजल सूं स्नान ६ येछहवस्त तत्काल प्राणानैं सुखकरैछै. अथ छहरितुमैं स्त्रीसूं संभोगकरै सोलि० हिमरितुमैं १ अर शिशिररितुमै २ तौ आपका सरीरकीशक्ति माफिक वारंवार स्त्रीसंगकरैतौ भीरोग होयनहीं शरीरमैं आनंदरहै वसंतुरितु ३ अर शरदरितुमै ४ शक्ति माफिक तीसरै तीसरैदिन स्त्रीसेवनकरैतौ रोगहोय नहीं अर वर्षा रितुमै ५ ग्रीष्मरितुमै ६ पक्ष नाम १५ पंद्रवैदिन शक्तिमाफिक स्त्रीसेवनकरैतौ रोगहोय नहीं सीतरितुमैतौ रात्रिमैं संभोगकीजे ग्रीष्मरितुमैं दिनमैं संभोगकीजे वर्षारितुमै दिनमैं अर रातिमैं जदि मेघगाजे अर वरषैतीसमैं स्त्रीसेवनकीजैतौ रोगहोयनहीं शरदरितुमैं कामदेव जागै तदिकीजैतौ रोग होयनहीं. अर इतनीस्त्रियांसूं संभोगकीजैनहीं सोलिष्यते रजस्वलास्त्रीसूं १ रोगवालीस्त्रीसूं २ वृद्धस्त्रीसूं ३ स्त्रीकै कामदेवजागै नही तीस्त्रीसूं ४ स्त्रीमलीन रहैतीसूं ५ गर्भिणीस्त्री सातमहीना उपरांततीसूं ६ अर जीस्त्रीकी योनिमैं गर्मीको रोगहोय जीसूं ७ इतनीस्त्रियांसूं संभोगकीजे नहीं १ अथ औरतरैभी मैथुन वर्ज्योसोलि० भययुक्त पुरुष १ धीर्यविनो पुरुष २ भूषो ३ रोगी ४ तिसायो ५ बालक ६ बूढो ७ मलमूत्रका वेगवालो ८ इतनापुरुष मैथुनकरैनहीं अथ अतिमैथुनसूं इतनारोग होयसोलि० सूलहोय १ षास २ विषम जुर ३ क्षीणता ४ क्षयीरोग ५ अर वायका पक्षाघातादिक रोग येहोय अथ मैथुनकियां उपरांतिकीजे सोलि० स्नानकीजे. मिश्रीका संजोगको गरम कर्‍यौ दूध पीजे मांसादिक मीठारसषाजे आसव पीजे पस

न. टी. श्रीदरबारजो शारीरकफुरमायोछै सोपरम ज्ञानको मूलछै. येकुदरती चीजांछै ज्यांनैं सूक्ष्म निजरसूं कोईदेखै जीनैं अपारसमुद्रछै. ईवास्तै पं० श्रीधर विनतीकरैछै हे वैद्य विद्वानपुरुषो यो जो शारीरकछै जीनैं ध्यानमैं राषो. जीवांको कल्याणकरो. यांको उपकार परमेश्वर मानसी.

का विजणानैं आदिलेर पवनकरजे शयनकीजे रात्रिनैं घणोजागि जैनहीं दिनमैं घणोसोजेनहीं अर रात्रिका अंतमैं पांच ५ घडिकै तडकै आठअंजली प्रमाणमीठो सीतलजलपीजे पाछै घडीच्यार ४ कैतडकै ऊठिजै ईविधिसूं सदाकीजैतौ ईपुरुषकै कदेभी रोगहोय नहीं सदां आरोग्यरहै. इति रात्रिचर्याकीविधि० येसर्वविधि भावप्रकासमैं अर सारंगधरमैं लिषीछै सोदेषिलीजो अर सारीरनाम मनुष्यांका शरीरमैं जो कछुहै वायपित्त कफ सर्वधात अर शरीरको उपजिवो अर ईको नाशतीनैं आदिलेर त्यांको सर्वस्वरूप जथार्थ अतिसंक्षेपसूं ह्माकीबुद्धिमाफिक लिष्यते ईमनुष्यका शरीरमैं इतनीवस्तछै. कला ७ आसय ७ धात ७ उपधात ७ सातधातांका ७ मल सातत्वचा ७ सात तीनदोष ३ देहमैं मांस अर हाड अर मेदयां सारांका बाधिवाकी नसां ९०० नवसौछै. अर दोयसैं दस २१० ईमैं हाडछै अर केईक आचार्यांका मतसूं तीनसैं ३०० हाडछै अर एकसौसात १०७ मर्मस्थानछै सातसैं ७०० नसांछै रसनैं वहवावाली धमणीनाडी २४ छै मांसकी पिंडी ५०० छै. स्त्रियांकै मांसकी पिंडी ५२० छै. सर्व सौवडीनाड्यांसर्व शरीरमैं व्यापती १६ त्यांनैं कंडराकहैछै. अर मनुष्यांकाशरीरमैं १० छिद्र छै. स्त्रियांकी देहमैं १३ छिद्रछै ये मनुष्यका देहमैंछै सोनाममात्रसूं लिष्याछै. अर हियाको स्वरूप जथार्थमनुष्यकादेहमैं शास्त्रकै अनुसार ह्माकी बुद्धिमाफिक लिषांछां. अथ कलाको स्वरूप लि० धात अर आसययांकै विचैजोझिल्लिछै जीमैं बालक रहैछै तीनैं कलाकहिजेसोवाकला ७ प्रकारकीछै. मांस लोही मेदयां तीन्यांकै

---

* वात. पित्त. कफ एत्रिदोषछै. यांनै त्रिदोष कहैछै. येमुष्यछै. परंतु पित्त. कफ. ये पांगलाछै. यामै चालवाकी शक्तिको मुष्यवायु कारणछै. मात्र सप्तधातुमैं सबशरीरमैं दोषांकी प्रवर्ति वायुकरैछै. वास्तै विद्वानवैद्य हैसो वायको प्रकोपतपासै तौ रोगादिकांनैं जीतौ या श्रीधरकी सूचनायाद राषणी.

विचै येकेक झिल्लीछै. अरयकृत् अर फियाकैविषै येकझिल्लीछै ४ आं तांके विचे येकझिल्लीछे ५ येकझिल्लीउदक अग्निनै धारीरहेछै ६ येक झिल्लिवीर्यनै धारीरहीछे. ७ यांनैं सातकलाकहिजे. अथ सात आसय लि०आसयनामस्थानहियामैंतौ कफको घर १ हियाकैनीचै आमकोस्थानछै. २ नाभिकै ऊपरिवाईकानी अग्निकोस्थान ३ अग्निकै ऊपरि तिलछै ४ नाभिकै नीचै पवनकोस्थान ५ पवनकास्थानकै नीचै पेडूमैं मलकोस्थान ५ पेडूकै लगतोहीक्यूंनीचै मूत्रको स्थान तीनै बस्तिकहिजे ६ हियाकैक्यूं ऊपरि जीवको अर लोही को स्थान ७ ये सारा स्त्रिपुरषांकै आशयछै अर स्त्रीका आसयती नवधताछै. येकतो गर्भकोस्थान १ दोय दूधकास्थान २ स्तन अथ सात धात लि० रस १ लोही २ मांस ३ मेद ४ हाड ५ मींजी ६ शुक्र ७ ये सातूधातका पित्ततेज करि पचीथकी आपसमैं महीना येकमैं वीर्यपैदा होयछै. चौथै चौथै दिन येकेकधात होयछै जो अन्न पाणी षायजेछै सो पित्तकातेजसूंपकै प्रथम रसपैदाहोय पाछैवे पित्तकातेजसूं रसपकि रसहीको लोहीहोयजायछै ईसीतरै सातूधात जाणि लीजो अथ सात उपधात लिष्यते जीभकोमल नेत्रकोमल गीडगालांकोमल येतीन्यूं रसधातकी उपधात जाणिजे १ रंजननामपित्तलोहीको उपधात जाणिजे २ कानकोमल मांसको उपधात जाणिजे ३ जीभदांतकांष इंद्रीनै आदिलेर यांमैं जोमलसो मेदको उपधात जाणिजै वीसूंनष २० ये हाडांका उपधात जाणिजे ५ नेत्रमै गीडयो मींजीको उपधात जाणिजै ६ मुष ऊपरि चीकणापणो अरकीला येशुक्रको उपधात जाणिजे अर स्त्रीकै दोयधात और

न. टी. शारीरकमैं जो आयुर्वेदका मुष्यकारणछै ज्यामैं विशेषकर घणीजायगां पंचमाणलिष्योछै. अर वांकास्थानबी लिष्याछै. परंतु नागादिक पंचवायुनही लिष्या विशेषताकरकैसों ये पांचवायु योगाभ्यासमैं विशेषछै. ज्यांका नाम नाग. १ कूर्म. २ कृकल. ३ देवदत्त. ४ धनंजय. ५ इ.

छे येकतो स्तनामैं दूध १ एक स्त्रीधर्मपणो २ ये दोन्यूंसमयमैंहोय अर समयहीमैं येदोन्यूं जातारहै अर औरभी सातूधातसूं पैदा होय छैसोलि० शुद्धमांससूं पैदाहुवोजो घृततीने वसाकहिजे १ पसेव २ दांत ३ केंस ४ ओज ५ ओज साराही शरीरमैं रहैछे योचीकणोछै शीतलछे अर शरीरमैं बलअर पुष्टको करवावालोछै. येभीसातू धातांसूं पैदा होयछै. अथ सातत्वचालि० ऊपरली त्वचा तोचीकणीछे. अवभामिनी जींको नामछे. नामकविभूतिको स्थानछे १ दूसरी लालजाणनी वेमैलील अर येपैदा होयछै २ तीसरी त्वचासुपेदछे वेमैं चर्मदलनाम रोग पैदा होयछै ३ चौथी त्वचा तांवाका रंगसिरीषीछे वेमैं सुपेदकोढ पैदा होयछै. ४ पांचवी त्वचा छेदनी जींको नाम तीमैं सर्व कोढ पेदा होयछै ५ छठी त्वचा रोहिणी जींकोनाम तीमैं गुमडीगंड मालादिक पैदा होयछै. सातवी त्वचा स्थूलाजींको नाम सोवेमैं विद्रधीरहैछे. येसातू त्वचा जवकै प्रमाण मोठीछे अथ तीन दोषांको स्वरूपलि० वाय १ पित्त २ कफ ३ यानै दोषभी कहिजै अर यानैं मलभी कहिजै सो ये तीन्यूंयेकेक पांच प्रकारकीछे. येपांचूं जुदाजुदा स्थानांमैं रहवासूं यातीन्यांमैं वायबलवानछे सोयोवाय शरीरमैं सर्ववस्तको विभागकरि सारादेहमैं नसांद्वारा सर्वत्र पुंहचाय देवेछे. अर पित्त पांगुलोछै सूक्ष्मछे सीतलछे सूकोछै हलकोछै चंचलछे यो वायमलका आसयमैं रहैछे १ कोष्ठमैं रहैछे २ अग्निकास्थानमैं रहैछे ३ हियामैंरहैछे ४ कंठमैंरहैछे ५ येईका पांचतो मुख्यस्थानछे. अर रहैछे. साराही शरीरमैं गुदामैंतो ईंको अपान नामछे. १ नाभिमैं ईंको समाननामछे. २ हृदामैं ईंको प्राणनामछे

न. टी. शास्त्रमैं सर्वव्यापी धनंजय इसीलिषीछै. सोयामैं दृष्टांतछै. जियान विसोरी नाम पल्लीछे जींकी कोईवी कारणसूं पूछकटकरि दूरिहोय जावैजठैवा पूंछपहर चारघडीतांई कूद्बोकरैछै. अरवा विसोरीतो ऊठासूं चालीजाय. सोवाधनंजय वायूसूं कूदैछै. व्यानवायूसूं भीलिषैछै.

३ कंठमैं ईंको उदाननामछै ४ सर्व शरीरमै रहतो तींको व्याननामछै. ५ इति वायुस्वरूपसंपूर्ण.

अथ पित्तको स्वरूपलि० पित्त गरमछै पतलोछै. पीलोछै. सतोगुणमयीछै. कडवोछै. तीषोछै अर दग्धहुवो षाटोहोयजायछै यो पांचस्थानमैं रहैछै. अग्न्यासयमैं तिलप्रमाणयो अग्निरूपहोय रहैछै. १ त्वचामैं योकांतिको करवावालोछै. नेत्रांमैंयोरहै. सर्वको देषवावालोछै २ प्रकृतिमैंयोरहै सर्व वस्तनैं यो पचायदेछै अर षायारसको लोहीकरिदेछै ४ अर हियामैं रहतो जोपित्त सोबुद्ध्यादिककूं करैछै ५ पाचक १ भ्राजक ३ रंजक ३ अलोचक ४ साधक ५ ये पित्तका नामछै. अथ कफको स्वरूप लिष्यते. कफ चीकणोछै भार्योछै सुपेद पीछिलछै सीतलछै. तमोगुणमयीछै. मीठोछै योदग्धहुवो षारो होयछै. कफ आमा सयमै १ माथामै २ कंठामै ३ हियामै ४ संध्यांमै ५ याजागांमैं मुष्य रहैछै अर देहमै रहतो थको देहकी थिरतानैं सर्व अंगका कोमल पणानैं करैछै क्लेदन १ स्नेहन २ रसन ३ अवलंबन ४ श्लेष्मा ५ येईंकानाम अनुक्रमसूं छै. ३ अथ स्नायुनसांको स्वरूपलि० मनुष्य देहके विषै मांसहाड मेद यांका बांधवाके विषैस्नायुनाम नसांकहीछै १ अथ हाडांको स्वरूपलि०देहके विषैये आधारछै देहयांविनाउभी रहैनहीं अर देह विषैमार यांहीकोछै. अथ मर्मस्थानको स्वरूपलि० जीवका धावांवाला मर्मस्थानहीछै १ अथ नसांको स्वरूप लिष्यते संधिसंधि यांसूं बंधिछै. अर वायपित्तकफ अर सातूंधात यांनैभीयेही नसांवहैछै. १ अथ धमनी नाडीको स्वरूप लिष्यते धमनी नाडी रसनैं वहैछै अर

न. टी. नाभीकास्थानसूं सर्वनसां सर्वशरीरमैं जो फैलिरहैछै सो संपूर्ण धातांका संयोगसौं जो नाभिस्थानको वायू सर्वशरीरनैं पुष्टकैरछै. अर प्राणवायूको आवणो अर वाहर जावणो सोईश्वरी इच्छासूंवारैका अमृतप्रमाणुछै. ज्यानैलेकर पेटमै पाछो वडैछै अर पेटमै सूं षराब परमाणू पाछा काढैछै.

पवननैं वहेछे. अथ मांसकी पिंडीको स्वरूपलि० सर्व सूंवडी नसांती नैं कंडरा कहीजे सो सोलाछे. १६ सोवे सारांअंगांनैं पसारिदेछे अर संकोचन करिलेछे. अथ रसरंध्रांको स्वरूपलि० नाककैदोय छिद्र छे नेत्रकै दोयछिद्रछे कानांकै दोय छिद्रछे. लिंगगुदा मूंढो यांकै ये केक छिद्रछे. येक मस्तगमैं छिद्रछे अर स्त्रियांकै तीन अधिकछे दो यस्तनमैं येक गर्भासयमैं अर और ईशरीरमैं सूक्ष्म रोमरोममैं छिद्र अनंतछे नाभिकैकनै वांईकानी फुफुसछे अर प्लीहनाम फियो छे. अर नाभिकैंकनैं जीवणीकानी यकृतछे उदानवायको आधार तीनैं फुफुस कहिजे अर लोहीनैं वहवावाली जो नसां त्यांको मूल प्लीहनाम फियोछे अर रजकनाम जो पित्त तीको जोस्थान तींकैवि षै जोरक्तकोस्थान ताकों यकृत कहिजे. नाभिकावाम भागकैविषै अग्न्यासयकै ऊपर जोओ तिलछे सोजलनैं वहवावाली जोनसां त्यांको मूलछे. अर ओतिल तिसनैं ढकिदेछे. अर कूषिमैं जो दोय गोला त्यांनैं वृककहिजे सोवै दोन्यूंजठरको जो मेद तीनैं पुष्ट करैछे अर वृषणजो पोता सो वीर्यने वहवावालीजो नसां त्यांका आ धारछे. अर येपुरुषार्थका वहवावालाछे. अर लिंगगर्भको देवावालो छे. अर वीर्यमूत्र यांकोघरछे. अर हियोमन चित्तबुद्धि अहंकारयां को स्थानछे. अर ओजकोघरछे अर नाभिहैसो सिराजो धमनीनैं आदिलेर नसांत्यांको स्थानछे नाभिसूं अर सर्व धातांका संजोग सूं नाभिको जो वायछे सो सर्व शरीरकूं पुष्टकरैछे. अर नाभिको जो पवनछैसो हियाका कमलमैजाय वेंकोस्पर्शकरि कंटकै बारै जा यछे क्यूं विष्णुपदको जो अमृत तीनैं पीवाने नासिका द्वाराको प

---

* माया अरु ब्रह्मयांको सृष्टि व्यापारकारक दृष्टांतछै. आंधलो पांगलो दोऊमिलकर मनसो वोकीनोंहे आंधला थाराकांधाऊपरमनैं पांगलानैं चढायलेतौ मारीआंखसूं देषकर थारापगांसूं चालातो आपणो चालणो. हालणो व्यापार सिद्धहोय ईसीतरै मायातो अंध ब्रह्म चैतन्य पांगलो दोऊमिल सृष्टिरचीछै.

वनसो आकासका अमृतनें पीकरि फेरूं मुषनासिकाद्वारा कंठउ गेरै उदरमै आयप्राप्तिहोयछे. वेगकरिकै पाछे योपवन संपूर्ण देह नें अर जीवनें अर जठरानलनें पुष्टकरैछे अर शरीरकी अर हृदा की प्राणपवनको जोसंजोग तीनें आयुर्बल कहिजे अर कहींसमै मै शरीर प्राण येदोन्यांको संजोग दूरिहोय तीनें मरण कहिजे ई पृथ्वीकैविषै कोईप्राणी अमरनहीं ईकारण मृत्युहैसो निवारिनही जाय वैद्यहैसो रोगांनें दूरिकरि अर मनुष्यकै साध्यरोगछे अर ओमनुष्य पथ्यादिक नहीकरैतो वेमनुष्यकै साध्यरोगही जाप्यहो जाय अर वेमनुष्यकै जाप्यरोगछे अर सो मनुष्य कुपथ्य करिवो करैतो जाप्यरोगही असाध्य होयछे. अर ओअसाध्यरोग हुवो थको कुपथ्यका करिवावाला मनुष्यनें निश्चैमारि नाषैछे. सोई का रणथकी मनुष्यचतुरहैसो रोगांथकी शरीरकी रक्षाकरै. कर्मविपाक को जाणिवावालो क्यूं धर्म अर्थ काम मोक्ष यां च्यारयांहीको साध न येकयो मनुष्यको शरीरहीछे. जो पुरुष ईमनुष्य शरीरनें मारै तींसर्वनें मार्यो अर जीनें मनुष्यशरीरकी रक्षाकरि त्यांसर्वकी र क्षाकरी अर सातूधातांका मल अर वाय पित्त कफ येसाराही बरा बरि कर्याथका ईशरीरमैं शरीरनें सुषदेवैछे. अर येसारा घट्याब ध्या अर कुपित हुवाथका ईशरीरको नासकरै इति सातकलादिकां का विचार संपूर्णम् अथ सृष्टिका उपजावाको कथनलि० ईसंपूर्ण ब्रह्मांडको कारण इच्छारहित सत् चित् आनंदस्वरूप ऐसो जोब्र ह्म परमात्मा तींकी प्रकृतिनाम मायाछे सोवा परमात्माकी माया नित्यछे जैसे सूर्यकी प्रतिछाया नामप्रकाश सोवा ब्रह्म परमात्मा

न. टी. जोपेटमैं फुफुसछे ज्यामैं प्राणवायूको आवजावछै. सोवै दोन्यूं फोफसां सासउ सासमैं हालवोकरैछै. जो भोजनकरै सोवा फोफसांका हालवासूं धीरैधीरै पेटमैं आहार उ तरैछै जदापित्तको संजोग होवासूं आहारकोरूप अदृष्टहोयछै. जैसै उलटीकीयां सागेदीषै. अर दिशामैंगयां अदृष्टदीषै.

की मायाछे. सोजड अर चैतन्य जो परमात्मा तींको संजोगकरि ई अनित्य संसारनै यामाया करती हुई नटका ष्यालकीसीनाई अर या संसारकी माता जो प्रकृति सो बुद्धिनें उपजावती हुई बुद्धिकै सीक इच्छामईमहातत्व जीकोरूप पाछे महातत्वसूं अहंकार उपजतो हुवो पाछे ओ अहंकार तीन प्रकारको हुवो. रजोगुण सतोगुण. तमोगुण तमोगुणमई पाछे सतोगुण रजोगुणसूं मिलिदश इंद्रियांनें पैदाकरता हुवा अर मनभी यांदोन्यांहीसूं पैदाहुवो अथ दशइंद्रियांको स्वरूपलि० कान १ त्वचा २ नेत्र ३ जिव्हा ४ नासिका ५ येतौ पांच ज्ञानेंद्री वाक् ६ हाथ ७ पग ८ लिंग ९ गुदा १० येपांच कर्मेंद्रियछे तमोगुण हैसो घणां सतोगुणसूं मिल्यो जो अहंकार तातें पंचतन्मात्रा उपजता हुवा अथ पांचतन्मात्राका नाम स्वरूपलिष्यते शब्द १ स्पर्श २ रूप ३ रस ४ गंध ५ यांनें तन्मात्रा कहिजे पाछे तन्मात्रासूं पंचमहाभूत पैदाहुवा शब्दसूंतो आकाशहुवो १ स्पर्शतन्मात्रासूं वायु पैदाहुवो २ रूपतन्मात्रासूं अग्नि पैदाहुवो ३ रसतन्मात्रासूं जलपैदाहुवो ४ गंधतन्मात्रासूं पृथ्वी पैदाहुई ५ अथ ज्ञानेंद्रियांका विषय लिष्यते. कानको विषय शब्द १ त्वचाको विषयस्पर्श २ नेत्रको विषयरूप ३ जिव्हाको विषय स्पर्शको स्वाद ४ नासिकाको विषय सुगंधि दुर्गंधि कोग्रहण करिवो ५ अथ कर्मेंद्रियांका विषय लिष्यते. वाणीको विषय बोलिवो १ हाथको विषय ग्रहणकरिवो २ पगांको विषय चालिवो ३ लिंगको विषय मैथुन ४ गुदाको विषय मलका आछीतरह त्याग ५ अथ प्रकृतिनाम लिष्यते प्रधान १ प्रकृति २ शक्ति

न. टी. भोजनसौं शरीरमैं रसादिक पैदाहोयकर जोरुधिरादिक होयछै. ज्यानैं शोषक नसांछै. सो आपआपका सारनैं ग्रहणकरैछै. अर स्वस्थानमैं पौंचावैछै. अर जो कोईबी कारणसौं रसविगडैतौं वोरसछै. जींकी आंव होयजाय. सो प्रसक्षदीषैछै. अर शरीरमैं दुष देवैछै.

३ नित्या ४ विकृति ५ शक्तिहैसो शिवसूं मिलीथकीरहैछै. अथ चोवीसत्वलि० महत्तत्वनाम १ अहंकार १ पांचतन्मात्रा ५ प्रकृति१ दशइंद्री १० येकमन १ पांचमहाभूत ५ येचोवीस २४ विकारछै येसर्वमिलि २४ तत्वहोय पाछै याचोवीस तत्वांको शरीररूपी यो घरवणै तदि ईंघरमैं जीवात्मा शुभ अशुभ कर्मांकै आधीन हुवो थको ईंशरीररूपी घरमैं आयकरवसै. मनरूपी दूतकै वस हुवोथको पाछै जीवकरि संयुक्त ईं शरीरनैं बुद्धिवान देहीकहैछै. सोयो देह पापपुण्य सुष दुषादिकांकरि व्याप्त हुवोथको अर योमनकरि जीवात्मा बंध्योथको अर आपकस्या जो कर्मबंधन त्यांसूं बंधैछै. अर काम १ क्रोध २ लोभ ३ मोह ४ अहंकार ५ दश इंद्री १० बुद्धि १ येसर्व अज्ञानथकी जीवात्माकै बंधनकै अर्थछै. अर जीवात्मा नें आत्मज्ञान होयतो ईंकी मुक्तिहोय अर जीमैं दुष उपजै तीनैं व्याधिकहैछै जीमै सुष उपजै तीनैं आरोग्य कहजै इति सृष्टिजो उपजावाको कहवोसं० अथ अहारको अर परिपाकको अर गर्भकी उत्पत्तिको अर बालकका पोषणादिकको लक्षणलि० जोभोजनादिक कीजैछै सोही याकारण पवन करिकै प्रेर्योथको प्रथम आमासय मैं जाय प्राप्तिहोयछै. पाछै ओही आहार मधुरपणानैं प्राप्तिहोयछै. पाछै ओही आहार पाचकपित्तका प्रभावकरि क्यूंयेक पक्वोथको अम्लपणानैं प्राप्तहोयछै. पाछै ओही आहार नाभिका समान पवन करि प्रेर्योथको छठीग्रहणी कलामैं प्राप्तिहोयछै. पाछै ग्रहणीकला मैं आहारपचि कोष्ठकी अग्निकरिकै ओही आहार कडवोहोजायछै पाछै ओही आहार कोष्ठकी अग्निकरि पचिवेकौ आछ्योरस पै

न. टी. शरीरका व्यवहार शुद्ध रहवासौं आयुर्वृद्धि होयछै. परंतु याबात कोईकपुरुषका ध्यानमैं कमआवैछै. परंतु मूलकी बातछै. जीमै दृष्टांतछै जैसै दोयचिराकलै अर तेलवाती पूरीछै एकसाथ जोईछै. ज्यामै सौ येककैऊपर फानस ढकीछै. अर एक उघाडीछै पवनमैं धरीछै. जीमैं क्रणसीनींदहोसी.

दाहोय जायछै. अर ओ आछयाप्रकार पकैनहो अर कच्चोरहै तौ वेही अहारको आंब होजायछै. अर कोष्ठकी अग्निबलवान होयतौ ओ आहारको रस मधुर होजायछै. अर औही पाछै मधुर होय अर चीकणापणानैं प्राप्तिहोयछै. पाछै ओहीरस भले प्रकार पक्यो थको ईशरीरकी संपूर्णधातनैं पुष्टकरैछै. अर योरस अमृतकी उपमाकों प्राप्तहोयछै. अर यो आहारकोरस मंदाग्निकरि दग्धहोयतो उदरमै कडवोरस होयजाय अथवा षाटो होजाय अथवा योहीरस विषका सुभावनै प्राप्तिहोय जाय अथवा योहीरस रोगांका समूहनें शरीरमें करिदे अर योही आहारको रसछै सोई शरीरमें सार नाम बलछै. अर सारहीन होयतौ योमलद्रवनामपतलो होजायछै सो आछयौ नहीं. अर शरीरमें पीयोजो जल सो वेको सारसा रतौ नसांद्वारा वाय शरीरमें पहुंचाय देछै. अर ईकानिःसारनैं पेटमें प्राप्तिकरिवेंको मूतकरिदेछै सोमूत होय लिंगद्वारावारै नीसरैछै. अर वे आहारको कीटजोमल सो पक्वासयमें रहैछै सो गुदाका पवनका बलकरिओमल गुदाद्वारावारै नीसरैछै. अर वे आहारको जो रस सो नाभिका समान पवनका बलको प्रेर्योथको मनुष्यका हियामें जाय प्राप्तिहोयछै. अर पाछै योरस पित्तकरि पचै तदि लालरंग्यो थक्यौलोही होय जायछै सो ओ लोही सर्वशरीरमें रहैछै सो ओ लोही जीवको उत्तम आधारछै अर ओलोही चीकणोछै. अर भारयोछै. अर बलवानछै मीठोछै अर यो दग्धहुवो पित्तकीसी नाई होयछै येकेकधात सवाचारिचारि दिनमें पैदा होयछै अर भोजनकर्यो जो अहार सो महिनायेकतें तींको मनुष्यकै वीर्य पैदा होयछै अर स्त्रीजोयोही भोजनकर्यो जो आहार सो महिना येकमें स्त्रीधर्म द्वारारज होजायछै. पाछै स्त्री अर पुरुष दोन्यू मिलि मैथुनकरै तदि स्त्रीका भगमैतो शुद्धलोही अर पुरुषको शुद्धवीर्य ये

दोन्यूवेंसमें मिलें तदि स्त्रीकागर्भस्थानमें गर्भरहजायछे पाछे ओ नवेंमहिनें भगद्वारावारें नीसरें तदि वेनें बालक हुवो कहेंछे. अर वें समेंस्त्रीकोरज अधिक होयतौ कन्याहोय अर पुरुषको वीर्य अधि क होयतौ पुत्रहोय अर वेंसमेंस्त्री अर पुरुषको रज अर वीर्य ब राबरि होयतौ नपूंसक पैदाहोय पाछें परमेश्वरकी इच्छाहोय सो हीहोय यो लिष्योनियमछे होय अर नहीबीहोय. अथ बालकनें औषधि देवाकी मात्रालि० महिना येकको बालक होयतौ रती १ औषदि दीजे दूध सहतमिश्री यांकीसाथि पाछे ज्यूंज्यूं बालकव धे तदि महिनायेकेकमें रतीयेकेक औषधि वधाजे येकवरसताईं पा छेवरस १६ सोळाताईं मासोयेकेक औषधिदीजे पाछें औषदि दे वाकी मात्रा अतनीराषिजे वर्ष ७० ताईं पाछें बालककीसीनाईं औषदीकीमात्रा घटाय दीजे योतोलकल्कचूर्णकोछे. अर काढाको तोलईसूं चौगुणौ जाणिलीजे अर बालक होय तदि बालककै का जल उवटणो स्नान करावोकीजे अर महिनाकीमहिनें बालकनें व मनकराय दीजे अर हरडेकी घूंटीरोजीना दीजे अर अन्नकोग्रास पाचवें वरस दीजे अर जुलाबसोळा वरस ऊपरांत दीजे अर मैथु न वीस वरष ऊपरांति कीजे ईविधिसूं मनुष्य चालैतौ ईंकैरोग क देहोय नहीं अर ईंकै जराकदे आवैनही अथ मनुष्यका शरीरकी गतिलि० वरष दशताईंतो बालकपणो रहेछे. वीस २० वर्षपर्यंत ईं को वधवापणो रहेछे ३० वर्षपर्यंत शरीरको मोटापणो रहेछे. चाली स वर्षपर्यंत मनुष्यकै बुद्धिको आगमरहैछे पचास ५० वर्षपर्यंत म नुष्यका शरीरमें त्वचाको गाढापणो रहेछे ६० वर्षपर्यंत नेत्रांकी जोति आछी रहेछे. ७० वर्षपर्यंत मनुष्यका शरीरमें वीर्यरहेछे ८० वर्षपर्यंत मनुष्यका शरीरमें वीर्यको ऊनाधिक्यपणो रहेछे ९० वर्ष पर्यंत आछीतरें ग्यानरहेछे. सौ १०० वर्षपर्यंत बोलिवो हाथपगां

मैं बल मलमूत्रका त्यागको ग्यानरहैछै एकसौदस ११० वर्षपर्यंत मनुष्यका शरीरमैं स्मरणमात्रको ग्यानरहैछै १२० वर्षपर्यंत शरीरमैं प्राणमात्ररहैछै. जो मनुष्यको शरीर निरोगी रहैतौ अर दश दश वर्ष पाछै ये लिष्यासो घटताजायछै ईमनुष्यकी आयुर्बलको प्रमाण १२० वर्षकोछै. इति आहारको परिपाकं गर्भकीउत्पत्ति बालकका पोषणादिककी विधिसं० अथवायकीप्रकृतिको लक्षणलि० छोटाकेस होय अर कृशशरीर होय लूषो शरीर होय वाचालहोय चंचल मनहोय आकाशमैं रहवावाला सुपनाआवै यो जीमैं लक्षण होयतौ वायकीप्रकृति जाणिजै १ अथ पित्तकीप्रकृतिको लक्षणलि० जवान अवस्थामैं सुपेद बालआवै बुद्धिवान होय अर पसेवघणां आवै क्रोधीहोय सुपनामैं तेजदीषै येलक्षण होयतौ पित्तकी प्रकृति जाणिजे २ अथ कफकी प्रकृतिको लक्षणलि० जींकी गंभीर बुद्धिहोय स्थूलअंग होय चीकणाकेश होय बलवान होय स्वप्नमैं जलकास्थान देषै येलक्षण जीमैं होय तीनैं कफकी प्रकृति कहिजै ३ अथ नींदको लक्षणलि० कफ अर तमोगुण अधिक होय तदि मूर्छाहोय १ अर वाय पित्त रजोगुण ये अधिक होय तदि भौंलि अर भ्रांतिहोय २ कफ वाय अर तमोगुण अधिक होय तदि तंद्राहोय ३ अर बलजातो रहै तदि ग्लानिआवै अर दुषसूं अजीर्णसूं अर षेदसूं यांसूंभी ग्लानिहोय ५ अर बलथकी उत्साह नहींहोय तीनैं आलस कहिजै ६ ईनैं आदिलेर बुद्धिवान औरभी जाणिलीज्यो इह मनुष्यका शरीरको वर्णनकर्‍यो इति श्रीमन्म

---

* तरंग २५ याग्रंथमैंछै. सोयाग्रंथको नामसागरछै. अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंगनामलहरहोयछै. तरंगांसागरमैं होयछै. वास्तै अमृतसागरमैं तरंगनाम अध्यायछै. संपूर्ण ग्रंथछै. यामैं कोईवी भूलचूक होयतो सलेमाबादका पंडित श्रीधरगौडनैं विद्वानलोक क्षमाकरसी कोई दूषणदेशीतो आभूषणहीहोसी.

हाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्र श्रीसवाई प्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागरनामग्रंथे रितुवर्णनं षट्रितुचर्या १ दिनचर्या २ रात्रिचर्या ३ सारीर ४ सर्व अंगांसंयुक्त नामवर्णनं नाम पंचविंशतिमस्तरंगः संपूर्णः २५

समाप्तोऽयं अमृतसागरनामा ग्रंथः

अमृतसागरकी सूचनिका तथा अनुक्रमणिका.

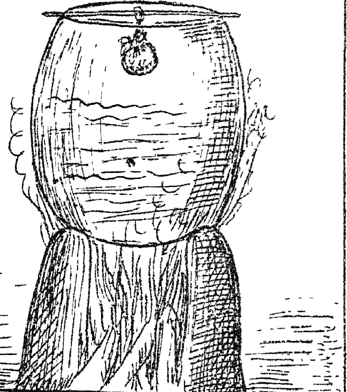
इति अमृतसागरस्यानुक्रमणिका

समाप्तोयम्

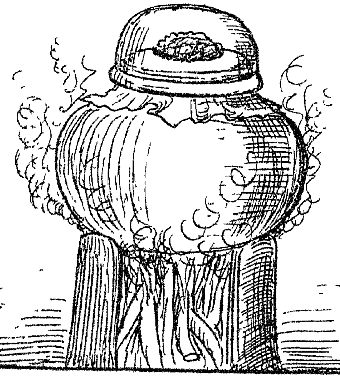
वालुकायंत्र.



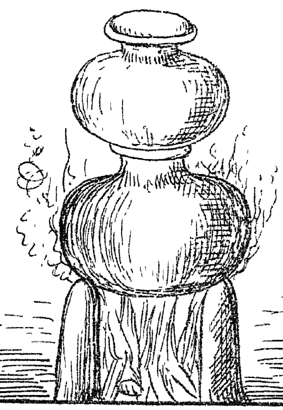
दोलकायंत्र.



स्वेदन यंत्र.



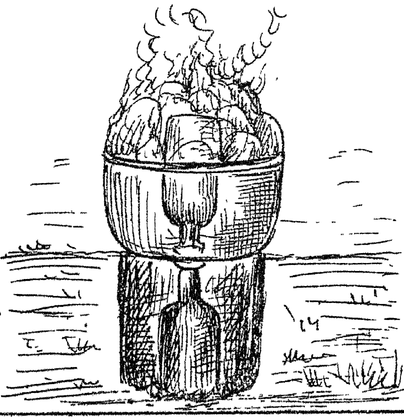
विद्याधरयंत्र.



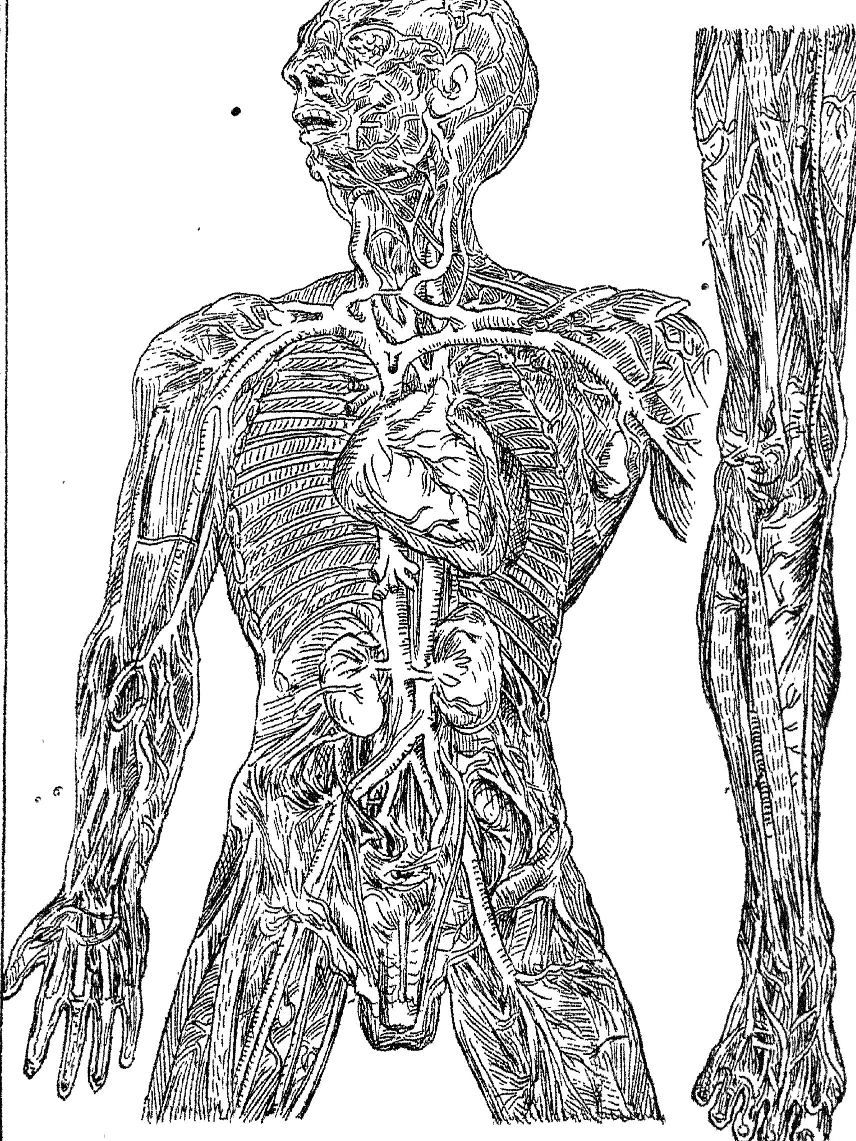
डमरूयंत्र.



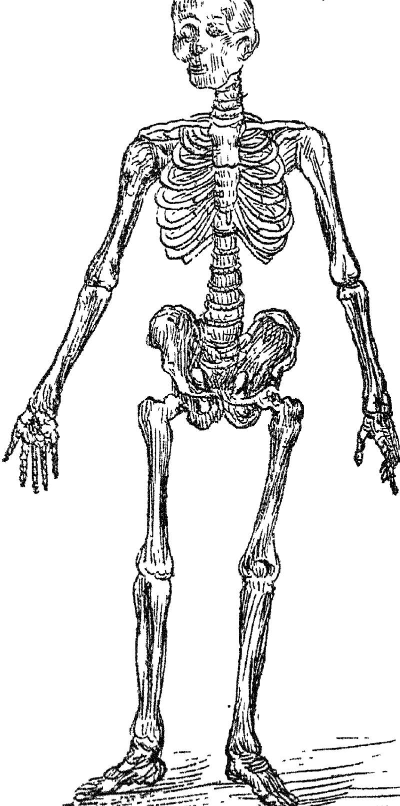
भूधर यंत्र.



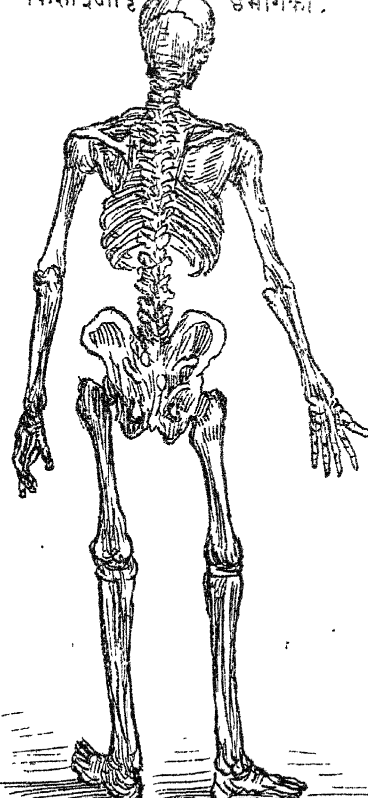
नकशो पहलो १ शारीरक भागको.



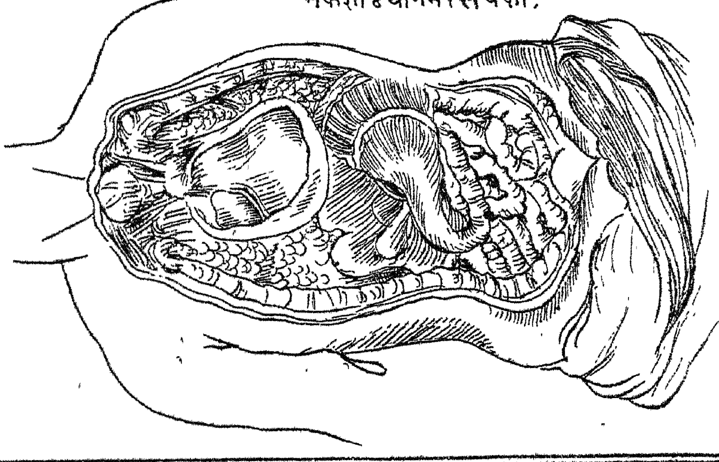
नकशो २जो अग्र भागको



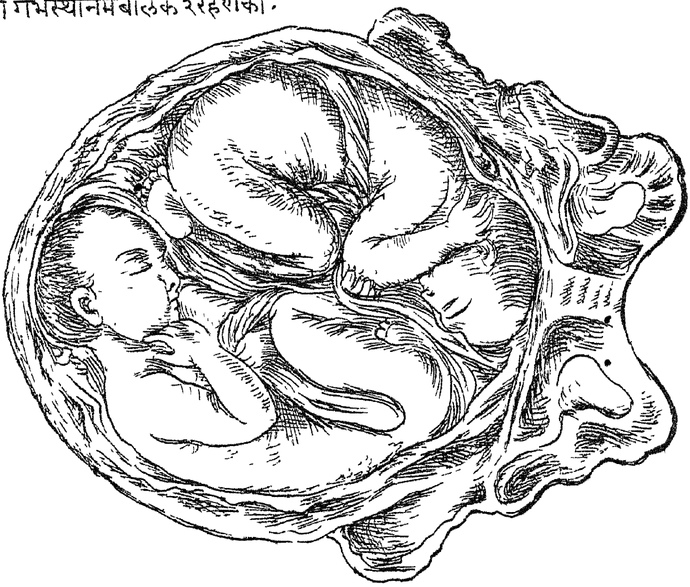
नकशो ३जो पृष्ठभागको



नकशो ४थो गर्भासयको.



नकशो गर्भस्थानमें बालक २ रहणेको.



नकशो ६. गर्भस्थानमें १. बालक रह्वाको.

